Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

दो लहरों की टक्कर

2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

67918

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लहरों की टक्कर

भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना और ईसाइयों द्वारा प्राचीन ज्ञान–विज्ञान पर आरोप, इनकी प्रतिक्रिया में भारत में दो विचार तरगें उठीं। एक तरंग थी राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज के रूप में तथा दूसरी तरंग थी महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के रूप में। दोनों का परस्पर टकराव हुआ। यह टकराव क्या था और समयान्तर में दोनों ने क्या क्या रूप धारण किये, यह इस अन्यतम उपन्यास का विषय है।

सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का विश्लेषण उपन्यास के रूप में और वह भी इतना सजीव तथा सरस, यह श्री गुरुदत्त की लेखनी का कमाल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167918
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लहरों की टक्कर

खंड-दो

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लहरों की टक्कर

खंड-2, (भाग 3 व 4)

Central Library
167918
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167918

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
081.9143
GUR-D

© सुरक्षित

दो लहरों की टक्कर
खंड-2

Central Library
167919
Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar

मूल्य	:	रु. 550/–
संस्करण	:	2020
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
ई–मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	011–23553624, 9213527666, 7065618655
मुद्रक	:	गोयल एन्टरप्राइजिज, नोएडा

DO LEHRON KI TAKKAR Vol-2

Novel by GURUDUTT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लहरों की टक्कर

खंड-2, (भाग 3 व 4)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

लाहौर में पुरानी अनारकली से चौबुर्जी की ओर जाने वाली कपूरथला रोड और फिरोज़पुर रोड के संगम पर एक बड़ी-सी कोठी के ड्रायंग-रूम में एक दम्पति बैठे हुए वार्त्तालाप कर रहे थे। पति अभी बाज़ार से लौटा ही था।

अप्रैल मास चल रहा था और सायंकाल लगभग छः बजे थे। अभी अन्धेरा नहीं हुआ था। पति जब कमरे में प्रविष्ट हुआ तो पत्नी ने पूछा, "बहुत देर कर दी है आज ?"

पति ने उत्तर देने के स्थान पूछ लिया, "विजय घर आया है अथवा नहीं ?"

"नहीं।"

"और आनन्द ?"

"वह आया था और यह कह चला गया है कि वह कलकत्ता जा रहा है। दो मास तक नहीं लौट सकेगा।"

"कलकत्ता कौन-सी गाड़ी से गया है ?"

"वह यहाँ बारह बजे के लगभग आया था। ताँगे में आया था और अपना सूटकेस ले, ताँगे में ही चला गया था।"

पुरुष गम्भीर मुख बनाये विचार करने लगा। यह पुरुष था नलिनीकान्त, और उससे बात कर रही थी उसकी पत्नी सुवर्णा।

"क्या हुआ है ?" सुवर्णा ने पति को चिन्तित देख पूछ लिया।

"आज पुलिस ने लूट मचायी है। अनारकली बाज़ार की कई दुकानें लूट ली गयी हैं।"

"क्यों ?"

"पुलिस को भय था कि नगर में विद्रोह हो जायेगा और विद्रोह होने से पूर्व ही नागरिकों को आतंकित करने का यह प्रयास प्रतीत होता है।

"देखो सुवर्णा ! लाला लाजपतराय पकड़ लिये गए हैं और जानकार लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कह रहे हैं कि 'भारत माता' के बीस से अधिक नेताओं के वारण्ट हैं। उनमें से बहुत से पकड़े गये हैं और कुछ फरार हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विजय पकड़ा गया है और आनन्द फरार हो गया है।"

"और आप इस समय तक कहाँ थे ?"

"मैं गया तो था आर्य-समाज मन्दिर में। वहाँ मन्त्री जी ने बुलाया था। वे चाहते थे कि 'आर्य युवक सभा' के वार्षिक अधिवेशन में युवकों की गोष्ठी में आर्य-समाज के इतिहास पर मैं व्याख्यान दूँ। युवक समाज का प्रधान बिहारीलाल भी वहाँ आया हुआ था। जब मैंने बिहारीलाल को बाताया कि मुझे आपत्ति नहीं है, परन्तु कदाचित् आपत्ति डी० ए० वी० कालेज के प्रिन्सिपल को होगी तो वह पूछने लगा, उनको क्या आपत्ति होगी ?

"मैंने उसे उनके प्रिन्सिपल के विचार बताये तो वह गम्भीर हो गया और फिर कुछ विचार कर बोला कि मुझे कल मेरे मकान पर मिलेगा।

"जब बिहारीलाल चला गया तो आर्य-समाज का मन्त्री बोला, 'उस दिन आर्य-समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में इस लड़के ने आपका भाषण सुना तो बहुत प्रभावित हुआ था। आज मुझसे आग्रह कर रहा था कि मैं आपसे प्रार्थना करूँ कि आप उनके अधिवेशन में व्याख्यान दें।'

"मैंने कहा, 'मैंने ठीक किया है। मुझे विश्वास है कि यह अब न तो मेरे मकान पर मुझसे मिलने आयेगा और न ही आपको पुनः कष्ट देगा।'

"इतना कह मैं वहाँ से चला आया। मार्ग में नीले गुम्बज की ओर से लोगों की भीड़ भागती हुई आती दिखायी दी। मैं एक किनारे हट कर खड़ा हो गया। तीन-चार सौ युवक थे। वे भागते हुए लाहौरी दरवाज़े की ओर चले गये। इनके पीछे-पीछे चालीस-पचास लट्ठ-बंद पुलिस के सिपाही थे। वे भागते हुए लड़कों के पीछे तो नहीं गये, परन्तु वहाँ एक हलवाई की दुकान को लूटने लगे। एक बजाज़ की दुकान पर भी हाथ साफ किया गया। इसके बाद सराय के बाहर मुसलमानी ढाबे में घुस गये और वहाँ आराम से खाना खा रहे लोगों को पीटने लगे।

"मैं पुस्तक-विक्रेता रामलाल की दुकान में घुस गया था। उस दुकान पर काम करने वाले बाबू ने दुकान भीतर से बन्द कर ली थी।

"जब पुलिस खा-पीकर चली गयी तो दुकान खोली गयी और तब मैं चक्कर काटता हुआ मोहनलाल रोड और चंगर मोहल्ले में से होता हुआ गोल बाग के आगे से होकर यहाँ पहुँचा हूँ।"

सुवर्णा ने कह दिया, "विजय की बहू का पत्र बम्बई से आया है।"

"वह क्या लिखती है ?"

"उसने कहा है कि उसे हस्पताल से छुट्टी नहीं मिल रही और वह त्याग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र देकर लाहौर आ रही है।"

"ठीक है, आ जाने दो। इस पर भी यदि मेरा अनुमान ठीक है कि विजय पकड़ा गया है तो उसे यहाँ आकर निराशा ही होगी।"

"ठीक-ठीक पता कैसे चलेगा ?"

"चन्दनसिंह से कहूँगा कि वह पुलिस-कार्यालय से पता करे कि किस-किस के नाम के वारण्ट थे और कौन-कौन पकड़ा जा चुका है ? साथ ही पकड़े हुओं पर कोई मुकद्दमा इत्यादि चलेगा अथवा बिना मुकद्दमे के ही हिरासत में रखेंगे।"

"तो बिना मुकद्दमे के भी बन्दी बना सकते हैं ?"

"हाँ; वह तो मैं भी बनाया जा चुका हूँ। ऐसा कानून अभी भी है। अन्तर इतना है कि उस कानून से वारण्ट वाइसराय हिन्द ही जारी कर सकता है।"

"तो अब ?" सुवर्णा ने पूछा।

"अपना काम तो घड़ी की सुई की भाँति चलता रहेगा। मैं दोनों लड़कों की राजनीति में रुचि देख, यह पहले ही समझ गया था कि ऐसी बात होने वाली है।"

"ठीक है। यह होना ही था।"

घर में पति-पत्नी थे। पति की बहन प्रज्ञा थी। वह इस समय विधवा थी, परन्तु पति के देहान्त से पूर्व ही पति को छोड़, भाई के घर रहने चली आई थी। नलिनीकान्त के छोटे लड़के आनन्दस्वरूप की पत्नी प्रभावती इस समय प्रसूति-गृह में थी और उसका बच्चा सात दिन का था। प्रभावती डी० ए० वी० कालेज के एक प्राध्यापक इन्द्रमणि की लड़की थी। इन्द्रमणि गढ़वाल का रहने वाला संस्कृत का एक विद्वान् था।

प्रज्ञा प्रसूति-गृह में प्रभावती की देखभाल कर रही थी और खाली समय में उसके पास बैठ, बातों से उसका दिल बहलाया करती थी। एक दिन बातों-ही-बातों में प्रज्ञा ने प्रभावती को बताया, "मैं जब बम्बई में ज्ञानस्वरूप के पिता के साथ रहती थी, तब की बात है। मेरा विवाह हुए अभी कुछ मास ही हुए थे और अभी ज्ञान भी उत्पन्न नहीं हुआ था। मिस्टर दास आये और बोले, 'शीघ्र खाना लगवाओ। मुझे एक आवश्यक काम पर जाना है।'

"मैंने पूछ लिया, 'कब जाना है ?'

"वे बोले, 'सुना है ढाई से तीन बजे के भीतर वह लोगों से मिलता है।'

"उस समय एक बजा था। मैंने बैरा को बुला, तुरन्त खाना लगाने के लिये कहा और दास बाबू से पूछने लगी, 'गवर्नर बहादुर से मिलने जा रहे हैं क्या ?'

"वे हँस पड़े और बोले, 'तो क्या गवर्नर से मुलाकात में ही समय की पाबन्दी होनी चाहिये, अन्य किसी से यह आवश्यक नहीं ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'तो और कौन है जिसके लिये इतनी भाग-दौड़ हो रही है ?'

" 'एक गुजराती साधु है। सुना है वह बहुत ही समय का पाबन्द है। वह कलकत्ता से घूमता-घामता बम्बई आ पहुँचा है और वहीं से ही उसको 'शैडो' किया जा रहा है।'

"कलकत्ता और गुजराती साधु की बात सुन, मुझे सन्देह हुआ कि हो न हो, वे स्वामी दयानन्द ही होंगे। मैंने नाम पूछा तो उन्होंने मेरे सन्देह की पुष्टि कर दी। इस पर मैंने कहा, 'मैंने पहले भी उनके दर्शन किये हैं। वे बहुत ही ओजस्वी विद्वान् साधु हैं। क्या मैं नहीं चल सकती उनके दर्शन के लिये ?'

"दास बाबू बोले, 'मैं तो सरकारी काम से जा रहा हूँ।'

" 'मैं आपके काम में हस्तक्षेप नहीं करूँगी। चुपचाप दर्शन करती रहूँगी।'

"दास बाबू ने एक क्षण तक आँखें मूंद विचार किया और मुझे साथ ले चलने के लिये तैयार हो गये।

"इस प्रकार मैंने स्वामी जी के दूसरी बार दर्शन किये। स्वामी जी के शिविर में किसी स्त्री के प्रवेश की स्वीकृति नहीं थी, परन्तु सौभाग्य से उनके निवास-स्थान का चौकीदार कहीं काम में व्यस्त था और हम दोनों स्वामी जी के सामने जा खड़े हुए। इस पर स्वामी जी विस्मय में हमारा मुख देखते रह गये।

"हमने बताया कि द्वार पर कोई रोकने वाला था नहीं और हमें उनके यहाँ का नियम ज्ञात नहीं है। इस पर स्वामी जी मेरा परिचय पूछने लगे। मैंने अपने पिता और भैया का परिचय दिया तो वे कलकत्ता की बातें करने लगे।

"उनका यही कहना था कि स्त्रियों को गुरुओं तथा साधु-सन्तों के पास नहीं जाना चाहिये। उन्हें अपने पतियों को इन गुरु इत्यादि के पास भेजकर उनके द्वारा ही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।

"मैंने कहा, 'आप तो साधु हैं। आपके लिये पुरुष-स्त्री में भेद-भाव नहीं होना चाहिये।'

"इस पर स्वामी जी बोले, 'तुम ठीक कहती हो। मैं अपने लिये नहीं कह रहा। मैं तो इस प्रथा की बात कह रहा हूँ। इससे नारी-जाति का पतन होता है।'

"स्वामी जी से इस भेंट ने मेरे जीवन की कायापलट कर दी। उनसे जब मैंने अन्तरजातीय विवाह के विषय में पूछा तो वे कहने लगे, 'जाति मानव है, परन्तु विवाह में विचार-समानता होनी चाहिये। अन्यथा घर कलह-क्लेश का स्थान बन जायेगा।'

"इसी प्रकार मजहब के विषय में वे बोले, 'मजहब में दो अंग होते हैं। एक विचारधारा और दूसरा व्यवहार। व्यवहार में कर्म-काण्ड भी रहते हैं। ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों बातें परस्पर सम्बन्धित हैं। विचारों से कर्म। को दिशा मिलती है और विचार-भिन्नता से कर्म में भेद आ जाता है। इस व्यवहार-भेद से विमुखता उत्पन्न होती है। विमुखता कलह का पूर्व-रूप है।'

"दास बाबू को स्वामी जी की बात पसन्द नहीं आयी। वे सुन और समझ नहीं रहे थे। साथ ही वे अपने काम से आये थे। अतः उन्होंने बात बदल दी। वे समाज-सुधार और उसमें सरकार की ओर से प्रयास की बात करने लगे।

"स्वामी जी का स्पष्ट मत था, 'सरकार को केवल उन धर्मों के पालन में ही हस्तक्षेप करना चाहिये जो सामाजिक हैं। सामाजिक धर्म उनको कहते हैं जो कर्त्ता के अतिरिक्त किसी दूसरे से सम्बन्ध रखते हों।'

"इस पर मैंने पूछ लिया, 'पति-पत्नी का परस्पर व्यवहार सामाजिक धर्मों की परिधि में आता है क्या ?'

"उनका स्पष्ट उत्तर था, 'हाँ, परन्तु वह समाज परिवार ही है। अर्थात् पति-पत्नी सम्बन्ध पारिवारिक विषय है और परिवार भी एक समाज है। परिवार की बात परिवार से बाहर समाज में तथा राज्य में तब ही जानी चाहिये, जब कोई परिवार का घटक यह समझे कि घर में उसका निपटारा नहीं हो सकता। जहाँ तक सम्भव हो, इसको परिवार के भीतर ही निपटाना चाहिये।' "

प्रज्ञा प्रभा को बता रही थी, "यह वार्त्तालाप था जिसने मेरे वर्त्तमान जीवन का बीज बोया। बीज मन में अंकुरित ही हो रहा था कि नलिनी भैया बम्बई में आ पहुँचे। मेरे माता-पिता भी उनके साथ थे। भैया ने स्वामी जी द्वारा अंकुरित हो रहे बीज को सींचा और अंकुर वृक्ष बनने लगा। भैया ने कहा था कि परिवार में पति-पत्नी सम्बन्ध एक बात है। पति-पत्नी सम्बन्धों में मुख्य है पंच महायज्ञ करना; परन्तु इसके अतिरिक्त भी पत्नी और पति के कुछ धर्म हैं। उनका सम्बन्ध है उनके आत्मा के साथ। इसमें परमात्मा की उपासना और धृति, दम, शौच, धीः और विद्या आते हैं। मुसीबत में धैर्य से रहना; अपनी कामनाओं का दमन करना; शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध-पवित्र रखना; योग से बुद्धि को निर्मल और तीक्ष्ण करते रहना एवं ज्ञान प्राप्त करना—ये कर्म हैं जिनसे आत्मा उन्नत होती है और परमात्मा की उपासना होती है। बस मैंने एक वीणा मोल ले ली और उससे लगी साधना करने।

"इस बात को अब तीस वर्ष हो चुके हैं और इसी उपासना के आश्रय, मैंने अपना यह जीवन अति आनन्द में व्यतीत किया है।"

वास्तव में देश की अवस्था और प्रभा के पति आनन्दस्वरूप के राजनीति में रुचि की दिशा को देख, प्रज्ञा यह आशा कर रही थी कि प्रभा को व्यक्तिगत धर्मों में अभ्यास की बहुत बड़ी आवश्यकता पड़ने वाली है। वह उसे, भावी कष्ट-प्रद जीवन में, कष्टों को हँसते-खेलते सहन करने के लिये तैयार कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

लॉर्ड कर्ज़न भारत का वाइसराय बनकर आया तो उसने कुछ अच्छे काम भी किये। सर्वप्रथम उसने देश में पुरातत्त्व-विभाग खोला था। सब प्राचीन भवनों को सुरक्षित स्मारक घोषित कर, उनकी मुरम्मत इत्यादि का उसने प्रबन्ध कराया। यद्यपि इससे देश का भारी कल्याण हुआ है, परन्तु कर्ज़न साहब की नीयत देश का कल्याण करने की नहीं थी। लॉर्ड कर्ज़न हिन्दुओं से अत्यन्त घृणा करता था और समझता था कि इन स्मारक भवनों की रक्षा करके, वह इस्लामी राज्य की हिन्दुस्तान में प्रभुता की रक्षा कर रहा है। उसको यह आशा नहीं थी कि निकट भविष्य में ही ऐसे लोग उत्पन्न हो जायेंगे, जो इन भवनों के इस्लाम से सम्बन्ध के विषय में चुनौती देकर यह सिद्ध कर देंगे कि ये भवन, हिन्दू राजाओं द्वारा ही निर्मित हैं।

लॉर्ड कर्ज़न के काल तक भारत सरकार की हिन्दू और मुसलमानों में वैमनस्य डालने की नीति, ज़ोरों से चलने लगी थी। बंगाल का विभाजन कर पूर्वी पाकिस्तान बनाने का प्रथम प्रयास कर्ज़न ने ही किया था। उसके विचार से पूर्वी बंगाल में ढाका का क्षेत्र और समूचा आसाम भी सम्मिलित होना चाहिये था। इस प्रकार बंगाल का यह क्षेत्र अलग करके भी, वह उसे हिन्द की सरकार के अधीन ही रखना चाहता था।

लार्ड कर्ज़न हिन्दू-मुसलमानों में द्वेष उत्पन्न कर हिन्दुस्तान के टुकड़े-टुकड़े करना चाहता था और फिर उन टुकड़ों पर ब्रिटेन की प्रभुसत्ता बनाये रखना चाहता था। हिन्दू इस नीति को समझते थे और इसका विरोध करने लगे थे।

ब्रिटिश सरकार की इस नीति का विरोध हिन्दू दो प्रकार से करने लगे थे। एक ओर हिंसात्मक क्रान्तिकारी आन्दोलन का श्रीगणेश किया गया तथा दूसरी ओर सरकार-भक्तों ने अधिक और अधिक सरकार की मिन्नत-खुशामद करनी आरम्भ कर दी।

नलिनीकान्त सरकार की मिन्नत-खुशामद करने वाले लोगों को देशवासियों के मनों में विकृति उत्पन्न करने वाले मानता था। अतः जब भी उसे अवसर मिलता, वह सदा सरकार-भक्तों की आलोचना करता रहता था।

ऐसा ही एक आलोचनात्मक व्याख्यान 'आर्य युवक समाज' के प्रधान बिहारी-लाल ने सुना था। यह व्याख्यान नलिनी ने आर्य-समाज के साप्ताहिक सत्संग में दिया था और इसमें उसने स्वामी जी के राजनीतिक विचारों पर प्रकाश डाला था। इस व्याख्यान में उसने कहा था—

"इण्डियन नेशनल कांग्रेस ब्रिटिश सरकार की योजना का ही एक बालक है। ब्रिटिश सरकार ने पहले इण्डियन नेशनल कांग्रेस के लिये घटक तैयार किये। वर्तमान कालेजों के स्नातक ही वे घटक हैं, और इन घटकों का सक्रिय भाग हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इण्डियन नैशनल कांग्रेस है।

"मैकॉले साहब की योजना आंशिक रूप में ही सफल हो सकी थी। अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे ईसाई तो नहीं हुए, परन्तु वे हिन्दू और हिन्दुस्तानी भी नहीं रहे।"

नलिनी ने बाबू सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के अध्यक्षीय भाषण से कुछ वाक्य सुनाये थे। ये वाक्य उन्होंने अहमदाबाद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन पर कहे थे। बाबू सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने कहा था—

"We plead for the permanance of British rule in India."[1]

नलिनीकान्त का कहना था कि यह मानसिक अवस्था सरकारी शिक्षा-पद्धति की उपज है। आर्य-समाज ने मैकॉले की शिक्षा में से डंक निकालने का यत्न किया है। इसने डी० ए० वी० स्कूल और कॉलेज खोल कर ब्रिटिश सरकार के लिये वह भक्ति, जिसका प्रदर्शन कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में ब्रिटिश राष्ट्र-गीत गाकर तथा 'ब्रिटिश सम्राट् चिरजीवी हो' के नारे लगाकर किया जाता है, मिटाने का सफल यत्न किया है। इस पर भी हम अनुभव कर रहे हैं कि डी० ए० वी० कालेज देशभक्त तथा अपने धर्म और अपनी संस्कृति के लिये त्याग तथा तपस्या करने वाले लोग उत्पन्न करने में सफल हो रहा प्रतीत नहीं होता।

"डी० ए० वी० कालेज के स्नातक ब्रिटिश सरकार के विरोधी तो कदाचित् हो जायेंगे, परन्तु वे किस विचार-पद्धति के पोषक होंगे, अभी कहना कठिन है। सम्भवतः वे हिन्दू होंगे, परन्तु बिना हिन्दू-धर्म और हिन्दू-संस्कृति के विषय में 'अ-आ' का ज्ञान प्राप्त किये। वे आर्य भी हो सकते हैं, परन्तु बिना वेदों के दर्शन किये। वे हिन्दुस्तानी नागरिक होंगे, परन्तु रहन-सहन तथा विचारों में पूर्णतः इंग्लैण्ड निवासी बन कर। वे महर्षि स्वामी दयानन्द के गुणानुवाद गायेंगे, परन्तु मैक्समूल्लर के विचारों को, स्वामी जी के विचार मानते हुए। वे शिवाजी तथा राणा प्रताप की कीर्ति गान करेंगे, परन्तु घरों में एक चूहा देख कर भयभीत होते हुए।"

नलिनी के इतने तीखे वाक्यों से डी० ए० वी० कालेज के प्रिन्सिपल और अनारकली आर्य-समाज तथा प्रादेशिक आर्य-समाज के प्रधान के मन पर गहरी चोट लगी थी।

अधिवेशन के उपरान्त ही आर्य-समाज के प्रधान ने मन्त्री को बुला कर पूछा, "वैद्य जी! यह आपने आज किस पागल को व्याख्यान के लिये खड़ा कर दिया था?"

मन्त्री महोदय नगर में आयुर्वेद की चिकित्सा का कार्य करते थे और एक

---

१. हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में ब्रिटिश राज्य सदा बना रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक फार्मेसी के संचालक थे। नाम था लाला सरदारीलाल। वैद्य जी ने तो समय की गति का ध्यान रख कर ही वक्ता का चयन किया था। देश में सन् १८९८ से एक नयी लहर उत्पन्न हुई थी। इससे पहले सरकार के विपरीत सेना में छोटे-मोटे विस्फोट होते रहते थे और एक स्थान पर गाँव वालों ने भी विद्रोह किया था, परन्तु सन् १८९८ में पूना के चाफेकर भाइयों ने एक नयी परम्परा डाली थी। उन्होंने दो अंग्रेज अधिकारियों को पिस्तौल की गोली का आखेट बनाया था। इस घटना ने देश में सन् १८५७ के विद्रोह से भी अधिक हलचल उत्पन्न की थी। यह आतंकवाद था और यह समझ कि आततायी महा-भीरु होता है, आतंकवादियों ने ब्रिटिश सरकार के लिये कफन तैयार करना आरम्भ किया था।

सैनिक-संघर्ष में सेनाओं का युद्ध होता है। जिसकी सेना संख्या में अधिक और बढ़िया शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होती है, उसकी विजय होती है। परन्तु इस प्रकार के युद्ध में, जहाँ एक व्यक्ति अपनी जान को हथेली पर लिये हुए दूसरे पर आक्रमण करता है, वहाँ न तो संख्या का प्रश्न उठता है और न ही बढ़िया शस्त्रास्त्रों का। वहाँ तो साहस और विचार-दृढ़ता का प्रश्न ही होता है। आत-तायी विचार से सदा दुर्बल और भीरु होते हैं। ऐसे ही हिन्दुस्तान में अंग्रेज थे और केवल दो की हत्या से, पेशावर से लेकर कन्याकुमारी तक अंग्रेज अफसरों की रात के समय की नींद हराम होने लगी थी। तथा ब्रिटिश पार्लियामैण्ट इस घटना पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगी थी।

इस कार्य की और इसकी प्रतिक्रिया को देख, हिन्दुस्तानी युवकों का साहस बढ़ रहा था और स्थान-स्थान पर आतंक उत्पन्न करने के लिये, क्रान्तिकारी दल बन रहे थे।

लाहौर में भी 'भारत माता' के नाम से एक संस्था बनी थी। यह संस्था युवकों की मनोवृत्ति बदलने का यत्न करने में लगी हुई थी।

पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र और एक सीमा तक मद्रास में भी यह कार्य होने लगा था।

इस आन्दोलन में साधारण आर्य-समाजी बहुत रुचि ले रहे थे; परन्तु आर्य-समाज में भी कुछ नेता ऐसे थे, जो स्वयं को, मठाधीशों के समान, निहित हितों के स्वामी मानने लगे थे। वे इस आन्दोलन से भयभीत थे। वास्तव में वे भी मैकॉले साहब की शिक्षा की उपज थे और उन्हें भी 'इण्डियन नैशनल कांग्रेस' के नेताओं की भाँति नये क्रान्तिकारी आन्दोलन से भय उत्पन्न होने लगा था।

आर्य-समाज के प्रधान के मन में यही भावना थी। लाखों रुपये की आर्य-समाज तथा डी० ए० वी० कालेज की सम्पत्ति की चिन्ता से ग्रसित हो, वे आर्य-समाज के मंत्री से नलिनीकान्त के विषय में चर्चा करने लगे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य जी ने कहा, "महात्मा जी !" प्रधान जी महात्मा जी के नाम से पुकारे जाते थे। सरदारीलाल जी कहने लगे, "यह युग-धर्म है। मेरा अभिप्राय है कि राजनीति, आज के काल की, चर्चा है, जिसका ज्ञान आर्य-समाजी जनता को कराना आवश्यक है।"

"परन्तु यह वक्ता तो डी० ए० वी० कालेज की भी निन्दा करने लगा है।"

वैद्य जी व्यापारी और व्यवसायी ढंग के व्यक्ति थे और वह आलोचना करने वालों को उत्तर देना जानते थे। उन्होंने कहा, "यदि नलिनीकान्त जी ने कुछ निन्दात्मक बात कही है और वह वस्तुस्थिति के विपरीत है तो उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अपने कालेज के स्नातक उनको अपने व्यवहार से झूठा सिद्ध कर देंगे और यदि उन्होंने वास्तविक दोष बताये हैं तो हमें उनको दूर करना चाहिये।"

"देखिये वैद्य जी ! जो कुछ यह बंगाली बाबू चाहता है, वह कालेज में हो नहीं सकता। यदि इसको प्रचार करने का अवसर दिया गया तो परिणाम यह निकलेगा कि जो कुछ हम कर रहे हैं, वह भी कर नहीं सकेंगे।"

वैद्य सरदारीलाल ने अपने सिर से बला टालने के लिये कह दिया, "महात्मा जी ! आप नलिनी बाबू से स्वयं बात कर लीजिये। इस प्रकार के प्रभावी वक्ता को आर्य-समाज अपने से बाहर निकाल कर ठीक नहीं करेगा।"

यद्यपि प्रधान जी को नलिनी से बात करनी उचित समझ नहीं आ रही थी, परन्तु वैद्य जी ने नलिनी को वहाँ ही बुला लिया। नलिनी अभी भवन के प्रांगण में, खड़ा अपने परिचितों से मेल-मुलाकात कर रहा था।

प्रधान महोदय वहीं सबके सामने नलिनी से बात करना नहीं चाहते थे। उन्होंने नलिनी को कह दिया, "मैं आपसे एक अत्यावश्यक विषय पर विचार करना चाहता हूँ। आप किसी समय मेरे निवास पर आइये, तो बात हो जायेगी।"

"आज्ञा करिये। किस दिन और किस समय आऊँ ?"

"किसी भी दिन कालेज के समय के उपरान्त आ जाइये।"

"आ जाऊँगा।"

प्रधान महोदय की आर्य-समाज में बहुत प्रतिष्ठा थी और उनका किसी भी आर्य समाज के सदस्य को विचार के लिये अपने घर पर बुलाना, उस सदस्य के लिये एक मान की बात समझी जाती थी। प्रधान जी के त्याग और तपस्या के जीवन के प्रति यह भावाञ्जलि ही समझी जाती थी।

: ३ :

साप्ताहिक अधिवेशन रविवार के दिन होता था और मंगल के दिन नलिनी-कान्त महात्मा जी के निवास-स्थान पर जा पहुँचा। महात्मा जी का निवास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान डी० ए० वी० कालेज के प्रांगण में ही था।

नलिनी का जलपान द्वारा सत्कार किया गया और फिर बात आरम्भ हो गई। महात्मा जी कहने लगे, "किसी व्यक्ति को मकान से धक्के दे-देकर बाहर निकाल देना, व्यक्ति के लिये एक भारी विपत्ति का सूचक होता है। यदि यह मकान व्यक्ति के जीवन-भर की कमाई से बना है तो यह और भी अधिक विपदा का कारण होगा।

"यही बात संस्थाओं की होती है। संस्थाएँ त्याग तथा तपस्या से निर्माण होती हैं और यदि उन संस्थाओं के त्याग और तपस्या से तैयार किये संस्थान बन्द कर दिये जायें तो यह संस्था के लिये एक विपत्ति का कारण हो जायेगा।"

नलिनी वार्ता आरम्भ होते ही समझ गया था कि उसके पिछले रविवार के व्याख्यान के विषय में बात हो रही है। वह प्रधान जी के विचारों को भली-भांति जानता था और उसे उनके त्याग और तपस्या के जीवन का भी ज्ञान था। अतः उसने मन में संकल्प कर लिया कि वह उनसे विवाद खड़ा नहीं करेगा। उसने अति विनीत-भाव में कहा, "तो उस दिन के व्याख्यान में कोई आपत्ति-जनक बात थी?"

"आपत्तिजनक कैसे कहूँ ? समाज के किसी नियमोपनियम तथा सिद्धान्तों के विरुद्ध तो थी नहीं। न ही वह स्वामी जी की शिक्षा के विपरीत थी, परन्तु प्रत्येक बात का अपना-अपना समय होता है। आज देश में राजनीति की चर्चा करना, अपने पाँव पर कुल्हाड़ी चलाने के सदृश है।

"मैं एक धार्मिक संस्था के विषय में कह रहा हूँ। किसी राजनीतिक संस्था की बात दूसरी है। वे संस्थाएँ घास-फूस की भाँति होती हैं, जिनकी जड़ें बहुत गहरी नहीं होतीं। साथ ही जहाँ से घास उखाड़ी जाये, पुनः वहाँ सुगमता से लगायी भी जा सकती है, परन्तु बरगद के वृक्ष तो शताब्दियों में ही बड़े किये जा सकते हैं। इनकी जड़ें भी बहुत गहराई तक गयी होती हैं। ऐसे वृक्ष को उखाड़ फेंकना, अत्यन्त हानि की बात हो सकती है। वहाँ की भूमि जहाँ वृक्ष लगा होता है, खोद कर विनष्ट करनी होती है। वह भूमि चिरकाल तक किसी काम की नहीं रह जाती।"

"पर महात्मा जी ! मैंने कोई ऐसी बात नहीं की, जो किसी बरगद के वृक्ष को उखाड़ने के समान मानी जाये।"

"नलिनी बाबू ! आपका उस दिन का व्याख्यान ऐसा था कि सरकार आर्य-समाज को बागी संस्था मान, इसको ताले भी लगा सकती है।"

"परन्तु मेरा व्याख्यान तो इतिहास का उल्लेख मात्र ही था। यह केवल घटना का वर्णन मात्र था।"

"ठीक है, परन्तु तुमने ब्रिटिश राज्य के कुछ गुण भी वर्णन कर दिये होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ भी कहा जा सकता था।"

नलिनी ने बात समाप्त करते हुए कहा, "यद्यपि मुझे यह समझ में नहीं आया कि मैंने आर्य-समाज के सिद्धान्तों के विपरीत कुछ भी कहा है, इस पर भी जब समाज के प्रधान जी कुछ बात कहते हैं तो उनकी बात समाज की बात ही मानी जानी चाहिये।

"महात्मा जी ! भविष्य में ध्यान रखूँगा कि ब्रिटिश सरकार की महिमा गान किये बिना अपनी कोई भी बात नहीं कहूँ ?"

"अपनी बात भी ऐसे शब्दों में कहनी चाहिये, जिससे अपना बना-बनाया काम बिगड़ न जाये। आपने उस दिन डी० ए० वी० कालेज के विषय में भी कुछ कहा था, जिससे उसकी महिमा कम होनी स्वाभाविक है।"

"परन्तु महात्मा जी ! मेरा संकेत कालेज के विषय में सुधार करने की ओर था।"

"जो आप चाहते हैं, वह हो नहीं सकता। अन्यथा हमें भी कालेज को, गुरुकुल की भाँति, किसी जंगल में ले जाना होगा। नगर में रहते हुए, नगर की जनता की आवश्यकताओं का ध्यान रखना आवश्यक है।"

"मेरा यह आशय नहीं था। मैं तो यह कह रहा हूँ कि यह स्वामी जी की कल्पना की शिक्षा नहीं है और यहाँ से तैयार हुए स्नातक, स्वामी जी की कल्पना के अनुसार नहीं होंगे।"

"यह हम जानते हैं। मेरा अभिप्राय है कि डी० ए० वी० कालेज की प्रबन्धक समिति इस बात को समझ रही है। यह कालेज अपनी प्रबन्धक समिति की कल्पना की शिक्षा दे रहा है और उस कल्पना के अनुसार स्नातक बन भी रहे हैं।"

"हम चाहते हैं कि सरकार के सब विभागों में उच्च-से-उच्च अधिकारी आर्य-समाजी हों और बिना किसी प्रकार की विशेष चिन्ता किये, सरकार की मशीनरी हमारे विचार की हो जाये।"

नलिनी जानता था कि ऐसा हो जाने पर भी, कुछ लाभ नहीं होगा। वे आर्य-समाजी, जो उच्च अधिकारी बनेंगे, वास्तविक रूप में आर्य-समाजी होंगे नहीं। इस पर उसने एक निवेदन और कर दिया। उसने कहा, "बात आपकी ठीक है, परन्तु मान लीजिये कि लाहौर के ओरियण्टल कालेज के प्रधानाचार्य आपके कालेज के एक स्नातक हो जाते हैं, परन्तु ये महानुभाव मैक्समूल्लर की भाँति यह मानने वाले हों कि वेदों में गो-मांस खाना लिखा है और उसमें लिंग तथा भग की पूजा लिखी है तो क्या लाभ होगा ?"

"ऐसा नहीं होगा। उसके संस्कार ऐसे होंगे कि मैक्समूल्लर झूठा है तो फिर वह वैसा क्यों मानेगा ! संस्कारों की महिमा स्वामी जी मानते थे और उसी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर हम अपना कार्य कर रहे हैं।"

"और कुछ फरमाइये! मैं भविष्य में आपकी आज की बात को स्मरण रखूंगा।"

"आप किसी शास्त्रीय विषय पर व्याख्यान दें तो आपकी योग्यता का आर्य-समाज भरपूर लाभ उठा सकता है। राजनीति आपका विषय नहीं है। इसमें आपको हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।"

"हां; एक बार संयुक्त प्रान्त के एक डिप्टी-कलैक्टर ने स्वामी जी को कहा था, 'आप जैसे निर्मल और धार्मिक विचारों वाले संन्यासी को, राजनीति की गन्दी नाली में हाथ नहीं डालना चाहिये।'

"स्वामी जी का उत्तर था, 'बिना हाथ डाले नाली साफ हो नहीं सकती और समाज में किसी भी स्थान पर गन्दगी रहने से भलाई की आशा नहीं की जा सकती।'

"अब आप भी ऐसा कह रहे हैं तो अवश्य बात विचारणीय हो गयी है।"

नलिनी ने प्रधान जी से छुट्टी ली और अपने घर जाते हुए यह निश्चय कर लिया कि भविष्य में वह आर्य-समाज में रुचि नहीं लेगा। वह समझता था कि वह स्वामी दयानन्द का भक्त है। समाज के नेता स्वामी जी के कितने अनुयायी हैं और कितने नहीं, यह उसके विचार करने का विषय नहीं है।

इस बात की प्रतिक्रिया ही थी, जो नलिनीकान्त ने युवक आर्य समाज के प्रधान बिहारीलाल को कहा था कि पहले अपने प्रिन्सिपल साहब से पूछ लो, वे मेरा व्याख्यान करायेंगे अथवा नहीं?

युवक सभा के प्रधान को प्रिन्सिपल साहब से मिलने का अवसर अभी नहीं मिला था कि डी० ए० वी० कालेज के लिये विरक्ति अथवा परीक्षा का काल आ गया।

लाला लाजपतराय, आरम्भ से ही कालेज के लिये धन एकत्रित करते रहे थे। वे सरकार द्वारा पकड़ कर किसी अज्ञात स्थान को भेज दिये गए। यह भी पता चला कि सरदार अजीतसिंह, जो 'भारत माता' संस्था के प्रधान थे, पकड़ लिये गए हैं और उनको भी कहीं बन्दी बना कर भेज दिया गया है।

नलिनीकान्त का बड़ा लड़का विजय 'भारत माता' का प्रमुख कार्यकर्त्ता था। वह पकड़ लिया गया था और उसके विपरीत 'हिज़ मैजिस्टी दि किंग ऐण्ड ऐम्परर' की सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के आरोप में मुकद्दमा चलने वाला था।

नलिनी का दूसरा लड़का आनन्दस्वरूप मिदनापुर की एक क्रान्तिकारी संस्था 'युगान्तर' का सदस्य था और 'भारत माता' संस्था को उसी स्तर की संस्था बनाने का यत्न कर रहा था, जिस स्तर की 'युगान्तर' संस्था थी। वह लापता हो गया था। उसके भी वारण्ट थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर में लाला लाजपतराय के पकड़े जाने के दिन, अनारकली बाज़ार में कुछ दुकानें पुलिस द्वारा ही लूट ली गई। और इस घटना के उपरान्त लाहौर में घोर आतंक छा गया।

विजय की पत्नी ललिता, बम्बई के एक गुजराती परिवार की लड़की थी। वह 'डिप्लोमा होल्डर' डाक्टर थी और बम्बई के स्त्रियों के हस्पताल में काम करती थी। उसके दो बच्चे थे और दोनों बम्बई में माँ के पास रहते थे।

विजय स्वयं देश-भर में घूमता-फिरता था। इस प्रकार पति-पत्नी अपना दाम्पत्य जीवन चला नहीं पा रहे थे। ललिता, बम्बई छोड़ना कठिन मानती थी। इसके विपरीत विजय यह समझ रहा था कि देश की तत्कालीन अवस्था में वह कभी भी पकड़ कर कैद किया जा सकता है अथवा फाँसी पर चढ़ाया जा सकता है। इस कारण ललिता से पृथक् रहने में ही वह कल्याण मानता था।

ललिता कई बार अपने पति को लिख चुकी थी कि उसे या तो बम्बई में आकर रहना चाहिये अन्यथा वह वहाँ की नौकरी छोड़, लाहौर आकर रहेगी। विजय बम्बई आने का आश्वासन देता रहता था, परन्तु वह अपने कार्य में व्यस्त होने के कारण जा नहीं सका था।

आखिर, ललिता ने हस्पताल से दो मास की छुट्टी माँगी। छुट्टी मिली नहीं तो उसने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और एक दिन अपने दोनों लड़कों को ले, वह लाहौर आ पहुँची।

सुवर्णा की माता कैदाराईन का देहान्त हो चुका था और उसकी भी पूर्ण सम्पत्ति सुवर्णा को मिल चुकी थी। इस प्रकार वह लखपति बन गयी थी।

नलिनी का कार्य पढ़ना और इतिहास पर लिखना था। वह अपना भुवाली वाला पुस्तकालय लाहौर ले आया था। कभी-कभी 'सिविल मिलिटरी गज़ट' और कलकत्ता के 'इंग्लिशमैन' में लेख भेजा करता था और वे छप जाया करते थे।

कलकत्ता से एक समाचार-पत्र 'अमृत बाज़ार पत्रिका' भी निकलने लगा था। उसमें उसके लेख प्रायः छपा करते थे।

लाहौर में उसने एक 'वैदिक विद्यालय' खोलने का प्रयास किया था। वह विद्यालय उसने अपनी कोठी में खोला था, परन्तु उसमें दस से अधिक विद्यार्थी कभी हुए नहीं और वे भी गुरुकुल कांगड़ी खुलने पर, वहाँ चले गये थे।

इस प्रकार उसका विद्यालय समाप्त हो गया और अब पति-पत्नी दोनों लेखन-कार्य करते थे। सुवर्णा ने तो उपनिषदों पर एक, ग्रन्थ अंग्रेज़ी में लिख कर लन्दन की एक प्रकाशक संस्था में छपवाया था। पुस्तक की यूरोप में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई थी।

नलिनी ने मध्य-कालीन भारत की सांस्कृतिक हलचल पर एक बृहत् ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा था और उसका एक संस्करण समाप्त हो चुका था। अब दूसरा संशोधित और परिवर्धित संस्करण तैयार हो रहा था।

घर के स्वतन्त्र विचारों में पले लड़के, हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के अभियान में सम्मिलित हो गये। दोनों को क्रान्तिकारी ढंग ही उचित प्रतीत हुआ था।

क्रान्तिकारी आन्दोलन चोटी पर पहुँच चुका था और पंजाब सरकार ने इसको कुचलने का अभियान सबसे पहले चलाया। प्रान्त-भर में पकड़-धकड़ आरम्भ हो गई। इसके साथ ही प्रान्त के गवर्नर महोदय ने मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को डरा-धमका कर आन्दोलन के विपरीत वातावरण तैयार करने का यत्न आरम्भ कर दिया।

: ४ :

नलिनीकान्त लाहौर के गुमटी बाज़ार से जा रहा था। चलते हुए किसी व्यक्ति ने उसकी बाँह पर हाथ रख कर कहा, "बाबू साहब! आपको वैद्य जी बुला रहे हैं।"

नलिनीकान्त ने घूमकर उस व्यक्ति की ओर देखा, जिसने उसके कन्धे को छूकर उक्त बात कही थी। वह वैद्य जी की दुकान पर दवाइयाँ कूटने वाला उनका नौकर था।

नलिनी लौट पड़ा और वैद्य जी के चिकित्सालय में आ पहुँचा।

"नलिनी बाबू! प्रधान जी से मिले थे?" वैद्य जी ने उसके आते ही पूछा।

"हाँ।"

"आप उसके बाद समाज में आये नहीं। इस कारण मैं जानने के लिये उत्सुक था कि क्या कहा है प्रधान जी ने?"

नलिनी वैद्य जी के सामने कुर्सी पर बैठ गया और अपनी प्रधान जी से भेंट का विवरण सुनाने लगा। जब वह भेंट का पूर्ण विवरण बता चुका तो वैद्य जी ने कहा, "पिछले साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त वह युवक मुझे मिला था। उसने मुझे बताया था कि कालेज के प्रिन्सिपल साहब ने आपके व्याख्यान की स्वीकृति नहीं दी। उनका कहना था कि सरकार बाबू का लड़का राज-द्रोह में पकड़ा गया है और सुना है कि उनके दूसरे लड़के के भी वारण्ट हैं। अत: उन लड़कों के पिता का कालेज के साथ सम्बन्ध कालेज को बदनाम कर देगा।"

"वैद्य जी!" नलिनी ने दीर्घ नि:श्वास छोड़ कर कहा, "मैं ऐसी ही आशा करता था। इसी कारण मैंने उस युवक को कहा था कि पहले प्रिन्सिपल साहब से पूछ लें, फिर मुझसे बात करे।"

"नलिनी बाबू! एक बात मैं और बताता हूँ। हमारी समाज के एक सदस्य हैं लाला लक्ष्मणदास। पन्द्रह दिन हुए, वे अपना मासिक चन्दा देने आये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 0 81·9143
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
GUR-D

जब मैं उनका चन्दा लेकर रजिस्टर पर चढ़ाने लगा तो मैंने देखा कि रजिस्टर में से 'एल' अक्षर से आरम्भ होने वाले नामों का पन्ना ही कटा हुआ है।

"मैंने चपरासी से पूछा तो वह कहने लगा कि एक दिन प्रोफेसर साहब आये थे और कार्यालय में कुछ देर तक बैठे रहे थे।

"मुझे सन्देह है कि 'एल' अक्षर वाला पन्ना भी प्रधान् जी की आज्ञा से फाड़ा गया है। इसका कारण यह है कि लाला लाजपतराय का नाम भी 'एल' अक्षर से आरम्भ होता है और लाला जी बन्दी बना लिये गए हैं। पुलिस को यह प्रमाण नहीं मिलना चाहिये कि वे समाज के सदस्य हैं।

"उसी दिन मैं प्रधान जी से मिला और मैंने उन्हें बताया कि कोई व्यक्ति रजिस्टर में से एक पन्ना फाड़ कर ले गया है।

"प्रधान जी ने रजिस्टर देखा और कह दिया कि यह काम खुफिया पुलिस के किसी व्यक्ति का प्रतीत होता है। ऐसा करिये कि नामों का नया रजिस्टर बना लीजिये।

"मैं इस बात का अर्थ नहीं समझ सका। इस पर प्रधान जी ने कह दिया, 'आप नये रजिस्टर में लाला लाजपतराय का नाम न लिखियेगा। कदाचित् उनके नाम के लिये ही खुफिया-पुलिस वाले पन्ना फाड़ कर ले गये हैं।'

"अब मैंने नया रजिस्टर बना लिया है और प्रधान जी की आज्ञा का पालन कर दिया है।"

नलिनी की हँसी निकल गयी। वैद्य सरदारीलाल भी हँसने लगे।

वैद्य जी ने आगे कहा, "मुझे आर्य-समाज का काम अब फीका-फीका दिखायी देने लगा है।"

"आर्य-समाज का काम तो फीका नहीं है। हाँ, आर्य-समाज कुछ फीकी हो गयी है। यह उसके नेताओं के वर्तमान शिक्षा से शिक्षित होने के कारण है। इस शिक्षा का केन्द्रीय लक्ष्य है, जीविकोपार्जन। और कालेजों के स्नातकों के मस्तिष्क में जीविका सर्वोपरि रहती है।

"देखिये, वैद्य जी! मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान को प्रान्त के गवर्नर ने बुलाया था और पूछा था कि आर्य-समाज का लाला लाजपतराय जी से क्या सम्बन्ध है?

"इस प्रश्न के उत्तर में प्रधान महोदय यह कह आये हैं कि लाला जी आर्य-समाज के सदस्य भी नहीं हैं। उनका डी० ए० वी० कालेज के साथ एक दान देने वाले के रूप में ही सम्बन्ध है। मैं समझता हूँ कि आर्य-समाज के रजिस्टर में चीर-फाड़, इसी बात को सत्य सिद्ध करने के लिये की गयी है।"

"आपके लड़के का क्या हुआ?"

—२

Central Library
167918
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक तो 'भारत माता' के कार्यालय में ही पकड़ लिया गया था और उस पर विद्रोह का मुकद्दमा चलाया जा रहा है। दूसरा लापता है और यह कहा जा रहा है कि उसके भी वारण्ट हैं।"

"आपको दुःख तो बहुत हुआ होगा ?"

"उनकी माँ कहती है कि वह अपने पुत्रों पर गर्व अनुभव करती है।"

"सत्य ?"

"हाँ; उसने अपने पूजा-गृह में अपने दोनों पुत्रों की स्मृति में दो घी के दीपक जला रखे हैं। वह कहती है कि दोनों दीपक अपने प्रकाश से उसके हृदय को प्रफुल्लित करते रहते हैं। दीपक दिन-रात जलते रहते हैं।"

लड़कों की माँ के इस मनोद्‌गार को सुनकर वैद्य जी की आँखों में आँसू छलक उठे। नलिनीकान्त ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा, "आपको विजय तथा आनन्द के समाचार पर दुःख हुआ है ?"

"नहीं, नलिनी जी ! मुझे आपके ऐसी वीरांगना पत्नी पाने पर प्रसन्नता हो रही है।"

विजय अप्रैल मास की सात तारीख को पकड़ा गया था और अब मई मास का आरम्भ आ गया था। विजय की पत्नी के बयान लेने पुलिस कोठी में आयी थी। आनन्द बम्बई में विजय की पत्नी से मिलने जाया करता था। पुलिस आनन्द-स्वरूप की खोज कर रही थी। इसी सम्बन्ध में विजय की पत्नी ललिता की खोज भी आरम्भ हो गयी।

जब पुलिस को पता चला कि आनन्द के भाई की पत्नी बम्बई में रहती है तो पुलिस ने उस मकान पर सफेदपोशों का पहरा बैठा दिया, जिसमें ललिता रहती थी। यद्यपि ललिता लाहौर चली आई थी, इस पर भी उसने अभी मकान नहीं छोड़ा था। वह समझ रही थी कि जब तक उसका त्याग-पत्र स्वीकार नहीं होता, उसे मकान नहीं छोड़ना चाहिये। क्या जाने उसे अभी नौकरी करनी पड़ जाये।

वह लाहौर इस कारण आयी थी, जिससे वह अपने पति को समझा कर बम्बई ले जाये। हस्पताल की नौकरी से उसने त्याग-पत्र दे दिया था और अब वह घर पर चिकित्सा-कार्य आरम्भ करने का विचार कर रही थी; परन्तु लाहौर पहुँचने पर उसे पता चला कि उसका पति पकड़ा गया है और उस पर राज-द्रोह का मुकद्दमा चलने वाला है। लाहौर में कोई अच्छा वकील क्रान्तिकारियों की वकालत करने के लिये मिला नहीं। अतः कलकत्ता से एक मिस्टर सेन को भारी फीस का प्रलोभन देकर मुकद्दमा लड़ने के लिये तैयार किया गया और वह कलकत्ता से लाहौर आता-जाता रहता था।

पुलिस ने 'भारत माता' संस्था के सात सदस्यों को पकड़ा था। विजय

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें एक था। पाँच अन्य सदस्यों के वारण्ट थे और उनकी खोज पुलिस कर रही थी।

बम्बई से पुलिस को पता चला कि ललिता देवी लाहौर चली गयी हैं। अतः बम्बई की खुफिया पुलिस लाहौर आ पहुँची। पुलिस इन्स्पैक्टर जब नलिनी की कोठी में पता करने आया तो उसका साक्षात्कार प्रज्ञा से हो गया। पुलिस-इन्स्पैक्टर ने प्रज्ञा को देखा तो विचार करने लगा कि उसने इस स्त्री को कहीं देखा है। वह अनुमान लगाने लगा कि कदाचित् यही ललिता देवी है और उसने उसे बम्बई में कहीं देखा होगा। इस कारण कोठी के वरामदे में खड़ा हो वह प्रज्ञा से पूछने लगा, "आप ललिता देवी हैं?"

प्रज्ञा ने मुस्कराते हुए कहा, "नहीं; ललिता से आपको क्या काम है?"

"मैं उसके बयान लेना चाहता हूँ।"

"ड्रायंग-रूम में बैठिये। मैं उसे बुलाती हूँ।"

प्रज्ञा इन्स्पैक्टर को देख, मुस्करा रही थी। वह उसे पहचान गयी थी, परन्तु वह बताना नहीं चाहती थी कि वह उसे कैसे जानती है।

जब प्रज्ञा ललिता को बुलाने के लिये जाने लगी तो इन्स्पैक्टर-पुलिस ने उसे जाने से रोक लिया। उसने कहा, "देखिये, आप यहीं ठहरिये। यहाँ कोई घण्टी हो तो उसे बजा कर ललिता जी को बुला दीजिये।"

"तो मुझसे भी आपको कुछ काम है?"

"आपका नाम क्या है?"

"प्रज्ञा। फरमाइये?"

"आप मुस्करा क्यों रही हैं?"

"क्या यह भी कानून से वर्जित है?"

"कानून से तो नहीं, पर यह मानव-स्वभाव के विपरीत है। पुलिस को देख, लोग मुस्कराते नहीं, भयभीत हो घबराते हैं।"

"बहुत घटिया लोगों से वास्ता पड़ा है आपका! तो क्या ललिता को बुलाने जाऊँ? घण्टी तो यहाँ है, परन्तु उसकी आवाज़ उसके कमरे तक जायेगी नहीं।"

"तो उस नौकरानी को भेज दीजिये।" इस समय बरामदे में घर का काम करने वाली मोहिनी आ खड़ी हुई थी। इन्स्पैक्टर ने उसकी ओर संकेत कर दिया।

"आप मुझसे अधिक उस नौकरानी का विश्वास करते प्रतीत होते हैं। खैर, यह आप जानें, आपका काम जाने।"

प्रज्ञा ने संकेत से मोहिनी को बुलाया और उसे कहा, "बम्बई से जो डाक्टर साहिबा आई हैं, उनको बुला लाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनको क्या कहूँ बहन जी ?"

"यही कि बम्बई से कोई रोगी उनसे मिलने आया है।"

जाँच करने आया व्यक्ति तो खुफिया पुलिस का इन्स्पैक्टर था और वह सामान्य वस्त्रों में था, परन्तु उसके साथ वर्दी पहने दो कान्स्टेबल थे। वे सरकारी रोब-दाब के लिये साथ थे।

मोहिनी रोगी का अर्थ नहीं समझी। वह विस्मय में आने वालों का मुख देखती रह गयी। फिर कुछ विचार कर चल दी। वह विचार कर रही थी कि वह बहू से वस्तुस्थिति बता देगी।

: ५ :

प्रज्ञा ने अब इन्स्पैक्टर को बैठने के लिये कह दिया। इन्स्पैक्टर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "मैं यह विचार कर रहा हूँ कि मैंने आपको कहीं देखा है ?"

"यह विचार करने का विषय नहीं है।" प्रज्ञा ने भी कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "यह तो स्मरण करने का विषय है।"

"एक ही बात है। आप बम्बई में रही हैं क्या ?"

"हाँ, रही तो हूँ।"

"कहाँ रही हैं ? वहाँ आपके रहने का स्थान कहाँ था ?"

"यह तो तब ही बताऊँगी जब आप मेरे बयान लेने आयेंगे।"

"मैं आनन्दस्वरूप की खोज में हूँ और उस खोज में जिस किसी के भी चाहूँ, बयान ले सकता हूँ।"

"मेरे रहने के स्थान का आनन्दस्वरूप के साथ सम्बन्ध नहीं है। मैं बम्बई में तब रहती थी, जब आनन्दस्वरूप पैदा भी नहीं हुआ था।"

"यह कब की बात है ?"

"सन् १८७८ से १८८४ तक मैं वहाँ रही हूँ।"

"आपके मायके वहाँ हैं या ससुराल ?"

"दोनों में से कुछ नहीं।"

"तो फिर आप वहाँ क्यों थीं ?"

प्रज्ञा कहने वाली थी कि इसका आनन्दस्वरूप की जाँच के साथ सम्बन्ध नहीं है, परन्तु इस समय ललिता आ गयी और पुलिस-कान्स्टेबलों को ड्रायंग-रूम के द्वार पर खड़ा देख, समझ गयी कि उसके पति से सम्बन्धित मामला है। वह आयी तो इन्स्पैक्टर ने ध्यान से उसे देखा और फिर एक कुर्सी की ओर संकेत कर कहा, "डाक्टर साहिबा ! बैठिये।"

ललिता बैठी तो इन्स्पैक्टर ने पूछना आरम्भ किया, "आप बम्बई से यहाँ चली क्यों आयी हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे अस्पताल की नौकरी पसन्द नहीं थी। इस कारण मैंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और उससे पूर्व दो मास की छुट्टी लेकर चली आयी हूँ।"

"आपके मकान को वहाँ ताला लगा है ?"

"हाँ; वहाँ पीछे रहने वाला कोई नहीं है।"

"उस मकान की तलाशी लेनी है।"

"मैं जून मास की पाँच से दस तारीख तक वहाँ जाने वाली हूँ।"

"आपको अपने वहाँ पहुँचने की सूचना पुलिस को देनी होगी।"

"इस बात की लिखित आज्ञा किसी अधिकारी के हस्ताक्षरों सहित मिलनी चाहिये। तब मैं वहाँ जाने की तारीख की सूचना भेज दूंगी।"

"आप लोग डरते क्यों नहीं हैं ?"

"किससे डरें ?"

"पुलिस से ?"

"तो क्या पुलिस वाले बहुत खराब आदमी होते हैं जो इनसे डरें ?"

पुलिस-इन्स्पैक्टर ने बात बदल दी। उसने पूछा, "आपको आनन्दस्वरूप कब मिला था ?"

"एक वर्ष से ऊपर हो चुका है।"

"हमें यह सूचना मिली है कि उसका बिस्तर और कुछ सामान वहाँ रखा है।"

"मेरी जानकारी में उसका वहाँ कुछ नहीं है।"

"हम उस मकान की तलाशी लेना चाहते हैं।"

"ठीक है। ले सकते हैं।"

"आप ब्राह्मण की लड़की हैं, परन्तु आपने एक 'मिक्स्ड ब्रीड' के व्यक्ति से विवाह किस कारण किया है ?"

"यह प्रश्न 'इर्-रैलेवैण्ट'[1] है। इसका उत्तर मैं नहीं दूंगी।"

"मैं आपका कमरा देखना चाहता हूँ।"

"बिना वारण्ट-तलाशी के आप उसे देख नहीं सकते।"

"यदि आप हमारी जाँच में रुकावट डालेंगी तो आप पर सरकार को सन्देह हो जायेगा और फिर आपको बहुत कष्ट होगा।"

"इस बात की आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।"

"हम ज़बरदस्ती भी तो तलाशी ले सकते हैं।"

"इस बात का उत्तर कि उस अवस्था में मुझे क्या करना चाहिये, अभी नहीं दे सकती।"

---

१. अप्रासंगिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय नलिनीकान्त आ गया। वह किसी काम से कोठी के बाहर गया हुआ था। कोठी के द्वार पर दो वर्दी पहने कान्स्टेबलों को खड़ा देख और कोठी के नौकरों को बरामदे की ओर झाँकते देख, वह अपने कमरे को जाता-जाता रुक कर वहीं आ गया।

सुवर्णा भुवाली गयी हुई थी। नलिनी विजय पर मुकद्दमा आरम्भ होने की प्रतीक्षा में लाहौर में ही ठहरा हुआ था।

वह बरामदे में आया तो प्रज्ञा ने इन्स्पैक्टर को कह दिया, "आनन्द जी के पिता आये हैं।"

इन्स्पैक्टर ने नलिनीकान्त को ध्यान से देखा और फिर कह दिया, "मैं आनन्दस्वरूप की खोज में लगा हुआ हूँ। उसी के सम्बन्ध में यहाँ आया हूँ।"

"ठीक है। अपना काम करिये।" इतना कह वह भी एक कुर्सी पर बैठ गया।

इन्स्पैक्टर उठ खड़ा हुआ और बोला, "मेरा काम समाप्त हो चुका है। एक बात मैं डाक्टर जी से कह रहा था कि यह मुझे अपने कमरे को देख लेने दें। यह कहती हैं कि बिना वारण्ट-तलाशी के यह देखने नहीं देंगी।"

"पर तुम उसे देखने के लिये बहुत उत्सुक हो?"

"मेरे काम से उसका सम्बन्ध है।"

"पुलिस-इन्स्पैक्टर के नाते तो नहीं स्वीकृति मिल सकती। हाँ, यदि अपना नाम लेकर कहो तो तुम्हें मैं पूर्ण कोठी दिखा सकता हूँ।"

इस पर पुलिस इन्सपैक्टर विस्मय में नलिनी का मुख देखने लगा। नलिनी भी मुस्करा रहा था। उसे नलिनी का मुख जाना हुआ प्रतीत नहीं हुआ।

इन्स्पैक्टर की दृष्टि पुनः प्रज्ञा पर जा पड़ी। वह भी मुस्करा रही थी। उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "मेरे नाम में क्या महिमा है?"

"कुछ है जो मैं तुमको बताना नहीं चाहता।"

"क्यों? मेरे ही नाम की महिमा मुझे ही बताना नहीं चाहते?"

"देखो ज्ञान! अपने पिता का नाम लेकर तुम इस घर में आ सकते हो और इसको देख सकते हो।"

"मेरे पिता के विषय में आप क्या जानते हैं?"

"वे बम्बई के एक विख्यात वकील थे और मद्य के अधिक सेवन करने के कारण अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गये थे।"

इन्स्पैक्टर के मुख पर विस्मय की मुद्रा आ विराजमान हुई। उसने पूछ लिया, "आप उनको कैसे जानते हैं?"

"तुम खुफिया पुलिस में हो। तुम्हें अपने पिता के इतिहास का तो ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना चाहिये। तुम, भला दूसरों की जाँच-पड़ताल कैसे करते होगे?"

"आपका नाम तो मैं जान चुका हूँ। यह भी जानता हूँ कि आपकी धर्म-पत्नी एक अंग्रेज़ महिला हैं; परन्तु आप मेरे पिता जी से परिचित थे, मैं नहीं जानता। मैंने आपको उनसे मिलने आते कभी नहीं देखा।"

"देखना तो चाहिये। खैर, छोड़ो इस बात को। बताओ, कोठी को देखना चाहते हो?"

"जी।"

"तो आओ।"

नलिनी इन्स्पैक्टर ज्ञानस्वरूप को कोठी के सब कमरे दिखाने ले गया। ज्ञानस्वरूप देख रहा था कि कमरों में फर्नीचर बहुत कम है और न ही कुछ अधिक तस्वीरें लगी थीं।

सबसे अन्त में नलिनीकान्त उसे प्रज्ञा के कमरे में लें गया। वहाँ प्रज्ञा का विवाह से पूर्व का चित्र लगा था। तब से अब में शरीर के आकार-विस्तार में बहुत अन्तर पड़ चुका था। ज्ञानस्वरूप चित्र को देख, ठिठक कर खड़ा रह गया। उसने नलिनी से पूछा, "यह किसका चित्र है?"

"इस कमरे में मेरी बहन प्रज्ञा देवी रहती हैं। यह चित्र उनका उस समय का है जब वे अभी विवाहित नहीं थीं।"

"यह वही हैं जो ड्रायंग-रूम में ललिता जी के साथ बैठी थीं?"

"हाँ।"

"इनका विवाह कहाँ हुआ था?"

"किसलिये पूछते हो?"

"हमारी कोठी में भी एक चित्र है। वह इस सामने वाले चित्र से बहुत कुछ मिलता है।"

"तुमने अपने पिता से कभी पूछा नहीं कि वह चित्र किसका है?"

ज्ञानस्वरूप नलिनी के प्रश्न का उत्तर दे नहीं सका। कारण यह कि उसको स्मरण था कि वह चित्र एक स्त्री का था, जो उस कोठी में रहती थी और वह उसे माता जी कह कर पुकारा करता था। उसने अपने पिता से एक बार उस चित्र को दिखा कर पूछा था, "माता जी कहाँ हैं?"

उसे स्मरण था कि झट से उसके मुख पर एक चपत लगी थी और उसे कहा गया था, "खबरदार, जो इस स्त्री के विषय में कभी कुछ पूछा तुमने।"

इसके उपरान्त उसने पूछने का कभी साहस नहीं किया था। उस स्त्री को जानने वाले नौकर निकाल दिये गए थे और तब कोठी में कोई नहीं था जो उस स्त्री के विषय में किसी प्रकार की जानकारी रखता हो।

नलिनी प्रश्न-भरी दृष्टि से इन्स्पैक्टर की ओर देख रहा था। ज्ञानस्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मस्तिष्क से कुरेद-कुरेद कर उस समय की बातें निकाल रहा था, जब वह स्त्री उनकी कोठी में रहती थी।

यह इन्स्पैक्टर प्रज्ञा का बड़ा लड़का ज्ञान था। मिस्टर दास ने प्रज्ञा के वहाँ से चले आने के उपरान्त एक ऐंग्लो-इण्डियन लड़की को 'हाउस कीपर' के रूप में घर पर रख लिया था और उसने ही घर के सब पुराने नौकरों को निकलवा दिया था। तदनन्तर उसने घर से उन सब वस्तुओं को हटवाने का यत्न किया था, जिनका सम्बन्ध दास के पूर्व जीवन से था।

दास की 'हाउस कीपर' का नाम मरियम कूपर था। वह एक थियेटर कम्पनी में काम करती थी। वहाँ से दास उसे अपने घर में, थियेटर से अधिक वेतन का लोभ देकर ले आया था। जब वह दास के घर उसकी पत्नी के रूप में रहने लगी तो उसने उन सब पुरानी स्मृतियों को विनष्ट करने का यत्न किया, जो उसके आने से पूर्व की थीं। प्रज्ञा का चित्र किसी पुस्तक के बीच में छिपा पड़ा रह गया था। वह पुस्तक ज्ञान के हाथ लगी तो चित्र उसने निकाल लिया। उसको ध्यान था कि यह चित्र उस स्त्री का है जिसे वह माता जी कहा करता था। उसने पिता से माता जी के विषय में पूछा था, परन्तु चाँटा पड़ने के बाद उसने कभी उस स्त्री का ध्यान नहीं किया था।

ज्ञानस्वरूप जब कुछ बड़ा हुआ तो वह मरियम कूपर और अपने पिता में सम्बन्धों को समझ गया था और उन्हीं सम्बन्धों के प्रकाश में वह उस स्त्री का पिता से सम्बन्ध का अनुमान लगा रहा था, जिसको वह अपने बाल्यकाल में माता जी कह कर पुकारा करता था।

ज्ञान को अपनी कोठी में प्राप्त हुए चित्र और उसके विषय में पूछने पर मुख पर चपत लगने की बात स्मरण आ गयी तो वह चुप कर गया। नलिनी ने उसे चुप देख, कह दिया, "यह देवी मेरी बहन है।"

ज्ञानस्वरूप वहाँ से चला आया, परन्तु उसके मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियाँ हरी-भरी हो रही थीं। उसे स्मरण आ रहा था कि उसके गले में एक सोने की 'चेन' थी। वह उसने अब अपने पिता को दे रखी थी। वह 'चेन' उस स्त्री के साथ सम्बन्धित थी, जिसका चित्र उसे अपने घर पर एक पुस्तक में मिला था।

लाहौर में वह एक पुलिस-अधिकारी के बंगले में ठहरा हुआ था। नलिनी की कोठी से वह वहाँ लौट गया और अपनी स्मृति से उस वार्त्तालाप को लिखने बैठ गया जो प्रज्ञा, ललिता और नलिनी से हुई थी। अपनी रिपोर्ट तैयार करते समय उसने वे बातें नहीं लिखीं, जो प्रज्ञा के विषय में हुई थीं।

इस पर भी रिपोर्ट तैयार करते समय वह प्रज्ञा के विषय में विचार करने लगा था। जब बाल्यकाल की बातें उसे स्मरण आने लगीं तो उसे ध्यान आया कि एक दिन कोठी के ड्रायंग-रूम में बहुत से लोग एकत्रित हुए थे और तब एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री जिसे वह माता जी कहा करता था, आँसुओं से भरी आँखों के साथ उसे गले से लगा, उसका मुख चूम, उसके गले में सोने की 'चेन' डाल, कहीं चली गयी थी। उसके साथ ही दूसरे लोग भी चले गये थे।

उस दिन की रिपोर्ट लिख, वह प्रज्ञा के विषय में विचार करता हुआ बैठा रह गया और किसी भी अन्य काम में चित्त नहीं लगा सका।

एकाएक उसको विश्वास हो गया कि वह उसकी माँ थी और किसी कारण से माँ की पिता जी से लड़ाई हो गयी होगी और वह चली आयी थी। कदाचित् उसे उसके पिता ने घर से निकाल दिया होगा।

वह मन में विचार करता था कि पिता ने क्यों माँ को निकाला होगा? माँ के उसके पिता के साथ कैसे सम्बन्ध थे, यह उसके विचार करने का विषय नहीं है; उसके लिये तो इतना ही पर्याप्त है कि वह उसकी माँ है।

मन के भावों के इस विश्लेषण पर पहुँचते ही वह पुनः नलिनी की कोठी में माँ को अपना परिचय देने चल पड़ा। वह इतना तो समझ गया था कि उसकी माँ ने उसे पहचान लिया है।

: ६ :

ज्ञानस्वरूप के चले जाने पर, उसके विषय में चर्चा चल पड़ी। नलिनी ने कहा, "मैं इसे कोठी दिखाने ले ही इसलिये गया था कि मैं इसे प्रज्ञा का तब का चित्र दिखाना चाहता था, जब यह अविवाहित थी। मुझे विश्वास था कि वह उस चित्र को देखकर अपनी माँ को स्मरण करने लगेगा।

"हुआ भी ऐसा ही। वह उस चित्र को देख प्रज्ञा के विषय में पूछने लगा। मैं समझता हूँ कि उसे सब-कुछ स्मरण आ गया है। वह जब यहाँ से गया था तो गम्भीर मुख बनाये हुए था।"

इस समय घर के सब लोग कोठी के बरामदे में बैठे चाय ले रहे थे। मई मास में लाहौर में पर्याप्त गर्मी हो रही थी और बाहर की गर्मी को रोकने के लिये बरामदे में पर्देदार चिकें लगी हुई थीं।

प्रज्ञा ने ज्ञान को देखने पर अपने मन पर हुई प्रतिक्रिया का वर्णन कर दिया। उसने कहा, "मैं तो उसे देखते ही पहचान गई थी। क्या विडम्बना है कि परिवार का एक युवक देश को स्वतन्त्र करने के लिये जीवन की बाज़ी लगाये हुए है और दूसरा, उसका भाई ही, उसे पकड़, फांसी दिलवाने का यत्न कर रहा है। यह देख मेरी मुस्कराहट निकल गई।

"वह मेरे मुस्कराने को देख, विस्मय कर रहा था। उसने पूछा भी था कि मैं मुस्करा क्यों रही हूँ? मैंने यह कह कर बात टाल दी कि मुस्कराना कानून से वर्जित नहीं है। वह कहता था कि मानव-स्वभाव है कि पुलिस को देख लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरते हैं और गम्भीर हो जाते हैं। इस पर मैंने कह दिया कि उसका बहुत घटिया प्रकार के लोगों से वास्ता पड़ा है।

"मेरे मन में भी आया था कि मैं उसे अपना परिचय दे दूं, परन्तु उसकी बुद्धि की जड़ता देख, मेरा मन कठोर होता गया और जब उसने कहा कि वह ललिता का कमरा ज़बरदस्ती भी देख सकता है तो मैं उसको नमक की ख़ान में नमक हो गया मानने लगी थी।

"अब मैं समझती हूँ कि मैंने उसको अपना परिचय नहीं दिया तो ठीक ही किया है।"

"प्रज्ञा ! परिचय तो वह तुम्हारा पा गया है। यद्यपि किसी ने मुख से तो नहीं बताया, परन्तु तुम्हारे चित्र ने सब रहस्य खोल दिया प्रतीत होता है।"

"ज़ब मैं बम्बई से आयी थी तो यह छः वर्ष का था। तब की बात इसे कुछ तो स्मरण होनी चाहिये थी।"

नलिनी ने गम्भीर भाव में अपने मन की प्रतिक्रिया बता दी। उसने कहा, "जब मनुष्य की पूर्ण शिक्षा-दीक्षा का आधार जीविकोपार्जन हो तो फिर जीवन की धुरि धन हो जाती है। तदनन्तर जीवन की प्रत्येक गतिविधि धन के केन्द्र पर घूमने लगती है। ऐसा होने पर भाई-बहन, माँ-पुत्र, बाप-बेटा तक भी परस्पर शत्रुता करने लगते हैं। जीवन की महत्ता बढ़ने से मनुष्य स्वार्थी और फिर मूर्ख हो जाता है।

"इस शिक्षा ने न केवल परिवारों में वैमनस्य उत्पन्न किया है, वरन् देश में बसे घटकों में भी प्रान्त, नगर यहाँ तक कि मोहल्ले के रहने वालों में भी सहिष्णुता नहीं रहने दी। केवल जीना ही रह गया है।

"इस परस्पर फूट और द्वेष का परिणाम ही यह हुआ है कि हम दासता से मुक्त होने में नहीं आते।"

वे अभी चाय ले ही रहे थे कि बाहर एक फिटन गाड़ी कोठी की ड्योढ़ी में आकर खड़ी हो गयी। सबका ध्यान बाहर को चला गया।

कोठी का माली ही चपरासी का काम भी कर दिया करता था। वह गाड़ी देख वहाँ आ पहुँचा और कहने लगा, "वही सुबह वाला आदमी है, जो पुलिस के सिपाहियों के साथ आया था।"

"अब कितने पुलिस वाले उसके साथ हैं ?" नलिनी का विचार था कि अब वह किसी को हिरासत में लेने के लिये आया होगा।

माली ने बताया, "साहब ! अकेला ही है।"

"तो उसे भीतर ले आओ।"

माली बाहर चला गया। प्रज्ञा प्रश्न-भरी दृष्टि में नलिनी की ओर देखने लगी। नलिनी ने इसका अभिप्राय समझ कह दिया, "मैं समझ रहा हूँ कि अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपनी माँ से मिलने आया है।"

इस समय ज्ञानस्वरूप बरामदे में आया तो उसे वहाँ अन्धेरे में कुछ दिखायी नहीं दिया। बाहर बहुत प्रकाश था। दो क्षण तक वह बरामदे में खड़ा रहा और वहाँ के धुँधले प्रकाश में अभी कुछ देख सकने का यत्न ही कर रहा था कि नलिनी ने आवाज़ दे दी,—"ज्ञानस्वरूप जी ! इधर आ जाइये। अब कैसे आना हुआ है ?"

ज्ञानस्वरूप आवाज़ की ओर बढ़ा और सबके समीप आ बोला, "मैं सुबह कुछ भूल गया था। अब उसे स्मरण कर आया हूँ।"

"इधर बैठ जाओ।" नलिनी ने समीप एक खाली रखी कुर्सी की ओर संकेत कर दिया।

ज्ञानस्वरूप ने बैठते ही कहा, "प्रातः मैं पुलिस-अफसर था और अब मैं माँ का पुत्र बन, क्षमा माँगने आया हूँ कि मैं तब पहचान नहीं सका।"

सब हँसने लगे। ललिता ने कहा, "हम यही बातें कर रहे थे कि एक खुफिया पुलिक का अफसर बहुत पतली स्मृति रखता है।"

"पतली स्मृति नहीं, मोटी बुद्धि कह सकते हैं।"

"खैर," प्रज्ञा ने कह दिया, "जल्दी ही स्मरण आ गया है। बताओ, तुम्हारे पिता तुम्हें कितना कुछ दे गये हैं ?"

"उनके देहान्त के समय हम कर्ज़े में दबे हुए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि वह 'हाउस कीपर' मरियम, जो उनके पास रहती थी, उनका सब-कुछ ले गयी थी।

"पिता जी के नाम का कोई खाता किसी भी बैंक में नहीं था। सब खाते उस स्त्री ने अपने नाम करा लिये प्रतीत होते थे। वैसे घर में भी कुछ नहीं निकला। जब हम पिता जी को दफना कर घर लौटे तो वह अपना सूटकेस उठा, वहाँ से चल दी। उसने जाने से पूर्व साहब-सलामत भी नहीं की। हम दोनों भाई मुख देखते रह गये थे।"

"कष्ट तो बहुत हुआ होगा ?"

"हाँ, हुआ तो था। परन्तु इतना नहीं कि हम भूखे मर जाते। तब तक मेरी नौकरी लग चुकी थी। मैं खुफिया पुलिस में सब-इन्स्पैक्टर लग चुका था और वेतन लाने लगा था।

"अब स्थिति यह है कि छोटा भाई प्रभाकर लन्दन में एक पारसी फर्म में नौकर हो चुका है। उसने वहीं एक अंग्रेज़ लड़की से विवाह कर लिया है। उसकी एक लड़की भी है।"

"और तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?"

"मैंने अपने समुदाय में ही विवाह किया है। एक ईसाई परिवार की लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह नेक और धार्मिक विचारों की है और उसने अभी तक मुझे दो बच्चे दिये हैं। हम अभी भी उसी कोठी में रहते हैं जिसमें पापा रहते थे।"

"कभी फिर इधर आना हुआ तो बीवी को लेते आना।" प्रज्ञा ने कहा।

"पर मैं तो यह विचार कर आया हूँ कि आपको बम्बई चलने का निमन्त्रण दूं और आपको अपने पोतों में चलकर रहने के लिये कहूँ।"

"जानते हो कि मैं तुम्हारे पिता के पास क्यों नहीं रहती थी ?"

ज्ञानस्वरूप विचार कर रहा था कि पति-पत्नी में झगड़ा एक ही बात पर हो सकता है। और वह बात हैं पति का पत्नी की निष्ठा पर सन्देह। अन्य सब बातें पति-पत्नी सम्वन्ध में वह गौण समझता था। इस कारण उसने कह दिया, "मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं। सन्तान को अपने पिता के विषय में सन्देह हो सकता है, परन्तु मां के विषय में तो सन्देह के लिये स्थान ही नहीं होता।

"आप मेरी माँ हैं। मेरे लिये यह जानना ही पर्याप्त है। प्रातःकाल आपके कमरे में लगा आपका चित्र देख, मैं समझ गया था कि वह चित्र उसी का है, जिसका चित्र मुझे एक पुस्तक में मिला था और जिसे मैं कभी माता जी कहता था।

"लाहौर में मैं पुलिस-इन्स्पैक्टर चौधरी मुश्ताक अहमद की कोठी पर ठहरा हूँ। वहाँ कई घण्टे के सोच-विचार के उपरान्त मैं सब समझ गया और फिर आपको बम्बई साथ ले चलने का विचार बना कर ही यहाँ आया हूँ।"

"नहीं ज्ञान ! तुम कुछ गलत समझ रहे हो। तुम अपने पिता की सन्तान हो। शरीर अवश्य माँ निर्माण करती है, परन्तु मन और बुद्धि पिता के ही होते हैं। मन और बुद्धि ही मनुष्य हैं। शरीर तो पशु का-सा ही होता है।

"अत: जिस कारण तुम्हारे पिता ने मुझे घर से निकाला था, तुम भी निकाल दोगे। मैं ईसाई मत को नहीं मानती। विवाह गिरजाघर में होने पर भी मैं हिन्दू ही रही थी। यह बात तुम्हारे पिता को पसन्द नहीं थी।

"अन्तिम झगड़े के समय यही विवाद का विषय था। वे चाहते थे कि मैं पोप को लिखूं कि तुम्हारे पिता को मैं तलाक देना चाहती हूँ। मेरा कहना था कि हिन्दुओं में स्त्री पति को छोड़ नहीं सकती। हिन्दुओं में विवाह टूट नहीं सकता। एक बार विवाह हुआ तो बस जीवन-भर के लिये हो गया।

"अन्य बातें भी थीं जो मुझमें हिन्दुओं की-सी थीं। तुम्हारे पिता को वे पसन्द नहीं आयीं और उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया था।

"मैं वही बात दोहरायी जानी पसन्द नहीं करती। यदि तुम अपनी वहू को यहाँ लाओगे तो मैं उसे भेंट में कुछ दूंगी।"

ज्ञानस्वरूप बहुत देर आँखें मूंदे विचार करता रहा। वह सोच रहा था कि उसकी पत्नी मीनाक्षी भी कट्टर ईसाई है। अत: वह अपनी हिन्दू सास को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में देख, कैसा अनुभव करेगी, वह समझ नहीं सका। इस कारण उसने कह दिया, "आप ठीक कहती हैं। घर में केवल मैं ही नहीं हूँ। घर में ईसाई-धर्म में निष्ठा रखने वाली मेरी पत्नी है और वहाँ कहीं कोई ठाकुर जी की पूजा करने वाली आ गयी तो वह आग-बबूला हो, घर छोड़ भी सकती है।"

'इसीलिये मैं कहती हूँ कि मैं अब उस कोठी में नहीं जा सकती।"

"अच्छा, मैं अपनी पत्नी को यहाँ लाऊँगा। विजय के मुकद्दमे के सम्बन्ध में तो कई बार आना-जाना होगा।"

"हाँ, यही ठीक रहेगा।"

मोहिनी संकेत पा, ज्ञानस्वरूप के सामने एक चाय का प्याला और प्लेट में पापड़ रख गयी।

नलिनी ने कुछ विचार कर पूछ लिया, "ज्ञान! चौधरी साहब से कब से जान-पहचान है?"

"कौन चौधरी साहब?"

"यही, जिनकी कोठी पर तुम ठहरे हो। मेरा अभिप्राय चौधरी मुश्ताक अहमद से है।"

"कुछ विशेष परिचय नहीं है। मैं जब बम्बई से चलने लगा था तो मेरे एक साथी ने चौधरी साहब के नाम एक पत्र लिख दिया था जिससे मुझे यहाँ रहने की सुविधा हो सके।"

"तो एक बात सुन लो।"

"जी, फरमाइये!"

"हमारे साथ अपने सम्बन्ध की बात उन्हें मत बताना। यहाँ दोबारा आने का कुछ बहाना बना देना। अन्यथा नौकरी से हाथ धुल जायेंगे।"

"आप चौधरी साहब के विषय में क्या जानते हैं?"

"वह अलीगढ़ मुस्लिम ओरियण्टल कालेज का स्नातक है और आजकल अलीगढ़ कालेज के लोग ब्रिटिश अफसरों के मन पर यह प्रभाव जमाने का यत्न कर रहे हैं कि ब्रिटिश सरकार का मुसलमानों से बड़ा कोई वफादार नहीं है।"

"हाँ, मेरे वहाँ के साथी ने भी यही बात बतायी है। वह भी उसी कालेज का पढ़ा हुआ है। उसका कहना है कि मुसलमान अंग्रेज़ी राज्य के परम-भक्त हैं।"

"इनके मुख में लहू लग गया है।" नलिनी ने समझाते हुए कहा, "पिछले वर्ष वाइसराय ने मुसलमानों को यह आश्वासन दिया था कि ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तान में मुसलमानों को एक वफादार कौम मानती है और सरकार का निश्चय है कि मुसलमानों के इस आचार-विचार को ध्यान में रखा जायेगा।

"इस कारण मुसलमानों को उनके नेता लोग कह रहे हैं कि उनका कल्याण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी में है कि वे इंगलैण्ड के शहंशाह की वफादार रियाया बन कर रहें।"

"परन्तु मामा जी !" ज्ञान अब सबको अपना सम्बन्धी मान सम्बोधन कर रहा था, "अनेकों हिन्दू भी हैं जो अपने को सरकार की वफादार प्रजा मान कर गर्व अनुभव करते हैं।

"हमारे बम्बई में एक फिरोज़शाह मेहता हैं। वे एक दिन गोकुलदास कालेज के भवन में व्याख्यान देते हुए कह रहे थे कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य बना रहना चाहिये। हिन्दुस्तान के हित में यही है कि अंग्रेज़ यहाँ राज्य करता रहे।"

"फिरोज़शाह मेहता तो पारसी हैं, परन्तु मैं कई हिन्दुओं को जानता हूँ जो इसी विचार के हैं। इस पर भी इस देश में एक बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू हैं जो अंग्रेज़ी राज्य को यहाँ एक क्षण भी रहने देना हानिकर मानते हैं।"

"पर ऐसा क्यों है ?"

"इसके कई कारण हैं। मेरे एक गुरु जी रहे हैं। वे कहा करते थे कि हिन्दुओं का धर्म, हिन्दुओं की संस्कृति और उनका ज्ञान-विज्ञान संसार-भर में श्रेष्ठ है। विदेशीय राज्य उसे नष्ट कर रहा है। उसको नष्ट होने से बचाने के लिये यहाँ स्वराज्य होना चाहिये।"

"क्या होना चाहिये ?" ज्ञान के लिये स्वराज्य ग्रीक अथवा लेटिन भाषा के शब्द के समान था। वह इसे समझ नहीं सका।

नलिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "इसका अर्थ है अपना राज्य।"

"पर मामा जी ! हिन्दुओं की भी कोई संस्कृति है ? बम्बई में अब प्रायः सब देशों के लोग कहते हैं। वहाँ मद्रासी रहते हैं, बंगाली रहते हैं, पंजाबी रहते हैं, फिर गुजराती और महाराष्ट्रियन तो बहुत बड़ी संख्या में हैं। इन सबकी संस्कृति भिन्न-भिन्न है ! कोई विट्ठल की पूजा करता है तो कोई काली की। कोई मांस, अण्डे इत्यादि सब-कुछ खा जाता है तो कोई जल भी छान कर पीता है कि कहीं कोई कीटाणु मुख में न चला जाये। बंगाली लम्बी टखनों तक धोती पहनते हैं और लखनऊ की तरफ के घुटनों तक पहनते हैं। गुजराती स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं और पंजाब की स्त्रियाँ सलवार। मद्रास के ब्राह्मण माथे पर तीन रेखाओं वाला तिलक लगाते हैं और बनारस के ब्राह्मण गोल तिलक लगाते हैं। महाराष्ट्रियन ब्राह्मण तो लेटा हुआ तिलक लगाते हैं।"

नलिनी ज्ञान की बात सुन, मुस्करा रहा था। जब वह कह चुका तो उसने पूछ लिया, "तो तुम बंगाल, मद्रास और महाराष्ट्र को देश मानते हो ?"

ज्ञान को इस प्रश्न पर विस्मय हुआ और उसने पूछ लिया, "तो वे देश नहीं हैं क्या ?"

"देश क्या होता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जहाँ एक जाति रहती हो ?"

"और जाति क्या होती है ?"

"जाति······जाति······भला यह भी आप नहीं समझते ? हिन्दू जाति है, मुसलमान जाति है, ईसाई, पारसी, पंजाबी, गुजराती। ये सब जातियाँ ही तो हैं।"

"देखो ज्ञान ! कौन-सी परीक्षा पास की है तुमने ?"

"मैं बम्बई विश्वविद्यालय का स्नातक हूँ।"

"जानते हो कि जाति किस भाषा का शब्द है ?"

"यह हिन्दुस्तान की सब भाषाओं में है। गुजराती, मराठी तो मैं भली-भाँति समझ लेता हूँ। कुछ-कुछ तेलुगू और हिन्दी भी समझता हूँ। जाति शब्द सब हिन्दुस्तानी भाषाओं में प्रयोग होता है।"

"तो इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि यह शब्द इनमें से किसी भाषा का नहीं, वरन् यह किसी ऐसी भाषा का शब्द है, जिसके शब्द इन सब भाषाओं में लिये गए हैं।"

ज्ञान बेचारा इस बात के विषय में कुछ नहीं जानता था और वह मुख देखता रह गया। नलिनी ने बताया, "यहाँ एक भाषा है संस्कृत। जाति उस भाषा का शब्द है और इसके अन्य अनेकों शब्द, जाति शब्द की भाँति हिन्दुस्तानी भाषाओं में ले लिये गए हैं।

"यह भी कहा जाता है कि सब हिन्दुस्तानी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है और यही कारण है कि संस्कृत के शब्द इन सब भाषाओं में पाये जाते हैं।

"जाति भी एक ऐसा ही शब्द है। इसका अर्थ है, जो जन्म से मिले। जन्म से तो सब मनुष्य एक-समान होते हैं। इस कारण मानव एक जाति है। इसके विपरीत कुत्ता, बिल्ली, गधा, घोड़ा, तोता, मैना इत्यादि जातियाँ भी जन्म से हैं। ये मनुष्य से भिन्न हैं।

"इससे यह पता चला कि मनुष्य एक जाति है। मद्रासी, बंगाली इत्यादि जातियाँ नहीं हैं। अतएव मद्रास, बंगाल आदि भिन्न-भिन्न देश नहीं हैं।

"रही बात संस्कृति की। धोती, कुर्ता, तिलक, छाप, काली, विट्ठल इत्यादि संस्कृति नहीं है। ये सभ्यता के लक्षण हैं।

"सभ्यता से जातियाँ नहीं बनतीं। जातियाँ धर्म और संस्कृति से बनती हैं; यदि सभ्यता से मानें तो मैं कहूँगा कि पिता और पुत्र में भिन्न-भिन्न जातियाँ हो जायेंगी। सभ्यता से तो पिता-पुत्र में जाति-भेद हो सकता है। मनुष्य जाति में सामान्य रूप में और हिन्दू जाति में विशेष रूप में इस सृष्टि के बनाने वाला एक परमात्मा, गौड, जहोवा, खुदा इत्यादि नामों वाला माना जाता है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य-जाति की संस्कृति का एक लक्षण है । इसी प्रकार मनुष्य प्रायः यह समझते हैं कि जैसे कर्म हम करेंगे, वैसा फल हमें मिलेगा । यह संस्कृति का दूसरा लक्षण है । इसी प्रकार और भी हैं । जैसे, मनुष्य अपने बड़ों का मान करता है । यह मानव संस्कृति का तीसरा लक्षण है । विद्वानों का मान करना भी संस्कृति का एक लक्षण है ।

"तुम गिरजाघर में जाकर परमात्मा का स्मरण करो अथवा मन्दिर में बैठकर; तुम मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ो अथवा ठाकुरद्वारे में आरती गाओ; ये सभ्यता के लक्षण हैं । यह ऐसे ही है जैसे पेट भरने के लिये कोई चावल खाता है तो कोई रोटी । संस्कृति है परमात्मा में विश्वास ।

"मैं तो यह कह रहा था कि हिन्दुओं में संस्कृति का स्वरूप संसार-भर की संस्कृतियों के स्वरूप से श्रेष्ठ है और वह स्वरूप सब हिन्दुओं में समान-रूप से पाया जाता है ।"

नलिनी की बातों में ज्ञान की रुचि नहीं थी । इस कारण वह जंभाई लेने लगा था । इस पर उसे लज्जा अनुभव हुई तो उसने एक प्याला गरम-गरम चाय बनाई और पीकर चुस्त होने का यत्न किया ।

नलिनी ने बात समाप्त करते हुए कहा, "कुछ भी हो, यदि तुमको पुलिस के महकमा में रहना है तो तुम अपने होस्ट को नहीं बताना कि तुम्हारी माता जी हमारे यहाँ रहती हैं ।"

ज्ञान ने भी बात बदल कर कह दिया, "मामा जी ! धन्यवाद है । मैं ध्यान रखूंगा ।"

"हाँ, और अब तुम जा सकते हो । मैं कुछ अधिक गरिष्ठ तुम्हारे खाने का दे रहा था ।"

"गरिष्ठ ? अभी तो आपने पापड़ ही दिये हैं । वे स्वादिष्ट तो हैं, परन्तु गरिष्ठ नहीं कहे जा सकते ।"

नलिनी हँस पड़ा । उसने कहा, "गरिष्ठ तो थे और कदाचित् करारे मसालेदार नहीं थे । इसी से तुमको जंभाई आने लगी थी ।

"अब तुम जा सकते हो । यहाँ कुछ अन्य लोग आने वाले हैं । कहीं कोई तुम्हें पहचान न ले और तुम्हारी रिपोर्ट यहाँ के सरकारी उच्च अधिकारियों से न कर दे ।"

ज्ञान ने प्रज्ञा की ओर देखकर कहा, "माता जी ! अभी तो मैं दो-तीन दिन तक यहाँ हूँ । जाने से पूर्व पुनः दर्शन करने का यत्न करूँगा ।"

इतना कह ज्ञान अपनी फिटन गाड़ी में बैठ, चला गया । यह फिटन गाड़ी चौधरी मुश्ताक अहमद साहब की ही थी । चौधरी साहब ने वह गाड़ी अपने मेहमान के प्रयोग के लिये दे रखी थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी साहब की कोठी को जाते हुए ज्ञानस्वरूप नलिनी के सुझाव पर विचार कर रहा था। नलिनी ने कहा था कि उसे उनके साथ अपने सम्बन्ध की बात नहीं बतानी चाहिये और इस समय दोबारा उनकी कोठी पर आने का कोई बहाना बना देना चाहिये।

पुलिस-इन्स्पैक्टर का वेतन तो साठ रुपये महीना होता था, परन्तु चौधरी साहब अपने-आपको लाहौर के समीप के एक ज़मींदार के पुत्र विख्यात कर एक आलीशान कोठी में रहते थे और अपनी घोड़ा-गाड़ी रखते थे। वह इस घोड़ा-गाड़ी को समय-समय पर अफसरों को सवारी के लिये देकर उनको प्रसन्न भी करते रहते थे।

इस कारण ज्ञान उनकी कोठी की शानो-शौकत देख तथा रहन-सहन में रईसी का रंग देख समझ रहा था कि उनकी ज़मींदारी की आय ही उनकी सहायक है।

परन्तु बात कुछ दूसरी थी। रिश्वत से मिलने वाले धन को प्रयोग करने का जमींदारी तो एक बहाना मात्र था।

जब ज्ञानस्वरूप चला गया तो प्रज्ञा हँस कर कहने लगी, "भैया ! कितना अन्तर पड़ गया है इसकी बुद्धि में ! उन दिनों यह स्कूल में अपनी श्रेणी में सबसे अधिक प्रतिभाशाली विद्यार्थी समझा जाता था और अब तो यह जड़-बुद्धि दिखायी दिया है। इसे छः घण्टे लगे हैं अपनी माँ को स्मरण करने में, और फिर कितनी सुगमता से यह अनुमान लगा बैठा था कि इसकी माँ इसके पिता के प्रति अनिष्ठावान पत्नी थी।"

नलिनीकान्त को भी ज्ञान की यह बात खटकी थी। वह कल्पना कर रहा था कि प्रज्ञा को अपने लड़के के ही उसके चरित्र पर सन्देह करते सुन, कितना दुःख हुआ होगा ! अब उसके कथन को सुन, वह स्वयं भी दुःख अनुभव करने लगा।

इस पर भी इस घटना का दार्शनिक विश्लेषण करते हुए उसने कहा, "प्रज्ञा बहन ! यह तो उस समाज का प्रभाव है, जिसमें वह पला और बड़ा हुआ है। ईसाई समाज में दो बातें हैं, जिनसे उसके घटकों की बुद्धि का विकास सीमित ही रहता है। एक है लड़के-लड़कियों का स्वतन्त्रता से परस्पर मिलना-जुलना। इससे विवाह के अतिरिक्त यौन-सम्बन्ध बनते रहते हैं और इनका बुद्धि के विकास पर भारी प्रभाव पड़ता है।

"दूसरी बात है, बहुत अल्पायु में मद्य का सेवन। मजेदार बात यह है कि इन बातों को यूरोप की समाज में अवगुण के स्थान, गुण माना जाता है।

"पुरुष-स्त्रियों के अबाध मेल-जोल का एक अन्य परिणाम निकलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह है विषयों के चिन्तन में छूट। विषयों के चिन्तन से कामनायें उत्पन्न होती हैं और कामनाओं से जीवन-वासनाओं के पीछे भाग खड़ा होता है। यह बुद्धि को कुण्ठित करने में बहुत सीमा तक सहायक होता है।"

"मैं अब विचार करती हूँ कि मिस्टर दास को छोड़ते समय यदि मैं यह शर्त रख देती कि बच्चे मेरे साथ रहेंगे तो वह मान जाता और इनका कल्याण हो जाता।"

"हाँ, यह तो है। मैं भी उस समय विस्मय करता था कि तुम अपने हृदय की पुकार के विपरीत कैसे बच्चों को उस निर्बुद्धि के पास छोड़ कर चली आयी हो; परन्तु उस समय विचार करने का समय ही नहीं था। सब-कुछ इतनी जल्दी-जल्दी निश्चय हुआ था कि हममें से कोई भी कुछ कह नहीं सका।"

"मैं तब की बात स्मरण करती हूँ तो अपने मन की एक भावना ही इस भूल में कारण प्रतीत हुई है। मैं मिस्टर दास से सदा का सम्बन्ध तोड़ देना चाहती थी। अब विचार करती हूँ तो मुझे यह प्रतीत होता है कि यह भी मेरी निपट स्वार्थपरता थी। मैं अपना पितृ-ऋण चुकाने में संकोच कर गयी थी। गृहस्थ का सुख-भोग किया था, परन्तु उसके उत्तरदायित्व को निभा नहीं सकी थी।"

"मैं समझता हूँ कि अभी भी समय है। कुछ तो इस दिशा में किया ही जा सकता है।"

"इसका अर्थ है कि मैं इनसे सम्पर्क बनाऊँ?"

"मेरे कहने का यही अभिप्राय है। मिस्टर दास से सम्पर्क रखने की बात दूसरी थी, परन्तु अपने पुत्र से सम्पर्क का अर्थ तो शुद्ध, पवित्र पितृ-ऋण से मुक्ति प्राप्त करना ही होगा।"

प्रज्ञा कुछ देर तक अन्तर-ध्यान हो, विचार करती रही और उसने इस दिशा में यत्न करने का संकल्प बना लिया।

नलिनी का कहना था, "यह दो प्रकार की विचारधाराओं की टक्कर है। एक ओर तुम हो, जिस पर अर्थ उपलब्धि के हेतु दी जाने वाली शिक्षा की छाया नहीं पड़ी और पण्डितायिन इन्द्राणी और फिर उपनिषद्-शास्त्र की ज्ञाता सुवर्णा का प्रभाव बहुत गहरा पड़ा है और दूसरी ओर अंग्रेज़ी शिक्षा की उत्कृष्ट उपज और युरोपियन सभ्यता से ओत-प्रोत मिस्टर दास की सन्तान है। यह टक्कर बहुत प्रबल होगी। साथ ही इस देश में हो रही टक्कर की एक प्रतिलिपि मात्र ही होगी।"

"मैं डरती हूँ कि कहीं मैं उस चमक-दमक से पराभूत न हो जाऊँ, जो युरोपियन राजसी प्रभुत्व और सभ्यता के सुख-स्वाद में प्रकट हो रही है।"

नलिनीकान्त ने मुस्कराते हुए कहा, "बहन! पराभूत होने के भय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल कायर ही डरा करते हैं। यदि पिछले बाईस वर्ष की तपस्या के जीवन से तुम में इस टक्टर में सफल होने की क्षमता उत्पन्न नहीं हुई तो तपस्या के ढंग पर ही सन्देह करना होगा।"

"ठीक है भैया! मैं इस विषय पर विचार करूँगी।"

: ७ :

ज्ञानस्वरूप अपनी मूर्खता पर हँस रहा था। वह विचार करता था कि वह अपनी माँ को भी पहचान नहीं सका। कितना मूर्ख है वह! सबसे अधिक विस्मय उसे अपनी स्मृति की दुर्बलता पर हुआ था। वह अपनी माँ के चित्र को कई बार देख चुका था, इस पर भी भूल गया था।

एक बात की उसे प्रसन्नता थी। उसको अपनी माँ का इतने काल के उपरान्त दर्शन सुखकारक अनुभव हुआ था। उसके मन में यह अभिलाषा उत्पन्न हुई थी कि वह अपनी माँ को अपने घर में ले चले।

इसमें एक बाधा थी। वह यह कि माँ एक क्रान्तिकारी के घर में रहती है और वहाँ से उसे अपने घर में ले जाये तो बात उच्च अधिकारियों के कान तक पहुँच सकती है। तब उसकी नौकरी भी छूट सकती है।

इस समय भी उसका निर्वाह वेतन पर नहीं हो रहा था। उसे ऊपर से आय करनी पड़ती थी। एक खुफिया पुलिस के अधिकारी के लिये ऊपर की आय के उतने साधन उपलब्ध नहीं थे, जितने कि सामान्य पुलिस के महकमे के लोगों को प्राप्त थे। इस पर भी जब कभी उसके हाथ में जाँच के लिये कोई ऐसा मुकद्दमा आ जाता, जिसमें किसी धनी व्यक्ति के फँसने की सम्भावना होती तो वह खूब हाथ रंग लेता। किसी-किसी मामले में तो वर्ष-भर के निर्वाह योग्य एक साथ मिल जाता था।

इस कारण वेतन से अधिक नौकरी में अतिरिक्त आय उसे मोह में डाले हुए थी। अतएव वह मन की अभिलाषा और व्यवहारिक कठिनाइयों में हिच-कोले लेता हुआ, लाहौर में आनन्दस्वरूप की खोज में लीन था।

वह यह सूचना पा गया था कि आनन्दस्वरूप कलकत्ता में एक विमलानन्द के घर पर ठहरा करता है और विमलानन्द की बहन से उसका बहुत मेल-जोल है। विमलानन्द एक बार लाहौर भी आया था।

इतनी सूचना लाहौर की खुफिया पुलिस को दे, वह बम्बई लौटने लगा तो जाने से पूर्व वह पुनः माँ से मिलने नलिनी की कोठी में जा पहुँचा। इस बार वह चौधरी मुश्ताक अहमद की गाड़ी में नहीं गया। उसने एक ताँगा लाहौरी दरवाजे के बाहर से किया और चौबुर्जी के पास नलिनीकान्त की कोठी पर जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन नलिनी की कोठी में कुछ मेहमान आये हुए थे। उसने जब घण्टी की रस्सी खींची तो एक गौरवर्णीय युवक जिसकी आँखें तो नीली थीं, परन्तु सिर के बाल काले थे, ड्रायंग-रूम से निकल आया और ज्ञानस्वरूप को खड़े घण्टी बजाते देख, मुस्करा कर पूछने लगा, "आप किससे मिलने आये हैं ?"

"बाबू नलिनीकान्त जी से।" ज्ञान किसी अपरिचित व्यक्ति को बता नहीं सका कि वह अपनी माँ से मिलने आया है।

"वे तो भुवाली गये हैं।"

"वहाँ क्या काम है ?"

"वहाँ उनकी एक कोठी और फलों का बगीचा है। उनकी धर्म-पत्नी वहाँ पहले ही गयी थीं। अब कुछ दिन के लिये वे भी गये हैं।"

"और कौन-कौन उनके साथ गया है ?"

"वे अकेले ही गये हैं ?"

"उनकी बहन प्रज्ञादेवी जी यहाँ हैं ?"

गौरवर्णीय युवक की हँसी निकल गयी। ज्ञानस्वरूप उसके हँसने का कारण नहीं जान सका। इस कारण सामने खड़े युवक का मुख देखने लगा।

युवक ने कहा, "आइये ! भीतर आ जाइये। प्रज्ञादेवी जी भीतर अपनी एक सहेली से बातें कर रही हैं।"

"तो मैं आ जाऊँ ?"

"मैं कुछ हानि नहीं समझता। अपनी माता की सहेली से मिलकर आपको भी प्रसन्नता होनी चाहिये।"

"तो आप मुझे जानते हैं ?"

"भला आज लाहौर में कौन पुलिस अधिकारी है जो आपको नहीं पहचानता ?"

"मैं यह नहीं पूछ रहा। मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं प्रज्ञा जी का लड़का हूँ, यह आप कैसे जानते हैं ?"

"आपकी माता जी ने बताया है ?"

"पर आप युरोपियन हैं अथवा हिन्दुस्तानी ?"

"ज्ञान जी ! देखते नहीं कि मैं हिन्दुस्तानी किस सरलता से बोल रहा हूँ ?"

दोनों भीतर आये तो गौरवर्णीय युवक ने कह दिया, "यह नलिनीकान्त जी की बहन प्रज्ञा देवी से मिलने आये हैं।"

"आओ ज्ञान ! आ जाओ। तुम्हें इनका परिचय करा दूँ तो ठीक रहेगा।"

ज्ञानस्वरूप और वह गौरवर्णीय युवक उन स्त्रियों के सामने कुर्सियों पर बैठ गये।

प्रज्ञा ने बताया, "देखो, ये मेरी चाची हैं। नाम है पूर्णिमा देवी। आज ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ता से आयी हैं।

"और चाची! यह हैं मिस्टर दास के बड़े लड़के ज्ञानस्वरूप। यह खुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर हैं। आनन्द की खोज में आये थे और पा गये हैं अपनी माँ को।"

पूर्णिमा देवी एक पचपन वर्षीय प्रौढ़ावस्था की सुन्दर स्त्री थीं और बहुत बढ़िया मिरज़ापुरी रेशमी साड़ी पहने थी। वह और प्रज्ञा दोनों सोफा पर इकट्ठी बैठी थीं। दोनों युवक उनके सामने कुर्सियों पर बैठे थे।

पूर्व इसके कि ज्ञानस्वरूप अथवा पूर्णिमा देवी कुछ कहे, गौरवर्णीय युवक ने कह दिया, "और मैं तो ज्ञान जी को देखते ही पहचान गया था। यह आये थे माँ को मिलने, परन्तु एक खुफिया पुलिस के अधिकारी की भाँति अपना आशय न बताते हुए इस कोठी के मालिक के विषय में पूछने लगे। उनके यहाँ न होने पर जब इन्होंने अपनी माँ का नाम लिया तो मेरी हँसी निकल गयी।"

इस पर ज्ञानस्वरूप ने पूछ लिया, "मैं विस्मय कर रहा हूँ कि आप कौन हैं जो लाहौर में मुझ जैसे एक सर्वथा अपरिचित व्यक्ति को देखते ही पहचान गये हैं?"

"मेरा भी पुलिस-विभाग से घना सम्बन्ध है। मैं कलकत्ता से आया हूँ। यह," उसने पूर्णिमा की ओर देखकर कहा, "मेरी आण्टी हैं।"

"आपका शुभ नाम?" ज्ञानस्वरूप समझ रहा था कि कलकत्ता से भी पुलिस के लोग उसी काम के लिये लाहौर आये हैं, जिस काम के लिये वह आया हुआ है। इसी कारण उसने कलकत्ता पुलिस-अधिकारी से परिचय प्राप्त करने के लिये उसका नाम पूछ लिया।

गौरवर्णीय युवक ने बताया, "बालागाछी पण्डित विद्याविलास सरस्वती का लड़का सुधाकर।"

ज्ञानप्रकाश इस युवक का नाम और पता अपने मन में अंकित करने के लिये नाम और पता दोहराने लगा। बात पूर्णिमा ने आगे चला दी। उसने कहा, "ज्ञान! मैं भी तुम्हारी कुछ लगती हूँ। अब घटनावश तुमसे परिचय हुआ है तो कहती हूँ कि कभी कलकत्ता में आओ तो अपनी पत्नी को लेते आना। मैं उसके पति की मामी के नाते उसे शकुन देना चाहूँगी।"

"पर चाची! वह आपकी बात समझ नहीं सकेगी। वह एक महाराष्ट्रियन स्त्री है। ईसाई-धर्म को मानती है और······और······।" वह जो कुछ कहना चाहता था, कह नहीं सका।

इस पर समीप बैठे सुधाकर ने कह दिया, "और क्या भैया! कुछ कहना चाहते थे न? और क्या, वह भी कह दो।"

"मैं यही कहने वाला था कि वह हिन्दुओं से मेल-जोल को पसन्द नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगी।"

"यदि तुम बुरा न मानो तो तुम्हारे घर में ही चलकर ठहर जायें। हम यहाँ से बम्बई जा रहे हैं।" पूर्णिमा ने कहा।

"वहाँ किस काम से जा रहे हैं ?"

"बम्बई देखने। सुना है कि वह नगर बहुत सुन्दर बन रहा है।"

"नगर तो कुछ सुन्दर नहीं। हाँ, सागर-तट के कारण कुछ देखने योग्य है। चौपाटी पर कुछ लोग स्नान भी करते हैं।"

इस पर सुधाकर ने कह दिया, "खैर, हम आपके घर पर भाभी से मिलने तो आयेंगे और उसकी हिन्दुओं के प्रति घृणा को कम करने का यत्न करेंगे।"

"कैसे करेंगे, सुधाकर जी ?"

"उसे अपने साथ घूमने के लिये ले चलकर। उसे अपने ठहरने के स्थान पर आमन्त्रित कर और उसके मन-पसन्द की वस्तुएँ उसे खिलाकर।"

"ठीक है। यत्न करिये। मैं तो न हिन्दू हूँ और न ईसाई। मुझे दोनों में सुलह होती बुरी प्रतीत नहीं होगी। मैं समझता हूँ कि दोनों का मिलन-स्थान वही होगा, जहाँ मैं खड़ा हूँ।"

पूर्णिमा ने कहा, "आखिर तुम प्रज्ञा के बेटे हो न ? तुम्हारे आने से पूर्व हम यही विचार कर रहे थे कि वहाँ पहुँच, तुम्हारे घर पर जा धमकें और बल-पूर्वक तुम्हारी मेहमानदारी को प्राप्त करें और फिर वहाँ से लौटते समय तुम्हारी पत्नी को भेंट देकर उसे प्रसन्न कर आयें।"

प्रज्ञा ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "ज्ञान ! आज किस काम से आये हो ? सरकारी काम से अथवा माँ को मिलने के लिये ?"

"आज माता जी से मिलने के लिये ही आया हूँ। सरकारी काम समाप्त हो चुका है। मैंने अपनी रिपोर्ट सरकार को भेज दी है और उसकी प्रतिलिपि चौधरी मुस्ताक अहमद साहब को दिखा दी है।"

"बात यह है कि मैं नहीं चाहती कि तुम सरकारी काम में ढिलाई कर, घर की बातों में फँस जाओ। देखो, आज रात को खाना यहाँ ही खाना।"

"नहीं माता जी ! मैं रात आठ बजे की गाड़ी से जा रहा हूँ। इस कारण यहाँ कुछ अधिक काल के लिये ठहर नहीं सकता। मैं यह कहने आया हूँ कि कदाचित् विजय के मुकद्दमे में मेरी गवाही होगी और मैं वह गवाही देने यहाँ आऊँगा। तब मैं मीनाक्षी को यहाँ लाने का यत्न करूँगा। वह आयेगी तो दोनों बच्चे भी साथ आयेंगे।"

"ठीक है। ले आना। मैं देखना चाहूँगी कि किस प्रकार की सृष्टि तुमने की है।"

"मीनाक्षी ही आपको बम्बई चलने का निमन्त्रण दें तो ठीक रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे वहाँ जाकर रहने पर तुमको सरकारी नौकरी छोड़नी भी पड़ सकती है।"

"क्यों ?"

"इस कारण कि मैं घर के बच्चों में दो दल नहीं देखना चाहती। एक दल ब्रिटेन के शहंशाह के राज्य का रक्षक, और दूसरा दल हिन्दुस्तानी स्वराज्य का पोषक।"

"परन्तु हिन्दुस्तानी स्वराज्य का पोषक दल तो समाप्त हो रहा है।"

"तब भी घर में एक दल ही रहेगा। यदि स्वराज्य-पोषक दल समाप्त न हुआ तो ब्रिटिश सरकार-पोषक दल समाप्त करना होगा। किसी भी सूरत में मेरे घर में तो एक ही दल रहेगा।"

"पर माता जी ! आप किस दल में हैं ?"

"मैं अभी तक तो स्वराज्य दल में थी, परन्तु घर के दो प्राणियों को परस्पर झगड़ते देख, तटस्थ हो जाना चाहती हूँ और दोनों को अपना झगड़ा निपटाने के लिये कहूँगी।"

"अच्छी बात है। विजय को मुकद्दमे से मुक्त हो जाने दीजिये, तब मैं उससे सुलह कर लूंगा।

"आनन्द के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता। वह बंगाली बम्बबाज़ों से घना सम्बन्ध रखता है। वह तो किसी दिन फाँसी पा जायेगा अथवा जेल में घुल-घुल कर मरने के लिये अण्डमान भी भेजा जा सकता है।"

"हाँ, यदि वह मुझे मिल गया तो मैं उसे कह दूंगी कि यदि उसने फांसी ही पानी है तो अपने भाई को गोली मार कर यह पद न पाये। देश में अन्य बहुत से सरकार-भक्त हैं, जिन पर वह अपना शौर्य दिखा सकता है।"

"धन्यवाद है माता जी ! मैं भी सावधान रहूँगा।"

"हाँ, यह युद्ध तुम घर से बाहर ही रखना। इसे घर में लाने का यत्न न करना।"

: ८ :

जब ज्ञानस्वरूप का तांगा कोठी से निकल गया और सुधाकर उसे विदा कर भीतर लौटा तो दोनों स्त्रियाँ हँसने लगीं। सुधाकर भी हँस पड़ा। जब वे जी-भर कर हँस चुके तो प्रज्ञा ने कहा, "मुझे भय है कि कहीं उसने आनन्द को पहचान न लिया हो और एक कुशल खुफिया पुलिस के अधिकारी की भाँति अपने मन के भाव छुपा सकने में सफल हो गया हो।"

"और बूआ ! मैं समझता हूँ कि यदि वह इतनी सूझ-बूझ रखता होता तो अपने महकमे से कब का निकाल दिया गया होता। इस महकमे में विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में और सामान्य रूप से सरकारी दफ्तरों में कोई अफसर बन ही नहीं सकता, जो बुद्धि रखता हो।

"भला इससे भी कोई विचित्र बात हो सकती है कि खुफिया पुलिस के कार्यालय में मैं जाऊँ और अपने विषय में लिखी फाइल ही पढ़कर चला आऊँ। मेरे केवल इतना कहने मात्र पर कि मैं भी पुलिस-विभाग से सम्बन्ध रखता हूँ और कलकत्ता से आया हूँ, वे मेरा आदर-मान करने लगे और बिना मेरा 'कार्ड' इत्यादि देखे मुझे चाय-पानी पिलाने लगे। इससे इस महकमे में मूर्खों के भरती होने का ही पता चलता है।"

इस पर पूर्णिमा ने कह दिया, "इस पर भी मेरी सम्मति यह है कि हमें यहाँ से फरार हो जाना चाहिये। अपने घर में सावधान रहना, दूसरे को मूर्ख समझने से अधिक बुद्धिमत्ता है।"

इस पर तीनों व्यक्ति मुख लम्बा कर एक-दूसरे को देखने लगे। एकाएक पूर्णिमा ने उठते हुए कहा, "सुधाकर! अपना विस्तर बांधो और मैं माली को भेज, सवारी का प्रवन्ध करवाती हूँ।"

प्रज्ञा उठकर ललिता के कमरे में चली गयी। वह वहाँ बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। प्रज्ञा ने कहा, "चाची जा रही हैं?"

"कहाँ?"

"बताया नहीं। परन्तु कोठी से जा रही हैं। वह पुलिस-इन्स्पैक्टर ज्ञान अभी आया था और आनन्द को बैठा देख गया है। मैंने उसका परिचय नकली नाम से कराया है। इस पर भी चाची कहती हैं कि यदि उसमें किंचित्-मात्र भी बुद्धि है तो उसे समझ जाना जाहिये कि यह आनन्द है और वह मुखबरी कर उसे पकड़वा सकता है।"

"तब तो जल्दी करना चाहिये। मैं समझती हूँ कि उसे एक अंग्रेज़ का अभिनय कर, किसी अंग्रेज़ी होटल में जा कर रहना चाहिये।"

"पर साथ चाची हैं और वह तो रूप-रेखा से हिन्दू बंगाली महिला प्रतीत होती हैं।"

"उनको भुवाली भेज दो। आनन्द भी कुछ दिन ठहर कर वहाँ जा सकता है और फिर वहाँ से वे बम्बई जा सकेंगे।"

"तो आओ, हम उनको समझा दें।"

प्रज्ञा और ललिता, दोनों ड्रायंग-रूम में आ गयीं। पूर्णिमा वहाँ खड़ी थी। आनन्द कमरे में सामान बाँध रहा था।

ललिता ने अपनी योजना बतायी तो पूर्णिमा ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "आनन्द को आने दो। उससे सम्मति करती हूँ।"

वे तीनों वहाँ बैठीं बातें करने लगीं। आनन्द आया तो विचार-विमर्श होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा। आनन्द ने बात सुनी तो उसने कह दिया, "चाची! मेरे यहाँ से टल जाने पर तुमको यहाँ से भागने की क्या आवश्यकता है ?"

"वे मुझसे तुम्हारे विषय में जाँच-पड़ताल करने के लिये, मुझे पकड़ भी तो सकते हैं।"

"तो ऐसा करो। तुम कलकत्ता लौट जाओ। मैं कुछ दिन ठहर कर बम्बई जाऊँगा और लन्दन, पैरिस अथवा स्विटज़रलैण्ड जाने का यत्न करूँगा।"

"अच्छा एक बात करो। तुम बम्बई जाकर अपना पता लिखना और मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी।"

इस समय माली ताँगा पकड़ लाया। सायंकाल साढ़े-सात बज रहे थे और पूर्णिमा तथा आनन्द दोनों कोठी से निकल गये।

उनके जाने के एक घण्टे के भीतर ही दो दर्जन पुलिसमैन और उनके साथ एक पुलिस-इन्स्पैक्टर कोठी पर आ पहुँचा। वे अपने साथ कैदी पकड़ कर ले जाने वाली बन्द गाड़ी भी साथ लाये थे।

प्रज्ञा उनको देख, सब समझ गयी। उसने पुलिस-इन्स्पैक्टर से बरामदे में आकर पूछा, "क्या चाहते हैं ?"

"यहाँ आनन्दस्वरूप के होने का समाचार मिला था। उसके वारण्ट हैं।"

"वह यहाँ नहीं है।"

"हम कोठी की तलाशी लेंगे।"

इतना कह, इन्स्पैक्टर ने साथ आये पुलिस-कान्स्टेबलों को कोठी का घेरा डाल लेने के लिये कहा। प्रज्ञा ने कहा, "हम इस कोठी में दो स्त्रियाँ ही हैं। तलाशी लेने के समय यदि हम अपने किसी पड़ोसी को बुला लें तो ठीक रहेगा।"

"किसको बुलायेंगी ?"

"साथ की कोठी में एक मिस्टर मैकिवर रहते हैं। वे सरकारी अफसर हैं। कहें तो उन्हें बुला लें ?"

"हाँ, बुला सकती हैं।"

प्रज्ञा ने कागज़ के एक टुकड़े पर पैंसिल से अंग्रेज़ी में लिख दिया, "मिस्टर मैकिवर! पण्डित जी घर पर नहीं हैं और मैं तथा ललिता दोनों ही कोठी में हैं। पुलिस कोठी की तलाशी लेने आयी है, अतः आप साक्षी के रूप में उपस्थित हो सकें तो मैं बहुत आभारी रहूँगी।"

नीचे प्रज्ञा ने अपने हस्ताक्षर कर दिये। इस पर इन्स्पैक्टर ने पूछ लिया, "यह अंग्रेज़ आप लोगों से बहुत मेल-जोल रखता प्रतीत होता है।"

"हाँ; वह मेरे भाई का शिष्य है। उनसे उपनिषद् पढ़ा करता है। साथ ही मिस्टर मैकिवर की माँ और मिसेज़ नलिनी की माँ, सहेली थीं। दोनों आयरलैण्ड की रहने वाली थीं। उन दोनों का तो देहान्त हो चुका है, परन्तु उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवारों में परस्पर मेल-जोल है।"

पाँच ही मिनट में मैकिवर और उसकी पत्नी रीनी मैकिवर-वहाँ आ गये। दोनों इन्स्पैक्टर-पुलिस से मिले। मिस्टर मैकिवर ने पूछ लिया, "आप कोठी की तलाशी लेना चाहते हैं ?"

"हाँ।"

"वारण्ट तलाशी हैं ?"

इन्स्पैक्टर ने जेब से एक मैजिस्ट्रेट का हुक्म लिखा, दिखाया। मैकिवर ने उसे पढ़ा और पूछ लिया, "कौन तलाशी लेंगे ?"

"मैं और मेरे साथ एक यह सब-इन्स्पैक्टर है।"

"तो आप दोनों पहले अपनी तलाशी दे दीजिये।"

पूर्णिमा और ललिता भी वहाँ खड़ी थीं। मैकिवर ने दोनों पुलिस अफसरों की तलाशी ली और फिर पुलिस कोठी की तलाशी लेने लगी। कोठी में ग्यारह कमरे थे। एक बड़ा हाल था। उस हाल में बीस के लगभग अलमारियाँ लगी थीं। उनमें पुस्तकें भरी हुई थीं। इन्स्पैक्टर ने पूछ लिया, "यह क्या है ?"

"यह नलिनी बाबू का पुस्तकालय है और यह कमरा उनका 'स्टडी-रूम' है।"

तलाशी लेने में आधा घण्टा लगा। जब उन दो स्त्रियों, ललिता के दो बच्चों तथा चार नौकरों के अतिरिक्त कोई नहीं मिला तो इन्स्पैक्टर ने प्रज्ञा से पूछा, "क्या यहाँ आनन्द आया था ?"

"नहीं।"

"देखो बहन ! एक ज्ञानस्वरूप इन्स्पैक्टर की यह रिपोर्ट है कि हमारे आने से एक घण्टा पूर्व एक गौरवर्णीय युवक, पाँच फुट आठ इंच ऊँचा, नीली आँखों और काले बालों वाला, यहाँ एक स्त्री, जिसे वह चाची कहता था, के साथ मौजूद था।"

"हाँ, एक था। परन्तु वह आनन्द नहीं था। वह कलकत्ता में एक पण्डित विद्याविलास चट्टोपाध्याय का पुत्र सुधाकर था। वह बम्बई के लिये चला गया है। पण्डित विद्याविलास मेरे पिता के घर के पुरोहित हैं। उनके लड़के के साथ मेरी चाची थीं।"

"क्या नाम बताया है आपने उस युवक का ?"

"सुधाकर।"

"उसका पता कलकत्ता में ?"

प्रज्ञा ने वही पता बता दिया जो सुधाकर ने बताया था। इस प्रकार जाँच समाप्त हुई तो मिस्टर मैकिवर ने कह दिया, "प्रज्ञा सिस्टर ! यहाँ इतनी बड़ी कोठी में तुम दोनों अकेली अनुभव करती होगी। तुम दोनों रात के समय हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में रह सकती हो।"

"धन्यवाद, मिस्टर मैकिवर! हमें डर प्रतीत नहीं होता। आप निश्चिन्त रहें। कुछ हानि नहीं हो सकेगी।"

"मैं जानता हूँ कि रात को पुलिस आपके बंगले की देखमाल रखेगी।"

"कुछ हानि नहीं है।"

"अच्छा, तो हम जाते हैं। यदि किसी समय भी आवश्यकता पड़े तो बुला सकती हैं।"

इतना कह मैकिवर और उसकी पत्नी चले गये। प्रज्ञा ने क्रोध से उबलते हुए कहा, "यह ज्ञान तो अपने पिता के समान ही दुष्ट निकला है। मैंने उसे संकेत भी किया था कि देश के झगड़े को घर में मत आने दे; कहीं ऐसा न हो कि आनन्द फाँसी चढ़ने से पूर्व तुमको ही गोली मार डालने में सफल हो जाये, परन्तु इस जड़-बुद्धि ने मेरी बात समझी नहीं और आनन्द की मुखबरी कर दी है।"

ललिता ने कहा, "पिता जी को यहाँ की बात से अवगत कर देना चाहिये।"

"मैं एक ढंग से लिखूंगी।"

उसी रात प्रज्ञा ने नलिनीकान्त को पत्र में लिखा, "भैया! ज्ञान आज सायंकाल मुझसे मिलने आया था। उस समय यहाँ पूर्णिमा चाची तथा सुधाकर उसे मिल गये। ज्ञान को सन्देह हो गया कि वह आनन्द है और कोठी से जाते ही उसने सुधाकर को पकड़ने के लिये पुलिस भेज दी। यह तो घटनावश ही था कि सुधाकर और चाची पुलिस के आने से पहले ही बम्बई के लिये चल पड़े थे।

"कोठी की तलाशी हुई है और पुलिस वहाँ से कुछ ले नहीं गयी। मिस्टर मैकिवर तलाशी के समय बुला लिये गए थे।

"तलाशी लेने के लिये चौधरी मुश्ताक अहमद आया था।"

इस पत्र का उत्तर नलिनी ने दिया, "मुझे पता चला है कि मुकद्दमा सितम्बर तक आरम्भ नहीं होगा और तब तक के लिये प्रभा और तुम यहाँ आ सकती हो। यहाँ आजकल ऋतु बहुत ही सुहावनी है।"

नलिनी की इच्छा प्रभा को अकेले छोड़ कर जाने की नहीं थी और प्रभा मुकद्दमे के दिनों में लाहौर में रहना चाहती थी। परन्तु भुवाली से सुवर्णा का पत्र आया था कि महात्मा जी भुवाली कोठी में रहने चले आये हैं। वे कुछ दिन यहाँ रहकर शास्त्राध्ययन करना चाहते हैं और आपके यहाँ न होने पर कुछ अभाव अनुभव करते हैं। यद्यपि उनसे नित्य शास्त्र-चर्चा होती है, इस पर भी वे आपसे मिलने की आकांक्षा रखते हैं।"

सुवर्णा के इस पत्र को पढ़ कर ही नलिनी कुछ दिन के लिये भुवाली चला गया था। वहाँ पहुँचते ही उसने कलकत्ता में विजय के वकील को लिखा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकद्दमे की तारीख लगने पर उसे तार द्वारा सूचित किया जाये, जिससे वह समय पर लाहौर वापस पहुँच सके।

वकील साहब के पत्र से ही उसे पता चला था कि मुकद्दमा सितम्बर से पहले आरम्भ नहीं हो सकेगा।

: ६ :

वह काल था जब कहीं दो भी आर्य-समाजी मिलते थे, तब शास्त्र-चर्चा और देश की चर्चा हुए बिना नहीं रहती थी। यह नहीं कि सब-के-सब आर्य-समाजी संस्कृत भाषा के विद्वान् और शास्त्र के ज्ञाता होते थे। आर्य-समाज के सदस्य तो प्रायः बहुत कम शिक्षित व्यक्ति ही थे। कुछ-एक तो उर्दू और हिन्दी भी नहीं जानते थे, परन्तु चर्चा में वेदों में मूर्ति-पूजा, कुरआन में मसलह तनासुख (पुनर्जन्म), आर्यों में नियोग इत्यादि की बातें होती थीं। यह श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक तथा पण्डित लेखराम द्वारा लिखित 'कुलियात-ए-मुसाफिर' के कारण था। ये पुस्तकें हिन्दी तथा उर्दू भाषा में होने के कारण आर्य-समाज़ी पढ़ते अथवा सुनते थे।

जो कुछ अधिक पढ़े-लिखे थे, वे अंग्रेज़ी में शास्त्राध्ययन करने लगे थे। अभिप्राय यह कि आर्य-समाज के प्रवर्त्तक ने पठन-पाठन की एक ऐसी लहर उत्पन्न कर दी थी कि जो-जो भी इस लहर की रपट में आया, वह ज्ञान-वृद्धि में लग गया।

इसके साथ हिन्दू-समाज में विरोधाभास भी उत्पन्न हो गया था। स्कूल-कालेजों में शिक्षा की धुरि थी, यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान। यह उससे सर्वथा भिन्न था, जो पुराणादि शास्त्रों में लिखा मिलता था। अतः आर्य-समाज में भी यह समस्या उत्पन्न हुई कि दोनों में किसे स्वीकार किया जाये? स्कूल, कालेज में पढ़ने-लिखने वाला विद्यार्थी, घर में अपने पिता तथा बड़े भाई से अपनी विद्वत्ता प्रकट करने लगता था तो कह देता था कि कुछ ही सहस्र वर्ष पूर्व मनुष्य जंगलों में पेड़ों की डालियों से ऐसे लटकता फिरता था, जैसे कि आजकल बन्दर लटकते हैं। इस पर उसके माता-पिता उसका मुख देखते रह जाते थे। वे स्वयं तो मानते थे कि बालमीकीय रामायण में अयोध्या और लंका का वर्णन ऐसा है, जैसा कि आज के नगरों का भी नहीं और तब विमान थे और वायु के वेग से चलने वाले रथ थे; सोने और चाँदी के महल थे, साथ ही यह सब था राम के काल में, जो त्रेता-युग और द्वापर-युग की संधि के समय अयोध्या में राज्य करता था। संस्कृत के विद्वान् यह भी कह देते थे कि त्रेता-युग और द्वापर की संधि को साढ़े-आठ लाख वर्ष से अधिक व्यतीत हो चुके हैं।

इस प्रकार परस्पर विरोधी सूचनाओं से यह मानना स्वाभाविक हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि या तो कालेज का प्रोफेसर अथवा स्कूल का मास्टर झूठा है, या आर्य-समाज के मंच पर से व्याख्यान देने वाला पण्डित मिथ्या-भाषी है। आर्य-समाज की स्थापना से पूर्व, अभी सरकारी शिक्षा कम थी और दोनों लहरों में कोई टक्कर नहीं थी। पण्डित अपने घर में अपने कथित ज्ञान में लिप्त मज़े में बैठा हुआ था और स्कूल-कालेज का स्नातक बाज़ार और सड़कों तथा दफ्तरों में विचरता हुआ अपने को एक ज़ाहिल कौम में उत्पन्न हुआ मान, यूरोप को अपना गुरु मानने लगा था। तब अभी ब्राह्मण और एक यूरोपीय वैज्ञानिक का टकराव नहीं हुआ था।

यूरोपीय शिक्षा के प्रसार से सर्वप्रथम टक्कर हुई बंगाल में, और ब्रह्म-समाज का जन्म हो गया।

राजा राममोहन राय ज्ञान-विज्ञान को पृथक् रख, पूर्वी अध्यात्म को पश्चिमी मज़हबों से श्रेष्ठ बता और सिद्ध करने का यत्न करते हुए, चल रहे पूर्व और पश्चिम की टक्टर को होने से रोकते रहे और यत्न करते रहे कि दोनों एक लहर बन बहने लगें, परन्तु ऐसा हो नहीं सका। जहाँ राजा साहब उपनिषद् ग्रन्थों के गुण गाते थे, वहाँ उनके शिष्यों में बाबू केशवचन्द्र सेन अंजील के गुण गाने लगे और स्वयं मसीहा बनने का यत्न करने लगे।

ब्रह्म-समाजी समन्वय का एक परिणाम और हुआ। वह यह कि ज्ञान-विज्ञान के साथ जीवन-मीमांसा भी बदलने लगी। उस परिवर्तित जीवन-चर्या में कही जाने वाली शास्त्रीय मीमांसा पराजित हो, विलुप्त होने लगी। सुन्दरी-सुरा का साम्राज्य आरम्भ हुआ। जो पहले राजा-नवाबों में था, वह अब क्लर्क समुदाय में आने लगा था।

स्वामी दयानन्द ने वेद-शास्त्र की चर्चा ऐसे ढंग से चलायी और इसकी तुलना पश्चिमी जीवन-मीमांसा से ऐसे की, कि एक बार तो युरोपियन विद्वान् घबरा उठे। अब आर्य-समाज के सामान्य शिक्षा प्राप्त किये सदस्य भी बगल में 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'कुलियात-ए-मुसाफिर' लिये, दनदनाते हुए घूमने लगे और जब सरकारी शिक्षा-प्राप्त मोहल्ले अथवा पड़ोस का कोई विद्यार्थी कहता कि वेदों में गडरियों के गीत हैं तो तुरन्त वह आर्य-समाजी महाशय कह देता कि तुम्हारा मास्टर झूठा है। यह देखो वेद में, मनुस्मृति में अथवा दर्शनशास्त्र में क्या लिखा है? विद्यार्थी जब कहता कि हमारी पढ़ाई की पुस्तक में यह लिखा है तो महाशय यह कहता कि तुम्हारी पढ़ाई की पुस्तक किसी अंग्रेज़ ने द्वेष-भाव में लिखी है।

यह लहरों में टक्कर हो गयी और इसमें से फेन उठने लगा। लहरों के कगारों पर फेन के गफ्फे सुन्दर और सुहावने लगने लगे।

यह स्थिति थी जब महात्मा मुंशीराम जी ने हरिद्वार में कनखल के समीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की थी। आर्य-समाज क्षेत्र में अब स्वामी दयानन्द जैसे वेदों और शास्त्र के ज्ञाता तो थे नहीं। प्रोफेसर गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे गम्भीर अध्ययन करने वाले तथा पण्डित लेखराम जैसे विद्यावागीष चल बसे थे। इस समय आर्य-समाज क्षेत्र में जो तथाकथित विद्वान् दिखायी पड़ते थे, वे थे सरकारी विश्वविद्यालयों में शिक्षित डाक्टर, वकील, बैरिस्टर, सरकारी अधिकारी, प्रोफेसर तथा स्कूल मास्टर। ये लोग महर्षि स्वामी दयानन्द जी की विद्या और आर्य-समाज के सम्मोहिनी प्रभाव में आर्य-समाज मन्दिर में तो अंग्रेज़ और अंग्रेज़ी आचार-विचार की निन्दा करते थे, परन्तु अपनी शिक्षा के प्रभाव में घर पर, दफ्तर में तथा अन्य पढ़े-लिखों के सम्मुख युरोपियन सभ्यता और संस्कृति की प्रशंसा के पुल बाँध देते थे।

इस सब स्थिति से महात्मा मुंशीराम भी परेशान हो उठे थे और वे पूर्ण स्थिति पर विचार करने के लिये कहीं एकान्त में जाकर, चिन्तन करना चाहते थे। इस समय उनको नलिनीकान्त की याद हो आयी और यह विचार कर कि मई मास की गर्मी में वह अपनी पत्नी के साथ अपने पहाड़ी बंगले पर होगा, वे भुवाली जा पहुँचे।

वहाँ मिल गयी सुवर्णा। सुवर्णा वहाँ छः मास से बन्द पड़े बंगले को खोल, उसकी सफाई-सफेदी करवा कर उसे रहने के योग्य बनाने पहुँची हुई थी। बंगले को ठीक करवा कर, बगीचे में घास कटवा तथा यथासम्भव कोठी में रहने योग्य प्रबन्ध करवा कर वह पति को पत्र लिख चुकी थी कि वे कुछ दिन यहाँ आकर आराम करें और आवश्यकता पड़ने पर वह पुनः लाहौर जा सकेंगे।

एक दिन मध्याह्नोत्तर महात्मा जी नैनीताल से पैदल चलते हुए बंगले के फाटक पर आ पहुँचे। चौकीदार ने फाटक खोला तो महात्मा जी ने पूछ लिया, "नलिनी बाबू हैं ?"

"जी; वे स्वयं तो नहीं हैं। उनकी धर्म-पत्नी हैं।"

"तब भी ठीक है। उनको सूचना दे दो। कहो कि एक अतिथि आये हैं।"

चौकीदार गया और सुवर्णा सूचना पाने पर कमरे से बाहर निकल कर देखने लगी कि कौन आया है ? फाटक पर महात्मा जी को खड़े देख, उसने हाथ जोड़ प्रणाम किया और प्रसन्नतापूर्वक बोली, "आप खड़े किसलिये हैं ? भीतर आइये।"

महात्मा जी के पीछे टट्टू पर उनका सामान लदा था और साथ में एक सज्जन मास्टर रलाराम खड़े थे।

सुवर्णा के निमंत्रण पर महात्मा जी और मास्टर रलाराम भीतर प्रविष्ट हुए। सुवर्णा ने चौकीदार से दोनों अभ्यागतों के लिये कमरा ठीक करने को कह दिया। इसके पश्चात् वह उनको लेकर भीतर ड्रायंग-रूम में आ गई। उसने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहाँ से आ रहे हैं ?"

"नैनीताल से पैदल ही आ रहा हूँ।"

"तब तो आप बहुत थक गये होंगे।"

"नहीं, कुछ विशेष नहीं। यह टट्टू वाला तो पहाड़ के ऊपर-ऊपर से ही तीन घण्टे में यहाँ ले आया है। कुछ चढ़ाई करनी पड़ी थी और पीछे तो उतराई ही रही है।"

महात्मा जी ने नलिनीकान्त के वहाँ न होने पर निराशा प्रकट करते हुए कहा, "मैं तो कुछ दिन नलिनी बाबू की संगत में यहाँ रहने का विचार बनाकर आया था।"

"उनको यहाँ होना चाहिये था, परन्तु लाहौर में एक दुर्घटना हो गयी है। इस कारण वे अभी तक वहीं ठहरे हुए हैं।"

"क्या दुर्घटना हो गयी है ?"

"हमारे दोनों लड़के विजय और आनन्द लाहौर की हलचल की लपेट में आ गये हैं। एक तो पकड़ा गया है और उस पर सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का मुकद्दमा किया जा रहा है, और दूसरा आनन्द लापता है। पुलिस उसे बम्ब-बाज़ समझ, ढूंढ रही है।

"लड़के के पिता उनके मुकद्दमे की देख-रेख के लिये लाहौर में ही ठहरे हैं। सुना है कि मुकद्दमा सितम्बर तक तैयार हो सकेगा और मैं समझ रही हूँ कि उनको अब जल्दी ही यहाँ आ जाना चाहिये।"

"और लड़कों की तुमको चिन्ता नहीं ?" महात्मा जी ने मुस्कराते हुए पूछा।

"जब कोई व्यक्ति आग से खेलता है तो उसे जल जाने के भय का ज्ञान होना ही चाहिये। विजय और आनन्द मुझसे कभी कोई बात चोरी नहीं रखते। जब आनन्द ने बताया कि वह 'युगान्तर समिति' का सदस्य हो गया है तो मैंने उससे पूछा था कि जानते हो न, इसका क्या परिणाम हो सकता है ? उसका सतर्क उत्तर था, मैं उस परिणाम से भयभीत नहीं हूँ। मुझे मरने से भय नहीं लगता।

"मैंने उसे बताया था कि किस प्रकार आयरलैण्ड में देश-भक्तों और सरकारी अधिकारियों में संघर्ष चल रहा है और यह भी बता दिया था कि सरकारी अधिकारी वहाँ कितना अत्याचार और निर्दयतापूर्ण व्यवहार अपना रहे हैं। इस पर आनन्द का कहना था, 'माता जी, आपने उपनिषदों का अध्ययन किया है और उनको समझा है। आपको तो मेरे मर जाने पर शोक तथा मोह नहीं होना चाहिये।'

"मैं समझ गयी हूँ कि वह ठीक ही कर रहा है। यदि ठीक कर रहा है तो मैं कौन हूँ उसको गलत मार्ग पर ले जाने वाली ? इस कारण मैं अब निर्लेप हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हूँ। उसके इस कठिनाई की बात पर न मुझे हर्ष है और न शोक।"

नलिनी और सुवर्णा की इस मानसिक अवस्था का ज्ञान महात्मा जी को पहले भी था। अब परीक्षा के समय भी, उनको इस प्रकार परिस्थितियों से अप्रभावित देख, उन्हें उत्साह और हर्ष ही हुआ था।

सुवर्णा अभी लाहौर की अवस्था का वर्णन ही कर रही थी कि सेवक दोनों के सामने तिपाई रखने लगा। तिपाई पर उसने मेज़पोश बिछाया और फिर चाय का सामान लगा दिया।

महात्मा जी ने अपने विषय में बता दिया, "मुझे पाँच वर्ष के लगभग गुरुकुल खोले हुए हो गया है। कुछ लड़के प्रवेश पा गये हैं, परन्तु अब गाड़ी अवरुद्ध होती प्रतीत होती है। इस कारण मैं विचार करने लगा हूँ कि यह सब बृहद् प्रयास शुभ परिणाम वाला है अथवा हिन्दू-समाज के अन्य सब कामों की भाँति यह भी रद्दी कि टोकरी में जाने वाला है।

"इस वर्ष वार्षिक उत्सव के अवसर पर एक लाख से ऊपर दर्शक उपस्थित थे। वहाँ सब आने वालों में अपार उत्साह और विश्वास भरा हुआ था।

"जहाँ बाहर अपार भीड़ जय-जयकार कर रही थी, वहाँ भीतर हम वेद-प्रचार के विषय में चर्चा कर रहे थे। भीतर विचार करने वालों में उत्साह-हीनता, निराशा और अविश्वास की लहर चल रही थी। मैं भी देख रहा था कि हमारे वेदों के विद्वान् वेदार्थ करते समय मेक्डॉनल्ड और ग्रिफिथ के ग्रन्थ खोल कर उनमें से पढ़-पढ़ कर बातें करते हैं।

"उस समय मेरे मन में नलिनी बाबू की याद आ रही थी और वे वहाँ थे नहीं। उत्सव समाप्त हुए एक महीने से ऊपर हो चुका है और इस उत्सव में हुई इस वेद-सम्मेलन की चर्चा मेरे मस्तिष्क में संदेह उत्पन्न कर रही है। आखिर काम से अवकाश पा, मैं नलिनी बाबू की खोज में चल पड़ा हूँ। मेरा विचार था कि वे यहाँ होंगे। इस कारण लाहौर जाने के स्थान, मैं यहाँ आ गया हूँ।"

"यदि आप कहें तो मैं उनको पत्र लिख देती हूँ और वे यहाँ आ जायेंगे और यदि किसी प्रकार की कठिनाई हुई तो वे बता देंगे। तब आप लाहौर जा सकेंगे।"

अतः चाय समाप्त होते ही सुवर्णा ने एक पत्र नलिनी को लिख दिया। उस पत्र के उत्तर में ही नलिनीकान्त लाहौर से भुवाली चला आया था।

वह स्वामी जी को अपने भुवाली न होने की सफाई देने लगा। उसने विजय और आनन्द की स्थिति का वर्णन किया और कहा, "कलकत्ता के एक वकील को विजय की पैरवी के लिये बुलाया था और वह पन्द्रह दिन की दौड़-भाग के उपरान्त कलकत्ता चला गया है। मुकद्दमा पुलिस तैयार कर रही है। पहले तो पुलिस सबको कलकत्ता के बम्बबाज़ों के साथ सम्बन्ध रखने वाला बता कर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबको फाँसी अथवा काले पानी का दण्ड दिलवाने का विचार रखती थीं, परन्तु जब बम्ब, पिस्तौल, बन्दूक इत्यादि कुछ भी बरामद नहीं हुआ तो अब पकड़े हुओं पर भड़काने वाले व्याख्यान देने का मुकद्दमा बनाया जा रहा है। इसी कारण पुलिस को मुकद्दमे की तैयारी में देर लग रही है।"

"मुझे एक बात जानकर प्रसन्नता है कि आज की देश की हलचल में महर्षि दयानन्द के भक्त भी सम्मिलित हैं।"

"हाँ; पर स्वामी जी के भक्तों में डरपोक और दब्बू भी कम नहीं हैं।"

इस पर नलिनी ने महात्मा जी के सम्मुख अनारकली आर्य-समाज के प्रधान के व्यवहार की चर्चा कर दी। महात्मा मुंशीराम हँस पड़े। हँस कर वे अपनी आपबीती बताने लगे। उन्होंने कहा, "गवर्नर महोदय ने मुझे भी भेंट के लिये बुलाया था। उस भेंट में उन्होंने पहले तो गुरुकुल के विषय में पूछताछ की और उसके उपरान्त वहाँ की शिक्षा की बात चल पड़ी। मैंने बता दिया कि हमारी शिक्षा-पद्धति प्राचीन शास्त्रानुसार है। इस पर वे पूछने लगे कि क्या शास्त्रों में भी शिक्षा जैसे जटिल विषय में कुछ लिखा है ? मैंने तैत्तरीय उपनिषद् की शिक्षा-वल्लि का सारांश बता दिया। वे कहने लगे, यह भी कोई शिक्षा है !

"मैंने कहा, 'इसे हम पूर्ण शिक्षा मानते हैं। अक्षरों की पढ़ाई से आरम्भ कर शिक्षा की अन्तिम सीढ़ी परमात्मा की प्राप्ति के लिये तैयारी तक इसमें है। इसके उपरान्त तो परमात्मा को पाना ही रह जाता है।'

"उनका प्रश्न था, 'परन्तु इसमें क्या रेलगाड़ी और तोप-बन्दूकें बनाना भी लिखा है ?'

" 'हाँ; सिद्धान्त रूप में इसमें सब-कुछ आ जाता है। शक्ति का स्रोत और उसके प्रयोग का सिद्धान्त इसमें है। व्याख्या आचार्य लोग अपने-अपने अनुभव से करते हैं।'

" 'पर यह तो बगावत है।' गवर्नर बहादुर तमक कर कहने लगे।

"मेरा सतर्क उत्तर था, 'यह देश की सरकार की सेवा भी हो सकती है। बन्दूक और तोपें बनाना अपने में न तो सरकार से द्रोह है और न ही सरकार का पक्ष लेना। यह तो एक विज्ञान है। इसका प्रयोग ही देश-द्रोह अथवा देश-भक्ति हो सकती है। हम अपने विद्यार्थियों में सदा यह भावना भरते रहते हैं कि धर्मात्मा राज्य प्रजा की रक्षा करते हैं और प्रजा को उसकी रक्षा करनी चाहिये।'

"इस पर गवर्नर पूछने लगा, 'आप अंग्रेजी राज्य को धर्म-राज्य समझते हैं अथवा नहीं ?'

—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कह दिया, 'सरकार ने अभी तक गो-हत्या बन्द नहीं की। यह किसी धर्म का अंग नहीं हो सकता कि गाय जैसे लोक-हितकारी पशु को मारा जाये। अतः किसी भी धर्म से अंग्रेज़ी सरकार धर्म का पालन नहीं कर रही।'

" 'परन्तु हमने लोगों को बोलने-लिखने और विचार करने की स्वतन्त्रता दे रखी है।'

" 'जब यहाँ इतनी स्वतन्त्रता नहीं थी, जितनी कि अंग्रेज़ी राज्य में है, तब भी हमारे नेता गो-रक्षा के लिये कहते थे।'

"मैंने गुरु तेग बहादुर के बलिदान की कथा सुना दी। इस पर वे चुप कर गये और बोले, 'सरकार आर्य-समाज के डी० ए० वी० स्कूल-कालेजों को पसन्द करती है। उनके प्रिन्सिपल आये थे और कह गये हैं कि कालेज में ब्रिटिश सरकार के गुणानुवाद गाये जाते हैं। साथ ही उनमें पंजाब यूनिवर्सिटी के पाठ्य-क्रम की ही पढ़ाई होती है। सरकार बहुत प्रसन्न है और उनके कालेज के लिये सहायतार्थ दस लाख रुपया स्वीकार करने वाली है।' "

इस पर नलिनी ने यह सूचना दी, "दस लाख तो नहीं। हाँ, दो लाख की सहायता का निश्चय शिक्षा-विभाग की ओर से आया है और यह भी लिखा आया है कि स्कूल के शिक्षा-स्तर को आधुनिक शिक्षा-शास्त्रियों की खोजों के अनुसार ऊँचा करने के लिये सरकारी इन्स्पैक्टर स्कूल में आया करेंगे और स्कूल की शिक्षा का निरीक्षण कर, उसमें सुधारों के सुझाव दिया करेंगे।

"यह प्रश्न कालेज की मैनेजिंग कमेटी में उपस्थित हुआ था और मैनेजिंग कमेटी ने स्कूल में इन्स्पैक्टर के निरीक्षण को स्वीकार कर लिया है, परन्तु रुपयों में सहायता लेनी स्वीकार नहीं की है।"

महात्मा मुंशीराम हँस पड़े और कहने लगे, "गुनाह बे-लज्ज़त।"

: १० :

एक दिन महात्मा जी ने अपने वहाँ आने के वास्तविक उद्देश्य का वर्णन कर दिया। सभी लोग फलों के उद्यान में कुर्सियाँ लगवा कर बैठे हुए थे। इस समय महात्मा जी एक घटना सुनाने लगे। उन्होंने कहा, "आप लाहौर के चौधरी जी को जानते हैं। वे स्वयं बैरिस्टर हैं, उनकी पत्नी एक ब्रह्म-समाजी बंगाली की लड़की है। उनका लड़का आरम्भ से ही गुरुकुल का विद्यार्थी है। चौधरी साहब गुरुकुल की शिक्षा-समिति के भी सदस्य हैं। वार्षिक उत्सव पर हो रही शिक्षा-समिति की बैठक में उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि वेद के मैक्स-मूल्लर के अनुवाद के कुछ भागों को पाठ्य-क्रम में रखा जाये। उनका कहना था कि ऋग्वेद ही मुख्य है और उसी के पठन-पाठन का प्रबन्ध होना चाहिये। एक आर्य विद्वान् ने उनका समर्थन भी कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर एक अन्य विद्वान् पण्डित भीमसेन जी ने स्वामी दयानन्द की शैली पर ऋग्वेद के भाष्य करने का प्रस्ताव कर दिया। इस प्रस्ताव पर तो स्वामी जी के भाष्य पर आक्षेप होने लगे।

"मैंने एक-दो बार इस विवाद में भाग लेने का यत्न किया, परन्तु पण्डित विष्णु शास्त्री ने संस्कृत भाषा में मुझसे प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये और जब मैं संस्कृत भाषा में उत्तर नहीं दे सका तो बोले, 'महात्मा जी ! आप इस विद्या को जानते नहीं। इस कारण आप मौन रहिये।' पण्डित विष्णु शास्त्री का कहना था कि सायण-भाष्य और मैक्समूल्लर के भाष्य में बहुत समानता है; इस कारण दोनों को पाठ्य-क्रम में स्वीकार कर लिया जाये।

"शास्त्री जी का कहना था कि भारतवर्ष के किसी भी वेदों के विद्वान् ने स्वामी दयानन्द के भाष्य को स्वीकार नहीं किया। इस पर हमारे आर्य-समाजी पण्डित चुप कर गये। कोई न तो यह बता सका कि स्वामी जी के भाष्य में क्या गुण है और न ही भाषा के विचार से यह सिद्ध कर सका कि सायण अथवा मैक्समूल्लर इत्यादि अशुद्ध हैं।

"यदि मैं गुरुकुल से पृथक् हो जाने की धमकी न देता तो चौधरी साहब का प्रस्ताव पारित हो जाता; परन्तु हुआ यह कि आचार्यों को पाठ्य-क्रम समिति को यह स्वतन्त्रता देनी पड़ी कि वे जैसा उचित समझें, वैसा अर्थ करें।

"आचार्यों में मुख्य विष्णु शास्त्री ही हैं। मेरे लिये समस्या यह उत्पन्न हो गयी है कि मुझे स्वामी जी के वेद-भाष्य की शैली का समर्थक कोई मिलता नहीं।

"रह-रह कर मेरे मन में यह विचार आ रहा था कि यदि उस समय समिति की बैठक में पण्डित नलिनीकान्त होते तो वे सबका समाधान कर सकते।

"इसी कारण मैं यहाँ आया हूँ कि पण्डित नलिनीकान्त को गुरुकुल में आकर पढ़ाने का निमन्त्रण दूं।"

नलिनीकान्त ने सिर हिलाते हुए कहा, "जी नहीं। देखिये महात्माजी ! जब डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना हो रही थी, मैंने स्वर्गीय लाला साईदास को समझाने का यत्न किया था कि स्वामी दयानन्द जी का जीवन-कार्य डी० ए० वी० स्कूल से सिद्ध नहीं होगा। यह सामान्य आर्य-समाजियों से छलना होगी कि स्वामी जी के नाम पर धन एकत्रित कर स्वामी जी की मान्यताओं के विपरीत शिक्षा का प्रचार किया जाये।

"इस पर लाला जी का मुख क्रोध से लाल हो गया। उनको मेरे छलना शब्द के प्रयोग से क्रोध चढ़ आया था। मैंने समझाने का यत्न किया। मेरा कहना था कि यह शिक्षा हिन्दू बालकों को ईसाइयों के स्कूल-कालेजों में जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रोकने का एक शुभ प्रयास है। इससे कुछ काल के लिये ईसाइयों के प्रचार में बाधा अवश्य पड़ेगी, परन्तु जो कुछ आप पढ़ायेंगे अथवा जीवन के जो आदर्श आप बालकों के सामने रखेंगे, वे उनको आर्य बनाना तो दूर, हिन्दू भी नहीं रहने देंगे और फिर ईसाई धर्म का प्रचार स्वयमेव होगा।

"लाला जी मेरी बात को समझे नहीं। पहले तो वे बोले कि हिन्दू कोई मत अथवा धर्म है ही नहीं; यह एक टोला है, जिसमें भाँति-भाँति के पक्षी एकत्रित हो रहे हैं। आर्य धर्म है और इसकी रक्षा हम कर सकेंगे।

"मेरा उनसे कहना था कि मैं ऐसा नहीं मानता। हिन्दू एक धर्म भी है और एक संस्कृति भी है। यह धर्म और संस्कृति में आर्य धर्म और संस्कृति ही है। हिन्दू सभ्यता, आर्य सभ्यता से भिन्न है। सभ्यतायें काल की गति के साथ बदलती रहती हैं, परन्तु धर्म और संस्कृति तो अक्षुण्ण चली आती हैं।

"मैंने अपने कथन की व्याख्या भी कर दी थी। मैंने कहा कि आर्य धर्म मनुस्मृति में वर्णित है। मनु के धर्मों में सनातन धर्म है, जो अपरिवर्तनशील है। कुछ धर्म सनातन नहीं हैं। वे काल, देश और परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। सनातन धर्म जो हिन्दू-समाज मानती हैं, वे हैं—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धीः, विद्या, सत्य और अक्रोध।

"इस पर लाला जी कहने लगे, 'ये तो सब धर्मों के लोग मानते हैं।'

"मैंने कहा, 'नहीं लाला जी! ऐसा नहीं है। संसार का कोई धर्म धीः और विद्या को सनातन धर्म का अंग नहीं मानता। धीः के अर्थ हैं बुद्धि का प्रयोग और विकास, और विद्या का अर्थ है कि ज्ञान की उपलब्धि और ज्ञानवान् का आदर।'

"लाला जी ने कह दिया, 'ये सामान्य बातें हैं। इसमें आर्य अथवा हिन्दू-धर्म की विशेषता नहीं है।'

"मेरी हँसी निकल गयी। लाला जी इसमें कारण समझे नहीं। मैंने कह दिया, 'आप वैदिक धर्म के तत्त्व को समझते नहीं और आपके डी० ए० वी० स्कूल तथा कालेज इसके प्रचार में सहायक नहीं होंगे।'

"मैंने उन्हें बताया कि मेरी योजना यह है कि स्कूल-कालेज चलाये जायें, परन्तु इसके लिये दान-दक्षिणा स्वामी जी के नाम से एकत्रित न की जाये। इनके लिये धन हिन्दू दानी महानुभावों से, शिक्षा तथा ईसाइयों से हिन्दू-समाज की रक्षा का नाम लेकर एकत्रित किया जाये।

"परन्तु स्वामी जी का कार्य यदि करना है तो इस प्रकार होगा। एक छोटा-सा विद्यालय, जिसकी एक श्रेणी में दस से अधिक विद्यार्थी न हों, खोलकर, उसमें अष्टाध्यायी, महाभाष्य से शिक्षा आरम्भ कर वेदांगों, तदनन्तर वेदों की शिक्षा दी जाये। ये विद्यार्थी पन्द्रह वर्ष की शिक्षा के उपरान्त जब निकलें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको आर्य-समाजों में पुरोहित नियुक्त कराइये। इनमें से योग्य विद्यार्थियों को इसी वेद विद्यालय के अन्वेषण-विभाग में काम करने के लिये लगा दीजिये।

"ऐसी संस्था के लिये एक करोड़ रुपये की माँग आर्य-जनता के समक्ष रखिये और कार्य आरम्भ करिये।

"इस पर लाला जी मेरा मुख देखते रह गये और फिर कुछ भी उत्तर दिये बिना उठ बैठे और हाथ जोड़, मेरा धन्यवाद कर कहने लगे, 'आपने बहुत कष्ट किया है और अपने अमूल्य विचारों से अवगत कर लाभान्वित किया है।'

"जब मैं उनके मकान से नीचे उतर रहा था तो उन्होंने मुझको कहा, 'नलिनी बाबू ! मैं समझता हूँ कि आप अपने काल से पचास वर्ष पूर्व हैं।'

"मैंने भी हँसी-हँसी में कह दिया, 'मैं समझता हूँ कि मैं और वास्तव में हिन्दू-समाज की गाड़ी छूट गयी है। हम ठीक समय पर स्टेशन पर नहीं पहुँच सके।'

"वे मेरी बात को समझे अथवा नहीं, कह नहीं सकता। मेरी पत्नी ने डी० ए० वी० कालेज फण्ड में कुल दस सहस्र रुपया अभी तक दिया है और इसी नाते वे मुझे कालेज कमेटी में लेना चाहते थे; परन्तु मेरे विचार सुन, उन्होंने अपना विचार बदल लिया। एक दिन महात्मा हंसराज जी ने बताया था कि वे कमेटी में एक ही विचार के लोग रखना चाहते हैं। कालेज कमेटी को वे 'डिबेटिंग क्लब' नहीं बनाना चाहते।

"अतः मैं दयानन्द जी का मन से भक्त हूँ, परन्तु न तो आर्य-समाजी हूँ और न ही इन कालेजों से कुछ विशेष आशा रखता हूँ।

"परन्तु महात्मा जी ! मैं वही बात आपसे कहता हूँ। यह गुरुकुल भी वैसी ही छलना सिद्ध होगा, जैसी कि डी० ए० वी० कालेज है। यह आर्य-जनता के साथ एक छलना का कार्य होगा। आपके संस्थान से शिक्षित विद्यार्थी वेद-धर्म और आर्य-संस्कृति का नाम तो लेंगे, परन्तु उनके वेद-धर्म और आर्य-संस्कृति का स्वरूप वह नहीं होगा, जो स्वामी जी चित्रित कर गये हैं।

"मैं गुरुकुल को डी० ए० वी० कालेज की सभ्यता से भिन्न सभ्यता वाला मानता हूँ, परन्तु दोनों की संस्कृति में कुछ विशेष अन्तर नहीं समझता।"

"और नलिनी बाबू, संस्कृति और सभ्यता में क्या अन्तर आप समझते हैं?"

"वैसे सभ्यता का मूल संस्कृति में होना चाहिये, परन्तु सभ्यता कभी-कभी मूल के बिना भी फलती-फूलती है। देखिये, मैं बताता हूँ। बंगाल में और मद्रास में, प्रायः सरकारी अधिकारी धोती और कुर्ता पहनते हैं। वैसे वे अंग्रेज़ी भाषा के विद्वान् होते हैं, संस्कृत से अनभिज्ञ होते हैं। हिन्दू-धर्मशास्त्रों को प्रायः वे नहीं जानते और जो जानते हैं वह भी यूरोपीय लेखकों की ऐनक से देखते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे सभ्यता से हिन्दू हैं, परन्तु संस्कृति से युरोपियन हैं।

"कई हिन्दू हैं जो तिलक लगाते हैं और पूजा-पाठ भी करते हैं, परन्तु देश के साथ द्रोह कर विदेशी राज्य को यहाँ पुष्ट करने में लगे रहते हैं। वे सभ्यता से हिन्दू हैं, परन्तु संस्कृति से अंग्रेज़।

"हमारे मित्रों में एक चन्दनसिंह हैं। वे नित्य गुरुद्वारे जाते हैं। वर्ष में दो बार गुरु ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ कराते हैं और बहुत श्रद्धा-भक्ति से श्री गुरु ग्रन्थ साहब पर गोटे-किनारे वाली चुनरी वर्ष में एक बार चढ़ाते हैं; परन्तु देश और देश से प्रेम करने वालों की मुखबरी किया करते हैं। ये धर्म तथा संस्कृति से ब्रिटिश हैं, परन्तु सभ्यता से सिक्ख हैं।

"हमारे यहाँ आर्य-समाज में भी ऐसे हैं जो बहुत ऊँची आवाज़ में सन्ध्या तथा हवन के मन्त्र बोलते हैं, परन्तु उनके घर में वेद नहीं हैं। उन्होंने कभी वेद के दर्शन भी नहीं किये। वे प्रायः कचहरी में वकालत करते हुए धर्म के सार सत्य की हत्या करते हैं। वे हैं सभ्यता से आर्य-समाजी, परन्तु धर्म तथा संस्कृति से असुर।"

"तो फिर आप क्या कहते हैं कि इस दुर्दशा से कैसे बचा जाये?"

"मैंने जो योजना स्वर्गीय लाला साईंदास को बतायी थी, वही आपको बताता हूँ। आप गुरुकुल में एक वैदिक अन्वेषण-विभाग खोलिये। उसके लिये आर्य-समाजियों से धन माँगिये। मैं ऐसे विभाग के संचालन में सहयोग दूँगा।

"इस विभाग में मैं गुरुकुल की छठी श्रेणी के विद्यार्थियों की शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक परीक्षा लेकर प्रवेश दूँगा। आरम्भ में पाँच विद्यार्थियों से अधिक नहीं लूँगा। कदाचित् पाँच भी उस स्तर के न मिल सकें, जिस स्तर के मैं चाहता हूँ। इस पर भी मैं कठोर परीक्षा के उपरान्त ही उनको लूँगा। इस प्रकार ग्यारह वर्ष की पढ़ाई के उपरान्त, चार-पाँच विद्यार्थी निकलने लगेंगे, जिनको मैं वेद-भाष्य करने पर लगा दूँगा।

"इसके लिये मैं आरम्भ में दस हज़ार रुपया वार्षिक व्यय से कार्य आरम्भ करूँगा और अन्तिम रूप में न्यूनातिन्यून पचहत्तर सहस्र वार्षिक व्यय चाहता हूँ। यह है काम आर्य-समाज का। डी० ए० वी कालेज तथा गुरुकुल को मैं केवल हिन्दू-समाज की सभ्यता का रक्षक मानता हूँ। धर्म और संस्कृति उस वेदानुसंधान संस्था के प्रयास से रक्षित होगी।"

महात्मा जी पन्द्रह दिन तक नलिनी की कोठी पर रहे और इन दिनों इस योजना पर चर्चा चलती रही। पन्द्रह दिन बाद महात्मा जी पूर्ण योजना बना कर ले गये और नलिनीकान्त गुरुकुल कांगड़ी में अपने विचार की वेदानुसंधान संस्थान में कार्य करने की तैयारी करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ११ :

आनन्दस्वरूप इस मुकद्दमे की लपेट में तो नहीं आया, परन्तु पूना में वह पकड़ा गया। बम्ब बनाते-बनाते फट गया था और जब वह वहाँ से भागने का प्रयास कर रहा था, वह पकड़ लिया गया। उसपर बम्बई में मुकद्दमा चला और उसे आजन्म कैद का दण्ड मिल गया।

वह जुलाई में पकड़ा गया था और सितम्बर मास में उसे दण्ड सुना दिया गया। इस पर उसकी हाई कोर्ट में अपील की गयी और वहाँ उसका दण्ड कम कर पाँच वर्ष कर दिया गया।

इस काल में विशेष बात यह हुई कि सुवर्णा, प्रज्ञा और प्रभा अपने तीन मास के लड़के को लाहौर में छोड़, बम्बई आ गयी थीं। तीनों बम्बई में एक होटल में रहती थीं।

एक दिन प्रज्ञा, बिना सूचना दिये ज्ञानस्वरूप के घरपर जा पहुँची। ज्ञान-स्वरूप आनन्दस्वरूप के षड्यन्त्र की जाँच में लगा हुआ था और इस जाँच के सम्बन्ध में उसे पूना आना-जाना पड़ रहा था। जिस दिन प्रज्ञा दास की कोठी में पहुँची तो ज्ञान पूना गया हुआ था और घर पर उसकी पत्नी अपने दो बच्चों को प्रातः का अल्पाहार करा रही थी। सब खाना खाने के कमरे में बैठे पौरेज और दूध ले रहे थे। बड़ा लड़का चार वर्ष का था और छोटा दो वर्ष का।

बैरा ने सूचना दी कि एक सूरत-शक्ल से बंगाली स्त्री मिस्टर दास से मिलने आयी है।

"कह दो कि घर पर नहीं हैं।"

"हजूर! कहा है, परन्तु वह कहती है कि वह उनकी पत्नी से मिलेगी।"

"कौन है?"

"मैंने नाम पूछा था। कहती है कि आप उनको जानती नहीं, परन्तु वह आपको जानती हैं और अपना परिचय स्वयं देंगी।"

"कह दो कि इस समय फुरसत नहीं है।"

बैरा यह सन्देश लेकर बाहर जाने के लिये घूमा ही था कि प्रज्ञा स्वयं खाने के कमरे में चली आयी और बोली, "मीनाक्षी! भला झूठ किसलिये बोल रही हो? मैं तुमसे ही मिलने आयी हूँ।"

मीनाक्षी उन दिनों भयभीत रहती थी। उसका पति बम्ब फैक्टरी के मुकद्दमे की जाँच में लगा था और उसने कह रखा था कि किसी अपरिचित व्यक्ति को कोठी के भीतर मत आने देना। कोई भी क्रान्तिकारी उसे और उसके पति को गोली का निशाना बना सकता है। अतः जब प्रज्ञा भीतर आयी तो वह लपक कर उठी और भीतर के कमरे में भाग जाने के लिये घूमी, परन्तु फिर प्रज्ञा की सूरत देख, वह ठिठक कर खड़ी रह गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रज्ञा उस समय पचास वर्ष की प्रौढ़ावस्था की स्त्री थी। सुन्दर, ओजस्वी रूप-राशि थी और उसकी मुस्कराहट में सम्मोहन था। वह अपनी वयस् से कुछ कम ही दिखायी देती थी।

"आप कौन हैं और क्या चाहती हैं ?" मीनाक्षी ने पूछ लिया।

"बैठो मीनाक्षी ! मैं बताती हूँ। कहाँ है तुम्हारा पति ?"

मीनाक्षी आश्वस्त हो अथवा सम्मोहन में बद्ध हो, भीतर भाग जाने का विचार छोड़, खड़ी-खड़ी ही कहने लगी, "पहले अपना परिचय दें, तब बात करूँगी।"

"मैं ज्ञानस्वरूप से लाहौर में मिली थी और मैंने उसे कहा भी था कि उसकी बहू से मिलने के लिये मैं उसके घर में आऊँगी। वह होता तो पहचान जाता।"

इतना कहते-कहते प्रज्ञा एक कुर्सी पर बैठ गयी। मीनाक्षी को ज्ञानस्वरूप ने बताया था कि वह उस स्त्री से मिला है, जिसका चित्र उनके घर पर है और जिसको वह कभी माता जी कहकर पुकारा करता था। इससे मीनाक्षी समझ गयी कि उसकी सास हो सकती है।

इसके साथ ही उसे यह भी ज्ञात था कि उसी स्त्री के दोनों भतीजे क्रान्तिकारी हैं। एक लाहौर में बन्दी है और दूसरा उस बम्ब फैक्टरी के केस में अभियुक्त है, जिसकी जांच उसका पति कर रहा है।

इस कारण वह बैठ तो गयी, परन्तु सतर्कता से पूछने लगी, "मैं आपके विषय में बहुत-कुछ सुन चुकी हूँ, परन्तु आप यहाँ क्या लेने आयी हैं ?"

"मैं बच्चों को देखना चाहती थी और तुमसे परिचय बढ़ाना चाहती हूँ। ये खा-पी लें तो मैं बताऊँगी कि मैं क्यों तुमसे परिचय बढ़ाना चाहती हूँ।"

साथ ही उसने बैरा की ओर देखा, जो अभी तक वहीं खड़ा था। मीनाक्षी समझ गयी कि यह स्त्री हत्यारी प्रतीत नहीं होती। यदि होती तो अब तक गोली चला चुकी होती। कम-से-कम उसकी हत्या करने का विचार नहीं रखती। साथ ही वह उसके पति की मां है।

वह यह भी विचार करती थी कि उसका अभी तक पिस्तौल निकाल, उसकी हत्या न करना, कदाचित् इस कारण भी हो सकता है कि रॉबर्ट वहाँ अभी तक खड़ा था। जब प्रज्ञा ने बैरा की ओर देखा तो उसे फिर सन्देह हुआ कि वह उसकी हत्या कर सकती है। इस पर भी वह पूछने लगी, "नाश्ता लेंगी ?"

"हाँ, यदि पूछोगी तो लूंगी। मैं इस समय आयी तो इसी विचार से थी कि अल्पाहार इन्स्पैक्टर साहब के घर पर लूंगी, परन्तु उनको यहाँ न देख, चुप थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विचार कर और एक बार नज़र भर कर प्रज्ञा की ओर देख, मीनाक्षी ने रॉबर्ट को कहा, "इनके लिये प्लेट लगा दो।"

रॉबर्ट अलमारी में से प्लेट, चम्मच, काँटे और चाय का प्याला निकाल, ले आया और प्रज्ञा के सामने रख, वहाँ ही खड़ा हो गया।

मीनाक्षी ने प्लेट में पौरेज डाला और दूध का बर्तन आगे कर कह दिया, "अपनी रुचि अनुसार डाल लीजिये।" साथ ही उसने चीनी का प्याला खिसका कर प्रज्ञा के सामने कर दिया। टोस्ट, मक्खन भी साथ ही रख दिये। फिर वह बैरा से बोली, "चाय का गरम पानी ले आओ।"

इस समय बच्चे नाश्ता समाप्त कर उठ खड़े हुए और वहाँ दीवार के साथ लटक रहे तौलिये से हाथ-मुख पोंछ, कोठी के बाहर लान में खेलने चले गये।

प्रज्ञा ने नाश्ता लेते हुए पूछ लिया, "मेरे विषय में क्या बताया है ज्ञानस्वरूप ने ?"

"वे कहते थे कि वह लाहौर में एक स्त्री से मिले हैं, जिसकी सूरत-शक्ल उस चित्र से मिलती है, जो हमारे पास है। लाहौर वाली स्त्री कहती है कि वह उनकी माँ है।"

"और कुछ ?"

"यही कि आपका एक युवक-सम्बन्धी लाहौर-विद्रोह के मुकद्दमे में बन्दी हो चुका है और दूसरा पूना में एक बम्ब-फैक्टरी के मुकद्दमे में पकड़ा गया है।"

"तो इसी कारण जब मैं भीतर आयी थी, तुम डर कर छुप जाने वाली थीं ?"

अब तो मीनाक्षी भी मुस्करायी और बोली, "आप भद्र लोगों का क्या भरोसा हो सकता है ?"

"तो तुम भी जानती हो कि बम्ब, पिस्तौल चलाने वाले भद्र लोग कहलाते हैं ?"

"यह बात तो देश-भर के समाचार-पत्रों में छप चुकी है और फिर जॉन के पिता भी बताते थे।"

"खैर, ज्ञान मेरा लड़का है और मैं उसको हानि नहीं पहुँचा सकती।"

"वे कहते थे कि आप एक ईसाई की पत्नी होते हुए भी हिन्दू थीं।"

"हाँ; ईसाई और हिन्दू सजातीय, मेरा अभिप्राय है कि मनुष्य-जाति के ही हैं और मनुष्य-मनुष्य में विवाह हो सकता है।"

"पर एक ईसाई के हाथ का छुआ खाने पर तो कोई हिन्दू नहीं रह सकता।"

"पर मैं तो रह सकी थी और अब भी तुम्हारे रॉबर्ट के हाथ का छुआ दलिया खाकर हिन्दू ही हूँ।"

"तो आप हिन्दू नहीं हैं। आप उनसे विलक्षण हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विलक्षण तो हूँ। ऐसे ही जैसे देखने में तुम सभी हो। तुम गाउन और स्कर्ट पहने हो और मैं चोली तथा साड़ी पहने हूँ। वैसे ही मैं भी हिन्दू ही हूँ, यद्यपि देखने में उनसे विलक्षण दिखायी देती हूँ।"

"पर हिन्दू तो बहुत बुरे आदमी होते हैं।"

"ईसाई भी तो कई बहुत बुरे होते हैं। कुछ तो हिन्दुओं में भी अच्छे लोग हैं।"

"मैंने कोई देखा नहीं।"

"और बुरे हिन्दुओं को देखा है ?"

"हाँ।"

"कहाँ ?"

"सुना है कि मेरी माँ के नाना के घर में एक गाय मर गयी थी और गाँव के हिन्दुओं ने उनका कुएँ से पानी लेना बन्द कर दिया था।"

"हाँ, एक कथा मैंने भी ऐसी ही सुनी है। यह बहुत देर की बात है। एक इटली का वैज्ञानिक कहता था कि पृथ्वी गोल है और तब के पादरियों और पोप ने यह फतवा पास कर दिया था कि उसे जीवित जला दिया जाये। एक हमारे देश की भी कथा है। एक सुकुमार लड़के ने कहीं कह दिया था कि वह मुसलमान नहीं हो सकता, क्योंकि इस्लाम एक घटिया मज़हब है। इस पर काज़ी ने आज्ञा दे दी थी कि उसको मृत्यु-दण्ड दिया जाये।

"यह जहालत के काल की बातें थीं। अब तो मैं तुम्हारे घर का दलिया, टोस्ट खाती हुई और चाय पीती हुई हिन्दू ही हूँ और यह कहती हूँ कि यदि तुम मेरे जैसी साड़ी, चोली पहन लो तो भी तुम ईसाई ही रहोगी।"

"बहुत विचित्र है !"

"हाँ। यह ऐसे ही विचित्र है जैसे कि एक भाई दूसरे भाई को फाँसी का दण्ड दिलवाने का यत्न कर रहा है।"

"कौन किसको दण्ड दिलवाने का यत्न कर रहा है ?"

"ज्ञानस्वरूप आनन्दस्वरूप को। दोनों मामा-बूआ के लड़के हैं।"

"पर वह बम्ब क्यों बना रहा था ?"

"कोई अनाधिकारी यहाँ अधिकार जमा कर यहाँ का धन-दौलत लूटने में लीन है। उसको तनिक धमका कर भगा देने के लिये बम्ब बनाने की आवश्यकता रही होगी।"

"पर यह तो देश-द्रोह है।"

"नहीं; देश-दोह नहीं। हाँ, यह राज-द्रोह तो है। परन्तु उस राजा से, जो राज्य करने का अधिकार नहीं रखता और जो राज्य को देश का धन लूटने का साधन बनाये हुए है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु वह बम्बबाज़ देश का क्या लगता है ?"

"वह यहाँ का एक रहने वाला है।"

"परन्तु हम भी तो यहाँ के रहने वाले हैं। हम भी इस देश के नागरिक हैं।"

"और देश के साथ द्रोह करने वाले ?"

"तो आप जौन के पिता से झगड़ा करने आयी हैं ?"

"नहीं, मीनाक्षी ! झगड़ा नहीं, वरन् सुलह करने के लिये। उसे देश-द्रोह के मार्ग से हटाने के लिये।"

"आपको पता होना चाहिये कि एक सरकारी अफसर को धमकाना, एक बहुत बड़ा अपराध है।"

"यह तो मुझे पता नहीं कि मैं किसी को क्या धमकी दे रही हूँ। देखो बेटी ! यदि ज्ञान मेरा लड़का न होता तो मैं यहाँ क्यों आती और फिर उससे सुलह करने की बात क्यों कहती ? माँ अपने लड़के को कहे कि वह कुछ गलत कर रहा है. यह धमकाना नहीं कहा जा सकता।

"तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं न ? वे कौन हैं ?"

"पिता का देहान्त हो चुका है। वे एक स्कूल में अध्यापक थे। माँ है और वह अपना निर्वाह एक स्कूल में पढ़ाती हुई कर रही है।"

"क्या नाम है उसका ?"

"राजेश्वरी मैथ्यू।"

"ओह !" प्रज्ञा को एक राजेश्वरी का स्मरण हो आया। किसी समय वह उसकी सौतन बनने का विचार कर रही थी। इससे उसने इस नयी राजेश्वरी के विषय में और अधिक जानने के लिये पूछ लिया, "यह राजेश्वरी एक महाराष्ट्रियन महिला हैं क्या ?"

"हाँ; वैसे तो वह पीछे एक अच्छे परिवार की लड़की है। मैं उन्हीं के नाना की बात बता रही थी कि एक गाय के मर जाने से वे बिरादरी और फिर गाँव से निकाल दिये गए थे।"

"अब समझ गयी हूँ। कमलनारायण वकील की बहन हैं ?"

"हाँ; वह मेरे मामा हैं। मेरे नाना का देहान्त हो चुका है, परन्तु नानी अभी जीवित हैं।"

"कमलनारायण की पत्नी नीला बैस्टन के कितने बच्चे हैं ?"

मीनाक्षी हँस पड़ी और बोली, "मामा ने उसे तलाक दे दिया था। तब उसके दो बच्चे थे। दोनों मामा जी ने पढ़ाये हैं और बड़े किये हैं। नीला अब एक अन्य की पत्नी है। वह पूना में रहती है और उससे उसके छः बच्चे हैं।"

"बहुत बहादुर स्त्री है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या बहादुरी है इसमें ?"

"वह आठ बच्चों की माँ है, यह उसके लिये एक गर्व की बात हो सकती है।"

"इतने बच्चे उत्पन्न करने से हम उसे कुतिया की संज्ञा दिया करते हैं।"

"हमसे किस-किस का अभिप्राय है तुम्हारा ?"

"जौन के पिता और मैं। वैसे मामा भी उसको ठीक स्त्री नहीं समझते।"

"परन्तु अधिक बच्चे उत्पन्न करना तो कोई बुरी बात नहीं है।"

"अवश्य कुछ और बात भी होगी। अन्यथा मामा उसे तलाक न देते।"

"देखो, मीनाक्षी ! मैं राजेश्वरी से मिलना चाहूँगी। पर मैं किसी को अपने होटल में बुलाना नहीं चाहती। वहाँ आने से कोई भी राज-भक्त बदनाम हो सकता है।"

"मैं माँ से पूछ कर बताऊँगी कि वह कब और कहाँ मिल सकती है ? पर आप तो हमारे, मेरा अभिप्राय है कि मेरी माँ के घर वालों को खूब जानती हैं।"

"हाँ; यह तुम्हें तुम्हारे मामा ही बतायेंगे।"

अल्पाहार बहुत देर का समाप्त हो चुका था। इस समय बच्चे खेलते-खेलते भीतर आ गये।

: १२ :

सायंकाल ज्ञानस्वरूप आया तो उसको मीनाक्षी ने बताया, "आपकी लाहौर वाली मम्मी आयी थीं।"

"अच्छा ! किस समय ?"

"प्रातः अल्पाहार के समय। उन्होंने अल्पाहार यहाँ लिया था और जाते समय बच्चों को तथा मुझे कुछ दे गयी हैं।"

"सत्य ! दिखाओ तो, क्या दे गयी हैं ?"

मीनाक्षी अपने कमरे में गयी और एक सोने की 'चेन' ले आयी। उसके नीचे एक बड़ा-सा चमकता हुआ नग सोने के लाकेट में लगा था।

ज्ञानस्वरूप ने देखा और कहा, "मालूम होता है कि यह असली 'डायमण्ड' है और अवश्य बहुत बड़ी कीमत का होगा। बच्चों को क्या दिया है ?"

"उनके लिये भी सोने की चेन हैं।"

"और मेरे लिये भी कुछ लायी थीं ?"

"कहती थीं कि आपको एक लॉकेट उन्होंने यहाँ से जाते समय दिया था। अब हमको ये देकर सब बराबर हो गये हैं।"

"मैं उनसे मिलूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु वह उस बम्बबाज़ के मुकद्दमे पर आयी हैं, जिसका 'केस' आप तैयार कर रहे हैं।"

"मुकद्दमा बन नहीं रहा। यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि वह उसी मकान में से निकला था, जिसमें विस्फोट हुआ था अथवा वह पड़ोस के मकान से निकल, भाग खड़ा हुआ था।"

"तो वह उस मकान में से नहीं पकड़ा गया ?"

"नहीं। वह तो मकान से सौ गज़ के अन्तर पर पकड़ा गया था। बस, इतनी बात का पता चला है कि वह एक पड़ोस के मकान में ही ठहरा हुआ था।"

"पूना में लाहौर के एक व्यक्ति का क्या काम था ?"

"यह तो उस पड़ोसी ने बताया है कि उस लड़के का पिता हिन्दू-शास्त्र का एक ज्ञाता है और वह उसके पिता का शिष्य है। आनन्द उसके पास पहले भी आया करता था और अब भी आया हुआ था।"

"तो सिद्ध हो गया कि वह बे-मतलब वहाँ ठहरा हुआ था ? बे-मतलब का अर्थ है कि किसी गुप्त मतलब से।"

"यह सिद्ध करना ही तो कठिन हो रहा है। वह तो बहाना बना रहा है। उसके साथ एक स्त्री आयी थी। वह कलकत्ता के बनारसी ज़रीदार वस्त्रों के एक सौदागर की पत्नी है; और वे पूना में बनारसी माल की दुकान करना चाहते हैं। यह लड़का उसी सम्बन्ध में वहाँ था।"

"पर आपकी माता जी तो कह रही थीं कि वह आततायी राजा को मारने के लिये बम्ब बनाता था।"

"कहने को तो सब यही कहते हैं कि वह बम्ब बना रहा था; परन्तु जब पकड़ा गया तो उसके हाथों तथा कपड़ों पर विस्फोट के चिह्न नहीं थे।"

"पर आपने तो मुकद्दमा ऐसा बनाना है कि वह पूरा दण्ड पा जाये।"

"ऐसा करने में कुछ तो आधार होना चाहिये।"

"वह लाहौर से लापता जो है।"

"परन्तु लाहौर के मुकद्दमे में तो उसके विरुद्ध कुछ भी सिद्ध नहीं हो सका। पुलिस का दावा था कि वह लाहौर की 'भारत माता' संस्था वालों को बम्ब और पिस्तौल प्राप्त कराता था, परन्तु वहाँ तो कुछ मिला नहीं।"

"यह राज-द्रोही तो है। उसकी बूआ ने यह स्वीकार किया है।"

"तो उसकी बूआ को पकड़ा जाये ?"

"मैं समझती हूँ कि ये सोने के लॉकेट रिश्वत में देकर वह आपके मन में भ्रम उत्पन्न कर गयी है।"

ज्ञानस्वरूप देख रहा था कि आनन्दस्वरूप को मुकद्दमे में फँसाना कठिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रहा है। इस कारण वह संशित-मन तो पहले ही था। अब यह देख कि उसकी माँ ही इस लड़के के मुकद्दमे के सम्बन्ध में वहाँ आयी है, तो वह समझने लगा था कि आखिर उसे इसमें फँसा कर क्या मिलने वाला है?

भाग-दौड़ वह कर रहा था, परन्तु श्रेय एक अंग्रेज़ अफसर को मिल रहा था।

मीनाक्षी के मन में पति की नौकरी में श्रेय की बात नहीं थी। उसको तो कुछ यह समझ आ रहा था कि अंग्रेज़ी राज्य भारत में सुख और शान्ति का राज्य है और इस राज्य का विरोध करने वाले, देशवासियों का ही अहित कर रहे हैं। मीनाक्षी बम्बई के एक ईसाई लड़कियों के स्कूल में पढ़ी थी और वहाँ के संस्कारों के अधीन ही बात कर रही थी।

इसके अतिरिक्त आनन्द की बूआ कह गयी थी कि देश-द्रोह और राज-द्रोह दो भिन्न-भिन्न बातें हैं और वह इसको समझ नहीं सकी थी।

इसके पाँच-सात दिन उपरान्त प्रज्ञा और सुवर्णा, दोनों ज्ञानस्वरूप से मिलने आयीं। ज्ञानस्वरूप मुकद्दमे की मिसल पर अपने अफसर मिस्टर मैक मिलियन आर्थर से वार्त्तालाप करता हुआ आया था। मिस्टर आर्थर ने स्वयं कहा था, 'मुकद्दमा दुर्बल है, परन्तु सरकार का इसकी तैयारी में दस हज़ार रुपया व्यय हो चुका है। इस कारण कुछ-न-कुछ तो इस विषय में करना चाहिये।' इस कुछ-न-कुछ के अधीन दस-ग्यारह झूठे साक्षी बना लिये गए थे और मुकद्दमे की फाइल में अनुपस्थित कड़ियों को पूर्ण किया गया था।

वह मन में विचार करता हुआ घर पहुँचा था कि भला आनन्दस्वरूप छूट जाता है तो उसे क्या? वह किसलिये इस झूठ और छलना के पुलिन्दे को तैयार करने में सहयोग दे रहा है? वह इन विचारों को एक ही स्थान पर जाकर समाप्त होते देखता था। वह स्थान था, उसकी सरकारी नौकरी।

वह बम्बई विश्वविद्यालय का स्नातक था और समझता था कि यदि सरकारी नौकरी से निकाल दिया गया तो फिर क्या कर सकेगा? उसे कुछ काम सूझ नहीं रहा था।

इसी मानसिक अवस्था में वह अपनी कोठी में पहुँचा था और अपने दफ्तर के कपड़े बदल, चाय के लिये ड्रायंग-रूम में आया था कि बैरा ने आकर बताया, "हज़ूर! वही बंगाली स्त्री आज एक साड़ी पहने, अंग्रेज़ स्त्री के साथ आयी है।"

ज्ञान समझ गया कि आनन्द की माँ साथ है। अब तक वह आनन्दस्वरूप के परिवार का इतिहास जान चुका था। प्रज्ञा ने अपना परिचय राजेश्वरी और उसके भाई कमलनारायण से बताया था और ज्ञानस्वरूप उन दोनों से मिला था। राजेश्वरी ने तो सुवर्णा और उसके पति नलिनीकान्त की बहुत प्रशंसा की थी, परन्तु कमलनारायण ने यह सम्मति प्रकट कर दी थी कि जिस प्रकार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार पिता के थे, उनसे लड़के का क्रान्तिकारी होना स्वयं-सिद्ध है।

ज्ञानस्वरूप ने कमल को यह नहीं बताया कि मुकद्दमा दुर्बल है और उसकी दुर्बलता को दूर करने के लिये कुछ झूठे साक्षी तैयार किये गए हैं। यह उसके महकमे का रहस्य था। इसे वह एक योग्य वकील के समक्ष कह नहीं सका।

अतः जब बैरा ने सूचना दी तो उसने उसे कह दिया, "उनको ड्रायंग-रूम में ले आओ।"

प्रज्ञा और सुवर्णा आयीं तो उसने दोनों का उठ कर स्वागत किया। उनको बैठा कर उसने कहा, "आपको इस स्थान पर बहुत कम आना चाहिये और यदि मुकद्दमे के समाप्त होने तक न आयें तो बहुत कृपा होगी।"

सुवर्णा ने पूछा, "ज्ञान! हमसे डर लगने लगा है? भला किसलिये?"

"आपसे डर तो नहीं लग रहा, परन्तु अपने अफसरों से अवश्य डर रहा हूं। वे मुझे नौकरी से निकाल देंगे।"

"क्यों?"

"वे समझेंगे कि मैंने आपके प्रभाव में आकर, मुकद्दमे के रहस्य आपको बता दिये हैं।"

"तो मुकद्दमे में कुछ रहस्य भी हैं?" प्रज्ञा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"खुफिया पुलिस के सब काम रहस्यपूर्ण होते ही हैं। इसी कारण तो इस महकमे को खुफिया कहते हैं।"

"तो ऐसा करो कि तुम ईमानदारी से हमें कोई रहस्य मत बताओ। फिर भला, कोई तुम पर इस प्रकार का आरोप क्यों लगायेगा?"

"यदि कहीं मुकद्दमा आनन्द को दण्ड दिलवाने में योग्य न हुआ तो आपके बार-बार मेरे सम्पर्क में आने से सब सन्देह की दृष्टि से मुझे देखेंगे।"

"तो फिर क्या होगा?"

"मुझे नौकरी से निकाल दिया जायेगा।"

"क्या वेतन पाते हो सरकार से?"

"वेतन तो कुछ अधिक नहीं, परन्तु कुछ ऊपर से आय हो जाती है और निर्वाह हो रहा है।"

"फिर भी ईमानदारी और ऊपर से कितना बना लेते हो?"

"लगभग तीन-चार सौ रुपया मासिक।"

"इतना कुछ तो किसी अन्य स्थान से भी मिल जायेगा। यह कुछ बहुत अधिक आय नहीं।"

अब सुवर्णा ने कह दिया, "परन्तु ज्ञान! इसका यह अर्थ मत समझो कि हम तुम्हें किसी प्रकार से अपने कर्त्तव्य से च्युत करने आये हैं। तुम जो उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझो, करो। यदि तुम समझते हो कि हम तुम्हें किसी प्रकार से अपने कर्त्तव्य-पालन से विचलित करने आती हैं तो हम अब नहीं आएँगी। परन्तु क्या यह ठीक है कि तुम्हारा कर्त्तव्य इस बात की माँग करता है कि तुम अपनी माँ से भी न मिलो। देख लो, वह क्या कर्त्तव्य है, जो तुमको इतना त्याग करने को कहता है ?"

इस पर मीनाक्षी ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "हम सरकारी नौकर हैं और आप सरकार के बाग़ी परिवार से सम्बन्धित हैं। परिवार का एक लड़का लाहौर में बग़ावत का प्रचार करने के अपराध में पकड़ा हुआ है और दूसरा यहाँ बम्ब फैक्टरी खोले हुए पकड़ा गया है। बताइये, आपसे हमारा सम्पर्क कैसे हो सकता है ?"

सुवर्णा उठ खड़ी हुई। प्रज्ञा अभी भी बैठी थी। उसने बैठे-बैठे ही कहा, "मैं आज्ञा तो नहीं दे सकती, परन्तु इतना तो कह ही सकती हूँ कि यह नौकरी अति तुच्छ वस्तु है। इसके लिये यदि तुम आत्मा का हनन कर रहे हो तो यह एक अति दुःख का विषय हो सकता है। इससे तुमको सुख नहीं मिलेगा।"

उत्तर अभी भी मीनाक्षी ने ही दिया, "आप कहती हैं कि इनकी माँ हैं। यदि यह ठीक है तो आपको अपने पुत्र की भलाई में बाधक नहीं बनना चाहिये।"

"और यदि मैं भलाई इसमें समझूँ कि वह नौकरी को छोड़, परिवार में सम्मिलित हो जाये, तो फिर क्या कहोगी ?"

"अपनी भलाई-बुराई देखने का भार हम पर ही छोड़िये। आखिर हम बच्चे तो हैं नहीं। हम सब-कुछ समझते हैं। आप राज-द्रोही परिवार से सम्बन्ध रखती हैं और आपसे हमारा सम्पर्क किसी प्रकार भी हितकर प्रतीत नहीं होता।"

प्रज्ञा उदास-चित्त उठी और सुवर्णा के साथ कोठी से निकल गई। जब ये दोनों उसी घोड़ा-गाड़ी में सवार हो चली गयीं, जिसमें वहाँ आयी थीं, तो पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे का मुख देखते रह गये। ज्ञानस्वरूप ने कहा, "लाहौर में मैंने माँ को कहा था कि मैं उसे बम्बई लाना चाहता हूँ। इस पर माँ ने कहा था कि उसे भय है कि मेरी पत्नी उसे घर से निकाल देगी।"

"पर वह माँ है क्या ? आपको विश्वास है क्या ?"

"मैं तुम्हारी माँ तथा मामा से मिला हूँ और उन्होंने इनकी बात का समर्थन किया है। साथ ही मामा जी ने यह भी कहा है कि अपनी माँ के भाई नलिनीकान्त और उसकी पत्नी सुवर्णा से बच कर रहना चाहिये। वह मेरी पत्नी को बरगला कर मेरे विपरीत करने की क्षमता रखता है। इसके विपरीत तुम्हारी माँ ने तो यह बताया है कि हिन्दुओं में यह एक अति श्रेष्ठ परिवार है। जब मैंने मामा जी की बात उन्हें बतायी तो उन्होंने मामा की प्रथम पत्नी के तलाक की एक कहानी बता दी, जिस कारण मामा इस परिवार का विरोध करते हैं। तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता जी का यह भी कहना है कि मामा जी अपनी वर्त्तमान पत्नी से सन्तुष्ट नहीं। इस कारण वे अपना असन्तोष नलिनीकान्त जी तथा अपनी पहली पत्नी नीला पर प्रकट करते रहते हैं।''

मीनाक्षी ने कहा, "मुझे मामा जी की बात में तथ्य प्रतीत होता है। माँ मामा जी से इस कारण रुष्ट है कि माँ की आर्थिक कठिनाई के समय उनको कुछ विशेष सहायता नहीं की गई और उनके मन में अपने भाई के प्रति द्वेष छुपा हुआ है।''

ज्ञान को मीनाक्षी की बात समझ में नहीं आयी। इस पर भी वह चुप कर रहा।

आनन्दस्वरूप को तीसरे दर्जे का घोर पीड़न दिया गया था, जिससे वह अपने कुछ साथियों का नाम बता दे, परन्तु पुलिस को इसमें सफलता नहीं मिली। इस कारण मुकद्दमा हुआ और सरकारी पक्ष में पुलिस के अधिकारियों के अतिरिक्त भाड़े पर एकत्रित किये गए साक्षी ही उपस्थित किये जा सके। पूना में श्री बाल गंगाधर तिलक के व्याख्यानों और लेखों का प्रभाव था। उनका पत्र 'मराठा केसरी' देश के क्रान्तिकारियों के विषय में इस प्रकार की भावना उत्पन्न करता रहता था, जिससे उनके उपायों का समर्थन न करते हुए भी, उनको देश का शत्रु नहीं माना जाता था। यह भी मुख्य कारण था, जिससे कि आनन्दस्वरूप के विपरीत सरकार को किसी सम्भ्रान्त परिवार का कोई साक्षी नहीं मिल सका।

आनन्दस्वरूप की सहन-शक्ति इतनी प्रबल थी कि पुलिस के तीसरे दर्जे के उपाय भी, उसे अपने किसी साथी का नाम बताने पर विवश नहीं कर सके।

मुकद्दमा चला और प्रथम न्यायालय में राजनैतिक प्रभाव के कारण उसे दोषी समझ, सैशन के सुपुर्द कर दिया गया।

आनन्दस्वरूप को सैशन कोर्ट में आजन्म कैद का दण्ड दे दिया गया। अभियुक्त की ओर से सफाई को झूठा माना गया।

इस बात ने ज्ञान के मन में अंग्रेज़ी न्याय पर सन्देह उत्पन्न कर दिया। वह जानता था कि सरकारी पक्ष झूठा है। मुकद्दमा झूठे साक्षियों के आधार पर टिका है और अभियुक्त के वकील के प्रश्न पूछने पर प्रायः सब-के-सब साक्षी निरुत्तर हो झूठे सिद्ध हो चुके थे। इस पर भी न्यायालय ने उनको सत्य साक्षी कहा और अभियुक्त के पक्ष के प्रायः सब साक्षी प्रश्नोत्तर के समय भी अपने वक्तव्य से च्युत नहीं किये जा सके थे और वे झूठे घोषित किये गए थे।

जिस दिन सैशन जज ने अपना निर्णय दिया और निर्णय ज्ञानस्वरूप ने पढ़ा, उसने अपनी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया।

आनन्दस्वरूप के दण्ड के विपरीत हाई कोर्ट में अपील कर दी गयी।

—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

देश में कहे जाने वाले नरम दल और गरम दल वालों में संघर्ष अति उग्र हो गया था।

सन् १९०६ में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में प्रतिनिधियों में गरम दल वालों की संख्या अधिक थी, परन्तु कांग्रेस संस्था पर अधिकार नरम दल वालों का था। दादा भाई नारोजी को विलायत से अध्यक्षता करने के लिये बुलाया गया था। नरम दल वालों का विचार था कि दादा भाई जी का व्यक्तित्व गरम दल वालों को नियन्त्रण में रख सकेगा।

यह बात आंशिक रूप में ही सत्य सिद्ध हुई। दादा भाई जी ने गरम दल वालों को अपने अनुकूल करने के लिये लोकमान्य तिलक का नारा कि, 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है' स्वीकार कर लिया। इससे बात बनती तो दिखायी दी, परन्तु बंगाल के बिपिनचन्द्र पाल, महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक और खापर्डे तथा पंजाब के लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह सन्तुष्ट नहीं हुए।

इस पर दोनों दलों में किसी प्रकार का समझौता कराने के लिये अध्यक्ष दादा भाई नारोजी ने तिलक और लाला लाजपतराय को अपने कैम्प में बुला लिया। दादा भाई नारोजी का कहना था, "हम स्वराज्य-प्राप्ति के विपरीत नहीं हैं। मैंने अपने अध्यक्षीय भाषण में भी स्वराज्य-प्राप्ति कांग्रेस का ध्येय घोषित किया है। अतः अब आप में और नरम दल वालों के उद्देश्य में कोई अन्तर नहीं रहा। अब उपायों में अन्तर रह गया है। उस पर समझौता होना सम्भव प्रतीत होता है। बताइये तिलक जी, आप क्या चाहते हैं ?"

तिलक जी ने कहा, "मैं कुछ नहीं चाहता। मैं तो केवल यह कहता हूँ कि जब लोहा गर्म हो तो इसे पीटना चाहिये।"

"क्या गर्म है यहाँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये," तिलक जी ने अपनी ओजस्वी भाषा में कहा, "लॉर्ड कर्ज़न ने कुछ भूलें की हैं। उससे पहले बंगाल की और अब पूर्ण देश की जनता विक्षुब्ध हो उठी है। लॉर्ड कर्ज़न के वक्तव्यों और कर्तव्यों का आश्रय ले, उग्रवादियों ने देश में एक ऐसा वातावरण निर्माण किया है कि देश की पूर्ण सज्ञान जनता स्वराज्य-प्राप्ति की इच्छा करने लगी है।

"क्रान्तिकारी इस आन्दोलन को अपने त्याग और तपस्या से गर्म रख रहे हैं। इस सबका परिणाम यह होने वाला है कि सरकार कुछ-न-कुछ अंशों में राज्याधिकार हिन्दुस्तानियों को देने के लिये तैयार हो जायेगी।

"इसका प्रमाण यह है कि सरकार ने देश-द्रोही मुसलमानों को भड़काने के लिये १ अक्टूबर, सन् १९०६ को पृथकता का प्रस्ताव कर दिया है। यह प्रस्ताव आगे मिलने वाले स्वराज्य के अंश को निरर्थक करने के लिये है।

"मैं समझता हूँ कि हमें जहाँ स्वराज्य की मांग करनी चाहिये, वहाँ देश के इन द्रोहियों को निन्दनीय कहना चाहिये।"

"मिस्टर तिलक! यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं।"

"दादा भाई! यह आपके प्रश्न का उत्तर ही है। आपने पूछा है कि मैं क्या चाहता हूँ और मैं बता रहा हूँ कि मैं क्या चाहता हूँ। कांग्रेस को हमारे दृष्टिकोण को स्वीकार करना चाहिये। वह दृष्टिकोण यह है कि देश-प्रेम की भावना, जो जन-मानस में उत्पन्न हो उठी है, उसे जाग्रत रखा जाये और क्रान्तिकारी युवक, जो अपने बलिदानों से वातावरण को गर्म कर रहे हैं, उनकी निन्दा न की जाये तथा उन द्वारा गर्म किये लोहे से लाभ उठा कर ब्रिटिश पार्लियामैण्ट से अच्छे-से-अच्छा समझौता करने का यत्न किया जाये।"

दादा भाई नारोजी तिलक जी की युक्ति सुन, मौन हो गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे। वे कुछ उत्तर नहीं दे सके। उन्होंने अब लाला लाजपतराय की ओर घूम कर पूछ लिया, "आप क्या चाहते हैं?"

"मेरा तो यह कहना है कि सरकार ने हिन्दू-मुसलमानों के भीतर दरार को बढ़ा कर 'डिवाइड ऐण्ड रूल' की नीति को उग्र किया है। हमें इसका विरोध इस ढंग से करना चाहिये कि यह दरार हिन्दू और मुसलमानों में न रहकर देश-भक्तों और देश-द्रोहियों में हो जाये।"

"यह कैसे हो सकता है? हम इसमें क्या कर सकते हैं?"

"यह बहुत सुगम है। कांग्रेस देश-भक्तों की संस्था बन जाये और सरकार-भक्तों को कांग्रेस से निकाल बाहर कर दिया जाये। निकालने में हिन्दू-मुसलमान का विचार न रखा जाये। स्वराज्य के पक्ष और विपक्ष का विचार किया जाये।"

"यह मैंने अपनी घोषणा से कर दिया है।"

"तो इसी मतलब का एक प्रस्ताव पास कर दिया जाये?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह नहीं हो सकेगा। ऐसा करने से फिरोज़शाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी और बीसियों दूसरे कांग्रेस से बाहर निकल जायेंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि कृष्णगोपाल गोखले भी इसमें नहीं रह सकेंगे।"

"मैं भी यही चाहता हूँ कि वे लोग कांग्रेस में न रहें, जो यह कहते रहे हैं कि, We plead for the permanence of British Rule in India.[१]"

"और आप किनको कांग्रेस में रखना चाहते हैं?"

"जो हमारे कम-से-कम कार्यक्रम स्वदेशी को चाहते हैं और विदेशीय माल का बहिष्कार पसन्द करते हैं।"

दादा भाई नारोजी को इसमें समझौते की गंध नज़र आयी। उन्होंने लाला लाजपतराय के सुझाव को स्वीकार कर लिया और सुरेन्द्रनाथ इत्यादि राज्य-भक्तों को स्वदेशी के प्रस्ताव पर कांग्रेस न छोड़ने पर राज़ी कर लिया। खुले अधिवेशन में स्वदेशी का प्रस्ताव पास हो गया और नरम दल वालों में से किसी ने त्याग-पत्र नहीं दिया। इसके साथ ही फिरोज़शाह मेहता कांग्रेस पर नरम दल वालों के अधिकार बनाये रखने का यत्न करने लगे।

नलिनीकान्त लाहौर से डैलीगेट बन कर कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में गया था। लाला लाजपतराय और वे दोनों एक ही डिब्बे में वापस लाहौर आ रहे थे। कलकत्ता से चलते ही दोनों में बात हो गयी। लाला जी ने ही बात आरम्भ की।

दोनों फर्स्ट क्लास के डिब्बे में अपने-अपने बर्थ पर बिस्तर लगाकर बैठे हुए थे। लाला जी ने पूछ लिया, "नलिनी बाबू! क्या प्रतिक्रिया देखी है जन-साधारण में?"

"मैं बंगाल और महाराष्ट्र के बहुत से प्रतिनिधियों से मिला हूँ। वे इससे सन्तुष्ट नहीं हैं। एक बहुत बड़ी संख्या में लोग स्वराज्य के पक्ष में प्रस्ताव चाहते थे।"

इस पर लाला जी ने कांग्रेस के प्रधान दादा भाई नारोजी से अपनी भेंट का वृत्तान्त बता दिया। नलिनी सुनकर हँस पड़ा।

लाला जी ने इस भेंट का वृत्तान्त इस कारण बताया था कि स्वदेशी के प्रस्ताव पर समझौता उनके सुझाव पर ही हुआ था और वे इस पर प्रसन्न थे। जब नलिनी हँसा तो लाला जी विस्मय में उसका मुख देखने लगे। नलिनी ने बताया, "प्राय: बंगाली डैलिगेट यह समझे हैं कि आपने पीछे से उनकी टाँग घसीट ली है। बिपिनचन्द्र पाल यह कहते सुने गये हैं कि पंजाबियों ने सस्ते में ही सौदा कर लिया है।"

---

१. हम हिन्दुस्तान में ब्रिटिश राज्य को सदा के लिये चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर फिरोज़शाह मेहता तो कहते थे कि गरम दल वालों की भारी जीत हुई है।"

"मेरा उनसे अच्छा परिचय है और वे मुझे बता रहे थे कि इस प्रस्ताव पर भी सरकार नाराज़ होगी। मैंने पूछा था, 'तो क्या आप अधिवेशन में सरकार को प्रसन्न करने आये थे?' उनका उत्तर था, 'निस्सन्देह! आखिर हमें यदि कुछ मिलना है तो सरकार को प्रसन्न करने पर ही मिल सकता है।'

"मैंने उनको समझाने का यत्न किया था कि 'सरकार प्रसन्नता से कुछ भी नहीं देगी। कभी भी कोई विदेशीय स्वेच्छा से राज्य नहीं छोड़ता। शासकों को विवश कर ही राजगद्दियाँ छीनी जाती हैं।'

"वे पूछते थे, 'कैसे विवश कर सकते हैं हम उनको?' मेरा उत्तर था, 'यह आपको नहीं करना। यह तो दूसरे कर रहे हैं। आपने तो उनसे अच्छी-से-अच्छी शर्तों पर समझौता करना है।'

"मेहता साहब का कहना था, 'समझौते से पूर्व ही वे कांग्रेस को भंग कर देंगे। मुझे यह संकेत मिला है कि सरकार इन क्रान्तिकारियों और उनके समर्थक गरम दल वालों को कुचल देगी।'"

"मुझे भी मिस्टर बैनर्जी ने बताया था। उनका कहना था कि कुछ दिन पूर्व बंगाल के गवर्नर बहादुर ने उनको भेंट के लिये बुलाया था और यह चेतावनी दी थी कि कांग्रेस को हम राज-भक्त संस्था मानते हैं और यदि इसने स्वदेशी तथा विदेशी बहिष्कार का प्रस्ताव पारित कर दिया तो हम इसे बाग़ी संस्था मानने पर विवश हो जायेंगे।"

"देखिये, लाला जी! यदि आप डट जाते और स्वराज्य के प्रस्ताव पर हठ करते तो उस प्रस्ताव के साथ भी वही बात होती, जो स्वदेशी के प्रस्ताव के साथ हुई है। विषय-निर्धारिणी समिति प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती और खुले अधिवेशन में प्रस्ताव पारित हो जाता।"

"और सब बड़े-बड़े नेता कांग्रेस छोड़ जाते।"

"ऐसा नहीं, लाला जी! सब पुराने और बूढ़े नेता कांग्रेस को छोड़ जाते और आप जैसे युवक पूर्ण देश के नेता बन जाते।"

"कहने को तो तिलक जी भी यही कहते थे, परन्तु जब मैंने यह कहा कि कांग्रेस 'युगान्तर समिति' की भाँति वर्जित कर दी जायेगी तो वे भी चुप कर गये।"

नलिनी जानता था कि 'युगान्तर समिति' के साथ क्या हुआ है। समिति के सदस्य अब भूम्यान्तर्गत थे। जो कोई भी मिला, पकड़ कर दण्डित कर दिया गया था।

तिलक जी इसी सम्भावना पर मौन हो गये थे, परन्तु नलिनी मौन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुग्रा। उसने कह दिया, "तब 'युगान्तर समिति' की भाँति कांग्रेस भी भूम्यान्तर्गत हो जाती।"

"ठीक है," लाजपतराय जी ने कहा, "परन्तु तब उस कांग्रेस में मैं, तिलक ग्रौर दादा खापर्डे न रह सकते।"

"लाला जी! यह तो संसार की गति है। सब बड़े चलते जाते हैं ग्रौर युवक उनका स्थान लेते चले ग्राते हैं। इस ग्राने-जाने के भय से संसार रुक नहीं सकता।

"देखिये, लाला जी! दो ही विकल्प थे इस समस्या के। एक यह है कि चुपचाप वे लोग जो सरकार से भयभीत हैं, एक ग्रोर हट जायें ग्रौर कांग्रेस को युवकों के हाथ में दे दें। ग्रन्यथा स्वराज्य का प्रस्ताव पास कर देते ग्रौर फिर सरकार के रोष को सहन करते।"

"एक तीसरा भी विकल्प था।" लाला जी ने सुझाव दिया।

"वह क्या?"

"ये नवयुवक ग्रपनी एक नयी संस्था बना लेते।"

"वह तो बन रही है। उस ढंग की संस्थाएँ देश-व्यापी नहीं हो सकतीं। वे स्थानीय ग्रौर गुप्त ही होंगी। मैं तो खुले-ग्राम काम करने वाली संस्था की बात कह रहा हूँ। ऐसी खुले में काम करने वाली संस्था को कार्य-रूप में बग़ावत नहीं करनी चाहिये। इनको चाहिये कि समझ-समझा कर बातचीत द्वारा स्वराज्य की माँग करे।

"व्यवहारिक दबाव दूसरे लोग डाल रहे हैं। ग्राप बातचीत करने वाले हैं। इस कारण जब ग्राप एक सेर की माँग करेंगे तो एक छटाँक-भर ग्रापको मिल जायेगा। यह उतना ही ग्रधिक होगा, जितना ग्रधिक क्रांतिकारी ऊधम मचायेंगे ग्रौर साथ ही उतना ग्रधिक होगा, जितना बातचीत करने वाला वकील ग्रपनी माँग को ऊँचा रख सकेगा।"

"यह बात फिरोज़शाह मेहता इत्यादि नहीं कर सकेंगे। मैं तो यह ग्रनुभव कर रहा हूँ कि ऐसा करने वाला देश में कोई दिखायी नहीं देता।"

"है तो, परन्तु उनको पुराने महारथियों ने ग्रागे ग्राने से रोका हुग्रा है।" नलिनीकान्त का कहना था।

"कैसे रोका हुग्रा है?"

"इस बार कांग्रेस के प्रधान तिलक जी बनने वाले थे, परन्तु दादा भाई जी का नाम उपस्थित कर तिलक जी का नाम रोक दिया गया है।"

"इससे तो यह सिद्ध होता है कि कलकत्ता की स्वागतकारिणी-समिति तिलक जी को दादा भाई से कम योग्य मानती है।"

"ऐसा नहीं लाला जी! स्वागत-कारिणी के सदस्यों की बहु-संख्या तिलक जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विश्वास रखती थी, परन्तु दादा भाई जैसे वयोवृद्ध का अपमान नहीं करना चाहती थी। ऐसे अवसर पर भीष्म पितामह को सामने ला खड़ा कर, दुर्योधन का अभिनय किया गया है।"

"और वे लोग युधिष्ठिर की भांति धर्म-पुत्र बन ठगे गये हैं।"

"हाँ। इस बार तो ठगे गये हैं, परन्तु परिणाम वही होगा, जो महाभारत युद्ध में हुआ था। मेरा अभिप्राय है सर्वनाश।"

"मैं समझता हूँ कि तिलक जी के लिये मार्ग खुला है। वे अपनी एक नवीन संस्था बना सकते हैं।"

"अर्थात् महाभारत युद्ध होना चाहिये। कांग्रेस वाले उनको मूर्ख, अधीर और खिचड़ी का उबाल-मात्र कहकर निन्दा करें। उन्हें देश-द्रोही कहें और स्वयं सरकार के स्नेह-पात्र बन, गुलछर्रे उड़ायें। लाला जी, यह तो ब्रिटिश सरकार को निकालने से पूर्व ही एक प्रकार का गृह-युद्ध हो जायेगा।"

: २ :

हिन्दुस्तान में राजनीतिक चित्र द्रुत-गति से बदलने लगा था। मिदनापुर में सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने तिलक इत्यादि को जी भर कर कोसा और बंगाल के युवकों में उनके प्रति रोष उत्पन्न हो गया।

सरकार क्रान्तिकारियों की पकड़-धकड़ करती ही थी। अब उसने प्रत्यक्ष आन्दोलन करने वालों को भी पकड़ने का अभियान चलाया। लाला लाजपतराय और अजीतसिंह पंजाब में पकड़ कर नज़रबन्द कर दिये गए। बंगाल में श्री अरविन्द घोष और बिपिनचन्द्र पाल पकड़ लिये गए। तिलक जी पर अभी हाथ नहीं उठाया गया था कि इंगलैण्ड में पार्लियामैण्ट के कुछ उदारवादी सदस्यों ने बा-वेला मचाना आरम्भ कर दिया। इससे सरकार शान्त हो गई। इस पर भी क्रान्तिकारियों पर लौह हाथ चलता रहा। वे पकड़-पकड़ कर अण्डमान भेजे जाते रहे।

नलिनीकान्त का घर इस सरकारी आतंक की लपेट में पूर्ण रूप से आ गया था। उसके दोनों लड़के बन्दी थे और उन पर मुकद्दमे चल रहे थे। विजय की पत्नी को अपने पति पर रोष था, परन्तु आनन्द की पत्नी प्रभा अपने पति पर गर्व अनुभव करती थी।

जब सैशन कोर्ट में दण्ड सुनाया गया तो प्रज्ञा और सुवर्णा लाहौर लौट जाने को तैयार हो गयीं, परन्तु प्रभा की इच्छा तब तक वहाँ रहने की थी, जब तक उसका पति बम्बई जेल में था। उससे नियमित भेंट तो महीने में एक बार हो सकती थी, परन्तु अनियमित भेंट करने की भी सुविधा थी। जेलर, जब भी प्रभा जाती, उसे भेंट की सुविधा का प्रबन्ध कर देता था और वह सप्ताह में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम-से-कम एक बार मिठाई, फल इत्यादि पहुँचाने वहाँ पहुँच जाया करती थी। इसके लिये उसे कुछ-न-कुछ जेलर की भेंट-पूजा करनी पड़ती थी।

एक दिन नियमित भेंट के अवसर पर आनन्दस्वरूप ने पूछ ही लिया, "प्रभा ! मुझे तो आशा नहीं कि हाई कोर्ट में दण्ड कम हो। तुम्हारे लिये मुझे बहुत दुःख है।"

"वाह ! यह हीन भावना आपके मन में कब से उत्पन्न हुई है ? मैं तो आपकी पत्नी बनने पर स्वयं को परम सौभाग्यशाली मानती हूँ। साथ ही मुझे विश्वास है कि हमारा जीवन दीर्घ काल तक साथ-साथ चलेगा। जीवन-भर की काली घटाएँ शीघ्र ही छिन्न-भिन्न होने वाली हैं।"

यद्यपि आनन्द कुछ ऐसी आशा नहीं रखता था, परन्तु प्रभा के उलहाने से तथा उसकी आशापूर्ण बातों से कुछ लज्जा अनुभव करते हुए वह बात बदल कर बोला, "मैं यह नहीं कर रहा। इस पर भी मैं यह पूछ रहा हूँ कि आखिर जीवन में कुछ तो करना ही होगा।"

"वह मैं आपकी माता जी से सम्मति कर चुकी हूँ। मेरा विचार है कि यह काल पलक भी झपक में ही निकल जायेगा।"

आनन्द ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "ज्ञान से फिर कभी भेंट हुई है अथवा नहीं ?"

"नहीं; एक दिन चौपाटी पर घूमता हुआ वह मिला था। माता जी, जबसे उसकी पत्नी से तिरस्कृत हो आयी हैं, उसके विषय में विचार तक नहीं करतीं। मेरा तो उससे परिचय भी नहीं है। मैं उसे पहचानती तो हूँ, परन्तु मुझे सन्देह है कि उसने मुझे कभी देखा है।"

"वह ठीक व्यक्ति नहीं है। उसका पिता भी कुछ वैसा ही था।"

"अब तो उससे सम्पर्क का प्रश्न ही नहीं उठता। बूआ जी ने भी पुत्र से मिलने की कभी इच्छा प्रकट नहीं की।"

हाई कोर्ट में अपील कर दी गयी थी। प्रभा 'सरदारगृह' होटल में रह रही थी। एक दिन वह कुछ सामान इत्यादि खरीद, होटल में पहुँच, अपने कमरे को जाने लगी तो चौकीदार ने कहा, "बाई जी ! रिसैप्शन-रूम में कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।"

प्रभा अपने कमरे की ओर जाने के स्थान, रिसैप्शन-रूम की ओर घूम गयी। वहाँ पहुँच वह ज्ञानस्वरूप को बैठे देख, विस्मित रह गई। उसने हाथ जोड़ नमस्ते कही और पूछ लिया, "आप मुझसे मिलने आये हैं ?"

"तो आप प्रभा जी हैं ?"

"हाँ; मिसेज़ आनन्दस्वरूप।"

"मैं ज्ञानस्वरूप हूँ। यद्यपि मैं आपसे कभी मिला नहीं, इस पर भी मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता हूँ कि आपने मेरा नाम तो सुना होगा।"

"हाँ, सुना है। आपको देखा भी है। यद्यपि आमना-सामना कभी नहीं हुआ। बताइये, कैसे आये हैं?"

"मैं आया तो था अपनी माता जी से मिलने। मेरा विचार था कि वे अभी यहीं होंगी, परन्तु होटल से पता चला है कि वह और मामी जी चली गयी हैं। पर आप अभी तक यहीं हैं।"

"हाँ; अपील के विषय में अभी कुछ काम शेष है। साथ ही पिता जी शीघ्र ही आने वाले हैं। इस कारण मैं यहीं टिकी हूँ।"

प्रभा ने यह बताना उचित नहीं समझा कि वह अनियमित मुलाकातें पति से करने के लिये ठहरी हुई है। इस प्रकार की बात एक खुफिया पुलिस के इन्स्पैक्टर के सामने करनी भय से रहित नहीं थी।

"खैर, आपसे भेंट और परिचय हो गया। यह भी ठीक ही हुआ है। आप बम्बई में किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव करें तो बताइये। मैं यथा-सम्भव उसको दूर करने का यत्न करूँगा।"

इस पर प्रभा को हँसी सूझी। उसने कह दिया, "अभी तक तो किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव नहीं हुई। ये होटल वाले प्रत्येक प्रकार की सुविधा पहुँचाते रहते हैं। परन्तु आपको मुझसे मिलने के लिये नहीं आना चाहिये। आपकी पत्नी नाराज़ हो सकती है।"

"हाँ, यह तो है। परन्तु मैं माता जी से पहले मिलने नहीं आया तो उसके नाराज़ होने के भय से नहीं था।"

"इस पर भी यह तो वस्तुस्थिति है ही कि बहन मीनाक्षी यह पसन्द नहीं करतीं।"

"आज मैं उसे बता कर नहीं आया, परन्तु अब की परिवर्तित परिस्थिति में मैं समझता हूँ कि उसे भी आप लोगों से मेल-मुलाकात रखने में संकोच नहीं होगा।"

"परिस्थिति में क्या अन्तर आ गया है?"

"यह कि मैं अब सरकारी नौकरी में नहीं हूँ।"

"तो आप क्या करते हैं?"

"एक कपड़ा मिल में मुझे काम मिल गया है। मैं असिस्टैण्ट मैनेजर हूँ।"

प्रभा ने अभी भी हँसी उड़ाने के लिये कह दिया, "परन्तु मीनाक्षी बहन को तो इससे बहुत दुःख होता होगा। अब वह सरकारी अफसर की पत्नी नहीं रहीं।"

"मैंने उसे इस परिवर्तन के विषय में अभी बताया नहीं। बात यह है कि मैं नौकरी छोड़ने का विचार पिछले एक महीने से भी अधिक काल से बनाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए था; परन्तु उसको सत्य ही सरकारी नौकरी से मोह है और वह मेरे विचार पसन्द नहीं करती। इस कारण मैंने उसे बताया ही नहीं।

"अब नौकरी मिल गयी है और जब यहाँ का वेतन लेकर घर जाऊँगा तो उसे बताऊँगा।"

"और यह अवसर कब तक आने वाला है ?"

"इस शुभ अवसर में अभी पन्द्रह दिन हैं। मेरा यहाँ वेतन कई गुणा अधिक हो गया है और मैं विचार करता हूँ कि वह वेतन जब उसे दिखाऊँगा, तब ही उसे नौकरी में परिवर्तन की बात बताऊँगा।"

"अच्छा, भाई साहब !" प्रभा ने उसे विदा करने के विचार से कहा, "अभी आपकी माता जी का बम्बई लौटने का विचार तो है नहीं। हाँ, आपके मामा जी आने वाले हैं। कलकत्ता से आपकी आण्टी भी आने वाली हैं। वही जो आपको लाहौर में मिली थीं। जब वे आ जायेंगी तो मिलने आ सकते हैं। अन्यथा आपका यहाँ आना भय से रहित नहीं। आपकी पत्नी तो नाराज़ होंगी ही, साथ ही सरकार भी आपको शक-ही-शक में धर दबा सकती है।"

प्रभा अब उठ पड़ी थी और चाहती थी कि भेंट समाप्त हो जाये। विवश, ज्ञानस्वरूप भी उठा और बोला, "जब मामा जी आयें तो कैसे पता चलेगा ? मैं उनसे मिलना चाहूँगा।"

प्रभा ने कुछ विचार कर कह दिया, "आपके मामा आपके रहने का स्थान जानते हैं। जब आयेंगे तो मैं कह दूँगी और यदि उनको आपसे मिलना अनुचित प्रतीत न हुआ तो आपसे मिल लेंगे। मैं यह अनुचित की बात आपके हित में ही विचार कर रही हूँ।" यह बात प्रभा ने ज्ञानस्वरूप को डराने के विचार से कह दी।

ज्ञानस्वरूप ने नलिनीकान्त के अपने से मिलने में किसी प्रकार की हानि न होने की बात स्पष्ट करने के लिये कह दिया, "मैंने बताया है न कि अब मैं पुलिस का अधिकारी नहीं हूँ और मैं आप सबको विश्वास दिलाता हूँ कि अब मुझसे आपको डरने में कारण नहीं है।" ज्ञानस्वरूप ने उचित का अर्थ दूसरी प्रकार से ही लिया था।

प्रभा ने भी अपनी बात स्पष्ट करने के लिये कह दिया, "हमें तो किसी पुलिस-अफ़सर से भय नहीं लगता। कारण यह कि हम कुछ भी वैसा नहीं करते, जो सरकारी विचार से आपत्तिजनक माना जाता हो। जब मुकद्दमा आरम्भ नहीं हुआ था और आप महकमा पुलिस में ही थे, तब भी तो आपकी माता जी और उनकी भाभी आपसे मिलने आपके मकान पर गयी थीं। इससे आपको यह पता हो जाना चाहिये कि हम आपसे न तब डरते थे और न ही अब डरते हैं। मैं तो आपकी तथा आपकी पत्नी की बात ही विचार कर रही थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह मैं देख लूँगा। आप तो होटल छोड़ने का विचार नहीं रखतीं। मैं आपको यहाँ मिल कर पता करता रहूँगा।"

प्रभा यह नहीं चाहती थी, परन्तु उसके वहाँ मिलने के लिये आने को वह मना नहीं कर सकी। उसने कह दिया, "पुरुषों को अपनी पत्नियों से न-पसन्द बातें नहीं करनी चाहियें।"

ज्ञानस्वरूप मुस्कराया और विदा होने से पूर्व हाथ मिलाने के लिये उसने हाथ बढ़ाया तो प्रज्ञा ने हाथ जोड़ नमस्ते कर दी और अपने कमरे को लौट पड़ी।

कमरे में पहुँच वह विचार करने लगी कि ज्ञानस्वरूप उससे अथवा अपनी माँ से इतने दिन तक न मिलने आकर आज क्यों एकाएक चला आया है। उसे दाल में कुछ काला-काला ही समझ में आया। यद्यपि वह जान नहीं सकी कि उसका आना अपनी माँ से मिलने के लिये ही था अथवा उस पर पुलिस की ओर से देख-रेख रखने के लिये है।

दिन व्यतीत हो रहे थे। विजय को लाहौर में दो वर्ष कैद का दण्ड हुआ था और बम्बई हाई कोर्ट में अभी आनन्दस्वरूप की अपील की सुनवायी की तारीख भी निश्चय नहीं हुई थी।

नलिनीकान्त बम्बई चला आया। वह प्रभा के अकेले बम्बई में रहने को भय से रहित नहीं मानता था।

होटल में जब वह पहुँचा तो वहाँ ज्ञानस्वरूप को रिसैप्शन-रूम में बैठें देख, वह गम्भीर भाव में उसके समीप आकर उससे पूछने लगा, "ज्ञान! यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?"

"ओह! आप आ गये। मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था।"

नलिनीकान्त ने अपने लिये एक पृथक् क़मरा ले लिया और अपना सामान उसमें भिजवा दिया। इसके बाद उसने ज्ञानस्वरूप से कहा, "तो आओ, अपने कमरे में बैठ, बातचीत करेंगे।"

: ३ :

"ज्ञान! तुम यह कैसे जान गये थे कि मैं आने वाला हूँ?" नलिनी ने कमरे में पहुँच, एक कुर्सी पर ज्ञान को बैठा और दूसरी पर स्वयं बैठते हुए पूछ लिया।

"पिछले मास मैं अपनी माता जी से मिलने आया था, परन्तु वे लाहौर चली गयी थीं। यहाँ मिसेज़ आनन्दस्वरूप मिली थीं। उन्होंने बताया था कि आप आने वाले हैं। इतने दिन तक मुझे अवकाश नहीं मिला। आज कुछ समय मिला तो आपके विषय में पता करने चला आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहाँ आने पर पता चला कि प्रभा जी अपने कमरे में नहीं हैं, परन्तु वे खाना खाने के समय तक अवश्य लौट आयेंगी। अतः उनसे आपका पता जानने के विचार से बैठा था। यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि आपके दर्शन हो गये हैं।"

"तो प्रभा जी अपने कमरे में नहीं हैं ?"

"मैनेजर ने यही बताया है।"

"आज गाड़ी तीन घण्टे देर से पहुँची है। अन्यथा मैं बहुत पहले का पहुँच गया होता। अच्छा, तो बताओ कि मुझसे क्या काम है ? मैंने तो सुना था कि तुमने खुफिया पुलिस की नौकरी छोड़ दी है ?"

"जी; परन्तु मेरा आपसे मिलने आना अपनी पत्नी के मामा श्री कमलनारायण बैस्टन के कहने पर है। वे आपसे मिलना चाहते हैं।"

"तो यह कमलनारायण तुम्हारी पत्नी के मामा हैं, अर्थात् तुम्हारी पत्नी राजेश्वरी की लड़की है ?"

"तो यह आपको आनन्द की माता जी ने नहीं बताया ?"

"नहीं; इस विषय में कभी बात ही नहीं हुई। मैं लाहौर में एक काम से व्यस्त था और वह विजय के मुकद्दमे में लीन थी। कमल जी कब और कहाँ मिल सकेंगे ?"

"मैं आज उनसे मिल कर आपके आने की सूचना दे दूँगा। तब वे स्वयं आपसे मिलने के लिये समय निश्चित कर लेंगे। आप यहाँ कब तक रहने का विचार रखते हैं ?"

"अभी तो आया हूँ। एक सप्ताह तक लग जाना सहज ही है।"

"अब मैं चलूंगा। प्रभा जी भी मिल जातीं तो ठीक ही था।"

ज्ञानस्वरूप उठा ही था कि प्रभा होटल के कार्यालय से यह जान कि उसके श्वसुर आये हैं, उनके ठहरने के कमरे का नम्बर पूछ, वहाँ आ गयी थी।

"ओह ! प्रभा जी भी आ गयी हैं।" ज्ञानस्वरूप ने हाथ जोड़ अभिवादन कर दिया। आज उसने मिलाने के लिये हाथ नहीं बढ़ाया। पिछली बार वह ऐसा कर लज्जित हो चुका था।

नलिनीकान्त ने बताया, "परसों एकाएक विचार आया कि तुम्हारी भी सुध लेनी चाहिये। विजय को दो वर्ष का कठोर कैद का दण्ड हो गया है।"

"मैं स्वयं तो ठीक हूँ। उनका समाचार भी मिला है। समाचार के अनुसार वे स्वस्थ और आनन्दमय ही हैं।"

अब प्रभा ज्ञानस्वरूप की ओर घूमकर पूछने लगी, "आपको पिता जी कहाँ मिल गये हैं ?"

ज्ञानस्वरूप पुनः कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "मैं इनका पता करने यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया था। मेरा विचार था कि आपको इनके आने का पता होगा। आप यहाँ थीं नहीं और होटल के मैनेजर ने बताया कि आप कह गयी हैं कि भोजन करने आयेंगी। अतः आपकी प्रतीक्षा करने का विचार कर यहाँ बैठा था कि मामा जी मिल गये।"

"तो आपका इनसे काम हो चुका है? आप जा रहे थे न?"

इसका अभिप्राय था कि ज्ञानस्वरूप जा सकता है। परन्तु ज्ञानस्वरूप ने कह दिया, "मीनाक्षी की माता जी आपसे मिलने आना चाहती हैं। आप किस समय मिल सकती हैं?"

"मेरा कुछ निश्चय नहीं। मैं एक कार्य-विशेष से यहाँ ठहरी हुई हूँ। अतः मुझे स्वयं भी पता नहीं होता कि मैं कब कहाँ रहती हूँ।"

"इस पर भी इस रविवार को वह आपसे मिलने का यत्न करेंगी।"

"मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है? यह तो आपके परिवार वालों के विचार करने की बात है कि वे हमसे सम्पर्क बनाना चाहते हैं अथवा नहीं।"

"उनकी आप चिन्ता न करें। कुछ आपके हित की बात भी तो हो सकती है।"

ज्ञानस्वरूप ने पुनः हाथ जोड़ विदा ली और चल दिया। उसके चले जाने के उपरान्त नलिनी ने पूछ लिया, "बताओ, प्रभा! किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं?"

"नहीं पिता जी! बेबी कैसा है?" प्रभा अपने बच्चे के विषय में पूछ रही थी। वह लाहौर में एक दायी की देख-रेख में रखा हुआ था।

"ठीक है। दाँत निकालने लगा है और इससे सामान्य रूप में कभी-कभी रुग्ण हो जाता है।"

"मैं पहले तो जेल में उनसे भेंट करने जाती थी; परन्तु जेलर प्रभु मोपतकर बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं और अब तो जब भी मैं जाऊँ, वह अपने कमरे में मुझे बैठा, उनको बुला देते हैं। उनका विचार है कि हाई कोर्ट में अपील का कुछ लाभ नहीं होगा; परन्तु माता जी का दृढ़ मत था कि अपील होनी ही चाहिये। परिणाम कुछ भी हो, चिन्ता नहीं।

"उनसे भेंट के उपरान्त मैं वकील साहब के पास गयी थी। उन्होंने बहस के लिये प्रताप जी भाई को दो सहस्र रुपये पर नियुक्त कर लिया है। केस तैयार कर हाई कोर्ट में भेजा जा चुका है और वहाँ की तिथि निश्चय हो चुकी है, परन्तु सरकार की ओर से अभी दावे का उत्तर कोर्ट को प्राप्त नहीं हुआ। अतः वकील साहब का कहना था कि अभी तो तारीख ही पड़ेगी।"

"मैं यहाँ कांग्रेस अधिवेशन के सम्बन्ध में आया हूं। लाहौर के कुछ सदस्यों का विचार था कि तिलक जी से सम्मति कर एक पृथक् संस्था बनायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाये।"

"तो आप पूना जायेंगे ?"

"हाँ; कदाचित् आज रात की गाड़ी से जाऊँगा। यदि किसी कारण आज न जा सका तो कल प्रातःकाल की गाड़ी से जाऊँगा ही। यह सब-कुछ मैंने ज्ञान के सामने बताना आवश्यक नहीं समझा।"

"मुझे तो ज्ञान जी के किसी एक वाक्य पर भी विश्वास नहीं होता। मुझे अभी भी समझ में आ रहा है कि यह मुझ पर देख-रेख रखने के लिये नियुक्त हैं और झूठ बोल रहे हैं कि इन्होंने नौकरी छोड़ दी है।"

"परन्तु यह राजेश्वरी और उसके भाई के मन में क्या है कि बीस-इक्कीस वर्ष के उपरान्त इनको हमारी सुध आयी है! लगभग दस वर्ष की बात है कि मेरी कमल से एक सभा में भेंट हो गयी थी। सभा में मैंने तत्कालीन देश की अवस्था पर व्याख्यान दिया था। यह वहाँ श्रोता-गणों में बैठा था। व्याख्यान के उपरान्त, मैं इससे मिलने के लिये गया तो इसने ऐसा प्रकट किया मानो यह मुझे जानता ही नहीं। मैंने उसे स्मरण कराया कि भुवाली वाला नलिनीकान्त हूँ। इस पर इसने न पहचान सकने का बहाना करते हुए कहा, "आप तो बहुत बदल गये हैं।"

"यह झूठ था। जानकार लोगों का कहना है कि मैं बदल नहीं रहा। मैंने मुस्कराते हुए उसे कहा था, 'सब-कुछ बदल रहा है। किसी का शरीर बदल रहा है और किसी का मन। संसार परिवर्तनशील है।'

"उसके उपरान्त कमल की आज मुझसे मिलने की इच्छा अकारण नहीं हो सकती।"

"तब तो मिलकर जानना चाहिये कि वह क्या चाहता है ?"

"मैं भी कुछ इसी दिशा में विचार कर रहा हूँ।"

भोजनोपरान्त नलिनी एक-दो व्यक्तियों से मिलने चला गया और चाय के समय ही लौटा। प्रभा ने अपने कमरे में ही चाय मँगवा ली थी। नलिनी ने बताया, "ज्ञान की सास राजेश्वरी से मेरी भेंट हो गयी है। जहाँ मैं गया था वहाँ मिल गयी थी। ऐसा प्रतीत होता है वह उस व्यक्ति की लड़की की 'ट्यूशन' कर रही है।

"वह तुमसे मिलने के लिये आयेगी।' उससे मैंने मिलने का प्रयोजन पूछा तो कहने लगी, 'अतीत-काल की मधुर स्मृतियों को हरा-भरा करने का यत्न करना चाहती हूँ।'

"उसने यह भी बताया कि जब मौसी और प्रज्ञा बहन यहाँ थीं, तब ही वह मिलने का विचार रखती थी; परन्तु मीनाक्षी कहने लगी कि उनसे सम्पर्क बनाने पर उसके घरवाले की नौकरी छूट सकती है। इस कारण दिल मसोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रह गयी थी।

"परन्तु अब तो ज्ञान ने नौकरी छोड़ दी है और वह पहले से बहुत अच्छी नौकरी पा गया है। इस कारण वह विचार करने लगी कि अब वह निर्भय हो, प्रज्ञा बहन से मिल सकती है; परन्तु जब मैंने कहा कि प्रज्ञा लाहौर लौट गयी है तो वह तुमसे ही मिलने की इच्छा करने लगी है।

"मैंने उसे रात के खाने पर आमन्त्रित किया है। मैं इस परिवार के हमसे मिलने के उद्देश्यों से अवगत होना चाहता हूँ। इससे हमारी सुरक्षा ही होगी।"

"आपके पूना जाने का कार्यक्रम क्या है?"

"पता चला है कि कल तक तिलक जी बम्बई में ही आने वाले हैं। अतः कल उनकी यहाँ प्रतीक्षा करूँगा।"

रात राजेश्वरी के साथ कमल भी आया और भोजन पर तीन के स्थान, चार व्यक्ति हो गये। औपचारिक स्वागत के उपरान्त, कमल ने अपने उससे मिलने आने का कारण बता दिया। उसने कहा, "यहाँ फिरोजशाह मेहता ने स्थानीय कांग्रेस कमेटी बनायी है और मैं उसका प्रधान हूँ। मुझे पता चला है कि आप लाहौर में भी इसी प्रकार की एक संस्था बना रहे हैं। अतः आपकी मिस्टर मेहता से भेंट कराना चाहता हूँ। यह भेंट सर्वथा गुप्त होनी चाहिये; इसी कारण मौखिक बात के लिये मुझे नियुक्त किया है। कुछ भी लिखत-पढ़त में नहीं होना चाहिये।

"यदि आपको यह स्वीकार हो तो मैं आपकी कल भेंट करा सकता हूँ।"

इस गुप्त भेंट की बात सुन, नलिनीकान्त मुस्कराया। उसने कह दिया, "मैं तो बात गुप्त रख सकता हूँ, परन्तु क्या जाने, मेरे पीछे खुफिया पुलिस लगी हो और वह बात को गुप्त न रहने दे।"

कमल इससे कुछ परेशानी अनुभव करने लगा। कितनी ही देर तक वह चुपचाप भोजन करता रहा और पूर्ण बात पर मन-ही-मन विचार करता रहा। एकाएक उसने सिर उठा कर कहा, "जहाँ तक मेरा विचार है, मैं तो उनकी आपसे भेंट में किसी प्रकार की हानि नहीं समझता। इस पर भी मैं उन्हें आपके लड़कों की बात बता दूंगा। यदि इसके उपरान्त भी वे मिलना चाहेंगे तो भेंट हो जायेगी।"

"मैं यहाँ कुछ लोगों से कांग्रेस के विषय में ही विचार करने के लिये आया हूँ। यहाँ से कलकत्ता जाने का विचार है। कल का दिन तो अवश्य यहाँ रहूँगा। पीछे की बात नहीं बता सकता। अधिक-से-अधिक एक सप्ताह तक यहाँ रह सकूंगा। यदि मेहता जी का मिलने का विचार हो तो समय बतायें, मैं उनके निवास-स्थान पर पहुँच जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ४ :

भोजन समाप्त हुआ तो नलिनीकान्त राजेश्वरी और प्रभा को बातचीत करने के लिये छोड़, कमलनारायण को अपने कमरे में ले गया। अपने कमरे में कमल को बैठाकर वह पूछने लगा, "सुनाओ कमल! काम-धंधा कैसा चल रहा है?"

"बहुत अच्छा है, मौसा जी! खूब रुपया पैदा किया है, परन्तु अब जी उचाट हो रहा है। मैं वकालत छोड़, विलायत जाना चाहता था, परन्तु यहाँ कुछ लोग हैं, जो राजनीति में रुचि पैदा कर रहे हैं।"

"और विलायत में क्या है?"

"वहाँ मेरी ससुराल है। मेरे श्वसुर 'सैक्रेटरी आफ स्टेट फौर इण्डिया' के कार्यालय में सुप्रिन्टैण्डेंट थे। अब वह लन्दन से बीस मील के अन्तर पर अपना एक मकान बना कर रहते हैं।"

"पर राजनीति तो एक अति गन्दी नाली है। इसमें जाकर तो कल्याण की आशा नहीं कर सकते।"

"मैं सक्रिय राजनीति में भाग लेना नहीं चाहता। मेरी पत्नी है जो विवाह से पूर्व विलायत में भी और यहाँ आकर भी इस विषय में बहुत रुचि रखती है। वह हिन्दुस्तान में 'मानचैस्टर गार्डियन' के ढंग का एक दैनिक समाचार-पत्र निकालने का विचार कर रही है और मुझे नित्य कहती रहती है कि अब रुपया पैदा करना छोड़, कुछ लोक-सेवा का कार्य करूँ। मैं लगभग तैयार हो गया हूँ।

"इसी समाचार-पत्र के सन्दर्भ में फिरोज़शाह मेहता से मैं मिला हूँ और गोखले साहब से तो बहुत लम्बी-चौड़ी बात हुई है। मुझे मेहता जी से गोखले साहब अधिक बुद्धिशील और सज्जन व्यक्ति प्रतीत हुए हैं। उन्होंने मुझे समाचार-पत्र चलाने में कठिनाइयों का वर्णन किया है; परन्तु इस काम से मना नहीं किया, वरन् इसमें प्रोत्साहन ही दिया है।"

नलिनी ने कह दिया, "समाचार-पत्र निकालना राजनीति नहीं। यह एक ब्राह्मण का काम है और मैं समझता हूँ कि इस काम की प्रेरणा तुम्हें तुम्हारे पिता दे रहे प्रतीत होते हैं।"

कमल इस बात पर हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, "पितरों की बात तो मैं जानता नहीं; हाँ, पत्नी की बात जानता हूँ। वह एक अति प्रेरणात्मक और उग्र मन रखती है और जब चाहे, तब मुझे ऐसे लेकर चल पड़ती है, जैसे कि स्टीम इंजन अपने पीछे लगे रेल के डिब्बों को लिये हुए चल पड़ता है।

"वास्तव में उसका इंजन स्पैनिश कैथोलिक चर्च की पटरी पर खड़ा है और वह हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य के इस कारण विपरीत है कि वहाँ कैथोलिक चर्च को मान्यता नहीं है। परन्तु जब गोखले जी से बातचीत हुई तो उन्होंने उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक काँटा बदल दिया प्रतीत होता है। अब वह यहाँ सरकार तथा मुसलमानों के पक्ष में पत्र निकालने का विचार बना बैठी है।"

"सत्य ?" नलिनी ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "गोखले साहब का सरकार के पक्ष में प्रेरणा देना तो समझ में आता है, परन्तु मुसलमानों के पक्ष में, भला, क्यों ? यह समझ में नहीं आया।"

"उन्होंने समझाया है कि मुसलमान इस देश में एक राजनैतिक शक्ति है। जहाँ हिन्दू छोटे-छोटे घटकों में बँटे हुए हैं और राजनैतिक दृष्टि से वे कुछ नहीं, वहाँ मुसलमान चार-पाँच करोड़ की एक सुसंगठित समाज है। उसे देश के प्रगतिशील लोग अपने साथ रखेंगे तो निस्सन्देह देश उन्नत होगा।"

नलिनी इस विवेचना को सुन, गम्भीर हो गया। उसे स्वामी दयानन्द का कथन स्मरण हो आया था। उन्होंने कहा था कि मूर्ति-पूजा हिन्दू-समाज को छोटे-छोटे समूहों में बाँट रही है और हिन्दू का जो संगठन केन्द्र है, वह दुर्बल पड़ रहा है। संगठन का केन्द्र है वेद और वैदिक धर्म तथा संस्कृति। इस पर नलिनी ने गम्भीर भाव में कहा, "गोखले साहब भूल कर रहे हैं। यह भूल उनमें उनके स्वामी ब्रिटिश सरकार अधिकारियों ने पैदा की है। उनका मुसलमानों को सिर पर बैठाना हिन्दुओं को, जो इस देश में एक महान् शक्ति हैं, दबा कर रखने के लिये है और गोखले साहब एक तोते की भाँति वही पाठ पढ़ने लगे हैं, जो उनके स्वामियों ने उन्हें पढ़ाया है।"

"ठीक यही बात कैट्यालीना कहती थी। वह मुसलमानों के सख्त खिलाफ है, परन्तु वह गोखले साहब की युक्ति का उत्तर नहीं जानती थी। इस कारण मौन रही। इस पर भी ब्रिटिश सरकार के पक्ष की बात उसके मन में बैठ गयी है और वह अब अपने समाचार-पत्र की नीति सरकार के अनुकूल करने की बात विचार कर रही है।"

"तो मिसेज बैस्टन स्पेन की रहने वाली हैं ?"

"नहीं; उसकी माँ स्पैनिश है। अब वह ब्रिटिश नागरिक हैं। मेरे श्वसुर तो हिन्दुस्तानी महाराष्ट्रियन ब्राह्मण हैं, परन्तु अब पत्नी के प्रभाव से गिरजाघर जाते हैं और अपने सब बच्चों के नाम स्पैनिश भाषा तथा अंग्रेजी भाषा में रखे हुए हैं।"

"कमल ! अपनी पत्नी से मिलाओगे नहीं ?"

"इसीलिये तो आपसे मिलने का विचार बना था। ज्ञान ने एक दिन आपके विषय में कहा था। मौसी और बहन प्रज्ञा उसकी पत्नी से मिली थीं और उसने उन्हें दुत्कार कर घर से निकाल दिया था। ज्ञान ने तो अपनी पत्नी की निन्दा के भाव में बात बताई थी, परन्तु जब आपकी बात चल पड़ी तो

—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पत्नी को और ज्ञान को आपसे पूर्व परिचय की पूर्ण कथा सुना दी। उसका प्रभाव ज्ञान पर तो हुआ ही, साथ ही कैटालीना आपसे मिलने की इच्छा करने लगी है।

"मैं कहीं आपसे मिलने आने की बात मेहता साहब से कर बैठा तो वे बोले कि वे आपसे मिलने के लिये उत्सुक हैं और यदि आप बम्बई में आये हुए हैं तो वे आपसे मिलना चाहेंगे।"

"मेहता साहब," नलिनी ने बताया, "मेरे पूर्व परिचित हैं और उनका कहना है कि मैं प्रभावी 'वक्ता' हूँ। इस कारण वे कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के समय मुझे अपने पक्ष में करने का यत्न करते रहे हैं। उन्होंने मुझे कहीं सरकारी नौकरी दिलवाने की बात भी कही थी।"

"मैं एक दिन आपको अपने घर पर आमन्त्रित करूँगा। तब आपसे अपनी नयी सृष्टि का परिचय कराऊँगा। नीला से मेरे दो लड़के हैं। एक पूना में अपनी माँ के पास है, दूसरा इंग्लैण्ड में पढ़ता है। मैंने उनकी शिक्षा-दीक्षा करा कर उनको माँ के पास भेज दिया था। नीला का दूसरा पति एक मिल का मालिक है और लड़का वहाँ काम करता है।

"कैटालीना से मेरी पाँच सन्तान हैं। दो लड़कियाँ और तीन लड़के। एक लड़की अपनी नानी के पास रहती है। एक लड़की यहाँ पढ़ती है। लड़कों में एक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ता है और दो यहाँ सीनियर कैम्ब्रिज की पढ़ाई कर रहे हैं।"

"तब तो तुम पूरे यूरोपियन हो गये हो। तभी तुम पिछली बार मुझे पहचान नहीं सके थे।"

"वह इस कारण नहीं था। बात यह थी कि जब मैं आपका व्याख्यान सुनने गया था तो मुझे बताया गया था कि लाहौर के एक बहुत बड़े विद्वान् व्यक्ति व्याख्यान दे रहे हैं। इस कारण मैं नलिनीकान्त लाहौर वाले और नलिनीकान्त कलकत्ता तथा भुवाली वाले में समन्वय नहीं कर सका था।

"अच्छा, मौसा जी! एक बात पूछूं?" कमल ने एकाएक बात बदल कर पूछ लिया, "क्या सत्य ही सुभद्रा ने आत्म-हत्या कर ली थी?"

नलिनीकान्त हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछा, "तो तुम उसको भूले नहीं?"

"भूल कैसे सकता हूँ? वह मेरी प्रथम 'लव' थी।"

"वह अभी जीवित है। उसके घर वाले ने बम्बई में ही एक 'हार्डवेयर स्टोर' खोल रखा है। वह अब लखपति है। सुभद्रा तीन बच्चों की माँ है और सुना है कि यहाँ कहीं निर्धनों की बस्ती में बच्चों का स्कूल खोले हुए है।"

"ओह! अब समझ गया हूँ। मैं उसके घर वाले को जानता हूँ। उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीरथलाल नाम है न ? वह मेरा 'क्लायँण्ट' है ।"

"सुभद्रा, जब भी सुवर्णा यहाँ आती है तो उससे मिला करती है। सुभद्रा के पिता का तो देहान्त सुभद्रा के विवाह के पूर्व ही हो गया था, परन्तु उसका भाई लाहौर में दुकान करता है। उसकी आर्थिक स्थिति बहुत दुर्बल है।"

"अब उससे मिलूंगा।"

नलिनीकान्त हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "तो अभी पुरानी आग सुलग रही है।"

"है तो मौसा जी ! परन्तु अब विवाह का प्रश्न ही नहीं रहा। यदि मेल-मुलाकात बन सके, तब भी मन में सन्तोष ही होगा।"

इसके बाद कमलनारायण ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "अब मैं चल रहा हूँ। मैं मेहता जी को आपके यहाँ रहने की बात बता दूंगा और यदि उनको गुप्त अथवा प्रकट में आपसे मिलना होगा तो मिल लेंगे।"

"हाँ; मैं कल श्री तिलक जी से मिलने के लिये यहाँ ठहरा हूँ। यदि वे कल यहाँ न आये तो परसों मैं पूना चला जाऊँगा।"

"कह दूंगा।"

जब कमल गया तो नलिनी, सोने से पूर्व प्रभा से मिल यह जानने के लिये कि राजेश्वरी से क्या बात हुई है, उसके कमरे में चला गया। परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि राजेश्वरी चली गयी है और प्रभा सो गयी है। उसके कमरे का द्वार भीतर से बन्द था और कमरे में रोशनी नहीं हो रही थी।

अगले दिन प्रातः का अल्पाहार नलिनी ने अपने कमरे में मँगवा लिया और प्रभा को वहाँ ही बुला लिया। अल्पाहार लेते हुए नलिनी ने प्रभा से पूछ लिया, "राजेश्वरी किसी प्रयोजन विशेष से आयी थी अथवा औपचारिक रूप में ही ?"

"वह माता जी से मिलना चाहती थी। जब मैंने बताया कि उनके निकट भविष्य में यहाँ आने की आशा नहीं तो वह कहने लगीं कि वास्तव में उनके द्वारा मैं तुमको ही यह कहलवाना चाहती हूँ कि ज्ञान से तुम्हारे मेल-जोल के कारण उसके घर में घोर युद्ध चल पड़ा है। मीनाक्षी और ज्ञान में झगड़ा इस बात पर है कि मीनाक्षी का विचार है कि वह तुम पर मोहित हो, तुम्हारे पीछे भाग रहा है और उसे वह अपने जीवन से निकाल चुका है। यद्यपि ज्ञान कहता है कि ऐसी कोई बात नहीं, परन्तु मीनाक्षी को उस पर विश्वास नहीं आता। ज्ञान पहले भी कुछ गड़बड़ कर चुका प्रतीत होता है। उससे मेल-मुलाकात रखने से तुम्हारा तो अकल्याण हो ही सकता है, साथ ही मीनाक्षी बेचारी का जीवन भी बरबाद हो जायेगा।

"राजेश्वरी का कहना है कि यदि मैं उसे यहाँ से दुत्कार दूं तो उसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्त्तव्य का ज्ञान हो जायेगा ।

"ज्ञान एक सरल-चित्त और भले विचार का युवक है । केवल उसके मन में स्त्रियों के लिये दुर्बलता है । इसी कारण वह मुझे सचेत करना चाहती थी और यह सम्मति देना चाहती थी कि मैं उससे मेल-मुलाकात न रखूं ।

"पिता जी ! मैंने उसे विश्वास दिलाने का यत्न किया है कि मेरे मन में उसके प्रति किसी प्रकार का मोह नहीं है । साथ ही मैं उससे कल केवल दूसरी बार मिली हूँ । मैंने कहा है कि यदि वह फिर कभी यहाँ आया तो उसे सन्मार्ग दिखा दूंगी ।"

नलिनी मुस्कराता हुआ प्रभा की बात सुनता रहा । जब प्रभा कह चुकी तो नलिनी ने ज्ञान के पिता और प्रज्ञा की कथा सुना दी । नलिनी ने प्रभा को ज्ञान से मिलने तथा न मिलने के विषय में कुछ नहीं कहा । वह समझता था कि प्रभा के मन पर यह विचार बनाये रखना चाहिये कि उसके पथ-च्युत होने के विषय में घर के लोग स्वप्न में भी आशा नहीं करते ।

: ५ :

नलिनी का बम्बई आने का मुख्य उद्देश्य श्री तिलक जी से मिलने का था । वह कलकत्ता-अधिवेशन में गया था और उसके खुले अधिवेशन में स्वदेशी के पक्ष में बोला था । बीस मिनट के भाषण से उसने स्वदेशी के पक्ष में प्रबल मत निर्माण कर दिया था । उसके भाषण के उपरान्त स्वदेशी और विलायती बहिष्कार के विपक्ष में किसी भी वक्ता के पाँव नहीं जमे । यहाँ तक कि सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी की भी भद्द हो गयी थी ।

इससे तिलक के मन में नलिनीकान्त के लिये आदर उत्पन्न हो गया था और तब से ही दोनों में पत्र-व्यवहार चलता था ।

नलिनी ने अपने एक पत्र में यह सुझाव उपस्थित किया था कि कांग्रेस में संघर्ष उत्पन्न करने के स्थान, एक नवीन दल क्यों न निर्माण किया जाये ? इस सुझाव के उत्तर में तिलक जी ने उसे बुलाया था और वह चला आया था ।

पिछले दिन वह एक मिस्टर रानाडे से मिलने गया था । रानाडे तिलक के पक्ष का व्यक्ति था । उससे भी नलिनीकान्त ने स्वराज्य-सभा अथवा दल के नाम से एक संगठन बनाने का विचार उपस्थित किया तो इसमें किसी प्रकार की आशा अनुभव न करते हुए, रानाडे ने कहा था, "तिलक जी कल यहाँ आ रहे हैं । उनसे बात करनी चाहिये ।"

नलिनी श्री बाल गंगाधर तिलक से मिलने गया और उसने उनके समक्ष अपनी योजना उपस्थित कर दी । उसने कहा, "वर्त्तमान कांग्रेस का निर्माण तथा जन्म-काल से व्यवहार ऐसा रहा है कि इसमें एक विशेष आचार-विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लोग ही आ सके हैं। उनको अपने विचारों और आचरण में हठ-पूर्वक डटे रहने के लिये अनेक प्रकार के प्रलोभन और आकर्षण मिल रहे हैं। एक बात और है कि स्कूलों तथा कालेजों में शिक्षा उनके विचार वालों की ही सृष्टि कर रही है। अतः उसके भीतर रह कर न तो हम अपना और न ही देश तथा जाति का कल्याण करने में सफल हो सकेंगे।

"इस कारण मैं परिस्थितियों को देख, यही समझ रहा हूँ कि देश के हित में हमें एक नवीन संगठन का निर्माण करने में लग जाना चाहिये।"

"नलिनी बाबू!" तिलक जी ने कहा, "आप अपना क्या कल्याण करना चाहते हैं, किसी नवीन संगठन से?"

"जो पितृ-यज्ञ करने से किसी गृहस्थ का हो सकता है।"

तिलक जी पितृ-यज्ञ की बात समझ नहीं सके। वे अपने सनातन-धर्म तथा शास्त्र-ज्ञान के अनुसार मृत पितरों, जो किसी पृथक् लोक में रहते हैं, को पिण्डदान करना तथा उनके निमित्त किसी ब्राह्मण को भोजन कराना ही पितृ-यज्ञ समझते थे। राजनीति के क्षेत्र में पितृ-यज्ञ की बात सुन, वे इसका अर्थ समझने के लिये नलिनी का मुख देखने लगे।

नलिनीकान्त ने अपना आशय समझाने के लिये कह दिया, "इस देश में रहने वालों के पूर्वजों ने शताब्दियों के परीक्षणों से एक विशेष आचार और विचार की परिपाटी प्रचलित की है। वह विलुप्त हो रही प्रतीत हो रही है और हम, भला-बुरा विचार कर नहीं, वरन् राज्य-बल से अथवा छल से उससे विचलित किये जा रहे हैं। इससे हम उन पितरों के प्रति न केवल अश्रद्धा व्यक्त कर रहे हैं, प्रत्युत उनके अनुभवों और ज्ञान से अपने को वंचित कर रहे हैं।

"वर्त्तमान राज्य-प्रपंच इस प्रक्रिया में सहायक हो रहा है। हमें अपने हित में इसे बदल देना चाहिये। राज्य बदलेगा तो वर्त्तमान शिक्षा-पद्धति बदलेगी। शिक्षा बदलेगी तो अपने पूर्वजों के प्रति अश्रद्धा मिट जायेगी और श्रद्धा उत्पन्न होगी।

"सरकार द्वारा विचारित और चलायी जा रही शिक्षा से निर्मित आचार-विचार रखने वाले लोगों में आरोपित यह कांग्रेस विष-बीज है। जो भी इसकी छाया में आयेगा, इसके विषाक्त विचारों में ही रत हो जायेगा।"

"देखिये नलिनी बाबू! मैं एक बात जानता हूँ कि किसी भी नवीन संगठन के निर्माण में अतुल परिश्रम और चतुराई की आवश्यकता है। आज मैं किसी नवीन संगठन का निर्माण करूँगा तो कल कोई और नया संगठन निर्माण करेगा। दो दिन उपरान्त कोई तीसरा संगठन बनायेगा और परिणाम यह होगा कि संगठनों की भरमार हो जायेगी। हम संगठनों के पोषण में लग जायेंगे और उद्देश्य को गौण स्थान पर ले जायेंगे। मैं संगठन को केवल साधन मानता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य को मुख्य मानता हूँ।"

"इसमें आप एक भूल कर रहे प्रतीत होते हैं। देखिये, मैं बताता हूँ। जैसे किसी दूर स्थान पर जाने के लिये रेलगाड़ी साधन होती है, परन्तु रेलगाड़ियां तो अनेकों दिशाओं में जाती हैं। मिथ्या दिशा को जाने वाली गाड़ी में सवार हो, कोई ठीक स्थान पर पहुँच नहीं सकता। यही बात कांग्रेस की गाड़ी में सवार होने वाले व्यक्ति की होगी।

"भगवन्! यह गाड़ी मिथ्या दिशा में जा रही है और आप इसमें सवार हो, ठीक लक्ष्य स्थान पर पहुँच नहीं सकेंगे।"

"मैं तो गाड़ी के इंजन में सवार हो, इस गाड़ी का मुख ठीक दिशा में मोड़ देना चाहता हूँ।"

"परन्तु आप इंजन में सवार हो सकेंगे क्या?"

"कलकत्ता में मैं और मेरे विचार के लोग इंजन पर सवार हो गये हैं। यह ठीक है कि इंजन का ड्राईवर अभी दूसरा है, परन्तु इस बार मैं उसको हटा कर स्वयं ड्राईवर बन जाने की आशा कर रहा हूँ।

"नलिनी बाबू! आप नागपुर चले जाइये और वहाँ डाक्टर मुंजे से मिल लीजिए। वह आपको ठीक परिस्थिति से अवगत करेगा।

"मेरी यह सम्मति है कि नया संगठन बनाने के झगड़े में मत पड़िये। गाड़ी बन चुकी है। यह चल भी रही है। इसके निर्माण करने वाले अनुभव कर रहे हैं कि उन्होंने इसे बनाकर भूल की है। परन्तु अब हम इस गाड़ी में सवार हो चुके हैं। मैं तो समझता हूँ कि इसके इंजन में सवार भी हो चुके हैं। अब एक धक्का देकर ड्राईवर को इंजन से बाहर करना है और इसका नियन्त्रण अपने हाथ में लेना है।

"मैं चाहता हूँ कि आप पंजाब से एक बहुत बड़ी संख्या में प्रतिनिधि लेकर नागपुर आइये और गाड़ी के इंजन पर अधिकार कर लेने में मेरी सहायता करिये।"

नलिनी ने और अधिक युक्ति करनी व्यर्थ समझी। वह मौन हो गया। परन्तु उसका तिलक जी की बात से समाधान नहीं हुआ। इसमें कारण वह मूल विचारधारा में अन्तर मानता था।

उसे मौन देख तिलक जी को यह प्रतीत हुआ कि यह बंगाली महाशय एक महाराष्ट्रियन की नीति को समझ नहीं सका। इस कारण उन्हें भय हो गया कि कहीं वह यह न समझ जाये कि उसका तिरस्कार किया जा रहा है। अतः उसको अपने पक्ष में डटे रहने की प्रेरणा देने के लिये तिलक जी ने पुनः कहना आरम्भ किया—

"मैं तो यह स्पष्ट देख रहा हूँ कि वह दिन दूर नहीं, जब कांग्रेस में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोखले और फिरोज़शाह जैसे सरकार-भक्त निकल जायेंगे। इसमें महाराष्ट्रियन, बंगाली और पंजाबी कन्धे-से-कन्धा मिलाकर इसका संचालन करेंगे और हम सन् १९२० तक स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे।

"देखिये, नलिनी जी ! अधीर होने की आवश्यकता नहीं है। हम अपनी मंज़िल को स्पष्ट अपने सामने देखने लगे हैं। हम तीनों समुदायों को संयुक्त प्रयास करना चाहिये और एक बार स्वराज्य प्राप्त हो गया, तब आप अपने धर्म और अपनी संस्कृति के चलन में स्वतन्त्र हो जायेंगे।"

अब नलिनी ने अपने मन की भावना व्यक्त कर दी। उसने कहा, "भगवन् ! मैं अभी भी नहीं समझा कि आप पश्चिम को जाने वाली गाड़ी पर सवार होकर कैसे पूर्व में स्थित लक्ष्य स्थान पर पहुँच जायेंगे ? गाड़ी की पटरी पश्चिम को जाती है।

"कदाचित् हम भिन्न-भिन्न भाषाओं में बात कर रहे हैं। अत: जब मैं पूर्व की बात कहता हूँ तो आपकी भाषा में उस पूर्व को पश्चिम ही समझा जाता है। हम दो भिन्न-भिन्न मार्गों के राही ऐसा समझ रहे हैं कि हम एक ही दिशा को जाने वाले हैं। यही कारण है कि मेरा समाधान नहीं हुआ।"

"परन्तु आपकी पूर्व दिशा कौन-सी है, पहले यह तो स्पष्ट करिये।"

नलिनी समझ रहा था कि वास्तविक भेद शिक्षा में है। वह विचार करता था कि वे दोनों प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति भिन्न-भिन्न शिक्षा-पद्धतियों से निर्मित मनों वाले एक चौराहे पर मिल गये हैं और दोनों एक-दूसरे को अपने-अपने मार्ग पर ले चलने के लिये खींचातानी कर रहे हैं। अत: अपनी बात कह कर वह वहाँ से छुट्टी पाने की लालसा करने लगा था। उसने अपनी बात बहुत ही संक्षेप में कह दी। उसने कहा, "भगवन् ! धर्म तथा संस्कृति मूल बातें हैं। राज्य और राज्य-पद्धति साधन हैं, साध्य नहीं। राज्य आते और जाते रहते हैं, परन्तु जातियों के प्राण राज्य नहीं हैं। प्राण हैं धर्म और संस्कृति।

"धर्म और संस्कृति की रक्षा राज्य से होती है, मैं यह भी जानता हूँ। परन्तु कोई भी राजा किसी भी संस्कृति तथा धर्म की रक्षा कर सकेगा, यह मैं नहीं समझता।

"यह निश्चित ही है कि राज्य उनका होगा, जिनको हम बड़ा बना लेंगे और वर्त्तमान कांग्रेस के लीडरों को मिला स्वराज्य, अराजकता का सूचक होगा।

"आपने कहा है, मुझे अधीर नहीं होना चाहिये। मैं वास्तव में अधीर हूँ। हम मुसलमानों के काल में सात सौ वर्ष तक प्रतीक्षा कर चुके हैं, परन्तु उन्होंने हमारी बुद्धियों पर अपने राज्य की छाप नहीं डाली थी। पर इस अंग्रेज़ी राज्य ने हमारी बुद्धियों की दिशा ही बदलनी आरम्भ कर दी है। यदि यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य बीस वर्ष तक और चल गया तो यहाँ कुत्ते-बिल्लियाँ तो बहुत उत्पन्न हो जायेंगी, परन्तु मनुष्य नहीं रहेंगे और राज्य उन कुत्ते-बिल्लियों का हो जायेगा।"

तिलक जी नलिनी के इस कटु कथन से आश्चर्य-चकित रह गये। वे गम्भीर हो कहने लगे, "सत्य ही हमारी भाषा भिन्न-भिन्न है। हम एक-दूसरे को समझ नहीं रहे। मैं नहीं समझ सका कि यह कुत्ते-बिल्लियों के राज्य से आपका क्या अभिप्राय है?"

"क्षमा करें महाराज! मेरा किसी की निन्दा अथवा प्रशंसा से अभिप्राय नहीं है। मेरा मतलब पशुओं से है। मनुष्य और पशुओं में अन्तर बुद्धि का ही है और वर्त्तमान शिक्षा से हमारी बुद्धि को विदेशों में गिरवी रखा जा रहा है और हम बुद्धि-विहीन पशु मात्र रह रहे हैं।

"राज्य ने शिक्षा अपने अधीन कर रखी है और पढ़े-लिखे विचार-शून्य बनाये जा रहे हैं। यह प्रक्रिया पचहत्तर वर्ष पूर्व आरम्भ हुई थी। इसकी गति पहले धीमी थी, परन्तु लुढ़कते वर्फ के ढेले की भाँति यह बढ़ती जा रही है। यदि इसे शीघ्र ही रोका न गया तो यह ढेला इतना बड़ा हो जायेगा कि फिर इसे रोकना किसी मनुष्य के बस की बात नहीं रहेगी।"

तिलक जी मुस्कराते हुए पूछने लगे, "और फिर क्या होगा?"

"फिर भगवान् पृथ्वी पर अवतरित होंगे और एक विशाल नर-संहार कर, इस पृथ्वी का भार हल्का करेंगे।"

इस पर तो तिलक हँस पड़े और बोले, "तब तो बहुत ठीक होगा। भगवान् आयेंगे तो कोटि-कोटि जन के लिये मोक्ष का द्वार खुल जायेगा।"

नलिनी समझ रहा था कि बात हँसी में उड़ायी जा रही है। अतः उसने कहा, "मैं दो सौ प्रतिनिधि लेकर पंजाब से आ रहा हूँ और वे आपका समर्थन करेंगे।"

"धन्यवाद!"

नलिनी ने हाथ जोड़, नमस्कार किया और वहाँ से निकल आया। भेंट रानाडे के मकान पर ही हुई थी। जब वह कमरे से निकल, मकान के बाहर को आ रहा था तो रानाडे भी उसके साथ ही कमरे से बाहर निकल, उसके साथ चल पड़ा।

रानाडे तिलक जी का अनन्य भक्त था और समीप बैठा, दोनों की बातें सुन रहा था। साथ चलते हुए उसने पूछ लिया, "नलिनी बाबू! समझ गये हो?"

"बहुत अच्छी तरह।"

"अच्छा कब जा रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं एक-दो दिन में यहाँ से चल दूंगा । यहाँ से नागपुर जाऊँगा । वहाँ से कलकत्ता और पन्द्रह दिन में लाहौर पहुँच जाऊँगा ।"

: ६ :

नलिनीकान्त इस पूर्ण वार्त्तालाप पर चिन्तन करने के लिये एकान्त पाने की अभिलाषा से होटल में जा पहुँचा । परन्तु वहाँ उसकी प्रतीक्षा हो रही थी । कमलनारायण फिरोज़शाह मेहता के साथ रिसेप्शन रूम में बैठा हुआ था ।

नलिनी ने उनको देखा तो उनसे मिलने उसी कमरे में जा पहुँचा । औपचारिक अभिवादन के उपरान्त नलिनी ने कहा, "कमल जी ने कल बताया था कि आप मुझसे मिलना चाहते हैं । मैं यह अपना अहोभाग्य समझता हूं । मैंने इनसे कहा था कि आप स्थान और समय बता दें तो मैं स्वयं ही वहाँ पहुँच जाऊँगा ।"

"मैं आज सायंकाल ही सूरत जा रहा हूँ । वहाँ से मुझे नागपुर जाना है । अत: आपसे आज ही मिलना ठीक समझ, मैं स्वयं ही यहाँ आ गया हूँ ।"

"तो आइये, अपने कमरे में चलें । वहाँ निश्चिन्त हो बात कर सकेंगे ।"

फिरोज़शाह एक क्षण तक अनिश्चित-मन मुख देखता रहा । तदुपरान्त वह उठा और बिना एक भी शब्द और कहे, नलिनी के साथ चल पड़ा । कमल भी इनके साथ था ।

तीनों कमरे में पहुँचे और भीतर से द्वार बन्द कर, बातें करने लगे । द्वार कमलनारायण ने बन्द किया था ।

छूटते ही मिस्टर मेहता ने पूछ लिया, "क्या बात हुई है ?"

इस प्रश्न पर नलिनी को विस्मय हुआ, परन्तु उसने वह प्रकट नहीं होने दिया । उसने कहा, "कांग्रेस के आगामी अधिवेशन के विषय पर वार्त्तालाप हुआ है । वे पूछ रहे थे कि पंजाब में लाला लाजपतराय जी के पकड़े जाने के उपरान्त स्थिति कैसी है ?"

"और आपने क्या बताया है ?"

"यही कि पहले एकाएक आतंक छा गया था, परन्तु अब धीरे-धीरे लोग आश्वस्त हो, साहस पकड़ पुन: घरों से निकल रहे हैं ।"

"क्या मतलब ?"

"मेरा अभिप्राय है कि जैसे आँधी-तूफान आने पर लोग घरों में छुप जाते हैं, वैसे ही दमन की आँधी से भयभीत लोग, अपने मन के विचार मन में ही रख कर मौन हो गये थे और अब पुन: सभा-समाजों में राजनीति की चर्चा होने लगी है ।"

"हमें तो सूचना मिली है कि सरकार-विरोधी पक्ष का सफाया हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अब क्रान्तिकारी वहाँ देखने को भी नहीं मिलते।"

"आपकी सूचना बहुत सीमा तक ठीक है। मैं भी यही कह रहा हूँ। देखिये, मेहता जी! क्रान्ति का बीज है स्वतन्त्र विचार में। स्वतन्त्र विचार के लिये पंजाब की भूमि बहुत उर्वरा है। इसमें ऐतिहासिक और भौगोलिक कारण हैं। स्वतन्त्रता का बीज उस भूमि में एक गुजरात के संन्यासी ने बोया था। वह अभी सुकुमार पौधा ही हुआ था कि वेग की आँधी आयी और पौधा भूमि से उखड़ गया। पौधा अब फिर जम रहा प्रतीत होता है।"

"तो वहाँ पुनः बम्ब और पिस्तौल बनने लगेंगे?"

"परन्तु ये तो पहले भी नहीं बन रहे थे और इनको मैं स्वतन्त्रता का घातक समझता हूँ। विचार-स्वातन्त्र्य से सुख और शान्ति का प्रसार होता है, परन्तु विचार-स्वातन्त्र्य का विरोध ही बम्ब और पिस्तौलों से होता है। यही सरकार ने वहाँ किया था।"

"परन्तु मैंने तो सुना है कि आपका एक लड़का भड़काने वाले व्याख्यान देने के कारण दो वर्ष की कैद का दण्ड भोग रहा है और दूसरे पर बम्ब बनाने का मुकद्दमा चल रहा है।"

"दोनों ही मुकद्दमे झूठे हैं। ये मुकद्दमे तोप, बन्दूक-दिखाकर सरकार ने चलाये हैं।"

"मैं समझा नहीं।"

"कुछ कठिन बात तो मैंने कही नहीं। अंग्रेज़ी सरकार यहाँ तोप-बन्दूक के बल पर चल रही है। इस आतंक का विरोध करने में ही मेरे दोनों लड़के दण्ड पा रहे हैं।"

"परन्तु यही तो द्रोह है।"

"और मैं इसी विरोध को स्वतन्त्रता मानता हूँ। बम्ब-पिस्तौलों से यह स्वतन्त्रता छीनी जा रही है। लोग दब गये थे और अब पुनः स्वतन्त्रता से चर्चा चलने लगी है।"

"परन्तु चर्चा का अर्थ बम्ब-पिस्तौल तो नहीं हो सकता।"

"बम्ब-पिस्तौल तो तोप, बन्दूक का उत्तर हैं। चर्चा का उत्तर चर्चा है।"

"अभिप्राय यह कि आप चर्चा करते हैं और आपके लड़के तोप, बन्दूक द्वारा उत्तर दे रहे हैं।"

"यह तो सरकार सिद्ध कर नहीं सकी। मैजिस्ट्रेट ने दण्ड अवश्य दिया है, परन्तु निराधार और अप्रमाणित आरोपों पर।"

"परन्तु बाबू नलिनीकान्त! जो कुछ आप इस समय कह रहे हैं वह भी तो राज-द्रोह है।"

"जी। द्रोह तो है, परन्तु एक अनाधिकारी राज्य का। ब्रिटिश राज्य इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में अनधिकार-युक्त है। इससे द्रोह करना पाप नहीं।"

"परन्तु अपराध तो है।"

"उसी अनाधिकारी राज्य के बनाये क़ानून से।"

"तो आप क्या चाहते हैं?"

"किससे?"

"राज्य से?"

"राज्य वापस।"

"कैसे लोगे?"

"जैसे उन्होंने छीना है।"

"क्या समझते हो, कैसे छीना है उन्होंने?"

"इसे छीनने में कई चरण हैं। पहला व्यापार का। इससे देश को निर्धन किया गया। दूसरा, हममें परस्पर फूट डलवाने का। तीसरा, सैनिक अभियान का और चौथा मिथ्या शिक्षा से हमारी मति भ्रष्ट करने का।"

"और इन चरणों को वापस कैसे करना चाहते हो?"

"हिन्दुस्तान की जनता को एक-एक कर इन चरणों पर लौटाने के लिये अन्तिम चरण से ही इसे लौटाना होगा। यह मैं और मेरे जैसे लोग कर रहे हैं। हम अभी शिक्षा का निराकरण कर रहे हैं।"

"तो स्कूलों-कालेजों का बहिष्कार कराओगे?"

"यह सम्भव नहीं। सरकार स्कूल-कालेजों की शिक्षा से शिक्षितों को काम-धन्धा देती है और काम-धन्धे का त्याग नहीं करना चाहिये। ये काम-धन्धे स्वराज्य-प्राप्ति में साधन हैं। हाँ, शिक्षा का निराकरण स्कूल-कालेजों से बाहर शिक्षा-केन्द्र खोल कर किया जायेगा। मेरा अभिप्राय है कि 'प्रैस और प्लैटफार्म' से। एक अन्य भी उपाय है। वह है 'ह्विस्परिंग'[1] अभियान चला कर।"

"बहुत भयानक जीव हैं नलिनी बाबू आप?"

"यह तो सरकार की चर्चा का उत्तर चर्चा द्वारा है। सरकार स्कूल और कालेजों पर अपना अधिकार छोड़ दे तो हम भी यह चर्चा का अभियान छोड़ देंगे।"

"पर यह 'ह्विस्परिंग' का अभियान तो बहुत ही भयानक है। भला क्या 'ह्विस्पर' करते हैं?"

"हमने अपना यह नियम बना लिया है कि घर, बाजार, दफ्तर अथवा रेल में, कहीं भी हों, राजनीतिक चर्चा करते हैं। उस चर्चा में दो बातें मुख्य होती हैं। एक यह कि अंग्रेज विदेशीय हैं, विधर्मीय हैं, पक्षपाती हैं, झूठे हैं और

---

१. कानोंकान चर्चा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुटेरे हैं। दूसरी बात यह करते हैं कि राजा अपने देश का, स्वधर्मानुयायी, धर्मात्मा और भला व्यक्ति होना चाहिये। उसे जनता से केवल उतना ही लेना चाहिये, जितने से देश में व्यवस्था बनी रहे, अधिक नहीं।"

"मैं समझता हूँ कि आप हमारे काम के व्यक्ति नहीं हैं। भला यह बताइये कि स्वधर्म से आपका क्या अभिप्राय है ?"

"जो इस देश के बहु-संख्यक लोग मानते हैं।"

"बहु-संख्यक तो हिन्दू हैं।"

"जी। और राज्य उनके धर्म का मानने वाला होना चाहिये।"

"परन्तु हिन्दू-धर्म तो बहुत ही घटिया और पिछड़ा हुआ है।"

"यह आपका भ्रम है। इस पर भी यदि आपकी बात को सत्य मान लें तो भी आप धर्म-परिवर्तन का अभियान चलाइये। जब अहिन्दुओं की संख्या अधिक हो जायेगी तो राजा उनके धर्म का हो जायेगा।"

"यह तो हो रहा है। ईसाई और मुसलमान इस पर जुटे हुए हैं।"

"वे जो कुछ कर रहे हैं, उसको मैं अन्याय और अत्याचार मानता हूँ। उन द्वारा किया जा रहा धर्म-परिवर्तन धन, बल, छल और स्त्री, नौकरी इत्यादि के प्रलोभनों से किया जा रहा है। यह कानून से वर्जित है। नैतिकता की भी अवहेलना है। इसके लिये उन्हें दण्ड दिया जाना चाहिये। इस पर भी समझ-समझा कर धर्म-परिवर्तन हो सकता है। परन्तु मैं तो यह कहता हूँ कि जब तक अधिक संख्या हिन्दुओं की है, तब तक राजा हिन्दू क्यों न हो ?"

"और वह राजा बन कर बलपूर्वक हिन्दू-धर्म का विस्तार कर लेगा।"

"इतिहास साक्षी है कि अभी तक यह हुआ नहीं। भारत में कई हिन्दू राजा हैं। उनके राज्यों में बलपूर्वक मत-परिवर्तन नहीं किया जा रहा। इस कारण इतिहास इस बात का आश्वासन देता है कि हिन्दू राजा के राज्य में मत-परिवर्तन बल, छल और प्रलोभनों से नहीं होगा।"

"छोड़ो इस बात को। आपके इस अभियान में, कि हिन्दू-धर्म की व्याख्या की जाये, मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ। बम्बई विश्वविद्यालय में 'इण्डोलौजी' के प्रोफ़ेसर मिस्टर ह्वूलर के साथ मैं आपको सहायक के रूप में नियुक्त करा सकता हूँ। आपको राजनीति की चर्चा छोड़, अपने शास्त्रों की व्याख्या का अवसर मिल सकेगा। सात सौ रुपया मासिक वेतन है।"

"मिस्टर ह्वूलर मुझे एक दिन भी वहाँ काम नहीं करने देंगे।"

"क्यों ?"

"इस कारण कि वे एक अनपढ़ व्यक्ति हैं। वे वैदिक साहित्य का ए-बी-सी भी नहीं जानते और साहित्य को, अपने मिथ्या अर्थों द्वारा दूषित कर रहे हैं। ज्यों ही मैंने उनकी भूलें बतानी आरम्भ कीं, वे मुझे धक्के दिलवा कर वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलवा देंगे । मैं उनके भ्रान्त प्रयासों का उत्तर दे रहा हूँ।"

"परन्तु घर पर बैठकर लिखने का तो कुछ भी प्रभाव नहीं हो सकता। आपका लिखा कोई पढ़ेगा नहीं। पुस्तकालय आपकी पुस्तकें खरीदेंगे नहीं। आपका पूर्ण प्रयास व्यर्थ हो जायेगा।"

"यह ठीक है कि सरकारी धन और संरक्षण से ह्वूलर साहब जैसे अनभिज्ञ की बात चलेगी और हमारी सत्य बातों को दबा देने का यत्न किया जायेगा, परन्तु समय पाकर सत्य प्रकट होगा। जब राज्य स्वमतावलम्बियों का होगा, तब सत्य का प्रकाश होगा।"

"यह नहीं हो सकेगा। सत्य यहाँ से भाग कर यूरोप में चला गया है। उसके साथ ही ज्ञान-विज्ञान भी वहाँ चला गया है।"

"आपका कथन एक सीमा तक ही ठीक है, परन्तु उसे वहाँ से पुनः इस देश में लाना होगा और यह अपना राज्य ही कर सकेगा। अतएव मेरा यह कहना है कि पहले यहाँ स्वराज्य लाना होगा।"

"यह बात हमारे प्रधान ने कलकत्ता-अधिवेशन के अवसर पर घोषित कर दी है। अब तो उपायों में विवाद रह गया है।"

"अभी आपकी कांग्रेस संस्था ने घोषित नहीं किया। साथ ही उपायों के विषय में तो चर्चा इस विषय का प्रस्ताव होने के उपरान्त ही हो सकती है।"

"खैर, छोड़िये इस बात को। यह तो अधिवेशन के समय विचार कर लेंगे। मैं आपके पास यह प्रस्ताव लेकर आया था कि बम्बई विश्वविद्यालय के 'इण्डोलौजी' विभाग में एक असिस्टैण्ट का स्थान रिक्त है और उसमें आपको स्थान मिल सकता है। राजनीति छोड़नी पड़ेगी।"

"मेहता जी! आप जानते नहीं कि आप क्या कह रहे हैं। आप ऐसा करिये कि मैं आपको अपनी एक पुस्तिका, जो छप चुकी है, देता हूँ। यह आप अपने विश्वविद्यालय के विद्वान् डा० ह्वूलर को दिखा दीजिये और उसे देख कर यदि वे मुझे वहाँ रखने में रुचि रखेंगे तो मैं काम करना स्वीकार कर लूंगा।"

"ठीक है। आप दीजिये और तब मैं आपको लिखूंगा।"

मिस्टर मेहता और कमलनारायण गये तो नलिनी प्रभा को अपना बम्बई में कार्यक्रम बताने के लिये उसके कमरे में चला गया। वहाँ ज्ञानस्वरूप आया हुआ था और दोनों कमरे में खड़े-खड़े बातें कर रहे थे।

नलिनी ने ज्ञानस्वरूप को सम्बोधन कर पूछ लिया, "कब आये ज्ञान?"

"अभी-अभी आया हूँ। मैंने विचार किया है कि आज मुझे काम से अवकाश है और यदि प्रभा जी को भी अवकाश हो तो इनको भ्रमण के लिये ले चलूं।"

"और प्रभा जी को अवकाश है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रभा ने दिया, "अवकाश न भी हो तो बनाया जा सकता है। मैंने तो इनको कहा है कि यह मामी मीनाक्षी तथा अपने बच्चों को भी ले चलें तो मैं चलने को तैयार हूँ।"

"तो जाओ, ले जाओ न उनको।"

"मैंने उसे चलने के लिये कहा था, परन्तु वह तैयार नहीं हुई। अभी-अभी गिरजाघर से लौटी थी और फिर अपनी सहेली के साथ कहीं चली गयी है।"

"तो अब बताओ प्रभा! क्या कहती हो तुम?"

"मैं अभी पन्द्रह दिन तक तो बम्बई में हूँ। यह अगले रविवार को सपत्नीक यहाँ आ जायें। मैं इनकी संगत् का भी लाभ उठाऊँगी।"

"ठीक तो कह रही है प्रभा। ज्ञान! तुम प्रभा के मनोरंजन का कार्यक्रम अगले रविवार को बना सकते हो।"

ज्ञानस्वरूप मुस्करा कर बोला, "तो आपका अगला रविवार हमारे साथ 'बुक' रहा। यदि मामा जी यहाँ हों तो और भी अच्छा है।"

"मैं तो यहाँ नहीं रहूँगा। हाँ, तुम्हारी मामी और कदाचित् तुम्हारी माता जी भी यहाँ होंगी। उनको भी साथ ले जाना। पुत्र को परिवार वालों से हेल-मेल रखता देख, माँ के हृदय को शान्ति मिलेगी।"

ज्ञान ने कह दिया, "यह तो बहुत अच्छा अवसर होगा। मैं आगामी रविवार को यहाँ आऊँगा। हम मध्याह्न के भोजनोपरान्त यहाँ से चलेंगे। चलने का कार्यक्रम यहाँ आकर बन जायेगा।"

इतना कह ज्ञान ने जाने के लिये छुट्टी माँग ली।

: ७ :

ज्ञानस्वरूप गया तो प्रभा ने पूछ लिया, "माता जी आ रही हैं?"

"नहीं; मैं उनको तार देकर बुला रहा हूँ।"

"किसलिये?"

"तुम्हारा यहाँ रहना ठीक ही है, परन्तु अब तुम अकेली दिखायी देने लगी हो और मैं समझता हूँ कि उसका तुम्हारे साथ रहना आवश्यक है।"

"पर मैं अकेली नहीं हूँ।"

"मैं तो कल तक यहाँ से चल दूंगा। मेरा काम यहाँ पर समाप्त हो चुका है। मैं समझता हूँ कि तुम्हारे तथा सुवर्णा के लिये यहाँ रहने को खुला मकान कुछ काल के लिये ले लूँ और तुम सब लोग यहाँ तब तक रह सकोगे।"

"परन्तु ज्ञान जी को भारी निराशा होगी, जब वह अगले सप्ताह अपनी पत्नी सहित यहाँ आयेंगे और हमें लापता पायेंगे।"

"वह निराशा उसे समय पर नये मकान का पता भेज, मिट सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो प्रभा ! मैं तिलक जी से और मेहता जी से मिल चुका हूँ। मैं तिलक जी से निराश हूँ और मेहता जी मुझसे निराश होकर गये हैं। परिणाम-स्वरूप बम्बई में वातावरण मेरे अनुकूल नहीं।

"मैं आज रात ही जाने का विचार कर रहा हूँ, परन्तु अब तुम्हारे लिये मकान का प्रबन्ध करना होगा। सुवर्णा को तुम्हारे साथ यहां रहना होगा और तुमको अब अपने पुत्र की भी सुध लेनी होगी।"

प्रभा ने मुस्कराते हुए पूछा, "पिता जी ! आपने यह 'डिक्टेटर-शिप' का कार्य कब से स्वीकार किया है ?"

"पर मैं डिक्टेटरी नहीं कर रहा। मैं तो यह सब अपनी इच्छा प्रकट कर रहा हूँ। मानना न मानना, तुम्हारा और सुवर्णा का काम है। यदि तुमको मेरी सम्मति पसन्द नहीं होगी तो तुम उसे अस्वीकार भी कर सकोगी।"

"तो माता जी को तार दे दीजिये। उनके आने पर हम दोनों विचार कर लेंगी कि हमें क्या करना चाहिये।"

"यह तो अभी कर रहा हूँ। इस कारण मुझे सुवर्णा के आने तक यहाँ ठहरना होगा।"

"आप जा सकते हैं। हम रहने के लिये किसी मकान का प्रबन्ध स्वयं कर लेंगी।"

"यह भी ठीक है।"

इस पर नलिनीकान्त उठा और यह कह कर कि वह तार देने जा रहा है, चल दिया।

प्रभा अपने श्वसुर की चिन्ता का कारण समझ रही थी, परन्तु वह उस चिन्ता के निवारण का यह उपाय ठीक नहीं समझती थी, जो उसका श्वसुर विचार कर रहा था।

इस पर भी उसने उनके विचारों में संशोधन करने का स्वयं यत्न नहीं किया। वह अपनी सास से विचार कर ही, उनकी योजना बदलवाना चाहती थी।

नलिनीकान्त तार देने गया तो कुछ लोगों से मिलने भी चला गया। वह सायंकाल लौटा और सीधा प्रभा को बताने उसके कमरे में चला आया कि वह तार दे आया था।

परन्तु वहाँ पहुँचा तो मुस्कराते हुए प्रभा ने उसे लाहौर से आया तार दे दिया। तार उसके नाम था और सुवर्णा का भेजा हुआ था।

तार था, "हम घर के सब लोग आज चल कर परसों बम्बई पहुँच रहे हैं। रहने का सुप्रबन्ध होना चाहिये।"

'सब लोग' का अभिप्राय था कि लाहौर से आने वाले थे, चार सज्ञान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन बच्चे। सुवर्णा, प्रज्ञा, प्रभा का बच्चा, उसकी दायी, ललिता और उसके दोनों लड़के। कदाचित् वे अपने साथ खाना बनाने वाली नौकरानी भी लायें।

अब प्रभा ने कह दिया, "पिता जी ! अब तो किसी बड़े रहने योग्य स्थान का प्रबन्ध करना ही होगा।"

"मैं आशा करता हूँ कि हो जायेगा।"

फिरोजशाह मेहता से नलिनी की भेंट का परिणाम निकला। यह परिणाम अगले दिन नलिनीकान्त कमल से मिलने आया तो पता चला।

नलिनी मकान की खोज में घूम रहा था। उसे ज्ञान ने बताया कि कमल अपनी नयी कोठी में जा रहा है और उसका पहला मकान खाली होने वाला है। इस सूचना पर वह कमलनारायण के घर पर जा पहुँचा। कमल हाई कोर्ट से किसी मुकद्दमे में बहस कर लौटा था और अपने मकान की बैठकघर में बैठा, पत्नी के साथ चाय पी रहा था।

चपरासी भीतर सूचना लेकर गया तो कमल स्वयं बाहर आ गया।

"आइये मौसा जी ! आइये, कैसे आये हैं ?"

नलिनी ने कहा, "एक वस्तु की आवश्यकता पड़ गयी है और उसके तुम्हारे पास होने का समाचार मिला है। इस कारण यहाँ चला आया हूँ।"

"आइये, भीतर आपका परिचय मिसेज़ बैस्टन से करा दूँ। मैंने कल उसे आपकी मेहता जी से हुई बात बतायी तो वह आपसे मिलने के लिये उत्सुकता प्रकट करने लगी है। आप भी तो उससे मिलना चाहते थे।"

नलिनी उसके साथ भीतर चला गया और वहाँ उसका परिचय कैटालीना से करा दिया गया।

कैटालीना एक गुजराती ईसाई की लड़की थी। उसका बाबा वहाँ के किसी गाँव का पटेल था और पुत्र पढ़ कर बैरिस्टर बनने विलायत गया तो वहाँ से किसी स्पैनिश लड़की से विवाह कर वहाँ ही रह गया। उस स्पैनिश लड़की से इस हिन्दुस्तानी युवक की पाँच सन्तान, चार लड़के और एक लड़की थे। लड़की कैटालीना कट्टर ईसाई थी। स्पैनिश माँ ने ईसाई मत के लिये लड़की के मन में बहुत सुदृढ़ निष्ठा बना रखी थी।

कमल को उसकी प्रथम पत्नी नीला ने तलाक दे दिया था। जब से वे भुवाली से लौटे थे, दोनों में परस्पर विश्वास उठ गया था। यद्यपि विवाहित जीवन लुढ़कता-ढुलकता पाँच वर्ष तक चला और दो बच्चे भी हो गये, परन्तु अन्त में एक साधारण-सी बात पर दोनों में तिनका टूट गया।

नीला तलाक स्वीकार होने से पूर्व ही पूना के एक फैक्टरी के मालिक के पास जाकर रहने लगी थी। पीछे दोनों में विवाह हो गया और अब उसके इस नये पति से पाँच बच्चे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैटालीना का कमल से विवाह तो कमल के पिता के जीवन-काल में ही हो गया था। यह माता-पिता से मिलने विलायत गया था और कैटालीना से विवाह कर उसे हिन्दुस्तान में ले आया था। इसके उपरान्त कैटालीना कई बार माता-पिता के पास लन्दन जा चुकी थी, परन्तु कमल अपने काम में व्यस्त होने के कारण हिन्दुस्तान से पुनः बाहर नहीं जा सका।

कैटालीना का विचार था कि वह धर्म-प्रचार के लिये एक समाचार-पत्र चलाये। उसने प्रेरणा दे, अपने पति को तैयार कर लिया कि वह उसका सम्पादन-कार्य करे। परन्तु पीछे श्री फिरोज़शाह मेहता तथा श्री गोपालकृष्ण गोखले के कहने पर वह राजनीतिक और मज़हबी, दोनों रंग लिये हुए एक पत्र चलाने का विचार बना बैठी।

पिछली रात कमल ने नलिनी और मेहता के भीतर वार्त्तालाप में मेहता के निरुत्तर होने की बात सुनायी तो वह बहुत प्रभावित हुई थी और नलिनी से मिलने की इच्छा करने लगी थी। इस पर कमल ने बताया, "मैंने उससे समाचार-पत्र निकालने की तुम्हारी योजना बतायीं तो वह भी तुमसे मिलने की इच्छा करने लगा है।"

अतः आज मकान की खोज में नलिनी जब कमल से मिलने आया तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसे भीतर ड्रायंग-रूम में ले गया।

वहाँ उसने कमल का कैटालीना से परिचय कराया और कह दिया, "मौसा जी! मैंने रात इसे आपका मेहता साहब से हुआ वार्त्तालाप सुनाया तो यह चकित रह गयी। विशेष रूप में आपने जो कहा था कि आप चर्चा का उत्तर चर्चा से करना चाहते हैं; सरकार चर्चा कर रही है शिक्षा द्वारा और आप कर रहे हैं प्रैस, प्लैटफार्म और ह्विस्परिंग अभियान द्वारा।

"इतना सुन यह कहने लगी कि यह आपसे मिलना चाहती है।"

"कमल!" नलिनी ने बात बीच में ही काट कर कहा, "तो तुमने यह नहीं बताया कि यदि सरकार चर्चा को, पिस्तौल, लाठियों और तोप-बन्दूकों से रोकेगी तो उसके लिये हम भी तोप-बन्दूक और पिस्तौल प्रयोग करना पाप नहीं समझते।"

"यह भी बताया था और यह तो इस युक्ति को सुन, उछल पड़ी थी।"

इस पर नलिनी ने कहा, "भले लोग पहल नहीं करते, परन्तु जब दूसरे अत्याचार करें तो अत्याचार का प्रतिकार अत्याचार से लिया जा सकता है। भले लोग यह जानते हैं कि हिंसा का मार्ग अति दुष्कर है। इस पर भी जब विवशता हो तो इसे अपनाया जा सकता है।"

अब कैटालीना ने एक शंका उपस्थित कर दी। उसने पूछा, "कभी कानून

—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हिंसा सरकार के लिये उचित समझी जाती हो तो कानून की उपस्थिति में आप क्या करेंगे ?"

"अनुचित और अन्यायपूर्ण कानून बदलने के लिये अवसर और सुविधा हो तो कानून बदलने का यत्न समझ-समझा कर करना चाहिये। यदि समझने-समझाने के लिये कोई अवसर न हो तो फिर कानून भंग करने का अधिकार होता है।"

"जैसे दक्षिण-अफ्रीका में गांधी जी करने को कह रहे हैं।"

"हाँ, यह भी हो सकता है, यदि सम्भव हो तो। परन्तु वहाँ की स्थिति और यहाँ की स्थिति में अन्तर है। वहाँ हिन्दुस्तानी अल्प-संख्या में हैं और उनके लिये अहिंसात्मक आन्दोलन के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं। हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों की संख्या बहुत अधिक है। यहाँ उस उपाय की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

"तो अहिंसात्मक आन्दोलन अवांछनीय है ?"

"नहीं। आन्दोलन तो अहिंसात्मक ही होता है, परन्तु जब अहिंसात्मक आन्दोलन अधिकारी सहन न कर, इसे हिंसा द्वारा दबाना चाहें तो फिर यह स्वयमेव हिंसा में परिवर्तित हो जाता है। यह स्वाभाविक है। उस समय हिंसा को निन्दनीय बता कर उसे रोकना, भीरुता उत्पन्न करना होगा।"

"यह बात समझ में नहीं आयी।"

"बहु-संख्यक समुदाय को अल्प-संख्यक का अत्याचार शान्ति से सहन करने को कहना, जाति में भीरुता उत्पन्न करने का आयोजन होगा। यह अस्वाभाविक होने से, अस्वाभाविक परिणाम उत्पन्न करता है।

"अतः बहुसंख्यक जनता द्वारा अपने अधिकार येन-केन-प्रकारेण प्राप्त करने में बाधा डालना, अत्याचारी को अधिक और अधिक अत्याचार करने के लिये उत्साहित करना है।"

"परन्तु समाचार-पत्र तो ऐसा नहीं कर सकते। उनको तो ज़ब्त किया जा सकता है।"

"हाँ, हिंसात्मक-कार्य करना समाचार-पत्रों, विशेष रूप में बड़े-बड़े समाचार-पत्रों का कार्य नहीं; परन्तु उनका यह भी कार्य नहीं कि अन्याय और अत्याचार के विपरीत हिंसा का प्रयोग करने वालों की निन्दा करें।"

"वह तो व्यवहारिक नीति है।"

"व्यवहारिकता तटस्थता से हो सकती है, परन्तु विरोध से नहीं होनी चाहिये। पीड़ित को कहना कि वह अपनी रक्षा का अमुक उपाय प्रयोग करे और अमुक उपाय प्रयोग न करे, युक्तियुक्त बात नहीं है। जब आततायी को हम समझा नहीं सकते तो पीड़ित को समझाने का कोई अर्थ नहीं रह जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यदि हिंसा करने की छूट दी जाये, तब न्याय-अन्याय का विचार भी नहीं रहता।"

"मैं इन दोनों बातों को पृथक्-पृथक् समझता हूँ। एक का दूसरे के साथ दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। एक कार्य करने की बात है, और दूसरी, विचार करने की। कार्य विचार-युक्त होना चाहिये और हो सकता है। इसे हमारे शास्त्र में ज्ञान से दग्ध कर्म का नाम दिया है।"

"आप तुरन्त स्वराज्य मिल जाने को हितकर समझते हैं।"

"यह न सम्भव है और न उपयुक्त।"

"आपने कभी कमल जी से कहा था कि धर्म और राजनीति एक ही बातें हैं?"

"जहाँ तक मुझे स्मरण है कि मैंने यह कहा होगा कि राजनीति धर्म ही है। दोनों में अन्तर नहीं, परन्तु धर्म और मजहब में अन्तर है। मज़हब विचारों से सम्बन्ध रखने वाले बाहरी व्यवहार को कहते हैं। ये बदलते रहते हैं। इन बदलने वाली बातों को राजनीति का आधार नहीं बनाया जा सकता। उदाहरण के रूप में परमात्मा के पैगम्बर हज़रत ईसा हैं अथवा हज़रत मुहम्मद; सत्य का निरूपण करने वाले भगवान् कृष्ण हैं अथवा स्वामी शंकराचार्य; ये बातें समय-समय पर बदलती रहती हैं। इनको राजनीति का अंग नहीं बनाया जा सकता। शाश्वत सत्य ही राजनीति का आधार होना चाहिये।"

"और वह क्या है?"

"सर्वप्रथम यह कि इस जगत् का कोई रचने वाला है। वह रचने वाला ज्ञानवान् और अनादि एवं अक्षर है। दूसरी बात यह कि प्राणी में कर्म करने वाला और कर्मों का फल भोगने वाला उससे पृथक् है। यह कर्म-फल से बच नहीं सकता। तीसरी बात है कि विद्वान् तथा चरित्रवान् व्यक्ति सदा मान एवं प्रतिष्ठा के योग्य है। जैसा हम अपने साथ व्यवहार नहीं चाहते, वैसा व्यवहार किसी दूसरे से हमें नहीं करना चाहिये।

"ये तथा दो-चार अन्य सत्य हैं। सत्य के पथ को दैवी धर्म कहते हैं और इसके विपरीत मार्ग को आसुरी। बस, ये दो ही प्रकार के लोग यहाँ हैं। इनके भीतर एक संघर्ष चल रहा है। यह मिट नहीं सकता। कारण यह कि इसका स्रोत स्वयमेव संघर्ष का विषय है। वह है बुद्धि। बुद्धि का विकास भी तो एक करणीय है। यह दैवी-कार्य है।"

इस समय कमल ने कह दिया, "मैं एक कार्य-विशेष से जाना चाहता हूँ। यहाँ आप लोगों की बात लम्बी हो गयी है।"

"पर कमल! मैं तुम्हारे पास इस काम से आया था कि मेरा परिवार कल यहाँ आ रहा है। इस कारण मुझे किसी खुले निवास-स्थान की आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सुना है कि तुम यह कोठी भाड़े पर देने वाले हो।"

"कब चाहिये आपको ?" कैटालीना ने पूछ लिया।

"कल ही। अन्यथा एक-दो दिन में।"

"तब तो एक बात हो सकती है कि आप कल यहाँ आ जाइये। साज़ो-सामान के साथ ही यह कोठी आपको रहने को मिल जायेगी।"

"और भाड़ा क्या लेंगे ?"

"आप कब तक इसमें रहेंगे ?"

"अभी तो दो-तीन महीने का कार्यक्रम है। तब तक निश्चय कर लूँगा कि मैंने बम्बई में ही रहना है अथवा किसी अन्य स्थान पर। मैं लाहौर छोड़ रहा हूँ।"

"क्यों ?"

"जिस लोभ-वश मैं वहाँ गया था, वह वहाँ रहा नहीं। एक विचार पुनः भुवाली लौट जाने का भी है और कभी-कभी कर्म-क्षेत्र को छोड़ने का विचार नहीं भी होता।"

"आप विश्वविद्यालय का कार्य क्यों नहीं स्वीकार कर लेते ? मैं जानता हूँ कि वह काम सुगमता से मिल जायेगा।"

"वह काम ईमानदारी से नहीं दिया जायेगा। वहाँ का अध्यक्ष और फिर सरकार, उस कार्य में राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति, लक्ष्य रखे हुए हैं। वह कार्य शुद्ध बौद्धिक नहीं है।"

"यह तो आपने कल भी बताया था। यद्यपि इस बात का विश्वास नहीं आता, परन्तु यह असम्भव भी प्रतीत नहीं होता।"

"तो मैं कल यहाँ आ जाऊँ ?"

"किस समय मौसी जी आयेंगी ?"

"प्रातः नौ बजे की गाड़ी से।"

"ठीक है। उनको यहाँ ही ले आइये। हमारे रहते हुए भी उनको कुछ स्थान तो मिल ही जायेगा।"

: ८ :

अगले दिन नलिनी और प्रभा, सुवर्णा इत्यादि को स्टेशन पर लेने पहुँचे तो कमलनारायण और कैटालीना प्लैटफार्म पर पहले ही उपस्थित थे। नलिनी ने समझा कि वे किसी अपने मित्रों के स्वागत के लिये वहाँ पहुँचे हैं। अतः नलिनी ने आगे बढ़, कमल तथा कैटालीना का प्रभा से परिचय कराया; तदनन्तर पूछ लिया, "तो आप भी किसी के स्वागत के लिये आये हुए हैं ?"

"हाँ; मेरी एक आण्टी अपने परिवार के साथ इस गाड़ी से आ रही हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी ने समझा कि कोई होगी। उस समय गाड़ी आने वाली थी और आने वालों के विषय में अधिक पूछा नहीं जा सका।

गाड़ी आयी तो सुवर्णा इत्यादि का सामान निकालने और आये हुओं को मिलने में सब लीन हो गये। सुवर्णा ने कमल को सबके पीछे खड़े देखा तो वह सबको छोड़, उसके समीप जा पूछने लगी, "कमल ! पहचाना नहीं मुझे ?"

"आण्टी ! पहचान कर ही तो यहाँ खड़ा हूँ। मैंने समझा कि आण्टी पहले अपनों से मिल लें और पीछे हम बाहर वालों से भी मिल लेंगी।"

"पर कमल !" नलिनी ने समीप आते हुए पूछ लिया, "तुम्हारे आने वाले सम्बन्धी नहीं आये क्या ?"

"आये तो हैं। उन्हीं से मिल रहा हूँ। देखो आण्टी !" कमल ने अपनी पत्नी की ओर संकेत कर कहा, "यह देखो एक नये जीव से आपका परिचय कराऊँ। यह है मेरी आजकल की पत्नी, श्रीमती कैंटालीना।"

सुवर्णा कमल की नयी पत्नी के विषय में तो सुन चुकी थी। अतः वह आजकल के शब्द पर मुस्करायी और हाथ जोड़, नमस्ते करने लगी। कैंटालीना ने कहा, "हम आपको अपनी कोठी में ले जाने के लिये आये हैं।"

सुवर्णा ने प्रश्न-भरी दृष्टि में अपने पति की ओर देखा तो उसने कह दिया, "हाँ; वहाँ ही रहने का प्रबन्ध किया है।"

"पर आपको बहुत कष्ट होगा।" सुवर्णा ने कैंटालीना की ओर देखकर कह दिया।

"नहीं। हम अपने नये मकान में जा रहे हैं।"

"तब तो ठीक है।"

सब स्टेशन से बाहर निकले तो नलिनी ने प्रज्ञा से पूछ लिया, "आप तो सब सामान वहाँ से उठा लायी प्रतीत होतीं हैं।"

"मैं अब बम्बई में ही रहने का विचार बना कर आयी हूँ।"

"अच्छा ? भला किसलिये ?"

"अपने पुत्रों के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहती हूँ। मैं पिछली भूल को सुधारने का यत्न करना चाहती हूँ।"

सुवर्णा ने स्टेशन से निकलते हुए कैंटालीना से पूछ लिया, "आपका नया मकान किधर है ?"

"वह कोलाबा की नयी वस्ती में है।"

इस प्रकार नलिनी को अपने परिवार के लिये फरनीचर से युक्त एक दस कमरों का मकान मिल गया।

कोठी पर पहुँच, कमल ने कोठी के सब कमरे और उनमें लगे सामान का उपयोग बताया और फिर अपनी घोड़ा-गाड़ी में सवार हो, अपने नये मकान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी सहित चला गया।

कोठी के नौकर, चपरासी और रसोइये के अतिरिक्त सब वहीं थे। अतः प्रभा और ललिता खाने का प्रबन्ध करने लगीं। प्रज्ञा ने पूछ लिया, "आपकी कमल से बहुत गहरी छनने लगी प्रतीत होती है।"

"हाँ, बहन! कुछ ऐसा ही संयोग बन गया है। मैं समझता हूँ कि कमल तो वैसे-का-वैसा ही बुद्धू है, जैसा पहले था। यह तो उसकी पत्नी ही प्रतीत होती है, जो इस संयोग में कारण बन रही है।

"मैं कल मकान की खोज कर रहा था। ज्ञानस्वरूप ने मुझे बताया कि कमल अपना मकान खाली करने वाला है। इस कारण मैं यहाँ आ पहुँचा। यहाँ उसकी पत्नी मिल गयी। यह स्पेन की रहने वाली एक स्त्री की एक हिन्दुस्तानी पति से लड़की है। कदाचित् उसका 'मिक्सड ब्रीड' होना ही कारण है कि वह विभिन्न प्रवृत्तियाँ रखती प्रतीत होती है। कुछ दिन ही पूर्व वह अंग्रेज़ी राज्य के विपरीत इस कारण थी कि यह राज्य स्वतन्त्र अंग्रेज़ी चर्च से सम्बन्धित है। पीछे जब इसका सम्पर्क मेहता और गोखले जी से हुआ, तब यह अंग्रेज़ी सरकार के पक्ष में हो गयी। कल यह मेरे सम्पर्क में आयी तो यह स्वराजिस्ट बन गयी प्रतीत होती है। मुझे भय है कि कहीं प्रभा से सम्पर्क बनने पर यह क्रान्तिकारी न बन जाये।"

सुवर्णा हँस पड़ी। प्रज्ञा ने कहा, "सुना है ज्ञान प्रभा से मेल-जोल बढ़ा रहा है?"

"मुझे प्रभा की बुद्धि पर विश्वास है। साथ ही कमल का यह कहना है कि ज्ञान को हमारे परिवार के विरुद्ध कार्य करने का सत्य-हृदय से पश्चात्ताप लग रहा है, इसी प्रायश्चित्त के लिये वह हम से मेल-जोल बढ़ा रहा है। इस पर भी हमें सावधान रहना चाहिये। अभी उस पर भले हिन्दू-परिवारों के संस्कार नहीं पड़े।"

"आपके यहाँ आने के प्रयोजन का क्या बना?"

"तिलक जी ने मेरे प्रस्ताव को अव्यवहारिक कह कर अस्वीकार कर दिया है। उनके लिये कांग्रेस की बाईस वर्ष से बन रही प्रतिष्ठा का लोभ त्याग करना कठिन है।

"इस पर भी मैं देश का कल्याण, एक नया दल बनाने में ही समझता हूँ। कारण यह कि मेरे विचार से दल का आधार ही भिन्न होना चाहिये। मैं इस देश में हिन्दू राष्ट्र का पोषक दल स्थापित करना चाहता हूँ। मैं संयुक्त राष्ट्र के पक्ष में नहीं हूँ।"

"हाँ; बात तो वहीं-की-वहीं है, जहाँ स्वामी दयानन्द जी के काल में थी। प्रश्न वैसा ही है कि देश और सम्पूर्ण मानव-समाज का कल्याण वैदिक संस्कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से होगा अथवा तीतर-बटेर के संयोग की संस्कृति से।"

इस पर प्रज्ञा ने अपनी सामान्य बुद्धि की बात कह दी। उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि विरोधी शक्तियाँ इतनी प्रबल हैं कि हमारा प्रयास हमारे जीवन-काल में सफल होता प्रतीत नहीं हो रहा।"

"हाँ; प्रतीत तो मुझे भी यही हो रहा है। इस पर भी यदि इस संस्कृति ने जीवित रहना है तो स्वामी जी के कार्य को चलाने वाले उत्पन्न होते रहने चाहियें। कम-से-कम यह दिव्य-ज्योति जलती रहनी चाहिये। क्या जाने किस समय इसका प्रकाश पुनः सम्पूर्ण मानव-समाज को सन्मार्ग दिखाने में समर्थ हो सके।"

"परन्तु क्या अब भी आप कांग्रेस से चिपटे रहेंगे ?"

"मैं चाहता हूँ कि जैसे मानव-समाज में वैदिक संस्कृति का अस्तित्व बनाये रखना आवश्यक है, वैसे ही कांग्रेस में अपनी आवाज़ उठाते रहने की भी आवश्यकता है।"

प्रज्ञा ने असन्तोष रूप में सिर हिलाते हुए कहा, "यह जल मथने के तुल्य ही प्रतीत होता है।"

"मैं इतना निराश नहीं हूँ। मुझे कुछ ऐसा समझ में आ रहा है कि तिलक इत्यादि नेताओं को धक्के दे-देकर कांग्रेस से निकाला जायेगा, तब ही ये लोग स्वतन्त्र मार्ग स्वीकार कर सकेंगे।"

"और यह भी तो हो सकता है कि तरंगों के निरन्तर लगने वाले थपेड़ों से ये अपने मार्ग से बह कर कहीं वहाँ न पहुँच जायें, जहाँ से इनको अपने लक्ष्य-स्थान का ही ज्ञान न रहे।"

"उसी समय के लिये मैं अपने और अपने जैसों को सतर्क रखना चाहता हूँ। इसी आशा में मैं अपना साहित्य निर्माण कर रहा हूँ। देखो, प्रज्ञा! आज के पत्र में एक समाचार छपा है कि कांग्रेस अधिवेशन का स्थान, नागपुर से बदल कर सूरत कर दिया गया है। नागपुर में तिलक के साथियों ने तिलक के अनुकूल वातावरण बनाया हुआ था। वह सब ताश के पत्तों के महल की भाँति गिर गया है।

"अब सूरत में नयी स्वागत-समिति प्रधान-पद के लिये मेहता के कहे अनुसार किसी का निर्वाचन कर देगी और तिलक जी मुख देखते रह जायेंगे।"

हुआ भी वही। दो दिन पश्चात् कांग्रेस की कार्य-कारिणी सभा की बैठक बम्बई में हुई और उसमें सूरत की बीस-पच्चीस सदस्यों की बनी स्वागत-समिति का प्रस्ताव कि डा० रासबिहारी घोष को आगामी अधिवेशन का अध्यक्ष चुना जाये, उपस्थित कर दिया गया। उस समय नागपुर की स्वागत-समिति का प्रतिनिधि मण्डल भी वहाँ आया हुआ था, परन्तु इनको अपनी बात भी कहने नहीं दी गयी और इस मण्डल के बाहर बरामदे में बैठे-बैठे, कमरे में डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रासबिहारी घोष का नाम स्वीकार कर समाचार-पत्रों में छपने के लिये भेज दिया गया।

मेहता साहब के कमरे से निकलने पर नागपुर मण्डल के नेता डा० मुंजे ने कहा, "हम नागपुर वाले भी इस विषय पर कुछ कहना चाहते हैं।"

मेहता जी ने उनसे पूछ लिया, "किस विषय में ?"

"प्रधान-पद के लिये नाम के विषय में।"

"वह तो स्वीकार हो, घोषित कर दिया गया है। आप कल समाचार-पत्रों में पढ़ लेंगे।"

"हम इसका विरोध करेंगे।"

"यह 'सूरत-कांग्रेस अधिवेशन' के समय हो सकेगा।"

इतना कह मेहता जी पुनः कमरे में चले गये। कांग्रेस की कार्य-कारिणी की बैठक उनके मकान पर ही हो रही थी।

: ६ :

कमल की कोठी में सबसे बड़ी बात यह थी कि सब प्रकार की सुख-सुविधा का सामान वहाँ लगा था। प्रज्ञा तो आयी ही ज्ञान से सम्पर्क बनाने के लिये थी। वह यह भी कल्पना कर रही थी कि अवसर मिलते ही वह ज्ञान के साथ उसकी कोठी में जाकर रहने लगेगी।

पहले ही दिन, रात के समय भोजन करते हुए नलिनी ने अपने मन की बात बता दी। उसने कहा, "मैं वापस लाहौर जाना नहीं चाहता। यदि आप सबको बम्बई अनुकूल बैठे तो मैं बम्बई में ही रह जाऊँगा। इसके लिये मुझे लाहौर की कोठी वाला पुस्तकालय यहाँ उठा लाना पड़ेगा। वह इस कोठी में तो समा सकेगा, परन्तु यह कोठी तब ही उपयुक्त हो सकती है, जब यह मोल पर मिल सके।"

इस पर सुवर्णा ने कहा, "मैं समझती हूँ कि कमल दाम उचित मिलने पर बेच देगा। आप यत्न करिये।"

नलिनी ने अपना नागपुर जाना स्थगित कर दिया था। अधिवेशन सूरत में होना निश्चय हो गया था और अधिवेशन के प्रधान डाक्टर रासबिहारी घोष घोषित हो गये थे। नागपुर की स्वागत-समिति ने लाजपतराय का नाम प्रस्तावित किया था। बंगाल ने इसका समर्थन किया था, परन्तु कार्यकारिणी ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि लाला जी के विषय में एक प्रस्ताव उपस्थित किया जाने वाला है और उस प्रस्ताव का लाला जी के प्रधानत्व में उपस्थित होना ठीक नहीं होगा।

एक दिन कमल नलिनी से मिलने आया तो मेहता जी के विषय में बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल पड़ी। कैंटालीना भी उसके साथ आयी थी और पृथक् स्त्रियों में बैठी, बात-चीत कर रही थी।

कमल ने बताया, "एक दिन मैं उनसे मिलने गया हुआ था कि ज्ञान वहाँ बैठा आपके विषय में बता रहा था। यह उसने ही मेहता जी को बताया है कि आपका एक लड़का लाहौर-राज-द्रोह के मुकद्दमे में दो वर्ष का कठोर दण्ड भोग रहा है और दूसरा लड़का यहाँ बम्ब फैक्टरी के केस में फँसा हुआ है।

"यह सुन मैंने उनसे बताया कि मेरा आपसे परिचय है और आप शास्त्र के एक महान् ज्ञाता हैं।

"मेरी बात सुन, मेहता जी ने बताया कि आप एक प्रभावी वक्ता हैं। उन्होंने आपका व्याख्यान कलकत्ता कांग्रेस के खुले अधिवेशन में सुना था। इस पर आपके विषय में खुलकर बात होने लगी।

"मेहता जी का बम्बई विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर डाक्टर जौन लैंसली से घनिष्ठ परिचय है। उनके साथ उनका खाना-पीना है। अतः मेहता जी ने तब ही कहा था कि यदि आप शास्त्र में दखल रखते हैं तो आपको विश्व-विद्यालय में स्थान दिलवा सकते हैं। इसी कारण उन्होंने आपसे डा० ह्यूलर साहब के साथ काम करने का प्रस्ताव किया था।

"मैंने उनको आपके होटल से लौटते समय पूछा कि ऐसे विद्वान् व्यक्ति को सरकारी नौकरी में बांध देने से लाभ क्या होगा? इस पर वे कहने लगे, 'एक विद्वान् व्यक्ति को राज-भक्त बनाया जा सकेगा।'

"मैंने पूछ लिया, 'केवल नौकरी पा जाने से भला कोई राज-भक्त हो सकता है? यह तो मन की अवस्था का नाम है।' मेहता जी का कहना था, 'संसार में कुछ भी वस्तु नहीं, जो धन से प्राप्त न की जाती हो। देखा नहीं तुमने कि मेरे प्रस्ताव के उपरान्त उसका सरकार के प्रति भाव नरम पड़ रहा था। नमक की खान में सब नमक हो जाते हैं।'"

नलिनी अपने विषय में यह अनुमान सुन हँस पड़ा और बोला, "और कमल! तुम चाहते हो कि मैं नमक हो जाऊँ?"

"नहीं, मौसा जी! यदि मैं भी ऐसा चाहता होता तो मेहता जी की इस नीयत के विषय में आपको कभी न बताता।"

"तो तुम उनकी नीयत को बुरा मानते हो?"

"जी, बिल्कुल।"

"कमल! मैं विस्मय करता हूँ कि तुम मेहता जी के साथियों में कैसे हो गये हो?"

"मैं उनके साथियों में नहीं हूँ। यद्यपि मैं तिलक जी की नीति को पसन्द नहीं करता, इस पर भी मैं दादा भाई नारोजी, मेहता और गोखले साहब की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिमूर्ति को भी पसन्द नहीं करता।"

"तो तुम क्या पसन्द करते हो ?"

"मैं यहाँ एक क्रिश्चियन डैमोक्रैटिक-पार्टी की स्थापना चाहता हूँ और उसी के लिये एक दैनिक पत्र निकालना चाहता हूँ। मैं स्वयं इस पत्र को आवश्यक धन दूंगा, परन्तु न तो इसका सम्पादक बनूंगा और न ही इसका मैनेजर। मैं इस पत्र की मैनेजिंग कमेटी का प्रधान बनूंगा।"

"यह पार्टी चलेगी नहीं ? इस पर भी पत्र चल सकता है।"

"क्यों ?"

"पार्टी में कुछ तो सदस्य होने चाहियें। मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान के ईसाइयों में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिल सकेगा, जो ब्रिटिश सरकार की नीतियों का विरोध कर सके। घूम-घुमाव कर तुम्हारा दल और तुम्हारा पत्र ब्रिटिश सरकार का पूर्णतः समर्थक बन जायेगा।

"देखो कमल ! इस देश में जब तक विदेशीय सरकार है, दो ही दल हो सकते हैं। एक ब्रिटिश सरकार के पक्ष में और दूसरा, ब्रिटिश सरकार के विरोध में। अन्य दल इन दो दलों में ही आ जायेंगे। यह हो सकता है कि उपायों में एक दल के लोगों में कतिपय बातों में मतभेद हो जाये, परन्तु मुख्य बात यही होगी कि ब्रिटिश सरकार यहाँ पर रहे अथवा न ?"

"मौसा जी !" कमल ने हँसते हुए कहा, "विचित्र बात यह है कि आप और कैटालीना के विचार इस विषय में मिलते हैं। मैं मेहता साहब के दल में मिल कर क्रिश्चियन डैमोक्रैटिक पार्टी का शिलान्यास करना चाहता था। इस पर उसका कहना है कि मेहता साहब का ग्रुप, ब्रिटिश सरकार को यहाँ से निकालने के पक्ष में नहीं होगा और जिस समय उनको पता चला कि मैं इस प्रकार के विचार रखता हूँ तो मुझे तुरन्त उसमें से निकाल दिया जायेगा।"

नलिनी हँस पड़ा। वह जानता था कि कमल राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पत्नी के कहने पर कूदने के लिये तैयार हुआ है। हँसकर उसने कहा, "मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि कैटालीना मेरे ढंग पर ही विचार करती है। इस पर भी मेरा उससे एक बात में मतभेद है। वह है स्वराज्य के स्वरूप में। वह यहाँ रोमन कैथॉलिक राज्य चाहती है। मैं यहाँ पर हिन्दू-राज्य चाहता हूँ। दोनों में बहुत भारी अन्तर है। हिन्दुस्तान में कैथॉलिक राज्य हो जाने से वह भी एक विदेशीय राज्य हो जायेगा। इसके रहने वालों की संस्कृति और नैतिक मान्यताएँ कैथॉलिकों की-सी होने लगेंगी। मैं यह नहीं चाहता। मैं मज़हबी बातों में राज्य के अतिरिक्त शक्तियों को कार्य करने की बात तो स्वीकार कर सकता हूँ, परन्तु राज्य को नहीं।"

"तो क्या हिन्दू-राज्य मज़हबी बात नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। हिन्दू-संस्कृति और धार्मिक मान्यताएँ ही ये हैं कि मज़हब और राज्य पृथक्-पृथक् हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दू-धर्म मज़हब नहीं है।"

कमल को नलिनीकान्त की तब की युक्तियाँ स्मरण होने लगीं, जब उसके पिता का सम्पर्क इससे हुआ था। तनिक कैंटालीना से नोक-झोंक कराने के लिये उसने सम्बोधन कर कह दिया, "कैंटालीना डीयर! यह देखो, मौसा जी क्या कह रहे हैं?"

कैंटालीना स्त्रियों की मण्डली में, कुछ दूर हट कर बैठी हुई थी। कमल के बुलाने पर सब उसका मुख देखने लगे।

इस पर नलिनी ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि चाय का समय हो गया है। वह मँगवा ली जाये और पीते हुए बातचीत की जाये।"

सब अब समीप-समीप बैठ गये। नौकर चाय और उसके साथ गरम-गरम पकौड़े ले आया।

कमल ने अपनी पत्नी को सम्बोधन कर कह दिया, "मौसा जी कहते हैं कि हिन्दू एक 'रिलीजन' नहीं है।"

"तो यह क्या है?" कैंटालीना ने नलिनी की ओर देख कर पूछ लिया।

"यह एक विचार-विधि है, एक जीवन-मीमांसा है।" नलिनी ने कह दिया।

"और रिलीजन क्या होता है?"

"रिलीजन एक गुरु, पीर, पैगम्बर अथवा पुस्तक पर अन्ध-विश्वास रखने का नाम है।"

"हिन्दू भी तो वेदों पर विश्वास रखते हैं?"

"हाँ, परन्तु अन्ध-विश्वास नहीं। मेरा अभिप्राय यह है कि वेद की किसी भी बात को 'तर्क-शास्त्र' की कसौटी पर कसा जा सकता है। कोई भी बात तब तक मान्य नहीं होती, जब तक वह तर्क से ठीक सिद्ध न कर दी जाये।"

"तो वेदों की बातों पर तर्क किया जा सकता है?"

"हाँ, परन्तु एक शर्त है।"

"क्या?"

"यही कि तर्क करने वाला किसी भी प्रकार के पूर्वग्रहों से ग्रसित न हो। इसको हमारी भाषा में अनासक्त-भाव कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इसको 'डिटैचमैण्ट' कहते हैं।"

"तब ठीक है। मैं आपसे पूछती हूँ कि वेदों में शूद्रों के साथ बुरा व्यवहार क्यों लिखा है?"

"ऐसा कहीं नहीं लिखा है। यह वेदों को बदनाम करने के लिये मिथ्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार है।"

"पर रैवरैण्ड रौलिन्सन यही कहते थे।"

"वे गलत कहते थे। प्रथम बात तो यह है कि ज्ञान सबके लिये एक समान लिखा है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र, अभिप्राय यह कि सबके लिये। जब उस ज्ञान से कोई लाभ नहीं उठा सकता तो वह कई प्रकार की उपलब्धियों से वंचित रह जाता है। ऐसा होना स्वाभाविक ही है।"

"परन्तु शूद्र के बेटे को शूद्र क्यों माना जाता है?"

"मानने की बात तो मूर्खता के कारण है; परन्तु कोई शूद्र बनता तो इस कारण ही है कि वह ज्ञान प्राप्त करने के अयोग्य होता है।"

"तो हिन्दू मूर्ख भी होते हैं?"

"हाँ, उतने ही, जितने कि कोलम्बस को मार डालने का यत्न करने वाले ईसाई पादरी थे।"

"यह बात गलत है।"

"और गलीलियो को फाँसी चढ़ाने के लिये मुकद्दमा करने वाले पादरी अथवा सेण्ट फरनैन्डिस को जीवित जला देने वाले लोग। इसी प्रकार जौन आॅफ आर्क को 'हरैटिक' घोषित करने वाले पादरी। और......।"

कमल ने बात बीच में ही टोक कर कहा, "कैटालीना इतिहास नहीं पढ़ी। यदि पढ़ी होती तो ह्यूगनोट्स और कैथॉलिक्स के परस्पर युद्धों के विषय में जानती होती।"

"मैं जानती हूँ। परन्तु वे तो कुछ 'फ्यूडल चीफ्स' ने स्वार्थ-वश कत्ल कराये थे।"

"ऐसे ही जैसे कि होल्कर और सिंधिया ने परस्पर लड़ कर हिन्दुस्तान को अंग्रेजों के पास बेच दिया था। देखो कैटालीना, मूर्ख सब देशों में और सब समुदायों में पैदा होते रहते हैं। उनके चलन को देख कर किसी काल, देश तथा जाति के विषय में अनुमान नहीं लगाया जा सकता और न ही किसी प्रकार का 'फतवा' दिया जा सकता है।

"सदा श्रेष्ठ लोगों के आचरण की ओर देखा जाना चाहिये। देखो, मैं बताता हूँ। कई सौ वर्ष पूर्व की बात है। बंगाल में एक चैतन्य महाप्रभु हुए थे। हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान पुरी के जगन्नाथ मन्दिर में भात वितरण किया जा रहा था। छोटी जातियों के लोगों को वह भोजन नहीं दिया जाता था। महाप्रभु को जब पता चला तो वे बिना खाये बैठे रहे। पूछने पर बता दिया कि जब तक सब समुदाय के लोगों को एक ही पंक्ति में बैठा कर खिलाया नहीं जाता, तब तक वे नहीं खायेंगे और भूखे रहेंगे।

"मन्दिर के मूर्ख पुजारी नहीं माने और महाप्रभु भूखे रह कर मरने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हो गये। परिणाम यह हुआ कि पण्डों को मानना पड़ा और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और उनसे भी इतर जातियों के घटक, एक पंक्ति में बैठा कर खिलाये गए। अब उस मन्दिर में सबको एक साथ भोजन दिया जाता है।

"जाति का मूल्यांकन इन महापुरुषों से लगाना चाहिये। मूर्ख, अनपढ़ और सर्वसाधारण से नहीं।"

"परन्तु ऐसे लोग ईसाइयों में भी हुए हैं।"

"यही तो मैं कहता हूँ कि किसी काल, देश तथा जाति का ज्ञान उसके महापुरुषों से लगाया जाता है; परन्तु किसी मज़हब का मूल्यांकन तो उसके सिद्धान्तों से ही लगाया जा सकता है। हिन्दू कोई मज़हब नहीं है। यह एक समुदाय और राष्ट्र है। इसमें कई मज़हब के लोग सम्मिलित हैं। जब मज़हबों की तुलना करेंगे तो हिन्दू-समाज के किसी एक मज़हब को ले सकते हैं। कारण यह कि हिन्दू-समाज में भी कई मज़हब हैं। उनमें भी कई अच्छे और कोई बुरे हैं। परन्तु हिन्दू-समाज का मूल्य उसके महापुरुषों के आचरण में है।"

"तो हिन्दू-समाज में कोई अच्छा मज़हब भी है?"

"हाँ; इसमें एक समुदाय है आर्य-समाज। यह मूर्ति-पूजा को उचित नहीं समझता। मांस-मछली, अण्डे, मुर्गी खाने के विरुद्ध है। छूत-अछूत के झगड़े नहीं मानता। सति-प्रथा को अपने मज़हब के विपरीत मानता है। विधवा-विवाह को अपने मज़हब के विपरीत नहीं मानता।

"यह मज़हब है, जो अपने मज़हबी विचारों को युक्ति की कसौटी पर लगा कर खरा सिद्ध करने का यत्न करता रहता है।

"इसके विपरीत हिन्दू-समाज में कुछ ऐसे भी मज़हब हैं, जो मज़हबी बातों में युक्ति करना अनुचित समझते हैं। वे श्रद्धा तथा निष्ठा पर विश्वास रखते हैं।"

"तो इन मज़हब वालों को आप हिन्दू-समुदाय से निकाल क्यों नहीं देते?"

"इसलिये कि हिन्दू कोई मज़हब नहीं है। यह मज़हब की बातों को परस्पर विचार-विनिमय से निर्णय करने के लिये कहता है और सबको हिन्दू-समुदाय में रहने को कहता है।"

"तो क्या कोई ईसाई भी हिन्दू हो सकता है?"

"हो सकता है। शर्त यह है कि हिन्दू-समाज के धर्म को माने।"

"और हिन्दू-समाज का धर्म क्या है?"

"विचार-स्वतन्त्रता; परन्तु समाज के परस्पर व्यवहार में यथा-योग्य व्यवहार रखना। जैसे जो हो, वैसा उसको पद देना। हमारे कुछ सनातन-धर्म हैं, उनको मानना।"

चाय तो समाप्त हो चुकी थी। एकाएक कमल ने जेब से घड़ी निकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर समय देखा और कैंटालीना से कहा, "डीयर ! मुझे अब क्लब जाना है।"

कैंटालीना उठ खड़ी हुई और सुवर्णा से जाने की स्वीकृति माँगने लगी।

: १० :

आनन्दस्वरूप के मुकद्दमे में सरकार ने अभी जवाब-दावा तैयार कर भेजा नहीं था। इस कारण एक महीने की तारीख पड़ गयी थी। नलिनी और उसका परिवार कमल की कोठी में टिका था।

जब प्रभा होटल में थी तो ज्ञानस्वरूप ने प्रभा से सहानुभूति प्रकट करते हुए, उसे बम्बई में घूमने-फिरने के लिये निमन्त्रण दिया था और प्रभा ने कह दिया था कि अपनी पत्नी को साथ ले आइये तो मैं चलूंगी।

इस पर ज्ञानस्वरूप समझ गया था कि वह उसके साथ अकेले जाने से डरती है। अतः उसने अगली बार मीनाक्षी को साथ लाने की बात कह दी। नलिनी भी उस समय वहाँ था और उसने भी यही ठीक समझा था कि उस विशेष परिस्थिति में जिसमें प्रभा है, ज्ञान को अपनी पत्नी को साथ लेकर मिलने आना चाहिये।

इसके पूर्व भी ज्ञानस्वरूप अपनी पत्नी को प्रभा से मिलने चलने को कह चुका था, परन्तु मीनाक्षी एक राज-द्रोही परिवार से सम्बन्ध बनाने में न केवल अरुचि रखती थी, वरन् उनसे घृणा भी करती थी। अतः वह इन्कार कर रही थी। इसके साथ ही मीनाक्षी ने अपनी माँ को भेज, प्रभा को सतर्क कर दिया। मीनाक्षी का तो यह कहना था कि प्रभा को उन पर कृपा करनी चाहिये और उसके पति से मेल-जोल नहीं रखनी चाहिये, परन्तु राजेश्वरी यह नहीं कह सकी कि मीनाक्षी राजनीतिक कारणों से उसका ज्ञानस्वरूस से पृथक् रहना ठीक समझती है। उसने इस बात को सामान्य स्तर पर लाकर कह दिया कि वह और मीनाक्षी, दोनों ज्ञानस्वरूप को एक ठीक चरित्र का व्यक्ति नहीं मानतीं। इस कारण उससे बहुत मेल-जोल नहीं रखना चाहिये। कम-से-कम एकान्त में तो उससे नहीं मिलना चाहिये। इसके उपरान्त ही प्रभा ने ज्ञान को अपनी पत्नी को साथ लेकर आने के लिये कहा था।

जब ज्ञान ने मीनाक्षी को आग्रहपूर्वक प्रभा से मिलने के लिये चलने को कहना आरम्भ कर दिया, तो मीनाक्षी को कुछ दाल में काला-काला समझ में आने लगा। जितना अधिक आग्रह ज्ञान करता, उतनी ही दृढ़ता से मीनाक्षी इन्कार करती।

दिन-पर-दिन व्यतीत होने लगे और ज्ञानस्वरूप नलिनी तथा प्रभा से मिलने नहीं जा सका। सप्ताह में एक बार उसे छुट्टी होती थी और मीनाक्षी अधिक दृढ़ता से प्रभा इत्यादि से मिलने जाने का विरोध करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन बात बढ़ गयी। उस समय राजेश्वरी उनके घर में आयी हुई थी। ज्ञान ने इसे सुअवसर जान, राजेश्वरी के सामने मीनाक्षी को कहा कि वह उसकी माँ से मिलने चले। मीनाक्षी ने यथावत् इन्कार किया। ज्ञान ने कहा, "मीनाक्षी! वे मेरी माँ हैं। तुम्हें उनका आदर करना चाहिये। उनसे सम्बन्ध बनाना चाहिये।"

राजेश्वरी ने ज्ञान का समर्थन किया। इस पर मीनाक्षी ने अपने मन का संशय वर्णन कर दिया। उसने कहा, "मुझे विश्वास हो गया है कि यह प्रभा से अनुचित सम्बन्ध बनाने के लिये मुझे सेतु बनाना चाहते हैं।"

मीनाक्षी के इस कथन पर ज्ञान को क्रोध चढ़ आया। उसने झट से एक चाँटा मीनाक्षी के मुख पर लगा दिया। इस पर तो मीनाक्षी छड़ी ले, ज्ञान को पीटने दौड़ी। ज्ञान घर से निकल गया।

राजेश्वरी ने कहा, "यह तुमने क्या किया है?

"मम्मी! यह मैंने किया है अथवा उसने किया है? मेरे कुछ करने से पहले ही वह कायरों की भाँति भाग गया है।"

"परन्तु यदि वह घर छोड़ गया तो क्या करोगी?"

"नहीं मम्मी! वह घर नहीं छोड़ेगा। सस्ते दामों पर मिली पत्नी को कोई नहीं छोड़ सकता।"

"और सस्ते दामों पर मिले पति को छोड़ सकती हो?" राजेश्वरी अपनी अवस्था का स्मरण कर रही थी। उसे स्मरण हो आया था, जब दास के सम्मुख किंचिन्मात्र उत्तेजना पर वह आत्म-समर्पण कर बैठी थी और पीछे भी जब उसका पति मद्य का सेवन कर उसे पीटा करता था तो कैसे पति-सुख के लोभ में उसका मारना-पीटना वह भूल जाया करती थी।

मीनाक्षी ने कह दिया, "मम्मी! तुम नहीं जानतीं और मैं इनके छिद्रों को जानती हूँ। इस कारण मैं कहती हूँ कि सायं होने से पूर्व वे घर लौट आयेंगे।"

ज्ञान घर से निकला तो उसके मन में विद्रोह उत्पन्न हो रहा था और वह वही बात करने चल पड़ा, जिससे मीनाक्षी मना करती थी। वह सीधा नलिनीकान्त के निवास-गृह पर जा पहुँचा।

कोठी के बाहर कमल की गाड़ी खड़ी थी। इससे वह समझ गया कि कमल इस परिवार से हेल-मेल बना रहा है। परन्तु जब वह भीतर पहुँचा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। उसने देखा कि उसकी माता प्रज्ञा और कमल की पत्नी कैटालीना घुल-घुल कर बातें कर रही हैं।

ज्ञान इन दोनों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये कुछ ऊँची आवाज़ में बोला, "गुड मॉर्निंग आण्टी।"

दोनों ने सिर उठाया और ज्ञान को देखा। प्रज्ञा ने पूछ लिया, "बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है ज्ञान !"

तदनन्तर प्रज्ञा ने कैंटालीना को सम्बोधन कर कहा, "कैंटालीना ! यह मेरा पुत्र ज्ञान है। यह अपनी पत्नी को लेकर हमें घुमाने ले जाने के लिये आया है।" प्रज्ञा ने ज्ञान की हँसी उड़ाने के लिये यह कहा था।

पूर्व इसके कि ज्ञानस्वरूप किसी प्रकार की अपने इतने दिन तक न आ सकने की सफाई दे, कैंटालीना ने पूछ लिया, "ज्ञान ! तुमने कभी बताया नहीं कि तुम्हारी माता जी जीवित हैं ?"

"आण्टी !" ज्ञान ने बात टलती देख उत्तर दिया, "मैं स्वयं नहीं जानता था कि ये जीवित हैं। कुछ मास हुए, मैं लाहौर गया था। वहीं इनसे भेंट हो गई। इन्होंने भी बताया कि ये हमारी कोठी में मालिक के रूप में रह चुकी हैं।"

"और आपको," कैंटालीना ने प्रज्ञा से पूछ लिया, "पहले कभी इस कोठी और बम्बई में देखा नहीं ?"

"इसका कारण तो कमल और राजेश्वरी को विदित है। वे ही बतायें तो ठीक रहेगा।"

प्रज्ञा ने बात बदल ज्ञान से पूछ लिया, "मीनाक्षी कहाँ है ?"

"वह नहीं आयी।"

"क्यों ?"

"वह बीमार है। उसे पागलपन का 'फिट' पड़ा करता है। पिछले दो वर्ष से नहीं पड़े थे। आज एकाएक उसको पुनः 'फिट' पड़ा, तो उसकी माँ को उसके पास छोड़ आया हूँ।"

"अच्छा। राजेश्वरी बहिन से पुनः मिलो तो उसको बता देना कि मैं आयी हुई हूँ। उससे मिलने को चित्त करता है। वह आये तो मीनाक्षी को भी साथ लेती आये। यहाँ डाक्टर से उसकी चिकित्सा हो सकेगी।"

"कौन डाक्टर है यहाँ ?"

"तुम उसे जानते तो हो। विजय की पत्नी ललिता है। एक समय तुमने उसके मकान को घेरा डाला हुआ था।"

"ओह ! उनके लाहौर में भी दर्शन हुए थे। तो क्या वे पुनः यहाँ चिकित्सा-कार्य करेंगी ?"

"यदि हम बम्बई में ही रहे तो वह यहाँ कार्य करेगी। हमने अभी निश्चय नहीं किया कि हम लाहौर में रहेंगे या मुवाली अथवा बम्बई में रहेंगे।"

"और अम्मा जी कहाँ हैं ?"

"हम कैंटालीना बहन के साथ इनकी गाड़ी में भ्रमण के लिये जा रही हैं। वह अपने कमरे में वस्त्र बदल रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो ठीक है। मैं बहुत ही उचित समय पर आया हूँ।"

"पर तुम तो अपनी पत्नी को साथ लेकर आने वाले थे?"

ज्ञान ने मुस्कराते हुए कहा, "माता जी! यह तब था, जब मैं प्रभा को घुमाने अपने साथ ले जाने वाला था। अब तो मैं आपके साथ जाना चाहता हूँ। वह पत्नी वाली शर्त व्यर्थ हो गयी है।"

इस पर तीनों हँसने लगे। इस समय प्रभा और सुवर्णा बाहर जाने योग्य वस्त्र पहन वहाँ आ गयीं। सबको हँसते हुए देख, प्रभा ने पूछ लिया, "बूआ जी! क्या रस ले रही हैं, अपने लड़के की बातों में?"

प्रज्ञा ने बता दिया, "ज्ञान कहता है कि जब यह प्रभा को घुमाने के लिये ले जाने वाला था तो शर्त मीनाक्षी को साथ लाने की थी। अब यह हमारे साथ घूमने के लिये चल रहा है। इस कारण अब वह शर्त नहीं रही।"

प्रभा ने पूछ लिया, "पर वह आयी क्यों नहीं?"

उत्तर प्रज्ञा ने ही दिया, "यह कहता है कि वह बीमार है। मैं इसे यह कह रही हूँ कि शर्त करने वाली प्रभा है और वह ही इस शर्त को रद्द कर सकती है।"

"पर मैं तो कुछ और विचार कर रही हूँ। हम सबको कहीं अन्यत्र घूमने जाने के स्थान, मीनाक्षी बहन का सुख-समाचार लेने के लिये इनके घर ही चलना चाहिये।"

"बात तो ठीक है। क्यों कैटालीना?"

कैटालीना ने अभी उत्तर नहीं दिया था कि नलिनी और ललिता आ गये।

"मौसा जी! आप कहाँ थे?" ज्ञान ने बात को मीनाक्षी पर से हटाने के लिये कह दिया।

नलिनीकान्त ने कहा, "मेहता साहब की लड़की बीमार थी। मैं ललिता के साथ उसे देखने गया था।"

इस पर सुवर्णा ने कहा, "ज्ञान की पत्नी भी बीमार है और हम सब विचार कर रहे हैं कि उसको देखने चला जाये।"

नलिनी ने कहा, "बात तो ठीक है और यदि ज्ञान कहे तो ललिता को भी साथ ले चलें। कदाचित् वह किसी प्रकार से सहायता कर सके।"

ज्ञान ने ललिता की ओर देख कह दिया, "हाँ, यदि ललिता जी चलें तो कुछ तो सहायता हो सकती है।"

ललिता ने तुरन्त इन्कार कर दिया, "मैं नहीं जा रही। मैं एक चिकित्सक के नाते बिना विशेष रूप से बुलाये, न जाने की सौगन्ध ले चुकी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनीकान्त मुस्करा रहा था। ललिता इतना कह अपने कमरे को चली गयी। उसके जाने के उपरान्त नलिनी ने बताया, "मेहता साहब की लड़की कई महीने से बीमार है। उन्होंने मुझे कल बताया तो मैंने ललिता की सेवाएँ उपस्थित कर दीं। इस पर मेहता जी ने कहा कि मैं आज ललिता को ले जाकर रोगी दिखा दूं। मैं आज इसे लेकर गया तो वहाँ लड़की को देखने के लिये 'मैडिकल बोर्ड' बैठा था, जिसमें दो लेडी डाक्टर भी थीं।

"हमें वहाँ एक पृथक् कमरे में बैठा दिया गया। ललिता को न तो बोर्ड में ले जाकर बैठाया गया और न ही बोर्ड के चले जाने के उपरान्त रोगी को उसे दिखाया गया।

"इसी कारण ललिता कह रही थी कि बिना बुलाये वह कहीं कभी नहीं जायेगी। मुझे भी अपनी भूल प्रतीत हो गई है। मैंने ललिता के सामने अपनी भूल स्वीकार की है। इसी कारण अब मैंने कहा था कि यदि ज्ञान कहे तो। ज्ञान ने कहा है, परन्तु ललिता को इतने मात्र से सन्तोष नहीं हुआ।"

प्रज्ञा ने कह दिया, "पर हम तो एक सम्बन्धी का सुख-समाचार लेने जा रहे थे।"

"ठीक है, परन्तु मेरे उसको चिकित्सक के रूप में सुझाव देने पर वह नाराज़ हो गयी है।"

ज्ञान नहीं चाहता था कि कोई भी मीनाक्षी का समाचार लेने उसके घर जाये, परन्तु कैटालीना ने सबको तैयार कर दिया। विवश ज्ञान को भी साथ चलना पड़ा।

एक और गाड़ी भाड़े की मँगवायी गयी और सवारियाँ दो गाड़ियों पर सवार हो, ज्ञान के घर जा पहुंचीं।

: ११ :

जब ये लोग ज्ञान के घर पहुंचे तो मीनाक्षी और राजेश्वरी वहाँ नहीं थीं। रॉबर्ट बैरा ने बताया कि मेम साहब और उनकी मम्मी कहीं गयी हैं। इस समाचार को सुन, प्रभा की बरबस हँसी निकल गयी। नलिनी प्रभा के हँसने का आशय समझ, मुस्करा रहा था।

सब ड्रायंग-रूम में जा पहुंचे। हँसते हुए बैठते-बैठते प्रभा ने कह दिया, "मैं ऐसी ही आशा कर रही थी।"

"क्या आशा कर रही थी ?" सुवर्णा ने पूछ लिया।

"यही कि भाई साहब हमारे सामने झूठ बोल रहे हैं कि भाभी बीमार हैं। इसी कारण इनके मन में हमें यहाँ लाने के लिये उत्साह नहीं था।"

"पर मैंने झूठ नहीं बोला! माता जी साक्षी हैं कि मैंने कहा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनाक्षी को पागलपन के 'फिट' पड़ते हैं। विवाहित जीवन के आरम्भ में भी यह फिट पड़ा करता था। अब दो वर्ष से शान्ति थी, परन्तु आज पुनः वही पागलपन का फिट पड़ा है। यह बात सर्वथा सत्य है। वह आज छड़ी ले, मुझे पीटने वाली थी। यदि मैं यहाँ से भाग न जाता तो अवश्य पीटा जाता।"

इस पर सब पुनः हँसने लगे। नलिनी ने हँसते हुए पूछा, "पर तुम भी तो पीट सकते थे। मैं समझता हूँ कि वह तुमसे बलशाली तो होगी नहीं। मैंने उसे देखा नहीं। क्यों प्रज्ञा, कैसी है तुम्हारी पतोहू ?"

प्रज्ञा भी हँस रही थी। प्रश्न पूछे जाने पर वह गम्भीर हो बोली, "है तो हरी मिर्ची। क्रोध की मूर्ति ही वह है। उससे डाँट खा चुकी हूँ।"

"बहन ! तुमने यह बताया नहीं। अन्यथा हम इस प्रकार दल-बल सहित आते नहीं।"

"पर मैं तो सब-कुछ जानते हुए और ज्ञान से उसके पागलपन के फिट की बात सुनकर उसे समझते हुए भी यहाँ आना चाहती थी। मैं अपने और आप सबके यहाँ आने में ज्ञान और फिर उसके भी कल्याण की आशा करती हूँ।"

अब प्रज्ञा ने ज्ञान को कहा, "बैरा को कहो कि सबके लिये चाय तैयार करवा दे और कुछ खाने के लिये भी बनवा दे।"

ज्ञान बाहर गया तो सुवर्णा ने कहा, "कहीं मीनाक्षी इस समय आ जाये तो हम सबको यहाँ मज़े में खाते-पीते देख, आग-बबूला हो जायेगी।"

"भाभी ! मैं चाहती हूँ कि उसकी सब 'स्टीम' निकल जानी चाहिये। कदाचित् एक-आध बार और आना पड़े। आखिर कब तक नाराज़ होती रहेगी।"

ज्ञान बैरा को चाय इत्यादि तैयार करने के लिये कह कर लौटा तो प्रज्ञा ने पूछ लिया, "क्यों ज्ञान ! क्या विचार है ? हम विचार कर रहे हैं कि प्रति सप्ताह रविवार के दिन हम सब यहाँ चाय पीने आ जाया करें।"

"बात तो ठीक है, परन्तु उसके पागलपन के दौरे बढ़ भी सकते हैं।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा। मैं समझती हूँ कि वह पागल नहीं है। केवल स्वभाव की कड़ुवी है और उसे ठीक करना ही चाहिये।"

"माता जी ! आपका परीक्षण करने योग्य है। वह यदि 'टेम'[१] हो जाये तो मैं बहुत प्रसन्न हूँगा और आप सबका धन्यवाद ही करूँगा।"

कैंटालीना ने कहा, "एक बात का ध्यान रखना चाहिये। कहीं बहुत अधिक मोड़ने पर छड़ी टूट न जाये।"

नलिनी ने कहा, "बीच-बीच में छड़ी पर तेल लगाते रहे तो वह टूटेगी नहीं।"

---

१. पालतू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रज्ञा ने ज्ञान से पूछ लिया, "ज्ञान ! अब कितना वेतन पाते हो ?"

"सात सौ रुपया।"

"तब तो छड़ी को तेल लगाने की सामर्थ्य तुममें है।"

"रुपये की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मैं समझता हूँ कि मामा जी का यह अभिप्राय है भी नहीं।"

"मेरा अभिप्राय है कि जहाँ हमारे व्यवहार का प्रभाव पड़ना चाहिये, वहाँ ज्ञान का भी काम है कि वह उसके साथ प्रेम-पूर्वक व्यवहार रखे। स्त्री प्रेम की भूखी होती है।"

"पर मामा जी ! मेरे प्रेम का यहाँ गलत अर्थ लिया जाता है। वह समझती है कि मुझे सस्ती औरत मिली हुई है, इस विचार से उसका दिमाग और भी खराब होता जाता है।"

प्रज्ञा के अतिरिक्त अन्य सब इसे हँसी का विषय मान, पूर्ण बात को व्यंग में बदल रहे थे। प्रज्ञा ने गम्भीर भाव बना कहा, "ज्ञान ! औरत तो पत्नी होने से बहुत-कुछ अधिक होती है। वह पति की अर्द्धांगिनी है; अभिप्राय यह कि तुम्हारे प्रत्येक काम में आधे की भागीदार है।"

अब तो ज्ञान मुस्कराया और कहने लगा, "माता जी ! तब तो झगड़ा और भी बढ़ जायेगा। यदि जो कुछ मेरे साथ बीतती है, उसमें से आधा वह बाँट ले, तब मैं एक क्षण भी यहाँ न रह सकूँगा। इसका अर्थ यह होता है कि वह मुझ पर एक छड़ी का वार करे तो मैं भी उसको छड़ी से पीट दूँ।"

"तो तुमने उसे कभी नहीं पीटा ? यह हो नहीं सकता कि कोई भी स्त्री बिना पहले पीटे जाने के, पति को पीटना आरम्भ कर दे।"

इस पर ज्ञान प्रज्ञा का मुख देखता रह गया। इस समय रॉबर्ट चाय का सामान सबके सामने लगाने आ गया और सब चुप कर गये।

सब चाय लेने लगे। चाय के साथ मिठाई भी थी। प्रभा ने ज्ञानस्वरूप से पूछा, "भैया ! यह मिठाई भाभी से चोरी खिला रहे हो ?"

"हाँ, प्रभा जी ! यह मैं इस विचार से आज सुबह लाया था कि आप सबको घुमाता हुआ यहाँ ले आऊँगा और फिर चाय यहाँ पिलाऊँगा। यह आपकी भाभी से चोरी ही लाया था और चोरी ही खिला रहा हूँ।"

सब हँसने लगे। इस समय राजेश्वरी, मीनाक्षी और मीनाक्षी के दोनों लड़के, आ पहुँचे। कोठी के बाहर गाड़ी के आने की आवाज़ सुन, ज्ञान ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि वह आ गयी है।"

इस पर हँसी बन्द हो गयी और सब द्वार की ओर देखने लगे। सबसे पहले बच्चे भीतर आये। ज्ञान ने उन्हें अपने पास बुला लिया और कहा, "आओ जौन और मौनी ! इधर आ जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे ज्ञान के पास आ ही रहे थे कि राजेश्वरी और मीनाक्षी ड्रायंग-रूम में आ गयीं। मीनाक्षी इन सबको बैठे और खाते देख, आग-बबूला हो गयी। बात राजेश्वरी ने सम्भाल ली। उसने मीनाक्षी को कहा, "इधर आओ मीनाक्षी! यह देखो, तुम्हारी सास के भाई ज्ञानस्वरूप के मामा हैं।"

पूर्व इसके कि मीनाक्षी कुछ उत्तर देती, राजेश्वरी ने रॉबर्ट को आवाज दे दी। उसने कहा, "रॉबर्ट! हमारे लिये भी चाय ले आओ।"

प्रज्ञा ने भी मीनाक्षी की ओर ध्यान न देते हुए राजेश्वरी को अपने समीप बैठाकर कहा, "लड़की को भी यहाँ बैठा लो।" उसने अपने सामने रखी एक कुर्सी की ओर संकेत कर दिया।

राजेश्वरी ने मीनाक्षी को बाँह से पकड़ कर उसे प्रज्ञा के समीप बैठाया और स्वयं वह दूसरी ओर कुर्सी पर बैठ गयी। बैठते ही उसने मीनाक्षी को कहा, "तुमने ज्ञान की माता जी का अभिवादन नहीं किया।"

"मैं……।" मीनाक्षी कुछ कहने वाली थी, परन्तु राजेश्वरी ने कह दिया, "हिन्दुओं की भाँति अपनी सास के पाँव नहीं छूने तो न सही। मुख से तो मुस्करा कर 'वैलकम' कर दो।"

प्रज्ञा ने मीनाक्षी की कमर में हाथ डाल, समीप घसीटते हुए कहा, "डरो नहीं बेटी! मैं भी तुम्हारी भाँति ही इस घर में सुख-दुःख भोगती हुई रह चुकी हूँ। यह हम स्त्रियों की खूबी है कि हम भविष्य की ओर ही ध्यान रखती हैं। वर्त्तमान और भूत को छोड़, हम आगे की ही बात के विषय में विचार करती हैं।"

"माता जी!" ज्ञान ने बात बदलने के लिये कह दिया, "आप इसे कुछ दिन अपने घर चल कर रहने का निमन्त्रण दे दें तो यह प्रसन्न हो जायेगी।"

"पर मैं तो इसे पूर्ण जीवन-भर अपने घर में रहने का निमन्त्रण दे चुकी हूँ और इसने स्वीकार भी कर लिया है।"

मीनाक्षी यह निमन्त्रण की बात समझी नहीं। सुवर्णा ने बात स्पष्ट करने के लिये पूछ लिया, "प्रज्ञा बहन! ज्ञान को भी तो इसके साथ ही रखो न?"

"यह तो रखा ही हुआ है। देखो बेटी मीनाक्षी! मेरा आशीर्वाद है कि तुम पुत्र-पौत्रों का सुख भोगती हुई, ज्ञान के साथ इस घर में आनन्दपूर्वक रहो।"

"पर मैं इनके साथ नहीं रह सकती।"

"क्यों? क्या किया है इसने?"

"यह मुख पर चपत लगाने लगते हैं। मेरी गाल अभी भी दर्द कर रही है।"

"अरे! ज्ञान, इधर आओ तो।"

ज्ञान सुन रहा था। उसने अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माता जी ! यह हमारा प्राइवेट मामला है। यह जब कभी आप रात यहाँ रहेंगी तो बताऊँगा।"

"परन्तु तुमने मुझे यहाँ रहने का निमन्त्रण तो अभी दिया ही नहीं ?"

"उसी के लिये तो मैं मीनाक्षी को साथ ले जाना चाहता था। इसने जाने से इन्कार कर दिया था।"

"और मैं यहाँ स्वयं ही आ गयी। मीनाक्षी है बहुत चतुर। इसने जाने के कष्ट से बचने के लिये मुझे स्वयं ही आने पर विवश कर दिया है। अब तो मैं आ ही गयी हूँ।"

"और अब यहीं रह जाइये। एक बार मैंने लाहौर में भी निमन्त्रण दिया था और आपने आने का वचन भी दिया था।"

"तो आ गयी हूँ न। परन्तु यहाँ रहूँगी मीनाक्षी के कहने पर।"

नलिनीकान्त ने बात बदलने के लिये ज्ञान से कहा, "ज्ञान ! पुलिस की नौकरी छोड़ने पर कितनी हानि हुई है तुम्हारी ?"

"हानि ? नहीं मामा जी ! हानि नहीं, लाभ हुआ है। परन्तु यह लाभ तो कमल मामा जी की कृपा के कारण हुआ है।"

"वेतन में कितनी वृद्धि हुई है ?"

"पहले अस्सी रुपये वेतन मिलता था और कुछ ऊपर से भी आय हो जाती थी, परन्तु सब मिल-मिलाकर वर्ष में ढाई-तीन हज़ार से अधिक कभी नहीं हुई। अब सात सौ वेतन मिलता है और अब मिल की बिक्री-विभाग का चार्ज मिलने वाला है। बाहर जाने-आने का खर्चा और भत्ता भी मिला करेगा। इससे और कुछ नहीं तो खर्चे में बचत तो होगी।"

"और इस बढ़ी आय में से मीनाक्षी को कितना दे रहे हो ?"

"सब-कुछ इसी को दे देता हूँ और अपने जेब-खर्च के लिये भी इसी से माँग कर लेता हूँ।"

इस पर सुवर्णा ने पूछ लिया, "और यह मिठाई भी इसी से माँग कर लाये हो ?" उसने सबके सामने रखी मिठाई की ओर संकेत कर दिया।

मीनाक्षी को कुछ यह समझ में आया कि उसकी सास इस घर में रहने आ रही है। इस पर वह अपने पति के साथ अकेले रहने की सुविधा का विचार करने लगी थी। उसमें कमी हो जाने की सम्भावना थी और फिर वह मन-ही-मन विचार करने लगी थी कि वह किस प्रकार अपनी सास को अपने जीवन में स्थान देगी।

चाय समाप्त हो चुकी थी। अब कैंटालीना ने कहा, "यदि ज्ञान ने झूठ न बोला होता कि उसकी पत्नी एकाएक बीमार हो गयी है तो हमें आज इस चाय-पार्टी का सौभाग्य न मिलता। मैं तो आप सबको घुमा-फिरा कर अपने घर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय के लिये ले जाने वाली थी।"

"तो इसके लिये हमें ज्ञान को झूठ बोलने की बधाई देनी चाहिये।"

"पर मौसी! मैंने झूठ बोला नहीं। मैंने बताया भी है कि बीमारी किस प्रकार की है। इस पर भी मैं आप सबका धन्यवाद ही करूँगा। आपने मीनाक्षी की चिकित्सा में कुछ सहयोग दिया ही है। शेष मैं इसे डाक्टर ललिता जी को भी दिखाऊँगा।"

: १२ :

प्रज्ञा उस रात ज्ञान के घर में ही रह गयी। राजेश्वरी सबके विदा हो जाने के उपरान्त, अपने घर चली गयी थी। पीछे प्रज्ञा अपने पोतों से परिचय बढ़ाने के लिये उनसे बातें करने लगी। वह उन दोनों को ड्रायंग-रूम में अपने समीप बैठा पूछने लगी, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"जौनी दास।" बड़े ने कहा।

"यह तो कोई नाम नहीं है। इसके कुछ अर्थ नहीं हैं।"

"पर मेरा तो यही नाम है। पापा और मम्मी यही कहते हैं।"

"नहीं, यह ठीक नहीं है। यह नाम तो तुम्हें बुलाने के लिये सुगमता के विचार से रखा गया है।"

ज्ञानस्वरूप और मीनाक्षी प्रज्ञा के उनके जीवन में प्रवेश करने के विषय में विचार करते हुए समीप ही बैठे थे। अपने चित्त को उन विचारों से बाहर करने के लिये ज्ञान ने ध्यान बच्चों की ओर कर लिया और नाम के विषय में बच्चों को उचित उत्तर न देते देख कहने लगा, "इसका नाम जौन है। इसकी माँ लाड़ से इसे 'जौनी' बुलाती है।"

"मैं तो इसका नाम जीवन रख रही हूँ।"

"आप मेरा नाम क्यों रखती हैं?" जौन ने पूछ लिया।

"इसलिये कि मैं तुम्हारी 'ग्रैण्ड मम्मी' हूँ।"

"हमारी 'ग्रैण्ड मदर' तो अपने घर चली गयी हैं।"

"मैं दूसरी ग्रैण्ड मदर हूँ। हर एक बच्चे की दो ग्रैण्ड मदर होती हैं।"

"मम्मी! यह ठीक है क्या?"

"क्या ठीक है?" मीनाक्षी अभी भी अपने विचारों में लीन बैठी थी। दादी की बच्चों से बात सुन नहीं रही थी।

"यह कहती हैं कि बच्चों की दो ग्रैण्ड मदर होती हैं।"

"हाँ, होती हैं। देखो, तुम्हारी मैं मम्मी हूँ और मेरी मम्मी तुम्हारी ग्रैण्ड मदर हैं। तुम्हारे पापा हैं और ये उनकी मम्मी होने से तुम्हारी दूसरी ग्रैण्ड मदर हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम्हारी ग्रैण्ड मदर कहाँ हैं ?"

"वह भी हैं। तुम्हारे पापा की ग्रैण्ड मदर नहीं हैं। वह चली गयी हैं।"

"कहाँ ?"

"हैवन[1] में।"

"तो पापा भी हैवन में जायेंगे ?"

"हम सब जायेंगे। प्रभु यीशु मसीह का हाथ पकड़ेंगे तो सब 'हैवन' में जायेंगे।"

"पर मैं तो नहीं जाऊँगा।"

"क्यों ? वहाँ बहुत बढ़िया मिठाइयाँ खाने को और सुन्दर वस्त्र पहनने को मिलते हैं।"

"इस पर भी नहीं जाऊँगा। मैं तो अपनी 'ग्रैण्डी' के साथ रहूँगा।"

ज्ञान ने बात बदल दी। उसने कहा, "माता जी ! अब आप यहीं रहें तो ठीक नहीं क्या ?"

"मीनाक्षी ने तो एक बार भी यहाँ रहने को नहीं कहा।"

अब मीनाक्षी ने कह दिया, "मुझे आपसे डर लग रहा था। अब वह डर कम तो हुआ है, परन्तु बिलकुल नहीं गया।"

"क्या डर है, जो अभी भी लग रहा है ?"

"आपके भाई के लड़के 'रैवोल्यूशनरी'[2] हैं। मैं उनके सम्पर्क से डरती थी। मेरा मतलब है आपके भाई के सम्पर्क से।"

"पर 'रैवोल्यूशनरी' तो मैं भी हूँ।"

"सत्य ? तो आप भी बम्ब इत्यादि बनाती और चलाती हैं ?"

"पर मीनाक्षी ! यह तुमको किसने बताया है कि बम्ब इत्यादि बनाना 'रैवोल्यूशन' है। रैवोल्यूशन तो विचारों से सम्बन्ध रखने वाली बात है। जब किसी के विचार, एकाएक और सर्वथा बदलें तो वह 'रैवोल्यूशन' कहलाता है। बम्ब, पिस्तौल तो उनके पास भी हैं जो 'रैवोल्यूशनरी' नहीं; जो एक स्थान पर खड़े हैं अथवा बहुत धीमी गति से चलते हैं।

"देखो मीनाक्षी। एक शब्द है 'रिऐक्शनरी'। हम इसे प्रतिक्रियावादी कहते हैं। यदि यह प्रतिक्रिया भी एकाएक और बहुत अधिक हो तो यह भी 'रैवोल्यूशन' ही कहलाती है। ऐसा करने वालों के हाथ में भी बम्ब, पिस्तौल, हो सकते हैं।

"इस कारण बम्ब, पिस्तौल इत्यादि तो किसी अन्य बात के लक्षण हैं। ये 'रैवोल्यूशन' अथवा 'रिऐक्शन' के लक्षण नहीं होते।"

"तो वे किस बात के लक्षण हैं ?"

---

१. स्वर्ग; २. क्रान्तिकारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ये मूर्खता के अथवा मूर्खता का मूर्खता से विरोध करने के लक्षण हैं। देखो, मैं समझाती हूँ। अंग्रेज़ ने अपने हाथ में बन्दूक ले, जनता को लूटना आरम्भ किया है। इस लूट को मैं प्रतिक्रिया कहती हूँ। कारण यह कि यह उचित क्रिया के विरुद्ध है। हम चाहते हैं कि यह लूट बन्द हो। यह क्रिया की ठीक दिशा नहीं है। अब इस क्रिया करने वालों में दो प्रकार के लोग हैं। एक वे हैं, जो क्रिया को धीरे-धीरे चलाना चाहते हैं। दूसरे, इसे तुरन्त सम्पन्न करना चाहते हैं। प्रथम क्रियावादी नरम दल के होंगे और दूसरे, क्रान्तिकारी। मेरा मतलब है कि 'रैवोल्यूशनरी'।

"इन तीनों के हाथ में बम्ब, पिस्तौल हैं। प्रतिक्रियावादी अंग्रेज ने तो राज्य ही बम्ब, पिस्तौल से लिया है। शेष हैं क्रियावादी। इनमें से एक तो वे हैं जो धीरे-धीरे चलने के लिये कहते हैं। ये स्वयं बन्दूक, पिस्तौल नहीं रखते। न ही चलाना जानते हैं, परन्तु सरकार की बन्दूक अपने कन्धे पर रख कर चलवा रहे हैं। यह बन्दूक चल रही है क्रान्ति के विचार वालों पर। वे ही यथा-सम्भव अपनी रक्षा के लिये अपने विचार के लोगों को बन्दूक, पिस्तौल चलाते देख, उनको मना नहीं करते।"

"कुछ समझी हो मीनाक्षी ?" ज्ञान ने पूछ लिया।

"नहीं; मुझे राजनीति से ही घृणा है। मैं इसकी बात समझ नहीं सकती।"

"ठीक है।" प्रज्ञा ने कहा, "तो तुम्हें एक बुद्धिमान स्त्री की भाँति उस विषय पर कभी चर्चा नहीं करनी चाहिये, जिसको तुम समझती नहीं हो।

"सरकार एक राजनीतिक संगठन है। इसने देश का राज्य तोप, बन्दूक के बल पर प्राप्त किया है। इस कारण जिन्होंने राजनीति की बात नहीं करनी, उन्हें सरकार की बात भी नहीं करनी चाहिये।"

"पर," मीनाक्षी ने अपने पति की बात से असन्तुष्ट हो कह दिया, "एक समय आप भी तो सरकारी नौकरी करते थे ?"

"हाँ; परन्तु जब मुझे पता चला कि सरकार ने बल तथा छल से राज्य स्थापित कर रखा है तो मैं नौकरी छोड़, पृथक् हो गया हूँ। तुम भी अब एक राज्य-कर्मचारी की पत्नी न रह कर एक स्वतन्त्र नागरिक की पत्नी बन गयी हो। मैंने भी राजनीति छोड़ दी है और तुम भी इसे छोड़ दो।

"मैं सरकार का हुक्म मानता हूँ, मैं नरम दल के मेहता साहब से मिलता हूँ, तो भला बताओ, मैं गरम दल के नलिनीकान्त से क्यों नहीं मिल सकता ? मैं अब इनमें से किसी की भी राजनीति में हिस्सा नहीं लेता। तुम भी सबसे मिलो और किसी की राजनीति में हिस्सा मत लो।"

मीनाक्षी अभी भी इस व्यवहार के औचित्य को नहीं समझी थी। उसने कह दिया, "परन्तु मैं क्रान्तिकारियों से सम्पर्क रखकर सरकार के क्रोध का भाजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न बनना चाहती हूँ और न आपको बनने देना चाहती हूँ।"

"परन्तु मैं स्वयं न तो कोई पिस्तौल चलाता हूँ और न ही बम्ब। मैं सरकार के समर्थकों से मिलता हूँ तो उसके विरोधियों से भी मिलता हूँ। यदि इस पर भी सरकार मुझे कष्ट देगी तो यह मुझ से अन्याय हो जायेगा।"

मीनाक्षी की मोटी बुद्धि में बात आने लगी थी। वास्तव में वह भयभीत थी। दुःख और कष्ट को न सह सकने तथा पति के कैद होने का भय था। प्रज्ञा ने मीनाक्षी की मानसिक अवस्था को ठीक प्रकार समझ कर कह दिया, "ज्ञान! आज के लिये इतना ही पाठ पर्याप्त है। इसे समझने दो। साथ ही इसके डर का आधार मिथ्या है। उस मिथ्या आधार का ज्ञान इसको कराना चाहिये। शेष तो स्वयमेव ठीक हो जायेगा।"

"क्या मिथ्या आधार है ?" मीनाक्षी ने पूछ लिया।

"तुम डरती इस कारण हो कि तुम यह नहीं जानतीं कि मनुष्य की आत्मा मनुष्य के मरने के उपरान्त पुन: जन्म में ही आती है। यह न तो कयामत तक कब्र में पड़ी सड़ती रहती है और न ही यह खुदा का हिस्सा है, जो खुदा में जाकर मिल जाती है।

"जन्म-मरण तो वस्त्र बदलने के समान, एक शरीर से दूसरे शरीर में अपने कर्मों के फल से जाना है। तुम्हें डर इसलिये लग रहा है कि तुमको पता नहीं कि सत्य और न्याय के पथ पर चलने वाले अच्छे जन्म को प्राप्त होते हैं। स्वर्ग अथवा नरक अच्छे अथवा बुरे कर्मों से मिलता है, न कि किसी गुरु, पीर, पैगम्बर की सिफारिश से।"

मीनाक्षी इस 'फिलासोफी' को सुन, मौन हो गयी। उसने इस विषय पर बहुत बातें सुनी थीं, परन्तु उसे संसार में न तो कहीं कोई न्यायकर्त्ता दिखायी देता था और न ही कहीं न्याय। इस लोक में भी सिफारिश से काम चलता था और वह समझती थी कि अच्छी और बुरी अवस्था हज़रत प्रभु यीशु मसीह की सिफारिश से ही मिलती है। जहाँ ईसाई राज्य है, वहाँ हज़रत यीशु मसीह की सिफारिश से ही अनपढ़, मूर्ख ईसाई प्रत्येक प्रकार की सुविधा प्राप्त करते देखे जाते हैं। मैट्रिक पास स्टेशन मास्टर हैं, मिडिल पास टिकट-चैकर हैं अथवा गन्दे कपड़ों में अनपढ़ ईसाई भी युरोपियनों के लिये रिज़र्व रेल के डिब्बों में बैठ, यात्रा कर सकते हैं। ईसाई बनते ही, हज़रत यीशु मसीह की सिफारिश से उनकी उन्नति का मार्ग खुल जाता है।

मीनाक्षी को चुप देख, ज्ञानस्वरूप ने पूछ लिया, "क्यों मीनाक्षी! अब तो मामा जी के घर में चल सकोगी ?"

"पर वहाँ जाने में मेरी एक और आपत्ति भी तो है।"

"वह क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप वहाँ की किसी लड़की के मोह-जाल में फँसे हुए हैं।"

"यह झूठ है।" ज्ञान ने कुछ रोष में कहा।

"देखिये माता जी!" मीनाक्षी ने प्रभा को अपने पक्ष में करने के लिये माता जी कह कर पुकारा, "यह रात को सोये-सोये किसी प्रभा का नाम बड़-बड़ाया करते हैं। मैं जानती हूँ कि आपके भाई के परिवार में एक प्रभा नाम की औरत है। इस कारण इनका वहाँ जाना ठीक नहीं है।"

"परन्तु मीनाक्षी! तुमने अपनी मम्मी को कह कर प्रभा को सचेत तो कर दिया है। इस पर भी यदि वह इससे मेल-जोल रखना चाहती हो तो तुम क्या कर सकोगी? इस अवस्था में भी क्या यह ठीक नहीं कि इनमें हेल-मेल तुम्हारे सामने हुआ करे? तुम साथ नहीं जाओगी तो यह तुमसे पृथक् जायेगा और फिर वह प्रभा होगी अथवा कोई अन्य होगी, जान भी नहीं सकोगी।

"मैंने अपने जीवन-काल में एक भारी भूल की थी। वह यह कि ज्ञान और इसके भाई को, अपनी एक भावना के अधीन छोड़, चली गयी थी। अब मैं इस मूढ़-मति को देखती हूँ तो अपने किये पर पश्चात्ताप करती हूँ। यह अति प्रतिभा-वान बालक था और अब इतना भी नहीं जानता कि पत्नी को कैसे एक सरल-सी बात भी समझा सके।"

"वाह माता जी! अब मुझे ही बुरा बना दिया है। मैं सत्य-हृदय से कहता हूँ कि मेरे मन में प्रभा के लिये सहानुभूति के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। मैंने उसके पति को फँसाने के लिये भाग-दौड़ की है और इसी का प्रायश्चित्त करने के लिये मैंने नौकरी छोड़ी है और अब मैं जीवन में उसकी सहायता करने का विचार किया करता हूँ।"

"ज्ञान!" प्रज्ञा ने कहा, "यह ठीक है; परन्तु तुम्हारी सहानुभूति और सहायता तुम्हारी पत्नी के द्वारा ही होनी चाहिये। तुम्हें इसे समझाना चाहिये था और इसके मन में उसके लिये सहानुभूति उत्पन्न कर, उसके पास ले जाना चाहिये था।"

"पर माता जी! यह तो अन्य लड़कियों से भी हेल-मेल बनाये रखते हैं।"

ज्ञान मुस्कराता हुआ मीनाक्षी का मुख देखता रहा। प्रज्ञा ने कह दिया, "वह सब भी बता दो। आज सारी बात बता दो, जिससे कि पूर्ण समस्या का एक ही सुझाव हो सके।"

"पर मैं बताऊँगी तो मुझे रात को पीटेंगे।"

"तो तुम भी छड़ी उठा लेना। मैंने तुमको बताया है कि यदि कोई हठ-पूर्वक बल प्रयोग करे तो दूसरा भी बल का प्रयोग कर सकता है। यही तो सरकार और क्रान्तिकारियों का झगड़ा है। यदि सरकार उनके साथ गोलमेज़ पर बैठकर बातचीत करती तो फिर दूसरे बम्ब, पिस्तौल उठाते ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु मैं तो इनकी तुलना में बहुत दुर्बल हूँ ।"

"दुर्बलों को सदा परमात्मा की सहायता उपलब्ध होती रहती है। परमात्मा की ओर से उनके सहायक बन जाते हैं। शर्त यह है कि उनको अपने पक्ष की सत्यता पर विश्वास हो और उनके हृदय में साहस तथा धैर्य हों।"

"तब ठीक है। देखो," उसने अपने पति की ओर देखकर कहा, "अब आपने बातों-ही-बातों में चपत लगायी तो मैं छड़ी से पीटूँगी और यदि इस पर भी आप नहीं मानेंगे तो माता जी मेरी सहायता करेंगी।"

"और मेरी क्यों नहीं ?"

"इस कारण कि मैं सत्य बात कहूँगी और चित्त में साहस तथा धैर्य बनाये रखूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

कांग्रेस में विवाद दो विचारधाराओं का था। एक विचारधारा के लोग उपज थे मैकॉले की शिक्षा-पद्धति के। ये लोग मानते थे कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य ईश्वरीय देन है; इंगलैण्ड की प्रत्येक बात अनुकरणीय है; जीवन में सुख-भोग ही मनुष्य के प्रत्येक क्रिया-कलाप में कारण है; हिन्दुस्तान में मुसलमान एक भयंकर जीव है और उसको नियन्त्रण में रखने की सामर्थ्य अंग्रेज़ में ही है। इस विचारधारा के प्रमुख उपासक थे श्री दादा भाई नारोजी, श्री गोपालकृष्ण गोखले, श्री फिरोज़शाह मेहता, श्री सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी। पंजाब में भी कुछ लोग इसी विचारधारा के मानने वाले थे। इनमें कुछ प्रमुख थे लाला हरकृष्णलाल, सरदार दयालसिंह, बख़्शी सोहनलाल। कुछ ऐसे भी थे जो इसे गलत मानते थे, परन्तु इस पक्ष में इस कारण सम्मिलित थे, क्योंकि दूसरे पक्ष वालों के विपरीत सरकार की दमन-नीति चल रही थी। इनमें प्रायः आर्य-समाज में सम्मिलित क्लर्क, सरकारी अधिकारी, वकील, बैरिस्टर और डाक्टर लोग थे। ये अपने को नरम दल के कहकर अपनी जान छुड़ाते थे।

देश में एक दूसरी विचारधारा भी थी। वह यह कि देश में राज्य देश के रहने वालों का होना चाहिये। यदि राज्य और अन्य अधिकार बातचीत से न प्राप्त हो सकें, तो बलपूर्वक भी वे लिये जा सकते हैं। बल का विरोध बल से, हिंसा का विरोध हिंसा से और मीठी बातों का उत्तर बातों से हो सकता है। इस विचार-धारा के लोग यह मानते थे कि सांस्कृतिक मान्यताएँ देश की जनता में ऐक्य उत्पन्न करने के लिये प्रबल साधन हैं। देश में हिन्दू बहु-संख्या में हैं और उनकी संस्कृति ही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। इस विचारधारा के लोग यह भी मानते थे कि यूरोप वालों की जीवन-मीमांसा बहुत ही घटिया है। उसको स्वीकार करने से देश में कल्याण होने की सम्भावना नहीं है। ये मानते थे कि यूरोप की राजनीतिक गतिविधियाँ संसार में शान्ति और व्यवस्था उत्पन्न नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकतीं। ये लोग सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था हिन्दुस्तानी ढंग की चाहते थे। ये जानते थे कि हिन्दुस्तान में चार-पाँच करोड़ मुसलमान उपस्थित हैं, परन्तु ये विदेशीय नहीं हैं। इनको कई प्रकार के प्रलोभन देकर, भय दिखाकर तथा छल-कपट से विवश कर मुसलमान बनाया गया है। इस विवशता में हिन्दुओं की अपने ही मतावलम्बियों के प्रति अवहेलना और तिरस्कार भी कारण था। देश का यह जागरूक जन-मानस मुसलमानों से भयभीत नहीं था। वह समझता था कि जिन बातों से विवश होकर देश का इतना बड़ा जन-समूह मुसलमान हुआ है, उन्हीं बातों को उलट देने से वह पुनः हिन्दू जन-समूह में लौट आयेगा। अतः जहाँ ये लोग मुसलमानों को पुनः अपने में लेने के लिये हिन्दुओं को राज़ी कर रहे थे, वहाँ हिन्दुओं को मुसलमानों और अंग्रेज़ों से निर्भय होने की भी बात कहते थे। इसके साथ ही वे देश में जिस किसी प्रकार से भी हो, स्वराज्य शीघ्रातिशीघ्र लेने के लिये यत्नशील थे। इस विचार के लोगों में प्रमुख थे श्री अरविन्द घोष, श्री बिपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय, श्रीमती ऐनिबिसैंण्ट, बाल गंगाधर तिलक, डाक्टर मुंजे, श्री खापर्डे, श्री सावरकर, श्यामजी कृष्ण वर्मा और एक बहुत बड़ी संख्या में देश की जनता। वे अपने को गरम दल वाले मानते थे।

देश में एक तीसरा पक्ष भी था। अंग्रेज ने बल और छल-पूर्वक सहस्रों मील लम्बे-चौड़े देश पर राज्य स्थापित कर लिया था और अब अपना राज्य स्थिर रखने के लिये उसने तीन योजनायें चलायी हुई थीं। एक योजना यह थी कि हिन्दुस्तान की मुख्य जनता हिन्दू को मूर्ख, पिछड़ी हुई और धोखेबाज तथा ब्राह्मण वर्ग के पंजे में फँसी हुई घोषित करना। यह काम अंग्रेज़, स्कूलों-कालेजों में शिक्षा द्वारा तथा ईसाई पादरियों के प्रचार द्वारा करा रहा था। दूसरा प्रयास था मुसलमानों को हिन्दू बहु-संख्या से आतंकित कर अपना सहायक बनाना। यह प्रयास अलीगढ़ से आरम्भ हुआ था और अब देश-भर में फैल रहा था। तीसरा प्रयास था नौकरियों, ठेके, पदवियों और अन्य धन-सम्पद उपलब्ध कराने के साधनों पर अधिकार कर अंग्रेज़-भक्तों को दिलाना।

अतः यह त्रिकोण आक्रमण चल रहा था। इसका प्रभाव कांग्रेस में भी हो रहा था।

नरम दल ने सूरत-कांग्रेस का प्रधान डाक्टर रासबिहारी घोष को स्वीकार किया। डाक्टर घोष का निर्वाचन छलना-पूर्वक सफल हुआ। नागपुर की स्वागत-समिति ने श्री बाल गंगाधर तिलक को निर्वाचित किया था। परन्तु कांग्रेस कार्यालय पर नरम दल वालों का अधिकार था। इस कारण उन्होंने नागपुर में अधिवेशन करने के स्थान, सूरत में कर लिया और डाक्टर रासबिहारी घोष को चोरी-चोरी प्रधान बनवा कर घोषणा कर दी। डाक्टर साहब के प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्धी लाला लाजपतराय थे। इनका समर्थन देश में बहु-संख्या में था।

श्री फिरोज़शाह मेहता ने एक पत्र लाला जी को लिखा। उसमें उन्होंने लिखा, "हम इस कांग्रेस अधिवेशन में आपके पकड़े जाने की निन्दा का प्रस्ताव पारित करना चाहते हैं। अत: आप स्वयं प्रधान बनना अस्वीकार कर दें।"

लाला लाजपतराय इस स्थिति से कि अपने ही प्रधानत्व में अपने विषय में प्रस्ताव पारित करायें, संकोच अनुभव करते हुए प्रधान-पद अस्वीकार कर बैठे। इस पर डाक्टर रासबिहारी घोष का नाम प्रधान-पद के लिये स्वीकार कर लिया गया।

जिस दिन बम्बई में, नागपुर की स्वागत-समिति के एक आयोग को मेहता जी ने भेंट भी न करने देकर तथा उसका अपमान कर, डाक्टर घोष का नाम प्रधान के लिये घोषित किया, उसी दिन नलिनी लोकमान्य तिलक से भेंट करने जा पहुँचा।

तिलक जी बम्बई में ही थे। भेंट श्री रानाडे के घर पर हुई और जब नलिनीकान्त ने अपना विचार दोहराया कि अब एक नवीन राजनीतिक दल बनाने का समय आ गया है तो तिलक जी ने क्रोध में आकर कह दिया, "तुम्हारे लाजपतराय उस दल के प्रधान बनेंगे क्या?"

नलिनी का सतर्क उत्तर था, "मैं लाला जी का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा। मैं तो अपना मत ही प्रदर्शित कर रहा हूँ।"

"और आप क्या हैं?"

"हिन्दुस्तान का एक देश-भक्त नागरिक।"

"आपके साथ कितने लोग हैं?"

नलिनी इस क्रोध के प्रदर्शन का कारण जानता था, परन्तु एक बुद्धिशील व्यक्ति के नाते धैर्य से बात समझाने का यत्न करता रहा। उसका कहना था, "इस देश के हिन्दुओं के जन-साधारण का अभिमत मैं जानता हूँ और एक बार आप घोषणा करेंगे तो निस्सन्देह, गणपति उत्सवों की भाँति ही, लोग आपके दल में आ सम्मिलित होंगे।"

"यह काम आप स्वयं क्यों नहीं करते?"

"स्वभाव से मैं ब्राह्मण हूँ। स्थिति यह है कि मैं कांग्रेस के दोनों पक्षों में स्वीकार नहीं किया जा रहा। साथ ही आप पर भगवान् की कृपा है कि आप नेता हैं और लोग आपकी बात को मानते हैं।"

"देखो बाबू नलिनीकान्त! जिस भगवान् ने मुझे यह प्रभुत्व और महिमा प्रदान की है, वही भगवान् कहता है कि मुझे कांग्रेस में ही रहकर कार्य करना चाहिये। पिछले पन्द्रह वर्ष से यत्न कर, मैंने अपनी स्थिति कांग्रेस में बनायी है और उसको अब मूर्खतापूर्ण चाल से विनष्ट नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु भगवन् ! ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस आपको धक्के देकर बाहर कर देगी और तब आप देखेंगे कि आपके पास एक नया मंच तैयार करने के अतिरिक्त अन्य कोई साधन ही नहीं रहा। कदाचित् तब गाड़ी छूट चुकी होगी और आपके स्वप्नों का स्वराज्य शताब्दियों दूर हो गया होगा।"

तिलक जी इस भविष्य-वाणी को सुन, कुछ देर तक आँखें मूंद विचार-मग्न बैठे रहे और नलिनी भी अपने कथन का प्रभाव देखने के लिये बैठा रहा। एक बात वह समझ रहा था कि तिलक जी अपनी महाराष्ट्रियन मनोवृत्ति से विवश हैं। शिवाजी के उपरान्त महाराष्ट्रियन मनोवृत्ति यह बन गयी थी कि वे अपने-आपको इतने चतुर समझने लगे थे कि वे ही संसार-भर को धोखा दे सकने की कला जानते हैं।

नलिनी जानता था कि वास्तव में ऐसे लोग अपने को ही धोखा दे रहे होते हैं। अपना उद्देश्य अपने लोगों के सामने तो प्रत्यक्ष आना चाहिये। उपायों में और प्रयत्न में भले ही लुकाव-छुपाव किया जाये, परन्तु उद्देश्य तो प्रत्यक्ष और स्पष्ट होना चाहिये। इस उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिये ही वह पृथक् मंच चाहता था।

तिलक इत्यादि के कांग्रेस में रहने से यह बात विख्यात हो रही थी कि कांग्रेस देश-भक्तों की संस्था है; साथ ही यह कि सब लोग तिलक जी की भाँति निस्वार्थ-भाव से काम कर रहे हैं। यह भ्रम कांग्रेस की महिमा को बढ़ाने के साथ-साथ कांग्रेस पर अधिकार जमा रहे नेताओं के प्रभाव में भी वृद्धि कर रहा था।

एकाएक तिलक जी ने आँखें खोलकर कहा, "नहीं बाबू नलिनीकान्त ! मैं एक दूसरी कांग्रेस नहीं बनाऊँगा। जिसको यह ठीक प्रतीत हो, वह ऐसा कर सकता है।"

"अच्छी बात है। अब मैं आपसे सूरत में मिलूंगा।" नलिनी ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

नलिनी घर पर पहुँचा तो उसकी मेज़ पर बम्बई विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर का एक पत्र पड़ा हुआ था। नलिनी ने पत्र खोला और पढ़ा। उसमें लिखा था, "हमारे विश्वविद्यालय में एक नया स्थान निर्माण किया गया है। यह है हिन्दुस्तानी साहित्य-कला विभाग के सहायक अध्यक्ष का। इस पद के लिये आपको उपयुक्त अधिकारी समझा गया है।

"इस अर्थ आपको भेंट के लिये आमन्त्रित किया जाता है। आप तेईस दिसम्बर मध्याह्न बारह बजे मेरे कार्यालय में मिलें।"

नलिनी समझ गया कि फिरोजशाह मेहता ने उसे नपुंसक बनाने के लिये यह चाल चली है; परन्तु वह यह विचार कर रहा था कि वह अपने विचार से वैदिक साहित्य की रक्षा के लिये पिछले तेईस वर्ष से कार्य कर रहा है। उसने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल में सैकड़ों ही विद्वानों से ज्ञान-चर्चा की है; सहस्रों के समक्ष भाषण दिये हैं और तीन वृहद् ग्रन्थ भी लिखे हैं। ग्रन्थ बिके हैं; परन्तु, वह विचार करता था कि क्या हिन्दू समाज टस-से-मस भी हो सकी है ? वह आर्य-समाज को अपने कार्य का क्षेत्र बनाना चाहता था, परन्तु वहाँ से तिरस्कृत हो, बाहर कर दिया गया। अब वह तिलक जी को अपने विचार का नेता मान, उनके अनुसार कार्य करना चाहता था और अभी-अभी उनका मत और उनकी नीति की बात सुन आया था।

अत: वह विचार करने लगा था कि क्यों न इस सरकारी नौकरी को स्वीकार कर ले ! जितना भी कार्य वहाँ रह कर हो सके, वह करे।

वह अभी वाइस-चांसलर के पत्र को सामने रखे हुए विचार ही कर रहा था कि सुवर्णा उसके कमरे में आयी और बोली, "कमल और उसकी पत्नी आये थे। आपको घर पर न देख, वे कह गये हैं कि आज रात उनके घर पर भोजन करें। एक अत्यावश्यक कार्य है।"

"कुछ बताया है कि क्या कार्य है ?"

"नहीं; मुझे भी साथ ही बुलाया है।"

"बस अथवा किसी और को भी ?"

"और कोई घर पर था ही नहीं।"

"प्रज्ञा किधर गयी है ?"

"राजेश्वरी ने बुलाया था। वह उससे मिलने गयी है। ललिता तो अपना क्लिनिक ठीक करवा रही है।"

"उसने क्लिनिक के लिये स्थान कहाँ लिया है ?"

"फोर्ट एरिया में। एक सौ रुपया मासिक भाड़े पर। उसमें फरनीचर लगवा रही है।"

"और प्रभा कहाँ है ?"

"वह जेल में आनन्द से मिलने गयी है।"

"आनन्द के मुकद्दमे की तारीख लगने से रोकी जा रही है। मुझे मेहता जी ने कहा है कि सरकार ऊँचे स्तर पर इस मुकद्दमे की फाइल का निरीक्षण कर रही है। इसी कारण हाई कोर्ट को उन्होंने सरकारी पक्ष लिखकर नहीं भेजा और तारीख नहीं लग सकी।"

"तो आप रात कमल के यहाँ खाने पर चल रहे हैं ?"

"मैं समझता हूँ कि वह अपने दैनिक-पत्र के विषय में बात करने आया होगा। उसका विचार था कि कांग्रेस के अधिवेशन से पूर्व वह पत्र निकाल देगा।"

"आज पन्द्रह तारीख हो गयी है।" सुवर्णा ने कहा।

—९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे यह पत्र निकलता प्रतीत नहीं होता। कमल अपनी वकालत के कार्य को ठप्प करेगा नहीं और समाचार-पत्र चलेगा नहीं।"

"तब भी चलना चाहिये और यदि हो सके तो उसकी कुछ सहायता भी करनी चाहिये।"

"सुवर्णा! यह देखो, एक अन्य प्रलोभन समक्ष है।"

"क्या है?"

"बम्बई विश्वविद्यालय में कार्य करने का प्रस्ताव है; परन्तु एक अविद्वान् और मोटी बुद्धि वाले अंग्रेज़ की अध्यक्षता में कार्य करना होगा।"

"तो आप स्वीकार कर रहे हैं?"

"अभी तो मुझे भेंट के लिये बुलाया है। इस भेंट के उपरान्त ही मैं विचार कर निश्चय करूँगा।"

"मेरा विचार है कि," सुवर्णा ने कहा, "आपको अर्थ लाभ के लिये सरकारी नौकरी करने की आवश्यकता है नहीं। यही बात मैंने ललिता से कही थी कि उसे अर्थ की उपलब्धि के लिये चिकित्सा-कार्य करने की आवश्यकता नहीं है। उसने आश्वासन तो दिया है कि वह अपने को किसी कार्य में व्यस्त रखने के लिये ही यह 'क्लिनिक' खोल रही है।"

"मेरे लिये कार्य में व्यस्त रहने की बात भी नहीं। कार्य मैं जीवनयापन के लिये नहीं कर रहा। यह तो समाज-कल्याण के निमित्त ही है; परन्तु मैं समझ रहा हूँ कि समाज के किसी गड्ढे में खड़े हो कूक लगाने वाले के समान ही मैं प्रभावहीन हूँ। यदि किसी ऊँचे स्थान पर पहुँच आवाज़ करने का अवसर मिले तो क्यों न लूँ? यही विचार कर रहा था।"

इसके साथ ही नलिनी ने सुवर्णा को तिलक से अपनी भेंट का वृत्तान्त बता दिया।

"ठीक है। मैं भी यह समझती हूँ कि अपने इतने वर्ष के संचित ज्ञान से ऋषि-ऋण उतारने का अवसर मिले तो उससे लाभ उठाना चाहिये।"

: २ :

ललिता सायंकाल घर पहुँची तो ज्ञानस्वरूप उसके साथ था। इन दोनों को साथ आते देख सुवर्णा और प्रज्ञा दोनों को विस्मय हुआ। दोनों ड्राइंग-रूम में बैठी थीं। प्रभा ललिता के बच्चों को अपने कमरे में लन्दन से प्रकाशित बच्चों की एक मैगज़ीन के चित्र दिखा और समझा रही थी।

प्रज्ञा को भी ज्ञानस्वरूप के साथ ललिता को आते देख विस्मय हुआ था। वह राजेश्वरी के बुलाने पर उससे मिलने गयी थी। राजेश्वरी ने उसे बताया था कि जिस दिन वह ज्ञान के घर में रह कर पति-पत्नी में सुलह करा कर गई है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे अगले दिन प्रातःकाल से ज्ञान घर से गया लौटा ही नहीं। राजेश्वरी ने यह भी बताया था कि दोनों में रात सुखमय व्यतीत हुई थी; मीनाक्षी बहुत प्रसन्न थी और उसके वहाँ आने को शुभ मानती थी, परन्तु फिर क्या हुआ, और क्यों ज्ञान घर पर नहीं आया, वह नहीं जानती।

राजेश्वरी ने उसके कारखाने से भी पता किया था। वह वहाँ उपस्थित रहा है।

इस बात को आज चार दिन हो गये थे। ज्ञान सोमवार प्रातः का घर से निकला हुआ था और आज वृहस्पतिवार था।

प्रज्ञा ने राजेश्वरी को बताया था कि वह ज्ञान के विषय में कुछ नहीं जानती। वह तो रविवार रात्रि उसके घर पर रह कर अगले दिन ही लौट आई थी।

प्रज्ञा ने विचार किया था कि अगले दिन वह ज्ञान के घर जाकर मीनाक्षी से पता करेगी, परन्तु सायंकाल ज्ञान को ललिता के साथ आते देख, वह हैरान रह गई। वह उससे पूछने ही वाली थी कि इतने दिन वह कहाँ रहा है कि ललिता ने कह दिया, "बूआ जी! मेरे क्लिनिक को बनते देख ये वहाँ आ गये और फिर हम दोनों उपहार-गृह में जल-पान करने गये थे। वहाँ से मैं घर आने लगी तो ये भी आपसे मिलने चले आये हैं।"

"आओ ज्ञान! मैं तुम्हारे घर जाने वाली थी। अच्छा हुआ है कि तुम स्वयं ही चले आये हो।"

"पर माता जी! आपने तो अगले रविवार आने के लिये कहा था? कुछ विशेष काम था?"

"हाँ; मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम पिछले तीन दिन कहाँ रहे हो?"

"क्यों? क्या बात है?"

"तुम घर पर नहीं थे।"

"परन्तु ऐसा तो पहले भी हुआ करता था। जब पुलिस में काम करता था तो कई बार घर से बाहर जाना पड़ जाता था। अब भी मेरी नौकरी कुछ वैसी ही होती जाती है।"

"पर पत्नी को बता कर तो जाना चाहिये कि तुम बाहर गये हो और कब तक लौटोगे?"

"मैं तो पहले भी कई बार कार्यालय से ही सीधा चला जाया करता था और जब काम से लौटता था तो बता दिया करता था।"

"तो अब बता आये हो?"

"नहीं। घर जा रहा था कि ललिता जी को एक फिट हो रही दुकान में खड़े देखा तो इनसे मिलने लगा। बातों-ही-बातों में पता चला कि ये वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लिनिक खोलने वाली हैं। मैं इनके क्लिनिक में रुचि लेने लगा हूँ और मैंने इनको कई सुझाव दिये हैं। वहाँ जब काम बन्द हुआ तो जल-पान कर हम इधर चले आये हैं। ये घोड़ा-गाड़ी पर आ रही थीं तो मैंने विचार किया कि आपसे भी मिलता चलूँ।''

''अब घर जा रहे हो अथवा नहीं ?''

''जा रहा हूँ। यहाँ से सीधा वहीं जाऊँगा।''

''चलो, मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ।''

प्रज्ञा और ज्ञान दोनों वहाँ से मीनाक्षी से मिलने चल पड़े। इस सब समय ललिता सामने खड़ी माँ-पुत्र में बातचीत सुनती रही। जब ये चले गये तो वह भी अपने बच्चों का पता करने प्रभा के कमरे में चली गयी।

सायंकाल नलिनी कमल के घर सुवर्णा को साथ ले जाने के लिये आया तो सुवर्णा के कमरे में ललिता बैठी बतला रही थी। नलिनी वहाँ पहुँचा तो सुवर्णा ने कहा, ''ललिता ने अपना क्लिनिक फिट करवाना आरम्भ कर दिया है।''

''यह तो तुमने मध्याह्न के समय भी बताया था।''

''परन्तु अब यह एक और प्रस्ताव लेकर आयी है।''

''क्या ?''

''इसके क्लिनिक के ऊपर एक फ्लैट खाली है और यह उसमें ही रहना चाहती है। इसका कहना है कि क्लिनिक के साथ ही वहाँ रहेगी तो इसको 'प्रैक्टिस' में सहायता मिलेगी।''

नलिनी ने पूछ लिया, ''कितना बड़ा है फ्लैट ?''

उत्तर ललिता ने दिया, ''दो कमरे हैं और टट्टी, गुसलखाना है। रसोई-घर नहीं है।''

''तो वहाँ कैसे रहोगी ?''

''बच्चे यहाँ माता जी के पास रहेंगे। मैं रविवार के दिन यहाँ आया करूँगी।''

''खाने-पीने का वहाँ प्रबन्ध किस प्रकार होगा ?''

''क्लिनिक के सामने ही एक उपहार-गृह है। वहाँ मैंने पता किया है। एक सौ रुपये महीना में दो समय खाना और दो समय चाय का प्रबन्ध हो जायेगा।''

''और फ्लैट का कितना भाड़ा है ?''

''डेढ़ सौ रुपया महीना।''

''और क्लिनिक का भाड़ा ?''

''दो सौ रुपया।''

''कोई नौकर भी रखोगी ?''

''एक स्त्री का प्रबन्ध किया है। वह पहले भी मेरे पास हस्पताल में काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती थी। वह दुकान और फ्लैट की सफाई इत्यादि किया करेगी और क्लिनिक में सहायता भी करेगी।''

''वह क्या वेतन लेगी ?''

''रोटी और पचास रुपया महीना।''

''इसका अर्थ है कि पाँच सौ रुपया मासिक व्यय है। यह सब निकाल सकोगी ?''

''निकाल लूंगी, पिता जी !''

''अकेली वहाँ रह सकोगी ?''

''पहले भी तो आपके सुपुत्र के बिना रहती थी।''

''देख लो। मैं तो तुम्हारे धनोपार्जन के निमित्त कार्य करने को उचित नहीं समझता। चिकित्सक का कार्य लोक-सेवा के रूप में ही उचित है, परन्तु जब तुम पाँच-छः सौ रुपये महीने का व्यय सिर पर लेकर काम आरम्भ करने लगी हो तो आय करने का भी विचार होगा।''

''मेरा चिकित्सा-कार्य करने से प्रयोजन, अपने को व्यस्त रखने के लिये है। उस व्यस्त रखने के लिये व्यय करना पड़ रहा है तो आय भी करनी चाहिये। सेवा-कार्य तो इसमें चलता ही है। यह एक प्रकार से ऐसी व्यवस्था होगी कि जिनके पास है उनसे लेकर, जिनके पास नहीं है, उनको लाभ पहुँचाना। मैं तो इसमें से अपने लिये उतना ही लूंगी, जितना काम को चालू रखने के लिये आवश्यक है। जैसे मशीन को तेल दिया जाता है और मशीन बिना हानि के चलती रहती है, उतना कुछ ही इससे निकालने का विचार है।''

अब सुवर्णा ने बताया, ''यह फ्लैट लेकर वहाँ रहने की योजना ज्ञान की है।''

''बिल्कुल तो ऐसा नहीं, माताजी !'' ललिता ने कहा, ''योजना मेरी अपनी थी, परन्तु इसको सफल करने में ज्ञान जी सहायक हो गए हैं। मैं दोपहर जल-पान के लिए सामने के उपहार-गृह में जाने की सोच रही थी कि ज्ञान जी मिल गये और बातों-ही-बातों में वे कहने लगे कि घर से इतनी दूर चिकित्सालय खोलने में कठिनाई होगी। मैंने बताया कि चिकित्सालय तो खोल रही हूँ। फिर मकान भी कहीं समीप ही ले लूंगी।

''इस पर उन्होंने सुझाव दे दिया कि क्लिनिक के ऊपर ही एक छोटा-सा फ्लैट है। यदि मैं पसन्द करूँ तो मुझे दिला सकते हैं।

''मैंने फ्लैट देखने की इच्छा प्रकट की तो वे कहने लगे कि मकान का स्वामी उनका परिचित है और वे चाबी लेकर आयेंगे और मुझे दिखा देंगे।

''पाँच बजे वे आये तो मैंने फ्लैट देखा है और पसन्द किया। वे कल मालिक-मकान को लाकर लिखा-पढ़ी कराने को कह गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिता जी ! मेरी तो सम्मति उसको लेने की बन रही है।"

"देखो ललिता ! तुम अब सज्ञान हो। दो बच्चों की माँ हो। अपना भला-बुरा तुम स्वयं विचार कर सकती हो। इस पर भी हम सदा तुम्हारी प्रत्येक प्रकार से सहायता करने को तैयार हैं। तुम विचार कर निश्चय कर लेना और कल जैसा भी विचार हो बता देना।"

"पिताजी ! अभी बच्चे यहाँ रहेंगे और यदि आपने भुवाली जाना होगा तो ये आपके साथ जायेंगे। सोम के पिता के आने तक तो यह कार्यक्रम चलेगा; तदनन्तर उनके आने पर विचार कर लिया जायेगा। बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि वे जीवन में क्या करने का विचार रखते हैं ?"

"ठीक है। बताओ, तुम हमसे कितनी आर्थिक सहायता की आशा करती हो ?"

"अभी तो मेरे पास एक वर्ष के व्यय के लिए है। मैं आशा करती हूँ कि इतने काल में काम चल पड़ेगा।"

"अच्छी बात है। जब भी जिस किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताना। हम सदा यथा सम्भव तुम्हारी सहायता करेंगे।"

सुवर्णा इससे सन्तुष्ट नहीं थी, परन्तु नलिनी ने ललिता से बात कर उसको मस्तिष्क से निकाल दिया। वह कमल के घर भोजन पर जाने के लिए सुवर्णा को तैयार होने के लिए कहने लगा।

रात के आठ बजे उन्होंने गाड़ी मँगवायी और कमल के मकान को चल पड़े। मार्ग में पुन: ललिता की बात चल पड़ी। सुवर्णा का कहना था, "ललिता की योजना मुझे पसन्द नहीं।"

"पसन्द तो मुझे भी नहीं है। परन्तु जीवन-कार्य किसी दूसरे के कहने पर स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह वर्ण-व्यवस्था का नियम है कि गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार कार्य किया जाये। इसमें शास्त्र का ऐसा कोई विधान नहीं कि सास-श्वसुर अथवा माता-पिता से पूछ कर ही कार्य किया जाये। ललिता के पिता ने उसे डाक्टरी की शिक्षा दिलवायी और विजय की उस पर दृष्टि पड़ गयी। अभी तक उनका दाम्पत्य जीवन ठीक ही चलता रहा है। दोनों सवर्ण प्रतीत होते थे, परन्तु अब मार्ग अवरुद्ध प्रतीत होता है। पर हम क्या कर सकते हैं ?"

"मुझे ज्ञान को ललिता के जीवन में आता देख संशय उत्पन्न हो रहा है।"

"ज्ञान के विषय में क्या सुना है ?"

"सुना कुछ नहीं। परन्तु वह मोटी बुद्धि का व्यक्ति जीवन में ठोकर भी खा सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसे ठोकर खाने से बचाने के लिए प्रज्ञा यत्न कर रही है ।"

"और हमें ललिता को ठोकर खाने से बचाने का यत्न करना चाहिये ।"

"बताओ, तुम क्या करना चाहती हो ?"

"एक तो यह कि बम्बई में स्थायी रूप में रहना चाहिये । उसके लिये किसी मकान का प्रबन्ध करना चाहिये । किसी दूसरे के मकान में बिना भाड़ा दिये कब तक रहा जा सकता है ? कमल भाड़ा नहीं ले रहा ।

"दूसरे, समय निकाल कर आपको ललिता के क्लिनिक और फ्लैट पर जाते रहना चाहिये ।

"तीसरे, ललिता के लिये सत्संग का प्रबन्ध होना चाहिये । यहाँ इकट्ठे रहते तो यह प्राप्त हो ही जाता । अब उसके पृथक् रहने पर किसी प्रकार का प्रबन्ध करना चाहिये । कम-से-कम विजय के लौटने तक तो होना ही चाहिये ।"

"यथा सम्भव कल से ही इस दिशा में यत्न करूँगा ।"

ये कमल की कोठी में पहुँचे तो पति-पत्नी दोनों इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । कैटालीना के बच्चे भोजन कर अपने-अपने कमरे में जा चुके थे । अतएव नलिनी के आते ही कमल उन्हें डायनिंग-रूम में ले गया । नलिनी ने हाथ धोये और खाने पर जा बैठा । बैरा ने खाना परोस दिया । कैटालीना और कमल अंग्रेज़ी ढंग का खाना खाते थे और उनके लिये एक-एक कर खाने के पदार्थ आ रहे थे, परन्तु नलिनी तथा सुवर्णा के लिये थाल में सब भोजन-सामग्री एक साथ लगा दी गयी ।

जब खाने लगे तो बात कैटालीना ने आरम्भ कर दी । उसने कहा, "मौसा जी ! यह तो आपको विदित ही है कि हम एक समाचार-पत्र निकालना चाहते हैं ।"

"हाँ; और यह भी विदित है कि कमल जी अपनी तीस-चालीस हज़ार वार्षिक की वकालत की 'प्रैक्टिस' छोड़, उस पत्र का सम्पादन-कार्य करने वाले हैं ।"

"परन्तु अब इनका विचार बदल गया है ।"

"तो अब क्या विचार बन गया है ?"

"ये लोभ में फँस गए हैं और वकालत छोड़ने के लिये तैयार नहीं हो रहे ।"

"तब ?"

"हमें उस पत्र के मुख्य सम्पादक के लिये किसी योग्य और बुद्धिमान लेखक की आवश्यकता हो गयी है ।"

"तब तो बहुत कठिनाई होगी । कोई ईसाई धर्मानुयायी सम्पादक मिलना कठिन हो जायेगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु अब हमने समाचार-पत्र की नीति बदलने का निश्चय कर लिया है और मैं समझती हूँ कि यह भी एक कारण है कि कमल जी ने सम्पादन-कार्य से इन्कार कर दिया है।"

"परन्तु कैटालीना ! यह भी कोई खुदाई हुक्म है कि कमल समाचार-पत्र निकाले ही ?"

"खुदाई हुक्म तो नहीं," अब कमलनारायण ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "यह कमल की प्रिय पत्नी कैटालीना का हुक्म है कि एक दैनिक समाचार-पत्र निकाला जाये और उसकी नीति 'राष्ट्रीय उत्थान' हो।"

"तो अपनी प्रिय पत्नी की आज्ञा मानते क्यों नहीं ?"

"इस कारण कि मैं इस काम को फाइनेंस करने का विचार कर रहा हूँ। जैसे सेठ-साहूकार मन्दिर बनवाते हैं; धन वे लगाते हैं और पूजा पण्डित-पुरोहित करते हैं। इस प्रकार दोनों कल्याण के भागी होते हैं और दोनों के सामूहिक प्रयास से जनता का कल्याण होता है।"

"कितना रुपया लगाने का विचार करते हो ?"

"अभी पाँच लाख लगाने का विचार है।" उत्तर कैटालीना ने दिया। उसने कहा, "ढाई लाख छापाखाना लगाने में व्यय हो गया है। छापाखाना तो, आपको विदित ही है, लगा-लगाया ले लिया गया है। कुछ मशीनें नयी लगानी पड़ी हैं, जिससे समाचार-पत्र का काम भी चल सके।

"सम्पादकीय विभाग भी काम करने लगा है। केवल इस विभाग पर अध्यक्ष चाहिये। आज ही मिस्टर कमल कहने लगे कि ये काम नहीं करेंगे। इस पर मेरे मस्तिष्क में एक अन्य व्यक्ति के विषय में विचार आया है, परन्तु उससे प्रस्ताव करने से पूर्व आपसे सम्मति करनी आवश्यक थी।"

"तो कौन है वह ?"

"एक हैं पण्डित नलिनीकान्त सरकार, वैदिक स्कॉलर।"

"और मुझसे उसके विषय में क्या सम्मति करना चाहती हो ?"

"यही कि वह इस काम को कर भी सकेंगे अथवा नहीं ?"

नलिनी गम्भीर हो गया। वह मन में विचार कर रहा था कि एक ही दिन में दो स्थान पर काम करने का प्रस्ताव आया है। इसके साथ ही उसे स्मरण हो आया कि तिलक जी ने उसे आवेश में कहा था, तुम हो क्या ? नलिनी के मन में विचार आया कि जन-साधारण से कुछ ऊँचे स्थान पर खड़े होकर भारतीय राज्य का नाद किया जाये तो उसका प्रभाव पड़ेगा। अब उसके सामने अवसर था, परन्तु सम्पादक का काम अत्यन्त कठिन था। यह सरल और सुगम काम नहीं था।

नलिनी कुछ देर तक खाना खाते हुए चुपचाप विचार करता रहा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर बोला, "नलिनीकान्त काम तो कर देगा, परन्तु उसका काम आपको पसन्द आयेगा क्या ?"

"आयेगा क्यों नहीं ?" कैटालीना का प्रश्न था।

"इस कारण कि इसकी अध्यक्षा हैं एक ईसाई महिला। वह भी ईसाईयत को स्पेन के पादरियों की ऐनक से देखने वाली। युरोपियन पादरियों की चेली क्या एक हिन्दुस्तानी पण्डित, जो वेदों की ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें समझता है, के विचारों के छपवाने में पूंजी लगायेगी ?"

"परन्तु एक दिन आपने यह कहा था कि हिन्दू एक ऐसी विचारधारा है, जो स्वतन्त्र विचार करने और प्रचार करने में विश्वास रखती है।"

"हाँ, वह तो है।"

"तो फिर आप ईसाईयत के प्रचार में बाधा क्यों डालेंगे ?"

"मैं बाधा डालने की बात तो कभी कर ही नहीं सकता; परन्तु मैं ईसाईयत से अपनी बात में बाधा डाले जाने की सम्भावना की बात कह रहा हूँ। साथ ही मैं राजनीति, धर्म और संस्कृति को सम्बन्धित बातें मानता हूँ। ये तीनों इस प्रकार ओत-प्रोत हैं जैसे कि कपड़े में ताना-बाना। मैं यह मानता हूँ कि किसी भी संस्कृति के विचार-प्रसार में बाधा उपस्थित न करते हुए भी, राज्य की मान्य संस्कृति यहाँ के बहु-संख्यक लोगों की होनी चाहिये।"

"तब तो यहाँ युरोपीय कैथालिक्स और ह्यूगनोट्स वाला गृह-युद्ध आरम्भ हो जायेगा।"

"हाँ; जो लोग यह चाहते हैं कि राज्य उनकी संस्कृति और विचार को राज्य-बल से चलाये, वे बहुमत की विचारधारा को नहीं चलने देंगे और फिर गृह-युद्ध होगा। गृह-युद्ध वे ही आरम्भ करते हैं, जो कम-संख्यक की विचारधारा को बलपूर्वक चलाने का यत्न करते हैं। हिन्दू इस बात को नहीं मानते।"

"जो वेदों को ईश्वरीय ज्ञान नहीं मानते, उनके विषय में आप क्या समझते हैं ?"

"भूले-भटके लोग।"

"मैं यह नहीं पूछ रही। मैं यह जानना चाहती हूँ कि उनको आप वैदिक संस्कृति कैसे मनायेंगे ?"

"समझा कर।"

"ईश्वरीय ज्ञान की बात मानी तो जा सकती है, परन्तु यह समझायेंगे कैसे ?"

"युक्ति से।"

"तो मजहब और ईश्वरीय बातों में भी युक्ति चल सकती है क्या ?"

"हाँ; ईश्वरीय सृष्टि यदि बुद्धि से समझने के योग्य है तो ईश्वर स्वयं क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं ? वैदिक दृष्टि-कोण यह है कि यह संसार ज्ञानयुक्त आधार पर टिका हुआ है। इसके बनाने वाला ज्ञान-स्वरूप है। यदि यह है तो वह और उसकी सृष्टि बुद्धि का विषय ही है। शर्त केवल यह है कि बुद्धि को निर्मल रखो। निर्मल का अभिप्राय है कि इसमें विवेक हो।''

''वह क्या होता है ?''

''सब प्रकार के पूर्वग्रहों अर्थात् 'प्रेज्युडिसेज़' से मुक्त। बुद्धि में यह आग्रह न हो कि जो कुछ और जितना कुछ उसको विदित है, वही सब कुछ है और ज्ञान का अन्त है। ऐसी बुद्धि युक्ति से ईश्वर के अस्तित्व और ईश्वर की सृष्टि को समझ सकती है।

''देखो कैटालीना ! हमारा एक शास्त्र है, वेदान्त-दर्शन। उसमें ईश्वर के अस्तित्व को युक्ति से बताया है। वहाँ लिखा है कि जिससे जगत् की रचना हुई है, जिससे जगत् का पालन होता है और जो इसका प्रलय करने की सामर्थ्य रखता है, वह परमात्मा है।''

''सृष्टि तो अपने-आप बनती दिखायी देती है।''

''बनती दिखायी तो नहीं देती। बालू का एक कण भी तो आप नहीं बना सकते; कोई नहीं बना सकता। परन्तु वह बना है, बना रहता है और फिर विनष्ट भी होगा। इसको बनाने की सामर्थ्य रखने वाला कोई तो होना चाहिये।''

: ३ :

यह बात कैटालीना के लिये नवीन थी। वह तो यही मानती थी कि ईश्वरीय कामों में बुद्धि काम नहीं करती। इस कारण वह नलिनी की बात न मानती हुई, निरुत्तर बैठी रह गयी।

खाना तो समाप्त हो चुका था, परन्तु बात समाप्त नहीं हुई थी। कैटालीना को चुप देख, नलिनी ने अपनी बात का एक अन्य प्रमाण दे दिया। उसने कहा, ''यदि यह जगत् युक्ति-युक्त ढंग से निर्मित न होता और इसके बनाने वाला एक महान् तार्किक न होता तो आज विज्ञान की उन्नति असम्भव होती। कोई भी बात युक्ति-युक्त और नियमबद्ध न होती तो विज्ञान की उन्नति न हो सकती।

''जिन लोगों ने यह बात कही थी कि खुदाई कामों में बुद्धि काम नहीं करती, उन्होंने ही विज्ञान की उन्नति को रोक रखा था। ज्यों ही ईश्वर और ईश्वरीय सृष्टि के विषय में यह समझा गया कि यह एक क्रमबद्ध एवं नियमबद्ध योजना से है, त्यों ही इसके विषय में जानकारी बढ़ने लगी।''

आखिर, कैटालीना ने स्वीकार किया। उसने कहा, ''विचार-स्वतन्त्रता समाचार-पत्र की नीति होगी। यही तो आप कह रहे हैं न ?''

''हाँ, यदि मैं सम्पादक बनूँगा तो मैं राजनीति में स्वराज्य, संस्कृति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व-संस्कृति और धर्म में स्व-धर्म का प्रचार करूँगा। हाँ, इन विषयों में किसी भी व्यक्ति को अपने विचार सभ्य और सुव्यवस्थित भाषा में व्यक्त करने के लिये इसके स्तम्भ खुले रहेंगे।"

"यह स्व-धर्म के विषय में आप क्या समझते हैं?"

"प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र को मैं सम्मानित देखना चाहता हूँ। यह एक अति सरल-सी बात है। इस शास्त्र में धर्म की दो श्रेणियाँ हैं। एक सनातम धर्म। इनको अपरिवर्तनशील, शाश्वत धर्म कहते हैं। ये शाश्वत धर्म केवल दस हैं। धैर्य रखना, पश्चात्ताप करने वालों को क्षमा कर देना, मन को सांसारिक प्रलोभनों से बचाना, चोरी न करना, शरीर, मन और बुद्धि की शुद्धि करते रहना, इन्द्रियों को बश में रखना, बुद्धि के विकास और प्रयोग को करते रहना, ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सदैव तैयार रहना, सत्य बोलना और क्रोध न करना।

"इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे धर्म भी हैं, जो परिवर्तनशील हैं। ये आयु, काल स्थान और परिस्थितियों के बदलने पर बदलते रहते हैं। इस पर भी ये उक्त दस शाश्वत धर्मों का उल्लंघन नहीं कर सकते।

"बस ये ही वे धर्म हैं जिनका चलन हम स्वराज्य-काल में चाहते हैं। सनातन धर्मों का चलन और अन्य धर्मों के विषय में पार्लियामैण्ट समय-समय पर निश्चय करती रहेगी।"

कैटालीना ने कहा, "मैं समझती हूँ कि कमल जी से आप अधिक उपयुक्त सम्पादक होंगे।"

"तो आप अपनी संस्था के अधिकारी से एक नियुक्ति-पत्र अनुबंध के रूप में लिखा और हस्ताक्षर हुआ भेज दें। तब मैं कार्य करूँगा। उस नियुक्ति-पत्र में उक्त बातें लिखी होनी चाहियें।"

"पर कार्य तो आपको कल से ही आरम्भ करना होगा।"

"हो जायेगा, परन्तु नियमित लिखा अनुबंध-पत्र कल दिन के दस बजे से पूर्व मिल जाना चाहिये। उसके मिलने पर ही मैं कार्यालय में जाऊँगा।"

"हम कार्यालय उस कोठी में ही रखना चाहते हैं, जिसमें आप रहते हैं।"

"और मैं उस कोठी को आपसे खरीदने का प्रस्ताव करने वाला हूँ। मैं स्थायी रूप में बम्बई में रहने का विचार कर रहा हूँ और उसके लिए स्थायी रूप से मकान अपना होना चाहिये।"

"अभी आप सम्पादक के अधिकार से उसमें रहिये। कोठी के पिछवाड़े और आगे पर्याप्त स्थान है। वहाँ कार्यालय के विस्तार पा जाने पर नयी इमारत बन सकेगी। तब तक आपका निवास-स्थान और कार्यालय उसी कोठी में रहेगा। अभी सम्पादकीय विभाग के कर्मचारी छापाखाना के एक कमरे में काम करेंगे।"

"अच्छी बात है। आप नियुक्ति-पत्र और सम्पादक को स्वतन्त्रता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार्टर लिखकर भेज दें और काम आरम्भ हो जायेगा।''

जब सुवर्णा और नलिनी घर लौटने के लिए उनकी कोठी से निकले तो कमल ने कहा, ''मौसा जी! आपने वेतन के विषय में कुछ बात नहीं की?''

''वेतन? मैं नौकरी नहीं कर रहा। मैं पुरोहित अर्थात् ब्राह्मण का कार्य करने वाला हूँ। इस कारण भेंट, दान-दक्षिणा तो स्वीकार कर लूँगा, परन्तु वेतन के रूप में मैं कुछ नहीं लूँगा।''

घर लौटते हुए सुवर्णा ने पूछा, ''आप क्या समझते हैं, कैंटालीना के इस प्रस्ताव के विषय में?''

''मैं जो कुछ समझता था, वह कह आया हूँ।''

''मैं आपके विषय में नहीं पूछ रही। मेरा अभिप्राय है कि क्या कैंटालीना मान जायेगी?''

''इस विषय में मैं चिन्ता नहीं कर रहा। नहीं मानेगी तो मेरा कार्य तो बना हुआ है। एक बात करनी होगी। तुरन्त कोई अच्छा-सा मकान लेना होगा।''

अगले दिन नियमित रूप में लिखा एक अनुबंध-पत्र आ गया। इसमें सब-कुछ लिखा था। केवल वेतन का उल्लेख नहीं था।

नलिनी ने प्रातः का अल्पाहार लिया और 'बाम्बे न्यूज़' के कार्यालय में जा पहुँचा।

बम्बई, नागपुर, कलकत्ता और लाहौर से सूरत-कांग्रेस में पूरी संख्या में प्रतिनिधि भेजने का प्रबन्ध हो रहा था। दूसरी ओर कांग्रेस के तत्कालीन पदाधिकारी सिर-तोड़ यत्न कर रहे थे कि उनके पक्ष के लोग वहाँ भारी संख्या में उपस्थित हो जायें।

प्रतिनिधियों का यात्रा-व्यय और निवास एवं भोजन-व्यय दोनों ओर से दानी महानुभाव अपने पास से कर रहे थे।

फिरोज़शाह मेहता को जब ज्ञात हुआ कि नलिनीकान्त कमलनारायण के दैनिक-पत्र का सम्पादक नियुक्त हुआ है तो वे यह समझे कि यह उग्रवादी अब नरम दल के पंजे में आ गया है; अतः वे उससे मिलने की इच्छा करने लगे। कांग्रेस अधिवेशन के आरम्भ होने से तीन दिन पूर्व वे नलिनीकान्त को उसके कार्यालय में मिलने आये। नलिनी को उन्होंने इस उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य पर नियुक्त होने पर बधाई दी और कहा, ''मैं अब आशा करता हूँ कि इस पद को प्राप्त करते ही आप अपने उत्तरदायित्व को समझेंगे।''

''यत्न करूँगा,'' नलिनी ने कहा, ''कि सत्य, न्याय और बुद्धियुक्त पक्ष का पोषण करूँ।''

''कठिनाई यह है कि इनको जानना ही सुगम नहीं। सत्य, न्याय कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तो सुगमता से कहे जा सकते हैं, परन्तु व्यवहार में इनको समझना बहुत कठिन है।''

नलिनी ने मुस्कराते हुए कहा, ''आपके मार्ग-दर्शन से मैं इस कठिनाई को पार कर जाऊँगा।''

''प्रथम अंक में ही मैं इसमें अपने पक्ष का एक लेख भेजना चाहूँगा।''

''भेज दीजिये। मुझे उसको प्रकाशित करा बहुत प्रसन्नता होगी।''

''हम चाहते हैं कि आप इसमें कांग्रेस संस्था के पक्ष में स्वयं भी लिखिये।''

''मेहता जी! इस पत्र की नीति होगी स्वराज्य, स्व-संस्कृति, स्व-धर्म और स्वतन्त्र विचार।''

''यह स्व-संस्कृति और स्व-धर्म की बात समझ नहीं आयेगी।''

''यह पत्र के एक-दो सप्ताह तक चलने पर आपको पता चल जायेगी।''

''परन्तु इसकी कम्पनी में अधिक सदस्य तो ईसाई हैं?''

''मैं जानता हूँ, परन्तु यह पत्र केवल ईसाइयों की बात कहने के लिये नहीं निकाला गया।''

''तो किसकी बात को कहने के लिये निकाला जा रहा है?''

''यह मानव-कल्याण के निमित्त हिन्दुस्तान की उन्नति ही अपना उद्देश्य बनाना चाहता है।''

''पर अब तो देश में एक पर्याप्त संख्या में ईसाई रहते हैं।''

''यहाँ उनसे भी अधिक संख्या में मुसलमान और फिर उनसे भी कहीं अधिक संख्या में हिन्दू बसे हुए हैं। सबके हितों को विचार कर ही यह पत्र चलाया जाना चाहिये।''

''तो ऐसा क्यों नहीं करते कि सब सम्प्रदायों की बात छोड़ शुद्ध 'नेशनलिज़्म'[1] की बात ही करें।''

''हाँ; राष्ट्रीयता समाचार-पत्र की नीति तो होगी, परन्तु राष्ट्रीयता एक नकारात्मक पक्ष नहीं हो सकता। इसका अपना एक पक्ष है। जो भी इस पक्ष के अनुकूल होगा, यह पत्र उसी के पक्ष में होगा।''

: ४ :

वाइस-चांसलर के साथ भेंट करने जाने से पूर्व नलिनी अपने प्रथम अंक का सम्पादकीय लेख लिख चुका था। प्रथम अंक की सब सामग्री बन चुकी थी और बीच के पृष्ठ छप चुके थे। बारह पृष्ठ का समाचार-पत्र निकालने की योजना थी और प्रथम दो तथा अन्त के दो पृष्ठ ही छपने शेष थे। प्रथम पृष्ठ पर सामयिक

१. राष्ट्रीयता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार ढंग से देने होते थे और दूसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय अग्र-लेख तथा समाचारों पर टिप्पणियाँ जानी थीं। अन्तिम पृष्ठ पर व्यापारिक समाचार तथा खेल-कूद के समाचार होने थे। अन्तिम पृष्ठ पर समाचार-पत्र के अपने संवाद-दाताओं द्वारा भेजे समाचार तथा टिप्पणियाँ छपनी थीं। बीच के आठ पृष्ठ तो दो दिन पूर्व छप चुके थे और बाहर के चार पृष्ठ तारीख से पहली रात को।

जिस दिन उसने अपना लेख और सम्पादकीय टिप्पणियाँ दीं, उसी दिन उसे विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर से भेंट के लिये जाना था और उसी सायंकाल उसे कांग्रेस-अधिवेशन के लिये सूरत जाना था। अतः अगले चार दिन के लिये अग्र-लेख वह दे देना चाहता था। शेष काम उसने अपने सहायक-सम्पादक श्री खाण्डेकर को करने के लिये कह दिया।

नलिनी को वाइस-चांसलर साहब के कमरे में पहुँचा दिया गया। वाइस-चांसलर ने उठकर नलिनी का स्वागत किया और अपने समीप एक कुर्सी पर बैठाया। उनके समीप ही, दूसरी ओर विश्वविद्यालय के इण्डोलौजी विभाग के 'डीन' डाक्टर ह्वूलर बैठे थे। चांसलर ने उनका परिचय कराया और मतलब की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "डाक्टर साहब किसी हिन्दुस्तानी शास्त्र के ज्ञाता को अपनी सहायता के लिये लगाना चाहते हैं। ये स्वयं भी प्राचीन संस्कृति साहित्य के विद्वान् हैं, परन्तु ये किसी वैदिक साहित्य के ज्ञाता की खोज में हैं, जो इनके विभाग की उस काल के साहित्य की कमी को पूरा कर सकें। इससे विश्वविद्यालय के काम को विस्तार दिया जा सकेगा।"

नलिनी ने गम्भीर भाव में कहा, "आपका विचार बहुत शुभ है, परन्तु जिस विद्यालय के आप स्नातक हैं, उसी के किसी विद्यार्थी को यहाँ क्यों नहीं बुला लेते ?"

अब ह्वूलर साहब ने स्वयं कहा, "मैं चाहता हूँ कि किसी हिन्दुस्तानी को इस काम के लिये नियुक्त किया जाये।"

"परन्तु इससे यह भी तो सम्भव है कि यहाँ का विद्वान् आपके बहुत से विचारों से सहमत न हो।"

"विचार-विनिमय से विचार-ऐक्य हो सकता है।"

"हाँ; यह सम्भव तो है, परन्तु यह काम नियुक्ति से पूर्व होना चाहिये। यदि पीछे विचार-ऐक्य न हो सका और उसे निकालना पड़ा तो बहुत भद्दी बात होगी।"

"परन्तु विचार-विनिमय तो कार्य करते हुए ही हो सकता है।"

"कार्य तो हो सकता है और विचार-विनिमय भी सम्भव है, परन्तु मैं तो नियुक्ति के विषय में कह रहा हूँ।"

"बिना नियुक्ति के यह कैसे हो सकेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सम्भव है। उदाहरण के रूप में मैं हूँ। मैं वैदिक साहित्य के अध्ययन में पच्चीस वर्ष लगा चुका हूँ। आपके महाभारत पर लेख मैंने पढ़े हैं। मैंने भी तीन-चार पुस्तकें मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक परिवर्तनों पर लिखी हैं। इन दोनों लेखों में परस्पर भारी मतभेद है। अतः आपसे नियत समय और स्थान पर मिल कर उन पर विचार-विनिमय हो सकता है। यदि इन पर सहमति हो जाये तो नियुक्ति की बात हो सकती है।

"श्रीमान्! यह स्थान, जिस पर मेरी नियुक्ति का आप विचार कर रहे हैं, आपकी सहायता के लिये है। परन्तु मतभेद होने पर तो सहायता के स्थान, विरोध आरम्भ हो जायेगा। इससे मुझे कार्य छोड़ना पड़ेगा। इस कारण इस बात पर विचार, मैं नियुक्ति से पूर्व ही कर लेना चाहता हूँ।"

वाइस-चांसलर ने प्रलोभन बिछाने के लिये कहा, "विश्वविद्यालय में ग्यारह सौ रुपया मासिक वेतन का एक स्थान निर्माण किया गया है और मेरे एक परम मित्र मिस्टर मेहता ने आपको उस स्थान के लिये एक उपयुक्त विद्वान् बताया है।

"मैं समझता हूँ कि अभी आपकी नियुक्ति दो वर्ष के लिये कर दी जाती है। इस काल में आप एक-दूसरे को समझ लेंगे। तदनन्तर भविष्य के विषय में विचार कर लिया जायेगा।"

"मैं समझता हूँ कि यह ठीक नहीं होगा, यद्यपि विश्वविद्यालय में कार्य के लिये मैं उत्सुक हूँ। अतः मैं एक प्रस्ताव रखता हूँ। मैं नित्य यहाँ आ जाया करूँगा। हम परस्पर एक विषय पर अध्ययन और अनुशीलन आरम्भ कर देते हैं और यदि डाक्टर साहब समझें कि मेरा कार्य उनके कार्य में सहायक हो रहा है तो वेतन और नियुक्ति की बात पीछे हो जायेगी।

"मैं समझता हूँ कि सबसे प्रथम 'क्रोनोलोजी'[1] पर ही भारी मतभेद है। यदि इस एक विषय पर ही हम एकमत हो सकें तो बहुत-सी बातें निश्चय हो सकेंगी।"

इस समय ह्यूलर साहब ने कह दिया, 'क्रोनोलोजी' के झगड़े में पड़ने की क्या आवश्यकता है? हमें तो मुख्य विषय पर ही कार्य आरम्भ करना चाहिये।"

"यही तो बात है। इसको मैं अति महत्व की बात समझता हूँ। मान लीजिये कि किसी एक ग्रन्थ में मनुस्मृति का उल्लेख आता है तो हम मनुस्मृति को उससे पहले का लिखा ग्रन्थ मानेंगे। यह नहीं हो सकता कि मनुस्मृसि उस ग्रन्थ के उपरान्त लिखी मानी जाये। एक और उदाहरण लीजिये। यदि यह निश्चय हो जाये कि वेद ईसा पूर्व दस सहस्र वर्ष के कहे ग्रन्थ हैं और उनमें पंजाब की नदियों का उल्लेख आता है तो फिर आर्य लोग पंजाब में तब से पहले

---

१. काल-क्रम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बसे मानने होंगे।

"एक बात और है। यदि यह सिद्ध हो जाये कि वेदों में विज्ञान अति उन्नत है तो फिर विकासवाद असत्य सिद्ध हो जायेगा। विकास के स्थान, ह्रास ही हो रहा सिद्ध होगा।

"देखिये डाक्टर साहब! 'क्रोनोलोजी' से युरोप के विद्वानों की बहुत-सी बातें असत्य सिद्ध हो जायेंगी। 'क्रोनोलोजी' शोध कार्य-की जान है।"

इस पर चांसलर ने एक प्रस्ताव कर दिया। उसने कहा, "आप विश्व-विद्यालय में अन्वेषक के रूप में कार्य आरम्भ कर दें और आप किसी विषय पर 'थीसेज़' लिखें। पीछे उस पर विचार-विनिमय हो जाये। तब तक हम आपको 'स्टिपैण्ड'[1] के रूप में कुछ देंगे। यह विश्वविद्यालय की सेनेट पीछे निश्चय कर देगी।"

"ठीक है। मैं विश्वविद्यालय पुस्तकालय में काम आरम्भ कर दूंगा। रही बात स्टिपैण्ड की। यह आप जानें और आपका काम जाने।"

इस पर भेंट समाप्त हो गयी। नलिनी ने दोनों डाक्टरों से हाथ मिलाया और यह कह बाहर आ गया, "मैं आपसे कुछ दिन उपरान्त मिलूंगा। अपने कार्य की रूप-रेखा आपके सम्मुख रखूंगा।"

इस प्रकार यह भेंट समाप्त हुई। जब नलिनी चला गया तो वाइस-चांसलर महोदय ने डाक्टर ह्यूलर से पूछ लिया, "क्या समझे हैं?"

"मेरा काम इससे नहीं चल सकेगा।"

"मैं समझता हूँ कि मिस्टर नलिनी का कहना ठीक है कि आप ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के किसी स्नातक को अपने साथ काम करने के लिये बुला लें। यह एक प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति है और यहाँ के पुराने ढर्रे के पण्डितों से पढ़ा प्रतीत होता है। यह अब अपने विचार बदलने की आयु को पार कर चुका है।"

"कोई हिन्दुस्तानी पढ़ा-लिखा विद्वान् वहाँ से प्राप्त नहीं हो सकेगा।"

"तो एक बात की जा सकती है कि हम यहाँ से कुछ हिन्दुस्तानी विद्यार्थी वहाँ ट्रेनिंग के लिये भेज सकते हैं।"

"इसमें तो समय लगेगा।"

"हाँ, यह तो है। परन्तु शिक्षा के कामों में तुरन्त तो कुछ हो नहीं सकता। मैकॉले ने हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी शिक्षा की नीति सन् १८३२ में चलायी थी। इस नीति पर विचार होने लगा था सन् १८२१ से। ग्यारह वर्ष लगे थे किसी निर्णय पर पहुँचने में। उस समय भी कई लोग थे, जो इस शिक्षा से कार्य-सिद्धि की आशा नहीं करते थे। अब उस नीति को चलाते हुए पचहत्तर वर्ष से ऊपर हो

---

१. वृत्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये हैं और मैं देखता हूँ कि उस शिक्षा का अभी भी पूर्ण प्रभाव हिन्दुस्तानी जनता पर नहीं हुआ।

"मैकॉले ने तो यह समझा था कि बीस वर्ष में हिन्दू अहिन्दू हो जायेंगे, परन्तु आज भी तिलक जैसे लोग हैं, जो गणेश-महोत्सव मनाते फिरते हैं।"

डाक्टर ह्यूलर ने मुस्कराते हुए कहा, "संस्कारों का प्रभाव अभी है। वैसे तो मस्तिष्क तिलक का भी बदल गया प्रतीत होता है। उन्होंने भी अपनी पुस्तक 'ओरायन' में यह स्वीकार किया है कि वेद ईसा से छः सहस्र वर्ष पूर्व लिखे गये थे। एक अन्य पुस्तक 'पोलर होम ऑफ आर्यन्ज़' में आर्य लोगों का भारत के बाहर से आना वे मानते हैं। यह सब मैकॉले की शिक्षा का ही परिणाम है।"

"होगा। परन्तु तिलक के गणेश-महोत्सव को हम अधिक भयंकर समझते हैं और उनके वैदिक काल की बातों को हम सर्वथा निरीह मानते हैं।"

"परन्तु एक बात दूसरी की उपज ही है। तिलक ने वैदिक तिथि को छः सहस्र वर्ष पीछे धकेल दिया है। यदि वे राजनीति में न कूद पड़ते तो इसी विषय पर और अधिक काम कर, हमें सर्वथा झूठा सिद्ध कर सकते थे।

"मैंने इस बंगाली की पुस्तक 'मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन' पढ़ी है और यदि इसको स्वतन्त्र रूप से कार्य करने दिया गया तो वह उन सब बातों को गलत सिद्ध कर देगा, जिनको हमने हिन्दुस्तान में शिक्षा का आधार बना रखा है।

"आपने सुना होगा कि यह वैदिक काल-क्रम के निश्चय करने से विकास-वाद पर ही कुठाराघात करना चाहता है। ऐसे लोगों को खरीद कर निष्क्रिय करने के लिये सरकार को सदा यत्नशील रहना चाहिये।"

"कल हमें मेहता साहब ने एक सूचना दी है कि यह पण्डित राजनीति में कूदने वाला है। यहाँ एक दैनिक समाचार-पत्र निकलने वाला है और कदाचित् इसे उसका सम्पादक बनाया जा रहा है। यदि यह सूचना सत्य है तो फिर आपको इसके विषय में निश्चिन्त हो जाना चाहिये। यह राजनीति के विषयों में इतना उलझ जायेगा कि इसे आपके कार्य की आलोचना का समय ही नहीं मिलेगा।"

डाक्टर ह्यूलर इस सूचना से आश्वस्त नहीं हुआ। वह समझने लगा था कि कहीं यह तिलक के दल में सम्मिलित हो गया तो यह तिलक से भी अधिक भयंकर सिद्ध होगा। वह जानता था कि आज के युग में विचारधारा राजनीति से अधिक प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है। आखिर, जन-विचार ही तो राज-नीतिक शक्ति है, जो उनके ढंग से ब्रिटेन की राजनीति का समर्थन कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

नलिनी सूरत-कांग्रेस के अधिवेशन पर चार दिन के लिये जा रहा था और उन चारों दिन के लिये उसने लेख लिखकर सहायक-सम्पादक को दे दिये थे। वे लेख क्रम-वार छपने वाले थे।

प्रथम अग्र-लेख जो चौबीस दिसम्बर को निकला था, उसका शीर्षक था, 'शुद्धि में औचित्य'। पच्चीस तारीख का लेख था, 'शुद्धि की अनिवार्यता'। तीसरे दिन का लेख था, 'मस्तिष्क का आधार शरीर है, हवा नहीं'। चौथे दिन के लेख का शीर्षक था, 'स्वत्व की रक्षा सबसे बड़ा पुण्य कार्य'।

नलिनी अपने दो 'रिपोर्टरों' को साथ लेकर कांग्रेस-अधिवेशन में पहुँच गया। नित्य के समाचार भेजे जा रहे थे। तीसरे दिन का समाचार था, 'कांग्रेस-अधिवेशन में जूते चले।'

बात इस प्रकार हुई थी कि दूसरे दिन खुले अधिवेशन में जब अध्यक्ष का नाम प्रस्तावित किया गया तो तिलक जी इसका विरोध करने के लिये मंच पर आने लगे। यहाँ 'नरम दल' वालों ने 'गरम दल' से अधिक गरमी दिखायी और तिलक जी को धक्के देकर मंच से नीचे गिराने का यत्न किया गया। इस पर सभा-भवन में भारी हल्ला मच गया और सभा विसर्जित हो गयी। अगले दिन पुनः सभा हुई। तिलक जी सभापति के निर्वाचन पर आपत्ति करने के लिये अभी खड़े ही हुए थे कि उन्हें पुनः मंच से नीचे उतारने का यत्न किया गया और मेहता साहब ने घोषित कर दिया कि सभापति का निर्वाचन सर्व-सम्मति से हो गया है और अब खुला अधिवेशन आरम्भ होता है। इस समय किसी ने एक बिल्कुल नया जूता प्रधान पर दे मारा। वह प्रधान को तो नहीं लगा, परन्तु सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के कन्धे पर लग कर पीछे जा गिरा और इस पर मुक्का-मुक्की में कांग्रेस-अधिवेशन बिना किसी प्रस्ताव को पारित किये, अगले वर्ष के लिये स्थगित कर दिया गया।

ये सब समाचार 'बाम्बे न्यूज़' में छपने लगे। इस दिन नलिनी पुनः श्री तिलक से मिला। उस समय लाला लाजपतराय, श्री खापर्डे, डाक्टर मुंजे और बंगाल के बिपिनचन्द्र पाल भी वहाँ उपस्थित थे। नलिनी तिलक जी के निवास-स्थान पर उनसे उस दिन की घटना पर विचार जानने के लिये आया था।

नलिनी को आश्चर्य हुआ, जब उसके वहाँ पहुँचते ही श्री तिलक जी ने पूछा, "नलिनी बाबू ! बताओ, यह जूता कहाँ से खरीदा था ?"

"कौन-सा जूता, भगवन् ?"

"जो फिरोज़शाह मेहता पर फेंका गया था। मैं जानता कि यह सब तुम्हारी शरारत है।"

"भगवन् ! क्या जूता खरीदने वाले ने आपके सामने मेरी मुखबरी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? भगवन्, उसका नाम बता दीजिये, जिससे मैं इसे झूठा सिद्ध कर सकूं।"

"अच्छा, बताओ कि तुम इसको कैसा समझते हो ?"

"महाराज ! किसको कैसा ?"

"जूता फेंकने को ?"

"मैंने 'बाम्बे न्यूज़' में इस विषय पर अपनी टिप्पणी लिख कर भेज दी है। मेरी टिप्पणी है, 'संस्थाएँ नियमाधीन कार्य करने के लिये होती हैं। जिस संस्था में नियम भंग होने लगे, वह संस्था नहीं रहती। उसका नाम एक भीड़ रह जाता है। यही दशा कांग्रेस की हो गयी है।'

"जबसे सरकार के 'वफादार ग्रुप' को यह पता चला है कि कांग्रेस का प्रबन्ध और इसकी नीति उनके हाथ से निकल रही है, तब से वे इस पर अपना अधिकार जमाये रखने के लिये सब प्रकार के अनियमित कार्य करने लगे हैं और उन कार्यों की पराकाष्ठा सूरत-कांग्रेस में पहुँची है।

"शान्ति और व्यवस्था का दिन-रात सबक देने वाले अपने ही सदस्यों पर बल तथा छल का प्रयोग करने लगे हैं और उस सन्दर्भ में असमर्थित अध्यक्ष के अध्यक्ष-पद पर झपटने के समय एक महाराष्ट्रीय ढंग का जूता उनकी ओर फेंका गया।

"प्रधान-पद पर अधिकार जमाने वाले डाक्टर महोदय बाल-बाल बच गये। वे बेचारे अनजाने में बलि का छाग बनाये जा रहे थे। कदाचित् वास्तविक दोषी को भी यह जूता छू नहीं सका। निशाना उसको बनाया नहीं गया था। जूता फेंकने वाले के ज्ञान की कमी ही इसमें कारण हो सकती है।"

तिलक जी के अतिरिक्त अन्य सब उपस्थितगण मुस्करा रहे थे। तिलक जी के माथे पर अभी भी त्योरी चढ़ी हुई थी। बात लाला लाजपतराय जी ने बदल दी। वे बोले, "मैं समझता हूँ कि इस कांग्रेस पर अधिकार जमाने के लिये भाग-दौड़ एक निरर्थक प्रयास है। हमें एक नवीन राजनीतिक संस्था बनानी चाहिये।"

तिलक जी के माथे से त्योरी उतर गयी और वे मुस्करा कर बोले, "यही तो नलिनी बाबू पिछले छः मास से मुझे कह रहे हैं।"

"और आप उसके इस विचार का सदैव विरोध करते रहे हैं।" नलिनी ने मुस्कराते हुए कह दिया।

"हाँ; और मैं अभी भी इसमें तथ्य नहीं समझता; परन्तु कदाचित् एक अल्प-काल के लिये प्रगतिशील शक्तियों को संगठित करने के लिये, यह करना पड़े तो कर लेना चाहिये।"

नलिनीकान्त के मस्तिष्क में श्री तिलक जी के मन की भावना के लिये प्रशंसा तो थी, परन्तु यह प्रशंसा इस कारण थी कि तिलक जी एक निष्ठावान् सनातन धर्मावलम्बी की भाँति अपनी निष्ठा के आधार को बदलने में कठिनाई अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हैं। यह गुण भी हो सकता है और अवगुण भी।

इस पर भी तिलक जी के इस कथन पर बिपिनचन्द्र पाल ने नलिनी को कहा, "आप अपनी योजना को तनिक विस्तार से बतायें तो हम आपकी कृपा मानेंगे।"

लाला लाजपतराय ने बाबू बिपिनचन्द्र पाल के विचार का समर्थन कर दिया। इस पर सब उपस्थित जन नलिनीकान्त का मुख देखने लगे।

नलिनीकान्त वे अपना आशय बताने के लिये कहना आरम्भ किया, "मैं समझता हूँ कि अंग्रेज़ी सरकार ने अपने राज्य को सुदृढ़ करने के विचार से यहाँ एक किंवदन्ति चलायी थी। वह यह कि प्रत्येक बात जो इंगलैण्ड से आ रही है, वह हिन्दुस्तानी प्रत्येक बात से श्रेष्ठ है। इस विचारान्तर्गत राजा राममोहन राय साहब ने यहाँ ब्रह्म-समाज की स्थापना की थी। इसी विचार को बढ़ावा देने के लिये मैकॉले साहब ने यहाँ शिक्षा को सरकारी सहायता और निरीक्षण में चलाया था। और इसी विचार के प्रसार के लिये यह 'इण्डियन नैशनल कांग्रेस' की स्थापना हुई थी।

"इण्डियन नैशनल कांग्रेस राजनीतिक क्षेत्र में युरोप की नकल कर रही है।

"हम, जो युरोप को प्राचीन पूर्वी ज्ञान-विज्ञान की एक भद्दी नकल मानते हैं, इसका अनुकरण करना नहीं चाहते और नैशनल कांग्रेस की परम्पराओं से छुटकारा पाना चाहते हैं।

"आज कांग्रेस में जो कुछ हुआ है, वह युरोप की भद्दी राजनीति का एक और घटिया रूप है। इस कारण इससे बाहर निकल कर हमें एक नयी संस्था बनानी चाहिये, जो अपनी प्राचीन परम्पराओं पर आधारित हो। जब तक हम इस कांग्रेस से चिपटे रहेंगे, हम इसके साथ ही भारत से दूर और दूर चले जायेंगे।"

"यह सब अनर्गल है," तिलक जी ने कह दिया, "पिछले बीस-इक्कीस वर्ष से बनी संस्था के प्रभाव से लाभ उठाने के स्थान, एक नयी संस्था बनाने पर पुनः पच्चीस वर्ष व्यय किये जायें और तब कुछ नये विचार के लोगों की एक अन्य नयी संस्था बनाने में लीन हो जाने से देश का कल्याण नहीं हो सकता। मैं कांग्रेस को ही एक उन्नत विचारों और आदर्शों वाली संस्था बनाने का यत्न करना चाहता हूँ।"

लाला लाजपतराय जी ने कहा, "मैं यह तो नहीं मानता कि हमारे पूर्वज सर्वगुण सम्पन्न थे; इस पर भी सिद्धान्तों में मैं प्राचीन को आज से श्रेष्ठ मानता हूँ; परन्तु यहाँ प्राचीन और नवीन का झगड़ा नहीं है। यहाँ तो देश को प्रगति-पथ पर ले जाने के लिये एक नवीन प्रयास की आवश्यकता पर मैं कह रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर मुंजे एक व्यवहारिक आदमी थे। उन्होंने कहा, "व्यवहारिक बात यह है कि कुछ प्रतिक्रियावादियों ने कांग्रेस पर अधिकार जमा रखा है। इस प्रतिक्रिया से बचने के लिये हम कांग्रेस के मुकाबले की संस्था बनाना चाहते हैं। अब प्रश्न यह है कि देश में राष्ट्रवाद जीवित रहेगा अथवा सरकारवाद। राष्ट्र-वाद और सरकारवाद साथ-साथ नहीं चल सकते।"

विपिनचन्द्र पाल का कहना था, "ज्यों ही हमने नयी संस्था बनायी, पुरानी संस्था मृत-प्रायः हो जायेगी। तब देश प्रगति-पथ पर चल पड़ेगा।"

नलिनी ने कहा, "और जब हमारा यह पग भी काल की गति से पिछड़ा हुआ प्रतीत होगा तो नया पोच आयेगा, जो और आगे बढ़ने के लिये नयी संस्था बना लेगा। यह उचित ही होगा।"

"और आपकी प्राचीन परम्परा कहाँ जायेगी?" तिलक जी ने पूछ लिया।

"वह एक समय स्वामी दयानन्द जी ने प्रकट की थी और उसके लिये आर्य-समाज की स्थापना की थी। आर्य-समाज पथ-भ्रष्ट हो चुकी है और मैं इस नवीन संस्था के लिये आग्रह कर रहा हूँ। जब हम भी पथ भूल जायेंगे तो कोई अन्य आयेगा जो नवीन संस्था का आयोजन करेगा। यह तो चलता ही रहता है। जैसे बाबा, पिता, पुत्र, पोता उत्पन्न होते रहते हैं और एक सज्ञान होने पर पिछले का स्थान लेता रहता है। वैसा चलेगा ही। होना यह चाहिये कि नये आने वाले जीवन के मूल सिद्धान्तों पर आरूढ़ रहें, जिससे नवीन भी प्राचीन को आगे लेजा सके।"

नलिनी के कथन से कि नयी संस्था स्वामी दयानन्द जी की परम्पराओं को चलाने वाली होगी, लाला लाजपतराय फड़क उठे।

लाला लाजपतराय जब माण्डले जेल से छूट कर लाहौर पहुँचे थे तो वहाँ उनके नाम के साथ जो तटस्थता आर्य-समाज के नेताओं ने चलायी थी, सुन कर चकित रह गये थे। नलिनी का विश्लेषण कि आर्य-समाज पथ भूल गयी है, उनके मन लगी थी।

एक नवीन संस्था की स्थापना तो हुई, परन्तु वह चल नहीं सकी। श्री तिलक इसमें रुचि नहीं रखते थे। लाला लाजपतराय रुचि तो रखते थे, परन्तु वे आगे आकर कार्य करना नहीं चाहते थे। कदाचित् कर सकते भी नहीं थे। उनकी ख्याति तिलक जी से बहुत कम थी। बिपिनचन्द्र पाल सूरत से जाते ही पकड़ लिये गये। उन पर मुकद्दमा हुआ और छः मास की कैद का हुक्म हो गया। तिलक जी जून मास, सन् १६०८ में पकड़ लिये गये और उन पर मुकद्दमा चला। उन्हें छः वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया।

नलिनीकान्त ने छः मास तक समाचार-पत्र चलाया और पत्र खूब बिकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा था। इसमें विज्ञापन इत्यादि भी मिलने लगे थे। मई मास में 'बाम्बे न्यूज़' के सम्पादकीय में अंग्रेज़ की 'बन्दर बाँट' पर एक लेख निकला, जिसमें मुसलमानों को हिन्दुओं से पृथक् करने के प्रयास का इतिहास लिखा गया।

लेख के अन्तिम वाक्य ये थे—"एक विदेशीय राज्य झूठ और धोखा-धड़ी के बिना टिका नहीं रह सकता। इस कारण यह गिरेगा। हिन्दुस्तान की जनता को तो अब अपना ध्यान इस बात की ओर लगाना चाहिये कि अंग्रेज़ों के जाने के उपरान्त, हमने देश का राज्य किस विधि-विधान से चलाना है।"

इससे अगले दिन का लेख था, श्री बाल गंगाधर तिलक के बन्दी बनाये जाने पर। लेख का आशय था—"यदि सरकार का यह दावा स्वीकार कर भी लिया जाये कि लोकमान्य तिलक ने विदेशीय सरकार को हटाने के लिये आन्दोलन चला रखा है, तब भी यह मानवी अधिकार है कि मनुष्य अपने उन गुणों का प्रयोग करे, जो परमात्मा ने उसे दिये हैं। जिनमें आन्दोलन करने की सामर्थ्य है, वे क्यों न करें? देखने की बात यह है कि आन्दोलन किस बात के लिये किया जा रहा है? आन्दोलन है ब्रिटिश पार्लियामैण्ट का राज्य हिन्दुस्तान से हटाया जाये। यह प्रत्येक देश के प्रत्येक वासी का अधिकार है कि वह अपने देश में अपने देश के रहने वालों के राज्य की कामना करे और उस कामना की पूर्ति के लिये आन्दोलन करे।

"ब्रिटिश पार्लियामैण्ट का राज्य कानून से चल रहा है। वहाँ कानून और उस कानून के बनाने वाले इंग्लैण्ड के लोग हैं। यह असह्य है। बस यही श्री तिलक जी का आन्दोलन है।"

अग्रलेख में इसके बाद लिखा था—"हम उस आरोप पर टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहते, जिस पर श्री तिलक जी को पकड़ा गया है। इस पर अदालत निर्णय देगी। तिलक जी यहाँ बम्बों और पिस्तौलों से राज्य बदलने को कहते हैं अथवा नहीं कहते, इसका निर्णय न्यायालय करेगा।

"हमारे कहने का आशय यह स्पष्ट करना है कि इंग्लैण्ड का राज्य हिन्दुस्तान में किस प्रकार स्थापित हुआ है? यह इतिहास का विषय है। क्या यह तोप, बन्दूक के बल से नहीं आया? यदि हिन्दुस्तान तोप और बन्दूक से विजय किया गया है तो कौन कहेगा कि इसको स्वतन्त्र करने के लिये तोप, बन्दूक का प्रयोग न हो? श्री तिलक ने तोप, बन्दूक चलायी है अथवा नहीं? तिलक जी ने बम्ब, पिस्तौल चलाने वालों को ऐसा करने के लिये कहा है अथवा नहीं? इन विषयों पर अवश्य अदालत निर्णय करेगी। परन्तु हम ब्रिटिश सरकार से पूछना चाहते हैं कि उसे यहाँ अपना राज्य स्थापित करने के लिये तोप, बन्दूक के प्रयोग का अधिकार किसने दिया था? जिसने उनको यह अधिकार दिया है, वह किसी अन्य को वही अधिकार क्यों नहीं दे सकता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वास्तविक बात है, जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

इससे अगले दिन के लेख में नलिनी ने लिखा था—"हिन्दुस्तानियों का यह निर्विवाद अधिकार है कि स्वराज्य प्राप्त करें। इसे रोकने के लिये कोई युक्ति नहीं। यदि कोई युक्ति है तो वह गोलमेज़ पर बैठकर समझी-समझायी जा सकती है। यदि अंग्रेज़ यह कहता है कि उसने अपने बाहु-बल से तथा अपनी चतुराई से यह अधिकार प्राप्त किया है तो दूसरे भी इन्हीं साधनों का प्रयोग कर सकते हैं। हिन्दुस्तान के प्रतिनिधियों से बातचीत द्वारा निर्णय करना है तो ठीक है, अन्यथा किस मुख से कहा जा सकता है कि वे वही साधन प्रयोग न करें, जिनका प्रयोग कर यहाँ अंग्रेजी राज्य स्थापित किया गया है।"

परन्तु इस लेख के छपते-छपते समाचार-पत्र 'बॉम्बे न्यूज़' को ज़ब्त कर लिया गया। इसके प्रेस पर सरकारी अधिकार कर लिया गया और समाचार-पत्र के सम्पादक को पकड़ लिया गया।

: ६ :

आनन्दस्वरूप को, आजन्म कैद का दण्ड कम कर छः वर्ष का कठोर दण्ड दिया गया था और उसे कैद भोगने के लिये अण्डमान जेल में भेज दिया गया था। विजय लाहौर में कैद भोग रहा था। अब उनका पिता भी पकड़ा गया तो घर में केवल स्त्रियाँ ही रह गयीं।

'बॉम्बे न्यूज़' के छापाखाना को ताला लग गया था और सम्पादक के कार्यालय की तलाशी ली गयी थी। समाचार-पत्र तथा मुद्रणालय के मालिकों को आज्ञा दी कि वे अमुक तारीख को प्रेज़िडेंसी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित हो बतायें कि क्यों न उनका छापाखाना ज़ब्त कर लिया जाये?

कमलनारायण ने इसका लिखित उत्तर दिया कि छापाखाना एक निर्जीव वस्तु है। इसने कोई ऐसी बात नहीं की, जो कानून भंग करने वाली है। इसमें यदि कुछ ग़ैर-क़ानूनी कार्य हुआ है तो वह करने वालों का कार्य है और उन करने वालों पर मुक़द्दमा चलना चाहिये। छापाखाना निर्दोष है। इसे ज़ब्त करने में कोई कारण नहीं।

जब नलिनीकान्त पकड़ा गया तो मुक़द्दमे का निर्णय होने में बहुत देर नहीं लगी और जहाँ श्री बाल गंगाधर तिलक को छः वर्ष का दण्ड हुआ, वहाँ नलिनी को पाँच वर्ष का दण्ड प्रदान किया गया।

मुक़द्दमे के दिनों में समाचार-पत्र के कार्यालय पर सरकारी पहरा बैठ गया था। इस कारण प्रज्ञा, सुवर्णा और प्रभा ज्ञानस्वरूप की कोठी में चली गयी थीं। ललिता तो पहले ही अपने क्लिनिक के ऊपर एक फ्लैट में रहती थी।

नलिनी को दण्ड सुनाया गया तो ज्ञान के घर पर विचार होने लगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्णय पर अपील की जाये अथवा नहीं। सुवर्णा का कहना था, "विजय के पिता का यह कहना है कि अपील न की जाये। घर के प्राणी अपना समय, धन और शक्ति अपने तथा समाज के कल्याण के लिये प्रयोग करें।" कमलनारायण और कैंटालीना भी इस विचार-विमर्श में भाग ले रहे थे।

कमलनारायण की सम्मति थी कि अपील करनी चाहिये। उसकी युक्ति यह थी कि जितना भी दण्ड कम हो सके, उतना ही अच्छा है। सुवर्णा का कहना था, "इसके लिये विजय के पिता से मिलकर निश्चय कर लिया जाये। मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है ?"

कमलनारायण एक अन्य वकील के साथ नलिनी से जेल में मिलने गया। पहले तो नलिनी अपील के विरोध में था, परन्तु पीछे वह मान गया। अपील की गयी, परन्तु दण्ड कम नहीं हुआ।

नलिनीकान्त पूना जेल में भेज दिया गया। तिलक जी को माण्डले जेल में भेजा गया था।

बंगाल में तो बम्बई प्रान्त से भी अधिक कठोरता का व्यवहार किया गया। बिपिनचन्द्र पाल को तो केवल छः मास का कारावास भोगना पड़ा और श्री अरविन्द घोष छूट गये थे, परन्तु अन्य कई सहस्र युवक पकड़ कर आजीवन दण्ड भोगने के लिये भिन्न-भिन्न जेलों में भेज दिये गये थे।

सुवर्णा का विचार भुवाली चले जाने का हो गया। प्रभा अपनी सास के साथ जाने को तैयार हो गयी। ललिता को जब सुवर्णा ने अपना भुवाली जाने का विचार बताया तो उसने स्पष्ट कह दिया, "मैं तो बम्बई में ही रहूँगी।"

यह स्वाभाविक भी था। वह बम्बई में चिकित्सा-कार्य करती थी। सुवर्णा ने पूछ लिया, "तुम्हारे बच्चे कहाँ रहेंगे ?"

"आपके पोते हैं। जहाँ चाहें रखिये। मैं उनको अपने पास नहीं रख सकती।"

अतः ललिता के दोनों लड़के सोमदेव और चारुदेव भुवाली चले गये। प्रज्ञा बम्बई में ज्ञान के पास ही रह गयी।

धीरे-धीरे प्रज्ञा और मीनाक्षी में सहिष्णुता और सह-भाव हो गया था। दोनों एक-दूसरे को समझ गये थे। ज्ञान इस सहचारिता से बहुत प्रसन्न था। ललिता कभी-कभी ज्ञान के घर पर आती रहती थी।

यह सन् १९०८ के अन्तिम दिन थे। एक दिन ललिता प्रज्ञा से मिलने आयी तो प्रज्ञा ने पूछ लिया, "ललिता ! बहुत दिन के उपरान्त आयी हो। बहुत व्यस्त रहती हो अपने व्यवसाय में ?"

ललिता मुस्करायी और बोली, "बूआ ! मैं दो महीने पूना में रह कर आयी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ? वहाँ क्या था ?"

"वहाँ एक रोगी था। उसके निमित्त वहाँ गयी थी और उसके काम में दो महीने लग गये हैं।"

"कैसा रोगी था ?"

"एक स्त्री के प्रसब होने वाला था और उसने मुझे अपने पास ही रख लिया था।"

"तो हो गया है प्रसव ?"

"हाँ बूआ ! उसके लड़का हुआ है।"

"प्रसूता ठीक है ?"

"हाँ, निरन्तर देख-भाल से वह पहले से अच्छी है।"

"और तुम्हें इतने दिन की उसकी सेवा से क्या मिला है ?"

"मिल गया है जो मिलना चाहिये था।"

प्रज्ञा ने समझ लिया कि अवश्य बहुत कुछ मिला होगा। जिसकी सेवा के लिये एक डाक्टर दो मास तक अपने क्लिनिक से बाहर रहा हो, वह अवश्य किसी बहुत बड़े राजा-रईस की पत्नी होगी। उसने बात बदल दी और पूछ लिया, "पीछे चिकित्सा-कार्य में तो बहुत हानि हुई होगी ?"

"हाँ बूआ; इस पर भी आशा करती हूँ कि शीघ्र ही कार्य चलने लगेगा।"

"अच्छा, कभी-कभी मिलती रहा करो। अब तो एक-दो मास में विजय भी आने वाला है।"

ललिता ने इसमें किसी प्रकार की रुचि प्रकट नहीं की और बात बदल गयी। ललिता ने मीनाक्षी से पूछ लिया, "बहन जी ! बूआ के आने से आप कैसा अनुभव करती हैं ?"

मीनाक्षी ने मुस्करा कर कहा, "जैसी आशा करती थी, उससे विलक्षण अनुभव हो रहा है।"

"अच्छा ? क्या आशा करती थीं और उससे क्या विलक्षणता देखी है ?"

"माता जी के पुत्र जो पहले सर्वथा पशु प्रतीत होते थे, अब गम्भीर और शान्त मानव हो गये हैं।"

"मैं समझती हूँ कि यह उनके पुलिस की नौकरी छोड़ देने के कारण है। पुलिस का महकमा तो है ही पशुओं का। वहाँ जाकर मानव भी पशु ही हो जाता है।"

"मेरा यह विचार नहीं है। मैं इसमें माता जी के सद्गुणों का ही प्रभाव मानती हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं भी एक जंगली बिल्ली ही थी। मुझमें भी तो परिवर्तन आया है।"

"जंगली बिल्ली ? क्या मतलब है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले मैं, जब जौन के पिता को किसी पर-स्त्री से बात करते भी देख अथवा सुन लेती थी तो मैं उनको दाँतों और नाखूनों से नोच डालती थी।"

"और अब ?"

"अब मुझे किसी से भी ईर्ष्या नहीं होती।" मीनाक्षी ने मुस्कराते हुए ललिता के मुख पर देखते हुए कहा। ललिता गम्भीर भाव में उसका मुख देख रही थी।

उसको चुप देख मीनाक्षी ने अभी भी मुस्कराते हुए पूछा, "ललिता बहन! मेरा मतलब नहीं समझी न ?"

"बात तो स्पष्ट ही है। पहले आप जंगली बिल्ली का स्वभाव रखती थीं और अब आप एक भेड़ की भाँति किसी की पिछलग्गू बन गयी हो। इस पर भी यह क्यों और कैसे हुआ, यही समझने का यत्न कर रही हूँ।"

"तो करिये। मैं तो यही जानती हूँ कि माता जी ने मुझे सुख-शान्ति का मार्ग बताया है। वह है प्रभु का भजन। माता जी बहुत प्रातः उठकर स्नानादि से अवकाश पा, दो घण्टा-भर परमात्मा का भजन करती हैं। अपनी वीणा के साथ उसके गुण गाती हैं। जबसे मैं उनके समीप बैठ सुनने लगी हूँ, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे भीतर का जंगलीपन कम हो रहा है। अब मैं रविवार के दिन गिरजाघर में भी जाती हूँ तो वह पहले से भिन्न रूप में दिखायी देने लगा है।"

"तो संगीत सुनने से बुद्धि में अन्तर आने लगा है? देखो मीनाक्षी देवी! मैं अपनी सास का घर ही इस कारण छोड़ गयी थी कि मुझे इनका जप, मन्त्र, संगीत, हवन कुछ भी नहीं भाता था। विवाह के उपरान्त पतिदेव बोले कि हस्पताल का काम छोड़, उनके साथ लाहौर चलना चाहिये। मैंने कहा था, आपको मेरे साथ बम्बई में रहना चाहिये। आखिर उनको दोहरा जीवन स्वीकार करना पड़ा। महीने में दस-पन्द्रह दिन मेरे पास रहते थे और शेष दिन लाहौर में अपने माता-पिता के साथ। मेरा तो यह आरोप है कि वे एक अच्छे पति नहीं थे।"

"क्या दोष था तुम्हारे पति में ?"

"मेरे पास नहीं रहते थे। यही कारण था उनके पथ-च्युत होने का और······।" वह आगे कह नहीं सकी।

"पर मेरी अवस्था तो यह है कि वे घर आते हैं तो मैं उनका स्वागत करती हूँ और कभी वे नहीं आते तो मुझे उनकी आवश्यकता नहीं रहती। कारण यह कि मेरे लिये कुछ अन्य काम बन गया है और मुझे उसमें रस आने लगा है।"

"किसमें, क्या रस आने लगा है ?"

"भगवत्-भजन में और अपने मानवी कर्त्तव्य के पालन में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वह कर्त्तव्य क्या है ?"

"वह आत्मोन्नति है ।"

ललिता को मीनाक्षी के किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध वन जाने का सन्देह हुआ था और वह जानना चाहती थी कि वह पुरुष कौन है, परन्तु पूछने पर मीनाक्षी आत्मोन्नति की बात ले बैठी थी। इससे निराश हो उसने वात बदल दी। उसने पूछा, "जौन के पिता कहाँ हैं ?"

"उनको मिल के काम से दौरे पर जाना पड़ता है। आजकल वे मद्रास में काम पर गये हुए हैं।"

"कब से गये हुए हैं ?"

'पन्द्रह दिन से अधिक हो गये हैं।"

"कब तक आने वाले हैं ?"

"कभी बता कर नहीं गये।"

"जौन और पाल कहाँ हैं ?"

"जौन तो भाभी के साथ भुवाली गया हुआ है और पाल आया के साथ भ्रमण के लिये गया हुआ है। पर ललिता बहन ! क्या बात है, यह घर वालों में आज विशेष रुचि हो गयी प्रतीत होती है ?"

"हाँ; दो महीने के उपरान्त क्लिनिक खुला है तो काम में कुछ कमी हो गयी है और ध्यान घर वालों की ओर हो गया है।"

"तो ऐसा करो। अपने बच्चों को भुवाली से मँगवा लो।"

ललिता गम्भीर भाव में मीनाक्षी का मुख देखने लगी। फिर बोली, "उनमें रुचि नहीं रही।"

"सत्य ? पर क्यों ?'

"नहीं जानती।"

"उन्हें अपने पास रखो तो रुचि बन जायेगी।"

"आशा नहीं।"

इस दिन ललिता की सब बातें विलक्षण थीं। जब वह चली गयी तो मीनाक्षी ने अपनी सास से ललिता की बात बतायी तो वह मुस्कराती हुई चुप रहीं। इस मौन रहने का अर्थ मीनाक्षी नहीं समझी। इस कारण उसने पूछ लिया, "माता जी ! क्या समझी हैं आप ललिता की अपने बच्चों में अरुचि का अर्थ ?"

"देखो, बेटा मीनाक्षी ! विजय का यह चुनाव गलत था। वह इसके शारीरिक आकर्षण से प्रभावित इससे विवाह के लिये तैयार हो गया था। भैया ने तो ललिता के विवाह के उपरान्त ही कहा था कि यह ठीक नहीं हो रहा। वे उस समय भी इस संयोग से प्रसन्न नहीं थे। यह लड़की हिन्दू माँ के पेट से उत्पन्न होने पर भी अहिन्दू थी। इसके मन में न तो भगवान् के प्रति विश्वास था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न ही हिन्दू मीमांसा, आत्मा, कर्मफल और पुनर्जन्म में आस्था थी।

"अतः भैया ने तब ही कहा था कि विजय ने भूल की है। उनका कहना था कि यदि यह हमारे साथ रहेगी तो मनुष्य बन जायेगी। दुर्भाग्य यह हुआ कि इसने लाहौर चलकर परिवार में रहना पसन्द नहीं किया और इस पर हमारे संस्कार नहीं पड़े। जब यह परिवार में आयी तो इसका पति कैद हो चुका था। इस कारण प्रत्यक्ष रूप में वह अपने पति से भी रुष्ट है।

"अब इस अनिष्ठा और अविश्वास की मानसिक विकृति से कुछ भी हो सकता है। हम आशा कर रहे हैं कि इसका पति जेल से बाहर आ जाये और तब कुछ हो सके तो हो सके। परिवार के अन्य सदस्यों से तो यह कभी घुली-मिली ही नहीं।"

मीनाक्षी स्वयं अनुभव कर रही थी कि उसमें भी परिवार में सम्मिलित होने से पूर्व और अनन्तर भारी अन्तर पड़ चुका है। जहाँ पहले वह सदा पति की संगत के लिये व्याकुल रहती थी और वह न प्राप्त होने पर वह पति से लड़ती और झगड़ती रहती थी, वहाँ अब उसे तब से बहुत कम संगत प्राप्त होती है, परन्तु उसके मन में शान्ति और सन्तोष व्याप्त रहता है।

सबसे विचित्र बात यह थी कि वह अपने को ईसाई मानती थी और प्रायः रविवार को गिरजाघर भी जाती थी, परन्तु उसे ईसाईयत की और ईसाई मतावलम्बियों की अनेक बातें पसन्द नहीं रही थीं। गो-मांस खाना तो उसके घर में सर्वथा वर्जित हो गया था। क्लब से उसे घृणा हो गयी थी। मद्य का सेवन बहुत कम हो गया था। प्रज्ञा तो केवल शाक-भाजी ही लेती थी। इस कारण मीनाक्षी का मांस-भक्षण भी कम हो गया था।

यह नहीं कि वह गो-मांस अथवा मांस खाने में किसी प्रकार का पाप समझने लगी थी, वैसे ही उसके मन में इसके और मद्य के लिये अरुचि उत्पन्न हो रही थी।

मीनाक्षी अपने में यह परिवर्तन देख, विस्मित थी।

: ७ :

विजय फरवरी, सन् १६०६ में छूटा। सुवर्णा, प्रभात या बच्चे भुवाली से लाहौर आ गये थे। विजय माउण्टगुमरी जेल में रखा गया था, परन्तु छूटने से पूर्व उसे लाहौर जेल में लाया गया। विजय की बहन कुमुदिनी भी कलकत्ता से लाहौर आ गयी थी। उसके चार बच्चे थे। प्रज्ञा बम्बई से नहीं आयी थी। उसने अपनी प्रसन्नता तार भेज कर प्रकट की थी और विजय को बम्बई आमन्त्रित किया था। विजय की पत्नी ललिता भी पति से मिलने के लिये लाहौर नहीं आयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल के द्वार पर से विजय को लेकर सब चौबुर्जी के समीप कोठी में आ गये। कोठी, अभी रखी हुई थी और उसमें माली, चौकीदार रखे थे। उनका पुस्तकालय भी अभी वहीं उसी कोठी में था।

विजय को ललिता के वहाँ न आने पर विस्मय हुआ, परन्तु उसने अपना विस्मय प्रकट नहीं किया। सुवर्णा ने स्वयं ही बताया, "वह बम्बई में पुनः चिकित्सा-कार्य करने लगी है। वहाँ वह परिवार से पृथक् रहती थी। प्रज्ञा ने उसे कई बार ज्ञान के मकान में आकर रहने का निमन्त्रण भी दिया है, परन्तु वह नहीं आयी।"

"तो बूआ और ज्ञान की सुलह हो गयी है क्या ?"

"अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि माँ-पुत्र की खूब गहरी छन रही है।"

विजय ने अपनी बहन से पूछ लिया, "कुमुद ! तुमने कुछ उन्नति की प्रतीत नहीं होती ?"

कुमुदिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "भैया ! उन्नति तो की है, परन्तु वह कलकत्ता में ही छोड़ आयी हूँ।"

"क्या है वह ?"

"लड़की है। अब लड़कियाँ तीन हो गयी हैं। लड़का एक ही है।"

"खैर, यह तो सन्तोषजनक समाचार है।"

इसका अभिप्राय था कि अन्य समाचार सन्तोषजनक नहीं थे। पिता पूना जेल में पाँच वर्ष की कैद का दण्ड भोग रहे थे; आनन्द छः वर्ष का दण्ड पा गया था; ललिता अब स्पष्ट रूप में रूठी हुई थी; माता जी और प्रभा भुवाली में रहती थीं। यह सब समाचार किसी प्रकार भी प्रसन्नता के सूचक नहीं थे।

पिता जी तथा आनन्द की बात तो समझ में आ सकती थी, परन्तु ललिता की बात वह समझ नहीं सका।

एक दिन लाहौर कोठी में रहकर परिवार के वहाँ से प्रस्थान का कार्यक्रम बनने लगा। कुमुद तो उसी दिन कलकत्ता लौट जाने वाली थी। उसने कह दिया, "भैया ! तुम कलकत्ता मत आना। वहाँ अभी वातावरण गरम है और चारों ओर सरकारी लट्ठ लक्ष्यहीन चल रहा है। कोई नहीं जानता कि कौन किस समय उस लट्ठ से घायल हो जाये।

"इस गरमी की ऋतु में भाभी सहित भुवाली आना तो मैं अपनी पूर्ण सृष्टि के साथ वहाँ आऊँगी।"

सुवर्णा का निश्चित मत था कि वह प्रभा और बच्चों के साथ भुवाली जायेगी और विजय को ललिता को बम्बई से कहीं बाहर ले जाकर रहना चाहिये। यदि वे दोनों भुवाली आ सकें तो बहुत ही ठीक होगा।

इसका अभिप्राय यह था कि विजय को पत्नी सहित भुवाली में शीघ्राति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र आना चाहिये। सुवर्णा ने कह दिया कि इस बार मैं पण्डितायिन इन्द्राणी को भी निमन्त्रण देने वाली हूँ। यदि वह आयी तो यह सम्भव है कि पूर्णिमा चाची भी उनके साथ चली आयें।

कुमुदिनी मध्याह्न की गाड़ी से कलकत्ता गयी और विजय सायं की गाड़ी से बम्बई चला गया। अगले दिन सुवर्णा इत्यादि भी भुवाली लौट गये।

बम्बई में विजय के छूटने की तिथि की सूचना भेजी गई तो प्रज्ञा ने ज्ञान के द्वारा ललिता को समाचार भेज दिया। ज्ञान ने जब अपनी माता जी का सन्देश दिया कि भुवाली से पत्र आया है और विजय दस फरवरी को प्रात: दस बजे लाहौर में लाकर जेल से छोड़ा जायेगा, तो ललिता ने कह दिया, "तो फिर मैं क्या करूँ?"

"माता जी ने और कुछ तो कहा नहीं। केवल सूचना भेजी है। इसका अर्थ मैं यह समझा हूँ कि उनके विचार से आपको लाहौर जाना चाहिये।"

"किसलिये?"

"विजय भैया से मिलने के लिये।"

"जिसको आवश्यकता होगी वह यहाँ आ जायेगा।"

"वह आयेगा तो अविनाश का क्या होगा?"

"क्या होगा?"

"यह यहाँ ही रहेगा अथवा कहीं अन्यत्र भेज दोगी?"

"मैं इसको छुपाने की आवश्यकता नहीं समझती।"

"परन्तु अभी तक तो छुपाकर रखा है?"

ललिता अनिश्चित-मन ज्ञानस्वरूप का मुख देखती रह गयी। बात ज्ञान ने ही आगे चलायी, "मैं समझता हूँ कि यह अच्छा होगा, यदि माता जी को विश्वास में ले लिया जाये।"

"उनकी रुचि मुझमें होती तो वे मुझे कभी मिलने आतीं और उनको पता चल जाता।"

"परन्तु वे कई बार तुम्हें अपने घर में चलकर रहने का निमन्त्रण दे चुकी हैं।"

"वहाँ जाती तो, अविनाश के पिता का ज्ञान कराना पड़ता। इससे भारी उपद्रव हो सकता था। मैंने यही ठीक समझा है कि जब तक चलती है चलने दो।"

"क्या उपद्रव हो सकता है? मैं तो बात को स्पष्ट रूप में कह देने के लिये अपने मन को तैयार कर चुका हूँ। यह अविनाश के जन्म से पहले ही मैं विचार कर चुका था।"

"तो फिर आप पहले अपने घर में बता दीजिये। इतना कहिये कि आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लड़का एक अन्य पत्नी से है और आप उसे अपने घर में लाने के लिये उत्सुक हैं। अभी बच्चे की माँ का नाम मत बताइये। इसकी प्रतिक्रिया अपनी पत्नी और माँ पर बताइयेगा। तब ही मैं प्रकट होऊँगी।"

"मैं तो यह कहने के लिये पहले भी तैयार था।"

"तो अब क्या बिगड़ गया है ? आपके भाई, सोम के पिता के बम्बई में आने से पूर्व यह भूमि तैयार कर रखें तो सब ठीक होगा। तब हम अपने विषय में भी विचार कर लेंगे।"

ज्ञान घर लौटा तो प्रज्ञा ने पूछ लिया, "ललिता लाहौर कब जा रही है ?"

"वह नहीं जा रही।"

"क्यों ?"

"बताया नहीं।"

"मैं तो जा रही हूँ।"

"मीनाक्षी भी साथ जायेगी ?"

"जैसे उसकी इच्छा है।"

"पर माता जी ! इस घर में एक प्राणी और आना चाहता है।"

"सत्य ?" प्रज्ञा समझी कि मीनाक्षी के गर्भ ठहर गया है। उसे विस्मय यह हुआ कि मीनाक्षी उससे बहुत घुल-मिल चुकी थी और उसने नहीं बताया; और न ही वह स्वयं उसमें इसके लक्षण देख सकी थी।

"हाँ, माता जी ! हमारी कोठी में स्थान तो पर्याप्त है। वह प्राणी आयेगा तो उसकी माँ भी आयेगी।"

प्रज्ञा समझ गई कि उसका अनुमान गलत है। ज्ञान ने तो किसी बाहर के बच्चे और उसकी माँ के विषय में कहा है। इस पर उसने पूछ लिया, "और उसकी माँ का घरवाला नहीं आयेगा क्या ?"

"वह तो पहले ही घर में रहता है।"

इस पर प्रज्ञा ज्ञान का मुख देखती रह गयी। मीनाक्षी भी सामने बैठी वार्त्तालाप सुन रही थी। अब इस नये प्राणी के आने की बात सुन वह भी सतर्क हो, माँ-पुत्र की बात सुनने लगी थी।

प्रज्ञा ने कुछ न समझते हुए पूछ लिया, "कौन है वह ? ज्ञान, साफ और सीधी बात कहो।"

"माता जी ! आपके घर में आपका लड़का ज्ञान रहता है। उसका एक लड़का अविनाश नाम का एक दूसरी पत्नी से है। मैं उसे इस घर में लाने के लिये उत्सुक हूँ। उसकी माँ भी साथ आना चाहती है।"

प्रज्ञा मूर्तिवत् सामने बैठी रह गयी। मीनाक्षी भी अवाक् बैठी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानस्वरूप ने आगे पूछ लिया, "माता जी ! उसको ले आऊँ ?"

आखिर प्रज्ञा ने बात समझ कहा, "मीनाक्षी से पूछ लो ।"

"आप बताइये कि आप उसका इस कोठी में रहना पसन्द करेंगी अथवा नहीं ?"

"मेरे पसन्द करने अथवा न करने के कुछ अर्थ नहीं । मीनाक्षी ने यहाँ रहना है । वह ही पसन्द अथवा न पसन्द करेगी ।"

"उसकी मुझे चिन्ता नहीं है । नहीं पसन्द करेगी तो वह मुझे छोड़ सकती है । हमारा विवाह प्रोटैस्टैण्ट गिरजाघर में हुआ था । उसमें तलाक सुगमता से मिल सकता है; परन्तु संसार में माँ से तलाक की बात नहीं सुनी ।"

"नहीं ज्ञान ! तुम समझे नहीं । माँ तो पुत्र को बिना कचहरी जाये भी छोड़ सकती है । पत्नी के लिये अदालत में जाने की आवश्यकता होती है । इस कारण मैं समझती हूँ कि तुम दोनों चाहो तो मेरे सामने और न चाहो तो मेरे परोक्ष में बैठ कर इस समस्या पर विचार कर लो ।"

"पर माता जी !" मीनाक्षी ने बात को समझ कह दिया, "यदि यही बात इन्होंने आज से एक वर्ष पूर्व की होती तो मैं अपने जूते से इनकी खोपड़ी गरम कर देती । परन्तु अब बात दूसरी है । मैं अपने को प्रत्येक बात सुनने और सहन करने के योग्य समझती हूँ । साथ ही आपसे भी सम्मति करना चाहूँगी । मैं आपके पुत्र से यह जानना चाहूँगी कि क्या वह इतनी सुन्दर है कि उस पर मुग्ध हो, उसे सन्तान देने पर विवश हो गये हैं ?"

"यह तो जब वह स्वयं यहाँ आयेगी तो आपको पता चल जायेगा । मैंने तो एक सिद्धान्त की बात पूछी है । क्या मैं अपनी दूसरी पत्नी के साथ इस घर में आकर रह सकता हूँ ?"

"बताओ मीनाक्षी ! क्या कहती हो ?"

"मैं तलाक दे सकती हूँ, परन्तु इसके विषय में अनिश्चित हूँ । मैं अनुभव करती हूँ कि इस दिशा में हिन्दू-प्रथा श्रेष्ठ है । उसमें तलाक नहीं दिया जा सकता, पृथकता हो सकती है । अतः मैं सोचती हूँ कि मैं हिन्दू ही क्यों न हो जाऊँ ?"

"यह भी तुम्हारे विचार करने की बात है । इसमें मैं कुछ भी सम्मति नहीं दे सकती ।" प्रज्ञा ने निर्लेप भाव में कह दिया ।

"परन्तु मेरा विवाह तो गिरजाघर में हुआ था । हिन्दू रीति-रिवाज से नहीं हुआ ।" ज्ञान का कहना था ।

"यह ठीक है । तो आप अदालत में जा सकते हैं । मेरा चित्त नहीं करता ।"

"परन्तु तुमने कोई खराबी तो की नहीं । अतः मैं तलाक क्या दोष लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दूँ ?"

"मैं कोई ख़राबी करूँगी भी नहीं, न ही अदालत में जाऊँगी।"

"और उस औरत से नाख़ून तथा दाँतों से लड़ोगी ?"

"यह तो अभी निश्चय नहीं किया। यदि वह सुन्दर, सभ्य और सुशील हुई तो सहन भी की जा सकती है।"

"अर्थात् उसकी परीक्षा कर ही तुम उसे यहाँ रहने का निमन्त्रण दे सकोगी ?"

"निमन्त्रण नहीं, उसको सहन करने की बात कह रही हूँ। साथ ही उसकी परछाईं में आपका क्या रंग निकलता है, यह भी तो देखना होगा।"

"उसे यहाँ लाकर रखने से ही, यह सब-कुछ पता चल सकेगा। बिना उसको यहाँ लाकर रखे, उसकी परछाईं का प्रभाव कैसे पता चलेगा ?"

"अपनी माता जी से पूछ लो।"

"हाँ तो माता जी ! आप बताइये ?"

"देखो ज्ञान ! मैं यहाँ रहूँगी नहीं। इस कारण नहीं कि मेरा उस अपरिचित से किसी प्रकार का द्वेष है। यह इस कारण कि मैं तुम जैसे दुर्बलात्मा के साथ रह सकना उचित नहीं समझती।"

"माता जी ! यदि आप नाराज़ हैं तो मैं उसे यहाँ नहीं लाऊँगा।"

"उसे यहाँ लाने न लाने से तुम्हारे आत्मा की दुर्बलता अथवा सबलता का कोई सम्बन्ध नहीं हैं। यह तो सिद्ध हो चुकी है।"

"अच्छा माता जी ! ऐसा करिये कि पहले उसको देख लीजिये। उसके लड़के को भी देख लें। तब आप मेरे आत्मा की शक्ति का अनुमान लगाइयेगा। मैं समझता हूँ कि जब आप उसे देखेंगी तो मुझे दोष नहीं दे सकेंगी। मैं भी तो मनुष्य हूँ और उसकी सब दुर्बलताओं का स्वामी हूँ।"

"वह कहाँ है ?"

"मैं उसे कहीं अन्यत्र छोड़ आया हूँ। आपसे पूछकर उसे लाना चाहता था।"

"जैसा मन में आये करो।"

यही तो ज्ञान चाहता था। एक बात वह समझ चुका था कि उसे एक दिन ललिता से अपना सम्बन्ध घोषित करना पड़ेगा। यदि करना ही है तो जितना जल्दी किया जाये, उतना ही अच्छा है। अतः माँ के मुख से निकलते ही कि 'जैसा मन में आये करो' वह उठकर घर से निकल गया। मीनाक्षी उसको जाता देखती रह गयी। जब वह चला गया तो अपनी सास से वह पूछने लगी, "माता जी ! अब क्या होगा ?"

"मैं इस घर में नहीं रहूँगी। आज मध्याह्नोत्तर की गाड़ी से लाहौर के

—११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये चल दूंगी। तदनन्तर विजय के साथ यदि सब परिवार बम्बई आया तो मैं भी आऊँगी और उस नूर महल को देख लूंगी।"

"मैं भी आपके साथ चलूंगी।"

"देख लो कि इस समय पति को छोड़ कर जाना ठीक रहेगा अथवा नहीं?"

"घर में दो पत्नियों का रहना सदा कलह-क्लेश का कारण हो सकता है। साथ ही इसका बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।"

"अपने कर्मों का फल ही तो सबको प्राप्त होता है। बच्चों को भी होगा।"

यद्यपि प्रज्ञा ने मीनाक्षी को कुछ नहीं कहा था; इस पर भी वह घर छोड़ने की तैयारी में थी। उसने अपने कपड़ों का सूटकेस तैयार कर लिया। अपने भूषण तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं को उसने सूटकेस में रख लिया। प्रज्ञा उसे तैयार होते देख रही थी। वह स्वयं भी अपना लाहौर जाने का बिस्तर तैयार कर रही थी। गाड़ी सायं पाँच बजे 'विक्टोरिया टर्मिनस' से चलती थी और अभी तीन नहीं बजे थे कि ज्ञान, ललिता तथा उसके लड़के अविनाश को लेकर आ गया।

तीनों एकाएक ड्रायंग-रूम में आ खड़े हुए। वहाँ कोई नहीं था। मीनाक्षी अपने कमरे में सामान बाँध रही थी और प्रज्ञा अपना संक्षिप्त-सा सामान बाँध चुकी थी और एक घण्टा-भर आराम करने के लिये अपने सोने के कमरे में जाकर पलंग पर लेटी हुई थी। ललिता सोफा पर बैठ गयी और सोये बच्चे को उसने अपने समीप सोफा पर लिटा दिया। ज्ञान ड्रायंग-रूम से बाहर ललिता का सामान उठवा कर लाने चला गया। बैरा रॉबर्ट रसोईघर में था और चाय का प्रबन्ध कर रहा था। इस समय ड्रायंग-रूम में हलचल सुन प्रज्ञा बाहर आ गयी। ड्रायंग-रूम में ललिता को बैठा देख पूछने लगी, "ललिता! नमस्ते। कैसे आयी···।"

वह आगे कह नहीं सकी। उसे बात समझ में आने लगी थी। उसने ललिता के समीप सोफा पर बच्चे को लेटा देख लिया था। उसने पूछ लिया, "यह किसे उठा लायी हो?"

"यह घर में आ गया है। पता चला है कि आप इसे देखना चाहती हैं, इस कारण इसे ले आयी हूँ।"

ललिता का सूटकेट और एक ट्रंक घोड़ा-गाड़ी में साथ आया था। ज्ञान चौकीदार और बैरा से उठवा कर उसे भीतर ले आया।

"तो तुम यहाँ रहने आ गयी हो?" प्रज्ञा सब समझ गयी थी और वह इस प्रश्न पर विचार करने लगी थी कि अब क्या करें? इस समय ड्रायंग-रूम में बातें होती सुन, मीनाक्षी भी अपने कमरे से निकल आयी। वह भी ललिता और बच्चे को वहाँ लेटे देख, सब बात समझ गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

"तो तुम हो ?" मीनाक्षी ने पूछ लिया।

"हाँ; और यह है।" ललिता ने समीप सो रहे बच्चे की ओर संकेत कर दिया।

"अच्छी बात है। मैं तुम्हारे लिये कमरा खाली कर रही हूँ।"

अब ज्ञानस्वरूप ने सम्मति दे दी। उसने कहा, "इसके लिये तो दूसरा कमरा निश्चय किया है।"

"किसने निश्चय किया है ?"

"मैंने।"

मीनाक्षी कुछ देर तक ललिता और अपने पति की ओर देखती रही। फिर कुछ विचार कर बोली, "अच्छी बात है श्रीमान् जी ! इसे इसके कमरे में ले जाइये।"

"और तुम ?"

"मैं माता जी से सम्मति करना चाहती हूँ।"

"मुझसे पृथक् ?"

"हाँ; हम लाहौर जाने की तैयारी कर रहे थे। कुछ उसी विषय में बात करना चाहती हूँ।"

"आओ ललिता !" ज्ञान ने ललिता को बुलाया और चौकीदार तथा बैरा को सामान पिछवाड़े के कमरे में ले चलने के लिये कह दिया।

सामान गया तो ज्ञानस्वरूप उसे रखवाने के लिये वहाँ जा पहुँचा। ललिता वहाँ ही बैठी रही। मीनाक्षी ने जब ललिता को उठते नहीं देखा तो अपनी सास से कहने लगी, "माता जी ! अब लाहौर नहीं जायेंगे।"

प्रज्ञा मुस्कराती हुई पूछने लगी, "क्यों, इसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गयी हो ?"

"नहीं माता जी ! मैं समझती हूँ कि ललिता को यहाँ से भगा देना सहज ही है और यह बच्चा फोकट में मिल जायेगा।"

प्रज्ञा भी ललिता के ज्ञान से सम्बन्ध को देख कर, लगभग इसी दिशा में विचार करने लगी थी। वह विचार करती थी कि यदि विजय और ज्ञान को विवेक का पाठ पढ़ाया जा सके तो मूर्ख लड़की की सद्गति हो सकती है। उसने अब मीनाक्षी को भी इस दिशा में विचार करते देखा तो कह दिया, "ठीक है। मैं लाहौर तार देकर, विजय को यहाँ आने का निमन्त्रण दे देना चाहती हूँ और तब तक यहाँ रहना ही ठीक है।"

ललिता समझ रही थी कि ये दोनों स्त्रियाँ उसे घर से निकलवाने का षड्यन्त्र करना चाहती हैं। इस पर भी वह अपने को मीनाक्षी से अधिक सुन्दर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र समझ, विश्वास से भरी हुई बैठी थी। उसने कहा, "ठीक है बूआ जी ! सोम के पिता को बुला लीजिये और उनसे मैं निपट लूंगी।"

इस समय ज्ञान आ गया। उसने ललिता को सन्तोषपूर्वक अभी वहीं बैठे देखा तो कह दिया, "मैंने चौकीदार की बीवी को बच्चे की देख-भाल के लिये नौकर रख लिया है और मैं समझता हूँ कि वह आती ही होगी। बाहर गाड़ी खड़ी है। तुम बच्चे को दूध पिला दो और अपने क्लिनिक को जाने की तैयारी कर दो। सायंकाल मैं वहाँ आऊँगा और तुम्हारे साथ ही यहाँ चला आऊँगा।"

ललिता ने कहा, "मेरी बूआ जी से बात हो गयी है। अब आपको इनसे झगड़ा नहीं करना चाहिये।"

"झगड़ा ? नहीं ललिता, मैं झगड़ा नहीं करूँगा। इनके लिये पूर्ण स्वन्त्रता है कि ये जहाँ चाहें, जायें अथवा रहें। मैं तो इनका पुत्र हूँ। इनको प्रसन्न करने का ही यत्न करता रहूँगा।"

ललिता ने बच्चे को उठाया और कमरे में चली गयी। पूर्ण कोठी उसकी पहले से ही देखी-माली थी और वह सीधी उस कमरे में चली गयी, जो उसके लिये ज्ञान ने निश्चय किया था।

ज्ञान ने पूछ लिया, "माता जी ! अब ?"

"मैं लाहौर नहीं जा रही। इस मूर्ख लड़की को कुछ शिक्षा की आवश्यकता है। इसीलिये यहाँ ठहरी हूँ।"

प्रज्ञा ने लाहौर तार भेज दिया। इसमें उसने विजय के छूटने पर प्रसन्नता प्रकट की और साथ ही उसको बम्बई आने का निमन्त्रण दे दिया।

जब ज्ञान ने तार का फार्म पढ़ा कि प्रज्ञा ने विजय को तुरन्त आ जाने के लिये लिखा है तो वह गम्भीर विचार में पड़ गया। वह विचार करता था कि यह क्रान्तिकारी क्या उसकी पत्नी के अपहरण का बदला उसकी जान लेकर करेगा ?

प्रज्ञा ने चौकीदार को दाम दिया तथा तुरन्त तारघर जाकर तार देने के लिये कह दिया। जब चौकीदार चला गया तो ज्ञानस्वरूप ने माँ से पूछा, "माता जी ! विजय को बुलाने की क्या आवश्यकता थी ? वह तो स्वयं ही यहाँ आता।"

"अपनी पत्नी का उसके प्रति तिरस्कार देख वह नाराज़ हो, नहीं भी आ सकता था। मैंने उसे बुलाया है। साथ ही मैं नहीं जा रही। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि वह यहाँ किसी प्रकार की अव्यवस्था का अनुमान लगा कर ही आयेगा। सम्भव है कि पूर्ण परिवार ही आ जाये।"

"मैं चाहता था कि ललिता स्वयं उसको लिखती; परन्तु जब वह यहाँ आ ही रहा है तो फिर लिखने की आवश्यकता नहीं रही। अब मौखिक बात होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें एक दोष है। वह यह कि दोनों पक्ष शान्ति से बात कर नहीं सकेंगे। क्रोध में वस्तुस्थिति विस्मरण कर कुछ अनिष्ट कर बैठेंगे।"

"इससे क्या अन्तर पड़ जाता ज्ञान! किसी ने काम-वश अनिष्ट किया है और कोई क्रोध-वश अनिष्ट कर सकता है। दोषी तो दोनों ही हैं। और भी दोष हैं। लोभ, मोह तथा अहंकार के वश भी तो अनिष्ट किये जाते हैं। किसी भी कारण से किया जाये, अनिष्ट तो अनिष्ट ही होता है।"

ज्ञान भी समझा था कि विजय का अपनी बूआ के सम्मुख आना ही ठीक रहेगा। जो कुछ भी निर्णय होगा, शान्तिपूर्वक होगा। उसे ललिता के मनोभावों पर विश्वास था और वह समझता था कि वह मीनाक्षी से अधिक उससे प्रेम करती है।

मीनाक्षी ने इस नयी परिस्थिति का ज्ञान अपनी माँ राजेश्वरी को भी करा दिया।

विजय बम्बई पहुँच सीधा बूआ के पास चला आया। प्रज्ञा आशा करती थी कि सुवर्णा इत्यादि भी आयेंगी; परन्तु उसे विजय को अकेले आये देख विस्मय हुआ।

विजय जब बूआ के सामने उपस्थित हुआ तो प्रज्ञा ने विस्मय में पूछ लिया, "अकेले आये हो विजय?"

"हाँ, बूआ! तुम किसी अन्य की भी आशा करती थीं क्या?"

"कम-से-कम अपने बच्चों को तो ले आते।"

"उनकी माँ ने उन्हें अपने पास रखना उचित नहीं समझा। क्यों, पहले यही जानना आवश्यक था।"

"अच्छी बात है। सामान रखो और स्नानादि से निवृत्त हो जाओ। अल्पाहार तैयार हो जाता है।"

ज्ञान अपने काम पर गया हुआ था। ललिता अपने क्लिनिक को गयी हुई थी। मीनाक्षी ललिता के बच्चे और अपने बच्चों को ले, घूमने गयी हुई थी।

विजय स्नानादि से निवृत्त हो भोजन करने की मेज़ पर आया तो प्रज्ञा ने उसके ललिता से मिलने के पूर्व, पूर्ण परिस्थिति से अवगत करा देना उचित समझा। उसने बात आरम्भ कर दी।

उसने कहा, "यह तुमको तुम्हारी माता जी ने बताया होगा कि ललिता ने 'प्राइवेट प्रैक्टिस' आरम्भ कर दी है?"

"हाँ बूआ! यह बात तो पिता जी ने जेल में ही लिख भेजी थी। माता जी ने तो यह कहा है कि उसे चिकित्सा-कार्य से अवकाश नहीं मिला होगा, तभी वह लाहौर नहीं आयी।"

"वह अब यहाँ इसी कोठी में रहने लगी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्य ?"

"हाँ, और ज्ञान की पत्नी उसके नवजात शिशु को लेकर घूमने गयी हुई है।"

"नवजात ? कब हुआ है उसके बच्चा ?"

"वह अब साढ़े पाँच महीने का है।"

विजय खाता-खाता रुक गया और विस्मय में बूआ का मुख देखने लगा। प्रज्ञा ने बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिये कह दिया, "ललिता ने प्रसव पूना के हस्पताल में जाकर किया था। वहाँ से लौट उसने अपने क्लिनिक के ऊपर वाले मकान में बच्चे सहित न रह सकने के कारण यहाँ आकर रहना आरम्भ कर दिया है।"

"और वह बच्चे के पिता के घर क्यों नहीं गयी ?"

"उसी के घर में आयी है। मेरा अभिप्राय है कि ज्ञान से उसका सम्बन्ध बन गया है।"

"तो बूआ ! तुमने मुझे यहाँ किसलिये बुलाया है ?" विजय ने भोजन करना छोड़ दिया था और माथे पर त्योरी चढ़ा, बूआ के मुख पर देखने लगा था।

प्रज्ञा ने कहा, "विजय ! यह क्रोध करने का विषय नहीं है। मैं चाहती थी कि तुम्हारी पत्नी के विषय में तुम स्वयं आकर निश्चय करो कि उससे क्या व्यवहार करना है। मैंने भी मन में कुछ निश्चय किया हुआ है, परन्तु तुम दोनों के परस्पर निर्णय करने में मेरे निश्चय से अन्तर न पड़े, इसी कारण पहले तुम विचार करो कि क्या करना उचित है।

"पहले पेट-भर खा-पी लो, तब विचार करो। वह तुम्हारे बच्चों की माँ है। अतः देख लो कि क्या करना चाहिये और क्या हो सकता है ?"

विजय पीत मुख बैठा, बूआ का मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने जल्दी-जल्दी अल्पाहार समाप्त किया और खाये के ऊपर एक प्याला चाय पी, उठ खड़ा हुआ।

खाने के कमरे से बाहर ड्रायंग-रूम में आया तो मीनाक्षी दो बच्चों को लिये वहाँ बैठी थी। प्रज्ञा विजय के साथ आयी थी और उसने मीनाक्षी का परिचय करा दिया।

विजय ने हाथ जोड़ नमस्कार कर कहा, "भाभी ! यह क्या बोझा ढो रही हो ?"

विजय ने छोटे बच्चे की ओर संकेत कर दिया। वह मीनाक्षी की गोद में था। मीनाक्षी का अपना बच्चा पॉल उसके समीप सोफा पर बैठा था। वह इस समय तीन वर्ष से ऊपर की आयु का था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनाक्षी ने सामने रखी कुर्सी पर बैठने के लिये कहा, "भैया, बैठो।"

विजय बैठ गया तो उसने कहा, "जौन के पिता ने किसी दूसरे के खेत में एक गुलाब का पौदा लगा दिया है। उस पौदे पर यह फूल लगा देख, मैं उसे उखाड़ अपने घर ले आना चाहती हूँ।"

विजय इस अलंकार को सुन मुस्कराया और पूछने लगा, "पर भूमि जिस पर पौदा लगा है, आपत्ति करेगी।"

"भूमि तो निर्जीव होती है। हाँ, पौदा लगाने वाला रुष्ट न हो जाये, यही चिन्ता है। परन्तु उसे प्रसन्न करना सुगम होगा। कारण यह कि यह फूल उसके घर में लगे गुलदस्ते में ही लगाने का विचार कर रही हूँ।"

इस पर विजय की हँसी निकल गयी। फिर एकाएक उसने गम्भीर हो पूछ लिया, "इसका यह अर्थ है कि जहाँ कहीं भी जौन का पिता फूल लगायेगा, वहाँ से तुम उखाड़ लाना अपना अधिकार मानती हो ?"

"नहीं, यह नहीं। सब स्थान के फूल एक समान सुन्दर और गुलदस्ते में लगाने योग्य होंगे अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। साथ ही गुलदस्ते में स्थान भी तो होना चाहिये।"

"परन्तु सुन्दर भूमि तो है और बीज डालने वाला भी, जौन का पिता, उपस्थित है तो फिर फूलों की कमी नहीं होनी चाहिये।"

"हाँ, यदि भूमि का पहला स्वामी उस पर अपना दावा कर उसे जौन के पिता से वापस न ले सका तो यह भी हो सकता है।"

"इस फूल उत्पन्न करने वाली भूमि से जौन के पिता का अधिकार कैसे हटाया जाये और फिर क्यों हटाया जाये ? यही तो विचारणीय प्रश्न है।"

मीनाक्षी ने बात आगे चलाते हुए कहा, "यह भूमि के स्वामी के विचार करने का विषय है। मुझ जैसे फूलों के लुटेरों के विचार का विषय नहीं।"

"हाँ, भाभी ! विचार कर रहा हूँ। एक विचार है कि इस भूमि को अपने भाग्य पर छोड़, किसी अकृष्ट भूमि की खोज क्यों न करूँ ? ज्ञान दादा को ही इस पर फूल अथवा काँटे उत्पन्न करने के लिये छोड़ दूँ।"

"यह भैया, तुम विचार कर लो। आखिर जौन के पिता भी तो इसे छोड़ कर जा सकते हैं। यह फूल तो सुन्दर बन गया है। क्या जाने अब आगे काँटे उगेंगे अथवा केवल पत्ते ही।"

प्रज्ञा ने कहा, "परायी भूमि पर भूल से भी तो बीज पड़ सकता है। भूल का ज्ञान होने पर ले-देकर निपटा जा सकेगा।"

विजय ने कहा, "जब भूल का प्रश्न उपस्थित होगा तो यह भी विचार करना पड़ेगा कि यह भूमि निर्जीव नहीं है। इसमें भी जीवन है और बुद्धि है। उसने भी तो बीज स्वीकार करने से पूर्व कुछ विचार किया ही होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि," प्रज्ञा ने कह दिया, "भूमि बुद्धि-विहीन है अथवा दुर्बल बुद्धि रखती है। उसकी बुद्धि पर भरोसा करने के स्थान, भूमि के स्वामी को अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिये।"

"बूआ! यह बिना आतिथेय के भोजन करने की कल्पना की जा रही है।"

प्रज्ञा चुप कर गयी। यह सत्य था कि वह नहीं जानती थी कि ललिता के विजय के प्रति क्या विचार हैं? वह स्वयं यह कल्पना कर रही थी कि ललिता का दूसरा लड़का तीन वर्ष का हो चुका था और उसकी अन्तरात्मा एक अन्य सन्तान के लिये इच्छा कर रही होगी। इसी इच्छा से प्रेरित वह ज्ञान के दामन में जा गिरी है। विजय के कहने का यह अर्थ था कि ललिता सज्ञान है और उसने जो कुछ किया है, जान-बूझ कर किया है। यह बात दूसरी है कि उसने इसमें क्या लाभ विचार किया है। साथ ही वह जहाँ पहुंच चुकी है, वहाँ से लौटने का विचार रखती है अथवा नहीं।

फिर उसके लौटने पर उसे पुनः अपने पुराने स्थान पर स्थापित किया जाये अथवा नहीं? यह प्रश्न तो तब उपस्थित होगा, जब लौटने वाला लौटने के लिये तैयार हो। अतः, विजय ने बूआ को कह दिया कि वह क्या चाहती है, यह जाने बिना विचार करना व्यर्थ है कि उसे क्या करना चाहिये?

इस समय बारह बज रहे थे। ललिता के चिकित्सालय से लौटने का समय एक बजे था। अतः एक घण्टा-भर आराम करने और एकान्त में विचार करने के लिये विजय उस कमरे में चला गया, जिसमें उसे ठहराया गया था।

: ६ :

ललिता को विजय के आने का समाचार मीनाक्षी ने दिया। इस पर ललिता ने पूछा, "और कौन आया है?"

मीनाक्षी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "ललिता बहन! और किसकी अभिलाषा करती थीं तुम?"

"अभिलाषा? किसी की भी नहीं।"

"तब ठीक है। वह अकेला ही आया है। अभी उस साथ वाले कमरे में विश्राम कर रहा है।"

ललिता ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह अपने कमरे में चिकित्सालय के वस्त्र बदलने चली गयी। अपने कमरे के बाहर हलचल का शब्द सुन, विजय समझ गया कि ललिता आ गयी है। इस समय तक वह अपने व्यवहार का निश्चय कर चुका था। इस पर भी वह अपने कमरे में बैठा एक पुस्तक, जो वह रेल्वे-स्टेशन के बुक-स्टाल से मोल लाया था, पढ़ता हुआ बैठा रहा। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। उसकी बूआ आयी और पूछने लगी, "विजय ! भोजन खाने के कमरे में करोगे अथवा यहीं ?"

"वहाँ क्या है बूआ ?"

"ललिता है।"

"तो क्या हुआ ? मैंने उस पर अपना दावा छोड़ दिया है।"

"तब ठीक है। चले आओ।"

वह पुस्तक छोड़, भोजन करने के कमरे में जा बैठा। ललिता और मीनाक्षी वहाँ पहले ही बैठी थीं। ज्ञान मध्याह्न का भोजन कारखाने में ही लेता था। वहाँ ही वह हल्का खाना किसी उपहार-गृह से मँगवा लेता था।

ललिता मेज की ओर देखती हुई बैठी थी। वह विजय से किसी प्रकार के अभिवादन की आशा कर रही थी। इसके विपरीत विजय ने ऐसा भाव बना रखा कि मानो एक अपरिचित स्त्री वहाँ बैठी है और उसके प्रति आदर के विचार से बिना मतलब के न बोला जाये।

मीनाक्षी लाहौर की बातें पूछने लगी, "विजय जी ! मामी जी कैसी थीं ?"

"प्रत्यक्ष रूप में तो स्वस्थ और प्रसन्न प्रतीत होती थी।"

"और प्रभा बहन ?"

"वह आजकल बच्चों के लिये पाठ्य-पुस्तकें लिखने का यत्न कर रही है। चित्रकला में उसे रुचि है। वह बच्चों के लिये व्यंग-चित्र बनाती है और उनके आधार पर स्कूल से बाहर पढ़ने की पुस्तकें तैयार कर रही है। प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी की पुस्तकें उसने तैयार की हैं और उनके लिये वह कोई प्रकाशक ढूंढ रही थी। वह पुस्तकें छापने का प्रबन्ध विलायत से कराना चाहती है, परन्तु अभी कुछ निश्चय नहीं हुआ।"

"सोम और जौन कैसे हैं ?"

"बहुत मज़े में हैं। सोम तो माता जी से तथा प्रभा से पढ़ रहा है और चारु प्रभा के ब्रुश और रंगों से खेलता है।"

"और भैया ! तुम्हारा अब क्या कार्यक्रम है ?"

"मैं अपनी एक वस्तु बम्बई में भूल गया था, उसे लेने आया था।"

"तो वह मिली है ?"

"नहीं; बम्बई के जन-समूह में विलुप्त हो गयी प्रतीत होती है।"

"कहाँ रखी हुई थी वह वस्तु ?"

विजय ने ललिता के उस समय के घर का पता बता दिया, जब वह हस्पताल में काम करती थी।

अब बात समाप्त करने के लिये मीनाक्षी ने कह दिया, "यहाँ तो सागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। एक बार उसमें कुछ गिर पड़ा तो फिर मिल नहीं सकता।"

"मैं भी कुछ ऐसा ही समझा हूं। यहां से लौट जाने का विचार कर लिया है।"

"कब ?"

"यहां मुझे एक-दो व्यक्तियों से मिलना है। यदि आज वे मिल गये तो कल मध्याह्नोत्तर की गाड़ी से चल दूंगा।"

"यदि आपकी माता जी निमन्त्रण दें तो इस ग्रीष्म-ऋतु में मुझे सुवाली जाने की इच्छा हो रही है।"

"निमन्त्रण की क्या आवश्यकता है, मीनाक्षी बहन ! तुम तो घर की लड़की तुल्य हो। बिना सूचना के भी वहां जाओगी तो आदर सहित स्वागत पाओगी।"

"परन्तु क्या आप भी वहां मिलेंगे ?"

"मैंने अभी कुछ निश्चय नहीं किया कि कहां रहूंगा ? अभी जीवन का कार्यक्रम भी निश्चय नहीं किया।"

"और पहले कार्यक्रम का क्या हुआ ?"

"पहला कौनसा कार्यक्रम ?"

"लैक्चर देने का।"

"वह तो चलेगा, परन्तु उतने मात्र से काम चलेगा नहीं। कुछ अन्य काम भी करना होगा।"

"उदाहरण के रूप में क्या ? क्या अब बम्ब, पिस्तौल भी चलेंगे ?"

"उसकी शिक्षा मुझे नहीं मिली। मैं आनन्द की भांति काम नहीं करना चाहता कि बम्ब घर में पड़े-पड़े ही फटने लगें। इसकी शिक्षा के लिये कहीं विदेश में जाना होगा। उसके लिये अभी साधन नहीं हैं।"

"पर भैया ! यह काम भी अच्छा नहीं।"

"भाभी, अच्छे उद्देश्य की पूर्ति के लिये जो कुछ भी किया जाये, वह अच्छा ही है; परन्तु अच्छे उद्देश्य के लिये भी कार्य सुघड़ाई से करना आवश्यक है। अनाड़ियों की भांति किया काम कभी उद्देश्य की पूर्ति के स्थान, हानि भी कर सकता है।"

भोजन समाप्त हो गया। सबसे पहले ललिता उठी और 'बेसिन' में हाथ धोने चली गयी। हाथ धो, वह एक भी शब्द बोले बिना, सीधी अपने कमरे में चली गयी।

विजय भी उठा और हाथ धो अपने कमरे में जाने लगा तो प्रज्ञा ने उसके साथ-साथ चलते हुए कह दिया, "विजय ! कमलनारायण को जानते हो ?"

"नहीं। नाम सुना है, परन्तु जान-पहचान नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसकी एक पत्नी है कैंटालीना। कुछ दिन हुए उससे तुम्हारे विषय में बात हुई थी। वह तुमसे मिलने की इच्छा करती थी।"

"किस मतलब से ?"

"मैं समझती हूँ कि एक क्रान्तिकारी से भेंट करने की लालसा से। वह एक स्पैनिश स्त्री की एक हिन्दुस्तानी से सन्तान है। दोनों के रक्त की भागीदार होने से विचित्र प्रवृत्ति की स्त्री है वह। पिछले वर्ष उसने पाँच लाख रुपया लगा, कर ईसाई धर्म के प्रचार के लिये एक दैनिक समाचार-पत्र चलाने की योजना बनाई थी; परन्तु भैया के सम्पर्क में आने पर, एक उग्र राष्ट्रवादी पत्र चलाने लगी। भैया सम्पादक बन गये। परिणाम यह हुआ कि भैया तो पकड़, पाँच वर्ष के लिये जेल में डाल दिये गए और उसका समाचार-पत्र तथा मुद्रणालय ज़ब्त हो गया।

"उसने मुद्रणालय छुड़वाने के लिये मुकद्दमा किया हुआ है और वह मुकद्दमा हाई कोर्ट में है।"

"तब तो वह एक दर्शनीय प्राणी है।"

दोनों ड्रायंग-रूम में जा पहुँचे। विजय बूआ को साथ आते देख, अपने कमरे में जाने के स्थान, ड्रायंग-रूम को चल पड़ा था। वहाँ दोनों बैठे तो मीनाक्षी भी वहाँ आ गयी। उसे देख प्रज्ञा ने कहा, "कमलनारायण मीनाक्षी का मामा है और कैंटालीना इसी से मिलने आयी थी तो तुम्हारे विषय में बात चल पड़ी थी। उसने इच्छा प्रकट की थी कि तुम्हारे छूटने पर उसे बताया जाये।"

"कहाँ मिलेगी वह ?"

मीनाक्षी ने कह दिया, "भैया! कैंटालीना से मिलने जाना हो तो मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगी।"

विजय ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "मालूम होता है मामी की मामी, मामी से बहुत स्नेह रखती है ?"

"हाँ, यह तो है ही। बहुत मज़ेदार बातें करती है।"

"तब तो उससे मिलने चलना चाहिये।"

"तो सायं चाय वहाँ लेंगे।"

"अनामन्त्रित ही ?"

"यही तो आपने कहा है कि परिवार के प्राणियों को परिवार के किसी भी सदस्य के घर बिना सूचना के जा धमकना चाहिये।"

"तुम्हारी बात तो ठीक है, परन्तु मैं तो उसके परिवार में हूँ नहीं।"

"वह आपके पिताजी की बहुत प्रशंसक है।"

"क्या प्रशंसा करती है वह ?"

"वह उन्हें पण्डित जी कहकर पुकारा करती है और कहती है कि उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक विषय की विवेचना अत्यन्त स्पष्ट, युक्तियुक्त और प्रभावी होती है।"

"ऐसा करें कि यहाँ चाय कुछ समय से पूर्व ले लें और वहाँ चाय के समय पर पहुँच जायें।"

"क्या लाभ होगा इससे ?"

"पंजाब में एक कहावत है कि घर से खाकर जायें तो आगे के लोग खाना लेकर मिलते हैं।"

"तब ठीक है।"

बात प्रज्ञा ने करनी आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मैं इस घर में नहीं रहूँगी। इस कारण यदि तुम भुवाली जा रहे हो तो तुम्हारे साथ ही चलूँगी।"

"बूआ ! इच्छा हो रही है कि कलकत्ता जाऊँ, परन्तु कुमुद का कहना था कि अभी वहाँ की स्थिति बहुत गर्म है। वहाँ जाना ठीक नहीं।"

"तो ?"

"एक विचार है कि लाहौर चल, वहाँ के पुस्तकालय से लाभ उठाऊँ।"

"ठीक तो है। मैं तुम्हारे साथ वहाँ रहूँगी।"

"और ज्ञान ?"

"वह दो-दो पत्नियों में लीन, माँ की आवश्यकता अनुभव नहीं करता।"

विजय ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और माँ भी पुत्र की आवश्यकता अनुभव नहीं करती ?"

"करती है, परन्तु जो कुछ पुत्र से वह चाहती है, यहाँ आशा नहीं रही। एक वर्ष से अधिक हो गया है यहाँ रहते हुए, परन्तु उस पर माँ की छाया पड़ी प्रतीत नहीं हुई। वह पहले की भाँति ही जड़-बुद्धि है।"

"माता जी !" मीनाक्षी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "मैं तो आपके साथ ही रहना चाहती हूँ, परन्तु यह स्थान अब छोड़ने को चित्त नहीं करता। इस समय छोड़ कर जाने का अर्थ यह होगा कि ललिता बहन को मुझे यहाँ से भगाने में सफलता मिल जायेगी। यह तो बहुत ही अपमान की बात हो जायेगी।"

"तो यहीं रहो।" प्रज्ञा ने कहा, "और फिर अविनाश से भी तो तुम्हारा मोह है।"

"हाँ; परन्तु आपके प्रति कृतज्ञता भी तो है।"

"वह तुमसे छिन नहीं रही। जहाँ भी रहूँगी, आकर मिल जाया करना।"

"मैं समझती हूँ कि अविनाश की माँ कुछ अधिक दिन यहाँ नहीं रह सकेगी।"

"कैसे जानती हो यह ?"

"बुद्धि से विचार कर नहीं कह रही। मन से ही ऐसा समझती हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय की तैयारी में ही अविनाश को अपने साथ मोह में लिप्त करने का यत्न कर रही हूँ।"

"मेरी शुभ-कामना तुम्हारे साथ है। देखो मीनाक्षी, तुम जानो और ज्ञान जाने। इस पर भी कभी यहाँ का वातावरण अनुकूल न रहा तो मेरे पास चली आना।"

मध्याह्नोत्तर अभी ज्ञान मिल से लौटा नहीं था कि विजय और मीनाक्षी कैंटालीना से मिलने चल पड़े। विजय मन-ही-मन उसी रात वहाँ से चल देने की योजना बना रहा था। इस पर भी वह अपने एक मित्र से मिलना चाहता था और उससे रात के समय ही मिला जा सकता था।

कमल अपनी कोठी के लान में खड़ा कुछ लोगों से घिरा बातें कर रहा था। ये उसे वहाँ खड़ा छोड़, कोठी के बरामदे की ओर चल पड़े। कैंटालीना वहाँ बरामदे में कुछ लोगों के लिये मेज़ें लगवा, चाय का प्रबन्ध कर रही थी। बैरे मेज़ों पर क्रॉकरी और खाने के लिये वस्तुएँ लगा रहे थे।

उसने मीनाक्षी को एक युवक के साथ आते देखा तो समझ गयी। विजय की सूरत अपने पिता से बहुत कुछ मिलती थी।

इनके बरामदे में पहुँचते ही कैंटालीना ने कहा, "तो यह हैं पण्डित जी के सुपुत्र ?" कहते-कहते उसने हाथ जोड़ नमस्ते कर दी। विजय ने भी हाथ जोड़े और मुस्कराते हुए कह दिया, "आपने खूब पहचाना ! मैं विजय हूँ।"

"मैं जान गयी हूँ। तुम अपने पिता की अच्छी-खासी प्रतिलिपि हो। तुम पर माँ का प्रभाव प्रतीत नहीं होता।"

"प्रभाव तो बहुत है।" विजय ने मुस्कराते हुए कहा, "मन ने माता जी से बहुत कुछ ग्रहण किया है, परन्तु शरीर और बुद्धि तो पिता जी का ही अनुकरण करते प्रतीत होते हैं।"

"देखो विजय ! आज तुम्हारे लिये एक बहुत ही शुभ-समाचार है। हमारे छापाखाना की ज़ब्ती रद्द हो गयी है। हाई कोर्ट की पूरी बैंच ने यह निर्णय दिया है कि छापाखाना को ज़ब्त करने में कोई कारण नहीं। इस शुभ निर्णय के उपलक्ष्य में हमने अपने सहयोगी मित्रों को चाय का निमन्त्रण दिया है। मैं अभी तुम्हारा कमल जी से परिचय करा देती हूँ और तुम भी आज की चाय में आमन्त्रित हो जाओगे।

"मीनाक्षी ! तुमको मैं चाय पर आमन्त्रित करती हूँ। तुम्हारी माता जी नहीं आईं ?"

"उन्होंने ही इनको मेरे साथ भेजा है। आपने इनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की थी।"

"विजय से तो मैं कल मध्याह्न के भोजन के समय मिलूँगी। आज यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे मुद्रणालय के मुक्त होने की दावत में सम्मिलित होगा।"

कैटालीना बैरों को चाय-पार्टी के विषय में खाने की सामग्री लगाने के लिये कह, विजय और मीनाक्षी को लेकर बाहर लान में अपने पति के पास चली गयी।

: १० :

ज्ञान मिल से ललिता के क्लिनिक पर चला जाया करता था। वहाँ वह एक घण्टा-भर ठहरा करता था। अल्पाहार वहाँ लेकर ही वह अपनी कोठी में लौटा करता था।

आज वह वहाँ पहुँचा तो ललिता ने बता दिया, "सोम के पिता आ गये हैं।"

"कब ?"

"मध्याह्न, मेरे कोठी पर पहुँचने से पूर्व ही वहाँ पहुँचे हुए थे। मैं जब लंच लेने घर गयी थी तो उनके दर्शन हुए।"

"क्या कहता था वह ?"

"मैं समझती हूँ कि मीनाक्षी ने उन्हें सब-कुछ बता दिया है। मुझसे उन्होंने बात करने का भी यत्न नहीं किया। खाने पर बैठे ऐसे खाते रहे, जैसे कि मैं वहाँ थी ही नहीं।"

"और तुमने ?"

"मैंने तो उनसे बात करने का साहस भी नहीं किया।"

"तो फिर ?"

"मीनाक्षी से बातें करते रहे थे। उन बातों से पता चला है कि वे एक-आध दिन में लौट जायेंगे। कह रहे थे कि कुछ वस्तु बम्बई में भूल गये थे, जो मिल नहीं रही। कदाचित् सागर में डूब, खो गयी है।"

"तब ठीक है। तुम एक-दो दिन यहाँ ऊपर वाले कमरे में ही रह जाओ।"

"और आप ?"

"मैं भी तुम्हारे साथ ही रहूँगा।"

"यह ठीक है, परन्तु मैं तो घर पर रात आपके साथ रहने में ही लाभ समझती हूँ। मैं समझती हूँ कि हमें अपने बगल के कमरे में इकट्ठे सोते देख, वे रात को ही भाग जायेंगे। मेरे यहाँ रहने से वे अपनी बूआ के पास अधिक काल तक भी रह सकते हैं।"

"मुझे उसके सामने जाते संकोच अनुभव होता है।"

"क्या संकोच है आपको ?"

"यही कि उसकी विवाहिता पर मैंने अधिकार जमा रखा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप इसमें कुछ अनुचित अनुभव करते हैं ?"

"उचित-अनुचित का प्रश्न नहीं। मैं उसके मन में इसकी प्रतिक्रिया की कल्पना कर रहा हूँ। मैं विचार करता हूँ कि यदि मीनाक्षी यही कुछ करे, जो तुम कर रही हो तो मैं उसे गोली से उड़ा दूँ।"

"बहुत बुरे आदमी हैं आप ! आप भी हिन्दुओं की भाँति औरतों को अपनी निजी सम्पत्ति मानते हैं।"

"पर तुम भी तो उससे बात करने में संकोच अनुभव करती हो न ?"

"मेरा संकोच तो इस कारण नहीं है कि मैं अपने किये पर पश्चात्ताप करती हूँ अथवा मुझे आपकी मीनाक्षी के कहीं चले जाने पर आपके मन पर की प्रतिक्रिया की चिन्ता है। मैं तो स्वयं वार्त्तालाप आरम्भ करने का साहस नहीं कर रही थी। मैं चाहती थी कि वे बात आरम्भ करें तो मैं उनको अपने मन की बात बता दूँ।"

ज्ञान इतनी बात होने पर घर जाने की आवश्यकता नहीं समझता था। वह तो यह अनुभव करता था कि सामान्य मानव-समाज में पत्नी का एक पति को छोड़, किसी दूसरे के पास चला जाना अनुचित माना जाता है। इसी संस्कार के अधीन वह ललिता के पति के सामने जाने को उचित नहीं मानता था। वह समझता था कि इससे उसे दुःख होगा।

वास्तव में दोनों अनुभव कर रहे थे कि किसी प्रकार की अनिच्छित बात हो रही है। दोनों चाहते थे कि विजय शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से चला जाये, परन्तु दोनों उससे वाद-विवाद हो जाने में भय अनुभव करते थे।

ललिता का विचार था कि विजय को बम्बई से भगाने का उपाय, उसके सामने पति-पत्नी के रूप में रहना है।

ललिता ज़बरदस्त थी और उसकी बात मानी गयी। रात आठ बजे चिकित्सालय बन्द कर, दोनों इकट्ठे घर पर पहुँचे। ललिता ने अब अपनी गाड़ी रख ली हुई थी। उसमें वह मध्याह्न के समय घर गयी थी और उसी में वह ज्ञान के साथ अब घर पहुँची। मीनाक्षी और विजय अभी लौटे नहीं थे। ज्ञान ने माँ से पूछा, "माता जी ! मीनाक्षी कहाँ है ?"

"विजय आया हुआ है और मीनाक्षी उसके साथ कमल तथा उसकी पत्नी से मिलने गयी थी। अब तक तो उनको लौट आना चाहिये था।"

"आपसे विजय की ललिता के विषय में बात हुई है ?"

"हाँ; मैंने उसे पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर दिया है।"

"और उसने कुछ कहा है ?"

"वह निराशा अनुभव करता प्रतीत होता है, परन्तु उसने कुछ कहा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता माँ-पुत्र में हुई बात सुन रही थी। इस पर उसने पूछ लिया, "पूर्ण स्थिति जानने के उपरान्त वे लौटने की बात कहते हैं अथवा नहीं ?"

"वह बम्बई में नहीं रहेगा। इतना उसने बताया है। शेष कार्यक्रम उसने रात बताने की बात कही थी।"

अब ज्ञान ने कहा, "माता जी ! मैं चाहता हूँ कि वह शीघ्रातिशीघ्र लौट जाये।"

"वह आयेगा तो उसे कह देना।" प्रज्ञा ने कहा।

"उसे वर्त्तमान स्थिति का ज्ञान तो हो गया है। अब आप ही उसे कह दें तो अधिक ठीक होगा। मुझसे झगड़ा भी हो सकता है।"

"मैं उसे जाने के लिये नहीं कहूँगी। हाँ, यदि तुम समझते हो कि मुझे कहना चाहिये तो मैं उसे यही कह सकती हूँ कि वह मुझे भी अपने साथ ही ले जाये। देखो ज्ञान, यदि मैं इसे अपना घर मानूं तो मैं उसे अपने घर से जाने के लिये नहीं कह सकती और यदि इस घर को तुम्हारा घर समझ, उसे जाने को कहूँ तो फिर मैं तुम्हारे घर में नहीं रह सकती।"

ज्ञान माँ को यह कहने के लिये अपने मन को तैयार नहीं कर सका कि वह घर की कुछ नहीं। इस कारण वह चुप रहा और ललिता को लेकर उसके कमरे में चला गया।

विजय रात नहीं आया। मीनाक्षी अकेली रात के दस बजे लौटी।

प्रज्ञा ने उससे पूछ लिया, "कहाँ रही हो इतनी देर तक ?"

"हम कमल मामा जी के घर गये थे। वहाँ एक चाय-पार्टी थी, जिसमें हमें भी सम्मिलित कर लिया गया। सायं के छः तो वहाँ ही बज गये थे।

"वहाँ से हम भागीरथ जी के घरपर पहुंचे। सुभद्रा, आप जानती हैं, बहुत स्नेह और उदारता से मिलती है। भागीरथ घर पर नहीं था। हम उसकी प्रतीक्षा में वहाँ बैठे रहे। वह आठ बजे के उपरान्त आया और फिर विजय को भोजन तक ठहरने का आग्रह करने लगा। हमने वहाँ भोजन किया। भागीरथ का बड़ा लड़का बंगलौर से आया हुआ था। वह भी खाने के समय था। उसने विजय को कह दिया, 'दादा ! आज रात यहाँ ही रह जाओ।'

"इस पर भागीरथ ने कह दिया, 'इससे इसकी पत्नी नाराज़ हो जायेगी। चिरकाल के उपरान्त यह घर पर आया है।'

"भैया विजय ने ललिला की सब बात बता दी। इस पर भागीरथ जी ने भी कहा कि वह उन्हें यहाँ नहीं आने देगा।

"विजय वहाँ ही रह गया है और मैं गाड़ी भाड़े पर कर लौट आयी हूं।"

ललिता मीनाक्षी की आवाज़ सुन, उसके कमरे में आ गयी थी और मीनाक्षी की बात सुन रही थी। उसने पूछ लिया, "कमल जी के यहाँ चाय-पार्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस उपलक्ष्य में थी ?"

"उनके प्रेस की ज़ब्ती की आज्ञा हाई कोर्ट ने रद्द कर दी है। इसकी प्रसन्नता में कमल जी के तीस से ऊपर मित्र एकत्रित थे। कैटालीना ने बहुत आग्रह किया तो हम भी वहाँ बैठ गये।"

"तो क्या वह फिर समाचार-पत्र चलायेगी ?"

"इस विषय में कोई बात नहीं हुई। इस पर भी वह शीघ्रातिशीघ्र मुद्रणालय का काम चालू कर देना चाहती है।"

"सोम के पिता कब तक जाने का विचार रखते हैं ?"

"ललिता बहन ! यह मैंने पूछा नहीं। मैं समझती हूँ कि ऐसा पूछने से वह समझेगा कि मैं उसे चले जाने के लिये कह रही हूँ।"

ज्ञानस्वरूप भी वहाँ आ गया। उसने मीनाक्षी की अन्तिम बात सुन, सुझाव दे दिया, "क्या यह अच्छा नहीं होगा कि उसे किसी-न-किसी प्रकार यह संकेत कर दिया जाये कि उसे इस घर में नहीं रहना चाहिये ?"

"घर माता जी का है अथवा आपका है। आप जानें आपका घर जाने। मैं इस विषय में बात करनी उचित नहीं समझती।"

"तो यह घर तुम्हारा नहीं है ?"

"भला मेरा कैसे हो सकता है ?"

"तो यहाँ रहती क्यों हो ?"

"मैं इसे जौन के पिता का समझती हूँ। वह मेरा पुत्र भी है और पुत्र के घर में माँ रहना चाहती है।"

इस पर प्रज्ञा ने कह दिया, "मैं विजय के साथ ही भुवाली जा रही हूँ।"

"तो उसने भुवाली जाने की बात कही है ?" ज्ञानस्वरूप ने माँ से पूछ लिया।

"वह अभी निश्चय नहीं कर सका। कहीं भी जाना हो। वह यहां से लाहौर जा रहा है और मैं वहां तक उसके साथ जाऊँगी और वहां से भुवाली चली जाऊँगी।"

"वहाँ क्या काम है ?"

"कुछ विशेष नहीं। साथ ही यहाँ भी तो अब कोई काम नहीं रहा।"

"और पहले था ?" ललिता ने पूछ लिया। उसका आशय यह था कि उसके आने से कौन-सा काम समाप्त हो गया है ?

"हाँ; मैंने एक सीमा तक यहाँ का काम सम्पन्न किया है। अब आगे मुझसे अधिक सुघड़ प्राणी के आ जाने से मैं अपना काम यहाँ समाप्त हो गया समझती हूँ।"

—१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता भी यही समझती थी कि ज्ञानस्वरूप की माँ का वहाँ रहने का कुछ अर्थ नहीं है। प्रज्ञा ललिता के प्रश्न का आशय समझती थी और उसने उसके अनुरूप ही उत्तर दिया था।

मीनाक्षी समझ रही थी कि उसे भी इस घर से चल देना चाहिये, परन्तु उसके अपने बच्चे थे और वह उनसे सम्बन्ध-विच्छेद करने के लिये मन को तैयार नहीं कर सकी। इस पर भी वह अनुभव करने लगी थी कि उसकी सास के चले जाने से उसकी इस घर में स्थिति, उसके आने से पूर्व जैसी और कदाचित् उससे भी बुरी हो सकती है।

उस समय सप्ताह में एक-दो बार पति-पत्नी में झगड़ा होता था। मीनाक्षी यौन-तृषा से व्याकुल रहती थी। ज्ञान उसकी इस पिपासा को पूर्ण रूप से तृप्त नहीं कर सकता था। वह तब भी इधर-उधर हाथ मारा करता था। इसी कारण दोनों में झगड़ा होता था और मुक्का-मुक्की भी होने लगती थी। अब उसके मन की अवस्था में परिवर्तन हो रहा था। धैर्य, सन्तोष, चित्त की शान्ति और गृहस्थ में सन्तान के पालन-पोषण की ओर उसकी रुचि बढ़ रही थी।

जबसे ललिता आयी थी, ज्ञानस्वरूप मीनाक्षी के कमरे में सोने के लिये एक भी रात नहीं आया था। इस पर भी मन में अब वह अग्नि नहीं धधकती थी, जो प्रज्ञा के इस घर में आने से पहले धधका करती थी। यह चित्त की शान्ति और मन में सन्तोष और व्यवहार में धैर्य था।

मीनाक्षी आज पुनः गम्भीरतापूर्वक बच्चों का मोह छोड़ने पर विचार करने लगी थी।

विजय अगले दिन भी नहीं आया। दिन-भर प्रज्ञा उत्सुकता से प्रतीक्षा करती रही। अगले दिन और फिर उससे भी अगले दिन जब वह नहीं आया तो प्रज्ञा को चिन्ता लगने लगी। वह भागीरथ के घर जा पहुँची।

भागीरथ ने लोहे तथा पीतल के इमारती सामान का एक बहुत बड़ा स्टोर खोल रखा था। उसने बम्बई में एक अपना मकान बना लिया था और उसमें अपने बच्चों के साथ रहता था।

सुभद्रा ने घर में एक संगीत-विद्यालय खोल रखा था और तीन अन्य कलाकारों की सहायता से स्वयं उसे चलाती थी। मकान का पूर्ण भूमि-तल इस काम के लिये प्रयोग हो रहा था। इस विद्यालय में तीस के लगभग लड़कियाँ संगीत सीखने आती थीं।

जब प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त प्रज्ञा और मीनाक्षी वहाँ पहुँचीं तो प्रातः का स्कूल का कार्यक्रम समाप्त कर सुभद्रा ऊपर की मंज़िल पर जाने वाली थी। विद्यालय में संगीत सीखने वाली कुछ लड़कियाँ, प्रातः छः बजे से नौ बजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक और कुछ सायं पाँच बजे से आठ बजे तक आती थीं। संगीत की शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी, परन्तु प्रवेश केवल संगीत सीखने के योग्य छात्राओं को ही मिलता था और केवल शास्त्रीय संगीत की ही शिक्षा दी जाती थी।

मकान के बाहर गाड़ी में से प्रज्ञा और मीनाक्षी निकलीं तो सुभद्रा मकान की सीढ़ियाँ चढ़ती-चढ़ती रुक गयी। उसने आगे बढ़, बूआ को पाय लागू की और मुस्कराते हुए पूछ लिया, "विजय जी से मिलने आयी हैं ?"

"हाँ; वह यहाँ है क्या ?"

"तीन दिन से वह यहाँ ही रह रहा है। आज कह रहा था कि वह बूआ जी से मिलने जायेगा। दो दिन से उसे समय नहीं मिला।"

"इस समय वह कहाँ है ?"

"कमल जी के छापाखाने को छुड़ाने में भाग-दौड़ कर रहा है। कल पुलिस ने उस पर से अपना अधिकार उठाया है। इतने दिन बन्द रहने के कारण मशीनों इत्यादि की दुर्दशा की आज वह जानकारी प्राप्त करने गया है। उसके साथ मशीनों की जानकारी रखने वाले भी गये हैं।"

"तो वह छापाखाना में काम करेगा क्या ?"

"हाँ; कैंटालीना ने उसे छापाखाने में काम करने के लिये नियुक्त कर लिया है। कदाचित् विजय पुनः कोई समाचार-पत्र निकालने में लग जाये।"

"तो वह किस समय यहाँ लौटा करता है ?"

"मध्याह्न के भोजन के समय अवश्य आता है। रात को भोजन वह कमल जी के घर पर लेता है। वहाँ मुद्रणालय और उसके साथ एक प्रकाशन-संस्था चलाने की योजना बन रही है।"

मीनाक्षी और प्रज्ञा सुभद्रा के साथ, उसके मकान की ऊपर की मंज़िल पर चढ़ गयीं।

"सुना है, तुम्हारा लड़का मोहन बंगलौर से आया हुआ है ?" प्रज्ञा ने पूछ लिया।

"वह चार दिन हुए आया था। तीन दिन यहाँ रह कर कल चला गया है। वहाँ का काम अब भली-भाँति चल रहा है।"

"बहू भी उसके साथ है क्या ?"

"हाँ; मोहन अकेला ही आया था। उसकी पत्नी वहाँ ही रही थी।"

"मोहन के पिता का क्या हाल-चाल है ?"

"वे अपने व्यापार में इतना लीन रहते हैं कि अन्य किसी काम का उनको अवसर ही नहीं।"

तीनों मकान की तीसरी मंज़िल पर ड्रायंग-रूम में बैठी बातें कर रही थीं। मीनाक्षी ने कह दिया, "हम विजय जी की भोजन के समय तक प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगी।"

"तब तो ठीक है। आप भी भोजन करके ही जाइयेगा।"

"कमल जी से मेल-जोल है अब ?"

"पिछली बार जब मौसा जी आये थे तो कमल जी एक-दो बार मोहन के पिता से मिलने आये थे। तब से उनकी पत्नी यहाँ आती-जाती हैं। वे हमारे संगीत-विद्यालय में रुचि लेने लगी हैं। उनकी छोटी लड़की नीना संगीत की एक श्रेणी में भरती हो गयी है। वह सायं छः बजे से सात बजे तक सीखने आती है।"

"अब तुम्हारे प्रति उसकी कैसी भावना है ?"

"मन से वे मुझे क्या समझते हैं, मैं कह नहीं सकती। प्रत्यक्ष में तो मुझे अब बहन कह कर पुकारते हैं। मैं अब विचार करती हूँ कि उनसे विवाह नहीं हुआ तो ठीक ही हुआ है। वे साधारण लोगों से अधिक स्वार्थी जीव प्रतीत हुए हैं।"

"क्या स्वार्थ देखा है उसमें तुमने ?"

"मोहन के पिता के विरुद्ध एक झूठा मुकद्दमा था। एक बड़ी फीस के लोभ में, जानते हुए भी कि मुकद्दमा झूठा है, उन्होंने ले लिया और अब दो वर्ष तक मुकद्दमा कर उसमें हार गये हैं। एक दिन मौसा जी के सामने मोहन के पिता ने कमल जी से पूछा, 'देसाई का मुकद्दमा आपने क्यों लिया था ? आप तो जानते थे कि वह झूठा है।'

"कमल जी कहने लगे, 'दस सहस्र रुपये फीस जो मिली है। मैं यह भी देखना चाहता था कि आपके पक्ष का कोई दुर्बल बिन्दु मिल जाये तो रात का दिन और दिन की रात कर दूं।'

"मैं इसका अभिप्राय यह समझी हूँ," सुभद्रा ने आगे कहा, "कि वे हमें हानि पहुँचाने की चिन्ता में थे। मौसा जी ने उनकी ताड़ना की तो बोले, 'सब वकील ऐसा ही करते हैं।'"

मध्याह्न भोजन के समय विजय आया और प्रज्ञा तथा मीनाक्षी को वहाँ बैठे देख, कहने लगा, "बूआ ! मैं कोठी पर तुम्हें मिलने गया था।"

"और मैं तुम्हें मिलने यहाँ आयी हुई हूँ।"

"मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगा। मैं अपना सामान वहाँ से ले आया हूँ।"

"तो अब यहाँ रहोगे ?"

"नहीं। छापेखाने के समीप ही 'बॉम्बे न्यूज़' के कार्यालय के पिछवाड़े में कमल की कोठी में रहूँगा। वह कोठी रहने के लिये मिल गयी है। मैंने एक साप्ताहिक-पत्र वहाँ से निकालने की योजना बना ली है। उसके 'डैक्लेरेशन' के लिये आवेदन दे चुका हूँ। तब तक मुद्रणालय को चालू करने में लगा हुआ हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्थात् अब तुम बम्बई में ही रहोगे ?"

"हाँ, बूआ !"

"कमल की कोठी का कुछ भाग रहने को मिला है अथवा पूर्ण कोठी ?"

"पूर्ण कोठी ही ली है । माता जी, भाभी प्रभा तथा बच्चों को यहीं बुला रहा हूँ । मिसेज़ कमल ने उनको पत्र लिख भी दिया है ।"

"बहुत जल्दी-जल्दी प्रबन्ध कर रहे हो ?"

"बूआ ! मैं समझता हूँ कि मिसेज़ कमल तो मुझसे भी जल्दी कार्य करती हैं । यह सब प्रबन्ध उसने ही किया है ।"

"मैं तुम्हारे पास चलकर रहूँगी ।" प्रज्ञा ने कह दिया ।

"बूआ ! यह बहुत ही अच्छा होगा । वास्तव में यही कहने तो मैं ज्ञान के मकान पर गया था ।"

"मैं सायंकाल तक वहाँ आ जाऊँगी ।"

"विजय भैया !" मीनाक्षी ने कह दिया, "मैं चाहती हूँ कि उस कोठी में मेरे लिये भी एक कमरा दे दो ।"

"उस कमरे का तुम क्या करोगी ?"

"क्या जाने बूआ के पुत्र भी अपने पिता की भाँति अपनी पत्नी को घर से निकाल दें । मैं अपना ठिकाना सुरक्षित रखना चाहती हूँ ।"

उत्तर प्रज्ञा ने दिया, "समय पर प्रबन्ध हो जायेगा । इस पर भी मैं समझती हूँ कि बच्चों को पिता के पास छोड़, मैंने भूल की थी । मैं चाहती हूँ कि यह भूल तुम न कर बैठना ।"

"पर माता जी ! यह बात मेरे अकेली के वश की नहीं है । बच्चों की बात तो आपके सुपुत्र की इच्छा से ही हो सकेगी ।"

"उसके न मानने पर तो तुमको वहाँ ही रहना चाहिये ।"

"यत्न तो करूँगी ही, परन्तु वे मुझे धक्के दे-देकर घर से निकाल भी तो सकते हैं ।"

"तब देख लिया जायेगा ।"

: ११ :

सुवर्णा, प्रभा और विजय के बच्चे ग्रीष्म-ऋतु व्यतीत कर ही भुवाली से बम्बई आये । तब तक प्रज्ञा विजय के पास रहती रही । मीनाक्षी रहती तो ज्ञान के घर में ही थी, परन्तु प्रज्ञा से प्रायः नित्य मिलने आती रहती थी । ज्ञान की कोठी पर ललिता का पूर्ण स्वामित्व छा गया था । अब तो नौकर-चाकर भी नयी मालकिन के आदेशानुसार काम करते थे ।

इस पर भी बच्चे अविनाश सहित मीनाक्षी के साथ अधिक हेल-मेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते थे। मीनाक्षी जब प्रज्ञा से मिलने आती थी तो बच्चों को साथ ले आती थी।

विजय का साप्ताहिक 'राष्ट्र' निकलने लगा था और धीरे-धीरे प्रगति कर रहा था। विजय अपने पिता के विचारों का उत्तराधिकारी था और राष्ट्र की व्याख्या भी वैसी ही करता था, जैसी कि नलिनीकान्त किया करता था।

उसका पक्ष था—न तो देश और न ही राज्य राष्ट्र है। राष्ट्र एक संस्कृति एवं एक ही धार्मिक मान्यताओं को रखने वाला मानव-समाज का अंग होता है। समाज के ऐसे अंग का अपना देश तथा अपना राज्य हो तो सोने पर सुहागा है और यदि न हो तो राष्ट्र तब भी रह सकता है।

तत्कालीन अंग्रेज़ी पढ़ी-लिखी हिन्दू जनता के लिये यह समझना अति कठिन था। राष्ट्र का पर्यायवाची अंग्रेज़ी का नेशन शब्द देश की सीमाओं के साथ सम्बन्धित माना जाता है। परन्तु विजय राष्ट्र के लक्षणों में राज्य तथा देश को अनिवार्य आधार नहीं मानता था।

इस पर भी विजय जिस स्पष्टता से अपने विचार लिख रहा था, उसका एक अर्थ यह प्रतीत हो रहा था कि हिन्दुस्तान में दो राष्ट्र रहते हैं। एक हिन्दू-राष्ट्र और दूसरा मुसलमानी राष्ट्र।

सम्पादक के नाम आने वाले पत्रों में इस विषय पर बहुत वाद-विवाद हुआ। दो मास के वाद-विवाद के उपरान्त विजय ने अपना मत पुनः व्यक्त किया। इसमें उसने लिखा—

"लोग कहते हैं कि राष्ट्र की परिभाषा संस्कृति और धर्म के आधार पर करने से देश में फूट पड़ जायेगी। यहाँ देश में कई राष्ट्र बन जायेंगे।

"यह ठीक है, परन्तु वस्तुस्थिति तो यह है कि संस्कृति तथा धर्म के आधार पर विचार करने से भारत में रहने वाली मानव-समाज में कई समूह तो पहले ही बने हुए हैं। बिल्ली को देख कर कबूतर के आँख मूंद लेने से यह नहीं कहा जा सकता कि बिल्ली नहीं है। इस समय हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के अतिरिक्त कुछ अन्य जन-समूह भी हैं, जो हिन्दुओं से सर्वथा भिन्न संस्कृति रखते हैं। इस बात से इन्कार करना, कबूतर की भाँति आखें मींचना हो जायेगा।

"सांस्कृतिक आधार पर मुसलमान हिन्दू नहीं हैं और हिन्दू मुसलमान नहीं हैं। कहा जाता है कि दोनों की संस्कृतियों में समन्वय होना चाहिये। यह एक ढंग है जिससे समस्या को सुलझाया जा सकता है। परन्तु यह हो सकेगा क्या? मुसलमान ऐसा स्वीकार करेंगे क्या? क्या वे समन्वय के लिये कभी तैयार हुए हैं अथवा उन्होंने कभी ऐसा यत्न किया है। हिन्दुओं ने तो इसके लिये यत्न किया है। सबसे बड़े समन्वयकर्त्ता आदि गुरु नानक जी हुए थे, परन्तु उनका प्रयास भी कहाँ तक सफल हुआ है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसी प्रकार हिन्दुओं की संस्कृति में कुछ विशिष्ट बातें हैं। उदाहरण के रूप में विचार-स्वतन्त्रता है; अध्यात्म के विषय में विभिन्न विचार रखने की स्वीकृति है; क्या मुसलमान इसे स्वीकार कर मुहम्मद साहब पर ईमान न रखने वाले को भी मुसलमान स्वीकार कर लेंगे अथवा क्या हिन्दू इस स्वतन्त्रता को छोड़, मुसलमानों के पैगम्बर पर ईमान लाना समन्वित संस्कृति का अंग मान लेंगे।

"एक अन्य उदाहरण लिया जा सकता है। हिन्दुओं के सनातन धर्मों में बुद्धि तथा ज्ञान धर्म का अंग माने जाते हैं। बुद्धि में विकास और इसका प्रयोग। इसी प्रकार विद्या की प्राप्ति है। क्या मुसलमान इसको मान कर यह स्वीकार कर लेंगे कि इस्लाम की परख बुद्धि से की जा सकती है? अथवा क्या हिन्दू यह मान लेंगे कि वे परमात्मा के विषय में अथवा जाति की किसी मान्यता के विषय में बुद्धि के प्रयोग को वर्जित कर दिया जाये?

"यह नहीं होगा। अर्थात् जब आधार ही परस्पर विरोधी हों तो समन्वय नहीं हो सकता। हिन्दुओं में बुद्धि के प्रयोग और विकास को वही पद प्राप्त है, जितना कि अस्तेय और सत्य धर्म को है।

"तो फ़िर क्या हो? हिन्दू इसका समाधान उपस्थित करते हैं। अपना-अपना धर्म और संस्कृति बनी रहे। इसका प्रचार और प्रसार विचार-विनिमय से हो; परन्तु राज्य तथा देश को इससे पृथक् रखा जाये। उसमें सब समान हों। यह तब ही हो सकेगा, जब कि देश और राज्य को संस्कृति तथा धर्म के प्रचार में अथवा विस्तार में हस्तक्षेप न करने दिया जाये। इनके अधिकारों का बँटवारा संस्कृति तथा धर्म के आधार पर न हो।"

इस प्रकार के लेखों का परिणाम यह हो रहा था कि लोग मुसलमानों से पूछने के लिये तैयार हो जाते थे कि क्या वे राजनीतिक अधिकार मज़हब से पृथक् मानेंगे? क्या वे मज़हब के आधार पर अपने लिये मिल रहे राजनीतिक विशेषाधिकार त्याग करने को तैयार हैं?

मुसलमान, मुसलमानों के लिये विशेषाधिकारों को, छोड़ने के लिये तैयार नहीं थे। जिनके पास अधिकार थे, वे सांस्कृतिक और धार्मिक आधारों पर बांट रहे थे और जिनके पास देने को कुछ नहीं था, वे दोनों संस्कृतियों के समन्वय की बात करते थे। दूसरे, जिन्हें विशेषाधिकार संस्कृति और धर्म के नाम पर मिल रहे थे, समन्वय कर उन अधिकारों का त्याग करना नहीं चाहते थे।

इस स्थिति में समन्वय की बात का एक ही अर्थ था कि सब उस समुदाय में सम्मिलित हो जायें, जिसको विशेषाधिकार मिल चुके हों। यह हिन्दू मान नहीं सके। ऐसा कोई कहता भी नहीं था।

इस सब परिस्थिति पर पत्रिका में विचार होता था और भिन्न-भिन्न विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं सुझाव आ रहे थे।

इस समय सुवर्णा इत्यादि भुवाली से आ गये। उनके आने पर यह विचार उपस्थित हुआ कि ललिता तथा ज्ञानस्वरूप से सम्पर्क उत्पन्न किया जाये अथवा नहीं। विजय का इस विषय में यह मत था कि जब कहीं सार्वजनिक स्थानों पर आमना-सामना हो जाये तो उनसे ऐसे मिलना चाहिये, जैसे कि पूर्व परिचित हैं। परन्तु उनके घर पर उसी प्रकार नहीं जाना चाहिये, जैसे किसी अपरिचित के घर पर नहीं जाया जाता। अथवा उनको अपने घर ऐसे नहीं बुलाना चाहिये, जैसे किसी अपरिचित को नहीं बुलाया जाता। विजय की इस बात को मान लिया गया।

बच्चों को भी वहाँ भेजना चाहिये अथवा नहीं? विजय इसकी किसी प्रकार की आवश्यकता नहीं समझता था। यदि ललिता स्वयं बच्चों से मिलने आती है, तो क्या किया जाये? इस विषय पर भी विचार किया गया और यही निश्चय हुआ कि इस मेल-जोल को उत्साहित न किया जाये। यदि कहीं कभी भेंट हो जाती है तो इसमें बाधा न डाली जाये।

मीनाक्षी एक दिन विजय के घर से आयी तो जौन, जो भुवाली गया हुआ था, अपनी माता के साथ उसके घर चला आया। जौन इस समय पाँच वर्ष का हो चुका था और भुवाली में संस्कृति की वर्णमाला और सौ से ऊपर सामान्य शब्द, साथ ही कुछ वाक्य सीख आया था। इसके अतिरिक्त वह दो-तीन बच्चों के गीत भी स्मरण कर आया था।

जब ज्ञान मध्याह्नोत्तर मिल से घर आया तो जौन को वहाँ देख पूछने लगा, "जौन! कब आये हो?"

"पापा! आज ही आया हूं।"

"किस के साथ आये हो?"

"बड़ी माता जी और चाची जी के साथ।"

"वे कहाँ हैं?"

जौन बता नहीं सका कि वह किसका घर है, जहाँ बड़ी माता जी इत्यादि रह गये हैं। इस कारण वह अपनी माता जी का मुख देखने लगा। मीनाक्षी उसका भाव समझ बोली, "मामी जी तथा प्रभा बहन आ गयी हैं और विजय के पास ठहरी हैं।"

समीप बैठी ललिता ने पूछ लिया, "और सोम इत्यादि भी आये हैं।"

"हाँ।"

"यहाँ कब आयेंगे?"

"मैंने पूछा नहीं।"

"फिर जाओगी तो पता करना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर ललिता बहन ! तुमने एक बार कहा था कि तुम्हारी उनमें रुचि नहीं है। तो क्या अब रुचि उत्पन्न हो गयी है ?"

"नहीं, मेरी उनमें रुचि नहीं है। पर मैं देखना चाहती हूँ उन बच्चों के मन में भी मेरे लिये रुचि है अथवा नहीं।"

"दोनों में किसी ने भी अपनी माँ के विषय में पूछा नहीं। वे मामी को माँ और प्रभा को चाची कहते हैं।"

"तब ठीक है। उन्हें मुझे भूल ही जाना चाहिये।"

मीनाक्षी ने इसका उत्तर नहीं दिया। अब ज्ञान ने जौन से पुनः बात करनी आरम्भ कर दी। उसने पूछ लिया, "वहाँ खाने को क्या मिलता था जौन ?"

"पापा ! वहाँ सेब थे, अंगूर, केले, मिठाइयाँ भी मिलती थीं और फिर नित्य हम पहाड़ पर चढ़ने चले जाते थे।"

"साथ कौन जाता था ?"

"चाची साथ रहती थीं। हमने खूब सैर की है।"

"अब तुम्हें स्कूल में भरती करायेंगे।"

"पर मैं पढ़ता हूँ।"

"सत्य ? भला सुनाओ तो क्या पढ़ते थे वहाँ ?"

जौन ने गा दिया, "जय जगदीश हरे।"

"तो यह पढ़ाई है ?"

"चाची कहती थीं कि यह भी पढ़ाई है।"

"नहीं; यह पढ़ाई नहीं है। अच्छा, कल मेरे साथ स्कूल चलना। वहाँ पढ़ोगे तो चाची की पढ़ाई भूल जाओगे।"

"पर चाची कहती थीं, तुम पढ़ने के लिये मम्मी के साथ कल आ जाना।"

"नहीं; चाची को पढ़ाई करानी नहीं आती।"

जौन चुप रहा।

मीनाक्षी मध्याह्न का भोजन कर प्रज्ञा से मिलने जाया करती थी। ज्ञान अगले दिन प्रातः का अल्पाहार लेकर अपने काम पर जाने लगा तो उसने मीनाक्षी को कहा, "जौन को 'सैंट थॉमस' स्कूल में ले जाकर भरती करा देना।"

"आप इसे अपने साथ ले जाइये और भरती करवा दीजिये।"

"मेरे पास स्कूल में जाने के लिये समय नहीं है।"

"मैं उस स्कूल में इसे नहीं ले जाना चाहती।"

"क्यों ?"

"मुझे वहाँ की शिक्षा ठीक प्रतीत नहीं हो रही।"

"क्या दोष है उसमें ?"

"मैं स्वयं उसी स्कूल में पढ़ी हूँ और आप भी तो वहीं पढ़े हैं और हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों ही कुछ नहीं पढ़े।"

"मैं तो पढ़ा हूँ। तभी तो आठ सौ रुपया महीना वेतन पाता हूँ।"

"तो वेतन पाना शिक्षा का लक्षण है?"

"नहीं तो और क्या है?"

"मैं इसको कुछ ऐसा समझती हूँ कि जो कुछ बच्चे अपनी माँ से अच्छी बातें सीख चुके होते हैं, वहाँ उनको भुलाने का प्रबन्ध है।"

"और यह इसलिये नहीं क्या कि जो कुछ माँ ने सिखाना होता है, वह शिशु-काल के अविकसित मन के लिये होता है और स्कूल में शिशु कुमार बनते हैं। इस कारण वहाँ पहला सीखा भूलना होता है।"

"परन्तु आज मुझे अपनी माँ से पढ़ाया-लिखाया भूलने का पश्चात्ताप लग रहा है। और जो कुछ स्कूल में सीखा है, वह भुलाने में कठिनाई अनुभव हो रही है।"

"क्या भूलना चाहती हो?"

"एक तो मैंने वहाँ आपको देखा था। आपसे सम्बन्ध बना था और इसके बनने में, वहाँ की लड़कियों और लड़कों की परस्पर बातों ने तथा पढ़ाई ने सहयोग दिया था।"

"परन्तु मैं तो उस सबको भूलना नहीं चाहता। मुझे आज भी स्मरण है कि हम पहली बार कैसे रात के समय स्कूल-लान में केले के पेड़ों के झुरमुट के पीछे मिले थे और हमारा मिलना इतना मधुर हुआ था कि मैं उसे भूल नहीं सका। वास्तव में मैं उसे भूलना भी नहीं चाहता।"

"यही तो मैं कह रही हूँ कि वहाँ की स्मृतियाँ ऐसी हैं कि मैं उनको भूल नहीं रही और भूलना चाहती हूँ।"

"मैं यही विस्मय कर रहा हूँ कि तुम इतनी मधुर स्मृति को भूलना क्यों चाहती हो?"

"उन दिनों की स्मृति, जब वे दिन नहीं रहे, तो दुःखद् हो रही हैं।"

"परन्तु ऐसा तो संसार की सब बातों में होता है। देखो, जब आम कच्चा होता है तो फीका और स्वाद-रहित होता है। जब पक जाता है तो मीठा और स्वादिष्ट हो जाता है। उसमें एक विशेष प्रकार की सुगंध भी आ जाती है। पीछे वह लिपलिपा तथा चिपचिपा हो बे-स्वाद और बदबू करने लगता है। कभी उसमें कीड़े भी पड़ जाते हैं। तब उसे पसन्द नहीं किया जाता। पका हुआ ही चखा जाता है और उस समय का स्वाद ही आम खाने के लिये रुचि उत्पन्न कर देता है। पकने के बाद जब गन्दा हो जाता है तो नाली में फेंक देने को चित्त करता है। समय-समय पर अवस्था बदलती रहती है। इस पर भी पके आम का स्वाद स्मरण रहता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब मैं सड़ा हुआ आम हो गयी हूँ ?"

"मैंने यह नहीं कहा। इस पर भी अब वह तरोताज़गी तो इसमें नहीं रही।"

"उस अवस्था पर अब पश्चात्ताप लग रहा है। उस दिन मेरी सहेली इरीन मुझे अपने इसी दिशा के अनुभव और कारनामे सुना रही थी और मैं उनको सुन, चित्त में बेचैनी अनुभव कर रही थी। रात के खाने के पश्चात् उसी बेचैनी को दूर करने होस्टल से निकल लान में टहलती हुई पेड़ों के झुरमुट के पीछे पहुँची तो न जाने आप कहाँ से वहाँ आ पहुँचे। आपने मुझे अन्धेरे में पहचाना और आवाज़ दे दी और पीछे तो रक्त सिर को चढ़ गया था। सूझ-बूझ रही ही नहीं थी और इतना भी होश नहीं रहा कि हमें कोई देख रहा होगा।

"जब आप चले गये तो मुझे पता चला कि इरीन ने हमें देख लिया था। वह होस्टल से मुझे भ्रमण के लिये निकला देख मेरे पीछे-पीछे चली आयी थी। परन्तु आपको वहाँ, मानो मेरी प्रतीक्षा करते देख, झुरमुट के दूसरी ओर छुपकर खड़ी हो, सब देखती रही थी।

"जब आप चले गये थे तो वह आयी और पूछने लगी, 'कैसा अनुभव करती हो ?'

"मेरे मुख से निकला था, 'दि हेल।'

"पीछे मुझे पता चला कि अन्य भी कई लड़कियाँ हैं जो वैसा अनुभव प्राप्त कर चुकी हैं। परन्तु आज मैं देखती हूँ कि यह सब-कुछ ठीक नहीं था।"

"क्या खराबी हुई थी उसमें ?"

"ललिता बहन ने अपनी सुहाग-रात का अनुभव बताया है। मुझे वह अधिक पसन्द आया है। परन्तु अब पछताये क्या बने, जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।

"मैं नहीं चाहती कि जौन अपने पिता का-सा अनुभव प्राप्त करे।"

"परन्तु ललिता को तो अपनी सुहागरात पर पश्चात्ताप लग रहा है।"

"यही तो मैं भी कह रही हूँ कि दोनों का अनुभव भिन्न-भिन्न है। मुझे वह पसन्द है।"

: १२ :

विजय अपने स्टडी-रूम में बैठा अपनी पत्रिका के लिये सम्पादकीय लिख रहा था। उसने लेख समाप्त किया ही था कि चपरासी एक कागज़ के टुकड़े पर कुछ लिखा हुआ भीतर ले आया। उसने सम्पादक महोदय के सामने मेज़ पर वह कागज का टुकड़ा रखा तो विजय का ध्यान भंग हुआ। उसने कागज़ के टुकड़े पर लिखा पढ़ा। अंग्रेज़ी में लिखा था—"कुछ संशय निवारण करने हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस समय मिला जा सकता है ?"

नीचे नाम नहीं लिखा था। इस कारण विजय ने चपरासी से पूछा, "यह किसने दिया है ?"

"एक लड़की है।"

विजय ने कुछ विचार किया और कह दिया, "उसे कह दो कि मुझे इस समय अवकाश है। यदि चाहे तो अभी आ सकती है।"

विजय चकित रह गया, जब एक सुन्दर युवा लड़की हाथ में एक पुस्तक और एक नोट-बुक लिये हुए सामने आ खड़ी हुई।

"बैठिये ! क्या नाम है आपका ?" विजय ने हाथ से एक कुर्सी की ओर संकेत कर पूछा।

लड़की ने सामने रखी कुर्सी पर बैठ कह दिया, "मैं तबस्सुम हूँ और 'लेडी ऐलफिन्स्टन कालेज फौर विमॆन' की एक स्टुडेन्ट हूँ।"

"हाँ, तो आप क्या जानना चाहती हैं ?"

"मुआफ रखें। मैं तो आपको कोई बूढ़ा आदमी समझी थी।"

विजय ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो आपको अपने सामने एक छोटी आयु के व्यक्ति को देख निराशा हुई है ?"

लड़की ने कुछ झिझकते हुए कहा, "निराशा तो नहीं। हाँ, हैरानी ज़रूर हुई है। मैं समझी थी कि कोई मराठा ब्राह्मण होगा, जो पचास-साठ वर्ष की उमर का, गये ज़माने के खयालात रखता होगा।"

लड़की ने मुस्कराते हुए आगे कहा, "मैं अपने उन खयालातों के बिना पर उस बूढ़े की हँसी उड़ाने आयी थी।"

"सत्य ? तब तो मुझे बहुत शोक है कि मैं आपकी अभिलाषा पूरी नहीं कर सका। इस पर भी यदि आप चाहें तो अब भी हँसी उड़ा सकती हैं; परन्तु मैंने इसके लिये कौन सा कुकर्म किया है, जिस कारण से मैं हँसी का पात्र बन रहा हूँ ?"

इस पर तबस्सुम हँसी और बोली, "आप उसका गलत अर्थ लगाने लगेंगे, यही डर है।"

"हो सकता है, परन्तु आप उस गलती का सुधार भी तो कर सकेंगी। मैं आपके सुधार को मान जाऊँगा।"

"बात यह है," लड़की ने कुछ गम्भीर हो कहा, "जबसे आपका साप्ताहिक पत्र निकलने लगा है, मैं उसे पढ़ती हूँ और उसमें चल रहे राष्ट्र शब्द पर विवाद का बहुत ध्यान से अध्ययन कर रही हूँ।"

"ठीक है, परन्तु उसमें हँसी की बात क्या है ?"

"उस अपने कल्पित बूढ़े सम्पादक महाशय से समन्वय की बात करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी थी।"

"हाँ; वह तो अब भी कर सकती हैं।"

"यही तो कह रही हूँ कि यदि अब समन्वय की बात कहूँगी तो आप समझेंगे कि विवाह की बात हो रही है।"

"परन्तु विवाह तो बिना समन्वय के भी हो सकता है। मेरा अभिप्राय है कि बिना संस्कृति में समन्वय के।"

"सत्य ?"

"हाँ; विवाह में संस्कृति की समानता गौण है, परन्तु सभ्यता की समानता मुख्य है। सभ्यता की समानता के उपरान्त सांस्कृतिक समन्वय अथवा समानता हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती।"

"तो आप सभ्यता और संस्कृति में अन्तर मानते हैं ?"

"हाँ; पति-पत्नी में सभ्यता में समानता एवं श्रेष्ठता होनी चाहिये, अन्यथा विवाहित जीवन असम्भव हो जायेगा। सभ्यता उस व्यवहार को कहते हैं, जो एक व्यक्ति दूसरे से रखता है अथवा जो एक व्यक्ति अपने रहन-सहन में प्रयोग करता है।

"जब हम किसी दूसरे से मधुरता से मिलते हैं, बातें करते हैं अथवा व्यवहार करते हैं तो हम श्रेष्ठ सभ्यता का व्यवहार करते हैं। यह पति-पत्नी में होना चाहिये, अन्यथा विवाह एक कलह-क्लेश का आयोजन बन जायेगा।"

"और संस्कृति में क्या मधुर व्यवहार नहीं आता ?"

"संस्कृति का व्यवहार से सम्बन्ध नहीं है। एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद साहब पर ईमान लाता हुआ भी चोर और डाकू हो सकता है, झूठ बोल सकता है अथवा चोरी कर सकता है और दूसरा मुहम्मद साहब पर ईमान न लाने वाला सत्यवक्ता और ईमानदार हो सकता है। मुहम्मद साहब पर ईमान लाना संस्कृति का लक्षण है और सत्य बोलना, चोरी न करना तथा क्रोध न करना, सदा मुस्कराते रहना—ये सभ्यता के लक्षण हैं।

"और देखिये, हमारे माननीय ग्रन्थ वेद हैं। एक वेद-वक्ता गन्दा, अशुद्ध, नित्य स्नान न करने वाला भी हो सकता है। वह क्रोधी जीव और धैर्य-विहीन भी हो सकता है। वेद को धर्म-पुस्तक मानने वाला व्यक्ति निर्दयी और झूठ बोलने वाला भी हो सकता है। वेद पर विश्वास रखना संस्कृति का लक्षण है और श्रेष्ठ आचरण की बात सभ्यता के लक्षण हैं।

"आचरण को हम लोग अपनी भाषा में धर्म कहते हैं। धर्म सभ्यता का लक्षण है और संस्कृति विचार की बात है।"

तबस्सुम ने अभी भी सन्तोष प्रकट नहीं किया। उसने पूछ लिया, "क्या विचार से ही कर्म का निर्माण नहीं होता ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होना चाहिये, परन्तु अनेकों स्थानों पर हम देखते हैं कि अविचारशील कर्म हो रहे हैं। वास्तव में कर्म का स्रोत विचार नहीं, प्रत्युत कामना है। हाँ, कामनाओं से किये जाने वाले कर्मों पर नियन्त्रण विचार से होता है। इस पर भी, कभी कामनाएँ अति प्रबल होती हैं तो विचार का बन्धन तोड़ कर भी अविचारित कर्म कराती हैं।

"मेरा अभिप्राय यह है कि कर्म धर्मयुक्त हो तो लड़के-लड़की में विवाह हो सकता है।"

"धर्म क्या होता है ?"

"कर्म तीन प्रकार के होते हैं। भले कर्म, बुरे कर्म और अकर्म। भले कर्म धर्म कहलाते हैं, बुरे कर्म अधर्म कहलाते हैं और किसी परिस्थिति के अनुरूप कर्म न करने को अकर्म कहा जाता है।

"अकर्म धर्म का सहायक भी हो सकता है और अधर्म का सहायक भी। अतः अकर्म स्वतः किसी प्रकार का अस्तित्व नहीं रखता। यह या तो धर्म होगा अथवा अधर्म।"

"तो कोई हिन्दू लड़की गैर-हिन्दू लड़के से अथवा इससे उलट होने पर विवाह कर सकती है और वह विवाह सुखदायक होगा क्या ?"

"जब तक विचारों को कर्म से पृथक् रखेंगे और कर्म धर्मयुक्त होगा, तब तक ऐसे विवाह में हानि नहीं होगी।"

"यह कैसे हो सकता है ? यह देखने में तो नहीं आता।"

"इस पर भी यह होना चाहिये। यदि नहीं होता तो, इस कारण कि दोनों में से कोई एक ऐसी संस्कृति अर्थात् विश्वास रखता है, जो विचारित नहीं होते। ऐसे लोग अविचारित विश्वासों को संस्कृति मानने लगते हैं। वास्तव में संस्कृति विचार-जन्य होती है।

"यह उन समुदायों में होता है, जहाँ किसी गुरु, पीर, पैगम्बर अथवा धर्म-ग्रन्थ की बात को बिना विचार किये, स्वीकार करने के लिये कहा जाता है। वहाँ विश्वास अविचारशील हो जाते हैं और कर्म संदिग्ध हो जाता है। तब पति-पत्नी में झगड़ा होगा ही।"

"बहुत कठिन है।"

"मैं ऐसा नहीं मानता।"

"अच्छा यह बताइये, आपका विवाह हो चुका है क्या ?"

"हाँ; मेरे दो बच्चे भी हैं।"

"तो आप एक दूसरा विवाह कर लें।"

"क्यों ?"

"मैं आपके विचार की परीक्षा करना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! पर तुम तो 'राष्ट्र' के सम्पादक को कोई बूढ़ा व्यक्ति समझ उसकी हँसी उड़ाने आयी थीं ? अब एक युवक की भी हँसी उड़ाने लगी हो ?"

"हो सकता है। यदि आप कहते कुछ हैं और करेंगे कुछ और, तो हँसी होगी ही। साथ ही ज़ूत-पज़ार भी होगी।"

"मैं तुमसे विवाह नहीं करूँगा।"

"क्यों ?"

"इस कारण कि तुम्हारा यह कर्म विचारयुक्त नहीं है। यह क्रोधवश निश्चय किया जा रहा है।"

"मैं तो प्रसन्न हूँ, क्रोधवश नहीं हूँ।"

"देखिये, तबस्सुम जी ! आप द्वेष से कह रही हैं। जिस बात का आप विचार से, अभिप्राय यह कि युक्ति से खण्डन नहीं कर सकीं, उसको व्यवहार से झूठा सिद्ध करने का यत्न करना चाहती हैं। यह द्वेष कहलाता है और द्वेष क्रोध का मूल है।

"विचारित विश्वास वे होते हैं, जो युक्ति से सिद्ध हो जायें अथवा जो युक्ति की कसौटी पर सत्य सिद्ध हों।"

तबस्सुम ने कुछ देर विचार कर कह दिया, "एक बात तो मैं समझ गयी हूँ और मानती हूँ। वह यह कि आप एक कुशल 'लौजीशन'[1] हैं।"

"और मैं तुम्हें अपना निश्चित मत बताता हूँ कि जो बात श्रेष्ठ लौजिक से सिद्ध नहीं हो सकती, वह सत्य नहीं हो सकती।"

"और श्रेष्ठ लौजिक क्या है ? जिसका सामने बैठा विपक्षी उत्तर न दे सके, वही तो श्रेष्ठ लौजिक है न ? मेरा आपकी बात का उत्तर न दे सकने से यह सिद्ध नहीं हो जाता कि आपकी बात सत्य है।"

"आप नहीं समझीं। आपके उत्तर दे सकने अथवा न दे सकने का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। मेरे युक्तियुक्त होने और मेरी युक्ति की श्रेष्ठता इस बात से सम्बन्ध रखती है कि मेरा युक्ति करना विवेकपूर्ण है अथवा नहीं। विवेक से मेरा अभिप्राय है कि पूर्वग्रहों से मुक्त होकर विचार करने से है।

"इसमें कभी मिथ्या परिणाम निकल भी आते हैं तो उनको सुधारने की सम्भावना सदा रहती है और दो विभिन्न विचारों के साथी, विवाहित अथवा अविवाहित, प्रथम तो झगड़ते ही नहीं और कभी झगड़ते भी हैं तो परस्पर समन्वय कर लेते हैं।"

तबस्सुम हँस पड़ी और बोली, "तो यह है आपका समन्वय ?"

"हाँ; विचारयुक्त समन्वय से मेरा यही अभिप्राय है। सर्वप्रथम विश्वास

---

१. तार्किक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारित हो। वे सदा विचार की कसौटी पर कसे जाने के लिये तैयार हों और विचारानुसार बदल जाने वाले हों। दूसरे, विचार करते समय किसी विचार अथवा कथन पर पूर्व-आग्रह न हो। विश्वास ठीक रहेंगे तो कर्म भी ठीक होंगे।"

तबस्सुम ने कहा, "एक बात मैं आपसे और जान कर चल दूंगी। मैं आपका अनावश्यक समय लेना नहीं चाहती। क्या कोई हिन्दू ऐसा है जो पूर्वग्रहों से मुक्त हो?"

"वैसे तो किसी भी समुदाय में पूर्वग्रहों से ग्रसित लोग एक बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं। इसी कारण विवाह प्रायः मुसलमानों के मुसलमानों में और हिन्दुओं के हिन्दुओं में होते हैं। जहाँ अपने समुदाय से बाहर विवाह करना हो तो दोनों पक्षों का पूर्वग्रहों से मुक्त होकर विचारशील होना आवश्यक है।"

तबस्सुम उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़ बोली, "क्षमा करें। बहुत समय ले लिया है आपका, परन्तु......।"

इस समय चपरासी दो प्याले चाय लेकर आ गया। लड़की चाय देखकर हँस पड़ी और बोली, "तो आप अब सभ्यतापूर्ण व्यवहार करने लगे हैं?"

"हाँ, परन्तु यह अविचारित सभ्यता नहीं है। मेरा इस विष्णुसरण को यह विचारित आदेश है कि जब कोई आने वाला पाँच मिनट से अधिक देर तक बातें करता हुआ बैठा रहे तो उसके लिये चाय आनी ही चाहिये।

"यह उस विचारित आदेश के परिणाम-स्वरूप कर्म है। यह सभ्य व्यवहार तो है, परन्तु अविचारित नहीं।"

लड़की पुनः बैठ गयी और प्याला उठा एक घूंट पीकर बोली, "मैं बहुत गलत अनुमान लगाकर यहाँ आयी थी। मैं समझी थी कि किसी पचास-साठ वर्ष के बूढ़े महाराष्ट्रियन ब्राह्मण से वास्ता पड़ेगा। जब मैं उसकी हँसी उड़ाऊँगी तो वह क्रुद्ध हो मुझे बुरा-भला कहने लगेगा और मैं हँसती हुई उसे झूठा सिद्ध कर चल दूंगी।"

विजय भी चाय पीता हुआ पूछने लगा, "तो क्या इस प्रकार भले लोगों की हँसी उड़ाने का आपको अभ्यास है?"

तबस्सुम हँस पड़ी और बोली, "अभ्यास तो नहीं है। इस पर भी इसमें स्वाद तो आता है, परन्तु आपसे बातचीत का अधिक स्वाद आया है।"

"यदि नाराज़ न हों तो एक बात और कह दूं? वह यह कि अपने से बड़ों की हँसी उड़ाने मत जाया करो। उनके पास कुछ सीखने के लिये जाना चाहिये। इससे तुम्हारा कल्याण होगा।"

चाय समाप्त हुई तो तबस्सुम ने पुनः उठ हाथ जोड़ कहा, "मैं आपसे फिर मिलूंगी।"

"बिना किसी श्रेष्ठ प्रयोजन के आओगी तो जहाँ अपने साथ अन्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोगी, वहाँ मेरे साथ भी। समय ही धन है और धन निष्प्रयोजन व्यय किया जाये तो अकल्याण होता है।"

'नहीं; अकल्याण नहीं होगा। किसी प्रयोजन से ही आऊँगी।"

इसके कई दिन उपरान्त विजय कमलनारायण के घर कैंटालीना से पत्रिका सम्बन्धी कार्य समाप्त कर चलने लगा तो चपरासी ने कह दिया, "वकील साहब सलाम कहते हैं।"

विजय कैंटालीना से कोठी के ड्रायंग-रूम में बात कर बाहर जा रहा था। उसने चपरासी से पूछ लिया, "कहाँ हैं वकील साहब ?"

"अपने दफ्तर में।"

विजय दफ्तर की ओर चला गया। वहाँ पहुँच उसने देखा कि एक अन्य सज्जन, बहुत बढ़िया युरोपियन ढंग के कपड़े पहने, कमलनारायण के पास बैठे थे। विजय ने हाथ जोड़ नमस्कार की तो कमलनारायण ने हाथ बढ़ा विजय से मिलाते हुए कहा, "अब तो विजय जी यहाँ आते हैं तो बिना मिले ही चल देते हैं ? कुछ नाराज़ हैं क्या ?"

"यह तो आपके 'आफिस' के काम में विघ्न न डालने के विचार से था। मैं समझा था कि आपके कोई 'क्लायैंट' बैठे हैं और वकील तथा क्लायैंट की बातें प्रायः गुप्त होती हैं। इस कारण मेरा आपको नमस्ते करने न आना क्षमा के योग्य है।"

"हाँ, यह क्लायैंट तो हैं; परन्तु यह आपसे मिलने की इच्छा रखते हैं।"

"सत्य ? तो मैं हाज़िर हूँ।"

"यहाँ नहीं। यह मेरे पास आये थे कि मैं आपको लेकर इनके घर चाय पर पहुँचूं। सौभाग्य से आप यहाँ पर ही थे। इस कारण मैंने इनको कह दिया कि आपसे यहाँ ही भेंट करा सकता हूँ।"

"यह कह रहे हैं कि चाय का निमन्त्रण घर पर है। वैसे आपसे मिलकर ये निमन्त्रण स्वयमेव देने के लिये तैयार हो गये हैं।"

"मुझे बहुत प्रसन्नता होगी; परन्तु क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूँ ?" विजय ने उन सज्जन व्यक्ति से पूछ लिया।

"हाँ, यह मैं करा देता हूँ।" कमल ने कहा, "आप हैं राइट ऑनरेबल खानबहादुर नसीरुद्दीन; नाईट के० सी० आई० ई०। मेरे यह क्लायैंट भी हैं और मेहरबान भी हैं। बहुत ही उदार विचारों के हैं; यहाँ की समाज के एक प्रमुख व्यक्ति हैं।"

"और क्या मैं जान सकता हूँ कि मुझ नाचीज़ पर यह नज़रे-इनायत[1]

---

१. कृपा-दृष्टि।

—१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसलिये है ?"

"विजय जी !" नसीरुद्दीन ने कहा, "यह आपके अखबार के कारण है। आप हर हफ्ते उसमें गोलाबारी करते रहते हैं और उस गोलाबारी से बहुत घायल हो, इधर-उधर पनाह के लिये भागते देखे जाते हैं। कुछ आपसे बचने के लिये सरकार का दामन पकड़ते हैं तो कुछ कांग्रेस के मंच पर चीख-पुकार करते देखे जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो मस्जिदों में आपके विरुद्ध 'वाज़' करते हैं। मैं आपसे इसी मज़मून पर बातचीत करने के लिये ख्वाहिशमन्द हूँ।"

"तो मैं हाज़िर हूँ। बातचीत भी हो सकती है और गोलाबारी के उत्तर में गोलाबारी भी हो सकती है।"

"यहाँ नहीं। आप हमारे घर पर आइये। वहाँ इतमीनान से बातचीत होगी।"

"वकील साहब ! आप भी चलेंगे न ? मुझे साथ ले चलियेगा।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा। मुझे उस दिन बड़ौदा में कुछ काम है। यह आपको आने वाले रविवार को बुला रहे हैं।"

"हाँ, तो आप पता बता दीजिये। मैं स्वयं हाज़िर हो जाऊँगा।"

इस पर खानबहादुर साहब ने अपनी जेब से एक विज़िटिंग-कार्ड निकाला और दे दिया। उस पर उनका नाम तथा पता छपा था।

: १३ :

सर नसीरुद्दीन साहब की कोठी के ड्रायंग-रूम में प्रवेश करते ही, विजय स्तब्ध खड़ा रह गया। ड्रायंग-रूम में तबस्सुम बैठी थी। उस समय वह वहाँ अकेली थी। विजय ड्रायंग-रूम के द्वार पर ही खड़ा रह गया। तबस्सुम उसे आता देख, खड़ी हो गयी और उसे द्वार पर ही खड़ा देख बोली, "आइये ऐडीटर साहब ! आप रुक क्यों गये हैं वहाँ ?"

विजय आया और बोला, "मैं खानबहादुर नसीरुद्दीन साहब के घर पर आया था। मैं विचार कर रहा था कि कहीं गलती से तो यहाँ नहीं आ गया ?"

"नहीं; आपने गलती नहीं की। मैं खानबहादुर की लड़की हूँ। बैठिये, वे आने वाले ही हैं। अम्मी ने उनको आने में देर देख, मुझे कह दिया है कि उनके आने तक मैं आपसे बातचीत करूँ। बताइये, यहाँ पहुँचने में कुछ दिक्कत तो पेश नहीं आई ?"

"नहीं; गाड़ीवान को पता दिया तो वह यहाँ ले आया है। बाहर तो खानबहादुर का नाम लिखा है। परन्तु मैं यह समझ नहीं सका था कि दूसरों के घर में जाकर हँसी करने वाली लड़की भी खानबहादुर के घर की कोई हो सकती है। खानबहादुर के घर पर तो बुर्का ही देखने की आशा करता था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबस्सुम हँस पड़ी। हँसते हुए वह बोली, "आप खानबहादुर साहब को नहीं जानते। वे बहुत ही फराख खयालात रखते हैं।"

"खैर, एक बात से इतमीनान हुआ है कि मैं किसी अनजान लोगों के बीच नहीं हूँ। आपकी अम्मी तो पर्दा करती होंगी?"

"हाँ; मगर वे आपसे पर्दा नहीं करेंगी। मेरी एक और भी अम्मी हैं। वे एक अंग्रेज़ औरत हैं। वह तो अब्बाजान के साथ गयी हुई हैं और उनके साथ ही लौट आयेंगी।"

"और आप कितने बहन-भाई हैं?"

"हम सात हैं। लेकिन यहाँ इस वक्त मैं अकेली ही हूँ। छः विलायत में तालीम हासिल कर रहे हैं। सबसे छोटी बहन है। वह अब सात वर्ष की है। वह भी वहाँ एक स्कूल में भरती हो चुकी है।"

"तो आप विलायत में नहीं पढ़ने गयीं।"

तबस्सुम हँस पड़ी। उसने कहा, "मैं एम० ए० ऑक्सन हूँ। यहाँ लड़कियों के कालेज में पढ़ाती हूँ।"

"ओह! मैं तो आपको कालेज की छात्रा समझा था। आपने भी तो, जहाँ तक मुझे स्मरण है, अपने को छात्रा ही कहा था।"

"मेरा खयाल था कि आपसे पुनः मुलाकात नहीं होगी। इसलिये छोटा-सा झूठ बोल दिया था; परन्तु क्या मैं अभी एक छात्रा के उमर की मालूम नहीं होती?"

"अक्ल से तो आप एक बच्ची ही प्रतीत होती हैं।"

"मेरी उमर इस समय बाईस वर्ष से ऊपर है।"

"खैर, मैं भूल गया था। परन्तु लड़कियों की उमर के विषय में प्रायः लोग भूल कर जाते हैं।"

इस समय खानबहादुर और उनके साथ एक गौरवर्णीय युवती, जिसके बाल भी भूरे थे, आयी। विजय तथा तबस्सुम ने उठ कर उनका स्वागत किया।

"तो आप आ गये हैं।" खानबहादुर ने आगे बढ़ हाथ मिलाते हुए कहा, "और यह देखिये, मेरी सबसे छोटी बेगम मरियम तैयब जी हैं। बताइये, आपको कोई तकलीफ तो नहीं हुई।"

"नहीं; मैं आसानी से पहुँच गया था और फिर ये तबस्सुम जी तो पहले की परिचित निकली हैं।"

"हाँ; हकीकत में इन्होंने ही आपके मुतअल्लिक बताया है। यह लेडी ऐलफिन्स्टेन कालेज में प्रोफेसर हैं। वहाँ सोशलोजी पढ़ाती हैं।"

सब बैठ गये थे। खानबहादुर ने सोफा के समीप मेज़ पर रखी घण्टी बजा दी और बोले, "मेरी एक और बेगम यहाँ हैं। वे सबसे बड़ी हैं और तबस्सुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की माँ हैं। वही चाय ठीक करवा रही होंगी।"

इस समय एक प्रौढ़ावस्था की औरत वहाँ आ पहुँची। साथ ही दो बैरे चाय तथा खाने-पीने का सामान लेकर चले आये।

जब तक बैरे सैण्टर टेबल पर सामान लगाते रहे, खानबहादुर ने उस प्रौढ़ावस्था की बेगम का परिचय करा दिया। उन्होंने कहा, "यह हैं तबस्सुम की अम्मी ज़रीना तैयबं जी। ये नवाब जूनागढ़ की पोती हैं। यह इतनी खुश-किस्मत हैं कि मेरे सात बच्चों में से पाँच की माँ हैं।"

परिचय के उपरान्त मरियम सबके लिये चाय बनाने लगी। जब बैरे कमरे से बाहर चले गये तो खानबहादुर ने विजय से पूछ लिया, "ऐडीटर साहब! यह तबस्सुम कहती है कि आपसे आपके दफ्तर में मिली है। कैसी लगी है यह आपको?"

"एक औसत काबलीयत की औरत से अधिक समझदार है, और मैं अब समझता हूँ कि इनको होना भी चाहिये। ये प्रोफेसर हैं। अवश्य इनका ज्ञान गम्भीर होगा।"

"पर आप तो कह रहे थे कि मैं एक बच्ची ही लगती हूँ।" तबस्सुम ने कह दिया।

"हाँ; और ज्यों-ज्यों कोई औरत बड़ी होती जाती है, वह अक्ल में कम होती जाती है। इसी कारण जब अक्ल की बात होती है, तो कम उमर का होना एक तारीफ की ही बात माननी चाहिये। अक्ल बच्चों में बहुत शफाफ़ होती है। हाँ, बड़ों में ज्ञान और वाकफीयत अधिक होती है।"

"देखिए ऐडीटर साहब! यह लड़की जबसे आपको देखकर और आपसे आधा घण्टा-भर 'गुफ्तगू' कर आयी है, आपकी ही बातें करती रहती है।"

"परन्तु मैंने तो कोई ऐसी बात की नहीं जिसमें कुछ विशेषता रही हो।"

"यही तो बात है। जब कोई लड़की किसी नौजवान की मामूली-मामूली बातों को भी बहुत अहमीयत देने लगे तो उसके घरवाले, अक्लमन्द हों तो, समझ जाते हैं कि लड़की की उस नौजवान से शादी होनी चाहिये।"

"यह तो तबस्सुम जी के लिये बहुत कठिनाई की बात हो जायेगी।"

"क्यों?" ज़रीना ने पूछ लिया।

"मेरी एक शादी पहले ही हो चुकी है।"

"हाँ, हम जानते हैं कि वह भाग कर किसी दूसरे के घर जा चुकी है। अगर वह न भी गयी होती तब भी कुछ बात नहीं थी। मैंने चार शादियाँ की हैं और तीन अभी तक जिन्दा हैं। एक आजकल अपनी माँ के घर गयी हुई है। उसके वालिद शरीफ बीमार हैं।"

"मगर मैं तो एक शादी से अधिक पसन्द नहीं करता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब भी तो आपके पास एक ही रहेगी। दूसरी तो भाग गयी है।"

विजय ने तबस्सुम की ओर देखा। वह एक मिठाई की डली उठा कर खा रही थी और ऐसे बैठी थी कि जैसे किसी दूसरी लड़की के विषय में बात हो रही हो और वह स्वयं उसमें रुचि रखती हो।

"मैंने," आखिर विजय ने कहा, "इनको शादी के विषय में अपने विचार बताये हैं। यदि ये उन विचारों को पसन्द करती हैं तो बात अवश्य विचारणीय हो गयी है।"

अब खान साहब ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया, "कितनी देर में आप विचार कर सकते हैं, विजय जी!

"मैं आपको बताना चाहता हूँ," खान साहब ने आगे कहा, "मैंने मरियम से विवाह करने का फैसला करने में कितने मिनट लगाये थे?

"मैं लॉर्ड सैलिसबरी के यहाँ लंच पर गया हुआ था। ये लॉर्ड की दूर के रिश्ते में 'नीस' हैं। ये मेरे साथ ही मेज़ पर बैठी थीं। खाना खाते हुए हम बातें करते रहे और जब खाना खत्म हुआ तो मैंने कहा, 'अगर आपको मुसलमानी तरीके से शादी करनी मन्जूर हो तो मैं आपको 'प्रपोज़' कर बहुत ही खुशी महसूस करूँगा।"

"ये बोलीं, 'मुसलमानी तरीके से क्यों? गिरजाघर में क्यों नहीं?'

"मैंने कहा, 'यह इस वास्ते कि मेरी दो बीवियाँ और मौजूद हैं।'

"ये चुप रहीं। मैंने इसे इनकी रज़ामन्दी समझी और इनकी बाँह-में-बाँह डाल इनको अपने घर ले आया। आने के समय लॉर्ड सैलिसबरी ने इनसे पूछा, 'कहाँ जा रही हो?'

"ये बोलीं, 'अपने घर।' हम घर चले आये। उसी वक्त मैंने वहाँ पर मुल्ला को बुलाया और इनसे निकाह पढ़ा लिया।

"अब आप बताइये कि कैसे और कितनी देर तक आप इरादा बना लेंगे।"

विजय ने मुस्कराकर कहा, "खान साहब! मैं आप जैसा शेर-दिल नहीं हूँ। मैं कुछ इन्सानियत के औसाफ रखता हूँ और इन्सान को सोचने में कुछ देर लगती है। एक बात और है। वह यह कि अभी तो हम चाय पी रहे हैं और तबस्सुम जी मेरे साथ की कुर्सी पर नहीं बैठी हुई। न ही मैं कहीं दूर देश में, अपने सम्बन्धियों से दूर गया हुआ हूँ। मेरी माँ, बूआ, दो भाभियाँ यहाँ बम्बई में ही हैं। कुछ सम्बन्धी कलकत्ता और लाहौर में हैं।

"सबसे बड़ी बात है कि एक भाई छः वर्ष की कैद भोग रहा है और वालिद शरीफ पाँच वर्ष की कैद में हैं।"

"ये सब बातें मैं वकील साहब से पता कर चुका हूँ। इस पर भी यह तबस्सुम आपसे विवाह करना चाहती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी; यह तो आपने बताया ही है। मगर मुझसे विवाह होने पर इसका सम्बन्ध परिवार में, विशेष रूप में मेरे माता-पिता से तो बनेगा। ज़रा यह उनको देख लें और वे इसको देख लें। बातचीत कर लें और यदि हो सके तो इसकी अम्मी से भी परिचय कर लें। तब ही ठीक होगा।"

"तो ऐसा करते हैं कि कल आप सबको मैं रात के खाने के समय पर आने की दावत दे देता हूँ।"

"जी नहीं। अब मैं तबस्सुम जी को और आप सबको, जो-जो भी आने की तकलीफ गवारा कर सकें, निमन्त्रण देता हूँ कल रात के खाने के समय। फिर यदि सब राज़ी हो गये तो मैं एक दिन इनकी बाँह-में-बाँह डाल कर यहाँ से अपने घर ले जाऊँगा।"

"क्यों तबस्सुम! क्या राय है?"

"एक बात तो तय हो गयी है कि ये शादी के लिये मान गये हैं। शेष तो 'फौरमल'[1] बात है। वह भी हो जाये, मुझे इसमें क्या ऐतराज़ हो सकता है?"

"तबस्सुम जी के लिये यह 'फौरमल' हो तो हो, परन्तु मेरे माता-पिता तथा दूसरे सम्बन्धियों के लिये यह शादी 'फौरमल' नहीं होगी। वे इसे सत्य मान कर ही स्वीकार करेंगे। उनका मुझसे सम्बन्ध 'वास्तविक' है और मेरा तबस्सुम जी से सम्बन्ध भी वास्तविक होगा। अतः इससे उनका सम्बन्ध भी न फौरमल और न अनरीयल होगा।"

"जो भी हो। आप अब तबस्सुम से 'प्रोग्राम' की 'डिटेल' तय कर लें।"

"कर लेंगे।" विजय ने कहा। उसके कहने का अभिप्राय यह था कि इस बात में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं, परन्तु तबस्सुम अपने पिता की भाँति ऐसे मामलों में देर करने में लाभ नहीं समझती थी। अतः वह उस सोफा पर से उठी, जिस पर वह अपने पिता और अंग्रेज़ मम्मी के साथ बैठी हुई थी और अपनी अम्मी को कह कर उस सोफा पर, जिस पर विजय और ज़रीना अम्मी बैठे थे, आ बैठी। उसने अपने लिये अपनी अम्मी और विजय के भीतर जगह बनवा ली और बैठ गयी।

वह अपना प्याला, जिसमें से चाय पी रही थी, साथ ही उठा लायी थी और उसने बैठ एक चुस्की लगा कर कहा, "तो अब बताइये! क्या प्रोग्राम है?"

"कल आप, खानबहादुर और दोनों अम्मियाँ मेरे यहाँ रात के खाने के लिये पधारें तो मैं बहुत अनुग्रहीत अनुभव करूँगा। मैं आपके आने का उद्देश्य अपने सम्बन्धियों को पहले ही बता रखूँगा। आप मेरी माता जी तथा बूआ जी के भीतर बैठेंगी और वे आपसे बातचीत करेंगी। मैं खानबहादुर और तुम्हारी

---

१. औपचारिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मी के पास बैठूंगा, जिससे यदि उन्होंने मेरे विषय में कल तक कुछ और विचार किया हो तो वे पूछ-ताछ कर सकें। तदनन्तर आप अपने माता-पिता के घर लौट आयेंगी और फिर अगले दिन यदि आप मेरे कार्यालय में आ सकें अथवा आप अपने घर पर बुलायें तो हम मिलकर शेष कार्यक्रम विचार कर लेंगे।"

"बहुत लम्बा कार्यक्रम बना रहे हैं।"

"उतनी जल्दी तो हो नहीं सकता, जितनी जल्दी आपकी अम्मी का विवाह हुआ था। यह हिन्दुस्तान है। यहां अभी भी बैल-गाड़ियाँ चलती हैं।"

तबस्सुम मुस्करायी और बोली, "सुना है कि विलायत और अफ्रीका में लोग हवा में उड़ने लगे हैं।"

"हम भी उड़ सकेंगे, परन्तु इसमें कुछ देर लगेगी।"

खान साहब ने कहा, "यह मैं तबस्सुम की कमज़ोरी समझता हूँ। इसमें मरियम जैसी गर्मी नहीं है जो पत्थर को भी आग लगा दे।"

तबस्सुम हँस पड़ी और कहने लगी, "अब्बाजान! यहाँ आग तो बहुत है, मगर ऐडीटर साहब माइनस दो सौ बहत्तर दर्जा सैण्टीग्रेड पर पहुँचे हुए हैं और इनको 'नार्मल' दर्जा हरारत तक लाने के लिये वक्त लगेगा।"

खान साहब ने मुस्कराते हुए कह दिया, "इन्हें मुर्गा खिलाने का बन्दोबस्त करना था।"

"यह तो अब शादी के बाद ही हो सकेगा।"

"मैं जानवरों का मांस नहीं खाता।" विजय ने कह दिया।

"यह आप दोनों के समझने-समझाने की बात है।" खानबहादुर ने कह दिया।

अगले दिन सुवर्णा, प्रज्ञा, प्रभा, मीनाक्षी, सब बच्चे और कैटालीना तथा कमलनारायण की उपस्थिति में खानबहादुर और उसकी दोनों पत्नियाँ तथा तबस्सुम रात के भोजन पर आये। बंगाली और गुजराती भोजन का प्रबन्ध कर दिया गया। डेढ़ घण्टा-भर अनेकानेक विषयों पर बातचीत हुई।

इससे अगले दिन तबस्सुम विजय को उसके कार्यालय में मिलने आयी और इसके अगले दिन एक पण्डित बुला कर दोनों का विवाह हो गया। विवाह पण्डित कराये अथवा कोई मुल्ला कराये, इस पर दोनों मुख्य व्यक्तियों में बातचीत हुई थी। विजय का कहना था, "मैं विवाह की रस्म को सभ्यता का अंग मानता हूँ। इसका फैसला अपनी समाज के विचारानुसार होना चाहिये। सभ्य व्यवहार वही होता है जो मेल-जोल वाले लोग पसन्द करें। अतः यदि आपके माता-पिता और सम्बन्धी चाहें तो आपके घर मुल्ला बुला कर निकाह पढ़ाया जा सकता है और हमारे घर में पण्डित बुला कर विवाह होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो दोनों में साँझी बात होगी, वह यह कि हम वचनबद्ध होंगे कि मरण-पर्यन्त हमारा सम्बन्ध बना रहेगा और हम घर की सब समस्याओं को समन्वय-पूर्वक सुलझा लिया करेंगे। यही सभ्यताओं का समन्वय है।

"जहाँ तक हमारी संस्कृति का सम्बन्ध है, उसको समझाने के लिये मैं आपको अपनी बूआ की बात बता देना चाहता हूँ। वे कल आपके बाँयी ओर बैठी थीं। उनका विवाह एक ईसाई के साथ गिरजाघर में हुआ था। दो बच्चे भी हुए, परन्तु पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। पति ने बूआ को कहा कि वह उसे तलाक दे दे। बूआ ने कहा था, 'मैं हिन्दू हूँ और एक हिन्दू स्त्री जब विवाह दी गयी तो फिर मरण-पर्यन्त पति को छोड़ नहीं सकती।'

"पति ने कहा, 'मैं तुम्हें छोड़ रहा हूँ।'

"बूआ का कहना था, 'इससे क्या होता है ? मैंने नहीं छोड़ा और मैं आपकी पत्नी रहूँगी। इस कारण वह अभी भी अपने को मिस्टर दास की विवाहिता मानती है।'

"मतलब यह कि आप तलाक नहीं देंगे ?" तबस्सुम ने पूछा।

"नहीं। विवाह होगा तो मैं अपने को आपसे जीवन-भर के लिये संयुक्त हो गया समझता रहूँगा। यह मेरी संस्कृति के लक्षण हैं।"

"चाहे मैं आपकी पहली पत्नी की भाँति किसी अन्य के पास चली जाऊँ ?"

"मेरी पत्नी तो आप तब भी रहेंगी। केवल इतना अन्तर पड़ जायेगा कि आप पथ-भ्रष्ट हो गयी पत्नी होंगी। इस पर भी पत्नी से आप कुछ अन्य नहीं हो सकतीं।"

"चाहे मैं आपको अपना खाविन्द न मानूं ?"

"यह आपके विचार करने की बात है।"

"मेरे लिये यह लाभ की बात ही होगी।"

"लाभ-हानि तो व्यक्ति-व्यक्ति के विचार की बात होती है। मेरे लिये अपनी पथ-भ्रष्ट स्त्री को भी अपनी पत्नी ही मानना लाभ की बात है।"

"बहुत विचित्र हैं आप !"

"इसमें वैचित्र्य कुछ भी नहीं। जब व्यवहार में बात आयेगी तो स्पष्ट हो जायेगी।"

खानबहादुर ने मुल्ला द्वारा विवाह की आवश्यकता नहीं समझी। ज़रीना बेगम ने कह दिया, "मुल्ला से की गयी शादी तो टूट सकती है। सिर्फ खाविन्द को अपने किसी रिश्तेदार के सामने तीन बार 'छोड़ दी' कहने की ज़रूरत है। यह तो कुछ अधिक अच्छी बात नहीं। ऐसी नाकस बात की ज़रूरत महसूस नहीं होती। खास तौर पर जब एक मज़बूत रिश्ता बन रहा हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

नलिनीकान्त अपने लड़के आनन्दस्वरूप से पहले ही जेल से छूटा। जब वह बम्बई में पहुँचा तो कैंटालीना ने उसके सम्मान में एक बहुत बड़े भोज का प्रबन्ध कर दिया। भोज ताजमहल होटल के रिसैप्शन-हॉल में दिया गया और इसमें पाँच सौ से ऊपर नागरिक एकत्रित हुए। नलिनीकान्त के इस भव्य स्वागत से एक बात सिद्ध हो गयी कि सरकारी आतंक का भय क्षीण हो रहा था।

बहुत से क्रान्तिकारी अभी भी हिन्दुस्तान की भिन्न-भिन्न जेलों में और अण्डमान की जेल में बन्द थे; परन्तु इनकी एक नयी सृष्टि उत्पन्न हो चुकी थी। दिल्ली में लॉर्ड हार्डिंग के जलूस पर बम्ब चला था और वाइसराय घायल हो गये थे। लाहौर में भी दो बम्ब की घटनाएँ हुई थीं। दिल्ली के षड्यन्त्र का मुकद्दमा हो चुका था। दो को फांसी और पांच-छः को भिन्न-भिन्न काल के लिये कठोर दण्ड दिया जा चुका था। बंगाल में भी पुनः छुट-पुट घटनाएँ होने लगी थीं।

दूसरी ओर लन्दन में एक मदनलाल ढींगरा ने सर वाइली की हत्या कर और एक अन्य अवसर पर एक हिन्दुस्तानी युवक ने लॉर्ड लेमिंगटन के व्याख्यान दी के समय उनके मुख पर चपत लगा दी।

विनायक दामोदर सावरकर पकड़ कर साठ वर्ष की लम्बी कैद में डाल दिये गए थे। पंजाब के सरदार अजीतसिंह और लाला हरदयाल हिन्दुस्तान से बाहर जा, वहाँ हिन्दुस्तान के अनुकूल शक्तियों का संचय कर रहे थे।

देश की यह परिस्थिति थी, जब नलिनी छूट कर आया था। अपने स्वागत-भोज के अवसर पर नलिनी ने कहा, "हमने भारत को स्वतन्त्र करने का निश्चय किया हुआ है और इसे बिना स्वतन्त्र किये दम नहीं ले सकते। हम कुछ अनहोनी बात नहीं कर रहे। यह वही बात है जो अंग्रेज़ अपने देश में अपने लिये चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी के इस स्वागत-समारोह में डाक्टर ऐनिबिसेंट भी उपस्थित थीं। वे विलायत से हिन्दुस्तान आयी थीं। नलिनी के स्वागत-भोज में कमलनारायण ने उन्हें भी आमन्त्रित किया था। वे स्वागत-समारोह में सम्मिलित हुईं और नलिनी के ओजस्वी भाषण को सुन बहुत प्रसन्न हुईं।

समारोह के उपरान्त ऐनिबिसेंट ने नलिनी से पूछा, "आपका अब क्या कार्यक्रम है?"

"अभी तो यहाँ से मैं अपने लड़के के घर पर जाऊँगा। वह यहाँ 'राष्ट्र' नाम का एक साप्ताहिक पत्र चला रहा है।"

ऐनिबिसेंट मुस्करायीं और कहने लगीं, "मैंने यह नहीं पूछा। मैंने आपके स्वराज्य-प्राप्ति के कार्यक्रम के विषय में पूछा है।"

"ओह! मैं समझा था कि आज दिन के कार्यक्रम के विषय में पूछ रही हैं। देखिये, मैं समझ रहा हूँ कि हमारे युवक जो जेलों में सड़ रहे हैं, उनकी अभिलाषाओं और इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये जेल से बाहर कुछ कार्य होना चाहिये। मेरा अभिप्राय है कि स्वराज्य की प्राप्ति में हमें यत्न करते रहना है। मैं देश में एक प्रबल जन-मत स्वराज्य के पक्ष में तैयार करना चाहता हूँ। स्वराज्य की रूप-रेखा तो कुछ ही लोग निश्चय करेंगे। हम प्रेरणा देकर वह जनता से स्वीकार करवाएँगे।"

"यह तो ठीक है, परन्तु स्वराज्य के अर्थ क्या हैं?"

"इसके अर्थ हम लोग तब निश्चय करेंगे, जब यह मिलता दिखाई देगा। उससे पहले व्याख्या पर विवाद करना खायी में गिरने के तुल्य होगा।"

"यह तो अब कांग्रेस भी करने जा रही है। श्री गोखले और दादा भाई नारोजी के निधन से कांग्रेस में स्थान रिक्त हो गया है। अतः इस संस्था में नये रक्त का संचार करना आवश्यक है। आपका क्या विचार है?"

"आप यहाँ कब तक हैं?"

"मैं अभी दो दिन यहाँ रहूँगी।"

"कल मैं आपसे कहाँ और कब मिल सकता हूँ?"

"मैं मिस्टर 'वाडिया' के घर पर ठहरी हूँ। आप कल दस बजे दिन के समय यदि आ सकें तो इस विषय में हम बात कर सकेंगे।"

"मैं ठीक दस बजे आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।"

नलिनी को विजय की नयी पत्नी पहली से अधिक पसन्द आयी। उसे यह देख हर्ष हुआ कि विजय भी उससे अधिक सन्तुष्ट है। परन्तु एक विशेष बात यह हुई थी कि ललिता ज्ञान का घर छोड़, पुनः विजय के घर रहने के लिये आ गयी थी।

यह घटना तबस्सुम के विवाह के तीन मास उपरान्त हुई थी। तबस्सुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विजय के परिवार में नाम सरस्वती रखा गया था। अपने माता-पिता के घर में वह तबस्सुम ही थी। ज़रीना कभी-कभी कहती अवश्य थी कि सरस्वती नाम बोलने में मीठा और आसान है, परन्तु संस्काराधीन वह उसे तबस्सुम ही पुकारती थी।

खानबहादुर के घर में तो यह था कि एक पत्नी ईसाई थी और दूसरी पत्नी जो एक लड़की की माँ थी, एक ईरानी सौदागर की बेटी थी। उसका नाम सुरैया था। वह शिया मत को मानने वाली थी। ज़रीना सुन्नी थी। खानबहादुर स्वयं ला-मज़हब थे। उन्होंने पिछले तीस वर्ष से नमाज़ नहीं पढ़ी थी और अब तो वे उसे भूलते ही जा रहे थे।

एक दिन सरस्वती माँ से मिल कर अपने घर लौटी तो उसने अपने पति को बता दिया, "मैंने अम्मी को अपने रजस्वला न होने की बात बतायी है तो वे बहुत प्रसन्न हुई हैं।"

"परन्तु तुमको बहुत सावधानी से अपना रहन-सहन रखना होगा।"

"मैं कालेज की नौकरी छोड़ रही हूँ।"

"मुझे इससे प्रसन्नता है। मैं तो पहले से यह कहता आया हूँ।"

"हाँ, मैंने आज अम्मी से सम्मति की है और उन्होंने मेरे इस फैसले पर खुशी ज़ाहिर की है।"

"कब त्याग-पत्र दे रही हो?"

"आज दे आयी हूँ।"

"बहुत ठीक।......।"

विजय बात करते-करते रुक गया। कमरे के द्वार पर ललिता खड़ी थी। वह उसे देख आश्चर्यचकित रह गया था। जेल से छूटने पर ज्ञान के घर पर भेंट के बाद आज पहली बार ललिता उसके सामने आई थी।

ललिता ने द्वार पर खड़े-खड़े ही कहा, "मैं यहाँ रहने आयी हूँ। बताइये, आप क्या कहते हैं?"

"पर तुम्हें हुआ क्या है? बहुत दुर्बल हो रही हो।"

"यह पीछे बताऊँगी। पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये।"

"देखो ललिता! तुम मेरी पत्नी हो, यद्यपि पथ-भ्रष्ट हो। इस कारण तुम यदि यहाँ रहना चाहती हो तो रह सकती हो। परन्तु यहाँ रहने की एक शर्त है।"

"क्या?"

"घर की सर्वोच्च प्रबन्धिका माता जी हैं। तुम्हें उनसे यहाँ रहने के नियमोपनियम जान लेने चाहियें। यदि वे स्वीकार हों तो रह सकोगी। वैसे मुझे मीनाक्षी भाभी ने बताया था कि एक मास से तुम अपने क्लिनिक के ऊपर वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में रह रही हो। उसने यह भी बताया है कि ज्ञान तुम्हें जब भी स्मरण करता है तो गालियाँ देता है। इस पर भी उसने यह नहीं बताया था कि तुम रहने के लिये कभी यहाँ आओगी।"

"मैं माता जी के पास हो आयी हूँ। उन्होंने कहा है कि रहने की स्वीकृति आप देंगे और रहने की व्यवस्था वे कर देंगी।"

"ठीक है। ललितादेवी इस घर में रह सकती हैं। व्यवस्था माता जी कर देंगी।"

ललिता ने विजय का धन्यवाद किया और वहाँ से सुवर्णा के कमरे की ओर चली गयी।

जब वह गयी तो सरस्वती ने अपने पति से पूछ लिया, "तो यह है आपकी पत्नी नम्बर 'वन' ?"

"हाँ।"

"यह तो कई महीने की बीमार मालूम होती है।"

"मुझे इसे देखे दो वर्ष के लगभग हो चुके हैं। तब यह सब प्रकार से स्वस्थ और सुन्दर थी। तुम-जितनी सुन्दर तो नहीं, परन्तु इस समय जैसी कुरूप भी नहीं थी।"

"यह अब यहाँ रहने आयी है ?"

"हाँ।"

"परन्तु यह फिर आपसे सम्बन्ध बना सकती है।"

"यह सम्भव तो है; यद्यपि मैं इसको आवश्यक नहीं समझता।"

"मैं आपसे, कम-से-कम एक वर्ष की छुट्टी पा सकूँगी।"

"यह भी विचारणीय है। छुट्टी-छुट्टी में अन्तर हो सकता है। साथ ही छुट्टी का अर्थ तलाक नहीं हो सकता। कम-से-कम हमारा प्रातःकाल का उपासना और यज्ञ, हवन का कार्यक्रम तो चलेगा ही।"

"मेरा छुट्टी से मतलब केवल एक काम से ही है।"

"वह तो किसी काम का पूर्वांश था। अब मध्यांश आरम्भ हुआ है और तदनन्तर उत्तरांश आरम्भ होगा। इस पर भी काम तो चलेगा ही। काम से छुट्टी नहीं। देखो सरस्वती, मैं समझाता हूँ। हलुवा बनाने के कई अंग हैं। पहले चीनी को जल में उबाल कर शर्बत बना लिया जाता है। यह एक अंग है। तदनन्तर सूजी को घी में भून लिया जाता है। यह हलुवा बनाने का दूसरा अंग है। तीसरा अंग होता है चीनी का शर्बत भुनी हुई सूजी में डाल कर उबाला जाये। सबसे अन्तिम अंग है ठण्डा कर प्लेटों में डाल कर खाया जाये।

"कार्य का एक अंग समाप्त होने पर कार्य का दूसरा अंग आरम्भ हो जाता है। उस समय पहले अंग के करने की आवश्यकता नहीं रहती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु हलुवा तो खाया जाने के उपरान्त किसी कार्य का नहीं रह जाता। वह पाखाने में चला जाता है।"

"हाँ, इस विषय में कुछ अन्तर है। वह यह कि तुम हलुवा नहीं हो। हलुवा वह कार्य है जिससे बच्चा बना है। बच्चे के बनने की दूसरी 'स्टेज' आ गयी है। अब शर्बत बनाने की आवश्यकता नहीं।"

सरस्वती मुस्करा रही थी। उसने पूछ लिया, "और इस हलुवा बनाने में मैं क्या हूँ ?"

विजय हँस कर बोला, "तुम कड़ाही हो, जिसमें हलुवा बन रहा है।"

इस पर तो सरस्वती खूब हँसी।

"किसलिये हँसी हो ?"

"कड़ाही की उपमा पर।"

"परन्तु यह किसी प्रकार भी तुम्हारे महत्व को कम करने वाली नहीं है। जड़-रूप कड़ाही से सजीव कड़ाही बहुत ही श्रेष्ठ पदार्थ है। साथ ही इस कड़ाही में अग्नि इसके भीतर ही है। बाहर से आग जलाने की आवश्यकता नहीं।"

ललिता को विजय के घर में रहते हुए दो वर्ष होने जा रहे थे, जब नलिनीकान्त जेल से छूट कर बम्बई लौटा था। इस समय सरस्वती के घर में सवा वर्ष का लड़का था। सरस्वती अब विजय के साप्ताहिक पत्र में सहायक-सम्पादक के रूप में काम करती थी।

ललिता ने चिकित्सा-कार्य छोड़ दिया था। वह बीमार रहने लगी थी। हुआ यह था कि जब उसका सम्बन्ध ज्ञान से बना और उसके गर्भ हुआ तो उसने बच्चा होने के उपरान्त गर्भाशय का ऑपरेशन करा कर अपने को सन्तान निर्माण के अयोग्य बनाने का निर्णय कर लिया था। प्रसव के समय वह पूना के एक हस्पताल में भरती हो गयी थी। उसने डाक्टर से कहा था कि उसके फिलेपियन ट्यूब का ऑपरेशन कर दिया जाये। परन्तु ज्ञान ने डाक्टर को कह दिया कि वह अपनी स्त्री के इस ऑपरेशन की स्वीकृति नहीं देता। ललिता 'मिसेज़ ज्ञान' के नाम से भरती हुई थी। डाक्टर ने प्रसूता को झूठ बोल दिया कि ऑपरेशन कर दिया गया है। ज्ञानस्वरूप के कहने पर ललिता को क्लोरोफार्म सुंघा, अचेत अवस्था में साधारण ऑपरेशन का नाटक कर दिया गया था।

ललिता इसी विचार से कि उसके बच्चा नहीं हो सकता, निःशंक हो गई थी। परन्तु पहला बच्चा अभी डेढ़ वर्ष का हुआ था कि उसके पुनः गर्भ स्थित हो गया। इस पर तो वह परेशानी अनुभव करती हुई पूना हस्पताल में गयी और उसी डाक्टर से, जिसने उसे प्रसव कराया था, पूछने लगी कि ऑपरेशन के उपरान्त यह कैसे हो गया ? डाक्टर ने पहले तो टाल-मटोल की, परन्तु पीछे वह बक गया कि क्योंकि उसके पति ने इस ऑपरेशन की स्वीकृति नहीं दी थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण ऑपरेशन नहीं किया गया था और उसको गलत बताया गया था कि ऑपरेशन हो गया है। यह भी उसके पति के आग्रह पर कहा गया था।

इस पर ललिता और ज्ञान में झगड़ा हो गया और ललिता ज्ञान का घर छोड़ पुन: अपने क्लिनिक के ऊपर वाले कमरे में जाकर रहने लगी। वहाँ जा उसने गर्भपात के लिये औषधि लेनी आरम्भ कर दी।

गर्भपात हुआ, परन्तु रक्त-स्राव बन्द नहीं हो सका। विवश वह बम्बई हस्पताल में भरती हो गयी। वहाँ एक मास तक वह रही और बहुत कठिनाई से स्राव रुका। हस्पताल में एक मास-भर पड़े रहने के तथा निरन्तर रक्त-स्राव के कारण वह अति दुर्बल हो गई थी। एक समय तो उसके रक्त-स्वल्पता से मर जाने की सम्भावना उत्पन्न हो गयी थी।

वह जब अपने निवास-स्थान पर लौटी तो वह इतनी दुर्बल थी कि चिकित्सा-कार्य नहीं कर सकती थी। इस अवस्था में अकेले रहने में भी कठिनाई थी। इन दिनों उसकी सेवा-सुश्रूषा के लिये उसके क्लिनिक में काम करने वाली एक दायी थी, परन्तु वह भी जब इस काम से ऊब रही प्रतीत होने लगी तो ललिता ने क्लिनिक बन्द किया और विजय के घर जाकर रहने का विचार बना लिया। सुवर्णा के उदार विचारों को जान, वह घर में रख लिये जाने की आशा करती थी।

वह वहाँ पहुँची तो सुवर्णा से भेंट हो गयी। ललिता ने अपनी भूल स्वीकार कर, घर में अपने बच्चों के साथ रहने की स्वीकृति माँग ली। सुवर्णा का कहना था, "तुम्हारी रुग्ण अवस्था में तुम्हारे रहने की व्यवस्था तो मैं कर दूंगी, परन्तु तुम्हारा बच्चों के साथ रह सकना बच्चों के पिता की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकेगा।" इस पर ललिता विजय से रहने की स्वीकृति लेने जा पहुँची।

तब से ललिता को घर में एक पृथक् कमरा मिला हुआ था, परन्तु विजय ने उससे पति-पत्नी सम्बन्ध स्थापित नहीं किये थे। ललिता को स्वस्थ होते कई मास लगे; और जब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ भी हुई तो भी पहले की-सी मुख पर शोभा नहीं आ सकी।

: २ :

नलिनीकान्त के छूट कर आने के कुछ दिन पूर्व ललिता और विजय में भावी जीवन के विषय में बातचीत हो गयी। इस समय सरस्वती का लड़का एक वर्ष का हो चुका था और सरस्वती विजय के साथ उप-सम्पादक का कार्य करने लगी थी। ललिता सम्पादक महोदय के पढ़ने-लिखने के कमरे में आयी और सरस्वती तथा विजय के समीप कुर्सी पर बैठ गयी। विजय ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ललिता ! कुछ काम है ?"

"जी । मैं क्या इस कार्यालय में काम नहीं कर सकती ?"

"पढ़ी हुई डाक्टरी का क्या हुआ ?"

"वह भूल गई हूँ और पुनः उस पर मस्तिष्क काम नहीं करता ।"

"परन्तु यह काम भी तो सुगम नहीं है ।"

"यह तो मैं जानती हूँ । कोई भी कार्य सीखे बिना नहीं किया जा सकता और सीखने में सदा मेहनत करनी पड़ती है ।"

"तो ठीक है । यत्न कर सकती हो । सरस्वती की भांति तुम भी स्त्रियों के स्वास्थ्य इत्यादि पर लेख लिखकर दिया करो ।"

"धन्यवाद ।" इतना कह ललिता जाने लगी तो सरस्वती ने पूछ लिया, "ललिता बहन ! क्या इतने मात्र से पेट भर जायेगा ?"

"पेट तो माता जी भर देती हैं ।"

सरस्वती ने मुस्कराते हुए कहा, "मैंने रोटी-कपड़े की बात नहीं पूछी । मेरा अभिप्राय है काम से । सप्ताह में एक-आध लेख लिखकर सन्तोष हो जायेगा क्या ? देखो बहन, दिन-रात लेख ही तो नहीं लिखे जा सकते । न ही यह जीवन का मुख्य कार्य हो सकता है ।"

"तो क्या कार्य मुख्य हो सकता है ?"

"सबके लिये मुख्य कार्य अपना-अपना होता है। यह कार्य प्रत्येक को अपने लिये निर्माण करना पड़ता है ।

"देखो, मैं कालेज में प्रोफेसर थी । मैंने समझा कि मेरे लिये वह मुख्य कार्य नहीं है । अतः विचार कर अपने स्त्री बनने को सार्थक करने के लिये विवाह की लालसा करने लगी ।

"विवाह हुआ तो फिर प्रोफेसरी का काम छोड़ दिया और 'होल टाइम' स्त्री का कार्य करने लगी । वह काम मुख्य रूप में अब भी चलता है । यह सम्पादक का काम तो केवल मनोरंजन के लिये है ।"

"इसकी स्वीकृति तो मिल गयी है, परन्तु मैं समझती हूँ कि यह पूर्ण जीवन को भर नहीं सकेगा । पर डाक्टर का काम अब नहीं करूँगी ।"

"ठीक है । मैं तो उस काम को भी 'सब-सिडिएरी'[1] समझती हूँ ।"

"तो मुख्य काम क्या है ?"

"कोई स्त्री का काम करिये ।"

"आपका मतलब है कि बच्चे पैदा करना ? वह मैंने कर लिया है और अब उस ओर भी रुचि नहीं रही ।"

---

१. गौण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने मुस्कराते हुए कहा, "बच्चे तो सदा पैदा नहीं किये जा सकते। उमर के एक हिस्से में ही यह काम किया जा सकता है और उसके पहले और पीछे भी तो ज़िन्दगी रहती है।"

"मुझे तो कुछ सूझ नहीं रहा कि क्या करूँ ?"

"प्रातःकाल पूर्ण परिवार के साथ परमात्मा की भक्ति में सम्मिलित हुआ करिये। तब धीरे-धीरे समझ में आने लगेगा। मैं तो उसी से अपना काम समझ सकी हूँ।"

ललिता तो, जबसे विवाह हुआ था, परिवार में रहती हुई भी परिवार के कामों में रुचि नहीं रखती थी। वह पारिवारिक उपासनाओं में कभी भी सम्मिलित नहीं हुई थी। वह न तो ईश्वर को मानती थी और न ही उसकी भक्ति में विश्वास रखती थी।

इस कारण उसने कह दिया, "मुझे परमात्मा दिखायी देता नहीं। इसी कारण उसकी भक्ति में चित्त लगता नहीं।"

"मैं भी यही समझती थी। अम्मी को नमाज़ पढ़ते देखती थी तो उसकी खिल्ली उड़ाया करती थी। जब मैं इस घर में आयी तो मुझे समझ में आने लगा है कि अम्मी ठीक करती थीं। मुझे यह समझ में आ गया कि नमाज़ पढ़ना अथवा सन्ध्या-उपासना भी यहाँ के लिये ही है। यह परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये नहीं। वास्तव में इसका परमात्मा के साथ कोई सम्बन्ध ही नहीं है। इसका तो अपने साथ ही सम्बन्ध है। परमात्मा को न मानें तब भी इसका उपयोग है।

"अब मुझे अम्मी का कहना समझ में आने लगा है कि नमाज़ वह अपने लिये पढ़ती हैं। महादेव के पिता ने समझाया है कि हममें एक पदार्थ है बुद्धि। नमाज़ और यहाँ नित्य होने वाली उपासना से बुद्धि निर्मल होती है। ज्यों-ज्यों वह निर्मल होती जाती है, हमारे सांसारिक काम और यदि कोई दूसरी दुनिया है तो उसके भी काम सफलतापूर्वक होने लगते हैं। अगली दुनिया में तो जब जायेंगे, तब देख लिया जायेगा। इस दुनिया की बात तो मैं नित्य देख रही हूँ। मेरा काम यहाँ मज़े में चलने लगा है।

"अब मैं प्रातः माता जी तथा घर के अन्य प्राणियों के साथ बैठकर चिन्तन करती हूँ। उसे उपासना कहते हैं। मतलब यह कि हम समीप बैठकर बुद्धि को उन्नत करते रहते हैं और मैं अनुभव करती हूँ कि यह हो रही है।"

"सरस्वती बहन ! मुझे तो कुछ समझ में आया नहीं। आखिर पन्द्रह-सोलह वर्ष तक स्कूल और कालेज में पढ़ाई की है और सहस्रों ही रोगियों को देखा है। उनके दुःख-दर्द को जाना और समझा है। क्या उससे भी अधिक पता चल सकता है माता जी की संगत से ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने यह तो कहा नहीं। समीप बैठने से तो ज्ञान में वृद्धि होती है। यही बात स्कूल-कालेजों में पढ़ने से होती है, परन्तु पढ़े-लिखे पर चिन्तन करने से बुद्धि में विकास होता है।

"देखो, एक उदाहरण से समझाती हूँ। इस घर में इकट्ठे बैठ मन्त्र-उच्चारण करना भी एक तरीका है पूजा का। अब मैं अपने पहले जाने तरीके और इस पर विचार करने लगी। पहले मैंने अम्मी को घुटने के बल तथा सीधे खड़े हो अथवा झुककर नमाज़ पढ़ते देखा था। मैं दोनों में मुकाबला करने लगी। मैंने नमाज़ बैठकर पलथी मारकर पढ़ने के लिये अम्मी को कहा। एक-दो बार उसे बैठाकर अपने सामने पढ़ाया। एक महीने के ही ऐसा करने से अम्मी ने मुझे बताया कि इस तरीके से उसे अच्छा मालूम होने लगा है। अब तो वालिद साहब के घर में दोनों हिन्दुस्तानी अम्मियाँ बैठकर नमाज़ पढ़ने लगी हैं। कुछ ही दिन में मैंने अपनी दूसरी अम्मी से पूछा था कि इस प्रकार नमाज़ पढ़ने से क्या लाभ हो रहा है ? उसने बताया कि इससे खुदा की ओर तवज्जो आसानी से और भली-भाँति लगने लगी है।

"अब बताओ, यह बात किसी ने सिखायी नहीं। यह स्वयं ही मेरे मन में पैदा हुई। मैंने अम्मियों को बताया तो उन्होंने अमल में लायी और वे लाभ उठाने लगी हैं।"

"मतलब यह कि नित्य देखने वाली बातों का मतलब अपने आप समझ में आने लगता है ?"

"हाँ; मगर समझने के लिये यत्न तो करना पड़ता है।"

इसके उपरान्त ललिता भी नित्य प्रातः उठकर उपासना में सम्मिलित होने लगी। संयुक्त उपासनाओं में कुछ ही काल में स्वयमेव रस आने लगता है। ललिता ने यह अनुभव किया। वह इसका कारण नहीं समझी, परन्तु कुछ ही दिन में उसकी जाग स्वयमेव खुलने लगी और वह स्नानादि से निवृत्त हो, प्रातः के हवन में सम्मिलित होने लगी।

कभी वह मन में विचार करती थी कि वह एक रिवाज की दासता में फँसती जाती है, परन्तु इस पर भी वह नित्य हवन पर बैठने के लिये पूजा-गृह में आ जाती थी।

जेल से छूटने के बाद पहले दिन प्रातः नलिनीकान्त ने सरस्वती को हवन में बैठे देखा तो उसने पूछ लिया, "सरस्वती ! तुम्हें हमारा पूजा का तरीका पसन्द है क्या ?"

सरस्वती ने कहा, "मैंने तो कभी इबादत की नहीं थी। घर में अम्मियाँ नमाज़ पढ़ा करती थीं। मैंने उनको बैठकर नमाज़ पढ़ने के लिये कहा है। वे

—१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगीं तो अब कहती ही हैं कि यह ठीक है।

"पिता जी ! जबसे मैं यह समझी हूँ कि इबादत का लाभ इबादत करने वाले को अपनी तरक्की करने में होता है, तब से मैं इसमें एक नया रस लेने लगी हूँ।"

"हाँ; यह जो हम मन्त्र बोलते हैं इनका अर्थ समझो और फिर उन पर चिन्तन करो तो इससे बुद्धि और भी उन्नत तथा निर्मल होगी। इससे सांसारिक बातों में तथा ईश्वरीय बातों में भी साधारण लोगों से बहुत अधिक समझ में आने लगेगा।"

"यह तो मैंने अनुभव किया है। अब मैं किसी भी काम पर पहले से अधिक ध्यान लगा सकती हूँ। महादेव के पिता कहते हैं कि इससे ही परमात्मा के दर्शन भी हो सकते हैं।"

"हाँ, मगर परमात्मा का सामीप्य प्राप्त करने के लिये ज्ञानवान् मन प्रथम अंग है। इस कारण तुम विजय की माता जी से उपनिषद् पढ़ा करो।"

"माता जी कह तो रही हैं, परन्तु मैंने अभी आरम्भ नहीं किया।"

"तो कर लो। मेरा यह दृढ़ मत है कि ज्ञान कर्म से पहले होना चाहिये और ज्ञान का अर्थ केवल कुछ बातों को जानना ही नहीं है। उन जानी बातों पर मनन में दो प्रश्न 'क्यों' और 'क्या' सदैव सम्मुख रहने चाहियें। यही मनन की कुंजी है। इससे मन के द्वार ऐसे खुल जाते हैं, जैसे किसी भवन को लगे हुए ताले उचित चाबी से खोल दिये जाते हैं।"

बात सरस्वती से हो रही थी, परन्तु प्रभाव ललिता पर हो रहा था। वह उस दिन अपने कमरे में बैठी तो इस 'क्यों' और 'क्या' के प्रयोजन पर विचार करने लगी। इस 'क्यों' और 'क्या' ने उसे अपने जीवन पर ही विचार करने के लिये विवश कर दिया। कालेज में तो वह 'क्या' का उत्तर ही पाती थी। 'क्यों' का उत्तर वहाँ नहीं था।

अब वह क्यों पर विचार करने लगी तो उसे अपने बाल्यकाल से लेकर सज्ञान होने तक की पूर्ण आपबीती चित्रपट पर चलचित्र की भाँति दिखायी देने लगी। अब अपने जीवन के कटु अनुभवों की स्मृति उसे काटती प्रतीत होने लगी। सबसे भयंकर स्मृति उसके गर्भपात के काल की थी। हस्पताल में उसने झूठ बोल दिया था कि उसके पाँव फिसल कर गिर जाने से गर्भपात हुआ है और उसकी चिकित्सा होने लगी थी, परन्तु रक्त-स्राव बन्द होने में नहीं आता था। एक समय तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसके पाँव चेतनाहीन हो गये हैं। उसने डाक्टर को बताया तो उसने कह दिया, 'खून की कमी के कारण है।' दूसरे दिन उसका शरीर कमर तक चेतना-रहित हो गया था। वह डाक्टर के कथन से कि रक्त-स्वल्पता के कारण ऐसा हुआ है और रक्त-स्राव अभी भी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है तो वह समझी कि उसका अन्तिम समय आ गया है।

यद्यपि उस समय शरीर में किसी रस लेने की सामर्थ्य नहीं रही थी, परन्तु पूर्व जीवन के रसों की स्मृति तो उसको थी और वह अब किसी मर्म स्थान पर काँटे के चुभन की भाँति पीड़ा देने लगी थी। अगले दिन वह हाथ और बाँहें भी निर्जीव हीं गयी समझने लगी। इस प्रकार धीरे-धीरे रेंग कर आती हुई मौत उसे अति भयंकर लगने लगी थी। उसी रात वह अचेत हो गयी।

डाक्टर के कहने के अनुसार वह अड़तालीस घण्टे अचेत रही और पुनः जीवन का संचार मस्तिष्क से आरम्भ हुआ। उसे मस्तिष्क में ऊष्मा का अनुभव होने लगा। यह सुखद् था और वास्तव में इस सुख की अनुभूति ही थी जो अचेत होने के उपरान्त हुई थी। तदनन्तर धीरे-धीरे उसको अपने चारों ओर प्रकाश प्रतीत होने लगा। पहले बहुत धीमा-सा, तदनन्तर अधिक स्पष्ट दिखायी देने लगा। जब उसे सामने खड़ी नर्स दिखायी दी तो वह उससे पूछना चाहती थी कि क्या हुआ था? परन्तु तब न तो उसके होंठ हिल सके थे और न ही उसके मुख से आवाज निकल सकी थी। उसने देखा कि नर्स ने अपनी अंगुली अपने होंठों पर रख, न बोलने के लिये कहा था।

कई दिन उपरान्त जब वह सचेत और सबल हो गयी तो उसे नर्स से यह पता चला था कि डाक्टर उसे मर गयी घोषित कर चुका था। रक्त-स्राव बन्द होने से यह समझा गया था कि उसके पूर्ण शरीर का रक्त बह कर निकल चुका है। परन्तु जब उसे शव-गृह में ले जाने के लिये उठाने लगे तो किसी ने कहा कि यह तो जीवित है।

इस पर सब रुक गये और डाक्टर को बुलाया गया। उसने हृदय में बहुत ही धीमी धड़कन अनुभव की और पुनः यत्न होने लगा। बस वह जीवन की करवट सिद्ध हुई और वह धीरे-धीरे पुनः जीवित हो गयी।

आज वह इस सब पर विचार करने लगी तो इसकी प्रतिक्रिया विचित्र रूप में समझ में आने लगी। पूर्ण घटना पर उसे पश्चात्ताप होने लगा। इस पर पुनः प्रश्न उत्पन्न होने लगा—'क्यों और क्या?',

इस क्यों और क्या ने उसकी मानसिक अवस्था में करवट उत्पन्न की और हस्पताल में जीवन लौटने के समान वह मानसिक पुनरुत्थान अनुभव करने लगी।

: ३ :

नलिनीकान्त श्रीमती ऐनिबिसेंट से मिलने गया। मिस्टर वाडिया भी उस समय वहाँ उपस्थित थे। ऐनिबिसेंट ने कहा, "तो अब बताइये कि देश में क्या किया जाये, जिससे यह गतिशील हो सके?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनीकान्त का कहना था, "देश गतिशील तो है। जगत् में कोई भी पदार्थ बिना गति के रह नहीं सकता, परन्तु यह गति उन्नति की अपेक्षा ह्रास की ओर हो रही है। इस ह्रास में जहाँ मैकॉले साहब द्वारा चलायी शिक्षा का हाथ है, वहाँ सर सैयद अहमद के अलीगढ़ कालेज का भी हाथ है। तीसरे, इस में कांग्रेस का सबसे बड़ा हाथ है। मैं इन तीनों को सगी बहनें ही समझता हूँ। अंग्रेज़ी शिक्षा, अलीगढ़-आन्दोलन और कांग्रेस संस्था, ये तीनों देश की जनता को अपने सम्मोहन में फँसा कर नरक की ओर ले जा रही हैं।"

श्रीमती बिसेंट मुस्करायीं और कहने लगीं, "यदि हम किसी पर आरोप न लगाकर कार्यक्रम के विषय में विचार करें तो क्या ठीक न होगा ?"

"हाँ, परन्तु वह तो वार्त्तालाप की भूमिका मात्र थी। कोई भी बात भूमि तैयार किये बिना हो नहीं सकती। तो सुनिये ! मैं इन तीनों के कार्य का निराकरण करने का विचार रखता हूँ। यह इन तीनों के भीतर रह कर नहीं हो सकता। इनसे बाहर और इनसे स्वतन्त्र रह कर ही अपना कार्य किया जा सकता है।"

"देखिये, नलिनी बाबू ! एक-एक कर लीजिये। भला अलीगढ़-आन्दोलन से बाहर रहने का तो कुछ भी अर्थ नहीं। आपको वहाँ घुसने ही कौन देता है ?"

"ठीक है; परन्तु उसमें घुसे बिना भी तो उसकी सहायता हो सकती है। अंग्रेज़ी सरकार अलीगढ़ कालेज कमेटी की सदस्य बने बिना उसके उद्देश्यों में सहायक हो रही है। इसी प्रकार कांग्रेस संस्था पृथक् रहते हुए भी उसका कार्य कर सकती है।"

"क्या कार्य है अलीगढ़-आन्दोलन का ?"

"जबसे इस्लाम इस देश में आया है अथवा यह जिस-जिस देश में भी गया है, यह मुसलमानों के लिये जनता के अन्य घटकों की तुलना में अधिक अधिकार चाहता रहा है। जब तक भारत में इनका राज्य रहा, यह अपने लिये अधिक अधिकारों का भोग करता रहा। अंग्रेज़ी राज्य ने आरम्भ में तो दोनों समुदायों में समानता रखने का यत्न किया था; परन्तु फिर मुसलमानों को अपने सहायक बनाने के लिये अंग्रेज़ी राज्य ने इनको विशेष अधिकार देने का निश्चय किया और अब देने आरम्भ कर दिये हैं। परिणामस्वरूप मुसलमान अंग्रेज़ों से प्रसन्न हो रहे हैं।

"इस स्थिति में देश की कुछ अन्य संस्थायें भी यह विचार प्रकट करने लगी हैं कि मुसलमानों को अधिक अधिकार देने ही चाहियें। मैं समझता हूँ कि यह अलीगढ़-आन्दोलन से बाहर रह कर उनका कार्य करना है।

"क्योंकि शिक्षा, अलीगढ़-आन्दोलन और कांग्रेस तीनों ब्रिटिश सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उपज हैं, अतः ये तीनों एक-दूसरे की सहायक ही होंगी। शिक्षा तो मुसलमानों के पक्ष में जा ही रही है।......।"

मिसेज़ बिसेंट ने नलिनी की बात को बीच में काट कर पूछ लिया, "शिक्षा कैसे मुसलमानों की माँगों को पूरा कर रही है ?"

"स्कूलों और कालेजों की शिक्षा में दो बातों पर बल दिया जा रहा है। एक यह कि हिन्दू एक मज़हब है और बहुत ही घटिया प्रकार का मज़हब है। साथ ही यह कि हिन्दुओं के पूर्वज भी मुसलमान तथा ईसाइयों की भाँति कहीं विदेश से आये हैं।

"एक बात यह भी प्रचार की जा रही है कि इस देश का इतिहास मुसलमानों के इस देश में आने पर आरम्भ होता है। पहले का कुछ लिखा मिलता ही नहीं। इन दोनों बातों से मुसलमानों की मान-प्रतिष्ठा एतदर्थ अधिकारों को बल मिलता है।"

इस पर मिसेज़ बिसेंट ने मुस्कराते हुए कह दिया, "एक बात तो कुछ ठीक ही प्रतीत होती है कि कांग्रेस में भी कुछ ऐसे लोग उत्पन्न हो गये हैं, जो मुसलमानों को विशेषाधिकार देने की बात पर विचार कर रहे हैं।"

"यह अवश्यम्भावी है। कांग्रेस और अलीगढ़-आन्दोलन के माता-पिता एक ही हैं। दोनों को जन्म देने में कारण भी एक ही है और दोनों पर अभी तक नियन्त्रण भी एक का ही है।"

"तो फिर क्या किया जाये ?"

"यहाँ पर एक प्रबल राष्ट्रवादी आन्दोलन आरम्भ किया जाये। यह सिद्धान्त से और उद्देश्यों से पूर्व के इन तीनों आन्दोलनों से विलक्षण हो, श्रेष्ठ हो और प्रभावी हो।"

"अभिप्राय यह कि एक नयी संस्था चलायी जाये ?"

"हाँ; मेरा यही मत है।"

"बहुत कठिन है।"

"परन्तु असम्भव नहीं है।"

वास्तव में ऐनीबिसेंट तत्कालीन कांग्रेसी नेताओं से बातचीत कर रही थीं। वे कांग्रेस में ही कुछ सुधार चाहती थीं। दो बातों पर उनका मत स्थिर था। एक यह कि देश में सब लोगों के साथ, उनके मज़हब और मिल्लत का विचार छोड़ कर, समान व्यवहार रखा जाये। दूसरी बात वे यह चाहती थीं कि कांग्रेस अपना राजनीतिक ध्येय निश्चय कर दे। वह चाहती थीं कि स्वराज्य शब्द इंगलैण्ड में समझा नहीं जा सका। इस कारण उद्देश्य किसी ऐसे शब्द से वर्णन किया जाये कि इंगलैण्ड में सुगमता से समझा जा सके। अतः उसने कह दिया, "मेरी सम्मति है कि कांग्रेस अपना उद्देश्य 'होम रूल' प्राप्त करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना ले।"

"यह ठीक है, परन्तु कांग्रेस तो इसे भी स्वीकार नहीं करना चाहती।"

"हाँ, कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। कांग्रेस स्वराज्य तथा 'होम रूल' के लिये यत्न करने के स्थान, मुसलमानों से समझौता करना ठीक समझती है।"

"मुझे भी कुछ ऐसा ही समझ में आ रहा है। परन्तु मिसेज़ बिसेंट! ऐसा क्यों है, कभी यह भी विचार किया है आपने?"

"क्यों है?"

"इसलिये कि कांग्रेस में केवल अंग्रेज़ी शिक्षा-प्राप्त व्यक्ति सम्मिलित हैं और ये लोग वही बात मान सकते हैं, जो सरकार ने शिक्षा से उनके मस्तिष्क में घुसेड़ रखी है। वह यह कि मुसलमानों के आने से पहले यहाँ केवल ज़ाहिल बसते थे। मुसलमान ही यहाँ के शासक रहे हैं और उनके बिना यहाँ का शासन चल नहीं सकता।

"साथ ही यह कि मुसलमानों से अधिक देश के हितैषी अंग्रेज़ हैं और उनका इस देश के साथ सम्बन्ध रहना आवश्यक है।"

"पर मेरे 'होम रूल' के प्रस्ताव से भी अंग्रेज़ों से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं होगा।"

"और मुसलमानों के विषय में आपका क्या विचार है?" अब नलिनी ने प्रश्न कर दिया।

"मैं इस विषय में कुछ विचार नहीं रखती।"

"देखिये, मिसेज़ बिसेंट! मुसलमानों के विषय में न सही, परन्तु एक विषय में तो बात स्पष्ट होनी चहिये कि यह संस्था राष्ट्रवादियों की होगी। जो भी व्यक्ति अथवा समुदाय राष्ट्र से अतिरिक्त किसी अन्य बात में निष्ठा तथा आस्था रखेगा, वह देश की इस संस्था में नहीं रह सकता। मैं चाहता हूँ कि देशवासियों की राजनीति देश के लिये ही हो।"

ऐनिबिसेंट इस बात को समझती थी, परन्तु सामने बैठे वाडिया साहब बोल उठे, "नलिनी बाबू! क्या राजनीति किसी प्रकार का मज़हब है, जो लचक-रहित हो?"

"लचक तो मज़हब और राजनीति दोनों में हो सकती है, परन्तु दोनों का अपना-अपना क्षेत्र है, जिसके भीतर लचक होनी चाहिये। लचक का अर्थ यह नहीं कि इस क्षेत्र की परिधि से कूदकर बाहर जाया जाये।"

"परन्तु देश तथा किसी राजनीतिक संस्था की कुछ विदेश-नीति भी तो हो सकती है।" वाडिया का कहना था।

"हाँ; विदेश-नीति देश के लिये ही है। देश की नीति विदेश के लिये नहीं हो सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐनिबिसेंट ने बात समाप्त करने के लिये कहा, "मैं समझती हूँ कि आप अगले सप्ताह मद्रास आइये। वहाँ मैं आपकी योजना पर और अधिक व्याख्या से बातचीत करूँगी।"

नलिनीकान्त लगभग साढ़े चार वर्ष जेल में रह कर आया था। अतः घर की व्यवस्था की ओर ध्यान देना आवश्यक समझ, उसने मद्रास जाने से पूर्व का सप्ताह बम्बई में ही लगाया।

घर में पाँच तो स्त्रियाँ थीं, चार बच्चे थे और दो पुरुष। आनन्दस्वरूप अभी भी जेल में था। एक लम्बा-चौड़ा परिवार था। इनके अतिरिक्त ज्ञानस्वरूप के तीन बच्चे थे। दो मीनाक्षी से और एक ललिता से। ललिता का बच्चा मीनाक्षी के साथ हिल-मिल गया था। ललिता ने इसका नाम अविनाश रखा था। परन्तु बेगम के घर में वह कृष्ण के नाम से पुकारा जाता था। यह इस कारण कि वह दूसरे बच्चों से अधिक काला था।

मीनाक्षी रहती ज्ञानस्वरूप के घर पर ही थी, परन्तु दोनों में बनती नहीं थी। ज्ञान का विचार था कि मीनाक्षी के कारण ही ललिता उससे भाग गयी है। मीनाक्षी के कारण उसकी माँ राजेश्वरी भी इस परिवार से सम्बन्ध बनाये हुए थी।

नलिनी और विजय तो प्रगतिशील हिन्दू विचार के व्यक्ति थे। वे बुद्धि के विकास और प्रयोग पर बहुत बल देते थे और इसी को हिन्दू जीवन-मीमांसा की घुट्टी मानते थे। उनका मत था कि इस संसार में सुचारु रूप से रहने से लेकर मोक्ष-प्राप्ति तक की पूर्ण यात्रा में बुद्धि ही सहायक है।

प्रज्ञा तो भक्तिनी थी। पण्डितायिन इन्द्राणी की शिष्या होने से कृष्ण की उपासिका थी, परन्तु नलिनी तथा सुवर्णा के प्रभाव से यह मानने लगी थी कि कृष्ण विष्णु भगवान् का प्रतीक मात्र है। सब देवी-देवता परमात्मा के किसी-न-किसी गुण का प्रतीक हैं। इस पर भी वह कृष्ण को सोलह कला सम्पूर्ण मानती थी।

वैसे प्रज्ञा घर के काम-काज में विशेष रुचि लेती थी। जबसे वह सुवर्णा के घर में आयी थी, घर के वातावरण को अधिक और अधिक सुन्दर एवं सुख-सुविधामय बनाने में लगी रहती थी।

जिस दिन नलिनी ऐनीबिसेंट से मिल कर आया, उसी दिन मध्याह्नोत्तर चाय के समय नलिनी सुवर्णा से पूछने लगा, "घर की व्यवस्था कैसी है ?"

"और तो सब ठीक है, परन्तु प्रभा कुछ कह रही है।"

"क्या कहती है ?"

पूर्ण परिवार चाय के लिये एकत्रित हो रहा था। पति के पूछने पर सुवर्णा ने प्रभा की ओर देख कर पूछ लिया, "बताओ प्रभा ! क्या कहती हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यह कह रही थी कि यदि बम्बई में रहना है तो एक अपना मकान यहां होना चाहिये।"

"यह विचार हमारा पहले भी था।" नलिनी ने स्मरण कराया, "कमल जी का यह मकान सब प्रकार की सुख-सुविधा-युक्त था। इस कारण विचार हो गया था कि इसी को मोल ले लिया जाये, परन्तु कैटालीना का विचार है कि जब तक मैं उसके समाचार-पत्र का सम्पादन-कार्य करता हूँ, यह मकान मुझे रहने को निःशुल्क मिला रहेगा। अब विजय ने उससे क्या निश्चय किया है, यह तो वही बतायेगा।"

विजय ने बताया, "मैं साप्ताहिक तो अपना चलाना चाहता था, परन्तु कैटालीना ने कह दिया कि समाचार-पत्र की मालिक वह होगी और सम्पादकीय विभाग मेरे अधीन होगा। उसने मुझे एक सहस्र रुपया महीना और रहने को यह मकान भत्ते के रूप में देना निश्चय किया था और यह चल रहा है। मैं समझता हूँ कि जब तक मैं सम्पादक हूँ, यह मकान हमारे लिये ही है।"

"क्यों प्रभा! इस परिस्थिति में भी क्या मकान की आवश्यकता है?"

"पिता जी! यह सब तो मुझे ज्ञात है। इस पर भी जब तक मकान अपना न हो, मैं सुख अनुभव नहीं करती। साथ ही हमारा परिवार बढ़ रहा है। यह मकान छोटा अनुभव होने लगा है। जब हम इस मकान में आये थे, तब इसके आगे एक खुला लान था। पीछे उसमें दैनिक पत्र के कार्यालय की इमारत बन गयी। अब कैटालीना कह रही है कि समाचार-पत्र के साथ एक पुस्तकालय होना चाहिये और वह पुस्तकालय के लिये इसी लान में इमारत बनाना चाहती है।"

"प्रभा का विचार ठीक ही है कि और एक-दो वर्ष में आनन्द भी आ जायेगा और तब तक एक-दो बच्चे और भी आ सकते हैं। यह मकान छोटा पड़ जायेगा।

"परन्तु मैं प्रभा को बताना चाहता हूँ कि बम्बई की जनसंख्या बढ़ रही है, परन्तु इस नगर के फैलने के लिये भूमि नहीं है। यह एक द्वीप है और समुद्र से घिरा हुआ है। परिणाम यह हो रहा है कि मकान छोटे-छोटे और कई-कई मंज़िले बन रहे हैं। पृथक्-पृथक् मकानों के लिये घास के लान नहीं रह सकते। सांझे पार्क और सैर के स्थान ही हो सकते हैं।

"इस कारण यदि कोई खुली कोठी अथवा मकान रहने के लिये चाहिये तो हमें बम्बई द्वीप के बाहर जाकर मकान बनवाना होगा और यदि विजय ने कुछ ऐसा ही काम करना हो तो यह हो नहीं सकेगा। काम से दूर जाकर रहने से आना-जाना कठिन हो जायेगा।"

सरस्वती का कहना था, "हमारा मकान भुवाली में भी है। हम वर्ष में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार-पाँच महीने वहाँ जाकर, वर्ष-भर का सैर-सपाटा एक-साथ कर सकते हैं। लन्दन में तो मीलों तक मकानों की कतारें-ही-कतारें खड़ी हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, जिनमें तीस-तीस, चालीस-चालीस परिवार रहते हैं। वहाँ भ्रमण-स्थान सार्वजनिक ही हैं। यही बात बम्बई में होगी।"

"मैं एक और बात विचार कर रहा हूँ।" नलिनी ने कहा, "लाहौर की कोठी बेच दी जाये और उसके मूल्य से बम्बई द्वीप से बाहर एक मकान बना लिया जाये और परिवार का एक भाग वहाँ रहे और एक भाग यहाँ। साथ ही यहाँ और वहाँ आना-जाना बना रहे।"

सुवर्णा की सम्मति थी, "आनन्द के आने तक विचार स्थगित रखा जाये। वह क्या करना चाहता है, यह जान कर ही मकान का कार्यक्रम बनाया जा सकता है।

"मेरे मन में यह कल्पना है कि आनन्द को लन्दन में किसी प्रकार का काम करना चाहिये। यदि उसे यह योजना रुचिकर हुई तो एक निवास-स्थान का प्रबन्ध-वहाँ करना होगा।"

"ललिता! तुम क्या चाहती हो?"

"मैं अभी तक आपके परिवार में खपी नहीं। इस कारण मैं परिवार की दृष्टि से विचार कर सकती ही नहीं।"

"अब तुम्हें इस परिवार में पुनः आये एक वर्ष से ऊपर हो चुका है और जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तुमको परिवार में ही समझने लगी हूँ।" सुवर्णा ने अपने मन की बात बता दी।

"इस पर भी आपके सुपुत्र जानते हैं कि मैं अभी परिवार का अंग नहीं हूँ।"

सब ललिता के कथन का अर्थ समझ रहे थे। विजय ललिता का समर्थन करने वाला था और वह चाय का प्याला सासर में रख, कुछ कहने लगा था कि नलिनी ने उसे हाथ के संकेत से चुप रहने का संकेत कर स्वयं ललिता से पूछ लिया, "देखो ललिता! तुम एक पढ़ी-लिखी लड़की हो। तुम बताओ, क्या चाहती हो? मेरा मतलब है कि परिवार तुम्हारी किस प्रकार से सहायता कर सकता है?"

"मैं चाहती थी कि सोम के पिता मुझे समाचार-पत्र में काम करने दें, परन्तु इन्होंने इस प्रकार का जीवन-कार्य बनाने में सहायता नहीं दी। मैंने आज तक इनको पन्द्रह लेख दिये हैं और केवल एक ही प्रकाशित हो सका है।"

"पिता जी!" विजय ने कहा, "ललिता को अभी और अभ्यास करना चाहिये। इसके लेख हमारी पत्रिका के बौद्धिक स्तर के नहीं होते।"

"देखो ललिता!" नलिनी ने कहा, "तुम पहले यह निश्चय करो कि तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में रहना चाहती हो अथवा नहीं। तदनन्तर तुम अपने जीवन-कार्य के विषय में विचार करो। परिवार के भीतर रहना एक बात है और जीवन-कार्य दूसरी बात है। जीवन-कार्य यदि एक नहीं हो सकता तो दूसरा विचार किया जा सकता है। मैं पूछता हूँ कि तुम पुनः चिकित्सा-कार्य करना क्यों नहीं चाहतीं ?"

"इस कार्य से मेरी अरुचि हो गयी है। जब मैं पहले हस्पताल में काम करती थी, तब तो घर पर काम का प्रश्न ही उपस्थित नहीं हुआ था। जिम्मेदारी मेरी नहीं होती थी। मेरे पाँच वर्ष काम करने में केवल एक गर्भपात कराने वाली स्त्री मेरे पास आयी थी और मैंने उसे इन्कार कर दिया था। परन्तु अब प्राइवेट कार्य आरम्भ करने पर तो दो वर्ष के व्यवसायिक जीवन में पचास से ऊपर ऐसे केस आये थे। मैं उनको इन्कार नहीं कर सकी। कारण यह कि मेरी आय का मुख्य स्रोत वही था। परन्तु जब मैं स्वयं गर्भपात करने पर मरने लगी थी तो मेरा मन काँप उठा। मैं पुनः यह काम कर नहीं सकी और मेरा काम ठप्प हो रहा था।"

"तो तुम्हारी अरुचि गर्भपात करने से है ?"

"जी।"

"चिकित्सा-कार्य से आय करने का विचार कितना है ?"

"वह तो है ही कार्यारम्भ तो इसी दृष्टि से किया था।"

"एक बात तुम समझ लो। वे लोग जो अवैध कार्य करते हैं, उनको धन अधिक मिलता है। वैध कार्य करने वाले को पारिश्रमिक भी वैध ही मिलेगा और वैध कार्य में प्रतिकार योग्यता के अनुसार ही हो सकता है।"

"परन्तु पिता जी ! एक प्राइवेट काम करने वाली लेडी-डाक्टर के पास वे सब अवैध कार्यों के लिये ही आते हैं।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। दूसरी प्रकार के रोगों के रोगी भी आते हैं और आ सकते हैं; परन्तु उन रोगों की चिकित्सा के लिये पुरुष डाक्टर भी हैं और मुकाबला बहुत कड़ा है। इस कारण उसमें मेहनत अधिक करनी पड़ती है।"

"मेहनत किस प्रकार करनी चाहिये ? क्या विज्ञापन दूँ अथवा घर-घर जाकर रोगी एकत्रित करूँ ?"

"नहीं; यह कार्य भी अवैध है। मैं समझता हूँ कि चिकित्सा-कार्य बहुत सीमा तक अन्तर्बुद्धि पर निर्भर करता है। शरीर-विज्ञान, रोग-विज्ञान और औषध-विज्ञान तो होना ही चाहिये; इस पर भी बिना अन्तर्बुद्धि के, जिसे 'इन्ट्यूशन' कहते हैं, कार्य नहीं चल सकता। वह तुममें है नहीं।

"मेरा विचार है कि सबसे पहले तुम अपनी बुद्धि को विकास दो और इसे प्रयोग करने का ढंग सीखो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही तो मैंने इन्हें बताया है।" सरस्वती ने कहा, "जब ये पत्रिका के लेख लिखने की राय करने आयी थीं तो मैंने इन्हें बताया था कि ये स्वाध्याय, जप और ध्यान की प्रक्रिया सीखें। तब कोई भी काम करेंगी तो उसमें इन्हें सफलता मिलेगी।"

"ठीक है, ललिता ! तुम सुवर्णा की शिष्या बन जाओ। वह तुमको चित्त एकाग्र करने का ढंग सिखा देगी।"

: ४ :

परिवार अभी चाय पी ही रहा था कि कमलनारायण और कैंटालीना नलिनीकान्त से मिलने आ गये। पूर्ण परिवार को चाय पीते देख, वे बहुत प्रसन्न हुए। कमल ने कह दिया, "यहाँ तो हमको भी एक प्याला चाय लेकर आनन्द प्राप्त होगा।"

विजय ने उन दोनों के लिये भी स्थान बना दिया। उनके सामने प्रभा ने प्याले लगा दिये और विजय ने उनके लिये चाय बनानी आरम्भ कर दी। नलिनी ने कहा, "यदि आपके आने का पता होता तो हम आपकी प्रतीक्षा करते।"

"हम आने वाले तो जल्दी ही थे, परन्तु घर पर झगड़ा हो रहा था। समझने-समझाने में देर हो गयी है।"

"कौन झगड़ा कर रहा है ?" नलिनी ने पूछ लिया।

"बसन्त का बड़ा भाई इन्द्र विलायत से आया हुआ है। वह वहीं से शादी कर के पत्नी लाया है। वह उसे सिखाती है और इन्द्र झगड़ा करता है।"

इन्द्र का नाम सुन नलिनी ने आगे प्रश्न नहीं पूछा। वह कमल के पारिवारिक झगड़े में कुछ कहना नहीं चाहता था। इन्द्र नीला का लड़का था और कमल ने उसे पढ़ने के लिये इंगलैण्ड में भेजा था। इन्द्र ने वहाँ ही नौकरी कर ली थी और अब विवाह भी कर लिया था। अपने कार्यालय से छः मास का अवैतनिक अवकाश लेकर वह हिन्दुस्तान आया और पिता से इंगलैण्ड में एक मकान बनाने के लिये रुपया माँगने लगा। पिता इस काम के लिये कुछ भी देना नहीं चाहता था। इन्द्र और उसकी पत्नी लैला, कमल को तंग करते थे और अपनी पूर्वजों की सम्पत्ति में से भाग माँग रहे थे। इन्द्र का अपने पिता पर आरोप था कि वह राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेते हुए पैतृक सम्पत्ति को विनष्ट कर रहा है।

जब नलिनी चुप रहा तो चाय की चुस्की लगाते हुए कमल ने कहानी सुनानी आरम्भ कर दी। उसने इन्द्र के व्यवहार को नीला द्वारा प्रोत्साहित बताया।

"परन्तु कमल जी ! यह आप किस प्रकार कहते हैं ? इसका क्या प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है आपके पास ?"

"एक तो यह कि नीला पिछले वर्ष अपने पति के साथ विलायत गयी थी और वहाँ अपने पुत्र से मिली थी। दूसरा, इन्द्र यहाँ आकर अपनी माँ से मिलने पूना गया था और वहाँ से आते ही उसने झगड़ा आरम्भ कर दिया है।"

"वह क्या चाहता है ?"

"वह कहता है कि उसको अपनी सम्पत्ति का सातवाँ भाग अभी दे दूं। मैंने कहा कि सम्पत्ति का बटवारा तो मरने पर होगा। इस पर वह कहने लगा कि उसकी विमाता एक पागल औरत है और अपनी पागलपन की योजनाओं पर व्यर्थ का धन व्यय कर रही है।

"आज वह कह रहा था कि पूर्ण सम्पत्ति पर अदालती ताला लगवा दूंगा।"

"तो तुम उसको सम्पत्ति का भाग देना नहीं चाहते ?"

"इस प्रकार तो मैं एक पैसा भी देना नहीं चाहता।"

"क्यों ?"

"वह धमकियाँ देता है और धमकियों के सामने झुक जाना मुझे पसन्द नहीं।"

"क्या धमकियाँ देता है ?"

"यही कि यदि उसे सम्पत्ति का उचित भाग न दिया गया तो वह हम दोनों को 'शूट' कर देगा।"

"तो पुलिस में रिपोर्ट की है ?"

"नहीं। कैंटालीना कहती है कि उसे समझा-बुझा देना चाहिये। पिता-पुत्र में झगड़ा शोभा नहीं देता।"

"परन्तु धन के विषय में यह क्या कहती हैं ?"

"कहती है कि उसको, जो उसका भाग बनता है, देकर उससे फारखती ले लेनी चाहिये।"

नलिनी को कैंटालीना इतनी उदार प्रतीत नहीं होती थी। उसे एक बात समझ में आयी कि वह क्षात्र-स्वभाव की स्त्री है और सब पर अपना अधिकार जिस-किस प्रकार भी हो, प्राप्त करना चाहती है। उसके विषय में यह उसकी प्रथम धारणा थी। पीछे उसे, अपने तीन-चार लाख रुपया लगा कर अंग्रेज़ी सरकार के विपरीत प्रचार और आन्दोलन करने के लिये तैयार होने पर उसे अपने प्रथम अनुमान का समर्थन ही प्रतीत हुआ था। एक समय तो उसे समझ नहीं आया था कि वह हिन्दुस्तान में ईसाई-राज्य के पक्ष में होते हुए भी उसे किस प्रकार अपने समाचार-पत्र का सम्पादक बना सकी है और फिर सहन कर रही है ? यह तो अपने पकड़े जाने से कुछ ही पूर्व उसे उसके हृदय में झाँकने का अवसर मिला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे ध्यान था, एक दिन सम्पादकीय में उसने हिन्दू-राष्ट्र की व्याख्या की थी। उस लेख के अन्त में उसने कहा था, "यद्यपि हम देश के रहने वालों का सांस्कृतिक और धार्मिक आधार पर एक सुदृढ़ संगठन चाहते हैं और यह भी मानते हैं कि हिन्दू-राष्ट्र हिन्दू-राज्य का पर्याय नहीं, परन्तु यह दिन के सूर्य की भाँति स्पष्ट है कि राष्ट्र स्वयमेव राज्य-सम्पन्न हो जाता है।"

उसी सायंकाल वह कमल के घर किसी कार्य-विशेष से गया हुआ था। वहाँ कैंटालीना ने उस दिन के लेख की बहुत प्रशंसा की तो नलिनी ने अपने मन का संशय उपस्थित कर दिया। उसने कहा, "पर कैंटालीना! आप तो समाचार-पत्र ईसाईयत के प्रचार और संगठन के लिये चलाना चाहती हैं और यह लेख ईसाईयत को 'बाई पास' करने की बात कह रहा है ?"

"मेरे विचार बदल गये हैं।"

"सत्य ?"

"हाँ; मेरा आग्रह ईसाईयत के प्रचार के लिये इस कारण था कि मेरी दृष्टि में ईसाई मत और वह भी कैथॉलिक सम्प्रदाय, संसार में सर्वश्रेष्ठ है और इस देश की हिन्दू-समाज पुरानी गली-सड़ी और अन्याययुक्त व्यवहार रखने वाली है। वैसे ही मैं ऐंग्लिकन चर्च को बदमाशों का टोला मानती थी। इस कारण कैथॉलिक मत को संगठित कर यहाँ अंग्रेज़ी सरकार का तख्ता उलटने का विचार रखती थी। मैं यह मानती थी कि इस काम को एक सौ वर्ष लगेंगे, परन्तु कार्य को इस दृष्टि से आरम्भ करने का श्रेय मैं स्वयं लेना चाहती थी। परन्तु आपके साथ एक दिन के वार्त्तालाप ने मुझे विचार करने पर विवश कर दिया। आपका कहना था कि मानव-कल्याण उद्देश्य है और मानव-कल्याण में सत्य पर आग्रह होना चाहिये, न कि किसी पीर-पैगम्बर पर।

"बस इतना स्वीकार करने पर मैं विचार करती-करती ईसाईयत से दूर होती गयी। तदनन्तर आपके हिन्दू आचार-विचार पर लेख तो मेरे मन में प्रकाश करने वाले बन गये हैं। आपका यह कहना था कि आपकी 'फिलॉसॉफी' की पुस्तकों में यह लिखा है कि सत्य वेदों में वर्णित है, परन्तु यह इस कारण मानने योग्य नहीं कि वहाँ लिखा है, वरन् इस कारण है कि वह युक्ति एवं परीक्षण से भी सत्य सिद्ध किया जा सकता है।

"आपके विचार को पढ़, मैंने आपसे पूछा था कि ईश्वर कैसे युक्ति से सिद्ध हो सकता है ? आपने कहा था कि यह तो बहुत ही सरल-सी बात है। इस संसार में कोई वस्तु नहीं, जो स्वयमेव बन सकती है। यह एक सर्वव्यापक, सर्व-सिद्ध एवं प्रत्यक्ष बात है। जब यह है तो इन सूर्य, चन्द्र, तारागण इत्यादि के बनाने वाला भी होना चाहिये।

"आपके इस विचार-प्रोत्साहक कथन पर मैं कई दिन तक विचार करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही। हमारी धर्म-पुस्तक बाईबल में लिखा है कि मुझ पर विश्वास रखो और मैं तुमको ऐसे स्वर्ग में ले जाऊँगा, जैसे किसी बालक की अंगुली पकड़ कर कहीं ले जाया जाता है। आपकी बात इससे विलक्षण थी और अधिक समझ में आ सकने वाली थी। बस, मैं हिन्दू हो गयी हूँ। सुवर्णा जी से भी मैंने कई बातें सीखी हैं। एक दिन वे बताती थीं कि शरीर और आत्मा में अन्तर यह है कि एक नाशवान है और दूसरा अविनाशी है। अविनाशी का अर्थ उन्होंने बताया कि जो अनादि है। यह अपने कर्म-फल से बार-बार जन्म लेता है। इसका प्रमाण यह है कि एक ही माता-पिता की सन्तान बुद्धिमान और मूर्ख देखी जाती है, जीवन में सुखी और दुःखी भी देखने में आती है। यह भी देखा जाता है कि कई मनुष्य स्वभाव से ही सज्जन अथवा दुर्जन हो जाते हैं। यह अकारण अथवा किसी की करामात दिखाने के लिये नहीं, प्रत्युत पूर्व-जन्म के कर्मफलों के कारण होता है।

"इसके उपरान्त से ही मैं हिन्दुस्तान में श्रेष्ठ-जनों के राज्य की लालसा करने लगी थी।"

उस दिन के इस कथन पर भी नलिनी को यही समझ आया था कि कैंटालीना क्षत्रिय स्वभाव की स्त्री है और उसका सम्पर्क एक ब्राह्मण से होने पर उसने पक्ष बदल दिया है, परन्तु स्वभाव वही है।

आज उसे कैंटालीना के स्वभाव का नया रूप दिखायी दिया था। यह रूप ब्राह्मण स्वभाव का था। नलिनी ने उसके मन के भावों को और स्पष्टता से जानने के लिये पूछ लिया, "कैंटालीना! बहुत उदार हो रही हो। तुम तो कानून को भी 'बाई पास' करती प्रतीत होती हो।"

"कानून मनुष्य निर्मित ही हैं। यह प्रत्येक परिस्थितियों में उपयुक्त नहीं भी हो सकता। मनुष्य में बुद्धि ही किसी बात का निर्णय कर सकती है कि वह ठीक है अथवा गलत है। जब मैं स्वार्थ को मन से निकाल कर विचार करती हूँ तो यह मुझे धोखा नहीं देती। मैं यह समझी हूँ कि वास्तव में अथवा भ्रम से इन्द्र धन की उत्कट आवश्यकता अनुभव करने लगा है। इसी कारण वह अपने पिता और मुझ पर, यद्यपि हम उससे सदा सद्व्यवहार करते रहे हैं, सन्देह करने लगा है। यदि उसके मन को सन्तुष्ट कर दिया जाये तो जहाँ उसका कल्याण होगा, वहाँ हमें भी सुख तथा शान्ति प्राप्त होगी।"

नलिनी को कुछ ऐसा समझ आया कि कैंटालीना की बुद्धि के कपाट खुल गये हैं। यह अब सबके कल्याण की चिन्ता करने लगी है। इस पर भी उसने पूछा, "परन्तु वह सन्तुष्ट कैसे होगा? जिसके मन में लोभ समा गया हो, वह पूर्ण भूमण्डल का राज्य प्राप्त कर भी सन्तुष्ट नहीं होता।"

"इसी कारण तो मैंने कहा है कि उससे फारखती लिखा ली जाये। साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मैं अपने मन के सन्तोष की बात कह रही हूँ, किसी दूसरे के सन्तोष की नहीं।"

"वह घर पर निर्णय मानेगा नहीं।" नलिनी का कहना था।

इस पर कमल ने कह दिया, "वह मध्यस्थ नियुक्त करने पर तैयार है।"

"तो कर ले।"

"वह अपनी माँ नीला को मध्यस्थ बनाना चाहता है।"

"और आप क्या चाहते हैं?"

"मैं उसे एक मूर्ख औरत ही समझता हूँ।"

"तो आप किसी अन्य का सुझाव उपस्थित कर देते।"

"आज जब वह कोर्ट में जाने की बात करने लगा तो मैंने उसे सुझाव दिया था कि किसी को मध्यस्थ नियुक्त कर ले। इस पर उसने अपनी माँ का नाम उपस्थित कर दिया। इस पर मैंने उसे दो विकल्प बताये हैं। एक यह कि तीन व्यक्तियों का सालसी बोर्ड नियुक्त किया जाये। एक उसकी माँ हो। एक मेरा प्रस्तावित व्यक्ति हो और एक कोई अपरिचित जज अथवा मुन्सिफ हो।

"वह यह मान गया है और मैंने अपनी ओर से एक व्यक्ति का नाम उपस्थित किया है। तीसरे व्यक्ति के विषय में अभी निश्चय नहीं हुआ। वह मेरे प्रस्ताव पर विचार कर, दो-तीन दिन में बताने को कह गया है।"

नलिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "वह अपनी माँ से विचार करने गया प्रतीत होता है।"

"यही कैटालीना का विचार है।"

"हमें किसी शुभ परिणाम की ही आशा करनी चाहिये।"

"हम आज इस कारण आये हैं कि आपको अपनी ओर से मध्यस्थता के लिये राज़ी कर लें।"

"तो आपने मेरा नाम उसे बताया है?"

"हाँ; हम आपकी न्याय-बुद्धि पर विश्वास रखते हैं।"

"कमल! यह तुमने अपने पक्ष का व्यक्ति नहीं चुना, वरन् एक अपरिचित और न्याय-पक्ष का व्यक्ति चुना है।"

"मौसा जी! मैंने यही कहा है। हम न्याय ही चाहते हैं।"

"देख लो। कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हारी इच्छाओं और अभिलाषाओं को पूर्ण न कर सकूँ।"

"पर मैं तो यह विचार कर रहा हूँ कि नीला आपका नाम स्वीकार नहीं करेगी।"

"यह ठीक ही होगा। मैं समझता हूँ कि आपको कोई एक निष्पक्ष व्यक्ति मध्यस्थ बनाना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु यह सबके विस्मय और चर्चा का विषय बन गया, जब चार दिन उपरान्त कमल ने नलिनी को बताया कि इन्द्र कह रहा है कि यदि आप मध्यस्थ बनना स्वीकार करें तो वह केवल आप अकेले को मध्यस्थ स्वीकार कर लेगा।

"इससे यह सिद्ध होता है कि वह नीला से सम्मति नहीं कर रहा।" नलिनी का कहना था।

"पर वह तो कहता है कि उसकी माँ ने ही यह सम्मति दी है। उसे, मेरा मतलब है, नीला ने यह सम्मति दी है कि आप न्याय ही करेंगे।"

"तो उचित कार्यवाही कर ली जाये।"

"यह मैं कर लूंगा। न्याय का पेट भर जायेगा और इन्द्र को भी सन्तोष हो जायेगा। अब आप स्वीकृति दे दीजिये।"

नलिनी के स्वीकार करने पर कमल और इन्द्र ने न्यायालय में जाकर यह याचिका उपस्थित कर दी कि सम्पत्ति का बटवारा करने के लिये वे नलिनीकान्त को सालस नियुक्त करते हैं।

परन्तु कोर्ट ने यह कहा कि इस सम्पत्ति के बटवारे में अन्य भी जो अधिकारी हों, सबको इस याचिका में सम्मिलित कर लिया जाये। सबके नाम लिखा दिये गये और उन सबको सम्मन जारी कर दिये गये।

: ५ :

नलिनीकान्त मिसेज़ ऐनिबिसेंट से मिलने मद्रास गया। वहाँ ऐनिबिसेंट ने हिन्दुस्तान के कुछ अन्य प्रमुख व्यक्तियों को बुला रखा था। उसका विचार था कि देश में एक अन्य राजनीतिक संस्था की स्थापना की जाये। इसके लिये ही वहाँ एक छोटा-सा, देश के प्रमुख व्यक्तियों का सम्मेलन बुलाया गया था। नलिनी को भी इसमें सम्मिलित होने का निमन्त्रण था।

मिसेज़ बिसेंट ने पहले प्रत्येक आमन्त्रित व्यक्ति से पृथक्-पृथक् में बात की। नलिनीकान्त को पृथक् भेंट में मिसेज़ बिसेंट ने कहा, "इंगलैण्ड के कुछ प्रमुख राजनीतिक नेताओं से बातचीत कर, मैं इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि वर्त्तमान कांग्रेस एक प्रभावहीन संस्था बन रही है। इससे एक नवीन संस्था स्थापित करने का मैं यत्न कर रही हूँ। बताइये, आप इसमें सम्मिलित होंगे अथवा नहीं ?"

नलिनी ने कहा, "यहाँ तक तो मैं सहमत हूँ कि कोई नवीन संस्था स्थापित करनी चाहिये, परन्तु मैं इसमें सम्मिलित तब ही हो सकता हूँ, जब हम इसके उद्देश्य और उपायों पर विचार करेंगे। इस संस्था का स्वरूप क्या होगा ? इसका लक्ष्य क्या होगा ? साथ ही उस लक्ष्य-सिद्धि के लिये यह संस्था क्या करना चाहेगी ? इनके उपरान्त ही इसमें सम्मिलित हो, कार्य करने का विचार कर सकता हूँ।"

"देखिये, बाबू नलिनीकान्त ! मैं 'बाम्बे न्यूज़' में आपके सम्पादकीय पढ़ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हूँ और मैं उनसे पूर्ण-रूप से सहमत हूँ, परन्तु वे सब बातें तो किसी भी संस्था का आधार नहीं बन सकतीं। किसी ऐसी संस्था को जो पूर्ण देश में छा जाने की इच्छा रखती है, अपना स्वरूप अति सरल और संक्षिप्त बनाना चाहिये।"

"यह ठीक है, परन्तु कुछ आधारभूत बातें हैं, जिनका समर्थन होना ही चाहिये। कुछ ऐसी बातें भी हैं जिनके विषय में मौन रहा जा सकता है, परन्तु उनके विरोध में सम्मिलित न होने की बात होनी चाहिये।

"मेरा अभिप्राय यह है कि कुछ के पक्ष में हुंकारात्मक घोषणा होनी चाहिये। कुछ का विरोध न करने का आश्वासन होना चाहिये और शेष बहुत-सी ऐसी बातें होंगी, जिनके विषय में वह संस्था कुछ न कहे अथवा न करे। सदस्य और देश उन बातों में स्वतन्त्र हो।"

"यह ठीक है। मैं इससे पूर्ण रूप से सहमत हूँ और बताती हूँ कि मैंने अभी तक क्या विचार किया है? सर्वप्रथम हमारा लक्ष्य यह हो कि देश में 'होम-रूल' स्थापित किया जाये। दूसरा, हमारी संस्था यह स्वीकार करे कि हम इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये संवैधानिक उपाय प्रयोग करेंगे। तीसरा, 'होम-रूल' का स्वरूप क्या हो, इसका निश्चय देश का एक प्रतिनिधि-मण्डल निश्चय करे। चौथा, देश में नागरिकों को सोचने, बोलने और लिखने की स्वतन्त्रता हो। केवल भाषा सभ्य और संसदीय होनी चाहिये।

"बस ये हैं लक्ष्य और उपाय, जिनको मैं अपनी संस्था का आधार बनाना चाहती हूँ। कुछ इसमें अन्य आधार भी होंगे। जैसे देश में राजनीतिक उद्धार का प्रयत्न करने वाले सब लोगों का आदर हो। इसके लिये किसी भी उपाय का प्रयोग करने वाले को हम बुरा नहीं मानते। उसकी उपयोगिता में मतभेद हो सकता है, परन्तु देश का राजनीतिक उद्धार लक्ष्य साँझा होने पर सब मान के पात्र हैं। यह भी है कि हम मज़हबों का विरोध नहीं करेंगे; हम भिन्न-भिन्न समाजों के खान-पान, विवाहादि, रीति-रिवाजों को व्यक्ति और उसके परिवार की निजी बात समझते हैं।

"बस ये बातें हैं। लिखने में ये और भी संक्षिप्त होंगी।"

नलिनीकान्त ने कहा, "मैं इसकी हुंकारात्मक बातों से तो सहमत हूँ, परन्तु नकारात्मक बातों में एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। मैं किसी ऐसी संस्था में सम्मिलित नहीं हो सकता, जो देश की संस्कृति एवं धर्म का विरोध करती हो अथवा विरोध करने की स्वीकृति देती हो।"

"आपका अभिप्राय हिन्दू-धर्म के विरोध से है?"

"हिन्दू-धर्म ही नहीं, वरन् हिन्दू-समाज तथा उसकी मान्यताओं की बात है।"

—१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो बहुत बड़ी बात आपने कह दी है।"

"मैंडम ! नहीं, यह एक ऐसी बात है जिसके विषय में समझौता नहीं हो सकता। इतना स्मरण रखना चाहिये कि मैं हिन्दू-समाज तथा उसकी मान्यताओं का समर्थन करने के लिये नहीं कह रहा। मैं यह भी नहीं कह रहा कि इसके खण्डन में विचार प्रकट न किये जायें। मेरा यह कहना है कि सक्रिय रूप में इसका तब तक विरोध न किया जाये, जब तक इसके स्वीकार करने वालों की संख्या अधिक हो।"

"परन्तु हिन्दुओं के अपने में ही बहुत-सी परस्पर विरोधी बातें हैं। उनका क्या होगा ?"

"वे आपस में भी क्रियात्मक विरोध नहीं कर सकेंगे। पक्ष अथवा विपक्ष में प्रचार तो हो सकेगा, परन्तु क्रियात्मक विरोध नहीं हो सकेगा।"

"परन्तु ऐसा कहीं विरोध होता है ?"

"जी, होता है और अब अधिक तथा अधिक विरोध की सम्भावना बन रही है।"

"कहाँ और क्यों ?"

"पूर्ण देश में इस विरोध का बीजारोपण हो चुका है। अंग्रेज़ी सरकार ने निर्वाचन-पद्धति का प्रचलन आरम्भ कर दिया है। इसका अर्थ है कि जनता राज्याधिकारी बनेगी। साथ ही मुसलमानों को विशेषाधिकार दिये गये हैं। उनकी पृथक् मतदाता सूचियाँ भी बन गयी हैं। इससे मुसलमान अपनी संख्या बढ़ाने में अपना लाभ समझेंगे। अतः बल, छल, धन और औरत के लोभ से मुसलमानों की संख्या बढ़ाने का यत्न आरम्भ हो गया है। पंजाब में और बंगाल तथा आसाम में यह प्रयत्न ज़ोरों पर है।"

"परन्तु वे इन बातों का प्रयोग क्यों करते हैं ?"

"इस कारण कि उनकी जीवन-मीमांसा इतनी घटिया है कि वे समझाने से किसी को मुसलमान बना नहीं सकते। इस कारण ये अवैध उपाय प्रयोग किया करते हैं।

"एक सरल-चित्त व्यक्ति की सरलता से लाभ उठा कर उसे मत-परिवर्तन पर विवश करना एक सामान्य बात बन गयी है। मैं एक उदाहरण देता हूँ। सियालकोट के एक रामू चमार को एक मुल्ला जाकर कहता है कि तुम्हारे हाथ का छुआ एक ब्राह्मण नहीं खाता। इस कारण हिन्दू-धर्म बहुत बुरा है और तुम्हें उसमें नहीं रहना चाहिये। वह कहता है कि मैं अपने पूर्व-जन्म के कर्म से चमार हूँ। इसमें ब्राह्मण का दोष नहीं। मुल्ला उसको समझाता है कि मुहम्मद साहब पर ईमान लाने से उसके पाप माफ हो जायेंगे। इस पर भी वह उसे जब हिन्दू-समुदाय से बाहर नहीं कर सकता तो फिर धोखा-धड़ी से उसे गो-मांस खिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता है और फिर सामान्य हिन्दुओं में यह बात घोषित कर देता है। अब रामू देखता है कि उसके अनपढ़ चमार बिरादरी के लोग भी उससे रोटी-बेटी का सम्बन्ध तोड़ रहे हैं तो वह रामू से रहमान बन जाता है।

"यह ठीक है कि हिन्दू उसे छोटी जाति का समझ उससे परहेज़ करते थे, परन्तु इसका यह अभिप्राय कैसे हो गया कि हिन्दू-धर्म की, कर्म-फल की तथा पुनर्जन्म की मीमांसा गलत है और मुहम्मद साहब पर ईमान ला, पापों से मुक्त होने की मीमांसा ठीक है।

"और यह हो रहा है। इस प्रकार रामू की अज्ञानता का लाभ उठाकर रामू और उसके परिवार को रहमान, दीनू, रसूलन इत्यादि बना कर मुसलमानों की मतदाता सूची में वृद्धि कर ली जाती है और समय पाकर इस प्रक्रिया से देश में इस्लामी राज्य स्थापित हो जायेगा।

"मैं एक अन्य उदाहरण बताता हूँ। लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में एक उच्च-जातीय हिन्दू का लड़का पढ़ता है। उसके माता-पिता निर्धन हैं। अतः एक मिशनरी सोसायटी से उसको छात्रवृत्ति दिलवा कर उसे ईसाई बना लिया जाता है। लड़का है फकीरचन्द। वह बन जाता है 'फ्रैंक मैथ्यू' और समय पाकर वह गैर-हिन्दुस्तानी हो जाता है और फिर अंग्रेज़ी-राज्य का समर्थक बन जाता है।"

मिसेज़ बिसैंट नलिनी का मुख देखती रह गयी। वह इस वस्तु-स्थिति को जानती तो थी, परन्तु वह हिन्दू-समुदाय में सुधार करना इसकी चिकित्सा समझती थी। इस कारण उसने कुछ विचार कर कहा, "मिस्टर नलिनीकान्त! क्या यह ठीक नहीं कि हिन्दू इसका प्रबन्ध करें कि दूसरे धर्म वाले ऐसा न कर सकें। उन्हें अपने सामाजिक रीति-रिवाज में परिवर्तन नहीं करना चाहिये क्या?"

"हिन्दुओं को अथवा किसी अन्य समुदाय को अपने भीतर की त्रुटियों को स्वयं दूर करने का यत्न करना चाहिये। परन्तु मैं तो सक्रिय बल, छल, धन और औरत के प्रलोभन की बात कह रहा हूँ।

"देखिये, एक अन्य वस्तु-स्थिति बताता हूँ। मुसलमानों के प्रचार-कार्य का प्रचार से विरोध किया गया। एक पण्डित लेखराम प्रचार-कार्य करने लगे तो सार्वजनिक वाद-विवाद होने लगे। मुसलमान विचार से अपनी श्रेष्ठता स्थापित नहीं कर सके तो किसी ने पण्डित जी की हत्या कर दी।

"यह सब एक मज़हब का हिन्दू संस्कृति और धर्म का सक्रिय विरोध है। 'होम-रूल' में यह स्वीकार नहीं किया जाये। सरकार न तो रामू से रहमान बनाने वाले मुल्ला को और न ही फकीरचन्द से फ्रैंक मैथ्यू बनाने वाले पादरी को दण्डित करती है और न ही करना चाहती है। 'होम-रूल' में यह नहीं हो सकेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु हिन्दू भी तो ऐसा कर सकते हैं।"

"यदि कोई हिन्दू नामधारी ऐसा करता है तो वह भी क्रियात्मक विरोध कर रहा माना जाये और वह भी दण्डित हो। देखिये, हिन्दू ऐसा नहीं करते। कारण यह कि इनमें अपने-अपने विचार के अनुसार रहने की स्वतन्त्रता है।

"यदि एक ब्राह्मण किसी चमार के हाथ का छुआ खाना पसन्द नहीं करता तो एक चमार भी किसी भी दूसरे के हाथ का छुआ खाने से इन्कार कर सकता है। हमारे यहाँ इसको व्यक्तिगत धर्म कहते हैं। यह बात चमार, डोम और अहीर, गूजर इत्यादि करते हैं। यह वर्जित नहीं है।"

"और मन्दिरों में छोटी जाति वालों के प्रवेश के विषय में आप क्या कहते हैं?"

"यह भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की बात है। मन्दिर बनाने वाले तथा उन मन्दिरों में नियुक्त पुजारी छोटी जाति के हिन्दुओं को मन्दिरों में नहीं जाने देते तो छोटी जाति वाले अपने मन्दिर बना लें और उनमें ब्राह्मणों को मत आने दें। इसमें भला कोई किसी पर आपत्ति क्यों करे?

"वास्तव में यह आर्थिक प्रश्न है। इसमें सरकार यह कर सकती है कि छोटी जाति के अछूतों को अपने मन्दिर बनाने में प्रोत्साहन दे।"

"तो वे हिन्दुओं से बाहर हो जायेंगे।"

"परन्तु हिन्दुओं का अपना कोई मन्दिर नहीं। न ही यह किसी प्रकार की पूजा-पद्धति है। यह तो कुछ विश्वासों का पुंज है। वे विश्वास किसी भी मन्दिर में जाते हुए अथवा किसी भी मन्दिर में न जाते हुए रह सकते हैं। यह किसी भी प्रकार से पूजा करते हुए अथवा पूजा न करते हुए रह सकते हैं।

"हिन्दुत्व का आधार है प्राणी में कर्म करने वाला जीवात्मा और उसका पुनर्जन्म तथा कर्म-फल का भोग। इन दो बातों पर विश्वास का नाम हिन्दू-धर्म है। मैं इसका 'होम-रूल' में सक्रिय विरोध नहीं चाहता।"

इस पूर्ण व्याख्या पर भी श्रीमती ऐनिबिसेंट नलिनी की विवेचना को स्वीकार नहीं कर सकीं। उन्होंने पूछ लिया, "यदि आपकी इस बात को 'होम-रूल' संस्था के 'नो' में न सम्मिलित किया जाये तो फिर आपका क्या विचार है?"

"मैं आपकी संस्था का सदस्य बन जाऊँगा। आपके उद्देश्यों की पूर्ति और कार्य-पद्धति को स्वीकार करते हुए भी अपने विचार के प्रचार का यत्न करता रहूँगा।

"मैं ऐसी राज्य-प्रणाली चाहता हूँ कि जिसमें हिन्दुस्तान में बहु-संख्यक हिन्दू जाति पर बल-छल के प्रयोग का विरोध हो सके।"

"ठीक है। आप करते रहिये। कल सम्मेलन में आइयेगा। मैं यहाँ एक समाचार-पत्र निकालना चाहती हूँ। मेरी इच्छा है कि आप उसमें सम्पादक का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करें।"

"ठीक है। मैं कल आऊँगा और यदि आप समाचार-पत्र का सम्पादक बनाना चाहेंगी तो अपनी विशेष बात के विषय में स्वतन्त्र रहता हुआ भी आपके पत्र का सम्पादन-कार्य कर दूंगा।"

: ६ :

नलिनीकान्त अभी मद्रास में ही था। वह वहाँ एक सप्ताह के लिये गया था, परन्तु दो सप्ताह से ऊपर हो चुके थे और अभी भी उसका पत्र आया था कि वह कुछ दिन तक नहीं आ सकता।

बम्बई में कमलनारायण नित्य विजय से पता करता रहता था कि उनके पिता मद्रास से लौटे हैं अथवा नहीं ? दो सप्ताह के उपरान्त भी पत्र आने पर कि अभी कुछ दिन तक वह नहीं आ सकेगा, कमलनारायण अपने परिवार के सब सदस्यों को लेकर मद्रास जा पहुँचा।

कमल का लड़का इन्द्र अपने विलायत लौट जानें से पूर्व अपने पिता की सम्पत्ति में से अपने भाग पर अधिकार करने के लिये उत्सुक था। कमलनारायण भी कुछ ऐसा चाहता था कि जब न्यायालय में नलिनीकान्त मध्यस्थ नियुक्त हुआ है तो शीघ्रातिशीघ्र उसकी सम्पत्ति का बटवारा हो जाये। कैंटालीना स्वयं अपने बम्बई में दैनिक-पत्र को चलाने की इच्छा कर रही थी और वह इस कार्य के लिये भी नलिनी पर दृष्टि रखे हुए थी। अतः कमलनारायण, राजेश्वरी, कैंटालीना, नीला, नीला के दोनों बच्चे इन्द्र और करुणेश, इन्द्र की पत्नी लैला और करुणेश की पत्नी मीना तथा कैंटालीना के तीनों बच्चे बसन्त, कमला और महेन्द्र सब मद्रास 'अडियार' में एक होटल में टिक गये। तार द्वारा नलिनी को वहाँ आने की सूचना पहले ही दी जा चुकी थी। वह इन सबको लिवाने के लिये रेल के स्टेशन पर पहुँचा हुआ था। होटल का प्रबन्ध भी उसी ने कर दिया था।

जिस दिन ये पहुँचे, उसी दिन रात के खाने के समय बात आरम्भ हो गयी। बात नीला ने आरम्भ की। उसने कहा, "मौसा जी ! इन्द्र को शीघ्र ही अपने काम पर लन्दन में उपस्थित होना है। इस कारण मैं चाहती हूँ कि आप अपना निर्णय दे दें।"

नलिनी का प्रश्न था, "नीला ! पहले यह सिद्ध करो कि कमल जी के जीवित रहते, बटवारे की आवश्यकता है।"

"बात यह है कि इन्द्र को एक स्थायी और अच्छी नौकरी लन्दन में मिल गयी है। दूर स्थान पर रहते हुए यह अपने पिता से आर्थिक दृष्टि से भी पृथक् हो जाना चाहता है। यह युक्तियुक्त भी है। धन एक प्रयोग की वस्तु है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विवाहित जीवन के आरम्भ में सुख देने वाला होता है। यदि यह पिता के घर में रह रहा होता तो इसका यह जीवन सुखद् और सुविधाजनक हो जाता। विदेश में रहने के कारण ऐसा नहीं हो सकता। बड़ों के धन-सम्पद का लाभ इसी आयु में होना चाहिये। बड़ी आयु में तो ये अपनी सम्पत्ति बना लेंगे। तब बड़ों की सम्पत्ति की महत्ता कुछ विशेष नहीं रह जायेगी।

"अत: यदि यह बटवारा अभी हो जाये तो अधिक उचित होगा।"

"इस विषय पर किसी और को कुछ कहना है?" नलिनी ने सबसे पूछ लिया।

जब कोई नहीं बोला तो नलिनी ने कमल को सम्बोधन कर पूछा, "कमल जी! आपको भी कुछ नहीं कहना?"

"कहना तो बहुत था, परन्तु नीला के साथ पुरानी सहचारिता को स्मरण कर मैं कुछ कहना नहीं चाहता।"

नीला ने तुरन्त कह दिया, "शट-अप। उस समय की बात स्मरण कराने की आवश्यकता नहीं है।"

नलिनी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "कमल जी! आप अपने पुराने सम्बन्धों को विस्मरण कर जो बहुत-कुछ कहना है, कह दें। नीला जी ने स्वीकृति दे दी है।"

"जी नहीं। मेरी वर्तमान पत्नी भी यही चाहती है। इस कारण मैं चुप ही रहना चाहता हूँ। आपको मैं अपना मध्यस्थ मानता हूँ। इस कारण जो भी आप निर्णय देंगे, मैं स्वीकार करूँगा।"

"कैंटालीना कुछ कहना चाहेगी क्या?"

"केवल इतना ही कि इन्द्र जब छोटा था, तो मुझे बहुत प्रिय था और ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय इसे धन की आवश्यकता है। वह उसके पिता के पास है। इस कारण उसके पिता को देना ही चाहिये। चाहे सहायता के रूप में दे, चाहे सम्पत्ति में उसके भाग के रूप में।"

"मैं यह नहीं पूछ रहा कि इन्द्र एक प्रिय पुत्र है अथवा नहीं? मैं यह पूछ रहा हूँ कि कमल जी के जीवन-काल में बटवारा होना चाहिये अथवा नहीं?"

"मैं यही कह रही हूँ। कानून की बात तो अदालत में होती है। घर पर फैसला करने में कानून के ऊपर भावना की बात आनी ही चाहिये। इन्द्र को धन की आवश्यकता है और उसके पिता के पास है। वैसे दान-दक्षिणा में देने के स्थान, मैं बटवारा करके देने को पसन्द करती हूँ। यह इस कारण कि एक बार मिल जाने पर इन्द्र उस मिले धन में वृद्धि करने के लिये विवश होगा। यदि कुछ अब मिलने के उपरान्त पीछे और मिलने की आशा बनी रही तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस धन को व्यर्थ भी गँवा सकता है।"

कैंटालीना की इस युक्ति ने बात समाप्त कर दी। इसके उपरान्त नलिनी ने सबसे पृथक्-पृथक् भेंट की और पूर्ण सम्पत्ति का वृत्तान्त तैयार कर बटवारा कर दिया।

कमल के पिता की सम्पत्ति के उसने कमल, राजेश्वरी, इन्द्र, करुणा, बसन्त कमला और महेन्द्र में बराबर-बराबर भाग कर दिये। कमल की अपनी सम्पत्ति के पचास प्रतिशत को बाँट दिया और पचास प्रतिशत उसने कमल के अपने प्रयोग के लिये सुरक्षित रख दी। पचास प्रतिशत जो बाँटी गयी, वह कमल के पाँचों बच्चों में बराबर-बराबर बाँटी गयी। कैंटालीना को अपने माता के देहान्त पर बीस सहस्र पौण्ड मिला था। वह भी जाँच-पड़ताल का विषय बन गया। उसके विषय में नलिनी ने पृथक् निर्णय दिया कि उसे बटवारे में सम्मिलित करने में कोई कारण नहीं है। कैंटालीना अपनी इच्छा से जिसको चाहे दे सकती है।

इस प्रकार पूर्ण बटवारा तीन दिन में कर, लिख दिया गया और सबकी स्वीकृति के साथ न्यायालय में भेज दिया गया।

सबके लौटने के पूर्व नलिनी के मद्रास में रुके रहने पर भी विचार हुआ। इस विचार-विनिमय में कमल, कैंटालीना और नलिनी ही थे। नलिनी ने बताया, "श्रीमती ऐनिबिसेंट ने 'होम-रूल लीग' नाम की एक राजनीतिक संस्था की स्थापना की है और उस संस्था की ओर से एक दैनिक समाचार-पत्र यहाँ से निकालने का विचार किया जा रहा है। पत्र के लिये एक लिमिटेड कम्पनी बनायी गयी है और उसके रजिस्ट्रेशन का प्रबन्ध हो रहा है। श्रीमती बिसेंट का विचार है कि मैं उसका सम्पादक बनूं। परन्तु यहाँ कुछ मद्रासी इस बात का विरोध रहे कर रहे हैं, मिसेज़ बिसेंट हठ कर रही हैं।"

कैंटालीना ने पूछ लिया, "और आप यहाँ किस लोभ में पड़े हैं?"

"देश की बातों को कुछ दिशा देने के लोभ में।"

"व्यर्थ है। मैं चाहती हूँ कि आप आज ही लौट चलिये। वहाँ 'बॉम्बे न्यूज़' के पुनरुत्थान की योजना है। आप उसके सम्पादक अभी हैं, हटाये नहीं गये।"

"पर मिसेज़ कैंटालीना! आपने पहले नहीं बताया?"

"मैं तो यह पूछती हूँ कि आपको उस पद से निकाला किसने था? आप अभी तक उसके सम्पादक हैं। समाचार-पत्र आपके जेल जाने के कारण बन्द पड़ा था। आपका स्वागत-समारोह भी इसी नाते से किया गया था। साथ ही इस आयोजन से आपको पुनः सार्वजनिक जीवन में सम्मिलित किया गया था।

"देखिये, इन राजनीतिक नेताओं के झाँसे में मत आइये। राजनीति का अर्थ ही यह है कि समय पर सफलतापूर्वक काम चला सकना। अतः यदि अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारियों को सफलता इस बात में प्रतीत हुई कि आपको हटा देना चाहिये तो एक दिन में ही आपका पत्ता कट जायेगा।"

"और आपके समाचार-पत्र में पत्ता कटने में कितने दिन लगेंगे ?"

"वहाँ आप नेता बन रहे हैं। एक-दो वर्ष में आप मेरा पत्ता काटने के योग्य हो जायेंगे। मैं कैसे पत्ता काट सकूंगी ?"

नलिनी ने विचार किया और अपनी सतर्क बुद्धि से तुरन्त निर्णय लेकर एक पत्र ऐनिबिसेंट को लिख दिया। इसमें उसने लिखा, "मेरे सम्बन्धी यहाँ आये हुए हैं और मैं उनके साथ बम्बई लौट रहा हूँ। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मिस्टर आयंगर इस पत्र के सम्पादक बनना चाहते हैं। वैसे वे बहुत ही सज्जन पुरुष हैं और योग्य भी हैं। मैं व्यर्थ के विवाद में पड़ना नहीं चाहता तथा उनके लिये मैदान रिक्त छोड़ कर जा रहा हूँ।"

इस प्रकार यह पत्र लिख वह स्वयं श्रीमती बिसेंट की कोठी में जाकर दे आया। श्रीमती बिसेंट भीतर एक गोष्ठी में थीं।

नलिनी बम्बई में आ पहुँचा। 'बाम्बे न्यूज़' को चालू करने का प्रबन्ध होने लगा।

एक दिन मध्याह्नोत्तर के चाय के समय सरस्वती वहाँ नहीं थी। नलिनी ने पूछ लिया, "सरस्वती दिखायी नहीं दे रही।"

उत्तर विजय ने दिया, "उसकी अम्मी का सन्देश आया था कि उसे तुरन्त मिलने आना चाहिये। अतः वह खाना खाने के उपरान्त ही अपनी अम्मी से मिलने चली गयी थी।"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हें जाकर पता करना चाहिये कि क्या बात है ? कोई बीमार हो सकता है।"

"खान साहब तीन-चार दिन हुए, विलायत से लौटे हैं और मुझे यह भय है कि कहीं वे बीमार न हों।"

"अच्छी बात है। चाय ले लो और अपनी गाड़ी लेकर तुरन्त वहाँ जाओ। किसी प्रकार की सहायता तुम कर सको तो अवश्य करनी चाहिये।"

विजय गया और रात के आठ बजे, भोजन के समय से कुछ पूर्व, सरस्वती के साथ लौटा।

बात इस प्रकार हुई कि मध्याह्न का भोजन कर सरस्वती अभी कुछ आराम ही कर रही थी कि घर की नौकरानी रामी आयी और कमरे के द्वार पर खड़ी हो बोली, "बहू रानी ! भैया जी ड्रायंग-रूम में बुला रहे हैं।"

भैया जी से रामी का अभिप्राय था विजय कुमार।

सरस्वती उठ कर ड्रायंग-रूम में आई तो खानबहादुर के घर का चौकीदार रमज़ान वहाँ खड़ा था। सरस्वती विस्मय में अपने पति तथा रमज़ान का मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने लगी। वह अभी खड़ी थी कि विजय ने कह दिया, "अम्मी ने बुला भेजा है।"

"कब ?"

"अभी। फौरन।"

"क्या बात है रमज़ान ?"

"हज़ूर ! फौरन बुलाया है······।" वह कुछ कहने वाला था, परन्तु चुप रहा। सरस्वती कुछ न समझती हुई उलटे पाँव अपने कमरे में चली आयी। वस्त्र बदल वह घर की घोड़ा-गाड़ी में अपने वालिद शरीफ के घर में जा, सीधी अम्मी के कमरे में जा पहुँची। खानबहादुर भी वहाँ थे। अम्मी पीत-मुख उनके सामने बैठी थी। खानबहादुर भी गम्भीर मुख बनाये एक आराम-कुर्सी पर बैठे थे।

: ७ :

ज़रीना ने तबस्सुम को आते देखा तो कहा, "बैठो।"

तबस्सुम कुछ न समझती हुई बैठ गयी और विस्मय में माता-पिता का मुख देखने लगी। ज़रीना अपने खाविन्द की ओर देखते हुए बोली, "अब आप ही कह लीजिये।"

"मैंने तुम्हें बता दिया है। तीन दिन हो गये हैं तुम्हें समझाते हुए, मगर तुम्हारी अक्ल में बात बैठती ही नहीं।"

"तभी तो कह रही हूँ कि आप ठीक तरह से बता सकेंगे।"

खानबहादुर ने अब लड़की की ओर देख कहा, "मैं विलायत में बहुत लोगों से मिला हूँ, जो इस्लाम और मुसलमानों की तरक्की के लिये बहुत फिक्रमंद हैं। लॉर्ड सैलिसबरी, लॉर्ड पैम्ब्रोक, सर आगा खाँ, खान साहब अली अहमद खाँ और 'सैक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इण्डिया' भी उनमें थे।

"इन सबकी बातों का लुब्बे-लुबाब यह है कि हम सब मुसलमानों को एक होकर हज़रत के ख्वाबों को अमल में लाने के लिये कोशिश करनी चाहिये। इसमें कई स्कीमों पर बातचीत हुई है। सबसे मुक़द्दम बात यह समझी गयी है कि दुनिया में मुसलमानों की तादाद बढ़ायी जाये।"

खानबहादुर इतना कह आगे कहने के लिये अपनी बात को तरतीब देने लगे। उन्हें चुप देख तबस्सुम ने कहा, "अब्बाजान ! यह सब-कुछ ठीक है, मगर इसका मुझे फौरन बुलाने से क्या ताल्लुक है ? आज हमारे अखबार की कापी प्रेस को जाने वाली है और मैं उसमें बहुत मशगूल थी।"

"यह अखबार का झंझट तुम किसलिये अपने सिर ले रही हो। क्या घर में खाने-पीने की कमी होने लगी है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बाजान ! यह नहीं। हमारी इक़्तिसादी हालत बहुत अच्छी है। मगर दिन गुज़ारने के लिये कुछ काम भी तो करना चाहिये। खाली बैठे तो दिन भी खत्म नहीं होता।"

"अगर यह बात थी तो कालेज की नौकरी क्यों छोड़ी थी ?"

"इसलिये कि वह नौकरी थी और यह शौक की बात है। वहाँ मजबूरी थी और यहाँ खुशी से काम होता है।"

"मगर तुम तो कह रही हो कि आज बहुत मशगूल थीं ?"

"हाँ, अब्बाजान ! किसी काम में खुशी से लगे रहने और किसी काम को मज़बूरी से करने में बहुत फरक है।"

"मुझे यह बात पसन्द नहीं है।"

"पर आपको मैं कुछ आपके पसन्द करने के लिये तो कह नहीं रही। मैं तो अपने मुतअल्लिक ही बात कर रही थी।"

"और मैं भी तुम्हारे मुतअल्लिक ही कह रहा हूँ। मैं कह रहा था कि दुनिया में मुसलमानों की आबादी दूसरे दर्जा पर है। ईसाई हमसे ज़्यादा हैं। ईसाई इस बात को महसूस कर रहे हैं और वे अपनी आबादी बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिये यह ज़रूरी हो गया है कि हम भी अपनी मिल्लत में इज़ाफा करें। नहीं तो हम धकेल कर दीवार के साथ कर दिये जायेंगे।

"ईसाई अपना हाथ साफ कर रहे हैं अफ्रीका की कौमों पर। हमारा काम यहाँ हिन्दुस्तान, बर्मा, चीन और इण्डोनेशिया वगैरा में है।

"ज़माना जमहूरियत[1] का आ रहा है। जिस कौम की तादाद ज़्यादा होगी, वह ही मुस्तकबिल में हकूमत करेगी। लॉर्ड सैलिसबरी कह रहे थे कि हिन्दुस्तान में भी जमहूरियत आयेगी। इसकी यहाँ शुरुआत भी हो गयी है। 'मिण्टो पारले इस्लाह'[2] ने हिन्दुस्तान में रिआया की नुमायन्दगी की नींव डाल दी है और उनका कहना था कि यह बीज बढ़ेगा और चालीस-पचास साल में हिन्दुस्तान एक खुद-मुखत्यार जमहूरियत रियासत हो जायेगी। तब जिस कौम की अक्सरीयत होगी, वही यहाँ की हाकिम होगी।

"इसलिये यह निहायत ज़रूरी हो गया है कि हम सब मिलकर कोशिश करें कि जब तक हिन्दुस्तान एक खुद-मुखत्यार जमहूरियत बनता है, यहाँ मुसलमान अक्सरीयत में हो जायें। इसलिये यह सवाब का काम मैं घर से ही शुरू करना चाहता हूँ।"

तबस्सुम अपने वालिद साहब की बात सुन, विस्मय कर रही थी कि इस ला-मज़हब शख्स को क्या हो गया है ? उसे अपनी विवाह के समय की बात

---

१. प्रजातन्त्र; २. सुधार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण थी। बात इस प्रकार चली थी कि तबस्सुम के लिये एक रिश्ता उसकी ननिहाल से आया था और तबस्सुम ने स्पष्ट इनकार कर दिया था। इसके साथ ही उसने अपनी अम्मी से कह दिया था कि वह विवाह करेगी तो अपनी मर्ज़ी से।

जब वह 'राष्ट्र' के सम्पादक विजय से बात करके आई तो अम्मी के पूछने पर उसने बता दिया था, "अम्मी! मैंने अपने लिये एक लड़का तजवीज़ किया है। यहाँ एक हफ्तावार अखबार निकलता है। वह उसका ऐडीटर है। मैं अभी-अभी उससे बातचीत करके आयी हूँ और मन में फैसला कर आयी हूँ कि मैं उससे शादी करूँगी।"

"तो बातचीत कर आयी हो?"

"शादी के मुतअल्लिक नहीं मम्मी! सियासियात पर गुफ्तगू हुई है। बहुत ही सुलझे हुए दिमाग का आदमी है।"

"देखने में कैसा है?"

"एक इन्सान दिखायी देता है।"

ज़रीना मुस्करायी और इस प्रस्तावित दामाद के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने लगी। मगर ज्यों-ज्यों तबस्सुम बताती-गयी, उसके माथे पर त्योरी चढ़ती गयी। आखिर उसने कहा, "यह नहीं हो सकता। वह एक हिन्दू है। मुझे उनसे नफरत है।"

"पर अम्मी! अब्बाजान से राय कर लो। पीछे ही इसको 'रिजैक्ट' करना।"

"वे तो खुदा को भी नहीं मानते।"

"पर अम्मी! मैंने शादी खुदा से तो नहीं करनी। यह एक शरीफ इन्सान है। मेरा इरादा शादी करने का इनसे है।"

"बाप-बेटी दोनों खुदा से मुन्किर हैं। या खुदा, ज़माना किधर जा रहा है!"

"अम्मी! ऐसा नहीं। मैं तो हँसी कर रही थी। भला खुदा से भी कोई शादी करता है। मैंने तो इसलिये कहा था कि अब्बाजान से राय तो करोगी ही, तो इन्कार करने से पहले ही राय कर लो।"

उसी रात खाने पर बैठे हुए बात हो गयी। तबस्सुम की दोनों अम्मियाँ, जो उस समय बम्बई में थीं, खाने की मेज़ पर बैठी थीं। जब खाना खाया जा रहा था तो ज़रीना ने बात चला दी कि तबस्सुम की शादी होनी चाहिये।

"तो इसने ख्वाहिश ज़ाहिर की है?" खान साहब ने पूछा।

"हाँ, हज़रत! और एक लड़का भी तजवीज़ किया है, मगर वह हिन्दू है। एक हफ्तावारी अखबार का ऐडीटर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो बेगम ने भी उसे देखा और पसन्द किया है ?"

"न मैंने देखा है और न पसन्द किया है। वह एक हिन्दू नौजवान है।"

यह सुन खान साहब गम्भीर हो गये। फिर कुछ विचार कर बोले, "मैं लड़के को देखूंगा। पहले मुझे उसका नाम और पता बता दो। मैं देख कर दो-तीन दिन में बताऊँगा।"

"मगर वह हिन्दू है।"

"तब क्या हुआ ? हज़रत साहब की उम्मत बढ़ेगी।"

खानबहादुर को विजय का पता बताया गया तो वे फड़क उठे। कहने लगे, "इसको मैं जानता हूँ। बहुत अच्छी अंग्रेज़ी लिखता है। वह मज़हबी हिन्दुओं और मुसलमानों के खिलाफ है। उसकी सियासियत भी बहुत तरक्की-याफ्ता है।"

"तो आपने उसे देखा है ?"

"हाँ; कमलनारायण साहब का जाना-पहचाना है। एक दिन वे उसे लेकर क्लब में आये थे और उसका तआरुफ कराते ही बीसियों उसे घेर कर बैठ गये थे। बहुत ही दिलचस्प बातें होती रही थीं।"

"मुझे वह पसन्द नहीं।"

"क्यों ?"

"वह हिन्दू है।"

"यह फिज़ूल है। देखो, मैं उसे यहाँ लाकर तुम दोनों को दिखा दूंगा। वह हर तरह से तबस्सुम के लायक है।"

तबस्सुम को उस दिन की बात स्मरण थी और आज की बात सुन, वह विस्मय कर रही थी। तबस्सुम को गम्भीर भाव में चुप देख, खानबहादुर ने पूछा, "बताओ तबस्सुम ! तुम इसमें क्या कहती हो ?"

तबस्सुम ने पूछ लिया, "अब्बाजान ! किसकी बाबत पूछ रहे हैं ?"

"इस्लाम की तबलीग के मुतअल्लिक।"

"मैं इसके मुतअल्लिक कुछ अच्छे खयाल नहीं रखती।"

"पर आज तो इंगलैण्ड के सब मुदब्बिर इसकी तारीफ करते हैं।"

"तो वे सब मुसलमान हो गये हैं ?"

"नहीं, यह बात नहीं। वे इस्लाम के सियासी निज़ाम की तारीफ करते हैं। मैं भी उसी नुक्ता-निगाह से बात कर रहा हूँ। मज़हबी बातें मुझे भी पसन्द नहीं हैं। किसी भी मज़हब को मैं जहालत का कच्चा चिट्ठा समझता हूँ, मगर हमारी एक सियासी तनज़ीम भी है। मैं उसी की बात कह रहा हूँ।"

"वह क्या है ?"

"अगर हिन्दुस्तान में मुसलमानों की अक्सरीयत हो जाये तो बंगाल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाड़ी से लेकर मराको तक इस्लामी हकूमत हो जायेगी। हमारी बिरादरी इतनी वसीअ हो जायेगी कि सारी दुनिया हमसे थर-थर काँपेगी।"

"पर अब्बाजान ! इसमें भी क्या कोई खूबी है कि दुनिया हमसे डर के मारे काँपे। मैं समझती हूँ कि इससे यह कहीं बेहतर होगा, अगर दुनिया इस्लाम के पास इसलिये आये कि यहाँ सबके लिये हमदर्दी और मदद हासिल होती है।"

"यह भी है। मगर किसी को मगलूब करने के लिये तो डर पैदा करना ही पुरअसर तरीका है।"

"तो अब्बाजान ! आप मगलूब करिये। औरत तो मगलूब होने के लिये बनी है। यही हज़रत कह गये हैं।"

"नहीं, यह बात नहीं है। हम यह जानते हैं कि औरत मर्द पर गालिब आने के लिये बनी है।"

"हाँ, अब्बाजान ! यह बात आपकी कुछ ठीक ही मालूम होती है, मगर वह मुहब्बत के ज़रिये से है। डर दिखाकर नहीं।"

"ठीक है। तुम उसी तरीके पर चलो। हम मर्द दूसरा तरीका इस्तेमाल करेंगे। मकसद एक ही होना चाहिये। हिन्दुस्तान में बीस साल में इस्लामी अक्सरीयत कायम करनी है। इंगलैण्ड में जानकार हलकों में यह खुले-आम कहा जा रहा है कि अगर हिन्दुस्तान में इन्कलाबी कार्रवाइयाँ जारी रहीं तो यकीनी तौर पर यहाँ खुदमुख्त्यारी सरकार सन् बीस तक बन जायेगी। ये इन्कलाब-पसन्द सब-के-सब हिन्दू हैं। इसलिये हकूमत उनकी होगी और हम गुलाम बन जायेंगे।"

सरस्वती को अब्बाजान की बात पसन्द नहीं आ रही थी और वह ऊब रही थी। अतः उसने बात को समाप्त करने के लिये कह दिया, "पर अब्बाजान ! मैं इसमें क्या कर सकती हूँ ?"

"तुम अपने खाविन्द को इस्लाम कबूल करा सकती हो ?"

"इससे मुझे क्या मिलेगा ?"

"सवाब मिलेगा। किसी नेक काम के करने से जो हासिल होता है, उसकी तुम हकदार बन जाओगी।"

"पर मैं तो उससे भी ज़्यादा अच्छी बात कर रही हूँ। मैं लोगों को इंसान बनाने की कोशिश कर रही हूँ।"

"इन्सान तो सब हैं। हिन्दू भी इन्सान हैं। मैं इन्सानों में अशरफुल मखलूक[1] बनाने की बात कह रहा हूँ। वही मुसलमान हैं। इन्सानों में इस्लाह-शुदा[2] ही मुसलमान होते हैं।"

---

१. श्रेष्ठ सृष्टि; २. सुधार किये हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब्बाजान ! यह समझ लीजिये कि महादेव के वालिद एक निहायत ही काबिल मुसलमान हैं। उनकी ज़बान में इस्लाह-शुदा को आर्य कहते हैं। इसके वही मायने हैं, जो मुसलमान के हैं।"

"पर वह अपना नाम मुसलमानों के राय दहिन्दगान[1] में नहीं लिख सकता।"

"तो यह लिखने वालों की गलती है। यह महादेव के वालिद की गलती नहीं हो सकती।"

"पर उसका नाम हिन्दुआना है।"

"तो नाम से इस्लाह-शुदा इन्सानों का पता चलता है ?"

"देखो तबस्सुम ! तुम एम० ए० तक पढ़ी हो। मैं तो दसवीं जमायत में फेल हो गया था। यह अंग्रेज़ी तो मैं पीछे सीख गया हूँ। तुम दलील मुझसे ज़्यादा कर सकती हो। मगर मेरी बात गलत नहीं हो सकती। आज हिन्दुस्तानी सरकार ने मुसलमानों के राय दहिन्दगानों का अलहदा रजिस्टर खोल दिया है और महादेव का वालिद उसमें नाम नहीं लिखा सकता। मैं चाहता हूँ कि उसका नाम उसमें भी लिखा जाये।"

"तो आप लिखा दीजिये।"

"उसे कहो कि अपना नाम बदल ले। उसका नाम है विजय। वह अपना नाम वज़ीरुद्दीन रख ले। तब उसका नाम हमारे रजिस्टर में हो जायेगा।"

"इससे फायदा क्या होगा ?"

"फायदा तो है। वह दुनिया की एक तरक्कीयाफ्ता जमायत में शामिल हो जायेगा।"

"मतलब आपकी जमायत में ? वह तो एम० ए० पास किये हुए हैं और आप कहते हैं कि आप मैट्रिक फेल हैं।"

"पर मेरी जमायत में दुनिया में चालीस करोड़ से ऊपर लोग हैं।"

"हाँ, यह तो ठीक है कि उनकी जमायत में बहुत कम लोग हैं। उनका खयाल है कि हिन्दुस्तान में कुछ हज़ार ही हैं।"

"तभी तो कह रहा हूँ। मगर हिन्दू तो पिछली मर्दम-शुमारी में पच्चीस करोड़ थे।"

"मगर वे तो आर्य हैं। मेरा मतलब है इस्लाह-शुदा नेक आदमी।"

"तुम बार-बार वही बात कहती हो। मैं कह रहा हूँ कि उसे कहो, इस्लाम कबूल कर ले।"

"अब्बाजान ! वे नहीं मानेंगे।"

---

१. मतदाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"यह तो वही बता सकते हैं। मैं अपने मुँह से वह तारीफ की बात नहीं कह सकती, जो वे कहा करते हैं।"

"तुम तारीफ की बात क्यों नहीं कह सकतीं ?"

"मैं एक मुसलमान की बेटी होते हुए, वे अल्फाज़ अपनी ज़बान से नहीं निकाल सकती।"

इस लम्बे वार्तालाप में चाय का समय हो गया था। ज़रीना ने याद दिलाया, "तबस्सुम ! चाय नहीं लोगी ?"

"अम्मी ! पिलाओगी तो पियूँगी।"

"तो चलो, ड्रायंग-रूम में चलें।"

इस पर खानबहादुर बोल उठे, "पर बात तो खतम हुई नहीं।"

उत्तर ज़रीना ने दिया, "बकाया बात कल कर लेंगे।"

: ८ :

ड्रायंग-रूम में मरियम उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने तबस्सुम को देख मुस्कराते हुए पूछा, "तबस्सुम ! कुछ बहुत अच्छी खबर लायी मालूम होती हो ?"

"क्यो तबस्सुम ! कुछ है खबर ?" ज़रीना ने बात बदलने के लिये पूछ लिया।

"कैसी खबर अम्मी ?"

"तुम्हारा बच्चा अब डेढ़ साल का हो गया है।" मरियम ने कहा।

"ओह ! तो यह बात है ? पर अम्मी, मैं समझती हूँ कि इतनी जल्दी नहीं।"

"क्यों ?"

"हमने यही फैसला किया है और इसके लिये कोशिश कर रहे हैं।"

"क्या कोशिश कर रहे हैं ?"

"अम्मी ! यह बात बताने की नहीं है, समझने की है।"

चाय पीते हुए इधर-उधर की बातें होती रहीं। चाय समाप्त कर अभी वे बातें कर ही रहे थे कि विजय आ गया। खानबहादुर उसे देख प्रसन्न हो गये और उसका स्वागत करते हुए बोले, "आओ, विजय साहब ! बताओ, चाय लोगे ?"

विजय ने बैठते हुए कहा, "मैं डर रहा था कि क्या बात है जो अम्मी के सरस्वती के नाम फौरन हाज़िर होने के वारण्ट आ गये हैं। अम्मीजान, सब राज़ी-बाज़ी तो हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, बेटा ! सब ठीक है। तुम्हारे अब्बाजान को तबस्सुम से कुछ काम था। इसीलिये बुलाया था।"

"तो काम हो गया है ?"

"काम की बात हुई है, मगर अभी फैसला नहीं हुआ।"

"तो मैं जल्दी आ गया हूँ क्या ?"

"नहीं, ठीक वक्त पर आये हो। बात आपके फैसला करने के लिये ही रुक गयी थी।"

विजय प्रश्न-भरी दृष्टि में खानबहादुर और सरस्वती की ओर देखने लगा। खानबहादुर तो इस कारण चुप कर गये थे कि आगे बात ज़रीना अथवा उसकी लड़की चलायेगी। जब वे सब मौन रहे तो विजय ने ज़रीना से पूछ लिया, "अम्मी जान ! क्या बात है जो मेरे करने के लिये आपने तजवीज़ की है ?"

उत्तर सरस्वती ने दिया और उसने इस कड़वी बात को शक्कर में लपेट कर कहने का यत्न किया। उसने कहा, "अब्बाजान विलायत से एक बात सीख कर आये हैं। वह यह कि इस्लाम की तरक्की के लिये हिन्दुस्तान में मुस्लिम राय दहिन्दगान के रजिस्टर में ज़्यादा-से-ज़्यादा नाम लिखाये जायें। इसलिये ये चाहते हैं कि हम भी अपना नाम उसी रजिस्टर में लिखवा दें।"

"बात तो ठीक है।" विजय ने मुस्कराते हुए कहा, "मगर हैरानी है कि इसके सीखने के लिये अब्बाजान को विलायत तक का सफर करना पड़ा है। यह बात हम यहाँ ही सीख गये हैं। एक दिन मेरे पास आ जाते तो मैं आपको दस मिनट में यह बात अच्छी तरह जेह्न-नशीं करा देता। कितना रुपया खर्च करना पड़ा है अब्बाजान, इस मामूली-सी बात को सीखने में ?"

"रुपये की बात छोड़ो।" खानबहादुर ने मन-ही-मन अपनी लड़की का धन्यवाद किया। उसने सबसे कठिन बात कह दी थी। अब बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए वे बोले, "देखो अज़ीज़ ! मैं विलायत तो किसी दूसरे मतलब से गया था। यह बात फोकट में ही पता चल गयी है। अगर तुमने इसको यहाँ रहते हुए महसूस किया है तो बताओ कि तुम्हारे दिल में इसका क्या 'रिऐक्शन' हुआ है ?"

"अब्बाजान ! इस बात को समझ कर दिल धड़कने लगा है और दिल की धड़कन के बाद अब्बाजान को यह कहते सुन कि हम भी अपना नाम इस रजिस्टर में लिखवा दें, दिल बैठने लगा है।"

"इसमें दिल बैठने की क्या बात है ?"

"बात यह है कि मैंने अभी तक सरकारी नौकरी करने को ठीक नहीं समझा। एक वक्त पिता जी को भी बम्बई विश्वविद्यालय में नौकरी मिलने का प्रस्ताव हुआ था। उन्होंने उसे मन्जूर नहीं किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब वसा ही प्रस्ताव अब्बाजान को करते देख, दिल बैठने लगा है।"

"मगर विजय बाबू ! राय दहिन्दगान के रजिस्टर में नाम लिखाना नौकरी है क्या ?"

"बिलकुल। तभी तो आप इन्सानों के रजिस्टर से नाम निकाल, मुसलमानों के रजिस्टर में लिखवा रहे हैं और अब आप नौकरी हलाल करने के लिये वही बात जो सरकार इस रजिस्टर को खोल कर करना चाहती है, कर रहे हैं। मतलब यह कि आप इस रजिस्टर में दूसरों को भरती कर रहे हैं।"

खानबहादुर इस दलील को समझे नहीं और बात को समझने के लिये एक-दो क्षण तक विजय का मुख देख पूछने लगे, "नौकरी तो तब होती है, जब तनख्वाह मिले। मैं तो तनख्वाहदार नहीं हूँ।"

"इस रजिस्टर को खोल कर सरकार ने हिन्दुस्तान के सब मुसलमानों को बिना तनख्वाह के नौकर रख लिया है। अभी तो सब मुसलमान इस नौकरी के योग्य काम सीखे नहीं और अब्बाजान विलायत से सीख आये हैं।

"अब्बाजान ! जानते हैं कि सरकार हिन्दुस्तान के पाँच करोड़ मुसलमानों को नौकर रख कर क्या करना चाहती है ?"

"क्या करना चाहती है ?"

"हिन्दुओं का कत्ले-आम कर, यहाँ पर इस्लामी हकूमत कायम करना।"

"इससे सरकार को क्या मिलेगा ?"

"हिन्दुस्तान जैसा बड़ा मुल्क अरब और मिश्र जैसे जाहिलों का मुल्क बन जायेगा और फिर युरोपीय जातियाँ विशेष रूप में अंग्रेज, इसका भी उसी प्रकार 'ऐक्सप्लायटेशन'[1] करेंगी, जैसे मध्य-पूर्व के देशों का कर रही हैं।"

"तुम्हारी बात मैं समझा नहीं।"

"समझने के लिये कुछ इतिहास को पढ़ने और समझने की ज़रूरत है। मिश्र, यूनान, ईरान, अरब और कुछ अन्य इस्लामी देश हैं। सब-के-सब इस वक्त युरोपीय देशों के अँगूठे के नीचे हैं और वे वहाँ की प्राकृतिक सम्पत्ति को लूट कर अपने मुल्कों में लगा रहे हैं। यह क्यों हुआ है ? एक वक्त था कि ये देश युरोप और एशिया में उन्नत देश माने जाते थे और अब ये जहालत के गड्ढे में गिरे हुए हैं। उनकी यह अवस्था बहुत सीमा तक इस्लाम की वजह से है।"

"मगर वे मुमालिक हिन्दुस्तान की तरह गुलाम मुल्क नहीं हैं और हम समझते हैं कि हिन्दुस्तान भी जब इस्लामी मुल्क बन जायेगा तो गुलाम नहीं रहेगा।"

---

१. शोषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बाजान ! अगर वे देश अभी तक आज़ाद हैं तो इसलिये नहीं कि वहाँ इस्लाम फैल रहा है। इस्लाम तो एक लबादा है, जिसको ओढ़ने पर इन्सान अन्धेरे में चला जाता है। वहाँ की आज़ादी युरोप के परस्पर झगड़ों के कारण है। वे झगड़े हिन्दुस्तान में भी फ्रांस और इंगलैण्ड के रूप में आये थे, मगर फ्रांस के पास समुद्री शक्ति इंगलैण्ड से कम होने के कारण वह मुकाबले पर खड़ा नहीं रह सका।

"युरोप के आपस के झगड़े यहाँ नहीं रहे तो हम गुलाम हो गये हैं। इसमें वजह है यहाँ इस्लाम की मौजूदगी।"

"और इस्लाम यहाँ क्यों आ सका था ?"

"इसमें दो कारण हुए थे। एक तो इस्लाम जैसा ही एक लबादा यहाँ भी तैयार कर लोगों को ओढ़ा दिया गया था। यह लबादा अकर्मण्यवाद और जगत् मिथ्यावाद का था। दूसरा कारण था वैष्णव मत। यह अवतारवाद अर्थात् ईश्वर पर सीमा से अधिक भरोसा करने का था।

"इस पर भी अंग्रेज़ी राज्य तो यहाँ मुसलमानों की मौजूदगी की वजह से है। अंग्रेज़ यह समझ गया है कि हिन्दुस्तान पर शंकर मतानुयायियों और वैष्णवों के लबादे तो हट रहे हैं और उनके हटने से पूर्व इस मुल्क पर इस्लामी लबादा ओढ़ा दिया जाये तो उनका राज्य अधिक काल तक चल सकेगा।"

खानबहादुर समझ तो रहे थे कि विजय के कथन में बहुत सीमा तक सच्चाई है, मगर एक और बात थी जिससे प्रेरित हो, वे अपने इस्लाम को तरक्की देने के लिये लालायित हो रहे थे।

वह वास्तविक बात तो वे बता नहीं सके। इस कारण उन्होंने कह दिया, "नहीं विजय ! तुम्हारा तवारीख का इल्म नाकस है। इसी वजह से तुम गलत नतायज निकाल रहे हो। देखो, मैं अपनी और तुम सबकी आकबत[1] सुधारने के लिये ही फिक्रमन्द हूँ।"

अब सरस्वती ने अपने पति की बातों से उत्साहित हो पूछ लिया, "अब्बा-जान ! यह आकबत का खयाल भी क्या विलायत में पढ़ाया जाता है ?"

"नहीं। यह तो अपने कुछ रहनुमा लीडर लन्दन में मौजूद थे और यह मैं उनकी सोहबत से सीख आया हूँ।"

"वे कौन-कौन लोग हैं ?"

"नाम बताने की ज़रूरत नहीं। वहाँ के सैवाय होटल में उनकी मीटिंग हर शनिश्चर के दिन हुआ करती थी। यह बात वहाँ पर सीखी है। मैं तो नमाज़ भूल चुका था और वहाँ पर नमाज़ अदा होती थी और मेरे दिमाग में

---

१. भविष्य जीवन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमाज़ फिर तरोताज़ा हो गयी है।"

"तो अब्बाजान ! आप इन्सान से लौट कर फिर मुसलमान हो गये हैं ?"

"लौट कर का क्या मतलब है ?"

"आप एक मुसलमान वालदैन के घर पर पैदा हुए थे। इसलिये आप मुसलमान थे और बड़े होकर इन्सान बन गये थे। पीछे अब फिर मुसलमान हो गये हैं।"

"तो यह इन्सान से कुछ अच्छी बात नहीं है ?"

"मैंने अच्छी-बुरी की बात नहीं कही। मैं तो एक हकीकत बता रही हूँ। इन्सान एक सफेद चादर है और इस्लाम और दूसरे मजहब मुख्तलिफ रंग हैं। आपने अपनी इन्सानी चादर पर हरा रंग चढ़ा दिया है और उस पर 'हलाल' का निशान बना लिया है।"

"तो तुम अपने नाम मुसलमानों के रजिस्टर में नहीं लिखवा रहे ?"

"अब्बाजान ! उसमें अभी देर है। अभी पिछले साल ही तो मर्दम-शुमारी हुई है। अगली मर्दम-शुमारी सन् १९२१ में होगी। तब तक आपकी तजवीज़ पर गौर कर लेंगे। रही बात मतदाता सूची में नाम लिखवाने की। वह तो अभी भी दर्ज है, लेकिन इन्सानों की सूची में है। हरे रंग की सूची में नहीं। मुझे सफेद रंग ज़्यादा पसन्द है। सायंस वाले कहते हैं कि सफेद रंग में इन्द्र-धनुष के सातों-के-सातों रंग शामिल हैं।"

खान साहब कुछ देर तक तबस्सुम की बात पर विचार करते रहे और फिर बोले, "हाँ; सायंसदान कहते तो यही हैं। मगर सर आगा खान यह कहते थे कि यह बात ठीक नहीं। उन्होंने बताया नहीं कि यह ठीक क्यों नहीं ?"

"यह ठीक है कि सफेद रंग में सब रंग शामिल हैं। एक रंग में रंगे जाने से शेष छः रंगों को ज़ायल कर देना पड़ेगा। यह तो घाटे का काम होगा।"

"समझता तो मैं भी यही था। मगर......।"

"अच्छा, अब्बाजान !" विजय ने कह दिया, "अब हमें इजाज़त दीजिये। घर पर माता जी और पिता जी चिन्ता कर रहे होंगे। सरस्वती के एकाएक बुलाये जाने पर सब यही फिकर कर रहे थे कि खैर-खैरीयत हो।"

विजय डर रहा था कि कहीं भगवे और हरे रंग में मुकाबला न होने लगे। इस मुकाबला करने से तो कटुता भी उत्पन्न हो सकती थी। यद्यपि पहले कई बार इस्लाम और वैदिक मत में मुकाबला हो चुका था, परन्तु तब खानबहादुर अपने को एक स्वतन्त्र विचार के इन्सान मानते थे और अब वे विलायत से हरे रंग में रंगे हुए लौटे थे।

लौटते हुए मार्ग में सरस्वती ने अपने पति से कहा, "अब्बाजान को यह क्या हो गया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं। वे एक सरल-चित्त इन्सान ही हैं। उनको सरल स्वभाव का इन्सान समझ किसी ने बरगला दिया है।"

"कुछ लॉर्ड सैलिसबरी की बात कह रहे थे।"

"कोई भी हो। देश में अंग्रेज़ ने अपनी तरंग को तेज़ करने के लिये इस्लाम की सुलगती आग को हवा देना आरम्भ कर दिया है और यह हिन्दुस्तान को तो फूंकेगी ही, साथ ही भूमण्डल-भर के लिये दुःख तथा दर्द का कारण होगी।"

: ९ :

बात यहाँ तक ही नहीं रही। इस घटना के कई दिन पीछे की बात है कि सरस्वती अपनी अम्मी से मिलने गयी तो उसने देखा कि उसकी अम्मी मध्याह्नोत्तर नमाज़ पढ़ रही है और वही पुरानी रीति से खड़े होकर और घुटने टेक कर।

सरस्वती को खानबहादुर की कोठी पर पहुँच पता चला कि वे तो मद्रास गये हुए हैं और ज़रीना नमाज़ अदा कर रही है। वह मरियम के कमरे में चली गयी। मरियम बैठी एक उपन्यास पढ़ रही थी।

"अम्मी!" सरस्वती ने कमरे के बाहर से ही आवाज़ दी। मरियम ने उसकी आवाज़ सुन उसे भीतर बुलाने के लिये कहा, "आओ, तबस्सुम! कहाँ रही हो इतने दिन?"

"बम्बई में ही थी अम्मी! अपने काम में मशगूल थी। कैटालीना ने अपना 'बॉम्बे न्यूज़' पुनः आरम्भ कर दिया है। पिता जी फिर सम्पादक का काम करने लगे हैं और मुझे उन्होंने अपने अखबार में काम पर लगा लिया है। वहाँ काम अधिक है और फुरसत कम रहती है।"

"और विजय के साप्ताहिक का क्या हुआ?"

"वह भी चलता है। उसमें अब ललिता और कमल जी की बहन राजेश्वरी काम करती हैं। पर यह अम्मी को क्या हो गया है कि फिर वही पुरानी नमाज़ और पुराने तरीके से पढ़ी जा रही है?"

"हाँ; तुम्हारे जाने के बाद घर में भारी झगड़ा हुआ था। खानबहादुर बहन ज़रीना को कहने लगे कि लड़की को मजबूर करना चाहिये कि वह इस्लाम में लौट आये। तुम्हारी अम्मी ने कहा था कि लड़की विलायत में पढ़ी हुई है। कालेज में प्रोफेसर रह चुकी है और अब उम्र से भी सज्ञान हो चुकी है। उसको मैं मजबूर नहीं कर सकती।

"इस पर खानबहादुर बोले, 'यदि वह तुम्हारा कहना नहीं मानती तो उससे तअल्लुकात तोड़ देने चाहियें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर तुम्हारी अम्मी चुप रहीं। खानबहादुर ने तुम्हारी अम्मी को चुप देख कह दिया, 'तुम खुद भी तो मुसलमान नहीं रहीं। तुम नमाज़ हज़रत बानी-उल-इस्लाम के कहे मुताबिक नहीं पढ़तीं।' खानबहादुर ने हुक्म दे दिया कि नमाज़ पुराने तरीके से पढ़ो और साथ दिन में पाँच बार पढ़ो। अब खानबहादुर भी दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करते हैं और अपनी मुसलमान बीवी से भी ऐसा करने पर इसरार करते हैं।"

"अम्मी! तुमको ऐसा करने पर इसरार नहीं करते?"

"नहीं। मैं तो मुसलमान हूँ नहीं। मैं ईसाई हूँ। मेरी उनसे यही शर्त है कि मैं शादी के बाद भी ईसाई ही रहूँगी। इसीलिये मैंने निकाह पढ़ाने के बाद भी अपना नाम नहीं बदला।"

"तब तो ठीक है।"

"नहीं, तबस्सुम! आजकल मज़हबी उन्माद ज़ोरों पर है और मुझे भी हुक्म हो चुका है कि मैं इस्लाम स्वीकार कर लूं, नहीं तो मुझे तलाक दे दिया जायेगा।"

सरस्वती अनुभव करने लगी थी कि खानबहादुर के मस्तिष्क में किसी कारण से भारी विस्फोट हुआ है। क्यों? वह समझ नहीं सकी। उसने परेशानी प्रकट करते हुए पूछा, "यह कैसे और क्यों हो रहा है?"

"मैं समझ गयी हूँ कि क्या हुआ है। लन्दन में कुछ मुसलमान नेताओं ने किसी प्रकार का षड्यन्त्र किया है और खानबहादुर को तीन वर्ष के लिये मुस्लिम लीग का सदर नियुक्त किया है। इस वक्त भी वे मद्रास मुस्लिम लीग के किसी प्रकार के इन्तज़ाम में गये हैं। इसका सालाना इजलास इस वर्ष मद्रास में होने वाला है।

"खानबहादुर की दूसरी मुसलमान बीवी इस वक्त इंगलैण्ड में है। मैं अभी नमाज़ पढ़ने के लिये मान नहीं रही और वे ज़रीना को बुर्का पहना अपने साथ ले जाने की तैयारी कर रहे हैं।"

इस समय ज़रीना नमाज़ खतम कर वहाँ आ गयी। उसे खिदमतगारिन ने बताया था कि तबस्सुम आयी है। ज़रीना को आया देख सरस्वती ने उठकर आदाब-अर्ज़ कर दी। छूटते ही ज़रीना ने कहा, "तबस्सुम! किसलिये आयी हो?"

"अम्मी! तुमसे मिले बहुत दिन हो गये थे। आज कुछ फुरसत हुई है तो मिलने चली आयी हूँ।"

"मेरा खयाल है कि फौरन चली जाओ। यहाँ के नौकर-चाकर मुझ पर जासूसी करते रहते हैं। वे खानबहादुर को बता देंगे कि तुम आयी थीं और मैं तुमसे मिली हूँ। इस पर तो फिर घर में तूफान खड़ा हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अम्मी ! मुझे यहाँ नहीं आना चाहिये ?"

"क्या करोगी यहाँ आकर ? यहाँ के कामों में अक्ल को दखल नहीं रहा ।"

"पर अम्मी ! क्या इस वेवक्त नमाज़ पढ़कर अक्ल को बुला रही हो ?" सरस्वती ने मुस्कराते हुए पूछा ।

"नमाज़ तो नौकर-चाकरों को दिखाने के लिये पढ़ रही थी और अक्ल को अपने सोने के कमरे में ही बुलाती रहती हूँ । जो कुछ वहाँ समझ में आता है वह बाहर आकर सब भूल जाती हूँ ।"

"क्यों ?" सरस्वती ने अम्मी के दिमाग में भी विकार की आशंका कर पूछ लिया ।

"मैं जान-बूझ कर तो भूलती नहीं । भूलना तो इस कोठो की हवा में है ।"

"पर मरियम अम्मी तो कुछ नहीं भूल रहीं ।"

"यह समझती ही कुछ नहीं तो भूलेंगी क्या ?"

"पर मैं तो समझती हूँ । मैं भूल भी नहीं रही ।" सरस्वती ने अपनी बात कह दी ।

"तुम भी भूल जाओगी । दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ो और फिर देखो कि जो कुछ दिमाग में है वह कहाँ चला जाता है ?"

"तो यह बात है !" सरस्वती ने कुछ-कुछ समझते हुए कहा, "अम्मी ! नमाज़ पढ़ती हो नौकर-चाकरों को दिखाने के लिये और फिर जो कुछ ध्यान-धारणा से समझ में आता है वह भूल जाती हो । यही कह रही हो न अम्मी ?"

"हाँ ।"

"तो अम्मी ! ऐसा करो । यह नमाज़ पढ़नी छोड़ दो । बहुत हो गयी नमाज़, अब मुसल्ला उठा दो ।"

"वे तलाक देने की धमकी दे रहे हैं ।"

"तो दे दें । फिर हक़-मेहर ले, अपने भाईयों के घर में चली जाना । आखिर वे रईस हैं । नवाब के भाई हैं । डर की क्या बात है ?"

"मन नहीं मानता ।"

"बताओ मरियम अम्मी ! तुम क्या कहती हो ?"

"मैं तो परमात्मा को मानती नहीं । इसलिये नमाज़ पढ़ूँगी नहीं । तलाक देंगे तो हक-मेहर जो लिखकर दिया हुआ है, लेकर विलायत चली जाऊँगी ।"

"कितना हक-मेहर तुमको कहा है ?"

"दस सहस्र पौण्ड ।"

ज़रीना मुख देखती रह गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने कुछ विचार कर एक योजना बता दी। उसने कहा, "दोनों अम्मियाँ एक राय होकर मनमानी करने लगो और अब्बाजान को कहो कि हक़-मेहर दे दें और तलाक दे दें।"

"वे तो दे देंगे।"

"नहीं अम्मी! वे नहीं देंगे। अब वे मुसलमानों के नेता बन रहे हैं, इस लिये वे अब घर पर झगड़ा नहीं करेंगे।"

अब मरियम बोल उठी, "यह तो मैं पहले ही कह रही हूँ, पर तुम्हारी अम्मी मानती ही नहीं हैं।"

"देखो अम्मी! तुमने न तो बुर्का पहनना और न ही बिना इच्छा के नमाज़ पढ़ना। कह देना कि यदि कुछ भी गड़बड़ की तो 'बॉम्बे न्यूज़' में मरियम मुस्लिम लीग के सदर के घर का चिट्ठा छपवा देंगी।"

"और मरियम छपवा देगी क्या?"

"हाँ, अगर एक बात मेरी मानो तो।"

"बताओ?"

"रात को उन्हें अपने बैंड-रूम में न घुसने देना।"

"तो वे एक चौथी शादी कर लेंगे।"

"तब मैं चिट्ठी छपवा दूँगी। इसमें तबस्सुम से मदद माँग लूंगी।"

"क्या मदद माँग लोगी?" ज़रीना ने पूछा।

"यही कि मुस्लिम लीग के प्रधान के चाल-चलन की बात छपवा दे।"

"मैं समझती हूँ कि यहाँ तक की नौबत ही नहीं आयेगी।" सरस्वती ने अपना अनुमान बताया।

"मगर आयी तो तुम्हें हमारी हिमायत करनी ही होगी।"

"अम्मी! तुम डरती क्यों हो? अदालत में जाने की ज़रा धमकी दे देना और बात ऐसे बनेगी कि ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं बनी।"

"पर वे यह समझेंगे कि तुम सिखा गयी हो।"

"तो फिर क्या होगा?"

"तुम्हारे खिलाफ हो जायेंगे।"

"नहीं होंगे अम्मी! मैं तो समझती हूँ कि मेरी खुशामद करेंगे।"

"पर एक बात तुम जानती नहीं। उनके पास भरा पिस्तौल रहता है। एक बार पहले इसका इस्तेमाल हो चुका है।"

"कब और किस पर?"

"तुम अभी बच्ची ही थीं। हम जूनागढ़ में थे। हमारे घर में एक फातिमा नाम की बाँदी थी। हज़रत उस पर ज़बर-ज़नाह करने लगे थे। वह नहीं मानी तो गोली मार दी और फिर उसकी लाश को चोरी-चोरी दफना दिया। कुछ लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यह कहते हैं कि उन्होंने पहले ज़नाहकारी की और पीछे गोली मार दी ।"

मरियम ने कहा, "मैं उनका पिस्तौल चोरी करवा दूंगी ।"

"कैसे ?"

"यह कुछ भी मुश्किल नहीं ।"

ज़रीना मुख देखती रह गयी ।

यह ठीक था कि खानबहादुर नसीरुद्दीन तैयब जी ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग के प्रेज़िडैण्ट निर्वाचित हुए थे और वे अपने को एक पक्के तथा पाकीज़ा मुसलमान प्रकट करने का यत्न करते रहते थे। उनका अपनी पत्नियों से व्यवहार भी इसी विचाराधीन बन रहा था । तबस्सुम से भी उनका यह कहना कि वह अपने को मुसलमान प्रकट करे, इसी विचार से था । यह भी मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी में फ़ैसला हुआ था कि मुल्क में मुसलमानों की सियासी हालत मज़बूत करने के लिये मुसलमानों की संख्या बढ़ानी चाहिये ।

सरस्वती खानबहादुर के घर में बगावत का बीज बो गयी और जब वे मद्रास से लौटे तो घर की अवस्था बदल चुकी थी । ज़रीना ने पुनः पलथी मार कर नमाज़ पढ़नी आरम्भ कर दी थी । खानबहादुर मरियम के कमरे में सोये थे और जब अगले दिन सोकर उठे तो मरियम अभी भी गहरी नींद सो रही थी ।

खानबहादुर नाइट-सूट में ही ज़रीना के कमरे में गये तो वह पलथी मारे और समीप ही बत्तीदान में बीस अगरबत्तियाँ जलाये हुए बैठी थी । कमरा सुगन्धि से भरा हुआ था ।

उसे इस प्रकार बैठे देखा तो खान साहब का खून खौल उठा । यह इस-लिये नहीं था कि ज़रीना के व्यवहार से किसी प्रकार हानि हो रही दिखायी दी थी । उनकी नाराज़गी इस बात पर थी कि उनकी आज्ञा की अवज्ञा की गयी थी । बहुत कोशिश करने पर भी वे चुप नहीं रह सके । वे नहीं चाहते थे कि कोई नौकर-नौकरानी हल्ला सुन पाये कि एक मुसलमान नेता की बीवी हिन्दू हो गयी है; यदि कोई उसे इस हालत में देख लेगा तो बात कोठी के बाहर भी जा सकती है और उनकी भारी बदनामी भी हो सकती है ।

इस कारण उन्होंने कमरे का दरवाज़ा भीतर से बन्द कर दिया और इतनी ऊँची आवाज़ से, जिसे कमरे के बाहर खड़ा कोई सुन न सके, बोले, "बेगम ! यह फिर वही बात शुरू कर दी है ?"

ज़रीना ने दरवाज़ा बन्द होता सुन, आँखें खोल दी थीं और खानबहादुर के कहने की प्रतीक्षा में थी । खानबहादुर लाल-पीले हो रहे थे । ज़रीना ने कहा, "तशरीफ रखिये ।"

"पर मैं पूछ रहा हूँ यह कुफ्र फिर दिमाग खराब करने लगा है ?"

"मुझे यह बताइये कि इससे आपको किसी किस्म की तकलीफ हो रही है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर खानबहादुर मैं हूँ या तुम हो ?"

"खानबहादुर तो आप ही हैं। मैं तो अपने को आपकी बीवी ही समझती हूँ।"

"तो मेरा हुक्म क्यों नहीं मानतीं ?"

"क्या हुक्म दिया है आपने जो मैं नहीं मान रही ?"

"इन्सानों की तरह नमाज़ अदा किया करो।"

"मेरी कमर में दर्द हो रहा है और खड़ा होने पर तकलीफ होती है और तवज्जो खुदा की तरफ नहीं लग सकती।"

"यह ठीक बहाना है। बहुत होशियार हो गयी हो। भला कैसे पता चले कि दर्द है ?"

"यह मैं कैसे बता सकती हूँ ! बस मान लीजिये कि मैं हकीकत-बयान कर रही हूँ।"

"पर दरवाजा तो बन्द कर के यह कुफ्र छाँटना था और फिर ये अगर-बत्ती ! जानती हो इसके बाद क्या हो सकता है ?"

"क्या हो सकता है ?"

"आज अगरबत्ती जलायी हैं तो कल घी का दिया जलाओगी। फिर कोई खूबसूरत-सा खिलौना सामने रख, उसकी पूजा शुरू कर दोगी।"

"अभी तो नहीं हुई। जब होगी तो मना कर दीजियेगा।"

"और अगर नौकरों ने देख लिया तो सब दुनिया को पता चल जायेगा कि एक दीनदार की बीवी काफिर और बुत-परस्त हो गयी है।"

"पर होगी तो यह बात गलत। न तो मैं बुर-परस्त हो रही हूँ और न ही दीन-ईमान छोड़ रही हूँ।"

"बदनामी तो हो जायेगी।"

"उससे कम होगी, जितनी इस बात के पता चल जाने से होगी कि आँ हज़रत पोर्क······।"

खानबहादुर समझ रहे थे कि क्या कहने वाली है उनकी पत्नी और उसका मुख वन्द करने के लिये उन्होंने झट से मुख पर एक चपत लगा दी। एक बार पहले भी उन्होंने चपत लगायी थी, परन्तु उस समय इससे उलट बात हुई थी। यह विलायत के एक होटल में ठहरे हुए की घटना है। आँ हज़रत पोर्क खाकर आये थे और उसके स्वाद की महिमा गान कर रहे थे। ज़रीना ने कह दिया था, "यह खाकर तो आप पलीत हो गये हैं। इतनी गन्दी चीज़ खाने से आप दोज़ख के दरवाज़े पर पहुँच गये हैं।"

उस समय भी खानबहादुर को क्रोध आ गया था और उन्होंने बीवी का मुख बन्द करने के लिये चपत लगा दी थी और कह दिया था, "यह है दोज़ख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मज़ा। मैं दोज़ख में जाता हूँ तो तुम यहाँ कैसे रह जाओगी ?"

यह बात पन्द्रह वर्ष पहले की थी। तब से हालात बदल गये थे। परन्तु हवा का रुख तो खानबहादुर के इस बार विलायत से लौटने पर बदला था। अब वे पोर्क के स्थान, बीफ खाने में फख्र समझने लगे थे। जब उनके घर में कोई मेहमान आता था, तो किचन में 'बीफ' पकता था और वे फख्र से कहते थे कि यह बहुत लज़ीज़ बना है।

आज पन्द्रह वर्ष के उपरान्त मुख पर चपत लगी तो वह समझ गयी कि मस्तिष्क में वही विकार उत्पन्न हो रहा है जो कभी पहले था। यह मनमानी करने और अपने मातहतों से कराने का स्वभाव था। तब पोर्क खाने से मना करने पर नाराज़गी थी और अब खाने का प्रकट करने पर गिला था और दोनों हालतों में नतीजा मुख पर चपत थी।

"यह क्या कर दिया है हज़रत ?"

"तुम्हें बकवास करने से रोका है।"

"मगर आपने ऐसा काम किया ही क्यों था जिसकी बाबत बकवास हो सके ?"

"बस अब चुप रहो। बहुत हल्ला मत करो। मैं खाविन्द हूँ। मैं तुम्हें हलाक भी कर सकता हूँ।"

"मगर मैं एक बाँदी नहीं हूँ जिसके लबाकीन के मुख को चाँदी के टुकड़ों से बन्द कर सकेंगे।"

इस पर तो पहले से भी ज़ोर की चपत दूसरी गाल पर लग गयी। अब ज़रीना उठ पड़ी और बोली, "चले जाइये यहाँ से। वरना बहुत बुरा होगा।" इस बार ज़रीना ने क्रोध में कुछ ऊँची आवाज़ में कहा था।

खानबहादुर बोले, "मैं तुम्हारा काम तो आज ही तमाम कर देता हूँ।"

खानबहादुर क्रोध में कमरे से निकल गये और अपने कमरे में जा, अपनी मेज़ के दराज़ में से पिस्तौल देखने लगे। वह वहाँ नहीं थी। उन्होंने विचार किया तो उन्हें स्मरण आ गया कि पिस्तौल वे अपने साथ मद्रास ले गये थे और वहाँ से लौटते ही वह मरियम के कमरे में गये थे। अतः क्रोध में वे मरियम के कमरे में जा पहुँचे। उनका कोट, पतलून आदि दिन के पहनने के कपड़े वहीं रखे थे। वे कोट को उठा उसके अन्दर की जेब देखने लगे। पिस्तौल वहाँ भी नहीं था।

मरियम अभी भी सो रही थी। खानबहादुर ने उसे आवाज़ दी, "बेगम! बेगम!!"

मरियम ने आँखें खोलीं और अलसायी आँखों से अपने खाविन्द की ओर देख पूछने लगी, "बहुत मज़े की नींद आ रही थी। क्या बात है ?"

"मेरा पिस्तौल था यहाँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहाँ ?"

"मेरे कोट के अन्दर की जेब में था।"

"तो अब वहाँ नहीं है क्या ?"

खानबहादुर कोट को एक हाथ में पकड़, दूसरे हाथ से टटोल रहे थे।

"कहीं सफर में ही खो आये मालूम होते हैं।" मरियम ने कह दिया।

"मेरा खयाल है कि रात कोट उतारने के वक्त तो इसमें था।"

"तो आपका मतलब है कि कोई चोर रात के वक्त यहाँ आया है ? यह कैसे हो सकता है ?"

खानबहादुर कुछ विचार कर खाने के कमरे में चले गये। फिर ड्रायंग-रूम में गये। पुन: अपने पढ़ने के कमरे में चले आये।

: १० :

मरियम और ज़रीना दोनों इकट्ठी खाने के कमरे में प्रात: का अल्पाहार लेने पहुँचीं। खानबहादुर वहाँ पहले ही उपस्थित थे। ज़रीना ने सिर और गाल पर कपड़ा लपेटा हुआ था। खानबहादुर ने देखा तो समझ गये कि चपत अधिक ज़ोर से लग गयी है, परन्तु इस समय उनको चिन्ता थी अपने पिस्तौल की। उन्होंने ज़रीना की पट्टी की बात पूछने के स्थान, अपनी बात कह दी।

"मरियम ! पिस्तौल नहीं मिला।"

"तो पुलिस में रिपोर्ट लिखा दीजिये।"

"मैं खुद घर की तलाशी लेने का इरादा रखता हूँ। मैंने कोठी के चौकीदार को कह दिया है कि मेरा पिस्तौल चोरी चला गया है और कोई कोठी से निकले नहीं, जब तक मैं इजाज़त न दूँ।"

"तो यहाँ बैठे क्या कर रहे हैं ? चलिये तलाशी ले लें।"

"तुम तलाशी लोगी ?"

"तो न लूँ ?"

"पहले खाना खा लो।"

"ज़रीना बहन का दाँत दर्द कर रहा है। यह खाना नहीं खा सकती। इनसे हमदर्दी में मैं भी नहीं खाऊँगी।"

"ओह ! क्या हुआ है इसको ?"

"इनके खाविन्द का दिमाग खराब हो गया है और उन्होंने इसको पीटा है।"

"कैसे कहती हो कि उनका दिमाग खराब हो गया है ?"

"इसलिये कि इतनी नाजुक और सुन्दर बीवी को कौन सही दिमाग आदमी पीट सकता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अगर बीवी ने कुछ खराबी की हो तो क्या हो ?"

"तो खाविन्द को चाहिये कि मुहब्बत-प्यार से उसे वह खराब बात करने से मना करे।"

"और अगर वह प्यार से न माने तो ?"

"तो उसको मनमानी करने दी जानी चाहिये। भला एक कमज़ोर औरत क्या ख़राबी कर सकती है ?"

"वह मकान को आग लगा सकती है।"

"तब तो पीटने के स्थान, उसके हाथ-पाँव बाँधने ज़्यादा ठीक रहते। आग तो वह अब भी लगा सकेगी।"

"अच्छी बात है। हम इसके खाविन्द से कहेंगे कि वह आज रात इससे प्यार कर, इसे राज़ी कर ले।"

"ठीक है। अभी तो यह अपने कमरे में बैठ, गाल पर सेंक करना चाहती है।"

"तो इसे कहो कि यह गर्म-गर्म दूध पी ले।"

"यह दूध पी आयी है।"

"और तुम ?"

"मैं फाका करूँगी।"

"क्यों ?"

"जिससे कहीं मेरा खाविन्द कभी मुझे पीटे तो यह मुझसे हमदर्दी दिखा सके।"

"ओह ! तो यह बात है। मतलब यह कि दोनों में किसी किस्म की साज़िश हो रही है ?"

जब दोनों बीवियों ने खाने से इन्कार किया तो खानबहादुर भी खाना छोड़, घर की तलाशी लेने के लिये चल पड़े। चौकीदार और घर की दोनों नौकरानियों को साथ ले..र ज़रीना के कमरे से तलाशी आरम्भ की और घर तथा घर के बाहर नौकरों के रहने के स्थान तथा गाड़ी और घोड़े का अस्तबल, सब देख डाले गये। जब पिस्तौल नहीं मिला तो खान साहब ने पुलिस में रिपोर्ट लिख कर भेज दी। सूचना मिलते ही एक हेड-कॉन्स्टेबल जाँच करने आया। उसने खानबहादुर के बयान लिये। खानबहादुर ने बताया कि उन्होंने अपनी पूर्ण कोठी की तलाशी ली है और पिस्तौल नहीं मिला।

हेड-कॉन्स्टेबल ने बयान लिख लिये और नीचे लिख दिया कि रेलगाड़ी में चोरी हुई मालूम होती है।

दिन-भर खाना-पीना अपने-अपने कमरे में हुआ। खानबहादुर ने मध्याह्न के भोजन के समय अपनी बीवियों को कहा भी कि अब बहुत भूख लग रही है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना खा लेना चाहिये। परन्तु बीवियों ने उनके साथ बैठकर खाना खाने से इन्कार कर दिया। विवश खानबहादुर ने भी खाना अपने कमरे में खाया। मध्याह्नोत्तर चाय खानबहादुर ने अपने किसी दोस्त के साथ 'ताजमहल' होटल में जाकर ली और मरियम तथा ज़रीना ने इकट्ठे ज़रीना के कमरे में बैठ, ले ली।

रात के समय भी स्थिति पूर्ववत् रही। खानबहादुर तथा दोनों पत्नियों ने अपने-अपने कमरे में खाना खाया और सोने की तैयारी कर दी। मरियम ने अपना कमरा भीतर से बन्द कर लिया। खानबहादुर जब ज़रीना के कमरे में जाने लगे तो वह भी द्वार भीतर से बन्द कर रही थी। खानबहादुर द्वार बन्द होता देख कर द्वार में जा खड़े हुए।

ज़रीना ने पूछा, "क्या बात है, किसलिये आये हैं ?"

"मैं सुबह की पिटाई के बदले में प्यार देने आया हूँ।"

"मेरा मुख अभी भी दर्द कर रहा है।"

"वह दर्द भूल जाओगी।"

"आप आज मरियम के पास चले जाइये।"

"उसने द्वार भीतर से बन्द कर लिया है।"

"चलिये, मैं द्वार खुलवा देती हूँ।"

खानबहादुर ने कुछ विचार कर कहा, "तो उसको अपने कमरे में बुला लो। उसे मेरा यहाँ आना नहीं बताना, नहीं तो वह नहीं आयेगी।"

"अच्छी बात है।" इतना कह ज़रीना मरियम के कमरे के बाहर जा उसका द्वार खटखटाने लगी। मरियम ने पूछा, "कौन है ?"

"ज़रीना हूँ। ज़रा दरवाज़ा खोलो।"

मरियम ने समझा कि फिर मार-पिटाई होने की सम्भावना से ज़रीना भाग आयी है। इस कारण उसने द्वार खोल दिया और पूछा, "क्या बात है ?"

उत्तर देने के स्थान, ज़रीना कमरे में प्रविष्ट हो गई और उसने कमरे का द्वार पुनः भीतर से बन्द कर लिया।

"क्या बात है ?" मरियम ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

"मैं तुमको अपने कमरे में ले चलने के लिये भेजी गयी हूँ और मैंने यह ठीक समझा है कि तुम्हारे कमरे में ही सो जाऊँ।"

मरियम हँस पड़ी। हँसते हुए पूछने लगी, "और खानबहादुर ?"

"वे सो जायेंगे। कुछ देर प्रतीक्षा करेंगे, परन्तु मेरा चित्त नहीं किया कि उनकी सोहबत स्वीकार करूँ।"

"बहुत खूब !"

खानबहादुर दस मिनट तक प्रतीक्षा कर मरियम के कमरे के बाहर आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरे-धीरे द्वार को खटखटाने लगे । भीतर से आवाज़ मरियम ने दी । उसने पूछ लिया, "कौन ?"

"मैं हूँ ।" खानबहादुर बोले ।

"आप अब सो जाइये । मैं ज़रीना बहन के मुख पर सेंक कर रही हूँ ।"

"बेगम ! मैं भी इसमें मदद कर सकता हूँ ।"

"जी नहीं । आप अब जाकर सो रहें । मैं अकेली ही निपट लूंगी ।"

"यह तो बहुत बुरा होगा ।"

भीतर से कोई उत्तर नहीं आया ।

बहुत सुबह ज़रीना अपने कमरे में चली गयी और स्नानादि से निवृत्त हो खुदा की इबादत में लग गयी । खानबहादुर साहब तो पत्नियों के विद्रोह का कारण नहीं समझ सके और परेशानी अनुभव करते हुए रात दो बजे तक सो नहीं सके थे । दो बजे के बाद वे सोये तो अभी उठे नहीं थे ।

बहुत दिन चढ़ने तक भी वे उठ नहीं सके । नौकरानी रसूलन 'बैड टी' लाया करते थी और वह जानती थी कि मालिक किसी-न-किसी बेगम के कमरे में सोया करते हैं । इस दिन वह चाय के तीन प्याले लेकर आयी । उस समय तक ज़रीना नमाज़ अदा कर चुकी थी और लड़की तबस्सुम के कहने के अनुसार नमाज़ के उपरान्त चिन्तन कर रही थी ।

नौकरानी रसूलन पिछले दिन की बात देख चुकी थी । उसने भी बड़ी बेगम का मुख सूजा हुआ और उसे कपड़ा गरम कर मुख पर सेंक करते देखा था और उसका मतलब अपनी बुद्धि से लगाया था । आज वह एक प्याला मरियम बेगम को दे आयी थी और अब ज़रीना के कमरे में आयी थी । ज़रीना नमाज़ के लिये बिछायी चटाई पर बैठी थी । कमरे में प्रवेश करते हुए खादिमा ने पूछ लिया, "बेगम साहिबा ! खानबहादुर कहाँ हैं ? रात तो यहीं थे ?"

"अपने कमरे में होंगे ।"

"क्यों ?"

"कुछ खास बात नहीं । खुदा की मेहर है । खुशी-खुर्रम हैं ।"

ज़रीना ने एक प्याला ट्रे में से उठा लिया और खादिमा खानबहादुर के कमरे में जा पहुँची । कमरे का दरवाज़ा भीतर से बन्द था । खादिमा ने दरवाज़ा धकेल कर खोलना चाहा, परन्तु भीतर से चिटकनी चढ़ी हुई थी ।

खादिमा एक घण्टे के बाद आयी । दरवाज़ा अभी भी बन्द था । वह मरियम बेगम के कमरे में गयी और उसे अँगड़ाईयाँ ले, सुस्ती निकालते देख पूछने लगी, "बेगम साहिबा ! खानबहादुर भीतर से कमरा बन्द किये हुए हैं ?"

"तो क्या हुआ ? अभी सो रहे होंगे ।"

"पर हुज़ूर......।" वह कहती-कहती रुक गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरियम ने उसे चुप करते देखा तो पूछ लिया, "हाँ, क्या कह रही थीं ? बताओ, रसूलन ?"

"हुज़ूर ! कहीं दुश्मनों की तबीयत अलील न हो ?"

"जाओ, दरवाज़ा खटखटा कर देखो बोलते हैं या नहीं ?"

रसूलन इस हुक्म से साहस पकड़ खानबहादुर के कमरे का दरवाज़ा खट-खटाने लगी। खानबहादुर अभी सो रहे थे। उनको जगाया जाना पसन्द नहीं आया। यह समझ कि बीवियों में से कोई होगी, क्रोध में बोले, "क्या चाहती हो ?"

"हजूर, चाय ?" रसूलन ने डर से काँपते हुए कहा।

"रसूलन हो ?"

"जी।"

"तो ले आओ चाय।"

रसूलन भागी-भागी गयी। खानबहादुर ने दरवाज़ा खोल दिया और चाय की इन्तज़ार करने लगे।

दो मिनट में ट्रे पर एक प्याला चाय लेकर वह आ गयी। चाय का प्याला पेश करते हुए खादिमा ने पूछ लिया, "हजूर ! क्या बात है आज ? दस साल से खिदमत में हूँ और आज पहला दिन है······।"

"हाँ; बेगमें नाराज़ हो रही हैं।"

"इसका तो सहज ही इलाज है।"

"क्या ?"

"अभी एक शादी की और गुंजाइश है।"

"अब एक बूढ़े के साथ कौन शादी करेगा ?"

"पर आपको कौन बूढ़ा हो गया कहता है ?"

"तो तुम मुझसे शादी करोगी ?"

"हजूर ! मेरी तो शादी हुए अर्सा हो चुका है और मैं अपने घर में बहुत खुश हूँ। मगर आपके यहाँ क्या कमी है ? जब चाहें बीवी मिल सकती है। मैं पहले भी खयाल किया करती थी कि आप चौथी शादी कर लें तो यह बगल वाला कमरा भी आबाद हो जायेगा।"

"यह मसलह गौर-तलब है।" खानबहादुर ने एक चुस्की चाय की लगाकर रसूलन की ओर देखा। वह गम्भीर मुख सामने खड़ी थी।

"हाँ, अब बताओ क्या कहती हो ?"

"हजूर ! एक अपनी लड़की है। शादी के लायक हो गयी है। चाहें तो आज ही निकाह पढ़ाया जा सकता है।"

"देखने में कैसी है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हजूर देख सकते हैं।"

"क्या उमर है ?"

"इस वक्त सोलह-सत्रह साल की होगी।"

"बात तो ठीक है। मगर बदसूरत हुई तो ये बेगमें हँसी उड़ायेंगी।"

"हजूर ! चौदहवीं का चाँद है।"

"तो ले ग्राग्रो।......नहीं। हम......खुद देखने चलेंगे।"

"मगर हजूर ! ग्राप हमारे घर चलेंगे तो मोहल्ले में चर्चा होने लगेगा ग्रौर पीछे शादी न हुई तो भारी बदनामी हो जायेगी।"

"तो फिर कहाँ देख सकूँगा उसे ?"

"मैं उसे ग्रपने साथ लेकर 'ग्रपोलो बन्दर' के दरवाज़े पर खड़ी रहूँगी। हज़ूर ग्रपने ग्राने का वक्त बता दें।"

"हम गुसल वगैरा से एक घण्टे में फुरसत पा लेंगे। ग्राज नाश्ता मैं कोठी पर नहीं ले रहा। ग्रगर लड़की पसन्द ग्रा गयी तो मैं उसे होटल में नाश्ता के लिये ले जाऊँगा ग्रौर फिर जामा मस्जिद में जाकर निकाह पढ़ा लूँगा।"

रसूलन ग्रभी भी गम्भीर मुख बनाये खड़ी रही। खानबहादुर कुछ सोचते हुए चाय पीते रहे। जब चाय समाप्त हो गयी तो प्याला ट्रे में रखते हुए खानबहादुर ने रसूलन को चुप देख पूछ लिया, "क्या सोच रही हो ?"

"हज़ूर ! कुछ लिखा-पढ़ी भी तो होनी चाहिये।"

"हो जायेगी। वहीं मस्जिद में लिखकर दे दूँगा। इमाम साहब गवाही भर देंगे।"

रसूलन चली गयी। खानबहादुर कुछ देर ग्राँखें मूँदे विचार करते रहे ग्रौर फिर इस नयी बीवी की लालसा करते हुए गुसलखाने को चले गये।

: ११ :

ज़रीना समझ रही थी कि ग्रल्पाहार के समय खानबहादुर ग्रपना रात का क्रोध निकालेंगे ग्रौर जली-कटी सुनायेंगे। इस कारण खाने के कमरे में जाने से पहले वह मरियम के कमरे में जा पहुँची। वह ग्राज ग्रपने सबसे बढ़िया वस्त्र पहने ग्रौर श्रृंगार किये खड़ी थी।

"मरियम बहन ! तुम तो ग्रपनी पहली रात की तरह सज-धज कर चल रही हो।"

"हाँ, यह खानबहादुर के दिल को कुछ तसल्ली दिलाने के लिये है। इससे उनको खाना हज़म हो सकेगा। झगड़ा तो रात के वक्त करेंगे। दिन के वक्त उनके दिमाग में इतमीनान ग्रौर तसल्ली पैदा करनी चाहिये।"

"मेरा तो मन भीतर-ही-भीतर बैठ रहा है। मैं खाने के कमरे में ग्रकेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं जा सकी। तुम्हें साथ लेकर चल रही हूँ।"

"फिक्र न करो। मैं समझती हूँ कि हमने आधा जंग जीत लिया है।"

दोनों खाने के कमरे में पहुँचीं तो बैरा ने बताया, "खानबहादुर कह गये हैं कि उनको नाश्ता किसी के साथ होटल में लेना है। इसलिये बेगमें खाना ले सकती हैं।"

ज़रीना को इस बात से खुशी हुई। उसने समझा कि अभी का भय टला। मरियम को न हर्ष था और न शोक। उसने बैरा को कह दिया, "तो हम दोनों के लिये ले आओ।"

खाना खाकर वे दोनों अपने-अपने कमरे में चली गयीं। मध्याह्न के भोजन के समय खानबहादुर बुर्के में एक औरत के साथ वहाँ आ पहुँचे। खानबहादुर ने डाइनिंग-हॉल में प्रवेश करते हुए अपनी दोनों पत्नियों को सम्बोधन कर कहा, "यह देखो! इस घर में तुम्हारी एक और बहन आ गयी है।"

"वट ?" मरियम ने तमक कर खड़े होते हुए कहा, "एक और शादी कर ली है ?"

"हाँ, मरियम !" इस पर खानबहादुर ने ज़रीना की ओर देखकर कहा, "अब तुमको अपनी इबादत के लिये ज़्यादा वक्त मिल सकेगा।"

ज़रीना तो बैठी रही और खानबहादुर ने साथ खड़े बुर्के की तरफ देख कहा, "आयशा! बुर्का उतार साथ की कुर्सी पर रख दो और देखो, तुम्हारा तआरुफ करा दूँ।"

बुर्का उतरा और वह आयशा ने अपने समीप पड़ी एक कुर्सी पर रख दिया। दोनों पहली बीवियों ने देखा कि लड़की अभी बच्ची ही है। चौदह साल से बड़ी उमर की प्रतीत नहीं होती थी। रंग गोरा था, नक्श कुछ मोटे थे, परन्तु होंठ, आँखें बड़ी-बड़ी थीं।

खानबहादुर बैठे और उन्होंने आयशा को अपनी दूसरी ओर बैठा लिया। स्वयं मरियम के पास वाली कुर्सी पर बैठ गये।

बैरा ने खाना लगा दिया और चारों चुपचाप खाना खाने लगे। खानबहादुर ने मरियम से पूछ लिया, "कैसी लगी है यह नयी बेगम ?"

"अभी बच्ची है। मुहब्बत से रखियेगा तो घर की रौनक बन जायेगी। वरना बेचारी की ज़िन्दगी आज़ार हो जायेगी।"

ज़रीना ने लड़की को पहचान लिया था। वह एक-आध बार रसूलन के साथ कोठी पर आयी थी। ज़रीना ने पूछ लिया, "आयशा! माँ कहाँ है ?"

"मस्जिद से घर लौट गयी है। वह कह रही थी कि अब यहाँ अपनी लड़की के घर में नौकरी नहीं करेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हज़रत !" ज़रीना ने खानबहादुर की ओर देख कर कह दिया, "रसूलन का वजीफ़ा लगा दें। ऐसी नौकरी बेचारी को मिल नहीं सकेगी।"

"हाँ, मैं कुछ ऐसा ही खयाल कर रहा हूँ।"

"और तुम्हारा वजीफा लगा है ?" ज़रीना ने आयशा से पूछ लिया।

"यह कहते थे कि आज रात को बतायेंगे।"

दोनों बेगमें मुस्करायीं और खाना खाने लगीं।

खाने के उपरान्त खानबहादुर अपनी नयी बेगम को उसका कमरा दिखाने चले गये और वहाँ कमरा बन्द कर, उसे समझाते रहे कि उसे अपनी सौतनों के साथ कैसे रहना चाहिये ?

मरियम ज़रीना के कमरे में पहुँची और दोनों बैठ, उस दिन की घटना पर विचार करने लगीं। मरियम ने कहा, "हमें इस लड़की से मेल-जोल बनाना चाहिये और मैं समझती हूँ कि इस लड़की को अपने हक में करके हम अभी भी खानबहादुर को नाकों-चने चबवा सकती हैं।"

"मैं समझती हूँ," ज़रीना ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "ज़िन्दगी की मुश्किल घड़ियाँ आ रही हैं। मैं अपने भाईयों के पास नहीं जा सकती। भावजें पसन्द नहीं करेंगी। नयी शादी का तो सवाल ही नहीं उठता। यहाँ इस घर में हमारी हालत नौकरानियों के बराबर हो जायेगी।"

खानबहादुर नयी बीवी को एक घण्टा-भर रहन-सहन का तरीका बता कमरे से निकले तो चपरासी ने बताया, "हज़ूर ! कुछ लोग मिलने के लिये आये हुए हैं।"

"कितना अरसा हुआ है आये हुए ?"

"आधा घण्टा से ज़्यादा हो चुका है।"

"ओह !"

खानबहादुर बाहर की बैठक में चले गये। मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी की बैठक होनी थी और खानबहादुर नयी शादी की खुशी में इसके विषय में भूल ही गये थे।

खानबहादुर बाहर की बैठक में पहुँचे तो छः लोग वहाँ बैठे लीग के तामीरी प्रोग्राम पर गौर कर रहे थे। खानबहादुर को देख सब उठ खड़े हुए और खानबहादुर को मुबारकबाद देने लगे। एक बशीर अहमद अलीगढ़ से आये हुए थे। खानबहादुर का खैरमक़दम सबसे ज़्यादा उन्होंने ही किया था। जब खानबहादुर बैठ गये तो बशीर साहब पूछने लगे, "खान साहब ! यह कहाँ का परिन्दा पकड़ लाये हैं ?"

"यहीं बम्बई में एक गरीब के घर से मिल गयी है।"

"किस जात की है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक दीनदार मुसलमान की लड़की है। पहली बेगमों ने तंग करना शुरू कर दिया था। खयाल आया कि अब नयी ज़मीन पर काश्त करना शुरू कर दी जाये।"

"पर खान साहब! हमने तो यह फैसला कर रखा है कि पहली शादी के अलावा जितनी भी शादियाँ करेंगे, गैर-मज़हब वालों की लड़कियों से करेंगे। हम इसी मसलह पर गौर कर रहे थे। अपने यहाँ काश्त के लिये ज़मीन की कमी पड़ रही है। इसलिये दूसरों की ज़मीन पर कब्ज़ा करना चाहिये। तबलीग का यह एक ज़बरदस्त तरीका है।"

"हाँ; यह तो मैं भी समझता हूँ। मगर जो मिल गयी उसको छोड़ नहीं सका।"

"गरीब मुसलमान तो गैर-मज़हब की लड़की ला नहीं सकते। किसी आला खानदान की तो बिल्कुल नहीं। इसलिये यह हम अमीरों की जिम्मेदारी है कि मुसलमान लड़कियाँ उनके लिये छोड़, दूसरों की ज़मीन पर अपनी खेती-बाड़ी करें।"

"मैं इससे उलट समझता हूँ।" खानबहादुर ने कह दिया, "हम अमीर आदमियों को ज़्यादा-से-ज़्यादा मुसलमान लड़कियों की परवरिश करनी चाहिये। गरीब लोग जब अपने मज़हब में लड़कियाँ नहीं पा सकेंगे तो वे तो कुदरती तौर पर दूसरों के हक-हकूक पर छापा मारेंगे। वे लोग यह बात हम लोगों से ज़्यादा खूबी से सरंजाम दे सकेंगे।"

"पर हज़रत! सुना है कि आपकी एक लड़की ने उस काफिर 'राष्ट्र' हफ्तावारी अखबार के ऐडीटर से शादी कर ली है?"

"हाँ; यह तब की बात है जब मैं ला-मज़हब था। अब मैं कोशिश कर रहा हूँ कि उसे ब-मय उसके खाविन्द के वापस मिल्लत में ले आऊँ।"

"और दूसरी बीवियाँ कैसा महसूस कर रही हैं?"

"अभी उनसे बातचीत करने का मौका नहीं पड़ा।"

"मगर ऐसा नहीं होना चाहिये कि एक आयी तो दूसरी भाग जाये।"

"वे अब जा नहीं सकतीं। काफी बड़ी उम्र की हो चुकी हैं। एक चालीस साल की है, दूसरी आजकल विलायत में है। वह तीस साल की उम्र की है। तीसरी एक अंग्रेज़ की लड़की है। वह भी दूसरी के करीब-करीब ही है। अगर कहीं जायेगी भी तो औलाद पैदा नहीं कर सकती। वह ज़मीन बंजर हो गयी है।"

बशीर ने कह दिया, "इस पर भी कोशिश यही करनी चाहिये कि वे इस्लाम को न छोड़ें। हकीकत यह है कि अगले बीस-तीस साल मार्के के होंगे। हम चाहते हैं कि सन् १९२१ की मरदम-शुमारी में मुसलमानों की तादाद दुगुनी हो जानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये और सन् १९३१ में उससे दुगुनी। इस तरह सन् १९४१ या '५१ में हिन्दुस्तान में हमारी अक्सरीयत हो जाये। हमारा यह खयाल है कि जल्दी ही युरोप में एक बहुत ही ज़बरदस्त जंग होने वाला है और उसके बाद अंग्रेज़ हिन्दुस्तान को एक 'जमहूरियत' हकूमत करार दे देंगे। उस वक्त जिस फिरके के लोग ज़्यादा होंगे वह फिरका हकूमत करेगा।"

इस पर एक अन्य साहब ने बातों की दिशा बदल दी। उसने कहा, "कल जिन्ना साहब की कोठी पर वाडिया साहब मिले थे। वाडिया साहब कह रहे थे कि मुसलमानों को एक बहुत बड़ी तादाद में कांग्रेस में शामिल हो जाना चाहिये। वे चाहते हैं कि तिलक के जेल से छूटने के पहले ही हम कांग्रेस में शामिल हो जाएँ। इससे मुल्क की सियासत में मुसलमानों का एक नमायाँ हाथ हो जायेगा।

"जिन्ना साहब कहते थे कि मुसलमानों को कांग्रेस में शामिल होने के साथ-साथ अपनी एक अलहदा अंजुमन भी रखनी चाहिये।"

"ऐसा मालूम होता है कि कांग्रेस इस साल अपने इज़लास में एक कमेटी मुकर्रिर करना चाहती है जो मुल्क में अगले सियासी निज़ाम की शक्ल-सूरत तजवीज़ करेगी और उसे मंज़ूर कर सरकार पर ज़ोर देगी कि उसे मुल्क की माँग को पार्लियामैण्ट में कानूनी शक्ल देनी चाहिये।

"जिन्ना साहब का कहना है कि अगर जंग हो गयी, जैसी कि उम्मीद है, तब ब्रि[illegible]कार हमें हक-हकूक देने मंजूर कर लेगी।"

[illegible] खानबहादुर ने कहा, "मैं मद्रास में मिसेज़ ऐनिबिसैंट से मिला था। उनका [illegible] यही खयाल है कि अगर हम 'होम-रूल' की माँग में सब यक-राय हो जा[illegible] तो सरकार के लिये उसको मान जाने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं।"

इस पर बशीर साहब ने कह दिया, "हमें एक रैज़ुल्यूशन पास कर देना चाहिये कि मुसलमान और हिन्दुओं को मुतहिद होकर अपने हक-हकूक को वसीअ करने की माँग करें।

"साथ ही हिज मैजिस्टी की उम्र-दराज़ के लिये खुदाबन्द करीम से इल्तिजा करनी चाहिये। उनकी सरकार का शुक्रिया अदा करना चाहिये कि उन्होंने फराख-दिली से मुसलमानों के हक-हकूक की हिफाज़त के लिये जो कदम उठाया है, उनको और आगे ले जाकर अपने वायदों को पाया तकमील तक पहुँचा दें।"

इस पर खानबहादुर ने कह दिया, "तो दो बातें तय हो गयीं। और बताओ?"

बशीर साहब ने कहा, "मुल्क के तमाम मुसलमानों को मुतहिद होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनज़ीम तबलीग के काम में लग जाना चाहिये।"

"ठीक है। तीन बातें तय हो गयीं। अब मेरा कहना है कि बशीर साहब कल इन तीनों रैज़ुल्यूशनों को लिखकर ले आयें। तब हम इस पर मंज़ूरी की मेहर कर देंगे।"

"और मेरा खयाल है कि हमें खानबहादुर के आज के पुर-लुत्फ दिन में खलल नहीं पहुँचाना चाहिये और इनको अपनी नयी बीवी की सोहबत में जाने के लिये छुट्टी दे देनी चाहिये।"

सब हँसते हुए और खानबहादुर से हाथ मिलाते हुए चले गये।

खानबहादुर वापस हरम में पहुँचे तो आयशा, मरियम और ज़रीना इकट्ठी एक ही कमरे में बैठी थीं।

जब खानबहादुर बाहर ड्रायंग-रूम में मीटिंग में शामिल होने गये थे तो दोनों बड़ी बेगमें आयशा के पास जा पहुँची थीं। मरियम ने जाते ही उससे पूछा, "सुनाओ आयशा! क्या मिला खानबहादुर साहब से?"

आयशा बता नहीं सकी और शर्म से लाल हुए मुख से दोनों की ओर देखती रह गयी। ज़रीना ने मरियम को कहा, "छोड़ो इस बात को। अगर कुछ मिला तो इसका हक ही होगा और नहीं मिला तो रात को मिल जायेगा। क्यों आयशा! क्या हक-मेहर लिखा कर आयी हो?"

"मुझे मालूम नहीं। अम्मी और अब्बाजान मुल्ला के सामने ही कुछ बात-चीत कर रहे थे। मुझे दूर बैठा रखा था। अम्मी खुश मालूम होती थीं। ज़रूर कुछ लिखा-पढ़ी हो गयी होगी।"

"देखो! अपने को बहुत सस्ता मत बना लेना। वरना कद्र कम हो जायेगी।"

"सस्ता का क्या मतलब?"

"यही कि हर रोज़ उनके बिस्तर पर मत जाना। कभी-कभी ही ठीक रहता है। खाविन्द को जितनी इन्तज़ार करनी पड़े, उतनी ही औरत की कद्र बढ़ती है।"

आयशा नहीं जानती थी कि क्या कहे। एक बात जो वह महसूस कर रही थी, कहने लगी, "पर मुझे तो बहुत तकलीफ हुई। और मुझे अब उनसे डर लगने लगा है।"

मरियम ने कहा, "मैं उनको कह दूंगी कि ज़रा एहतियात से तुम्हारा इस्तेमाल करें। अभी तुम कम उम्र की हो।"

इस समय खानबहादुर आयशा को ढूंढते हुए वहां आ पहुँचे। आते ही उन्होंने कहा, "क्या बदतमीज़ी है? क्यों इसको बरगलाने की कोशिश कर रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हज़रत ! हम कैसे बरगला सकती हैं ?" मरियम ने कहा, "और बर-गला कर करेंगी भी क्या ? हमें आपकी इससे शादी की अज़हद खुशी है । मगर यह बेचारी कह रही थी कि इसे बहुत तकलीफ हुई है और हम बता रही थीं कि ऐसी हालत में इसे क्या करना चाहिये ।"

"क्या करना चाहिये ?"

"यही कि सब्र और इस्तकलाल रखे । कुछ दिनों में सब ठीक हो जायेगा। ज़रा आपका इस्तेमाल इसे कुछ किफायत से करना चाहिये ।"

"तो यह मेरा इस्तेमाल करेगी ?"

"सब औरतें अपने खाविन्दों का इस्तेमाल करती हैं ।"

"मैं इससे उलट समझता हूँ । मेरा खयाल है कि मर्द औरत का इस्तेमाल करता है ।"

"जैसे आप कोट-पतलून पहनते हैं, वैसे ही न ?"

"नहीं । जैसे एक आदमी जूता पहनता है ।"

"तो यह एक नयी जूती लाये हैं ?" मरियम को यह तुलना पसन्द नहीं आयी थी ।

खानबहादुर ने गम्भीर हो कहा, "हाँ ।"

"और हम ?"

"एक पुराने जूते की भाँति उतार दी गयी हो । जब कोई गरीब ज़रूरत-मन्द हुआ तो उसे पहनने के लिये दे दूँगा ।"

मरियम ने कह दिया, "आपकी चाँद पर यह पुराने जूते बहुत मुफीद साबित होंगे ।"

"चलो आयशा ! इन बदतमीज़ औरतों की सोहबत ठीक नहीं ।"

"ये बदतमीज़ औरतें तलाक चाहती हैं ।" मरियम ने क्रोध में कह दिया ।

"वह मैं दूंगा नहीं । आपको घर के तयखाने में डाल रखूँगा । यदि कभी आपके लायक कोई काम समझ में आया तो निकाल लूँगा ।

"देखो ज़रीना ! तुम अपने भाईयों के पास कुछ दिन के लिये जा सकती हो । मुझे इस नयी बीवी से अब फ़ुरसत नहीं मिल सकेगी ।"

"मैं नहीं जाऊँगी । मुझे भी आपकी खिदमत के लिये अब फ़ुरसत नहीं है । आपको यह नयी खिदमतगारिन मिल गयी है, मुझे खुशी है ।"

"मगर यहाँ रहने की कीमत यह है कि तबस्सुम यहाँ नहीं आ सकेगी । मुझे पता चला है कि वह यहाँ आयी थी और मुझे शक है कि वह ही बगावत का बीज बो गयी है ।"

"मगर उस बगावत से आपको तो फायदा ही हुआ है ।"

"फायदे-नुकसान की बात तो पीछे पता चलेगी, मगर तुम दोनों ने तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे तंग करने की बात सोची ही थी।"

अब मरियम ने कहा, "मतलब यह कि आपने ज़रीना बहन को हमारे कहने पर पीटा था ? यह तो उस पिटाई के बदले में था। तबस्सुम का इससे कुछ भी तअल्लुक नहीं।"

"तो तुम भी तबस्सुम की हिमायत करने लगी हो ?"

"मैं आपकी इस नयी बीवी आयशा की भी हिमायत करना चाहती हूँ।"

"तो इसको भी कुछ तकलीफ है मुझसे ?"

"यह अभी बच्ची है और आप बुढ़ापे के किनारे पर जा खड़े हुए हैं।"

"इससे क्या होता है ?"

"होगा यह कि जब तक यह पच्चीस-तीस साल की उम्र की भरी जवानी में होगी, आप साठ-पैंसठ साल के एक जईफ़ बुजुर्गवार पोते-पोतियों के दादा बन चुके होंगे।"

"और तब तुम्हारी क्या उम्र होगी ?"

"मैं तो आपको अभी मजबूर कर दूंगी कि आप मुझसे तलाक दे दें। मेरी उम्र अभी दूसरी शादी करने की है।"

"पर मैं तलाक दूंगा नहीं।"

"मैं खर्चे के लिये दावा दायर कर दूंगी।"

"इसये क्या होता है ?"

"होगा यह कि अदालत में कहा जायेगा और अखबारों में छपेगा कि मुस्लिम लीग के सदर साहब करोड़पति होते हुए और पचास वर्ष की उम्र में तीन बीवियाँ साथ रखते हुए एक बारह साल की बच्ची से एक और शादी कर बैठे हैं।"

"किस अखबार में छपेगा ?"

"खबर तो 'बॉम्बे न्यूज़' में छप जायेगी और इस्लाम पर टीका-टिप्पणी 'राष्ट्र वीकली' कर देगा।"

इस पर खानबहादुर चुप कर गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: १ :

श्रीमती ऐनिबिसेंट जिस बात का प्रचार करना चाहती थीं, वह नलिनीकान्त का दैनिक 'बॉम्बे न्यूज़' कर रहा था। कुछ ही महीनों में 'होम-रूल लीग' की चर्चा देश-भर के लोगों में होने लगी।

फिरोज़शाह मेहता का देहान्त हो चुका था। वाडिया मेहता साहब के स्थान पर कांग्रेस के मन्त्री के रूप में काम करने लगे थे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्यों में भी कुछ लोग ऐसे उत्पन्न हो गए हैं जो यह चाहते हैं कि 'किंग ऐम्परर' के प्रति निष्ठा प्रकट करने से काम नहीं चलेगा। स्कूल-कालेजों में पढ़े-लिखे अब कांग्रेस को घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे।

'बॉम्बे न्यूज़' में लेख छप रहे थे। इन लेखों का आशय यह रहता था—"देश में अपने लोगों का राज्य न तो अस्वाभाविक है और न ही असम्भव; देश की शक्ति, संगठन और बुद्धियुक्त कर्म में है; यह मिथ्या कथन है कि अंग्रेज़ बहुत शक्तिशाली हैं; पूर्ण देश में बारह हज़ार से अधिक अंग्रेज नहीं; पुलिस और सेना में तो अधिकांश हिन्दुस्तानी हैं; यह हमारा काम है कि हम उन्हें स्वराज्य के लिये राज़ी कर लें। इसके लिये प्रचार की आवश्यकता है।

इस प्रकार के लेखों से अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोगों में साहस और आशा उत्पन्न होने लगी थी और कांग्रेस के सदस्यों में भी चेतना का संचार होने लगा था।

बम्बई में कार्यकारिणी की बैठक हो रही थी और उसमें जे० डब्ल्यू वाडिया ने देश की पूर्ण स्थिति का विश्लेषण कर बता दिया, "मुसलमान समाज का पढ़ा-लिखा अंग अपने लिये विशेषाधिकार प्राप्त कर बहुत प्रसन्न है और वह सरकार का पक्ष लेता है। अत: कांग्रेस सरकार-भक्त हिन्दुओं की एक संस्था रह गयी है। हिन्दू समाज में अधिकांश लोग देश में स्वराज्य की इच्छा करते हैं। परिणामस्वरूप कांग्रेस बहुत दुर्बल हो गयी है। अतएव कांग्रेस और मुस्लिम लीग में गठजोड़ होना चाहिये, जिससे कि सरकार-भक्तों की संख्या अधिक हो सके। मैंने मुस्लिम लीग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी सदर खानबहादुर नसीरुद्दीन तैयब जी से बातचीत की है। उन्होंने कहा है कि पहल कांग्रेस को करनी चाहिये। साथ ही मुसलमानों को साथ मिलाने के लिये कुछ कीमत अदा करनी होगी।''

''क्या कीमत माँगते हैं वे ?'' डाक्टर बैनर्जी का प्रश्न था।

''वे कहते हैं कि जो कुछ अंग्रेज़ मुसलमानों को दे रहा है उससे जब तक कुछ ज़्यादा न हो, मुसलमान आपके साथ मिलकर एक संस्था बनाने के लिये तैयार नहीं।

''इस पर विचार हुआ है कि यह एक ऐसी बात है जो नीति के साथ सम्बन्ध रखती है। इसे खुले अधिवेशन में स्वीकार करवाना होगा। यह अन्तरंग सभा नहीं कर सकती।''

श्री सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने प्रस्ताव कर दिया कि सरकार से अधिक हक़-हक़ूक माँगने के लिए प्रस्ताव तैयार करने वाली एक सब-कमेटी बना दी जाये। वही सब-कमेटी मुसलमानों को अपने साथ शामिल करने का भी विचार करे।

इस समय तिलक जी कैद से छूट गये और उनका पूना तथा अन्य स्थानों पर भव्य स्वागत किया गया। पूर्ण देश में इस छूटने पर चर्चा होने लगी और तिलक जी भी देश की परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए इधर-उधर घूमने लगे। इसी प्रयत्न में वे बम्बई पहुँचे और वहाँ 'बॉम्बे न्यूज़' में 'होम-रूल लीग' की वकालत पढ़ नलिनी से मिलने समाचार-पत्र के कार्यालय में जा पहुँचे।

नलिनीकान्त को सूचना थी कि लोकमान्य तिलक समाचार-पत्र का कार्यालय देखने आ रहे हैं। अतः वह समय पर उनके स्वागत के लिये द्वार पर आ खड़ा हुआ।

तिलक जी आये तो नलिनी ने चरण-स्पर्श किये। तिलक जी ने उसे उठा कर गले से लगाते हुए कहा, ''पिछले दो दिन से आपके समाचार-पत्र के सम्पादकीय पढ़ रहा हूँ।''

''मैं भी आपके पीछे जेल-यात्रा कर आया हूँ। ईश्वर की कृपा से मुझे जेल में डालने का सरकार का उद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ। मैंने बन्दी जीवन के काल को विश्राम का काल समझा था और उस विश्राम के उपरान्त अब द्विगुण उत्साह से जनता को जाग्रत करने में लग गया हूँ।''

दोनों द्वार से चलकर सम्पादक के कार्यालय में आ गये थे। वहाँ एक कोने में सरस्वती बैठी अगले दिन छपने वाले पत्र के लिये समाचारों को क्रम दे रही थी।

तिलक जी उसकी मेज़ के समीप से गुज़रे तो सरस्वती ने उठकर हाथ जोड़ नमस्कार कर दी। जब दोनों सम्पादक की मेज़ के समीप बैठ गये तो तिलक जी ने पहला ही प्रश्न किया, ''तो इस कार्यालय में स्त्रियाँ भी कार्य करती हैं ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी। यह हैं श्रीमती सरस्वती एम० ए०, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की स्नातिका। यह श्री खानबहादुर सर नसीरुद्दीन तैयब जी की सुपुत्री हैं और यहाँ के एक विख्यात साप्ताहिक 'राष्ट्र' के सम्पादक की पत्नी हैं। सम्पादकीय कार्य में बहुत योग्य और अनुभवी हैं।"

"यह स्वयं भी कुछ लिखती है क्या ?"

"जी हाँ। बहुत तीखी लेखनी है इनकी। इनका कानून में भी अध्ययन है।"

नलिनी ने अपनी 'भारत की मध्यकालीन सांस्कृतिक हलचल' नाम की नवीनतम कृति श्री तिलक जी को भेंट में देते हुए कहा, "यदि समय हो तो इसको पढ़ियेगा। कुछ आपके विषय में भी लिखा है।"

"क्या लिखा है ? दो शब्दों में बता दीजिये। आजकल शास्त्राध्ययन के लिए समय नहीं मिलता।"

"केवल यही कि आपका शास्त्राध्ययन अधकचरे ज्ञान के स्वामी युरोपीय संस्कृतज्ञ लेखकों का अनुकरण करते हुए ही हुआ है।"

"यह ठीक है, परन्तु वे अधकचरे ज्ञान के स्वामी हैं, यही तो विचारणीय है।"

"जी। मैंने भी विचार किया है, परन्तु वह विचार तो दो शब्दों में नहीं बताया जा सकता। इसी कारण पुस्तक सेवा में भेंट कर रहा हूँ।"

तिलक जी ने बात बदल दी। वे कहने लगे, "आप यह ऐनिबिसेंट के साथ कैसे जा मिले हैं ? इसकी मीमांसा को तो आपके गुरु स्वामी दयानन्द ने अस्वीकार कर दिया था।"

"परन्तु भगवन् ! मैं श्रीमती ऐनिबिसेंट के पक्ष में नहीं जा मिला और न ही उनकी मीमांसा का अनुयायी बना हूँ, बल्कि वे मेरी मीमांसा को स्वीकार कर बैठी हैं। जहाँ कहीं उनका मुझसे मतभेद है, उसे वे प्रकट नहीं करतीं।"

"मैं तो यह कह रहा था कि उसे देश के नेताओं में स्थान दिलवाने में आप सहयोग दे रहे हैं। यहाँ तक कि मुझे यह सूचना पूना में ही मिल गयी थी कि आप उसकी 'होम-रूल लीग' के सक्रिय सदस्य भी हैं।"

"यह सूचना आपको ठीक ही मिली है। जहाँ-जहाँ हमारा समाचार-पत्र जाता है, वहाँ-वहाँ ही इस लीग की महिमा हो रही है।"

"वैसे इसी नाम की संस्था बनाने का मेरा विचार भी था।"

"आप बना डालिये और जब एक प्रकार का माल वितरण करने वाली दो दुकानें हो जायेंगी तो फिर उनमें समन्वय हो सकेगा।"

तिलक जी मुस्करा कर बोले, "जैसे कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों में समन्वय का यत्न हो रहा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी। समन्वय तो वैसा भी हो सकता है। यद्यपि न तो मैं वह चाहता हूँ और न ही आप चाहेंगे।"

"तो आप क्या चाहते हैं ?"

"मैं आपको उस 'होम-रूल लीग' का सदस्य बन जाने का निवेदन करूँगा, जिसका मुख्य कार्यालय मद्रास में है। आधार दोनों में एक ही है। मतभेद मूल में नहीं। यह शाखाओं और पत्तों में है। मैं यह भी अनुभव करता हूँ कि यदि आप इसमें सम्मिलित हो जायें तो आप शीघ्र ही नेता बन जायेंगे और फिर वह विदेशीय स्त्री स्वाभाविक रूप में दूसरे दर्जे पर हो जायेगी।"

"जो कुछ भारतीय जीवन-मीमांसा के विषय में उससे मतभेद हो, वह अन्य लोगों से भी है। मैं आपकी पुस्तक 'ओरिओन' से मतभेद रखता हुआ भी आपका भक्त हूँ।"

"मेरे साथी उसके साथ समन्वय करने के स्थान, अपनी ही एक संस्था चलाने का विचार करते हैं।" तिलकजी ने कह दिया।

"तो फिर आप वह संस्था जाग्रत क्यों नहीं कर लेते, जिसे आपने सूरत-कांग्रेस के अधिवेशन के समय लाजपतराय जी के तथा बिपिनचन्द्र पाल के सहयोग से बनाया था।"

"वे दोनों नेता भारत में नहीं हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विचार भी बदल चुके हैं। अत: वह नाम भी मृत हो चुका है।"

"मुझे भय है कि बहुत से नाम-रूप वाली संस्थाओं के बन जाने से जनता में विभ्रम फैलेगा और फिर देश में दृढ़ आधारों पर राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकेगा।"

"राष्ट्र तो राज्य अपना होने पर स्वत: निर्माण हो जायेगा। राज्य के बिना राष्ट्र की बात व्यर्थ है।"

इस समय चाय आ गयी। तिलक जी के साथ पाँच अन्य व्यक्ति थे। सबके लिए खाने-पीने का सामान लग गया। सरस्वती अपने स्थान से उठकर आ गयी और चाय बनाने लगी। तिलक जी ने चाय लेने से इन्कार कर दिया। वे कहने लगे कि यह समय मेरे चाय लेने का नहीं है।"

"कुछ तो लीजिए।" सरस्वती ने कहा।

तिलक जी ने उत्तर नहीं दिया। नलिनी को सन्देह हो गया कि वे सरस्वती को एक मुसलमान की लड़की जानकर ही उसके हाथ की बनी चाय लेना पसन्द नहीं कर रहे। नलिनी इस विषय पर बात आगे न चलाते हुए स्वयं चाय लेने लगा और अपनी बात का सूत्र पकड़ कहने लगा, "पर मैं तो समझता हूँ कि इस देश में एक राष्ट्र तो अब भी विद्यमान है। वह राष्ट्र यहाँ आदि काल से चला आ रहा है। मुसलमानी राज्य हो जाने पर भी वह विद्यमान था और उससे पूर्व जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में कोई चक्रवर्ती राज्य नहीं था, तब भी था। यदि न होता तो ये वेद, हिन्दू, महाभारत, मनु, राम, कृष्ण तथा पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त कभी के विलुप्त हो चुके होते।"

"तो यह महाभारत, गीता, रामायण इत्यादि राष्ट्र का स्वरूप हैं ?"

"जी ! राज्य तो सात सौ वर्ष तक विदेशियों का रहा, परन्तु राष्ट्र हिन्दू बना रहा। अब राज्य विदेशियों का है, परन्तु राष्ट्र हिन्दू है।"

"ये तो मज़हब के लक्षण हैं। राष्ट्र बिना राज्य के नहीं हो सकता।"

"इतना तो मैं भी समझता हूँ कि क्षात्र-धर्म और ब्राह्मण-धर्म के समन्वय से राष्ट्र बनता है, परन्तु न तो क्षात्र-धर्म के अर्थ राज्य हैं और न ही ब्राह्मण-धर्म के अर्थ मज़हब हैं। राज्य और मज़हब एक ही श्रेणी के संस्थान हैं। दोनों में विश्वास और निष्ठा मुख्य अंग हैं। ये दोनों बातें मानव-प्रकृति के अनुकूल होते हुए भी राष्ट्र से पृथक् हैं। राष्ट्र की भावना सुदृढ़ होते ही राज्य एवं मज़हब स्वयमेव बनने लगते हैं।

"अंग्रेज़ ने इस रहस्य को जाना है और इसी कारण भारत में राष्ट्र को विनष्ट करने का भरसक यत्न कर रहा है। हमारे ब्राह्मण वर्ग के स्थान पर इसने विश्वविद्यालयों के अराष्ट्रीय प्राध्यापकों को स्थापित कर दिया है और हमारे क्षत्रिय वर्ग के स्थान, इण्डियन पीनल कोड बना दिया है।"

तिलक जी ने बात बदल दी और कहा, "हम विषयान्तर में चले गए हैं। मैं यह पूछने आया हूँ कि यदि मैं यहाँ पर होम-रूल लीग स्थापित करूँ तो आप हमारी सहायता करेंगे अथवा उस थियोसोफ़िकल समाज की ?"

"जी। मैं होम-रूल की भावना का समर्थन करूँगा। वह होम-रूल लीग आपकी हो अथवा श्रीमती बिसेंट की, इससे मेरा कोई सरोकार नहीं। मैं व्यक्तियों का पुजारी नहीं। मेरे लिए सत्य सिद्धान्त ही पूजा के योग्य हैं।

"वे सिद्धान्त हैं मानव का व्यक्तिगत बातों में स्वतन्त्र होना और समष्टिगत बातों के लिये समाज का निर्माण और उसके हित में रहना।

"भगवन् ! राजनीति की प्रगति के कुछ अर्थ नहीं यदि यह मूल आधार ही न रहे। राज्य और व्यवस्था तो इन मूल आधारों पर स्थित होने से ही अर्थयुक्त हो सकती है।"

"तब तो ठीक है। हम आप पर बहुत भरोसा करते हैं।"

चाय समाप्त हुई तो नलिनी उन्हें कार्यालय तथा मुद्रणालय दिखाने ले गया। चलते-चलते तिलक जी ने पूछ लिया, "राष्ट्र साप्ताहिक तो आपके लड़के निकाल रहे हैं न ?"

"जी; वह उसका सम्पादक है।"

"और वह लड़की उसकी पत्नी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी।"

"और वह एक मुसलमान की बेटी है। मुसलमान भी वह जो एक ओर तो सरकार की 'सर' तथा 'नाईट' की उपाधि-प्राप्त है, और दूसरी ओर मुस्लिम लीग का सदर है।"

"जी, मैं जानता हूँ।"

"यह आपके घर में जासूसी करती होगी।"

"जरूर करती होगी और मैं समझता हूँ कि करनी भी चाहिये। परन्तु मुझे विश्वास है कि घर में कुछ ऐसा है नहीं जो लुकाव-छुपाव वाला हो।"

"फिर भी सावधान रहना चाहिये। मैंने चाय इसीलिये नहीं ली; क्योंकि वह मुसलमान है।"

"वह मुसलमान नहीं है। वह निश्चय से राष्ट्रवादी है और मानती है कि हिन्दुस्तान में राष्ट्र हिन्दू है।"

"यह हो नहीं सकता। यह असम्भव है।"

"अभी तो सम्भव हो रहा है। वह हवन, यज्ञ और सन्ध्या परिवार में बैठ कर करती है। मुझे ज्ञात है कि गायत्री मन्त्र का सवा लाख का जप पूर्ण कर चुकी है। इस कारण मैं उसे हिन्दुओं से भी ऊपर मानता हूँ। हिन्दू बनने के लिये तो इससे बहुत कम योग्यता चाहिये।"

"और जन्म की बात?"

"यह किसी शास्त्र का विधान नहीं है।"

"पुराणों में तो इसका उल्लेख मिलता है।"

"होगा। यह बात वेद-मूलक नहीं है।"

वेद के नाम से तिलक जी चुप कर गये।

तिलक जी के चाय न पीने से सरस्वती को भी यही समझ में आया था कि यह उसके मुसलमान माँ के पेट से पैदा होने के कारण था। रात जब परिवार भोजन पर बैठा तो सरस्वती ने अपना विचार बता दिया। उसने कहा, "पिताजी! तिलक जी ने मेरे हाथ की बनी चाय नहीं पी। आप जानते हैं कि क्यों?"

"हाँ, सरस्वती! जानता हूँ। वे एक मुसलमान की सन्तान को हिन्दू मानने के लिये तैयार नहीं हो सके। एक विधर्मी का हाथ लग जाने के भय से खाने योग्य पदार्थ को अभक्ष्य मानते हैं।"

"तो क्या यह भी हिन्दू-धर्म का लक्षण है?"

"नहीं; यह वैष्णव मत का बाहरी स्वरूप है और वैष्णव भी अन्य अनेक मतों की भाँति हिन्दू राष्ट्र में एक है। मैं इसे सभ्यता का एक अंग मात्र मानता हूँ। जैसे कोट, पतलून पहनने वाले कुछ मनुष्य धोती, कुर्ता पहनने वालों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असभ्य कहते हैं अथवा मिट्टी से हाथ न धोकर साबुन से हाथ धोने वालों को पलीद समझते हैं, वैसे ही ये वैष्णव लोग छुआछूत में विश्वास रखते हैं; परन्तु दूसरे हैं जो इसे स्वीकार नहीं करते। ये मिट्टी से हाथ साफ करते हैं और साबुन से हाथ साफ करने वालों को अशुद्ध मानते हैं। पर मैं तो खान-पान में धर्म मानने वालों को मूर्ख मानता हूँ।"

"तो यह मजहब है?"

"हाँ; किसी काल में बहुत से हिन्दू इस मजहब को मानने वाले हो गये थे और अब इस छूआछूत को मानने वालों की संख्या कम हो रही है।"

"और यह नमाज़ उठ-बैठकर पढ़ने वालों के विषय में आपका क्या मत है?"

"वे भी मज़हबी आदमी हैं। धर्म के वास्तविक रूप को नहीं समझते।"

"मैं आपको एक बात बताती हूँ। अम्मी नमाज़ पलथी मारकर पढ़ने लगी थीं। इस पर वालिद साहब का अम्मी से झगड़ा हो गया और अब वह झगड़ा यहाँ तक बढ़ चुका है कि खान साहब की हवेली तीन भागों में बँट गयी है। एक में अम्मी रहती हैं, दूसरे में दूसरी अम्मी मरियम रहती हैं और तीसरे भाग में अब्बाजान अपनी अन्य दो बीवियों के साथ रहते हैं।"

"तो खान साहब ने एक चौथी शादी भी कर ली है?"

"जी। इस झगड़े के कारण ही उन्होंने शादी की है।"

नलिनी ने बताया, "ये लोग हैं जो मजहबी आडम्बर को वास्तविक मानवता से भी ऊपर समझते हैं।"

: २ :

कुछ दिन हुए सरस्वती को ऐस्प्लेनेड रोड पर टहलते हुए मरियम मिल गयी थी। उसने खानबहादुर के घर की बात बतायी थी कि खानबहादुर नयी बेगम आयशा और विलायत से लौटकर आयी बीवी सुरैया के साथ अलग रहते हैं और वह पिछवाड़े वाले कमरे में रहती है तथा ज़रीना बेगम बगल वाले कमरे में।

"अम्मी!" सरस्वती ने पूछा था, "अब्बाजान का आपके साथ कैसा सलूक है?"

मरियम का कहना था; "हम शरीफ पड़ोसियों की तरह रहते हैं। हमें खर्चा मिल जाता है और हमने अपने-अपने रसोईघर अलहदा-अलहदा बना लिये हैं। मेरी तो बात यह है कि मुझे खानबहादुर के दीदार हासिल हुए कई महीने हो गये हैं। तीन महीने की बात है कि वे बीमार थे। मेरी नौकरानी सरवर ने बताया कि उनकी हालत नाजुक है और डाक्टर-पर-डाक्टर आ रहे हैं। इस वजह से मैं उन्हें देखने गयी थी। तुम्हारा भाई हमीद विलायत से आया हुआ है। वह बैरिस्टर बन कर लौटा है। हमीद तो बहुत अच्छी तरह से पेश आया, मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खानबहादुर ने मुझे देख मुख मोड़ लिया। मैं कुछ देर तक वहाँ बैठी रही और फिर हमीद से ही बीमारी और उसके वालिद शरीफ की बात पूछ चली आयी थी। उस दिन के बाद उनके दीदार नहीं हुए।''

''मेरी अम्मी की हालत क्या है ?'

''वे तो उनको बीमारी में भी देखने नहीं गयीं। हमीद उनके कमरे में रहता है और अपनी अम्मी को वालिद साहब की बातें बताता रहता है। मैं भी हमीद से वहाँ ज़रीना बहन के कमरे में मिलती रहती हूँ। हमीद विलायत में किसी से शादी कर चुका है और दो में से एक बात चाहता है। या तो यह कि उसे विलायत में जाकर प्रैक्टिस करने की इजाज़त दी जाये, या उसे एक अलहदा कोठी रहने के लिये दी जाये, जिसमें वह अपनी बीवी को लाकर रखे।

''खानबहादुर कुछ भी फैसला कर नहीं सके। उनको अपने पब्लिक कामों से ही फुरसत नहीं कि वे कुछ फैसला कर सकें।''

''भाई जान से मिलने को जी करता है।''

''उसे खानबहादुर ने मना कर रखा है और उसकी नकलो-हरकत जानने के लिये घर के नौकरों को उस पर जासूस लगा रखा है।''

''तो वे घर से बाहर घूमने भी नहीं निकलते ?''

''बताया है न कि उनके साथ कोई जासूस लगा रहता है और हमीद चाहता है कि उसके मुतअल्लिक फैसला हो जाये तो वह फिर घूमने-घामने में आज़ाद हो सकेगा।''

''भाई जान मेरी बाबत क्या खयाल रखते हैं ?''

'वह तुमसे मिलना चाहता तो है, मगर तुम्हारी एक हिन्दू के साथ शादी को वह पसन्द नहीं कर रहा।''

''और एक मुसलमान आदमी की ईसाई औरत के साथ शादी कैसे पसन्द कर रहे हैं ?''

''वह औरत और मर्द में फरक समझता है। औरत को वह ज़मीन समझता है और एक ज़मींदार की तरह अपनी एक इंच ज़मीन भी छिनती वह नहीं देख सकता। साथ ही वह ज़मीन का बीज के लिये दर-दर घूमना सहन नहीं कर सकता। वह इस हालत को एक ही शर्त पर मंज़ूर कर सकता है कि ज़मीन बीज लेकर अपने पहले मालिक के पास लौट आये।''

सरस्वती इस मानसिक अवस्था की अपने घर की अवस्था से तुलना करती थी। ललिता अपने पति की अनुपस्थिति में किसी गैर के पास चली गयी थी और वह गैर उस पर वैसे ही खेती-बाड़ी करने लगा था कि मानो किसी पड़ोसी की परती भूमि पर कोई किसान हल चला दे।

ललिता के पति ने इसे पसन्द तो नहीं किया, परन्तु अपनी भूमि पर किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे का अधिकार देख वह दूसरे से फौजदारी करने नहीं लपका। सरस्वती ने अपने विवाह के पश्चात् अपने पति से इस विषय पर बात की थी। उसका प्रश्न था, "आप उसे वापस लाने का यत्न क्यों नहीं करते ?"

विजय का सहज उत्तर था, "मैं उसे भूमि का एक टुकड़ा नहीं मानता। मैं उसे इन्सान समझता हूँ और इन्सान को स्वेच्छा से अपना साथी चुनने का अधिकार है। यदि एक बार चुनने में भूल हो जाये तो उसे पुनः निर्वाचन का अधिकार मैं देता हूँ।"

"तो आपका विवाह उससे भूल थी ?"

"मेरे विचार से तो नहीं। मगर जब वह समझती है तो मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"और कभी मुझे भी, आपसे शादी करना भूल लगने लगे तो क्या मैं भी जहाँ इच्छा हो जा सकती हूँ ?"

"तो क्या तुम स्वयं को मेरे पास बिकी हुई मानती हो ? मैं ऐसा नहीं समझता कि मैं तुमको कहीं से बलपूर्वक उठाकर लाया हूँ अथवा तुम्हारा मूल्य देकर तुम्हें लाया हूँ। इसको मैं ऐसा समझता हूँ कि हम परस्पर मिले, हमने इकट्ठे रहकर गृहस्थ चलाने का फैसला किया और फिर इकट्ठे रह रहे हैं। इसी प्रकार मेरा ललिता से सम्बन्ध सामाजिक विधि-विधान से बना था। वह सम्बन्ध अब समाज ही तोड़ सकती है और हिन्दू-समाज ने यह निश्चय किया है कि एक बार जो पत्नी बन गयी वह बन गयी। पति-पत्नी का सम्बन्ध नहीं टूट सकता। वह समाज की दृष्टि में पत्नी मेरी ही रहेगी।"

"यह बात युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होती।"

"मैं जब इस प्रथा को सामाजिक दृष्टि से देखता हूँ तो इसे एक अच्छी प्रथा ही मानता हूँ। इस पर भी मैं स्त्री का यह अधिकार मानता हूँ कि वह अपने पति को छोड़, किसी दूसरे को वर सकती है।"

"पर मैं तो यह पूछ रही हूँ कि विवाह क्यों नहीं कर सकती ?"

"यह समाज का नियम है। जो इसे ठीक नहीं मानते, समाज के इस नियम को बदलवाने का यत्न कर सकते हैं। जब नियम बदल जायेगा, तब स्त्रियाँ दूसरा विवाह भी कर सकेंगी।"

"इसके लिये तो स्त्रियों को राज्य अपने हाथ में लेना पड़ेगा।"

"मैं समझता हूँ कि स्त्रियों का बस चले तो वे विवाह की रस्म को सुदृढ़ बनाने की कोशिश करें। यह तो स्त्रियों को केवल भोग की सामग्री समझने वाले ही तलाक और पुनर्विवाह की प्रथा निर्माण करेंगे।"

इस बात के एक वर्ष उपरान्त ललिता जब पति के पास लौटी तो विजय ने उसे घर से धक्के दे-देकर निकाला नहीं। उसे सामान्य रूप में घर में रहने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकृति मिल गयी थी। अब ललिता को घर लौटे दो वर्ष से ऊपर हो चुके थे और वह जानती थी कि उसे पत्नी के रूप में भी स्वीकार कर लिया गया है।

सरस्वती समझती थी कि वह भूमि की भाँति निर्जीव नहीं है। उसे हिन्दू-समाज में आने पर अधिक स्वतन्त्रता और अधिकार प्राप्त हैं। जब वह विलायत में पढ़ा करती थी तब कभी-कभी वहाँ हिन्दू स्त्रियों की दुर्दशा की कहानियाँ सुना करती थी; परन्तु यहाँ घटनावश एक हिन्दू की पत्नी बनने पर तो उसे कुछ दूसरा ही चित्र दिखायी दिया था। उसे स्त्री-समाज का यह चित्र पसन्द था।

मरियम ने हमीद को सरस्वती से मिलने की बात बतायी तो हमीद ने पूछ लिया, "कैसी है वह?"

"वह अपनी ज़िन्दगी से खुश मालूम होती थी। उसने कहा है कि तुमसे मिलने को जी चाहता है।"

"जी तो मेरा भी करता है। मगर अब्बाजान मना करते हैं।"

"पूछा नहीं कि वे क्यों मना करते हैं?"

"वे बताते थे कि हिन्दू एक तपेदिक की बीमारी है। इनके साथ सम्पर्क में आने पर इस बीमारी की छूत लग जाने का डर है।"

"पर मुझे तो वह बीमारी लगी नहीं।"

"यह तो मैं भी जानता हूँ कि वह मुझे नहीं लगेगी, मगर अब्बाजान समझते ही नहीं।"

"और तुम समझ गये हो? भला क्या समझे हो? तुम्हें यहाँ आये दो-तीन महीने से ज़्यादा हो चुके हैं। तुम अपनी बहन से नहीं मिल सके।"

"अब्बाजान मेरे मुतअल्लिक कुछ फ़ैसला भी तो नहीं करते।"

"वे कुछ नहीं करेंगे। हिम्मत है तो फ़ैसला करा लो। हम भी, मेरा मतलब है कि मैं और ज़रीना बहन यह समझती थीं कि अगर हमने अपनी आज़ादी का इस्तेमाल किया तो वे हमें घर से निकाल देंगे। मगर हकीकत यह है कि वे चुपचाप पाँच-पाँच सौ रुपया महीना हमें देने पर राज़ी हो गये और कोठी में रहने को कमरे दिये हुए हैं। मैं तो घूमने के लिये भी जाने लगी हूँ। बुर्का तो मैं शुरू से ही नहीं पहनती थी।"

"पर हमारी अम्मी तो यह नहीं कर सकतीं।"

"कर तो सकती हैं, मगर वे करना नहीं चाहतीं। अपनी मर्ज़ी से कहीं बाहर नहीं जातीं और जाती हैं तो बुर्का पहनकर जाती हैं।"

"आपकी बात दूसरी है।"

"हाँ, यह तो है कि मुझमें और तुममें फरक है। मैं अपनी आज़ादी के लिये साहस बाँध लड़ सकती हूँ और तुम आदमी होते हुए भी कायर मालूम होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। तुममें न तो खुददारी है और न ही अपने पर भरोसा।"

मरियम सरस्वती को स्वस्थ, प्रसन्न, सन्तुष्ट और निर्भय देख, उससे ईर्ष्या करने लगी थी। आज वह पुनः विद्रोह के पथ पर चल पड़ी थी। इस विद्रोह में पहले उसने ज़रीना को साथी बनाया था। अब वह इसमें हमीद को बनाना चाहती थी।

हमीद ने पूछ लिया, "मैं रीनी को अपने पास बुलाना चाहता हूँ।"

"तो बुलाते क्यों नहीं? तुम उसे आने के लिये रुपया भेज दो। वह आ जायेगी।"

"और यहाँ इस कोठी में लाकर रखूँ क्या?"

"हाँ, और अगर कोई मना करे तो हम, मेरा मतलब है कि मैं और तुम्हारी अम्मी भी इसमें तुम्हारी हिमायत करेंगी।

"मेरी राय मानो। अपना दफ्तर नगर के किसी मकान में खोल लो और वहाँ प्रैक्टिस शुरू कर दो।"

वास्तव में ही सरस्वती छूत की बीमारी थी। उसको देख मरियम में भी आज़ादी से रहने की लालसा उत्पन्न हुई थी और अब वही बीमारी हमीद को लग गयी थी।

यह तो वह अनुभव कर रहा था कि उसको अपनी बीवी को अपने पास बुला लेना चाहिये। एक ख़याली भय था कि वह बिना वालिद शरीफ़ की सहायता के भूखा मर जायेगा। मरियम के कहने पर कि वह और उसकी अम्मी उसकी हिमायत करेंगी, वह लज्जित अनुभव करने लगा था। वह समझ रहा था कि वह अजीब इन्सान है कि अपनी पत्नी को भी अपने पास लाकर, उसके पालन-पोषण का प्रबन्ध नहीं कर सकता।

उसने उसी दिन रीनी को पत्र लिख दिया कि आने के लिये खर्चा भेज रहा हूँ और उसे यहाँ आ ही जाना चाहिये।

इसके कुछ ही दिन पीछे उसने अपनी माँ से कहा, "अम्मी! रीनी को मैंने यहाँ बुला लिया है।"

"ठीक किया है। क्या वालिद साहब से पूछ लिया है?"

"नहीं; वे तो आजकल दिल्ली गये हुए हैं। हाँ, छोटी अम्मी से कहा था। वे बोलीं कि यह तो होना ही चाहिये। बीवी को खाविन्द के साथ रहना चाहिये।"

"देखो हमीद! दिल कड़ा कर हर बात के लिये तैयार रहो। ज़रा अपनी अक्ल का इस्तेमाल करोगे तो सुख पाओगे।"

"अम्मी! मैं आज तबस्सुम से मिलने जा रहा हूँ।"

"मैं भी चलूँ?"

"हाँ, चल सकती हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर बुर्का पहनकर चलूँगी।"

हमीद ने कहा, "ठीक है। जैसे तबीअत करे वैसे ही चल सकती हो।"

"तो गाड़ी मँगवा लो। घर की गाड़ी नहीं ले जाना चाहती। वह खान-बहादुर के सामने शिकायत कर देगा।"

उसी दिन हमीद और ज़रीना घोड़ा-गाड़ी पर सवार हो 'बॉम्बे न्यूज़' के कार्यालय में जा पहुँचे।

सरस्वती ने हमीद के साथ बुर्के में एक औरत को द्वार पर खड़े देखा तो लपक कर उठी और आगे बढ़ हमीद को हाथ जोड़ बोली, "खुदा का शुक्र है कि भाई के दिल में भी बहन के लिए कुछ हरकत पैदा हुई है। और……।" वह बुर्के की ओर देख पूछना चाहती थी कि कौन है उसके साथ? उसका खयाल था कि उसने अपनी बीवी को इंगलैण्ड से बुला लिया है; परन्तु उसके कुछ कहने से पहले ही ज़रीना ने कह दिया, "तबस्सुम! कैसी हो?"

"ओह! अम्मी! आओ।" वह उनको घर की ओर ले गयी। घर के ड्रायंग-रूम में बैठाकर उसने घर की नौकरानी से कहा, "रामी! जाओ, महावीर को ले आओ और माता जी से कहो कि मेरी माता जी आई हैं।"

सूचना पाकर सुवर्णा, प्रज्ञा और ललिता और ललिता के तीनों बच्चे और प्रभा का लड़का जो इस समय छः वर्ष की आयु का हो गया था, सभी ड्रायंग-रूम में एकत्र हो गये।

ज़रीना ने ड्रायंग-रूम में पहुँचते ही बुर्का उतार दिया था। सुवर्णा इत्यादि ने उसे पहचाना तो हाथ जोड़ प्रसन्न-वदन आदाब-अर्ज़ कर दी।

उसने ज़रीना के समीप बैठते हुए कहा, "मैं आपको मुबारकबाद देती हूँ कि आपको हमें मिलने की आज़ादी हासिल हुई है।"

"हासिल नहीं हुई। चोरी से हासिल की गयी है।"

"तो अम्मी!" सरस्वती ने कहा, "अब्बाजान से लगाये जासूसों को चकमा देकर आयी हो?"

"कह नहीं सकती। हकीकत यह है कि हमीद आने लगा तो मैं अपने को यहाँ आने से रोक नहीं सकी।"

"अम्मी! बहुत-बहुत शुक्रिया जो तुम्हारे मन में अपनी लड़की के लिये मुहब्बत ने ज़ोर मारा है।" उसने हमीद की ओर देखकर कहा, "भाई जान! अम्मी की हिफाज़त अब आपके जिम्मे है। एक राज़ की बात मैं बताती हूँ। देखो किसी से कहना नहीं। एक वक्त अम्मी मरियम ने कहा था कि अब्बाजान के अम्मी को गोली मार हलाक कर देने का डर है और वह उनका पिस्तौल चुरा सकती हैं, मगर छुपाकर कहाँ रखें, यह नहीं जानतीं। छुपाकर रखने का काम मैंने कर दिया। उनका पिस्तौल मेरे पास आया तो मैंने उसे ठिकाने लगा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्बाजान ने पुलिस को इत्तिला दी और पुलिस ने ज़मीन-आसमान एक कर दिया, मगर पिस्तौल नहीं मिला।"

"और वह कहाँ है ?"

"वह तो अब यहाँ नहीं है। वह यहाँ से कलकत्ता गया और वहाँ किसी सरकारी गवाह की हत्या में काम आया है।"

हमीद बहन का मुख देखता रह गया। वास्तव में वह विलायत में इन्कलाब-पसन्दों के कारनामे पढ़ता और सुनता रहा था और मन-ही-मन उनसे सहानुभूति रखता था। प्रत्यक्ष में वह अपनी हमदर्दी मुस्लिम लीग के साथ प्रकट कर रहा था। अभी तक वह अपने वालिद साहब को प्रसन्न करने का यत्न कर रहा था। आज जब घर के मुआमलों में खानबहादुर से बग़ावत हुई तो पब्लिक मामलों में भी बग़ावत प्रकट होने लगी थी। उसने पूछ लिया, "तबस्सुम ! तुम भी इन इन्कलाब-पसन्दों से हमदर्दी रखती हो ?"

"वह हर हिन्दुस्तानी को है। हमारी हमदर्दी से कुछ अधिक ही है। इसे मुहब्बत कहते हैं। मेरे एक देवर हैं। वे पाँच वर्ष की कैद अण्डमान में काट कर आये हैं और इस वक्त न्यूयॉर्क में एक 'आर्चर्ड' में काम करते हैं। उनके छूटने से पूर्व ही उनके वहाँ रहने का प्रबन्ध किया हुआ था।

"इधर देखो, भाई जान ! यह उनकी पत्नी है। नाम है प्रभा देवी।"

तो यह बात है। पर बहन जी !" उसने प्रभावती से पूछ लिया, "आप अमेरिका नहीं गयीं ?"

"मैं जाने की तैयारी कर रही हूँ।"

"और वह पिस्तौल अब वापस नहीं मिल सकता ?"

"वह तो पुलिस के अधिकार में चला गया है।" तबस्सुम ने कहा, "इस समय उसको माँगा गया तो वालिद साहब को मुश्किल में डाल देगा कि वह उन्होंने स्वेच्छा से दिया था और चोरी नहीं हुआ था।"

इस समय नलिनीकान्त और विजय भी आ गये। चाय मँगवा ली गयी थी। नलिनी तथा विजय का परिचय भी करा दिया गया।

: ३ :

नलिनी ने श्री बाल गंगाधर तिलक को बहुत समझाया था कि वे ऐनिबिसेंट की 'होम-रूल लीग' में सम्मिलित हो जायें, परन्तु वे नहीं माने और उन्होंने एक पृथक् 'होम-रूल लीग' बना ली।

यद्यपि नलिनीकान्त इसे एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना मानता था, परन्तु वह देश के कल्याण के लिये इन दोनों दलों में एकमयता उत्पन्न करने में यत्न करता रहा। जहाँ तक समाचार-पत्र का सम्बन्ध था, दोनों के समाचार छपते थे। साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों को पत्र का समर्थन प्राप्त था।

इन्हीं दिनों श्रीमती ऐनिबिसेंट बम्बई आयीं तो नलिनी ने दोनों होम-रूल लीगों में समन्वय कराने का यत्न किया। संस्थाओं में न तो उद्देश्यों में भेद था और न ही कार्यक्रमों में; भेद था दोनों सभाओं के नेताओं के स्वभाव में। दोनों में भेंट हुई। वार्त्तालाप भी हुआ और फिर यह निश्चय हो गया कि दोनों अपने साथियों से सम्मति कर पुनः मिलेंगे और सम्मति करेंगे।

इस समय देश की राजनीति में दो अन्य घटनाएँ घटीं। एक यह कि मोहनदास कर्मचन्द गांधी अफ्रीका से भारत में आकर देश में भ्रमण कर रहे थे और दूसरे, युरोप में जर्मनी तथा इंगलैण्ड में युद्ध आरम्भ हो गया था। इन दोनों घटनाओं का प्रभाव भारत की राजनीति पर बहुत गम्भीर पड़ा।

गांधी जी अफ्रीका में राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं के सुझाव के लिये शान्तिमय विरोध के परीक्षण करते रहे थे। वहाँ परीक्षणों को सफल समझ गांधी जी श्री गोपालकृष्ण गोखले के कहने पर हिन्दुस्तान में अपने परीक्षण करने चले आये थे। यहाँ वे 'सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसायटी' के सदस्य बनने की आशा करते थे। परन्तु जब गांधी जी ने सदस्य बनाये जाने के लिये श्री गोखले जी से कहा तो गोखले जी ने बात को टालने के लिये गांधी जी को कह दिया कि वे एक वर्ष तक देश में भ्रमण करें। तब वे सोसायटी में सम्मिलित हो सकेंगे।

गांधी जी अपने गुरु गोखले के कथनानुसार देश के विभिन्न नगरों में आने-जाने लगे और नेताओं से मिलने लगे। दुर्भाग्य से इस समय श्री गोखले का देहान्त हो गया और जब एक वर्ष के उपरान्त गांधी जी पुनः सोसायटी की सदस्यता के लिये प्रार्थी हुए तो सोसायटी के तत्कालीन प्रधान श्री श्रीनिवास शास्त्री ने उनको सोसायटी में लेना स्वीकार नहीं किया।

बम्बई में कांग्रेस ने एक सब-कमेटी बनायी जिसे सरकार द्वारा राज्य-प्रबन्ध में होने वाले सुधारों की अगली किस्त के लिये प्रारूप बनाने के लिये कहा गया। इस कमेटी को मुसलमानों को कांग्रेस में सम्मिलित करने के उपायों पर विचार करने के लिये भी कहा गया।

इस कांग्रेस-अधिवेशन के अवसर पर ही श्री तिलक और श्रीमती ऐनिबिसेंट में भेंट हुई थी और नलिनीकान्त को दोनों होम-रूल लीगों में समन्वय में सफलता नहीं मिली थी। दोनों होम-रूल लीगी नेताओं से भेंट के उपरान्त नलिनीकान्त तिलक जी से मिलने गया। इस भेंट के समय खानबहादुर सर नसीरुद्दीन तैयब भी वहाँ थे। जब नलिनी ने तिलक जी के पास अपना नाम लिखकर भेजा तो उन्होंने उसे भीतर बुला लिया। नलिनीकान्त भीतर गया तो खानबहादुर वहाँ बैठे थे। खान साहब नलिनी की सूरत से परिचित नहीं थे। वे केवल नाम से जानते थे और यह जानते थे कि उससे क्या पारिवारिक सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। अत: जब नलिनी भीतर आया तो तिलक जी ने उसका स्वागत करते हुए कहा, "आइये, बाबू साहब ! जानते हैं इनको ?" तिलक जी ने खानबहादुर की ओर संकेत कर दिया।

"जी, जानता हूँ। बहुत अच्छी तरह इनसे वाकिफ़ हूँ।"

इस पर खान साहब ने प्रश्न-भरी दृष्टि में तिलक जी की ओर देखा। तिलक जी ने नलिनीकान्त का परिचय करा दिया।

"ओह ! तो आप हैं। नाम तो सुना है, मगर आपके दीदार आज पहली बार ही हासिल हुए हैं।"

इसके उपरान्त खानबहादुर ने तिलक जी से कहा, "अगर आपको इस वक्त फुरसत न हो तो मैं फिर कभी हाज़िर हो सकता हूँ ?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। ये हमारे अन्तरंग साथी हैं। इनसे कोई बात छुपी नहीं और हकीकत में यह ही आप में और श्रीमती ऐनिबिसेंट में बातचीत करा सकेंगे।"

"मगर ये तो हिन्दू-मुसलमान इत्तिहाद को पसन्द नहीं करते।"

"बताइये, नलिनी बाबू ! आप क्या कहते हैं ?" तिलक जी ने मुस्कराकर पूछा।

"मैं समझता हूँ कि खानबहादुर को किसी ने गलत बताया है कि मैं मुल्क में इत्तिहाद नहीं चाहता। हकीकत यह है कि कोई इत्तिहाद चाहता ही नहीं। अब देखिये, खानबहादुर कहते हैं कि मैं हिन्दू-मुसलमान में इत्तिहाद को पसन्द नहीं करता। इन्होंने पहले ही दोनों को अलग-अलग मान लिया है, जो ध्रुवों के समान एक-दूसरे से दूर-दूर खड़े हैं और मुख्तलिफ़ समझे जा रहे हैं। भला उनमें इत्तिहाद कैसे हो सकता है ?

"हाँ, अगर सब इन्सानियत के प्लैटफॉर्म पर आकर खड़े हो जायें तो इत्तिहाद हो सकता है।"

"वह इन्सानियत क्या है ? हम तो इस्लाम को इन्सानियत का अलम्बरदार मानते हैं।"

"देखिये, खान साहब ! एक शख्स हैं जो अपनी नेक बीवी और बच्चों को इसलिये काबिले नफ़रत समझते हैं, क्योंकि वे खुदा की इबादत उस तरीके से नहीं करते जिस तरीके से वे खुद करते हैं। तो भला वे हिन्दुओं का मन्दिर में जाकर घण्टे-घड़ियाल बजा कर पूजा करना कैसे पसन्द करेंगे ? यह इस्लामी नुक्त:निगाह है और हिन्दू शंख, घड़ियाल बजाये बिना पूजा कर नहीं सकता। तो सुलह कैसे होगी ?"

तिलक जी कुछ नहीं समझे। मगर खानबहादुर अपनी जाती बात कही जाती सुन, आग-बबूला हो गये। तिलक जी अभी इस नोक-झोंक का अर्थ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ रहे थे कि खान साहब क्रोध में बोल उठे, "आप शख्सी बातों को बीच में क्यों ले आये हैं ?"

"हुज़ूर ! क्या शख्सों से ही कौमें नहीं बनतीं ? सब शख्स निकाल दिये जायें तो कौम कहाँ रह जायेगी ?"

"मतलब यह कि आप इत्तिहाद नहीं चाहते ?"

"पहले इसकी बिना कायम की जाये। बिना इसके इत्तिफ़ाक नहीं हो सकता।"

"बिना तो तकरीबन तय हो चुकी है। हिन्दुस्तान में मुसलमानी कौम की हकीकत तसव्वुर की गयी है और इसके हक-हकूक मंज़ूर किये जा चुके हैं। इन बातों को अमल में लाने के लिये मुसलमानों का रजिस्टर राय-दहिन्दगान अलहदा होगा। हिन्दू की जमहूरियत में इनके नुमायिन्दगे अलहदा होंगे। इनके लिये सरकार में अलहदा हक हासिल होगा। इनके लिये शरा का कानून होगा और शरा के मानने वाले ही इस कानून को लागू करेंगे।"

"पर खान साहब ! ये शर्तें तो पहले भी थीं। मेरा मतलब है कि जब हिन्दुस्तान में इस्लामी राज्य था। हिन्दुओं ने इन शर्तों को कभी मन्जूर नहीं किया और जब मुसलमान हिन्दुओं के साथ किसी किस्म की रौ-रियायत करने के लिये तैयार नहीं हुए तो इनकी हुकूमत खत्म करने की और सही-दिमाग़ हुब्बल-वतनों की हुकूमत कायम करने की कोशिश की गयी। वे तकरीबन कामयाब हो चुके थे, जब अंग्रेज़ यहाँ आ गये और ये छल और बल से यहाँ अपनी हुकूमत कायम कर सके थे। अब इन अंग्रेज़ों ने फिर मुसलमानों की हुकूमत कायम करने की कोशिश जारी कर दी है। अंग्रेज़ चाहते हैं कि हिन्दुस्तान फिर उसी भँवर में पड़ जाये, जिसमें वह इस्लामी राज्य के ज़माने में सात सौ साल तक पड़ा भटकता रहा था।"

"देखो, नलिनी बाबू ! बात इस तरह नहीं है जैसा कि आप बयान कर रहे हैं। यह इस तरह है कि इस्लाम एक 'वैन अल्कवामी' मूवमैण्ट है और उस मूवमैण्ट की एक बिना है। हिन्दुस्तान के मुसलमान उस बिना को छोड़ना नहीं चाहते। इससे उनकी अलहदा हकीकत बनी रहेगी। हुकूमत में हम हिन्दुओं से मिलकर रह सकेंगे, मगर अपने कौमी और मज़हबी मामलों में अपने वैन अल्कवामी मूवमैण्ट में शामिल रहेंगे।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। हम आपको यह अख्तियार देंगे कि आप अपने मज़हबी फिरकाई मामलों में आज़ाद हों, मगर यह मज़हब क्या है ? इसका फैसला तो होगा ही।"

इस पर तिलक जी ने वार्त्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि बात तय हो चुकी है। अभी तो हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि दोनों कौमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी अलहदा-अलहदा हस्ती कायम रखते हुए फैसला करेंगी कि हमें स्वराज्य हासिल करना है। बकाया क्या मज़हबी है और क्या कौमी है, यह स्वराज्य मिलने पर तय कर लिया जायेगा।''

''परन्तु भगवन्!'' अब नलिनी ने तिलक जी को सम्बोधन करते हुए कहा, ''एक बात तो अभी से समझ-समझा लेनी चाहिये। वह है धर्म का सार। महाभारत ग्रन्थ में इसका उल्लेख मिलता है। सब धर्मों का सार यह है कि हम दूसरों से वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हम अपने से नहीं चाहते। इस बात को स्वीकार नहीं किया गया तो इकट्ठे रहना मुश्किल हो जायेगा।''

''यह बात तो व्यवहार की आधार-शिला है ही। इसके तय करने की क्या आवश्यकता है?''

''इसलिये कि मुसलमानों ने इस बात को अपने अमल में कभी भी नहीं माना। न अपनी हुकूमत के वक्त और न ही हिन्दुओं के साथ अंग्रेज़ी राज्य में।''

''यह सब हो जायेगा। हमें इनकी बात मान लेनी चाहिये।''

नलिनी के लिये चुप रहने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं रहा। खान-बहादुर ने कहा, ''मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि जिनको हम अपना ज़बर-दस्त मुखालिफ़ समझते थे, वे अपने दोस्त निकले हैं। मैं अब आपके खयालात अपने मज़हब के रहनुमाओं को बताऊँगा और हिन्दुस्तान में तवारीख़ की एक नयी फसल शुरू होगी।''

खानबहादुर गये तो नलिनी ने तिलक जी से पूछ लिया, ''खानबहादुर कह रह थे कि मुसलमानों को एक अलहदा कौम तसव्वुर कर लिया गया है। किसने तसव्वुर कर लिया है?''

''कांग्रेस ने एक कमेटी नियुक्त की है जो मुसलमानों को अपने साथ राजनीतिक आज़ादी हासिल करने की कोशिश में शामिल करने के उपायों पर विचार करेगी। ये साहब मुस्लिम लीग के सदर की हैसियत से उस कमेटी के मैम्बरों से मिले हैं। इस कमेटी में दो मुसलमान हैं और पाँच हिन्दू। पांच हिन्दुओं में चार तो मान गये हैं। मुसलमान अभी नहीं माने। ये मेरे पास इस कारण आये थे कि मैं उस एक हिन्दू को भी समझा दूं। जब पाँचों हिन्दू इनके पृथक् अधिकारों को स्वीकार कर लेंगे तो वे मुसलमान भी, जो मुसलमानों के पृथक् मतदाता सूची और मतदान को स्वीकार नहीं कर रहे, स्वीकार करने पर विवश हो जायेंगे।''

''हिन्दुओं में कौन है जो अभी तक इनको विशेष स्थान देने के पक्ष में नहीं?''

''यही बता रहे थे कि वे हैं पण्डित मदनमोहन मालवीय। इनको हक दिलाने के पक्ष में सबसे ज़बरदस्त सहायक हैं पण्डित मोतीलाल नेहरू।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भगवन् ! मैं आपको एक पक्की बात बताना चाहता हूँ कि पण्डित मोतीलाल और उनके साथी मुसलमानों को अपने साथ मिलाने के लिये उत्सुक इस कारण हैं कि वे आप और आपके विचार के आदमियों को कांग्रेस से बाहर करने या कम-से-कम सामान्य सदस्यों से अधिक दर्जा न देने में कामयाब हो सकें। वे मुसलमानों के मत से आपको कांग्रेस के मंच पर नहीं आने देना चाहते।"

"देखो नलिनी बाबू ! मैंने भी कुछ बातें इनके सामने मानी हैं। वे ये कि मुसलमान एक पृथक् कौम है और हिन्दुस्तान में उनकी एक विशेष स्थिति है। इस कारण इनको अपना साथी बनाना अपने हित में है। मैंने इसी कारण कमेटी को आशीर्वाद भेज दिया है।"

"और आप मालवीय जी को भी यही सम्मति देंगे ?"

"हाँ।"

"तब तो ठीक है। मैं आपको लौह पुरुष मानता रहा था। यह मेरी भूल थी।"

"परन्तु नलिनी बाबू ! जो कुछ इनको दिया जा रहा है वह इनके स्वराज्य-प्राप्ति में सहयोग प्राप्ति की तुलना से बहुत कम है।"

"दो बातें आप भूल रहे हैं। एक यह कि इनका उद्देश्य स्वराज्य-प्राप्ति नहीं है। यह इस्लामी राज्य प्राप्त करना है और आप अनजाने में इनकी इस बात में सहयोग दे रहे हैं। दूसरी बात आप यह भूल गये हैं कि अभी तक जो कुछ अंग्रेज़ों के हाथ से छीना है, वह हिन्दुओं ने छीना है और पूर्ण स्वराज्य भी हिन्दू ही प्राप्त कर सकते हैं।"

"परन्तु हिन्दू बहुत ही दुर्बल और विखण्डित हैं।"

"हाँ, यह तो है। जब आप और मालवीय जी एक मत नहीं तो सामान्य हिन्दू कैसे होंगे ? इस पर भी यदि स्वराज्य प्राप्त होगा तो हिन्दुओं के किये से होगा। मुसलमानों ने यदि किसी बात में सहायता दी तो वह इस्लामी राज्य स्थापित करने में होगी।"

तिलक जी ने यह समझा कि ये सब कल्पना के घोड़े दौड़ाने की बात है। वर्त्तमान इस बात की माँग करता है कि मुसलमानों से सुलह कर ली जाये। इस कारण उन्होंने बात बदल दी। उन्होंने पूछा, "बताइये, आप किसी विशेष प्रयोजन से आये थे ?"

"नहीं, सुना था कि आप कल पूना जा रहे हैं। इस कारण दर्शन मात्र के लिये आया था।"

"अच्छा, हिन्दू-मुसलमान ऐक्य के विषय में आपके समाचार-पत्र की क्या सम्मति है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आज मालवीय जी से मिलने जाऊँगा और उनकी सम्मति और उस सम्मति में युक्ति जानने के उपरान्त निश्चय करूँगा।"

"वाडिया साहब बम्बई में एक दैनिक समाचार-पत्र अपना निकालना चाहते हैं और उनकी हिमायत में मिस्टर एम० ए० जिन्ना, ऐनिबिसेंट, डाक्टर खापर्डे भी हैं। वाडिया कल कह रहे थे कि कमलनारायण के सहयोग से आपके पत्र को वे खरीद लेंगे।"

"हाँ; यह एक नयी बात आपसे पता चली है।"

"जिन्ना साहब खानबहादुर तैयब जी के पास उस समाचार-पत्र के हिस्से बेचने गये थे। खानबहादुर ने एक शर्त के साथ हिस्सा खरीदने मंजूर किये हैं।"

"क्या शर्त की है?"

"उन्होंने बताया नहीं। ऐसा समझ में आया है कि जिन्ना साहब ने वह शर्त मंजूर कर ली है।"

"तब तो आपको चिन्ता करनी चाहिये कि इस दैनिक की आवाज़ भी आपके पक्ष में नहीं रहेगी।"

"हाँ, यह बात विचारणीय है।"

नलिनी ने तिलक जी को नमस्ते कही और चला आया।

: ४ :

खानबहादुर के लड़के हमीद को बम्बई में आये छः मास हो चुके थे और बाप-बेटे में तनातनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। यह तनातनी उस दिन आरम्भ हुई थी जिस दिन हमीद की पत्नी रीनी बम्बई में पहुँची थी। अब हमीद उसे बन्दरगाह से लेकर घर पहुँचा तो खान साहब ने पूछ लिया, "यह कौन है?"

"रीनी है।"

"ओह! कब आयी है?"

"अभी जहाज़ से उतार कर ला रहा हूँ।"

"अब इसे रखोगे कहाँ?"

"यह तो आप बताइये। आखिर मेरी बीवी के लिये भी तो जगह होनी चाहिये।"

"इसीलिये तो इसे अभी न बुलाने के लिये कह रहा था।"

"अब्बाजान! आपके पास तो चार बेगम हैं और उन चारों के लिये जगह है। मेरी एक ही तो बीवी है और उसके लिये आपको फिक्र क्यों नहीं? मुझे बीवी से अलहदा हुए सात महीने होने जा रहे हैं।"

"मगर यह यहाँ बुर्का पहन कर रहेगी क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उतना ही बुर्का पहनेगी जितना कि मरियम अम्मी पहनती हैं।"

"पर उसे तो खाविन्द ने अपने से अलहदा कर रखा है।"

"इसका खाविन्द भी जब तीन और बीवियाँ ले आयेगा तो अलहदा कर देगा।"

"बहुत दलील करनी सीख आये हो ?"

"इसीलिये तो वकालत की पढ़ाई की थी।"

"मुझे शक हो रहा है कि तुम भी तबस्सुम से मिलते रहते हो ?"

"हाँ, मिला तो हूँ उससे। मगर यह राय उसने नहीं दी कि मैं अपनी बीवी को बुला लूँ।"

"तो किसने दी है ?"

"मैं इस वक्त बाईस-तेईस वर्ष का जवान हूँ। मेरी जवानी ने ही यह राय दी है।"

"तो ऐसा करो कि इसके लिये मरियम से ही एक कमरा माँग लो।"

"मैंने छोटी अम्मी से बात की है। वे कह रही हैं कि उनका बैठकघर और साथ का कमरा अभी मिल सकता है।"

"तो कर लो इन्तिज़ाम। इसे यहाँ किसलिये लाये हो ?"

"आपसे इसकी तआरुफ कराने के लिये।"

"ले जाओ इसे और देखो, अपनी आयशा अम्मी से कह दो कि जब तक यह उस कमरे में रहेगी, हम वहाँ नहीं आयेंगे।"

"अब्बाजान ! आपके हुक्म की तामील करूँगा।"

"तामील के बच्चे, चले जाओ यहाँ से।"

हमीद ने पिछले दो महीने से खानबहादुर के कारोबार पर अधिकार ज़माना आरम्भ कर दिया था। खानबहादुर की एक बहुत बड़ी ज़मींदारी थी और कई कपड़ा मिलों में हिस्से थे। साथ ही वे बहुत बड़े नमक बनाने के क्षेत्र पर अधिकार रखते थे। हमीद ने ज़मींदारी के मैनेजर से और नमक क्षेत्रों के ठेकेदारों से सम्पर्क बना लिया था। बम्बई में कई मकान भी थे। हमीद उन सबसे किराया वसूल करने लगा था। इस पर भी बहुत-सी आय बैंकों के चैकों द्वारा ही आती थी और वह रकम खानबहादुर के बैंक के खाते में जमा करानी पड़ती थी। ज़मींदारी से आय नकद आती थी। हमीद ने जिस दिन से रीनी को पत्र लिखा था, उसी दिन से वह ज़मींदारी अथवा अन्य स्रोतों से नकद आने वाला रुपया बैंक में अपना हिसाब खोल उसमें रखने लगा था। घर में खर्चा सबको वही देता था।

खानबहादुर की धमकी आयशा ने हमीद के मुख से सुनी तो हँस पड़ी।

"अम्मीजान ! किसलिये हँसी हैं आप ?"

आयशा गम्भीर हो बोली, "बरबस हँसी निकल गयी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही तो पूछ रहा हूँ कि मेरी बेवकूफी पर हँसी हैं क्या ?"

"नहीं हमीद ! तुम्हारे वालिद साहब की बेवकूफी पर हँसी हूँ। कुछ बात है जो एक माँ अपने बेटे को बता नहीं सकती और अगर तुम अपने बाप के बेटे हो तो समझ जाओगे।"

"तो अम्मी ! आपको इसमें भी शक है क्या ?"

"मेरा मतलब औसाफ[1] से है।"

"यह बात तो है।"

"मुझे तुम्हारे वालिद साहब का हुक्म है कि मैं तुम्हारी अम्मी से न मिला करूँ। मैं आज उनसे मिलूँगी। मुझे कुछ ऐसा समझ में आ रहा है कि हमारा गुज़ारा भी बन्द हो रहा है।"

"यह क्यों ?"

"इसलिये कि उनका घर पर काबू नहीं रहा और काबू रखने वाली शै उनके पास है नहीं।"

"पर अम्मी ! रुपया तो मेरे कब्ज़े में आता है। अब्बाजान वह बन्द नहीं कर सकेंगे।"

आयशा कुछ विचार करती हुई, रीनी को साथ ले मरियम के कमरे में चली गयी। मरियम आयशा को एक युरोपियन पहरावे में लड़की के साथ जाते देख समझ गयी। उसने कहा, "आओ, आओ आयशा ! यह हमीद की बहू है न ?"

"हाँ। आज मैं दो साल बाद आपके दीदार हासिल कर सकी हूँ। मुझे आपके सामने आने का हुक्म नहीं था ?"

"तो आज हुक्म खुल गया है ?"

"नहीं; मुझे आप पर और अब इस बहू पर रश्क[2] होने लगा है। इसके असर को मैं रोक नहीं सकी और बग़ावत पर आमादा हो गयी हूँ।"

"नतीजा जानती हो, क्या हो सकता है ?"

"क्या हो सकता है ?"

"तुम्हारा तलाक ! खाना-पीना बन्द और शायद कोठी से धक्के दे-देकर घर से निकाल दी जाओगी।"

"जहाँ तक तलाक की बात है, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे खाविन्द का हक मुझसे वसूल नहीं करते और मैं समझती हूँ कि अब कर भी नहीं सकते। घर से बाहर वे निकाल नहीं सकते। हमीद मेरे साथ लड़के का-सा सलूक करता है।"

मरियम हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "बहुत मज़ेदार रिश्ता है। सोलह-सत्रह साल की उमर की माँ और तेईस-चौबीस साल का लड़का।"

---

१. गुण; २. ईर्ष्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयशा भी इस तुलना पर हँसने लगी और हँसते हुए बोली, "सब ख़ुदा की मेहर है।"

"ख़ुदा पर बहुत भरोसा मत किया करो, आयशा ! ऐन वक्त पर वह कहीं दिखायी नहीं देगा।"

"पर ख़ुदा पर भरोसा न करूँ तो किस पर करूँ ? माँ-बाप बहुत गरीब हैं। खानबहादुर बूढ़े हो गये हैं और चार-चार बीवियाँ रखने की वजह से खाविन्द का काम करने के न-काबिल हो गये हैं। लड़का मिला है, मगर वह लड़के की उमर से कुछ बड़ा है। इसलिये कहती हूँ कि यह ख़ुदा की मेहर है। उसी ने तो हमीद को भेज दिया है।"

मरियम मुस्करायी और बोली, "यह तो ठीक है, मगर ज़रा ऐहतियात से। कहीं यह मेहर वापस न ले ले।"

"मैं तो इसलिये आयी हूँ कि इसके आने से घर में एक नयी हालत पैदा हो रही है। मेरा मतलब है कि हमीद की बाप से लड़ाई हो गयी और ऐन मुमकिन है कि उसके हाथ में रुपया आना बन्द हो जाये और हम सबका गुज़ारा मुश्किल हो जाये।"

"मेरा ख़र्चा बन्द नहीं कर सकते। मैं तो विलायत जाकर नालिश कर पाई-पाई वसूल क़र लूँगी।"

"पर तकलीफ तो होगी।"

"हाँ; पर क्या करें ? यदि घर में हम सब मिल जायें तो इस बूढ़े मियाँ को मज़ा चखा सकते हैं।"

"घर में आप किस-किस को समझती हैं ?"

"हम चारों बेगमें, हमीद और एक तबस्सुम बहन। अभी तो घर में ये ही हैं।"

"मैं तो इसमें शामिल होने आयी हूँ। हमीद के भी शामिल होने की बात कह सकती हूँ। ज़रीना बहन भी शामिल हो जायेंगी। मुश्किल सुरैया बहन की है। तबस्सुम का कुछ खास तअल्लुक इस घर से नहीं रहा, मगर आप उससे मिलती रहती हैं। पूछ लीजिये।"

"मैं ज़रीना बहन को अभी बुला लाती हूँ। सुरैया के मुतअल्लिक पीछे देख लेंगे।"

मरियम उठी और ज़रीना के कमरे में चली गयी। ज़रीना चटाई पर बैठी कुरआन की तलावत कर रही थी। मरियम को देख वह प्रश्न-भरी दृष्टि में उसकी ओर देखने लगी। मरियम ने कहा, "कोई ज़रीना बहन से मिलने मेरे कमरे में आया है।"

ज़रीना ने समझा कि यह तबस्सुम हो सकती है। मगर वह यहाँ कैसे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों आयी, वह समझ नहीं सकी। उसने पूछा, "तबस्सुम है?"

"नहीं बहन! कोई और है। जल्दी आओ।"

"ज़रीना ने किताब बन्द की। उसे कपड़े में लपेटा और अलमारी में रख मरियम के साथ उसके कमरे में जा पहुँची। वहाँ आयशा को बैठे देख वह समझ गयी कि वह खान साहब से चोरी-चोरी आयी है। उसने आयशा को सम्बोधन करते हुए कहा, "ओह, आयशा! तुम यहाँ बैठी क्या कर रही हो?"

"घर में इस नये पंछी को आपसे मिलाने लायी हूँ। यह हमीद की बहू है।" आयशा ने रीनी का परिचय करा दिया।

"ओह!" रीनी की पीठ पर हाथ फेरते हुए और उसके समीप बैठते हुए ज़रीना ने कहा, "मैं हमीद की माँ हूँ। सुनाओ, कब आयी हो?"

उत्तर आयशा ने ही दिया, "इसका जहाज़ आज ही यहाँ पहुँचा है और घर में आये इसे दो घण्टे से भी कम अर्सा हुआ है। इसे अभी मैंने अपने कमरे में रख लिया है।"

"ठीक है, आयशा! तुम्हारे पास कमरे भी सबसे अधिक हैं। तुमने इसे अपने पास रखकर ठीक ही किया है।"

"पर बहन जी! इससे एक बात पैदा हो गयी है। मुझे भी आपकी तरह धमकियाँ मिलने लगी हैं।"

"तो फिर क्या हुआ? तुम भी हमारी तरह रहने लगना।"

"मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि हमीद से भी खानबहादुर नाराज़ हो रहे हैं। उसको कारोबार से निकाला तो फिर खर्चा बन्द हो जायेगा और हम सबको पहले की तरह तकलीफ़ होने लगेगी।"

"तो फिर?"

"मेरी राय है कि हम सबको इकट्ठे मिलकर कोई अमल अख्तियार करने के लिये तैयार रहना चाहिये।"

"क्या अमल अख्तियार करना चाहती हो?"

"यह तो आपस में राय कर ही फैसला करेंगे। मेरा सिर्फ यह कहना है कि हम घर के सब लोग इकट्ठे हो जायें और एक-दूसरे की मदद के लिये आमादा हो जायें तो खानबहादुर को हमारे मुताबिक चलना होगा।"

ज़रीना ने कह दिया, "मैं इसे बग़ावत के नाम से अख्तियार करना नहीं चाहती। इसे अपने हक-हकूक की हिफ़ाज़त के लिये एक जमायत का नाम दो तो मैं मान जाऊँगी।"

"क्या फरक है दोनों में?" आयशा ने पूछ लिया।

"इस नज़रिया से सोचोगी तो अमल में फ़र्क आयेगा। एक में दूसरे को तंग करने और नुकसान पहुँचाने के लिये अमल होता है और दूसरे में अपनी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने हक-हकूक की हिफ़ाज़त में अमल होता है।''

''बड़ी बहन जी ! मैं दोनों में फरक नहीं समझी। मकसद दोनों में एक हो तो अमल में फरक हालात की वजह से हो जाता है और हालात पर काबू रखना किसी के बस की बात नहीं होती। यह गैबी ताकत के मातहत है।''

ज़रीना समझने लगी थी कि वह नीयत और अमल में गलत-मलत करने लगी थी और यह उमर में छोटी अक्ल में तेज़ होती जाती है। इससे वह विचार करने लगी कि मकसद के मुतअल्लिक ही बात साफ कर लें।

''मगर मेरा तो सवाल है कि हम चाहती क्या हैं?'' ज़रीना ने पूछ लिया।

अब मरियम ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''हम चाहती हैं कि हमें वजीफा मिलता रहे। हमें बिना बुर्के के घूमने-फिरने की इजाज़त हो। मर्ज़ी से खाने और पहनने की इजाज़त हो और अपने-अपने अकीदे के मुताबिक खुदा की परस्तिश करने या न करने की आज़ादी हो।''

''मगर एक मुसलमान के घर की औरतें बिना पर्दे के घर से बाहर घूमने जायेंगी तो घर की बदनामी होगी।''

''मैं तो कुछ उल्टी बात मानती हूँ। हमारी और खानबहादुर की नेकनामी होगी। वे एक आज़ाद खयाल और फराक-दिल शख्स समझे जाने लगेंगे।''

''एक बात करो।'' ज़रीना ने समझौता करने के लिये उद्देश्यों में सुधार कर दिया। उसने कहा, ''जहाँ तक रोटी-कपड़े और खाने-पीने का तअल्लुक है, हमारे हक-हकूक की हिफाज़त होनी चाहिये। जहाँ तक बाहर घूमने और बिना पर्दे के घूमने की बात है, इसकी आज़ादी हो, मगर किसी पर मजबूरी न हो।''

आयशा हँस पड़ी और बोली, ''बहन जी ! क्या फरक़ है दोनों में ?''

''यह हक,'' ज़रीना ने अपना मतलब समझाते हुए कहा, ''कि हम घर से बाहर बुर्का पहन कर जायें या न पहन कर जायें, मैं हर एक के अपने हाथ में रहने देना चाहती हूँ। कहीं ऐसा न हो कि यह हक आपकी बाग़ी मजलिस अपने मातहत कर ले और ज़बरदस्ती बुर्के उतारने लगे।''

इस पर रीनी भी हँस पड़ी। मरियम ने उसको हँसते देख पूछ लिया, ''रीनी ! क्या समझी हो ?''

रीनी ने मरियम से अंग्रेज़ी में कहा, ''मैं अभी थोड़ी-थोड़ी हिन्दुस्तानी समझती हूँ। इसलिये गलत भी हो सकता है। मैं समझी थी कि आप यह समझती हैं कि हम लोग इनका बुर्का फाड़ डालेंगी, जब यह इसे पहन कर घर से बाहर जाने लगेंगी।''

मरियम ने रीनी का अभिप्राय दोनों बेगमों को समझाया तो ज़रीना ने कहा, ''तुम ठीक समझी हो। इसे भीड़ की तानाशाही कहते हैं। एक शख्स की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तानाशाही इतनी बुरी नहीं होती जितनी कि किसी मजमे की तानाशाही होती है।''

''हम यह नहीं करेंगी।'' आयशा ने कहा।

: ५ :

ज्यों-ज्यों युरोप का युद्ध तीव्र होता जाता था और अंग्रेज़ों की विजय पर सन्देह होता जाता था, मुस्लिम लीग अधिक और अधिक कार्यशील होती जाती थी। तुर्की ने दरा दानियाल पर बहुत डट कर मुकाबला किया था। फ्रांस में अंग्रेज़ पराजित हो रहे थे। इराक में अंग्रेज़ी फौजों को भारी हानि सहन करनी पड़ी थी। इन सब घटनाओं से प्रभावित मुसलमान अंग्रेज़ों पर ज़्यादा दबाव डाल कर दुनिया में इस्लाम की रक्षा का प्रबन्ध करना चाहते थे। मुसलमानों में कुछ ऐसे लोग भी थे, जो हिन्दुस्तान में बग़ावत कर अंग्रेज़ों को यहाँ से खदेड़ देना चाहते थे। उनका खयाल था कि इस समय इंगलैण्ड मुसीबत में फँसा है और यही उचित अवसर है कि हिन्दुस्तान में पुनः इस्लामी हुकूमत कायम की जाये। इनमें मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना शौकत अली प्रमुख थे।

मगर खानबहादुर नसीरुद्दीन साहब दूसरे खयाल के लोगों में थे। वे समझते थे कि अगर हिन्दुस्तान से ब्रिटिश राज्य चला गया तो यहाँ हिन्दू राज्य बनेगा; मुसलमान अब वैसी हुकूमत नहीं बना सकते, जैसी कि मुगलों की थी। इसलिये वे हिन्दुओं से साँठ-गाँठ अंग्रेज़ों के जाने से पहले करना चाहते थे। इसी कारण नसीरुद्दीन साहब कांग्रेस की उस कमेटी से बातचीत कर रहे थे जो हिन्दू-मुसलमान में समझौते के लिये नियुक्त की गयी थी।

इसी सन्दर्भ में वे कमेटी के सब मैम्बरों से मिले थे। सबसे ज्यादा अनुकूल कमेटी के संयोजक पण्डित मोतीलाल थे और सबसे अधिक विरोधी पण्डित मदन-मोहन मालवीय थे। कमेटी में एक बंगाली भी थे। कलकत्ता खानबहादुर उसी से मिलने गये थे।

कलकत्ता से खानबहादुर इलाहाबाद गये। वहाँ वे तब तक रहे जब तक कि कमेटी ने फ़ैसला नहीं कर लिया। बात वही हुई जो खानबहादुर उम्मीद करते थे। पाँच हिन्दुओं में चार, मुसलमानों के पृथक् मतदान का अधिकार देने पर राज़ी थे। केवल पण्डित मदनमोहन मालवीय इसके विरुद्ध थे। जब चार हिन्दुओं ने स्वेच्छा से मुसलमानों को एक पृथक् कौम स्वीकार किया तो मुसलमान सदस्य भी मानने पर विवश हो गये। इस प्रकार सात की कमेटी में छः की एक राय हो गयी। इस कमेटी में यह भी निश्चय किया गया कि हिन्दुस्तान को युद्ध के उपरान्त औपनिवेशिक राज्य मिलना चाहिये। मुस्लिम लीग इसके लिये कुछ अधिक उत्सुक नहीं थी, परन्तु हिन्दू इससे कम पर तैयार नहीं थे। इस कारण वे चुप रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों में से उग्रवादी मौलाना परिवार के लोग जो अलीगढ़ कालेज की उपज थे, वे हिन्दुओं के सहयोग की न तो आशा करते थे और न ही ज़रूरत अनुभव करते थे। उनका खयाल था कि वे अपने उद्देश्य में बिना हिन्दुओं की मदद के ही सफल हो जायेंगे। यह तो अंग्रेज़ ही हैं जो हिन्दुओं की रक्षा कर रहे हैं। इस विचार के मुसलमानों को सरकार ने बन्दी बना लिया था।

तिलक जी ने खानबहादुर नसीरुद्दीन साहब को आशीर्वाद दे दिया था। इस आशीर्वाद की खबर लेकर खानबहादुर पण्डित मालवीय के पास जा पहुँचे और उन्होंने उनको बताया कि तिलक जी इस बात के लिये राज़ी हो गये हैं कि मुसलमानों को पृथक् कौम मान कर उनके पृथक् राजनीतिक अधिकार मान लिये जायें।

पण्डित मदनमोहन मालवीय इस पर भी राज़ी नहीं हुए और अन्त तक इस विचार का विरोध करते रहे।

सन् १९१६ में लखनऊ में कांग्रेस-अधिवेशन हुआ। इसी समय वहाँ मुस्लिम लीग का भी अधिवेशन हुआ। मुस्लिम लीग के लोग कांग्रेस के खुले इजलास में जाते थे और हर प्रकार से यत्न करते थे कि कांग्रेस में हिन्दू-मुसलमान समझौते का प्रस्ताव स्वीकार हो जाये; साथ ही वे मुस्लिम लीग के अधिवेशन में मुसलमानों के लिये करणीय पर विचार करते थे।

कांग्रेसी हिन्दुओं में हिन्दू-दृष्टिकोण से तो कोई वहाँ गया नहीं था और न ही उनमें देश-हित का विचार था। प्रायः नरम दल के लोग ही वहाँ थे, जो यह समझ रहे थे कि उनकी मान-प्रतिष्ठा देश के पढ़े-लिखे लोगों में कम हो रही है, जो नहीं होनी चाहिये। पण्डित मोतीलाल अपनी कमेटी के प्रस्ताव के पक्ष में यह कहते फिरते थे कि अगर हमने मुसलमानों से समझौता न किया तो कांग्रेस के 'मॉडरेटों'[1] का पक्ष दुर्बल हो जायेगा और कांग्रेस पर 'ऐक्सट्रीमिस्ट्स'[2] का अधिकार हो जायेगा; मॉडरेटों की न देश में और न ही सरकारी क्षेत्रों में कुछ भी प्रतिष्ठा रह सकेगी; मुल्क भी रसातल को चला जायेगा; ग़दर-पार्टी का ज़ोर बढ़ेगा और ये फ्रांसीसी क्रान्ति जैसा ग़दर यहाँ बरपा कर देंगे।

नलिनीकान्त लखनऊ आया था और पत्थर की दीवार से टक्कर मारने की भाँति वह अपने प्रयत्न में असफल हो अधिवेशन से लौटने का विचार कर रहा था कि उसकी दृष्टि खानबहादुर के पुत्र हमीद खाँ पर जा पड़ी। उसे हमीद कांग्रेस के दर्शक-कक्ष में सबसे अगली पंक्ति में बैठा दिखायी दिया। नलिनीकान्त तो 'प्रैस' के कक्ष में था।

---

१. नरम-दल वालों; २. उग्र-पन्थियों।

—१९

Central Library
167918
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने स्थान पर निराश बैठा था और विचार कर रहा था कि इन अदूरदर्शियों के समारोह में वह अपना समय व्यर्थ गँवा रहा है कि हमीद को देख वह उठकर दर्शक-गैलरी में चला गया और अपना मार्ग बनाते हुए प्रथम पंक्ति में पहुँच, हमीद के समीप एक खाली कुर्सी पर जा बैठा। हमीद ने उस कुर्सी पर किसी को बैठते देख कह दिया, "यहाँ एक लेडी बैठी हैं।"

नलिनी ने कहा, "मैं अभी जा रहा हूँ। मुझे आपसे मिलना है। आज दोपहर का खाना यदि आप मेरे यहाँ लें तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

इस पर हमीद ने ध्यान से नलिनीकान्त की ओर देखा और वह उसे पहचान गया। वह उससे एक ही बार पहले मिला था। यह उस दिन की बात थी जब वह विलायत से लौटने के उपरान्त पहली बार तबस्सुम से मिलने गया था। इसे दो वर्ष होने को जा रहे थे। उसके उपरान्त वह तबस्सुम से केवल होटल में ही मिलने जाया करता था।

अब बम्बई में टेलीफोन लग रहे थे और जहाँ 'बॉम्बे न्यूज़' के कार्यालय में टेलीफोन था, वहाँ खानबहादुर की कोठी में भी था। दोनों टेलीफोन से निश्चय कर लेते थे और खानबहादुर के घर के लोग तबस्सुम से मिल आया करते थे।

जब हमीद ने पहचाना तो कह दिया, "मुआफी चाहता हूँ। मैंने पहचाना नहीं था। आप तो तबस्सुम के पिता जी हैं। बैठिये, मेरी पत्नी मेरे साथ है। वह बाहर किसी काम से गयी है।"

"मैं उसके आने से पहले ही चल दूंगा। मैं रॉयल होटल में ठहरा हूँ। अगर अपनी पत्नी के साथ खाने पर आओ तो बहुत अच्छा रहेगा।"

"मैं आ जाऊँगा।"

नलिनी उठकर जाने लगा तो रीनी वहाँ आ खड़ी हुई। हमीद ने दोनों का परिचय करा दिया, "यह है मेरी बीवी रीनी तैयब जी।"

नलिनी ने हाथ मिलाया और अपना निमन्त्रण दोहरा दिया। रीनी ने अपने पति के विचार जानने के लिये उसकी ओर देखा तो हमीद ने कह दिया, "यह तबस्सुम के 'फ़ादर इन ला' हैं। हमें इनका इन्विटेशन स्वीकार करना ही चाहिये।"

नलिनी लौट कर अपने स्थान पर चला गया।

इस समय मंच पर पण्डित मदनमोहन मालवीय बोल रहे थे। वे कमेटी की रिपोर्ट के इस अंश को अस्वीकार करने के लिये कह रहे थे जिसमें कि मुसलमानों के लिये पृथक् मतदाता सूची और उनकी पृथक् विधान-सभा और म्युनिसिपल कमेटियों में पृथक् स्थानों की सिफ़ारिश की गई थी।

पण्डित जी कह रहे थे कि मजहबी विचार से विधान सभा और अन्य निर्वाचित संस्थानों में किसी भी फिरके के लिये पृथक् स्थान बनाना देश के लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को गुटों में बाँटना होगा। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि देश में मज़हबों के आधार पर राज्य स्थापित हो जायेंगे। ये राज्य, तब सदा अंग्रेज़ी राज्य को पंच के रूप में स्वीकार करने पर विवश हो जायेंगे।

मालवीय जी ने यह भी बताया कि मज़हबी राज्य हटाने में हम बहुत कठिनाई से सफल हुए हैं और यह प्रस्ताव दोबारा इस मुल्क में मज़हबी राज्य स्थापित करने का निमन्त्रण है।

परन्तु मालवीय जी का यह कथन आरण्य-रोदन के तुल्य था और इसका प्रभाव एकत्रित हुए लोगों पर कुछ नहीं हुआ। यहाँ तक कि तिलक जी ने खुले अधिवेशन में भी समझौते का समर्थन कर दिया।

इस समय नलिनी उठकर चला आया और होटल में पहुँच अपने समाचार-पत्र के लिये समाचार लिख तार देने चला गया।

तारघर से लौटा ही था कि हमीद और उसकी पत्नी आ पहुँचे।

"आइये, मिस्टर हमीद ! खानबहादुर के साथ ठहरे हैं क्या ?" नलिनीकान्त ने पूछ लिया।

"नहीं; हमारी उनसे बोलचाल नहीं है।"

"ओह ! क्यों ?"

"उन्होंने मेरी बीवी को पसन्द नहीं किया और चाहते थे कि मैं इसे वापस विलायत लौटा दूं।"

"उनके पसन्द करने की इसमें क्या ज़रूरत थी ?"

"वे चाहते थे कि यह बुर्का पहन हरम में बन्द हो जाये। यह बात हमने मंज़ूर नहीं की और झगड़ा हो गया है।"

"तो तुम बम्बई में कहाँ रहते हो ?"

"रहता तो उसी कोठी में ही हूँ, मगर हमारी बोलचाल नहीं है।"

"मगर गुज़ारे के लिये तो मिलता होगा ? तुम काम-धन्धा तो करते नहीं।"

"इसके आने से पहले तो मैं ज़मींदारी का प्रबन्ध करता था और घर के सब प्राणियों के वजीफे बाँटता था। अब वह इन्तज़ाम मुझसे ले लिया गया है। यह वे खुद मुंशी की मदद से करते हैं। उन्होंने गुज़ारा देना सबको बन्द कर दिया। इस पर मरियम अम्मी की सरपरस्ती में सबने गुज़ारे के लिये दावा दायर कर दिया। इस दावे की पहली पेशी पर ही एक मिस्टर एम० ए० जिन्ना सालिस मुकर्रिर कर दिये गये और उन्होंने हमारा खर्चा बंधवा दिया है। अगर वे खर्चा न दें तो हमें अख्तियार दिया गया है कि हम उनकी जायदाद कुर्क करवा लें। तब से मैं एक पेंशन-याफ्ता आज़ाद शहरी के तौर पर रहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारी अम्मियों का क्या हालचाल है ?"

"अब सब गुजारेदार हैं। दो अम्मियाँ, मेरी अम्मी और मरियम अम्मी अपना अलहदा खाना बनाती हैं। हम, मेरा मतलब है कि मैं और यह मेरी बीवी अपनी सबसे छोटी अम्मी के साथ रहते हैं और हमारा खाना-पीना इकट्ठा है। मेरी एक अम्मी और हैं। वे वालिद साहब के साथ रहती हैं, मगर वजीफा अपना अलहदा वसूल कर लेती हैं।"

"अपनी बहन से कभी मिलते हो अथवा नहीं ?"

"हम खाविन्द बीवी, हमारी अम्मी और मरियम अम्मी तो मिला करते हैं। हम ताज होटल में कभी-कभी चाय पर इकट्ठे हो जाते हैं। आपके साहबज़ादे मिस्टर विजय के भी दीदार कभी-कभी वहीं पर हो जाया करते हैं।"

"तो सरस्वती ने तुम्हें कभी अपने घर पर दावत नहीं दी ?"

"वह तो कहती रहती है, मगर हमारी वालिद साहब से, उनके घर में रहने की यह शर्त है कि हम आपके घर पर न जायें। वे जानते हैं कि हम तबस्सुम और उसके घर वाले से ताज में मिला करते हैं। उनको हमारा आपके घर पर जाने में ऐतराज़ है।"

"खैर, छोड़ो इस बात को। तुम यह बताओ कि ज़िन्दगी इसी तरह जाया करते रहोगे, या कुछ मुफ़ीद काम भी करोगे ?"

"काम तो हम कर रहे हैं। हम यहाँ हिन्दुतान में ट्रेड यूनियन कायम करने का यत्न कर रहे हैं।"

"ओह ! तो फ्रांस की बला यहाँ पर भी ला रहे हो ?"

"मैं तो इस काम में इसलिये शामिल हो गया हूँ, क्योंकि रीनी इसे करना चाहती है। अभी तक हमें इसमें खास कामयाबी हासिल नहीं हुई। यहाँ के मज़दूर, हिन्दू और मुसलमान, दोनों खुदा और किस्मत पर बेहद भरोसा रखते हैं। इसलिये अपनी हालत सुधारने के लिये खुद कुछ करना नहीं चाहते।"

"हाँ। यह आन्दोलन, मेरा मतलब है कि मज़दूर-आन्दोलन यहाँ पुराने ढंग से सोचने वालों के लिये चलाना मुश्किल है।"

"और आप भी यही बात मानते हैं ?"

"बिलकुल। मैं यह समझता हूँ कि मज़दूर और मालिक में नौकर रखने के वक्त एक प्रकार का शर्तनामा होता है। उस शर्तनामे में एक बात यह होती है कि अगर दोनों में किसी भी वजह से न बने तो नौकर को अख्तियार है कि नौकरी छोड़ दे और मालिक भी जब चाहे उसे निकाल सकता है। दोनों को हक हासिल है कि वह अपना दूसरा प्रबन्ध कर ले।"

इस वक्त बैरा खाना ले आया। वह परस दिया गया। जब तक खाना लगाया जाता रहा, वे चुपचाप बैठे रहे। बैरा गया तो फिर बात शुरू हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बातचीत रीनी ने आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मशीनों के आविष्कार से मालिक-नौकर में एक नया रिश्ता कायम हो रहा है। वह मालिक-नौकर का नहीं, बल्कि एक काम में दोनों के साँझीदारी का है। मालिक बिना नौकर के काम नहीं कर सकता और नौकर मालिक के बिना काम नहीं कर सकता। इसलिये बात बदल गयी है और अब यह रिश्ता इस तरह नहीं टूट सकता जैसे कि पहले टूटा करता था।"

"मगर यह बात तो दोनों पर लागू है। मालिक भी तो अपने कारखाने को बन्द नहीं कर सकता।" नलिनी का कहना था।

"बिलकुल ठीक है। मगर एक तरफ धन है। वह आसानी से नये कर्मचारी भरती कर सकता है और दूसरी तरफ धन नहीं है और मज़दूर नया कारखाना नहीं लगा सकता। इसलिये हम दोनों को बराबर-बराबर रखने के लिये मज़दूरों को तनज़ीम में लाकर ऐसा इन्तज़ाम करना चाहते हैं कि मालिक को नये मज़दूर न मिल सकें।"

"बहुत खूब!" नलिनी समझ गया कि यह औरत हमीद से ज़्यादा समझदार है। यद्यपि वह समझता है कि उसकी दलील में दोष है, परन्तु उसके बात के कहने के ढंग पर वह प्रसन्न हो गया था।

उसने कहा, "यह बात तो ठीक है, मगर दो बातें हैं। एक है धन और दूसरा नये मज़दूर। कारखाने के मालिक के पास धन गैर-कानूनी तरीके से आया नहीं। इसलिये उस धन के अनुचित प्रयोग को रोकने के लिये कोई गैर-कानूनी तरीका इस्तेमाल तो होना नहीं चाहिये।"

रीनी इस युक्ति को समझी नहीं। उसने कहा, "आप अपनी बात को ज़रा व्याख्या से बताइये।"

"मेरा मतलब यह है कि मालिक को नये नौकर न मिल सकें, उसके लिये आप क्या उपाय प्रयोग करना चाहते हैं?"

"मान लीजिये सूसन क्लाथ मिल में एक सहस्र कर्मचारी नौकर हैं। हम उनकी एक यूनियन बना रहे हैं। यदि उसके काम करने वाले एक सभा बना लें तो वह सभा मालिक से मज़दूरों की ओर से बातचीत कर सकती है। अगर मालिक किसी मज़दूर को निकाल दे तो सभा सब मज़दूरों को एकदम काम बन्द कर देने का हुक्म जारी कर देगी। कारखाना बन्द हो जायेगा और मालिक को घाटा होने लगेगा। इस पर वह विवश हो मज़दूर सभा की बात मान जायेगा।"

"देखो रीनी! इस बात को तो मैं न्यायसंगत मानता हूँ, मगर इसका नतीजा यह भी तो हो सकता है कि जो भी कर्मचारी काम बन्द करें, उनकी मालिक छुट्टी कर दे और उनकी जगह पर नये कर्मचारी भरती कर ले। सब-के-सब कर्मचारी जो सभा में सम्मिलित हैं, निकाल दिये जायें। अब नये भरती कियों में नयी सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनानी कठिन हो जायेगी।"

"हम ऐसा नहीं करने देंगे। निकाले गये कर्मचारियों की जगह पर जो भी नया भरती होगा, उसे काम पर नहीं जाने देंगे।"

"मतलब यह कि तुम कुछ ऐसा करोगे जो बराबर की साँझेदारी में भी न्यायसंगत नहीं माना जाता ?

"देखो, मैं समझाता हूँ। दो भाई हैं। वे एक ज़मींदारी को चलाते हैं। दोनों में किसी बात पर झगड़ा हो जाता है। क्या एक भाई यह कह सकता है कि वह जमींदारी का काम नहीं चलने देगा, जब तक उसकी बात मानी नहीं जाती ? बात मनवाने या मानने का एक मुकर्रिर तरीका अदालत है। आखिर बात तो यही है न कि किसी बात पर मतभेद है और यूनियन कर्मचारी की बात को ठीक मानती है। तो क्या ठीक बात को मनाने का यह तरीका है कि दूसरे को अपने अधिकार का प्रयोग न करने दिया जाये ? अदालत क्यों नहीं ?"

"हाँ; यह ऐसा रिश्ता है जैसा कि पति-पत्नी में होता है और जो टूट नहीं सकता !"

"मगर विलायत में तो वह भी टूट सकता है। उसके तोड़ने का भी एक तरीका है। वह तरीका मालिक-कर्मचारी के रिश्ता को तोड़ने में भी प्रयोग किया जा सकता है।"

"हम मालिक पर दबाव डालना चाहते हैं कि वह यूनियन की बात मान जाये।"

"दबाव डालकर कोई बात मनवानी न्याय और कानून के विपरीत है।"

"हम कानून ही बदलवाना चाहते हैं। मेरा मतलब है कि दबाव डालकर बात मनवानी कानून से जायज़ हो जाये।"

"ठीक है। तब इसमें केवल मालिक और कर्मचारी की बात नहीं रह जायेगी। सारे मुल्क की बात हो जायेगी। मुल्क के सब रहने वालों की बात हो जायेगी। जिसका बस चलेगा वह दबाव डालकर अपनी बात मनवा लेगा।

"देखो रीनी ! एक बात समझ लो कि अगर एक बार यह असूल मान लिया गया कि दबाव डालकर किसी से कोई भी बात मनवायी जा सकती है तो देश में सबसे ज़बरदस्त तो राजा होता है और वह सारी प्रजा को नाकों-चने चबवा देगा। ऐसा समय भी आ सकता है कि राजा अथवा राज्य सारी-की-सारी कौम को भेड़-बकरियों की भाँति हाँक कर जो मर्ज़ी है, करा लिया करे।"

"यह तो होता ही है।"

"हम इसके खिलाफ हैं। यही झगड़ा तो हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ के साथ कर रहे हैं। हम किसी का बलपूर्वक दूसरे को विवश कर अपनी बात मनवाना पसन्द नहीं करते और तुम यहाँ आयी हो कर्मचारियों की बात बलपूर्वक मालिकों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनवाने।"

"तो फिर इसका तरीका जो आपने बताया है वह भी गलत है। अदालत में किसी एक झगड़े का फैसला कराने में वर्षों लग जाते हैं। इतने में तो गरीब कर्मचारी भूखा मर जायेगा।"

"अदालतों के काम करने के तरीके में सुधार की आवश्यकता है। इसके लिये हमीद साहब को वकीलों को संगठित करना चाहिये, मज़दूरों को नहीं।"

"नहीं; आप राजनीति नहीं जानते। राजनीति में दबाव डालकर राज्य को किसी बात पर विवश करने का ढंग मान्य है।"

"यह तो मैं स्वीकार करता हूँ, परन्तु दबाव बुद्धि पर होना चाहिये। ऐसी स्थिति उत्पन्न करनी, जिससे बुद्धि विचार करने पर विवश हो जाये, एक वैधानिक उपाय है; परन्तु किसी बात पर बिना बुद्धि को प्रेरणा दिये बल से मनवाने से सफलता तो मिल सकती है, परन्तु यह अन्याय-संगत होने के कारण विस्फोटक परिणाम उत्पन्न कर सकती है।"

"ऐसा होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। इस कारण गरीबों के अधिकारों के लिये ऐसा क्यों न किया जाये?"

: ६ :

खाना समाप्त हो चुका था। नलिनी भी समझ रहा था कि यह मानसिक विधा युक्ति से ठीक नहीं हो सकती। रीनी युरोपियन शिक्षा से उत्पन्न संस्कार लेकर यहाँ आयी है और उन संस्कारों के अनुसार ही कार्य कर रही है।

यहाँ हिन्दुस्तान में भी वही शिक्षा दी जा रही है और वैसे ही संस्कार उत्पन्न हो रहे हैं। अत: रीनी की बात मानने वाले, विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षित लोगों में तुरन्त मिल जायेंगे। वह विचार करता था कि यदि उसकी बात नहीं मानी जा रही और उसके माने जाने की सम्भावना कम है तो इस कारण कि उसकी शिक्षा-दीक्षा द्वारा उत्पन्न संस्कार ऐसे हैं जो दूसरों के नहीं हैं।

उसने हमीद से कह दिया, "मिस्टर हमीद! मैं तुम्हें इतनी पढ़ी-लिखी और तेज़ दलील करने वाली पत्नी मिल जाने पर बधाई देता हूँ। मगर यह बता दूँ कि इसकी पढ़ाई दोष-पूर्ण है और युक्ति करने का ढंग गलत है। यह कुछ शुभ का सूचक नहीं हो सकता।"

"आप कुछ बुरी पेशीनगोई कर रहे हैं।"

"मैं जब यह कहता हूँ तो केवल खानबहादुर के परिवार की बात का विचार कर नहीं कह रहा। मैं तो मानव-समाज की बात कह रहा हूँ।"

इसके बाद बात बदलने के लिये उसने कह दिया, "बताओ, कितने बच्चे दिये हैं इसने तुम्हें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर तो हमीद हँस पड़ा। उत्तर रीनी ने दिया। उसने कहा, "अभी तो एक ही बना सकी हूँ।"

इस पर हमीद और भी ज़ोर से हँसा। नलिनी ने पूछ लिया, "हँसे क्यों हैं हमीद साहब ? कुछ अनुचित बात पूछ ली है मैंने ?"

"नहीं; ऐसी बात नहीं। इस पर भी कुछ कारण तो है और मैं समझता हूँ कि खामोश ही रहूँ तो अच्छा है। सब बातें बताने की नहीं होतीं। आप बताइये, लखनऊ में कब तक रहने का विचार है ?"

"कांग्रेस अधिवेशन आज सम्पन्न हो जायेगा। वैसे तो मैं यहाँ का काम कल ही समाप्त कर चुका था और कल ही लौट जाने की इच्छा कर रहा था, परन्तु किसी अज्ञात प्रेरणा से आज श्री मालवीय जी का व्याख्यान सुनने के लिये रह गया। उस व्याख्यान में किसी नवीन बात का पता नहीं चला। एक बात मैं पहले भी जानता था और वही उन्होंने कही है। अन्तः-प्रेरणा से वे ठीक ही बात कर रहे हैं। सब परमात्मा पर विश्वास रखने वाले ऐसा ही कहते हैं।

"पर मैं विचार करता हूँ कि वह अज्ञात प्रेरणा जिससे मैं यहाँ रुका रहा हूँ, मालवीय जी का व्याख्यान सुनने के लिये नहीं थी, वरन् तुम्हारी पत्नी से भेंट करने के लिये थी। इस भेंट से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

"मगर आपने मेरी बात तो पसन्द की नहीं ?" रीनी ने कह दिया।

"इस पर भी मैं हमीद को बधाई दे चुका हूँ कि उसकी पत्नी एक योग्य स्त्री है। योग्यता से मेरा अभिप्राय यह है कि इसकी आत्मा श्रेष्ठ है। इसकी बुद्धि तीव्र है, परन्तु मन के संस्कार गदले हैं। वे संस्कार मिथ्या शिक्षा के कारण बने हैं। बुद्धि ठीक दिशा में काम करने लगेगी यदि रीनी बेटी के संस्कार बदलने का यत्न किया जाये।"

"वे कैसे बदले जा सकते हैं ?" हमीद ने पूछ लिया।

"इसका वातावरण बदलने से। मैं राय दूंगा कि इसे मेरी पत्नी से मिला दो और दोनों को परस्पर सम्पर्क में आने दो। मैं आशा करता हूँ कि संस्कार बदल जायेंगे।"

"मैं तबस्सुम से कहूँगा कि मिलने आया करे तो अपनी 'मदर इन ला' को भी होटल में ले आया करे।"

"यदि तुम हमारे घर में आ सको तो आशा करता हूँ कि कुछ रहनुमाई हो सकेगी।"

"इसके लिये अब्बाजान से बग़ावत करनी पड़ेगी। पहली बग़ावत के बाद सुलह में उनकी तरफ से सिर्फ यह शर्त है कि आपके घर नहीं जाना। इतनी भूल वे कर चुके हैं कि उन्होंने आप या आपके घर वालों से मिलने से मना नहीं किया हुआ। मैं विजय जी से मिलता रहता हूँ। अगर एक राज़ की बात आपको बता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूँ तो उम्मीद है कि उसे आप किसी से नहीं कहेंगे। मैं विजय जी के पत्र में अपने लेख भी छपवाया करता हूँ।''

''सत्य ? मगर यह अवश्य किसी छद्म नाम से होंगे ?''

''जी; मैंने अपना एक गुप्त नाम रखा हुआ है। वह 'जबराईल' है।''

''मगर वे तो विदेशों में हिन्दुस्तानी देश-भक्तों के किस्से होते हैं ?''

''जी। अमेरिका में मेरा एक मित्र है। वह मुझे समाचार और उन जला-वतनों के खयालात भेजा करता है और मैं इस नकली नाम से छपवाया करता हूँ। कभी-कभी उससे भेजे लेखों में कुछ रद्दो-बदल भी करना पड़ता है। यह मैं विजय जी की राय से करता रहता हूँ।''

''ओह! मगर अमेरिका में तुम्हारा मित्र अवश्य उन सबसे सम्पर्क रख रहा होगा ?''

''ज़रूर रखता होगा। मैं तो उनको खयाली कहानियों के तौर पर छपवाने के लिये भेजता हूँ।''

''और वह कौन ऐसा शख्स है ?''

''न्यूयॉर्क में एक 'सैमसन एण्ड सैमसन' नाम की यहूदी व्यापारी संस्था है। वह वहाँ काम करता है, नाम है आनन्दस्वरूप। सुना है कि वह किसी बंगाली इन्कलाब-पसन्द का बेटा है।''

नलिनी समझ रहा था, परन्तु वह बताना नहीं चाहता था कि वह आनन्द-स्वरूप को जानता है। उसने पूछ लिया, ''और विजय इस रहस्य को जानता है ?''

''जी। विजय जी ने ही बताया था कि यदि इन्कलाब-पसन्दों के विषय में मैं कुछ लिखना चाहता हूँ तो मुझे इस आदमी से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये। मैंने उसे लिखा और तब से वह बिना हस्ताक्षरों के लेख भेजा करता है और मैं उसमें से काट-छाँट कर छपने के लिए विजय जी को दे दिया करता हूँ।''

''और रीनी बेटी इसे पसन्द करती है ?''

''यह तो कहती है कि अगर यह युवक इसके सम्बन्ध में आ जाये तो वह ट्रेड यूनियनिस्ट हो जायेगा।''

''मैं समझता हूँ कि रीनी ट्रेड यूनियनिस्ट नहीं, बल्कि 'मार्क्सिस्ट' है।''

''बताओ रीनी! वह तो इंगलैण्ड का एक बाग़ी शख्स था।''

''रहा होगा। मगर मैं तो बाग़ी नहीं हूँ।''

''उसके खयाल तो बग़ावत के थे।''

''आप उसके विषय में क्या जानते हैं ?''

''कहते हैं कि वह यह मानता था कि बिना खूनी इन्कलाब के दुनिया का सुधार नहीं होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर यह तो सब सही-दिमाग़ लोग मानते हैं। भला जर्मन का 'कैसर' और उसके खिलाफ़ अंग्रेज़ क्या यही कुछ नहीं कर रहे ?"

नलिनी हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "कैसर की बात तो ठीक है, मगर अंग्रेज़ों के लिये यह नहीं कहा जा सकता। कम-से-कम इस युद्ध में अंग्रेज़ स्वयं युद्ध में नहीं गये, वरन् वे किसी तानाशाह का मुख मोड़ने के लिये गये हैं।"

"फ्रांस और इंगलैण्ड का भला क्या काम था कि 'सरविया' की मदद के लिये युरोप के मामले में कूद पड़ते।"

"मैंने तो यह कहा है कि यह रीनी के निर्मल आत्मा का दोष नहीं। यह उसकी शिक्षा से उत्पन्न संस्कारों के कारण है। देखो रीनी, यदि तुम एक वर्ष तक सुवर्णा के सम्पर्क में रहोगी तो तुम्हारे विचार करने का ढंग बदल जायेगा।

"थोड़ी-सी बात तो मैं तुमको अभी बता देता हूँ। हम इस भूमण्डल में बसने वाले एक ही मनुष्य-समाज के घटक हैं। इस कारण मानव-समाज में गरीब और दुर्बल पर अत्याचार करने वाले के लिये यदि कोई मानव कहीं से भी सहायक बनता है तो वह एक बहुत ही पुण्य का कार्य करता है।

"मैं समझता हूँ कि आज एक बहुत ही तेज़ विचार करने वाले प्राणी से भेंट हुई है और इसे मैं अपना सौभाग्य मानूंगा।"

"आप मेरी तारीफ कर मुझे एक गलत राह पर ले जाना चाहते हैं।"

"परन्तु बेटी ! वह बलपूर्वक अथवा किसी भी किस्म का दबाव डालकर नहीं कर रहा।"

इस पर तीनों हँसने लगे। नलिनी उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "बताइये, अब मुस्लिम लीग के जलसे में जाइयेगा या कांग्रेस के ?"

"आप कहाँ जा रहे हैं ?"

"मैं तो अपने इसी कमरे में बैठा हुआ अपने 'दैनिक' के लिये सम्पादकीय लिखूंगा।"

हमीद और रीनी वहाँ से चले आये। वे 'हक मैन' होटल में ठहरे थे। वहाँ पहुँचे तो उनको यह देख विस्मय हुआ कि खानबहादुर उनके कमरे के बाहर खड़े टहल रहे हैं।

"आदाब-अर्ज़ है अब्बाजान !" हमीद ने कहा।

"मैं आज तुमसे झगड़ा करने आया हूँ।"

"तो अब्बाजान ! भीतर कमरे में चले चलें और कमरा बन्द कर झगड़ा करें तो ठीक रहेगा।"

"ठीक है, खोलो कमरा।"

हमीद ने कमरा खोला और तीनों कमरे में चले गये। भीतर जा 'सिटिंग-रूम' में खानबहादुर सोफा पर बैठ गये और हमीद तथा रीनी उनके सामने कुर्सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बैठे तो बात खानबहादुर ने शुरू कर दी। उन्होंने कहा, "लखनऊ से खबर आयी है कि आयशा के फिर हमल ठहर गया है।"

"तो इसमें हैरत करने की बात क्या है ? वह अभी सोलह साल की जवान औरत है।"

"हैरत करने की बात यह है कि वह बेवा है और बेवा औरत के हमल नहीं ठहर सकता।"

"अब्बाजान ! वह आपकी बेगम है। मैं उसे बेवा कहने की गुस्ताखी कैसे कर सकता हूँ ?"

"नहीं, वह अमलन मेरी बीवी नहीं है।"

"तो फिर किसकी है ?"

"यह तुम बताओ ? पहला बच्चा हुआ तो तुमने कहा था कि गलती से तुमने बच्चा पैदा कर दिया है। आइन्दा ऐसा नहीं करोगे। तुमने यह भी कहा था कि अब तुम्हारी बीवी आ गयी है और तुम उस किस्म की हरकत नहीं कर सकोगे।"

"अब्बाजान ! इस बात का फैसला हम घर चलकर करें तो ठीक नहीं क्या ?"

"मैं कहना चाहता हूँ कि तुम अपनी ज़मींदारी पर बुआई करो। तुम दूसरे की ज़मीन पर दखल किसलिये किये हुए हो ?"

"हज़रत ! यह सवाल तो अपनी ज़मीन से क़रिये कि उस पर फसल बोई भी गयी है क्या ?"

"तो तुम इन्कार करते हो ?"

"मैं उसके इस्तेमाल करने से तो इन्कार नहीं करता, मगर यह फसल किसकी है, मैं कह नहीं सकता। मैंने उसका इस्तेमाल बहुत ऐहतियात से किया था।"

"बहुत नालायक हो तुम ! मैं तुम्हारे भाई को बुला रहा हूँ। वह मेरी ज़मींदारी और कारोबार का इन्तिज़ाम करेगा।"

"ठीक है। मगर अब्बाजान ! अपनी ज़मींदारी का वह हिस्सा जिसे आप आयशा का नाम देते हैं, उसके हवाले न कर देना।"

"उसे तो मैं गोली से उड़ा दूंगा।"

"ठीक है। मगर पिस्तौल का बहुत ही खबरदारी से इस्तेमाल करियेगा। कहीं ऐसा न हो कि वह 'बैक फायर' कर जाये और लेने-के-देने पड़ जायें।"

"तो ऐसा भी हो सकता है ?"

"हाँ, अब्बाजान ! यह बहुत ही खतरनाक हथियार है। और सुना है कि आपका एक पिस्तौल पहले भी चोरी जा चुका है और कहीं यह भी चोरी हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सरकार आपका नाम 'ब्लैक लिस्ट' में दर्ज कर देगी और फिर आपको नया लायसैंस नहीं मिल सकेगा।

"यह भी सुना है कि आपके पिस्तौल से जेल में एक इन्कलाब-पसन्द ने किसी सरकारी गवाह को हलाक कर दिया था। अब्बाजान! यह तो बहुत ही खतरनाक बात है।"

"मगर तुमको यह किसने बताया है ? यह गलत है।"

"तब तो ठीक है। मगर बंगाल के खुफिया पुलिस के एक मिस्टर मुखर्जी आपकी फैयाज़ी और दरयादिली की दाद दे रहे थे।

"खैर, छोड़िये इस बात को। अब्बाजान, आयशा के मुतअल्लिक झगड़ा मुझसे करना सरासर नावाज़िब है। इसमें मेरा कुछ भी कसूर नहीं है।"

"और तुम्हारी यह बीवी बच्चे क्यों नहीं पैदा करती ?"

"इसने बच्चेदानी का ऑपरेशन करा रखा है।"

"तो तुमने इससे शादी क्यों की है ?"

"शादी तो शाद रहने के लिये ही की है। मगर यह आयशा की सब बात जानती है और कहा करती है कि अब्बाजान ने किसी वक्त चार बीवियां रखी हुई थीं और मैं क्या दो भी नहीं रख सकता ?"

"अबे गधे! मैं दो-तीन की बात नहीं कर रहा। मैं तो इस नाजायज़ हरकत से तुम्हें मना कर रहा हूँ और तुम बाज़ नहीं आते। इसका इलाज तुम दोनों में से एक को जहान से रुखसत कर देना ही ठीक मालूम होता है।"

अब रीनी ने बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "अब्बाजान! आप हम बच्चों को बच्चे समझ, दरगुज़र कर सकते हैं।"

"यह तो करना ही होगा।" हमीद ने अपनी पत्नी की बात का समर्थन करते हुए कहा, "इ. बार भी आप अपने पोते के बाप बने रहने की मेहरबानी कर दीजिये।"

"तो तुम जानते हो कि यह लड़का ही होगा ?"

"लड़का हो या लड़की हो। होगा वह एक मुसलमान-बच्चा और मिल्लत में इज़ाफा ही होगा। नहीं तो इस सवाब के काम में आयशा अम्मी का कुछ भी हाथ न होता।"

"अब्बाजान!" रीनी ने बात बदलने के लिये पूछ लिया, "चाय मँगवाऊँ ?"

बिना पिता की स्वीकृति की प्रतीक्षा किये उसने कमरे में घण्टी का बटन दबाया और ये अभी इस नयी समस्या पर गम्भीरता से विचार ही कर रहे थे कि बैरा आ गया। हमीद ने तीन प्याले कॉफी लाने के लिये कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

सन् १९१४ में आरम्भ हुआ जर्मन युद्ध अभी चल रहा था और सन् १९१७ आ पहुँचा था। अंग्रेज़ की हालत पतली हो गयी थी। आधे से अधिक फ्रांस जर्मनी के अधिकार में आ चुका था और घड़ाधड़ नर-हत्या हो रही थी।

इस युद्ध में टर्की के जर्मनी की ओर से सम्मिलित होने के कारण ब्रिटेन ने टर्की पर आक्रमण कर दिया था, परन्तु डार्डिनल फतेह होने में ही नहीं आ रहा था। वहाँ जर्मनी की तोपों से मोर्चाबन्दी इतनी सुदृढ़ बनी थी कि अंग्रेज़ी जहाज़ अपना मार्ग बना नहीं सके थे।

हिन्दुस्तान के मुसलमान भड़क रहे थे। वे चाहते थे कि अंग्रेज़ टर्की पर आक्रमण न करे। मुसलमानों के भड़कने का लाभ कांग्रेस उठाना चाहती थी। हुआ इससे उलट। कांग्रेस को तो लाभ हुआ नहीं; हाँ, मुसलमानों को लाभ हो गया। कांग्रेस ने देश के हिन्दुओं से यह बात स्वीकार करवा ली कि मुसलमान हिन्दुस्तान में हिन्दुओं से एक पृथक् कौम है और इसके हक-हकूक दूसरे सब मज़हबों से पृथक् हैं। साथ ही इस्लाम एक आवश्यक अल्प-संख्यक जाति होने से इसके हक-हकूक की रक्षा के लिये इसके राजनीतिक अधिकार न केवल पृथक् हों, वरन् उनकी जनसंख्या से कुछ अधिक हों।

इस सम्बन्ध में खानबहादुर की कोठी की बाहरी बैठक में मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी की एक बैठक हो रही थी। इसमें खोजा समुदाय के एक बैरिस्टर मिस्टर एम०ए० जिन्ना अपनी सम्मति बता रहे थे। उनका कहना था, "युरोप के जंग में इंगलैण्ड की फतेह होगी।" मिस्टर जिन्ना आगे कुछ कह नहीं सके। कारण यह कि सब बैठे हुए हँसने लगे थे। इस पर मिस्टर जिन्ना ने कुछ क्षण तक उनके हँसने का अभिप्राय समझने का यत्न करते हुए चुप रहना उचित समझा। हँसने वाले उन्हें गम्भीर देख चुप कर गये। खानबहादुर ने अपने हँसने की वजह बता दी। उन्होंने कहा, "जिन्ना साहब! खबरों से तो यही पता चलता है कि इस बार अंग्रेज़ की ज़बरदस्त शिकस्त होगी।"

"आपका फरमाना दुरुस्त हो सकता है। हालात से आपका यह अन्दाज़ ठीक ही है, मगर मैं यह देख रहा हूँ कि जर्मनी की सेना अभी तक पैरिस नहीं ले सकी। आज तीन साल की कोशिश पर भी वह पैरिस से साठ-सत्तर मील के फासले पर ही पहुँची है। इसके खिलाफ अंग्रेज़ों की मदद पर अमेरिका इस जंग में कूदने वाला है।"

"मगर उसकी मदद कार-आमद नहीं हो सकेगी। अमेरिका और युरोप के अन्दर सारा-का-सारा ऐटलांटिक समुन्दर पड़ा है और उस समुन्दर में जर्मनी की पनडुब्बियाँ टारपीडों से लैस ऐसे घूम रही हैं, जैसे कि किसी तालाब में खूंखार शार्क घूम रही हों।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी अमेरिकन सिपाही लाखों की तादाद में फ्रांस के किनारे पर उतरेंगे और जर्मनों को भगा-भगाकर बर्लिन पहुँचा देंगे।"

एक अन्य सदस्य बोल उठे, "जिन्ना साहब ! इस बात को छोड़िये। आप अपनी बात यह समझ कर बताइये कि अंग्रेज़ की हार होगी ?"

मिस्टर जिन्ना ने मुस्कराते हुए कहा, "अंग्रेज़ों के जंग में न-कामयाब होने की हालत में भी हिन्दुस्तान में मुसलमानों को कांग्रेस में शामिल हो जाना चाहिये। यही एक तरीका है जिससे मुल्क की बहबूदी और इस्लाम की तरक्की मुमकिन है।"

अब फिर खानबहादुर ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "अंग्रेज़ों की शिकस्त की हालत में युनान से मलाया तक इस्लामी राज्य कायम हो जायेगा और हिन्दू तो मुकम्मल तौर पर खतम हो जायेंगे। हम समझते हैं कि कांग्रेस में शामिल नहीं होना चाहिये। हमने अपने हक-हकूक हिन्दुओं से तस्लीम करवा लिये हैं। अब हम उन हक-हकूक के बिना पर यहाँ हकूमत करेंगे। खुदा-न-ख्वाहस्ता कहीं अंग्रेज़ कामयाब हो गये तब भी अंग्रेज़ और हिन्दू दोनों से हम अपनी बात मनवा सकेंगे।"

आखिर, जिन्ना साहब की तजवीज़ पर कि मुस्लिम लीग और कांग्रेस एक हो जाये, मत लिये गये और उसे अस्वीकार कर दिया गया। जिन्ना साहब कुछ निराश थे। उन्होंने कहा, "मैं मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी में हूँ और कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में भी हूँ। आप बताइये कि मेरी बाबत आप क्या खयाल करते हैं ? ये दोनों सियासी जमायतें हैं। क्या एक आदमी दो सियासी जमायतों में रह सकता है ?"

इस पर एक सदस्य ने कहा, "मैं इसमें हरज नहीं समझता।"

"किसी एक मसला पर दोनों में एक-दूसरे के खिलाफ राय हो सकती है।"

"जब यह मौका आयेगा तब देख लिया जायेगा। दोनों मजलिसें अभी तक रेज़ोल्यूशन ही पास करती हैं। किसी किस्म का अमल तो करती नहीं। इस वजह से दोनों में 'क्लैश' होने की उम्मीद नहीं।"

"हमें अंग्रेज़ी सरकार की वफादारी का एलान करना चाहिये अथवा नहीं ?"

"अंग्रेज़ी सरकार के वफादार तो तिलक जी भी हैं। वे भी जंग के लिये भरती करा रहे हैं।"

"उनकी भरती की मुहिम तो शर्त के साथ है। वे चाहते हैं कि जितने पढ़े-लिखे लोग सेना में भरती हों, उनको कमीशन दी जाये।"

"तो यह सरकार मान गयी है क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी नहीं मानी। मेरा कहने का मतलब यह है कि वे एक गहरी चाल चल रहे हैं।"

"तो चलने दीजिये। जब कामयाबी मिलेगी तो मुसलमान भी कमीशन ले सकेंगे।"

"खूब ! जद्दो-जहद हिन्दू करें और फायदा मुसलमान हासिल करें।"

"यही दुनिया का दस्तूर है।"

यह मीटिंग जिस उद्देश्य के लिये बुलायी गयी थी, वह सफल नहीं हो सका। मुस्लिम लीग और कांग्रेस एक नहीं हो सकीं। इस मीटिंग में हमीद भी बैठा युक्तियाँ-प्रतियुक्तियाँ सुन रहा था और मुसलमानों की मानसिक अवस्था पर चकित हो रहा था।

मीटिंग के उपरान्त जब सब लोग चले गये तो हमीद अपने वालिद शरीफ के पास पहुँच पूछने लगा, "अब्बाजान ! मुस्लिम लीग का यह रवैया तो मुसलमानों को गड्ढे में गिराने वाला होगा ?"

"तुम नहीं जानते। यह डिप्लोमेसी है। सियासी मामलों में यह चालबाज़ी ही कामयाब होती है।"

"मगर इससे सारी-की-सारी कौम में गिरावट पैदा होगी।"

खानबहादुर हँस पड़े। हँसकर बोले, "जो कौम पहले ही गिर कर नीची-से-नीची जगह पर पहुँच चुकी हो वह और क्या गिरेगी ? जहाँ बेटा अपनी माँ से बच्चे पैदा कर सकते हैं, भला उस कौम की गिरावट और ज़्यादा क्या हो सकेगी ? अब तो इस कौम में तरक्की ही होगी।"

"अब्बाजान ! मैं मुसलमान तो हूँ नहीं। मैं तो उनकी फिक्र कर रहा हूँ।"

"तुम हमारी फिक्र मत करो। अपने गिरहबान में मुँह डाल कर सोचो कि तुम मुसलमान भी हो क्या ?"

"अब्बाजान ! सोच रहा हूँ। आयशा अम्मी कह रही हैं कि उनके दोनों बच्चों के नाम हिन्दुआना रख दिये जायें ?"

"क्यों ?"

"आपके खयाल से तो वे एक मुसलमान की औलाद नहीं हैं।"

"और क्या उनका बाप हिन्दू की औलाद है ?"

"नहीं, मैं तो ला-मजहब हूँ। मगर आयशा की दोस्ती एक हिन्दू औरत से हो गयी है।"

"कौन है वह।"

"तबस्सुम के ममिया श्वसुर की बीवी है। वह ईसाई मजहब में पैदा हुई थी, मगर अब हिन्दू हो रही है। उसने ही यह कहा है कि मुसलमान रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक नहीं है।"

"तो क्या तुम भी हिन्दू हो जाओगे ?"

"मैं तो कुछ नहीं। किसी भी मज़हब पर मेरा एतकाद नहीं। इसलिये मेरा सम्बन्ध तो इन्सान-इन्सान का है।"

"तो उसे क्यों नहीं कहते कि वह मुसलमान बनी रहे ?"

"पर अब्बाजान ! मेरा उस पर असर कम हो रहा है।"

"क्यों ?"

"वह हिन्दू होने से, शादी के बिना किसी से भी तअल्लुक रखना नहीं चाहती।"

"तो अब क्या करोगे ?"

"मैं भी आपकी तरह का हिन्दू हो जाना चाहता हूँ।"

"मेरी तरह ? मैं कब हिन्दू हुआ हूँ ?"

"अब्बाजान ! मेरा मतलब है कि जिस तरीके के आप मुसलमान हैं, उसी तरीके का मैं हिन्दू हो जाऊँगा।"

"पर मैं तो हकीकत में मुसलमान हूँ।"

"आप तो मुसलमान इसलिये हुए हैं कि आपको हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज होने की उम्मीद बन गयी थी। अब कुछ ऐसा मालूम हो रहा है कि स्वराज चन्द ही सालों में मिल जायेगा और हिन्दुओं की आबादी यहाँ ज़्यादा है; इसलिये राज उनका होगा। इस वास्ते मेरी यह तजवीज़ है कि आप अब हिन्दू हो जायें।"

"हमीद ! तुम गुस्ताख होते जाते हो। देखो, यह समझ लो कि अगर इस किस्म की गुस्ताखाना बात तुमने किसी बाहरी आदमी के सामने कर दी तो मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूंगा।"

हमीद ने मुस्कराते हुए कहा, "अब्बाजान ! आप ऐसी हिमाकत करने की कोशिश न करियेगा। वरना बात बिगड़ जायेगी।"

"क्या बिगड़ जायेगी ?"

"रफीक कह रहा था कि वह प्रेज़िडैंसी मैजिस्ट्रेट के सामने यह ऐप्लिकेशन देने वाला है कि आपका दिमाग खराब हो रहा है और आपके सब हथियार ज़ब्त कर लिये जायें।"

खानबहादुर हंस पड़े और हँसते हुए कहने लगे, "तो इसका मतलब यह है कि ज़रीना के दोनों लड़के बग़ावत पर तुल गये हैं।"

"अब्बाजान ! यह बात तो दोनों लड़कों की मां से पूछ लीजिये कि उसके लड़के बाग़ी हैं या नहीं ? मुझसे पूछते हैं तो मैं बताता हूँ कि आपका कुछ ऐसा कहना ही पागलपन के निशानात हैं। आपका दिमाग ठीक काम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा।"

"तो तुम यह चाहोगे कि अदालत में तुम्हारे और आयशा के तअल्लुकात का कच्चा चिट्ठा बयान करूँ ?"

"अब्बाजान ! इसका जवाब आयशा दे लेगी। अगर सुनना चाहते हैं कि क्या जवाब देगी तो उससे अभी पूछ लें। वह तो कहती है कि वे बच्चे आपके हैं और आप उनके बाप होने से इन्कार करते हैं तो यही आपका पागलपन है।

"आयशा कह रही थी कि चार बीवियों के अलावा भी एक औरत है, जो अदालत में यह मानने को तैयार है कि आप औलाद पैदा करने के काबिल हैं।"

"इससे क्या होता है ?"

"इससे सिर्फ एक बात जाहिर हो जायेगी कि आप बतायें कि आप किसी औरत से बच्चा पैदा करने के काबिल है या नहीं ? अगर हैं और इस पर भी आप अपने बच्चों के बाप होने से इन्कार करते हैं तो आप पागल हैं।"

खानबहादुर उठे और अपनी मेज़ के दराज़ में से पिस्तौल निकालने के लिये लपके। हमीद हँस पड़ा। दराज़ में पिस्तौल नहीं था।

"मेरा पिस्तौल तुमने लिया है ?"

"अब्बाजान ! वह यहाँ नहीं है न ? पर मेरे पास भी नहीं है।"

"तो कहाँ है ?"

"यह मैं नहीं जानता। आप पुलिस में रिपोर्ट कर दें और पुलिस पिस्तौल की जाँच-पड़ताल करेगी।"

"मेरा शक तुम पर है।"

"यह भी पुलिस वालों को बता दीजियेगा।"

खानबहादुर घबरा कर उठे और आयशा के कमरे की ओर भागे। हमीद उनके पीछे-पीछे था। आयशा का कमरा भीतर से बन्द था। खानबहादुर ने ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाना आरम्भ कर दिया। बगल का कमरा हमीद के रहने का था। उसमें रीनी बैठी थी। वह हाथ में पिस्तौल लिये हुए बाहर निकल आयी। रीनी के हाथ में पिस्तौल देख, खानबहादुर का जोश ठण्डा पड़ गया। उन्होंने दरवाज़ा खटखटाना बन्द कर दिया और रीनी की ओर अवाक् मुख देखने लगे। रीनी ने कहा, "अगर आपने किसी भी किस्म की, किसी पर भी ज़बरदस्ती की तो मैं गोली से आपका काम तमाम कर दूंगी।"

"क्यों ?"

"इस कमरे का दरवाज़ा आप ऐसे खटखटा रहे थे, जिससे यह समझना मुश्किल नहीं कि आपका दिमाग खराब हो रहा है और आपसे जान का खतरा है।"

—२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खानबहादुर उत्तर देने के स्थान, रीनी से पिस्तौल छीनने के लिये लपके, परन्तु हमीद ने बीच में ही अब्बाजान को अपनी बाँहों में जकड़ लिया और कहा, "खबरदार, अब्बाजान !"

"छोड़ो मुझे ! छोड़ो मुझे ! !" खानबहादुर कहने लगे ।

"नहीं, नहीं, अब्बाजान ! यह मेरी बीवी है । इस पर आपको ज़बर करते मैं देख नहीं सकता ।"

"और अपने बाप को गोली मारते देख सकते हो ?"

"कहाँ मारी है, अब्बाजान ? वह तो आपमें से पागलपन को निकालने के लिये दिखा रही है ।"

इस समय आयशा का दरवाज़ा खुला और भीतर से हमीद का छोटा भाई रफ़ीक निकल आया ।

सबका ध्यान उधर चला गया । खानबहादुर रशीद को आयशा के कमरे से निकलते देख, विचार करने लगे कि यह क्या माजरा है ?

रशीद ने हमीद को कहा, "भाईजान ! यह क्या कर रहे हैं ?"

"अब्बाजान के पागलपन को बाँहों में दबोच कर रखे हुए हूँ ।" हमीद अभी भी खानबहादुर को बाँहों में पकड़े हुए था । इस समय खानबहादुर अपने को छुड़ाने का यत्न नहीं कर रहे थे और विस्मय करते हुए रशीद को देख रहे थे । खानबहादुर रफ़ीक से पूछना चाहते थे कि वह उनकी बीवी के कमरे में क्या कर रहा था, परन्तु उनके पूछने से पहले ही कमरे में से आयशा निकल आयी और विस्मय में हमीद तथा खानबहादुर की ओर देख पूछने लगी, "यह क्या हो रहा है हमीद ?"

अब तक अपने-अपने कमरों से ज़रीना, मरियम और सुरैया भी निकल आयी थीं । अब घर-भर को एकत्र हुआ देख, हमीद ने अपने अब्बाजान को छोड़ दिया । ज़रीना ने अपने खाविन्द से पूछ लिया, "आँ हज़रत ! यहाँ क्या कर रहे हैं ?"

"मैं अपनी चौथी बीवी के पास जा रहा था ।"

"कौन बीवी ?"

"आयशा ! और कौन ?"

उत्तर आयशा ने दिया, "मैं आपको अपना खाविन्द मंज़ूर नहीं करती ।"

"पर मैंने तो अभी तलाक नहीं दिया ।"

"दिया तो था । जिनके सामने आपने कहा था कि आपने मुझे छोड़ा है, वे गवाह मौजूद हैं और अब आप मेरा हक-मेहर न देने के लिये यह सब हल्ला कर रहे हैं ।"

"ओह !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

खानबहादुर समझ रहे थे कि सारा-का-सारा परिवार उनके विरुद्ध हो रहा है। उनका बहुत विश्वास था अपनी दूसरी बेगम सुरैया पर, परन्तु आज उसे भी चुपचाप वहाँ खड़े देख, वे शान्त हो गये। एकाएक वे घूमे और अपने कमरे की ओर चले गये। आजकल उन्होंने अपने 'स्टडी-रूम' को ही अपने सोने का कमरा बना रखा था।

आयशा खानबहादुर के पीछे-पीछे उनके कमरे में जाने लगी तो हमीद और ज़रीना भी साथ हो लिये। मरियम ने रफीक से कहा, "रफ़ीक ! आज वक्त है। सब बात तुम तय करा लो। ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा।"

इस पर रफीक और हमीद की पत्नी रीनी भी खानबहादुर के स्टडी-रूम में जा पहुँचे। सबके पीछे मरियम वहाँ पहुँची। रीनी के हाथ में अभी भी पिस्तौल पकड़ा हुआ था।

खानबहादुर पसीना-पसीना हो रहे थे। वे धम्म से एक कुर्सी पर बैठे तो उनके परिवार के सब प्राणी उन्हें घेर कर खड़े हो गये। घर में सबसे छोटी उम्र के दो बच्चे थे। ये आयशा के बच्चे थे। एक था तीन वर्ष का और दूसरा अभी आठ-नौ महीने का था। वे दोनों अपनी दायी के पास थे।

बात आयशा ने आरम्भ की। उसने कहा, "मैं तो समझी थी कि आप अपने गुनाहों को याद करते हुए हमें अपने तरीके पर रहने की इजाज़त देंगे। मगर आपने नाजायज़ तौर पर हमारे कामों में दखल देना शुरू कर दिया है। इस पर हमें भी अब कुछ-न-कुछ करने के लिये मजबूर होना पड़ेगा।

"बताइये, आप घर पर फैसला करेंगे या हम खुद अदालत में जायें और आपसे फैसला कराने के लिये वहाँ कार्रवाई करें ?"

"तुम पिस्तौल दिखा कर मुझसे ज़बरदस्ती कुछ करवाना चाहते हो। यह नाजायज़ है। कानून के भी खिलाफ है।"

अब ज़रीना ने कहा, "आप कानून की बात करते हैं। यह अदालत में जाने से ही होगी और वहाँ कानून का पेट भरने के लिये सब झूठ बोलते हैं। वह हम भी बोल देंगे। यहाँ घर में किसी खुदा-दोस्त को सालिस डाल लीजिये तो सब ठीक हो जायेगा।"

"खुदा-दोस्त कौन है, जो तुम लोगों की हिमायत करेगा ?"

"हज़रत ! हम अपनी हिमायत के लिये किसी को सालिस नहीं बनाना चाहते। हम तो इन्साफ चाहते हैं।"

"तुम भी तो अपने को खुदा-दोस्त मानती हो। भला तुम ही बताओ कि आयशा को इसकी हरकतों के लिये क्या सज़ा मिलनी चाहिये ?"

"मैं अपने को खुदा का बन्दा मानती हूँ, दोस्त नहीं। इस पर भी मैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात में फ़ैसला तब ही दे सकती हूँ, जब आप सब लिखकर दे दें कि मुझे सालिस मानते हैं।"

खानबहादुर ने तुरन्त उत्तर दिया, "मैं तुमको सालिस नहीं मानता। तुम अपने नालायक लड़कों की हिमायत करोगी।"

"ठीक है। मैं भी आप पर अदालत बन कर बैठना नहीं चाहती। यह आप बताइये कि आप किसी को सालिस मानने के लिये तैयार भी हैं ?"

"एक सालिस पहले बनाया था। उस बदमाश ने मेरी एक बात भी नहीं मानी और औरतों का पक्ष ले लिया।"

"तो एक और नाम तजवीज़ किया जा सकता है।"

"बताओ ?"

"मरियम मीनाक्षी का नाम तजवीज़ करती है।"

"यह कौन है ?"

"यह आपके वकील कमलनारायण के बहन की लड़की है।"

"और कमलनारायण क्यों नहीं ?"

"वह मिस्टर जिन्ना की तरह वकील है। फिर पीछे आप ही कहेंगे कि बदमाश ने औरतों से रिआयत कर दी।"

"मगर कमलनारायण की भांजी के मुतअल्लिक वकील साहब से ही दर-याफ्त करना चाहता हूँ।"

"तो टेलीफोन पर बात कर लीजिये।"

"हाँ, बात तो ठीक है। आज ऐतवार का दिन है। वह घर पर ही होना चाहिये।'

खानबहादुर उठे और कमलनारायण को टेलीफोन करने लगे। कमल-नारायण ने फोन उठाया तो खानबहादुर ने कहा, "एक खानगी काम है। बताइये, आप करेंगे ?"

"आप कोई भी काम बताइये, अपनी काबलीयत और लियाकत के मुता-बिक आपकी खिदमत बजा लाऊँगा।"

"यहाँ घर में झगड़ा खड़ा हो गया है।"

"पर मैंने तो सुना था कि जिन्ना साहब ने सब बात तय कर दी थी।"

"मैं अपनी तरफ से जिन्ना साहब से फैसला-शुदा सब बातें मानता चला आता हूँ। मगर यहाँ अब एक नया झगड़ा पैदा हो गया है। यह पहले से ज्यादा खुफियावार है। वह बात मैं जिन्ना के इल्म में नहीं लाना चाहता।"

"तो मैं एक और नाम तजवीज़ कर सकता हूँ। यह 'बॉम्बे न्यूज़' के सम्पादक बाबू नलिनीकान्त सरकार हैं।"

"वह तो बहुत बड़ा काफिर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर एक सही दिमाग और निहायत ही पढ़ा-लिखा काबिल शख्स है।"

"मगर वह हमारी मुखालिफत करता रहता है। सुना है कि वह मुसलमानों का कट्टर दुश्मन है।"

"देखिये खानबहादुर ! आप मुसलमान तो हैं नहीं। कभी भी नहीं थे। मुझे यकीन है कि आगे भी कभी नहीं बन सकते। इससे नलिनीकान्त की मुखालिफत आपके लिये कुछ मायने नहीं रखती।"

"परन्तु वकील साहब ! मैं मुस्लिम लीग का सदर रह चुका हूँ और अब भी उसकी इन्तज़ामिया कमेटी का मेम्बर हूँ।"

"मुस्लिम लीग तो एक सियासी जमायत है न ? और इन खानदानी मामलों में वह सियासियत का दखल नहीं समझता।"

"मगर इन मामलों में वह हिन्दू-धर्म की बातें करने लगेगा।"

"नहीं, खानबहादुर ! मेरा कहा मानिये। वह आपके झगड़े को हिन्दू-मुसलमान की रस्मो-रिवायात के मुताबिक नहीं देखेगा। वह तो इन्सानी बहबूदी के खयाल से ही इसमें राय देगा।"

"मगर वह मेरी लड़की का श्वसुर है और अपनी पतोहू की माँ का पक्ष लेगा। मगर मैं पूछता हूँ कि आप मेरा यह काम क्यों नहीं करते ?"

"इसलिये कि मैं आपके लड़के हमीद का वकील हूँ और वह आपके घर का सारा झगड़ा मुझे बता चुका है। उसने अदालत में एक अर्ज़ी भी कर रखी है और उस अर्ज़ी को पेश करने वाला मैं ही उसका वकील हूँ।"

"ओह ! तो मामला अदालत में जा पहुँचा है ?"

"बिल्कुल। उसके सम्मन आप सबको मिलने वाले हैं।"

"आप अपनी भांजी मीनाक्षी को भी इस झगड़े में सालिस बनने के लायक मानते हैं क्या ?"

"वह भी नलिनीकान्त की चेली ही है। मैं चेले से गुरु को ज़्यादा मौजूं मानता हूँ। देखिये खान साहब, मैंने हमीद से कहा था कि बाप को बदनाम करने की बजाय सब फैसला घर में ही क्यों नहीं कर लेते ? वह कहता था कि आप घर में फैसला मानेंगे नहीं। इसलिये उसने मुझसे अर्ज़ी लिखवायी है।"

"यह कब की बात है ?

"अभी तो एक हफ्ता भी नहीं हुआ।"

"अच्छी बात है। मैं आपसे बाद में बात करूँगा।"

खानबहादुर ने टेलीफोन बन्द किया और घर वालों की ओर देखकर कहा, "क्यों हमीद ! तुमने मेरे खिलाफ अदालत में अर्ज़ी की हुई है ?"

"हाँ, अब्बाजान !"

"क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप रफीक को अपना जां-नशीं बनाना चाहते हैं और यह मेरे हक-हकूक पर कब्ज़ा करता चला जाता है। इसलिये मैंने उनकी हिफाज़त के लिये ऐसा किया है।"

"तो फिर घर पर फैसले की बात फिज़ूल है।"

"वहाँ भी यही होगा और सब-जज आपको मजबूर करेंगे कि सालिस मुकर्रिर कर लें। जो बात अदालत में होनी है, वह मैं आपको अभी ड्रायंग-रूम में समझा रहा था।"

"मगर अदालत से सालिस मुकर्रिर करने के मायने दूसरे हैं और घर पर फैसला करने का मतलब दूसरा।"

"वकील साहब की यह राय है कि अगर हम सब किसी फैसले पर एक-राय हो जायें तो अदालत उसको मान जायेगी और फिर वह फैसला अदालती माना जायेगा।"

"ऐसा मालूम होता है कि तुम बहुत दूर तक सोच-विचार कर चुके हो। तुमने मेरे फौत होने का भी सोच लिया है।"

"तो क्या यह कोई अनहोनी बात है ? मैं अपने को दूरन्देश मानता हूँ।"

"तभी एक बाँझ औरत से शादी कर लाये हो ?"

"अब्बाजान ! आप इस बात को नहीं समझ सकते। जो बात आपकी समझ से बाहर की है, उसमें आपको दखल नहीं देना चाहिये।"

"मेरी समझ में भला क्या नहीं है ?"

"आज इस वक्त यह मसला ग़ौर-तलब नहीं।"

"अच्छा, देखो ! वकील साहब ने तबस्सुम के श्वसुर का नाम सालिस के तौर पर तजवीज़ किया है। वे कहते हैं कि उनकी भांजी इसी की चेली है और उनके खयाल में चेले से उस्ताद ज़्यादा अच्छा रहेगा।"

इस पर रफीक ने पूछ लिया, "तो आपने क्या जवाब दिया है ?"

"यही कि विचार कर बताऊँगा।"

"आप कभी उनसे मिले हैं ?" ज़रीना ने पूछ लिया।

"नहीं; मैंने उसे दूर से देखा है। हाँ, उसको अखबार में मुसलमानों की मुखालिफत करते पढ़ा है।"

"हज़रत !" अब मरियम ने कहा, "आप उसको सालिस मान जाइये तो सारी बात का अभी फैसला हो जायेगा।"

"उस काफिर से मन डरता है।"

"वह तो डरना ही चाहिये। आप-जैसे गुनाहगार शख्स को एक खुदा-दोस्त से डरना ही चाहिये। इस पर भी वे बे-इन्साफी किसी से भी नहीं करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो उससे कुछ ज़्यादा वाकिफ नहीं हूँ। उसे राज़ी करने के लिये कौन कोशिश करेगा ?"

"वकील कमलनारायण ही आपका यह काम कर सकेंगे।"

"हमीद ! तुमने मुकद्दमा दायर किया है, अब तुम ही उस काफिर को राज़ी कर लो। मैं उसके सामने ही अपनी शिकायत पेश करूँगा।"

: ६ :

अमरीका ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यह ऐटलांटिक सागर में दक्षिण-अफ्रीका को जाते हुए तीन अमरीका माल-जहाज़ों को तारपीडो द्वारा मार कर डुबो देने के परिणामस्वरूप हुआ था। युद्ध में इस नयी घटना ने भारत में दो प्रकार के लोगों को अप्रसन्न किया था। एक उनको, जो टर्की पर आक्रमण करने के कारण अंग्रेज़ों की पराजय की इच्छा करते थे। दूसरे लोग वे थे, जो यह मानते थे कि शत्रु का शत्रु सदैव मित्र होता है। अंग्रेज़ शत्रु थे और उनके शत्रु जर्मनी को ये मित्र मान रहे थे। पहली श्रेणी में प्रायः मुसलमान सम्मिलित थे और दूसरी श्रेणी में कुछ क्रान्तिकारी थे, जो अपनी नाक से आगे नहीं देख पाते थे।

भारत की सामान्य जनता प्रसन्न थी। कारण यह कि खाने-पीने तथा सामान्य आवश्यकताओं के पदार्थ महँगे हो रहे थे और लोग समझ रहे थे कि यह महँगाई युद्ध के कारण है। अतः युद्ध की शीघ्र समाप्ति की आशा ने उनको प्रसन्न ही किया था।

कांग्रेस के नरम दल के नेता भी प्रसन्न थे। यह इस कारण कि हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ी राज्य के जाने की सम्भावना कम हुई प्रतीत होती थी। अंग्रेज़ी सेना की प्रगति डार्डिनल और इराक में रुक जाने से, ये लोग आशंका करते थे कि जर्मन सेना पश्चिमोत्तरी सीमा की ओर से हिन्दुस्तान में घुस आयेगी और फिर यहाँ के नर-नारियों को बूटों के तले रौंद देगी।

हिन्दुस्तान में ऐसे देवता लोग भी थे, जो युद्ध-बन्दी की आशा में प्रसन्न थे। उनको हो रही नर-हत्या घोर अनर्थकारी प्रतीत हो रही थी। कहीं-कहीं हिन्दू और ईसाई संसार में शान्ति के लिये पूजा, प्रार्थना और यज्ञ, अनुष्ठान भी कर रहे थे।

ये सब समाचार नलिनीकान्त के समाचार-पत्र में छपते रहते थे। इस पर नलिनी ने भी टिप्पणी लिखी। उसका कहना था कि यह सन्तोष का कारण हो सकता है कि अमेरिका को विवश होकर युद्ध में हस्तक्षेप करना पड़ा है। हम यह जानते हैं कि इसमें लाखों नहीं तो सहस्रों अमरीकन युवक मारे जायेंगे, परन्तु उनके बलिदान से लाखों की हो रही हत्या बच जायेगी। सबसे बड़ी बात यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी कि एक सैनिक-प्रवृत्ति का राज्य जो अपनी सैनिक-शक्ति के कारण अभिमान में चूर हो रहा था, अपने मूर्खतापूर्ण अभिमान से रहित हो जायेगा।

इस टिप्पणी के बाद नलिनी ने जर्मनी के इस मूर्खतापूर्ण आरम्भ किये युद्ध के कारण, उसके व्यवहार की विवेचना की थी। उसका कहना था कि एक बुद्धिमान व्यक्ति और दुष्ट व्यक्ति में अन्तर यह होता है कि बुद्धिमान व्यक्ति अपने व्यवहार के अनौचित्य को समझ व्यवहार को बदल डालता है और अपने दुर्व्य-वहार पर पश्चात्ताप भी करता है, जबकि दुष्ट व्यक्ति नहीं बदलता। ऐसे व्यक्ति का तो नाश ही करना पड़ता है। दुष्टों को परास्त करने के लिये युद्ध ही एक मार्ग है और ऐसा युद्ध पुण्य-कार्य है।

नलिनीकान्त का कहना था कि इस पुण्य-कर्म को पूरा करने का श्रेय अमरीका को प्राप्त होगा। निस्सन्देह वर्त्तमान शताब्दी अमरीका के अभ्युदय की शताब्दी होगी। धीरे-धीरे अमरीका शक्ति, श्री तथा यश का भागी होगा।

परन्तु क्या अमरीका शक्ति और यश प्राप्त कर अहंकारी नहीं हो जायेगा? यह भविष्यवाणी करना बहुत कठिन है। बड़े-बड़े धर्मात्मा, साधन एवं शक्ति-सम्पन्न होते ही अहंकार में फँस अथवा भोग-विलास में लिप्त हो, बुद्धि की हत्या कर बैठते हैं।

अंग्रेज़ नीतिज्ञों में भी अपनी सफलता के ज्ञान में अभिमान और अहंकार की उत्पत्ति होने लगी थी। यों तो अंग्रेज़ जाति ने अपना साम्राज्य भूमण्डल पर चारों दिशाओं में फैला कर यह समझ रखा था कि वे अजेय हैं, परन्तु जर्मन सेनाओं ने उनकी बुद्धि को एक ठोकर मारी थी। अब अंग्रेज़ नीतिज्ञ अपनी नीति की यह विजय मानते थे कि अमरीका, इंगलैण्ड की ओर से युद्ध में सम्मिलित हो रहा है। अमरीका में एक भारी संख्या में जर्मन तथा अन्य 'लेटन' भाषायी लोग रहते थे और उनकी उपस्थिति में यदि अमरीका, इंगलैण्ड तथा फ्रांस के पक्ष में युद्ध में सम्मिलित हुआ है तो उसे अंग्रेज़ नीतिज्ञ अपनी नीति की जय मानते थे।

इस प्रकार के विचार के अंग्रेज़ों में हिन्दुस्तान के अंग्रेज़ अधिकारी सबसे आगे थे।

आतंकवाद उपज थी उस निराशापूर्ण स्थिति की, जो हिन्दुस्तान में चल रही थी।

हिन्दुस्तान का क्षत्रिय-वर्ग युद्ध करना जानता था और स्वाधीनता-संग्राम में जूझना भी जानता था, परन्तु कमी थी तो उनके पथ-प्रदर्शक ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों की।

हिन्दुस्तान का ब्राह्मण-वर्ग शान्ति-शान्ति की कूक लगा रहा था। परिणाम-स्वरूप क्षत्रिय-वर्ग पर उनका नेतृत्व समाप्त हो गया था। ब्राह्मण-वर्ग में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार कि धर्म के लिये युद्ध करना पुण्य का कार्य है, समाप्त हो चुका था। इसको पुन: जाग्रत करने का यत्न किया था महर्षि स्वामी दयानन्द ने। उन्होंने इस कार्य में वेद, स्मृति तथा गीता का आश्रय लिया, परन्तु हिन्दू-समाज में स्वामी जी के देहान्त के उपरान्त यह भावना कि युद्ध धर्मार्थ लड़े जाने चाहियें, पुन: विलीन हो गयी। स्वामी दयानन्द जी के नाम की नौका में बैठ, यात्रा करने वाली आर्य-समाज ने इस भावना को छोड़ दिया और समाज क्षत्रिय-वर्ग के नेतृत्व से वंचित हो गया।

युद्ध की भावना को हिन्दुओं के मन से निकालने में अंग्रेज़ी शिक्षा ने भी भारी भाग लिया था। मैकॉले साहब से चलायी इस शिक्षा ने ही स्वामी दयानन्द की शिक्षा को विनष्ट किया था।

किसी भी युद्ध में सम्पूर्ण समाज के सहयोग की आवश्यकता रहती है। वह सहयोग युद्ध-पक्ष में ब्राह्मण-वर्ग के अभाव के कारण हिन्दू युवकों को प्राप्त नहीं हो सका। अत: उनको आतंकवाद की गोद में आश्रय मिला।

परन्तु इसकी प्रतिक्रिया हिन्दुस्तान के अंग्रेज़ शासकों में भिन्न प्रकार से हुई। वे अपनी नीति की सफलता में मदमस्त रौलेट कमेटी नियुक्त कर उससे रौलेट ऐक्ट नाम का कानून प्रस्तावित कर उसका आश्रय ले बैठे।

ज्यों ही रौलेट ऐक्ट का प्रारूप छपा, देश में हाय-तोबा मच गयी। इस कानून के अनुसार किसी को अपराधी मानने और फिर उसे दण्ड देने का अधिकार पुलिस को दे दिया गया था। पुलिस के अधिकारी कितने भी ईमानदार हों, उनके भ्रम-रहित होने का विश्वास नहीं किया जा सकता था।

मुस्लिम लीग इस कानून के प्रारूप प्रकाशित होने पर प्रसन्न थी। कांग्रेस के बहु-संख्यक नेता मन-ही-मन तो प्रसन्न थे, परन्तु प्रकट में मौन थे।

अत: 'बॉम्बे न्यूज़' ने सरकार के इस प्रस्ताव पर आलोचना आरम्भ की तो जहाँ कांग्रेसी इससे छटपटाने लगे, वहाँ मुस्लिम लीग के लोग भी उससे रुष्ट हो गये। इस प्रस्तावित कानून का विरोध था जनता में और कांग्रेस के उन नेताओं में, जिनका जनता के साथ सम्बन्ध था। बाल गंगाधर तिलक, श्रीमती ऐनिबिसेंट और इन दोनों नेताओं के भारी संख्या में अनुयायी छटपटा रहे थे।

इस समय हिन्दुस्तान के आकाश पर एक अन्य नक्षत्र का उदय हो रहा था। यह था मोहनदास कर्मचन्द गांधी।

यह गांधी जी अफ्रीका में अपने विचारों का परीक्षण करते हुए हिन्दुस्तान में आये थे और यहाँ भिन्न-भिन्न राजनीतिक संस्थाओं में भटक रहे थे। 'सर्वेन्ट ऑफ इण्डिया सोसायटी' ने इनको अपने में लेने से इन्कार कर दिया था। कांग्रेस के नरम दल के लोग इनको मुख नहीं लगाते थे और तिलक इत्यादि से इनके विचार मिलते नहीं थे। तिलक इत्यादि स्वराज्य-प्राप्ति को अपने कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का लक्ष्य मानते थे और इस लक्ष्य की सिद्धि के लिये सब उपयुक्त उपाय क्षम्य मानते थे। यहाँ तक कि ये लोग आतंकवादियों को भी निन्दनीय नहीं समझते थे। तिलक जी तो आतंकवादियों को क्रान्तिकारी आन्दोलन की हरावल के सैनिक समझते थे।

गांधी जी को हिंसा, व्यक्तिगत अथवा समष्टिगत, दोनों स्वीकार नहीं थीं और वे समझते थे कि सामूहिक अहिंसावाद से कोई भी लक्ष्य सिद्ध किया जा सकता है।

गांधी जी ने चम्पारण में और अहमदाबाद में आर्थिक विषयों पर अपने अहिंसा-बल की परीक्षा की थी। दोनों ही स्थानों पर उन्हें आंशिक सफलता मिली थी। इससे उत्साहित वे अपनी कार्य-विधि की परीक्षा देश-व्यापी क्षेत्र में करना चाहते थे।

इसके लिये रौलेट ऐक्ट ने अवसर उपस्थित कर दिया। गांधी जी ने यह घोषणा कर दी कि इस प्रारूप को यदि पारित किया गया तो वे अपना अहिंसात्मक विरोधी आन्दोलन आरम्भ करेंगे।

इस घोषणा पर वे नेतागण जो इस प्रस्तावित कानून का विरोध करना चाहते थे, गांधी जी के पीछे हो लिये। बम्बई में ऐनिबिसेंट अपने साथियों से परामर्श करने आयी हुई थीं। मिस्टर वाडिया के घर पर गोष्ठियाँ हो रही थीं और नलिनीकान्त इन गोष्ठियों में सक्रिय भाग ले रहा था।

: १० :

इन्हीं दिनों की बात है कि कमलनारायण का टेलीफोन नलिनीकान्त को आया। नलिनीकान्त ने चोंगा उठाया तो कमलनारायण ने अपना परिचय दिया। इस पर नलिनीकान्त ने पूछ लिया, "हाँ, वकील साहब ! फरमाइये, क्या बात है ?"

"मौसा जी ! आपने जो आग लगायी है, उसे बुझायेंगे अथवा नहीं ?"

"मैं समझा नहीं। अपनी जानकारी में मैंने कोई आग नहीं लगायी।"

"इसका साक्षी तो मैं हूँ। आपने मेरी बहन की लड़की के घर में आग लगायी और उसकी शान्ति ज्ञानस्वरूप की हत्या से हुई थी। क्या जो आग आपने खानबहादुर नसीरुद्दीन के घर में लगायी है, उसकी समाप्ति भी किसी की हत्या में होगी ?"

"वकील साहब ! यही तो मेरा आपसे मतभेद रहा है। मैं जब कोई कार्य करता हूँ तो समाज के कल्याण को दृष्टि में रख कर करता हूँ। समाज-कल्याण में स्वार्थी और विलासी लोगों को अपना अहित दिखायी देता है। वे समझने लगते हैं कि मैंने उनका अकल्याण किया है। यही बात ज्ञानस्वरूप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था में हुई थी।

"ज्ञानस्वरूप ने जब अनुचित सम्बन्ध ललिता से बनाया तो उसकी पत्नी मीनाक्षी मेरे परिवार के सम्पर्क में आयी और मेरे परिवार वालों का आचरण देख, वह हमारा अनुकरण करने लगी। जब ललिता पुनः हमारे परिवार में आकर खप गयी तो मीनाक्षी हमारी भक्तिनी बन गयी। उसको अपना पति महान् पापी दिखायी देने लगा। ज्ञानस्वरूप पर इस बात का प्रभाव नहीं हुआ और वह अपनी पत्नी से सुख और सन्तोष प्राप्त करने के स्थान, अन्य स्थानों पर इसकी प्राप्ति के लिये जाता रहा। परिणाम यह हुआ कि किसी की भूमि पर उसने अधिकार जमाने का यत्न किया तो उस भूमि के मालिक ने उसकी हत्या कर दी। बताइये; उसमें मैं कहाँ से आ गया ?

"खैर, छोड़िये उसे। बताइये, अब इधर क्या हुआ है ? अब तो कई दिन से हमीद और रफीक भी अपनी बहन से मिलने नहीं आते।"

"देखिये, मौसा जी ! आज से एक वर्ष पूर्व मैंने खानबहादुर को सुझाव दिया था कि वे अपने पारिवारिक झगड़े में आपको सालिस डाल लें, परन्तु उन्होंने इसमें मेरा कहा नहीं माना।

"हमीद ने सब-जज की अदालत में दावा किया हुआ है कि खानबहादुर ने अपने प्रयत्न से एक पैसे की भी सम्पत्ति निर्माण नहीं की। वे इसे राजनीतिक कार्यों में व्यर्थ गँवा रहे हैं। अतः खानबहादुर की सम्पत्ति पर रिसीवर बैठा दिया जाये, जिससे खानदान के वारिसों के हक-हकूक को वे व्यर्थ न गँवा सकें।

"जब खानबहादुर ने मेरी सम्मति नहीं मानी अर्थात् आपको अथवा किसी अन्य को सालिस नियुक्त नहीं किया तो मुकद्दमा चलने लगा। कल सब-जज ने यह सुझाव दिया है कि घर के सब लोग यदि किसी व्यक्ति को सालिस अथवा रिसीवर नियुक्त नहीं करते तो सम्पत्ति पर सरकारी रिसीवर बैठा दिया जायेगा।

"इस बात से विवश हो अब घर के लोग एक सालिस मुकर्रिर करने पर राजी हो गये हैं। उनका चुनाव आप हैं। अतः खानबहादुर ने मुझसे कहा है कि यदि आप मान जायें तो वे आपको सालिस नियुक्त करने के लिये तैयार हैं।"

"पर कमल जी ! मेरे पास इस काम के लिये समय नहीं है। आज देश में विप्लव की-सी अवस्था दिखायी देने लगी है और ऐसे अवसर पर कोई भी नागरिक खानबहादुर जैसे परिवार की गन्दगी में हाथ डालना पसन्द नहीं करेगा।"

"परन्तु इस गन्दगी की सृष्टि भी तो आपने ही की है।"

"कैसे ?"

"आपकी पतोहू खानबहादुर की लड़की ने अपने मजहब से बाहर विवाह करके अपने माता-पिता के घर में विस्फोटक स्थिति उत्पन्न की है।"

"मैं इस आरोप से इन्कार करता हूँ। यद्यपि मैं अपनी पतोहू सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी इसका उत्तरदायी नहीं मानता; इस पर भी मैं तो यह कह रहा हूँ कि मैं न तो अपने पुत्रों के कार्य का और न ही पतोहू के कार्यों का उत्तरदायी हूँ। दोनों सज्ञान हैं और अपना भला-बुरा स्वयं विचार कर ही कार्य करते हैं।"

"खैर, इस विषय में मतभेद है। इस पर भी समस्या यह है कि यदि आप मध्यस्थ बन जायें तो एक समृद्ध परिवार का कल्याण कर सकते हैं। इस परिवार का आपके परिवार से सम्बन्ध भी है।"

"ठीक है। यदि मेरे करने से किसी का कुछ भी कल्याण होता है तो वह मैं करने के लिये तैयार हूँ। इस पर भी मैं अपनी स्वीकृति तब दूँगा, जबकि कम-से-कम परिवार के मुख्य-मुख्य प्राणी पहले मुझे पृथक् में मिलकर अपनी बात समझा दें। तब मैं सालिस बनने की स्वीकृति लिखकर दे दूँगा।"

"मैं उनसे बात करूँगा।"

नलिनी एक मुस्लिम-लीगी परिवार की अन्तरंग बातों में हस्तक्षेप करना नहीं चाहता था, परन्तु स्वभाववश जब किसी के कल्याण कर सकने की बात हुई तो वह इसके लिये तैयार हो गया। वह यह भी देखता था कि उसके प्रयास से प्रायः दूसरों को हानि ही पहुँचती थी, परन्तु इसमें वह अपने को उत्तरदायी नहीं मानता था। उसने तो सम्बन्धित व्यक्तियों की रुचि के बिना उनके मुआमलों में हस्तक्षेप नहीं किया था। दूसरे, वह निस्वार्थ भाव से कार्य करता था; इस पर भी यदि किसी का अकल्याण होता था तो यह उसकी अपनी प्रवृत्ति के कारण ही था।

कमलनारायण की बात सुन, उसे तब से पच्चीस वर्ष पूर्व की बात स्मरण हो आई। लाहौर में वह रामचन्द्र और भाग्यवती के परिवार के सम्पर्क में आया था। सुभद्रा के कहने पर वह उसकी भलाई के विचार से उसका सहायक हो गया था। पहले तो रामचन्द्र को उसकी लड़की की सहायता सुखप्रद प्रतीत हुई थी, परन्तु पीछे उसे वह अनुचित प्रतीत होने लगी थी और रामचन्द्र ही उसको कैद कराने में साधन बन गया था। तदनन्तर उसने आत्म-हत्या कर ली थी।

इस घटना ने रामचन्द्र के परिवार में भारी अकल्याण का सृजन किया था। हेमराज अपनी माँ से पृथक् हो गया था। सुभद्रा से विवाह के उपरान्त भागीरथ बम्बई में कारोबार करने लगा था। हेमराज अकेला काम चला नहीं सका और कुछ वर्षों में सब पूँजी समाप्त कर नौकरी करने पर विवश हो गया। निर्धनता के कारण अल्पायु में ही विधवा पत्नी और दो बच्चे छोड़, स्वर्ग सिधार गया था। हेमराज की माँ भाग्यवती अति निर्धनता का जीवन व्यतीत कर रही थी और अपनी पूर्ण मुसीबत का उत्तरदायी नलिनी और उसकी अंग्रेज़ पत्नी को मानती थी।

नलिनीकान्त इससे अति दुःखी हुआ था, परन्तु पूर्ण घटना उसके कल्याण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की इच्छा के परिणामस्वरूप ही घटी थी। इस कारण वह इसमें अपने को किसी प्रकार से दोषी नहीं मानता था। उसका मत था कि दुर्घटना भाग्यवती और रामचन्द्र की दूषित मनोवृत्ति के कारण हुई थी और हेमराज की कारोबार में अयोग्यता के परिणामस्वरूप हुई थी।

वैसे तो जीवन में अन्य घटनाएँ भी हुई थीं। परन्तु यह प्रस्ताव कि वह खानबहादुर नसीरुद्दीन साहब के पारिवारिक मामले में मध्यस्थ बने, उसे कुछ वैसी ही बात समझ आयी थी जैसी कि रामचन्द्र के परिवार की थी।

उसने परिवार के लोगों से मिलने की स्वीकृति दी तो सबसे पहले उसने सरस्वती से पूर्ण परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करना चाहा।

सरस्वती 'बॉम्बे न्यूज़' समाचार-पत्र में कार्य करती थी। मध्याह्न का भोजन तो वह परिवार के साथ लेती थी, परन्तु रात के भोजन के समय सरस्वती समाचारों की छंटनी करने के लिये कार्यालय में रहती थी। वह सायं सात बजे ही रात का खाना खा कर कार्यालय में चली जाया करती थी और फिर रात के बारह बजे वहाँ से अवकाश प्राप्त कर घर आया करती थी। नलिनी सम्पादकीय लिखने प्रातः कार्यालय में चला जाया करता था।

कमलनारायण का प्रस्ताव प्रातः नौ बजे आया था और मध्याह्न के समय जब नलिनी खाना खाने बैठा तो सरस्वती भी वहाँ उपस्थित थी। नलिनी ने बात सबके सामने ही कर दी। उसने पूछ लिया, "सरस्वती! तुम्हारे पिता के घर में, सुना है, बहुत झगड़ा हो गया है?"

"जी; किससे सुना है आपने?"

"कमलनारायण बता रहा था। उसने बताया है कि हमीद ने अपने पिता पर दावा किया है कि वह पूर्वजों की सम्पत्ति राजनीतिक कार्यों में व्यर्थ व्यय कर रहे हैं। साथ ही उसने रफीक को अपना उत्तराधिकारी मान लिया है। इस कारण उनकी पारिवारिक सम्पत्ति पर रिसीवर बैठा दिया जाये।"

"पिता जी! मुझे यह सब तो विदित नहीं। हाँ, यह सुना है कि छोटी अम्मी के तीन बच्चे हैं। उनमें से दो हमीद से हैं और एक रफीक से है।"

"ओह!" नलिनी आश्चर्यचकित सरस्वती का मुख देखता रह गया।

सरस्वती ने एक क्षण रुक, आगे कहा, "हमीद की अपनी बीवी रौनी, यह सब-कुछ जानती हुई भी इसमें आपत्ति नहीं करती।"

इस समाचार को सुन नलिनीकान्त ने पूछा, "और तुम्हारे वालिद साहब इसको किस प्रकार समझते हैं?"

"वे तो मुझे मिले नहीं। हाँ, मरियम अम्मी कहती थीं कि पहले तो वे बड़े भाई पर नाराज हुए थे और फिर रफीक की बात जान कर एक-दो दिन परेशान रहे। मगर अब वे यह समझते हैं कि घर में एक पेशेवर औरत रखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई है। इतनी गनीमत है कि उसका पेशा घर में ही चलता है।"

"मतलब यह कि उनको इस पर अब आपत्ति नहीं रही ?"

"एक दिन रीनी ने कहा था कि आयशा अम्मी का निकाह रफीक से पढ़ा दिया जाये। अब्बाजान यह नहीं चाहते। उनका कहना था कि इससे उनकी बदनामी होगी। इस पर भी यदि उसके बच्चे हो रहे हैं तो यह मुसलमानों की आबादी ही बढ़ रही है। वे यह भी कहते हैं कि हमीद ने एक बाँझ औरत से शादी कर, उसे घर पर रखा हुआ है। इसलिये वे चाहते हैं कि आयशा हमीद के साथ रहे और रफीक नयी शादी कर उससे औलाद पैदा करे।"

इस मनःस्थिति के पता चलने से नलिनी को खानबहादुर के परिवार पर दया आने लगी। इस पर भी, वह समझता था कि उसको इस विषय में मध्यस्थ नहीं बनाया जा रहा। उसे तो उनके घर की अर्थ-सम्बन्धी व्यवस्था करने के लिये मध्यस्थ बनाया जा रहा है। इस कारण सरस्वती को उसने कह दिया, "कमलनारायण के कहने का अर्थ यह समझ में आया है कि उनके परिवार की सम्पत्ति का झगड़ा मेरे सामने है। उनके घर की दूसरी बातें मुझसे नहीं हुईं।"

"पहले हमीद अथवा अम्मी टेलीफोन कर दिया करते थे और मैं नियत समय पर 'ताज महल' में चाय के लिए पहुँच जाया करती थी और वहाँ हमीद, रफीक और कभी-कभी अम्मी तथा मरियम अम्मी आ जाया करती थीं। आयशा वहाँ कभी नहीं आयी, न ही जहाँआरा की अम्मी कभी आयी हैं।"

"देखो सरस्वती! मैंने कमलनारायण से कहा है कि खानबहादुर के प्रमुख-प्रमुख व्यक्ति मुझसे मिल लें। उनकी इच्छा जान कर ही मैं मध्यस्थ बनने की स्वीकृति दूँगा।"

"ठीक है। पहले आपको यह जान लेना चाहिये कि विवाद किस विषय पर है। इस बात के जाने बिना निर्णय नहीं हो सकेगा।"

"न केवल यह कि निर्णय हो सकता है अथवा नहीं, वरन् यह भी कि मैं निर्णय करने के लिये मस्तिष्क खराब करूँ भी अथवा नहीं।"

"पिता जी! मेरी बात मानिये। आप इन्कार कर दीजिये।"

"यह भी मैं विचार करूँगा। यदि मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि उस परिवार में कोई श्रेष्ठ मानवोचित गुणों को रखने वाला है तो मैं उसकी सहायता के लिये यत्न करूँगा।"

"वैसे उस घर में मरियम अम्मी सहायता के योग्य हैं ही। मेरी अम्मी तो एक पालतू गाय की भाँति रहती हैं। कभी-कभी जब कोई बहुत कष्ट देता है तो अपने सींग हिला कष्ट देने वाले को डरा-धमका देती हैं।"

"कदाचित् उस गाय की सहायता ही हो सके।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ११ :

उसी दिन सायंकाल खानबहादुर मिलने आये। नलिनी कार्यालय से घर आ गया था। सरस्वती कार्यालय में थी।

खानबहादुर पहली बार सरस्वती के घर आये थे। आते ही उन्होंने नलिनी से हाथ मिला कर पूछ लिया, "तबस्सुम कहाँ है?"

नलिनी ने खानबहादुर को बैठाते हुए कहा, "वह इस समय समाचार-पत्र के कार्यालय में है। उसका कार्य मध्याह्न दो बजे से रात के बारह बजे तक होता है। सायंकाल एक घण्टे की छुट्टी होती है और उस समय वह चाय पीने आया करती है। इस समय वह खाना खाकर अभी गयी है।"

"किस समय घर आती है?"

"प्रायः रात के बारह बज जाते हैं।"

"बहुत कड़ी ड्यूटी लेते हैं? क्या वेतन मिलता है उसको?"

"हमारे दोनों समाचार-पत्र एक प्राईवेट लिमिटिड कम्पनी की सम्पत्ति हैं। वह कम्पनी मुझे भत्ता देती है, डेढ़ हज़ार प्रति मास। विजय को एक सहस्र वेतन मिलता है। सरस्वती को पाँच सौ मिलता है।"

"बहुत अच्छा वेतन मिलता है।"

"जी। वैसे बच्चों को वेतन के लिये काम करने की आवश्यकता नहीं है। वे शौकिया काम करते हैं, परन्तु अलाउंस अथवा वेतन तो मिलता ही है।"

"मैंने तो सुना था कि कमलनारायण की बीवी का ही सारा पैसा लगा है।"

"हाँ; अस्सी प्रतिशत हिस्से उसी के हैं। बीस प्रतिशत दूसरों के हैं। उसमें पाँच प्रतिशत मेरी पत्नी के भी हैं।"

"कितनी आमदन हो जाती इस अखबार से?"

"अभी तक तो जो भी आमदन हो रही है, वह हम इसी में लगा रहे हैं। पिछले दस वर्ष से हमने इसमें से लाभ प्राप्त नहीं किया।"

"खैर, आपको तो फायदा होता ही है।"

"जी; मुझे अपने खयालात फैलाने का सहारा मिल ही गया है।"

"पर इससे आपको क्या फायदा होता है?"

नलिनी मुस्कराता हुआ खानबहादुर की ओर देख कर उनकी मनोवृत्ति का अनुमान लगाने लगा। खानबहादुर उसके चुप कर जाने का अर्थ नहीं समझे। नलिनी ने कह दिया, "दुनिया में पीर-पैगम्बर, गुरु, ऋषि-महर्षि अपने उपदेशों से कुछ तो प्राप्त करते ही रहे हैं। वही कुछ, यद्यपि उनसे बहुत कम, मैं भी प्राप्त करता हूँ।"

"देखो, बाबू नलिनीकान्त! हम दुनियादारों को उन बुजुर्गों की नकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की हिमाकत नहीं करनी चाहिये। वे खुदा-दोस्त मखलूक की खिदमत करने के लिये ही पैदा किये गए थे। हम तो अपने गुनाहों की वजह से ही यहाँ भेजे गये हैं।"

नलिनी इस व्यर्थ के विवाद में पड़ना नहीं चाहता था। इस कारण उसने पूछ लिया, "आपने आज इस गरीबखाने को रौनक बख्शी। मैं आपका निहायत ही शुक्र-गुज़ार हूँ। बताइये, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ?"

इस समय नौकरानी रामी चाय ले आयी। चाय के साथ कुछ मिठाई और नमकीन भी थी।

"मैं तो चाय पीकर आया हूँ।" खानबहादुर ने कहा।

"यह तो जल-पान ही है। अभी खाने का वक्त नहीं। उस वक्त विचार किया जाना चाहिये कि आप खाकर आये हैं अथवा नहीं?"

नलिनी दोनों के लिये चाय बनाने लगा तो खानबहादुर ने अपने आने का उद्देश्य बता दिया। उन्होंने कहा, "कमलनारायण ने आपको हमारे खानदान की बाबत बताया होगा। मैं उसी सिलसिले में आया हूँ।"

"हाँ; उन्होंने यह बताया है कि हमीद ने किसी किस्म का दावा किया हुआ है। यह तो उनकी बात है; परन्तु आप बताइये कि हमीद क्या चाहता है जो आप उसे दे नहीं रहे और क्यों?"

"वह जो कुछ माँगता रहा है अथवा जो कुछ वह छीना-झपटी कर ले जाता रहा है, वह मैंने कभी वापस नहीं माँगा। इस पर भी उसने दावा किया है तो मैं समझता हूँ कि उसका दिमाग खराब हो रहा है।"

"मगर दिमाग की खराबी का इलाज तो सालिस नहीं कर सकता। सालिस तो किसी मामले में इख्तिलाफ होने पर ही फैसला कर सकता है।"

"हाँ; इख्तिलाफ राय तो है। देखिये, मैं आपको उसकी बीमारी की वजह बताता हूँ। वह एक ऐसी औरत से ईसाई तरीके से शादी कर उसे यहाँ लाया है, जो कि बाँझ है। उसने बच्चेदानी पेट से निकलवा दी हुई है। वह उसे तलाक तो दे सकता है, मगर देता नहीं और दूसरी शादी नहीं करता। इसलिये वह इधर-उधर हाथ मारता रहता है। इसी सिलसिले में उसने अपनी सबसे छोटी अम्मी पर हाथ साफ किया है। उससे दो बच्चे पैदा कर उसने उसे छोड़ दिया है और अब एक खिदमतगारिन की न-बालिग लड़की से तअल्लुक बना लिया है।

"मैंने उसे कहा है कि वह रीनी को तलाक दे-दे और कम-से-कम दो बीवियों से शादी कर ले, जिससे वह अपने को मशगूल रख सके।"

"मगर खान साहब! क्या औरत के सिवा दूसरा कोई काम ही नहीं, जिसमें वह अपना समय और ध्यान लगा सके?"

"मगर वह किसी दूसरे काम के लायक है भी तो नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुना है कि विलायत से बैरिस्टर बनकर आया है ?"

"हाँ, मगर उसे कानून का ए-बी-सी भी नहीं आता। खुदा जाने वहाँ से इसे 'डिग्री' कैसे मिल गयी है ?"

"परन्तु डिग्री मिली भी है क्या ? कहीं ऐसा तो नहीं कि झूठमूठ ही कह दिया हो कि वह बैरिस्टर है ?"

"यह बात नहीं। डिग्री तो मिली है, मगर उसकी तवज्जो औरतों की तरफ ज्यादा है।"

"तो आपका मतलब है कि उसके लिये कोई काम ढूँढना चाहिये, जिससे कि वह घर से बाहर रह सके। आप उसे अपनी ज़मींदारी पर क्यों नहीं भेज देते ?"

"वह इन्तजाम करने के काबिल नहीं है। उसकी बीवी ने ज़मींदारी पर काम करने वालों की एक अंजुमन बना दी थी। उसे वह ट्रेड यूनियन कहती है। वहाँ सब मज़दूर अपना मेहनताना बढ़ाने की कोशिश करने लगे हैं। मैंने उसे वहाँ से बुला लिया था। घर पर रहने से वह औरतों से खेलने लगा है।"

"अच्छा, यह बताइये कि आप उसे क्या देकर अपने से अलहदा करना चाहते हैं ?"

"मेरे पास कुछ नकद तो बचता ही नहीं। हाँ, बुजुर्गों की जायदाद है। उसको मैं बाँटना नहीं चाहता।"

"आप उसकी आय में से उसे क्या देते हैं ?"

"वह पाँच-सौ रुपया महीना पाकेट-खर्चे के लिये पाता है। सब घर के फ़र्द पाँच-पाँच सौ पाते हैं और वे सब सन्तुष्ट हैं। यही एक है जो सोने की मुर्गी को ही हलाल करने की बात कहता है।"

"मगर कमलनारायण जी तो कहते थे कि उसका दावा है कि जायदाद पर रिसीवर बैठा दिया जाये।"

"हाँ; बजाहिर में तो यही दावा है। मगर उसकी हकीकी ख्वाहिश यह है कि उसको घर में औरतों के साथ हरामखोरी करने की इजाजत दी जाये।"

"खान साहब, दोनों में गहरा तअल्लुक है। उसे किसी ऐसे काम में लगाया जाये, जिससे कि उसे किसी औरत के पीछे भागने की फुरसत ही न मिले।"

"अगर यह हो सके तो ठीक है। इस पर भी वह उस बाँझ औरत को छोड़ दे तो बहुत बातों का अपने-आप फैसला हो जायेगा।"

खानबहादुर से भेंट करने पर तो नलिनी कुछ सिर-पैर नहीं समझ सका। इसके दूसरे दिन रफीक मिलने आया। नलिनी ने उसे भी आदर से बैठाया। वह मध्याह्नोत्तर के समय खाना खाने के उपरान्त आया था। नलिनी कार्यालय

—२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जाना चाहता था, परन्तु उस समय उसे आया देख, नलिनी ड्रायंग-रूम में ही बैठ गया और पूछने लगा, "रफीक साहब ! खाना लेंगे क्या ?"

"नहीं, मैं तो आपसे सिर्फ दो बातें करने आया हूँ। वे कह कर चला जाऊँगा।"

"हाँ, बताओ ?"

"मेरी शादी आयशा से कर दी जाये। वह भी पसन्द करती है और मुझे भी वह पसन्द है।"

"मगर वह तो तुम्हारे अब्बाजान की बीवी है ?"

"कहने को सिर्फ। पहले वह हमीद से तअल्लुक रखती थी। मैं तो उसे घर की एक नौकरानी की लड़की समझता हूँ, जिसे अब्बाजान ने खराब करने की कोशिश की थी, मगर वे उससे औलाद पैदा नहीं कर सके। हमीद से उसके दो बच्चे हैं। दोनों खूबसूरत और ज़हीन लड़के हैं। मेरे आने से पहले हमीद ने उसे छोड़ दिया था। वह कहता है कि उससे गलती हुई थी। उसको इस बात का अफसोस है। मैं उससे शादी कर लूँ तो मेरा कुछ भी झगड़ा नहीं। मैं अपने गुज़ारे में राज़ी हूँ।"

"हमीद ने दावा किस बात का दायर किया है ?"

"यह तो आपको वही बतायेगा कि उसने दावा किसलिये किया हुआ है। मैंने अपनी बात बता दी है और मैं कुछ नहीं जानता।"

"एक बात और बता दो। तुम किसी कुँवारी लड़की से शादी क्यों नहीं करते ?"

"वह भी करूँगा, मगर मैं इसे छोड़ना नहीं चाहता। एक की बाबत मैंने फैसला किया हुआ है। वह इससे शादी के पीछे सोच लूँगा।"

हमीद उसी दिन सायंकाल मिलने आया। हमीद ने कहा, "मुझे अब्बाजान का मुस्लिम लीग में काम करना पसन्द नहीं। वे उसे छोड़ दें तो मैं अपना दावा वापस ले लूँगा।"

"मगर उनका मुस्लिम लीग में काम करना तुमको क्या तकलीफ देता है ?"

"दो दिक्कतें हैं। एक तो इस काम में बहुत-सा पैसा बरबाद किया जा रहा है। दूसरे, यह मुस्लिम-लीगी मुल्क को पिछड़ा हुआ रखने में मदद दे रहे हैं।"

"पिछड़ा हुआ से क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि मज़हब के शिकंजे में जकड़े हुए लोग कोई भी नया खयाल दिमाग में ला नहीं सकते और इस्लाम एक मज़हब है।"

"और हिन्दू को क्या समझते हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दू ज़िन्दगी का एक तरीका है, जो बिना शिकंजे के है। मेरा मतलब है कि यह ज़िन्दगी का ऐसा तरीका है, जिसमें इन्सान को खुली हवा में रहने की आज़ादी है। यही वजह है कि हिन्दुओं में सब किस्म के लोग हैं।"

"तो तुम इस्लाम को पसन्द नहीं करते ?"

"मैंने दोनों फिरकों की किताबों को नहीं पढ़ा। मैं तो दोनों लोगों के रहन-सहन को देख, अन्दाज़ लगा रहा हूँ।"

"आखिर कुछ तो बात है, जिसकी वजह से हिन्दू सब इकट्ठे रहते हैं।"

"मैं यह समझा हूँ कि उनमें अपने ढंग पर रहने की आज़ादी ही है, जिसकी वजह से वे इकट्ठे रह रहे हैं।"

"यह सब तुमको किसने बताया है ?"

"मैं पिछले दो साल से तबस्सुम को देख रहा हूँ। उससे आपके खानदान की बात सुनता रहा हूँ। साथ ही मैं अपने चारों ओर देखता हूँ तो यही पता चलता है कि हिन्दू एक आज़ाद खयालात कौम है।"

"तो तुम हिन्दू क्यों नहीं हो जाते ?"

"मेरी बीवी रीनी कहती है कि पहले अब्बाजान की जायदाद का बटवारा करवा लूं तो पीछे, हिन्दू बनूं या क्या बनूं, देख लूंगा। एक बात है। वह यह कि मैं मुसलमान नहीं हूँ।"

"क्या खराबी है इस्लाम में ?"

"बाबू साहब ! बताया तो है।"

हमीद के बाद मरियम और रीनी भी मिलीं। उनका कहना तो यह था कि आर्थिक स्वतन्त्रता को वे पसन्द करती हैं और अगर उनको आर्थिक स्वतन्त्रता मिल जाये तो वे अपना जीवन अपनी इच्छानुसार रख सकेंगी। वे रिसीवर इसलिये चाहती हैं कि रिसीवर से उनको मिलने वाला माहवारी वजीफा मिलता रहेगा। अब तो हमें रफीक की मिन्नत-समाजत करनी पड़ती है और वह पाँच सौ रुपया भी सौ-सौ, पचास-पचास कर देता है।

नलिनी ने ज़रीना से और सुरैया से लिखित सम्मति माँगी। वह कह नहीं सका कि वे उसको आकर अपने मन की बात बतायें। ज़रीना का कहना था कि वह अपने खाविन्द के और लड़कों के घर से अलहदा रहना चाहती है, जहाँ वह चैन से खुदा की इबादत कर सके। दूसरी बेगम सुरैया का यह कहना था कि खानबहादुर उसे पीटते रहते हैं। इससे वह अपनी लड़की को लेकर अलहदा रहेगी। उसे डर है कि आयशा की तरह उसकी लड़की भी एक पेशेवर औरत न बन जाये।

इस प्रकार नलिनी को पूरी बात का ज्ञान हो गया। अन्त में उसने खानबहादुर को बुला कर कहा, "मैंने एक फैसला किया है। मैं चाहता हूँ कि आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब उस फैसले को सुन लें। यदि आप सब एक मत से वह फैसला मंज़ूर करें तो मैं सालिस बन सकता हूँ और वही फैसला अदालत में जाकर दाखिल कर दूँगा।"

"हाँ, तो बताइये ! आपका क्या फैसला है ?"

नलिनी ने बता दिया, "झगड़ा इतना जायदाद के विषय में नहीं, जितना कि रहन-सहन के मुतअल्लिक है। खानदान के उन सब बाशिन्दों को जो सज्ञान हैं, पृथक्-पृथक् कर दिया जाये। इसमें खानबहादुर साहब की पत्नियों को भी मैं शामिल करता हूँ। अगर वे पृथक् में जाकर रहना चाहें तो रहने की इजाज़त दी जाये।

"पृथक्-पृथक् रहने के लिये धन की आवश्यकता है। इसके लिये मैं जायदाद बाँटने की इजाज़त नहीं दे सकता। मगर इस जायदाद में से गुज़ारे के लायक सब औरतों को एक मुकर्रिर रकम के मिलने की गारण्टी की जाये। इसके लिये दो तरीके हैं। एक तो यह कि रिसीवर बैठा दिया जाये। मगर रिसीवर की ईमानदारी पर सबको सन्देह है। सरकारी रिसीवर महँगा भी होगा और प्राइवेट तौर पर नियुक्त रिसीवर से वह कम ईमानदार ही होगा। इसलिये मैं दो तजवीज़ें पेश करता हूँ कि ज़मींदारी का एक ट्रस्ट बना दिया जाये। उस ट्रस्ट में घर के सब सज्ञान बराबर की राय के अधिकारी हों और वे ज़मींदारी का इन्तज़ाम भी करें और जो कुछ मिले, उस सब आय का पच्चीस प्रतिशत सुरक्षित रखकर शेष बाँट लिया जाये।

"सबके लिये पृथक्-पृथक् मकानों में रहने का इन्तज़ाम हो। ये मकान अगर साँझी नकद पूंजी हो तो उससे खरीद लिये जायें, अन्यथा सब लोग अपने-अपने वजीफे से खरीदें और वहाँ रहें।"

"प्रत्येक गुज़ारेदार अपने-अपने पास से खर्च करे। यह इन्तज़ाम खान-बहादुर की आयु-भर के लिये है।"

"मुझे मन्जूर है।" खानबहादुर ने कह दिया।

अब परिवार के दूसरे सदस्य इसको मानने में आनाकानी करने लगे। कमलनारायण ने अदालत से एक लम्बी तारीख ले ली, जिससे सालिस ढूँढा जा सके।

वास्तविक बात यह थी कि नलिनीकान्त का फैसला सबको स्वीकार हो जाता, यदि खानबहादुर घर में फूट न डलवा देते। वे स्वयं नलिनीकान्त का फैसला स्वीकार करके आये थे, परन्तु अपनी दूसरी पत्नी सुरैया और उसकी लड़की जहानआरा को खानबहादुर ने यह समझा दिया था कि इस काफिर के फैसले को स्वीकार न करना। इसमें तुम्हारे हक-हकूक का विरोध है।

नलिनीकान्त ने अपने फैसले की एक प्रति बेगम सुरैया के पास भेजी थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसमें उसका उत्तर आ गया, "मैं आपको सालिस मानने के लिये तैयार नहीं। मैं तो अदालत का यह हक नहीं मानती कि वह खानबहादुर के जीते-जी जायदाद पर रिसीवर बैठाने की तजवीज़ पर गौर भी करे।"

इस बात ने नलिनीकान्त को इस बात के लिये तैयार कर दिया कि वह सालिस बनने से इन्कार कर दे। नलिनी ने समझा कि वह इस झगड़े से छुट्टी पा गया है।

इस पर भी खानबहादुर के परिवार में इसका झगड़ा चल रहा था। खानबहादुर अपने परिवार के सदस्यों को उनके वजीफे की रकम देने में देर करते रहते थे और राशि में न्यूनाधिक करते रहते थे। इससे सब लोग परेशान थे।

: १२ :

युरोप का युद्ध समाप्त हो चुका था। परन्तु जब एक ओर इंग्लैण्ड की पार्लियामैण्ट में हिन्दुस्तान के प्रशासनिक सुधारों के लिये कानून बनाया जा रहा था तो दूसरी ओर हिन्दुस्तान की अंग्रेज़ी सरकार अपने अधिकारों में वृद्धि कर रही थी।

रौलेट ऐक्ट के प्रारूप के प्रकाशित होने पर जनता में असन्तोष उत्पन्न हो गया था, परन्तु कांग्रेस इस विषय में कुछ भी कहने अथवा करने का साहस नहीं करती थी।

देश-व्यापी असन्तोष से अफ्रीका के मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने लाभ उठाने का प्रयास किया। गांधी जी ने इस कानून के विपरीत सत्याग्रह करने की घोषणा कर दी।

सत्याग्रह की रूप-रेखा तो बतायी नहीं गई। हाँ, उन्होंने यह ज़ोर-जोर से कहना आरम्भ कर दिया कि रौलेट ऐक्ट के पास किये जाने पर सत्याग्रह होगा। इसके लिये एक सत्याग्रह-कमेटी भी बना दी गई।

नलिनीकान्त भी चाहता था कि इस कानून के विरुद्ध आवाज़ उठायी जानी चाहिये। उसने समाचार-पत्र में इस विषय में एक लेख लिखा—'संगीनों की नोकों पर।'

देश का वातावरण इतना गर्म था कि नलिनीकान्त को प्रतीत होने लगा, मानो देश क्रान्ति के कगार पर पहुँच गया है। उसने अपने लेख में बताया, "संगीनों की नोकों पर हुकूमत नहीं टिक सकती। अंग्रेज़ों और उनसे पहले यहाँ आने वाले मुसलमानों को अब तक इस बात का अनुभव हो जाना चाहिये कि बिना प्रजा की स्वीकृति के राज्य नहीं चल सकता।

"संगीनों का प्रयोग आततायी शासक के लिये शुभ का सूचक नहीं होगा। यह ठीक है कि देश का नेतृत्व उनके हाथ में है, जो आततायी पर भी हाथ उठाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप मानते हैं। और शासक-वर्ग को चाहिये कि इन अहिंसावादियों का देश में प्रभाव रहते-रहते अपने दृष्टिकोण को बदल लें। कहीं ऐसा न हो कि इनका प्रभाव अत्याचार से पीड़ित जनता पर विलीन हो जाये और आततायी के अत्याचार की प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाये। तब बहुत कठिन हो जायेगा। जब 'द्वितृंश कोटि भुजै धृत खर कर वाले' का नाद उठा तो यह विदेशीय शासन अग्नि में जल की बूंद के तुल्य बन जायेगा। अभी तक इस देश की जनता शान्तिपूर्वक अपने अधिकार प्राप्त करने की माँग कर रही है। परन्तु इस शान्ति के व्यवहार पर भी यदि सरकार ने संगीनों से काम लिया तो भगवान जाने क्या हो? कहीं देश का नरसिंह जाग पड़ा तो बहुत कठिन स्थिति उत्पन्न हो जायेगी।

"सरकार जिन सैनिकों के कंधों पर बन्दूक रखकर चला रही है, वे कंधे भी तो उसी विशाल भारत माता का अंग हैं। यह भी सम्भव है कि वे सैनिक-कन्धे देशवासियों को आश्रय देने वाले बन जायें। शासकों को विचार करना चाहिये, तब उनकी क्या स्थिति होगी!

"अतः हमारा यह आग्रह है," नलिनीकान्त का कहना था, 'शासक इन संगीनों का भरोसा न करे। यहाँ संगीनों के प्रहार को सहने वाले धीर-वीर बहुत बड़ी संख्या में हैं।"

इस लेख में मुसलमानों को भी चेतावनी दी गई थी कि, "वे बहु-संख्यक हिन्दू जाति के हित में अपना हित पहचानें अन्यथा हिन्दू जाति पर उनके कर्मों की प्रतिक्रिया होगी।"

नलिनी के इस लेख ने मुस्लिम लीग के नेताओं के मन में खलबली मचा दी। इस 'काफिर' को दण्ड देने के लिये एक गुप्त मीटिंग खानबहादुर की कोठी में बुला ली गयी। मीटिंग के संयोजक भी खानबहादुर ही थे।

मीटिंग खानबहादुर की कोठी में होने वाली थी और खान साहब मीटिंग में जाकर बैठने के लिये अपने कमरे में तैयार हो रहे थे। इस समय एकाएक हमीद की पत्नी रीनी वहाँ आ धमकी।

खानबहादुर प्रश्न-भरी दृष्टि में उसे देखने लगे। रीनी ने क्रोध में उबलते हुए कहा, "अब्बाजान! जहानआरा ने मेरा सामान उठवा-उठवा कर मेरे कमरे से बाहर फेंकना शुरू कर दिया है।"

"फिर?"

"तो मैं कहाँ जाऊँ?"

"हमीद से बात कर लो। उसको ही तुम्हारे रहने का इन्तज़ाम करना होगा।"

"पर वे तो कई दिन से पूना गये हुए हैं और मैं नहीं जानती कि कब आयेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं क्या करूँ ?"

"उनके आने तक मेरे यहाँ रहने का इन्तज़ाम करना होगा ।"

"ठीक है । तुम अभी इस कमरे में आ जाओ ।" खानबहादुर ने अपने बैड-रूम के बगल वाला कमरा बता दिया ।

"पर यह तो बहुत छोटा है ।"

"जब हमीद आयेगा तो दूसरा इन्तज़ाम हो जायेगा ।"

इस प्रस्ताव पर रीनी विचार करने लगी कि कहीं खानबहादुर का इरादा उसके साथ पिता के स्थान, कुछ अन्य सम्बन्ध बनाने का तो नहीं हो गया । वह कमरा और खानबहादुर के सोने का कमरा घर की भीतरी बैठक में खुलते थे । जब से रफीक आया था, खानबहादुर उस कमरे में आकर सोने लगे थे ।

खानबहादुर के कमरे की दूसरी ओर सुरैया का कमरा था । खानबहादुर और सुरैया के कमरे के साथ ही एक और कमरा था, जिस कमरे में रीनी को आकर रहने का निमन्त्रण था और खानबहादुर के कमरे में उसका द्वार था ।

रीनी को खानबहादुर की नीयत पर सन्देह हुआ तो वह विचार करने लगी कि कदाचित् जहानआरा का उसको अपने कमरे से निकालना खानबहादुर के किसी प्रकार के षड्यन्त्र का ही परिणाम न हो । इस विचार पर वह मुस्करायी । खानबहादुर भी मुस्कराये ।

वह अभी विचार ही कर रही थी कि नौकरानी ने कमरे के द्वार पर खड़े होकर कहा, "हज़ूर ! असगर रिज़वी साहब और कुछ दूसरे लोग तशरीफ लाये हैं ।"

खानबहादुर ने रीनी को कहा, "तुम इस कमरे को देख लो । मुझे ज़रा इनसे कुछ काम है । मैं अभी आकर बाकी का इन्तज़ाम कर दूँगा ।"

यह कह खानबहादुर उठकर बाहर के ड्रायंग-रूम में चले गये और रीनी उस कमरे में चली गयी, जिसमें आकर उसे रहने के लिये कहा गया था ।

किसी समय वह कमरा ज़रीना को दिया गया था । उस समय खानबहादुर ने दूसरी शादी कर ली थी और दोनों बीवियों को अपने अगल-बगल के कमरों में रखते हुए स्वयं बीच के कमरे में सोते थे ।

यह बात उसे ज़रीना ने बता रखी थी । इस बात ने ही रीनी के मन में खानबहादुर के विषय में सन्देह उत्पन्न किया था ।

वह कमरे में फर्नीचर और अलमारियाँ इत्यादि देख ही रही थी कि उस द्वार के पास से जो बाहर के ड्रायंग-रूम में खुलता था, दो आदमियों के बातचीत करने की आवाज़ उसे आयी । उसमें एक आवाज़ खानबहादुर की थी । खानबहादुर के मुख से निकला, "पिस्तौल का इन्तज़ाम तो कहीं दूसरी जगह से करना होगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे आदमी ने कहा, "और कहाँ से लाऊँ? यह तो आपको ही देना पड़ेगा।"

इस बात से रीनी के कान खड़े हो गये। वह लपक कर दरवाज़े से कान लगा सुनने लगी। ज्यों-ज्यों वह बात सुनती जाती थी, उसका मुख क्रोध से लाल होता जाता था।

बाहर ड्रायंग-रूम में बात पाँच मिनट से अधिक नहीं चली। खानबहादुर ने कह दिया, "अच्छी बात है। शाम के वक्त आना। तुम्हें एक डिब्बा मिलेगा। उसमें तुम्हारी चीज़ होगी।"

इसके बाद वह आदमी उठ कर चला गया। रीनी समझ गई कि ड्रायंग-रूम में होने वाली गोष्ठी समाप्त हो गयी है।

वह पीछे हट गयी। इस समय खानबहादुर उस कमरे में आ गये। खान-बहादुर ने आते ही पूछा, "तो तुम अभी यहीं खड़ी हो?"

"तो कहाँ जाऊँ?"

"अपना सामान यहाँ उठवा लाओ।"

"मगर अब्बाजान! यह कमरा तो आपको आयशा अम्मी को रहने के लिये देना चाहिये।"

"मुझे उसमें और तुममें कोई फर्क मालूम नहीं होता। अच्छा देखो, हम खिदमतगारिनों को कहते हैं कि तुम्हारा सामान उठवा कर यहाँ ले आयें और तुम उसे यहाँ ठीक ढंग से लगवा लो।"

रीनी तो उस बात के विषय में विचार कर रही थी, जो उसने कमरे के दरवाज़े से कान लगा कर सुनी थी। बात सुनकर उसके रोमांच हो रहा था। वह मौन अनिश्चित-मन खड़ी थी कि खानबहादुर ने ताली बजायी और आवाज़ दे दी, "अरे, कोई है?"

वही नौकरानी जो असगर साहब के आने की सूचना देने आयी थी, खान-बहादुर की आवाज़ सुन आ गयी। उसके आने पर खानबहादुर ने कहा, "देखो, रीनी बेगम का सामान सेहन से उठवा कर इस कमरे में लगवा दो।"

खिदमतगारिन ने मुस्कराते हुए रीनी की ओर देखा। रीनी अभी भी अपने विचारों में डूबी हुई थी। उसे चुप देख खिदमतगारिन चली गयी और दो मिनट में ही नौकरानियाँ रीनी का सामान उठा-उठा कर वहाँ लाने लगीं।

इस समय बाहर हल्ला सुन, जहानआरा की अम्मी सुरैया अपने कमरे से बाहर आ गयी। खानबहादुर कमरे से बाहर निकल गये थे। रीनी बैठकघर के बीचों-बीच विचार-मग्न खड़ी थी। कुछ देर तक सुरैया नौकरानियों को सामान उस कमरे में लाते देखती रही और फिर रीनी के समीप आ पूछने लगी, "तो तुम यहाँ आ रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं अम्मी ! मैं यहाँ ज़बरदस्ती धकेल कर लायी जा रही हूँ।"

"सब औरतों के साथ ऐसा ही होता है। अपने माँ-बाप के घर से उठा कर ले आयी जाती हैं।"

"अम्मी ! ऐसा नहीं है। मैं अपने ख़ाविन्द के कमरे से उठा कर लायी जा रही हूँ।"

"मगर तुम्हें कोई जबरदस्ती तो ला नहीं रहा ?"

"और यह क्या हो रहा है ?" रीनी ने नौकरानियों को सामान कमरे में रखते हुए कहा।

"बीबी ! सब ऐसा ही कहती हैं। मगर दिल में तो कुछ दूसरी ही बात महसूस करती हैं।"

रीनी को क्रोध आ रहा था। वह मन में कुछ निश्चय कर कमरे से बाहर निकल गयी।

: १२ :

हमीद पूना गया हुआ था और उसके कुछ दिन तक लौटने की आशा नहीं थी। इस कारण रीनी खानबहादुर की कोठी छोड़ कहीं अन्यत्र जाने का विचार कर बैठी। कोठी छोड़ते समय वह सेहन में गयी और अपना हैण्ड-बैग उठा लायी। उसमें पाँच-छः सौ रुपया नकद तथा उसके बैंक की चैक-बुक भी रखी थी।

कोठी से बाहर निकल उसने हैण्ड-बैग खोल कर देखा कि उसका रखा धन कहीं निकाल तो नहीं लिया गया। रुपया उसमें था। अतः वह कोठी से, जो मुख्य सड़क के एक ओर थी, निकल सड़क पर किसी भाड़े की गाड़ी के वहाँ से खाली गुज़रने की प्रतीक्षा करने लगी। खानबहादुर अपनी घोड़ा-गाड़ी में सवार हो चले गये थे।

एक खाली घोड़ा-गाड़ी आती दिखायी दी तो उसने हाथ के संकेत से गाड़ी को खड़ा कर लिया और उसमें सवार हो, कमलनारायण की कोठी पर जा पहुँची। कमलनारायण हमीद का वकील था।

रीनी वहाँ पहुँची तो वकील साहब चार-पाँच लोगों से बातचीत कर रहे थे। रीनी ने देखा कि कैटालीना भी उनमें बैठी हुई है। इस कारण वह वकील साहब के खाली होने की प्रतीक्षा कोठी के ड्रायंग-रूम में बैठकर करने लगी।

वकील साहब के कमरे में 'बॉम्बे न्यूज़' समाचार-पत्र, छापाखाना और पूर्ण इमारत को ख़रीदने की बात चल रही थी। बम्बई में एक पब्लिक लिमिटिड कम्पनी संगठित की गयी थी। इस कमेटी में कुछ मारवाड़ी और कुछ गुजराती सम्मिलित थे। कम्पनी की ओर से कमलनारायण के द्वारा भाव-ताव करने के लिये कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीयुत् कर्मवीर पाटिल और कम्पनी के दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य डायरेक्टर आये हुए थे।"

कैटालीना सिद्धान्त रूप में बेचने को स्वीकार कर चुकी थी। अब तो दाम पर बातचीत हो रही थी। कम्पनी के चीफ डायरेक्टर ने नलिनीकान्त को भी बुलाया था। कारण यह था कि बिक्री का निर्णय होते ही वह पत्र की नीति पर अधिकार करना चाहता था। नलिनीकान्त को जब पता चला कि पत्र बिक रहा है तो वह भी इस बात के जानने के लिये उत्सुक था कि पत्र में उसकी स्थिति क्या होगी। उसके लिये कैटालीना का स्वामित्व सुखकर रहा था और वह नहीं जानता था कि नये स्वामी कैसा व्यवहार करेंगे? इस कारण वह इस भाव-ताव को देखता हुआ मौन बैठा था। वह मन-ही-मन विचार कर रहा था कि ये नये मालिक व्यापारी लोग हैं। साथ ही एक पब्लिक लिमिटिड कम्पनी में उसे वह स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती, जो कैटालीना ने दे रखी थी। अतः वह मन में लगभग निश्चय कर चुका था कि वह इस नयी कम्पनी के अधीन काम नहीं करेगा।

आखिर सौदा हो गया और नयी कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर ने अग्रिम पचास हज़ार का चैक देकर रसीद लिखवा ली। कैटालीना ने चैक लेकर उठते हुए कहा, "मौसा जी! अब ये लोग आपके विषय में बात करना चाहते हैं।"

"क्या बात करना चाहते हैं?"

"ये चाहते हैं कि आप अभी सम्पादक के रूप में कार्य करते रहें। ये साप्ताहिक 'राष्ट्र' को बन्द कर देना चाहते हैं।"

"मेरा कार्य समाचार-पत्र की नीति के साथ सम्बन्ध रखता है। मैं यह समझा हूँ कि इनकी कम्पनी मेरी नीति को स्वीकार नहीं कर सकेगी। इस कारण इन्हें बताना चाहिये कि ये कब नया सम्पादक भेजेंगे?"

मैनेजिंग डायरेक्टर मिस्टर पाटिल ने उठते हुए कहा, "मैं बाबू नलिनीकान्त से पृथक् में बात करना चाहता हूँ।"

"तो आप दोनों ड्रायंग-रूम में चले जाइये।"

दोनों उठे तो नलिनीकान्त ने कह दिया, "अगर मिसेज कमल भी आ जायें तो बहुत अच्छा रहेगा।"

इस पर मिस्टर पाटिल ने एक क्षण तक विचार कर कहा, "हाँ, यदि आप चाहें तो वे भी आ सकती हैं।"

नलिनीकान्त से कैटालीना ने कह दिया, "मेरा विचार है कि आप भी आ जायें तो सब बात भली-भाँति निश्चय हो जायेगी।"

कैटालीना चाहती नहीं थी। इस पर भी वह नलिनी का आग्रह टाल नहीं सकी। वह यह भी समझ नहीं सकी थी कि नलिनी क्या बात कहना चाहता है।

ड्रायंग-रूम में रीनी बैठी थी। वह नलिनीकान्त से कई बार मिल चुकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उसे देख रीनी ने हाथ जोड़ नमस्कार की तो नलिनी ने पूछ लिया, "मिसेज़ हमीद ! कैंटालीना से मिलने ग्रायी हैं यहाँ ?"

"नहीं; वकील साहब से।"

ग्रभी नयी कम्पनी के शेष डायरेक्टर वहाँ वकील साहब के पास बैठे थे। इस कारण कैंटालीना ने कह दिया, "ग्रभी आप बैठिये। वकील साहब पाँच-छः मिनट में खाली हो जायेंगे।"

पाटिल ने कुछ झिझकते हुए रीनी और कैंटालीना की ओर देखा तो नलिनी ने इसका ग्राशय समझते हुए कहा, "मिस्टर पाटिल ! मेरी कोई बात प्राइवेट नहीं है। मेरा निश्चय है कि मैं इस कम्पनी के ग्रधीन काम नहीं करूँगा।"

"क्यों ?"

"इस कारण कि कम्पनी, विशेष रूप में पब्लिक कम्पनी को, राजनीति के कामों में भाग लेना नहीं चाहिये और मुझे आप व्यापारियों के हाथ में अपने को बेचना उचित प्रतीत नहीं हो रहा। इस कारण मैं यह जानना चाहता हूँ कि कैंटालीना जी मुझे कब अवकाश देंगी ?"

"परन्तु ग्रभी तो सौदा पूर्ण नहीं हुग्रा। अग्रिम रकम का भी चैक ही है। वह ग्रभी कैश नहीं हुग्रा।" कैंटालीना ने कहा।

"कैंटालीना ! चैक तो कैश हो जायेगा और शेष रुपया भी मिल जायेगा। ग्रब कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिये, जिससे कि इन ग्रदला-बदली के दिनों में कुछ हो जाये और जिससे प्रैस तथा इमारत को ताले लग जायें।"

"परन्तु ग्राप गांधी जी की नीति को पसन्द नहीं करते क्या ?" पाटिल ने पूछ लिया।

"क्या नीति है उनकी ? मैं तो जानता नहीं।" नलिनीकान्त ने प्रतिप्रश्न किया।

"पूर्ण रूप से ग्रहिंसात्मक रहना।"

"परन्तु वे कार्य जो कर रहे हैं उससे हिंसा ग्रवश्यमेव होगी।"

"ग्राप कैसे कहते हैं ? ग्रफ्रीका में इसकी परीक्षा हो चुकी है।"

"परन्तु वहाँ केवल दो सहस्र व्यक्ति थे और यहाँ तो तीस करोड़ से ऊपर हैं। बहुत बड़ा ग्रन्तर है दोनों में।"

"कुछ नहीं होगा। इस समय सारा देश गांधी जी के साथ है।"

"मैं भी तो उनके साथ हूँ और मैं यह समझा हूँ कि इस ग्रान्दोलन में एक बार खुल कर सरकार से युद्ध होगा।"

"युद्ध तो है ही। केवल शान्तिमय होगा।"

"युद्ध शान्तिमय नहीं होते। शान्तिपूर्वक तो वार्त्तालाप ही हो सकता है।"

"इस पर भी ग्राप देखेंगे कि ऐसा होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पाटिल साहब ! अहिंसात्मक युद्ध के लिये तीस करोड़ जनता को उत्तेजित करने की आवश्यकता नहीं होती।"

"नहीं, नलिनीकान्त जी ! आप समझ नहीं सकते।"

"जी; इसीलिये तो मैं कह रहा हूँ कि मुझे अभी छुट्टी दे दीजिये।"

"कहाँ जायेंगे ?"

"यह मैं एक-दो दिन में निश्चय कर लूंगा।"

अब कैटालीना ने कहा, "मैं इसकी स्वीकृति नहीं दे सकती, जब तक पूर्ण राशि न मिल जाये।"

इस पर पाटिल ने कहा, "हम पूर्ण राशि का भी चैक अभी दे सकते हैं।"

"तो दे दीजिये।"

पाटिल वहाँ ही बैठ गया और उसने वहीं बैठ अपने हैण्ड-बैग से चैक-बुक निकाल, एक चैक साढ़े पाँच लाख रुपये का लिख दिया। पूर्ण राशि छः लाख बनती थी।

"आप अभी चल कर चार्ज ले सकते हैं।"

"ठीक है।"

इस पर नलिनीकान्त ने कह दिया, "कल का पत्र नहीं निकलेगा।"

पाटिल ने सन्तोष प्रकट करते हुए कहा, "ठीक है। छापाखाना और समाचार-पत्र के पुराने कर्मचारी काम करते रहेंगे।"

नलिनी ने इसका उत्तर नहीं दिया। पाटिल बाहर गया तो नलिनी ने ड्रायंग-रूम में रखे टेलीफोन का चोंगा उठाया और ऐक्सचेंज के बोलने पर उसने अपने कार्यालय का नम्बर बोल दिया। रीनी देख रही थी कि यह वृद्ध व्यक्ति किस प्रकार निस्पृहता से अनिच्छित काम का त्याग कर रहा है। वह सब बात समझ गयी थी। कैटालीना पाटिल के साथ ही बाहर चली गयी थी। रीनी विस्मय में नलिनी को देख रही थी। दूसरी ओर टेलीफोन किसी ने उठाया तो नलिनी ने पूछा, "कौन बोल रहा है ?"

"सरस्वती।"

"हाँ, सुनो। कल के पत्र में सम्पादकीय प्रैस में नहीं जायेगा।"

"वह चला गया है।" सरस्वती ने कहा।

"अच्छा, उसको वापस मँगवा लो और यदि कुछ 'कम्पोज' हो गया हो तो उसे 'डिस्ट्रिब्यूट' करवा दो। मैं अभी आ रहा हूँ। शेष वहाँ आकर बताऊँगा।"

नलिनी ने चोंगा रख, एक क्षण तक विचार किया और फिर बाहर जाने के लिये घूम गया। अब रीनी अपने स्थान ने उठ समीप आ पूछने लगी, "तो समाचार-पत्र 'बॉम्बे न्यूज़' बन्द हो रहा है ?"

"नहीं; यह बिक गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा मतलब था कि आप जा रहे हैं ?"

"हाँ, मैंने काम छोड़ दिया है। मेरी नीति इनको पसन्द नहीं आ सकती।"

"अब आप कहाँ जायेंगे ?"

"अभी तो कार्यालय में जा रहा हूँ। आशा करता हूँ कि कल मकान भी खाली कर दूँगा।"

"रात कहाँ रहेंगे ?"

"अपने घर में।"

रीनी मुख देखती रह गयी। फिर कुछ विचार कर बोली, "यदि आप अभी घर छोड़ जायें तो क्या होगा ?"

"मैं समझा नहीं, रीनी बेटी ! क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मैं पूरी बात बता नहीं सकती। इतना कह सकती हूँ कि यदि मैं आपके स्थान पर होऊँ तो अपने ज्ञान के आधार पर मैं अपने घर पर न जाऊँ। घर वालों को लेकर कहीं बम्बई से बाहर चली जाऊँ।"

नलिनी इस रहस्यमयी बात को सुन, कुछ विचार करता हुआ रीनी का मुख देखने लगा। उसके क्रान्तिकारी मस्तिष्क में एक बात उठी कि इसमें कोई रहस्य है। कदाचित् कोई षड्यन्त्र रचा गया है, जिसका सम्बन्ध खानबहादुर के घर से भी है।

रीनी ने एक बात और कह दी, "देखिये, बहुत-सी बातें समझने की नहीं होतीं। वे करने के लिये होती हैं।"

नलिनी ने सोफा पर बैठते हुए आँखें मूंद विचार किया और पुनः टेलीफोन का चोंगा उठा, कार्यालय का नम्बर माँगने लगा। इस बार उधर से चोंगा उठाने में कुछ देर लगी। टेलीफोन उठा तो नलिनी ने पूछा, "कौन ?"

"सरस्वती ?"

इसके बाद सरस्वती कुछ बताने लगी और नलिनी ध्यान से सुनता रहा। पूर्ण विवरण बताने में सरस्वती को दो मिनट लगे। इसके उपरान्त नलिनी ने कहा, "देखो सरस्वती ! कार्यालय से अभी घर चली जाओ और जाते हुए विजय को तथा मीनाक्षी को भी साथ लेती जाओ। वहाँ सुवर्णा से कह दो कि घर के सब प्राणी, बच्चे और नौकर भी, जैसे खड़े हैं वैसे ही, तुरन्त नकदी तथा भूषण लेकर विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन पर आ जाएँ।"

इस पर सरस्वती ने कुछ कहा और नलिनी ने उत्तर दिया, "मैं टेलीफोन पर कुछ नहीं बता सकता। वास्तव में मैं स्वयं भी कुछ विशेष नहीं जानता। अब देर मत करो। चल दो। मैं आपकी स्टेशन पर प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

नलिनी ने चोंगा रखा तो रीनी ने कहा, "आप अद्भुत आदमी हैं। कितनी देर लगेगी इन सबको स्टेशन पर पहुँचने में ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक घण्टे से अधिक नहीं लगना चाहिये।"

"आप कहाँ जायेंगे ?"

"यहाँ से पूना जाऊँगा। वहाँ एक-दो दिन ठहर कर विचार करूँगा कि अब मुझे आगे क्या करना है।"

"ठीक है। मैं आपके साथ पूना तक चलूँगी।"

"वहाँ क्या है ?"

"मेरे 'हस्बैण्ड' वहाँ हैं।"

नलिनी कुछ समझा नहीं। इस पर भी उसने तीर चला दिया था। यह अंधेरे में ही था। वह विचार कर रहा था कि समाचार-पत्र कल छपना नहीं, इस कारण एक छुट्टी हो जायेगी।

अब उसने कमलनारायण के स्टडी-रूम की ओर चलते हुए रीनी को कहा, "मैं पाँच मिनट में कमलनारायण से छुट्टी पा कर आ रहा हूँ और फिर रेल के स्टेशन को चल दूँगा। यदि तुमने भी चलना हो तो चलो।"

"मैं चल रही हूँ।"

दोनों कमल के कार्यालय में जा पहुँचे। पाटिल इत्यादि जा चुके थे। नलिनी ने कमरे में प्रवेश करते ही कहा, "कमल जी ! गांधी जी पंजाब जाने के लिये दिल्ली जा रहे हैं। पंजाब के गवर्नर ने गांधी जी के पंजाब में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। परन्तु गांधी जी ने वक्तव्य दिया है कि वे अवश्य जायेंगे।"

"तो ?" कमलनारायण ने प्रसन्न-वदन हो पूछा।

"कुछ नहीं। यह समाचार अभी सरस्वती ने फोन पर दिया है। परन्तु मैंने निश्चय किया है कि मैं आज सायं की गाड़ी से पूना जा रहा हूँ।"

"कल का समाचार-पत्र का अंक ?"

"वह नहीं निकलेगा। मैंने सरस्वती को मना कर दिया है।"

"पूना किस काम से जा रहे हैं ? क्या तिलक जी से मुलाकात करेंगे ?"

"नहीं। मैं तो छुट्टी मनाने के लिये जा रहा हूँ।"

"पर मैं आपसे, भविष्य के विषय में आज रात खाने के समय विचार करना चाहता था।"

"वह बात अब पूना से लौटने पर होगी। मैं अपने बच्चों को पूना चलने की बात कह चुका हूँ और वे वहाँ से स्टेशन पर आ रहे हैं।"

कैंटालीना ने विस्मय में पूछ लिया, "क्या बात है मौसा जी ?"

"कुछ है। वह रीनी ही बता सकती है।"

"रीनी ! क्या बात है ?"

"आण्टी ! पूना में मेरे हस्बैण्ड गये हुए हैं और उनसे ही कुछ काम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिये, मैं भी इनके साथ जा रही हूँ। यदि मेरे घर से कोई पूछे तो कह दीजियेगा कि मैं अपने हस्बैण्ड के पास पूना गयी हूँ।"

"तुम तो वकील साहब से मिलने आयी थीं ?"

"जी। पर आण्टी, अब मौसा जी से वह काम हो गया है।"

कमल और कैटालीना दोनों मुख देखते रह गये। नलिनी ने हाथ जोड़ नमस्कार कर कहा, "मैं तीन-चार दिन में आऊँगा और मकान खाली कर दूंगा।"

इस पर कमल ने कहा, "मैं आपके लिये कोई बड़ा-सा मकान ले रखूंगा।"

"मैं अपना कार्यक्रम पूना से लिखूंगा। कमल जी, अपनी गाड़ी स्टेशन तक जाने के लिये दे दीजिये।"

कमल ने कुछ दिन पूर्व ही नयी मोटर-गाड़ी खरीदी थी। उसने मेज़ पर लगी घण्टी बजायी। जब चपरासी आया तो कमल ने कहा, "ड्राईवर को कहो कि ऐडीटर साहब को गाड़ी में विक्टोरिया टर्मिनस पर छोड़ आये।"

मोटर में बैठ रीनी ने कहा, "मुझसे यह मत पूछिये कि मैं कैसे यह बात जानती हूँ। तभी मैं कुछ बता सकती हूँ।"

"हां, बताओ! नहीं पूछूंगा।" नलिनी ने मुस्कराते हुए कहा।

"आज रात आपकी और विजय जी की हत्या का यत्न होने वाला है।"

"तो मुझे भीरुओं की भांति भगाये लिये जा रही हो?"

"जी नहीं। भीरुओं की भांति नहीं, बल्कि सूझ-बूझ रखने वालों की तरह। राजनीतिक हत्याओं पर न्याय नहीं हुआ करता।"

नलिनी गम्भीर भाव में विचार करने लगा।

: १४ :

अगले दिन बहुत प्रातःकाल कमल को यह समाचार मिला कि 'बॉम्बे न्यूज़' के कार्यालय और सम्पादक महोदय के घर का ताला तोड़ कर कुछ लोग भीतर घुस गये और सामान इत्यादि तोड़ कर चल दिये। चौकीदार ने उनको रोकने का यत्न किया तो उसकी हत्या कर दी गयी। चौकीदार के मार डाले जाने पर किसी ने पुलिस में रिपोर्ट नहीं की। जब चौकीदार को अवकाश देने के लिये दिन का चौकीदार आया तो रात वाले चौकीदार का शव पेट में छुरा घोंपा हुआ मकान के बाहर पड़ा मिला।

कमलनारायण उसी समय कैटालीना के साथ मोटर में कार्यालय पर पहुंचा तो कार्यालय तथा सम्पादक के मकान में सब-कुछ तोड़-फोड़ दिया दिखायी दिया। इस पर पुलिस बुलायी गयी और उसने सब-कुछ देख, लिख लिया। चपरासी का शव हस्पताल में पोस्ट-मार्टम के लिये पहुँचा दिया गया।

घर लौटते हुए कैटालीना ने अपने पति से पूछा, "यह क्या हुआ है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी गुप्त साज़िश का परिणाम है। यह साजिश खानबहादुर की कोठी पर की गयी है और इसका रीनी को किसी प्रकार पता चल गया है। उसने नलिनी जी को सचेत किया है और नलिनी जी ने यहाँ से टल जाना उचित समझा है।"

कमल अभी प्रातः का अल्पाहार ले रहा था कि एक अन्य समाचार मिला कि दिल्ली के समीप पलवल स्टेशन पर गांधी जी पकड़ लिये गये हैं।

इस समाचार से बम्बई में पूर्ण हड़ताल हो गयी। कारखाने बन्द हो गये और पचास हज़ार कारखानों के कर्मचारी नारे लगाते हुए तोड़-फोड़ और लूट-मार मचाते हुए विशेष-विशेष सरकारी भवनों को आग लगाते हुए घूमने लगे।

लूट-मार मचाने वाली एक भीड़ ने 'बॉम्बे न्यूज़' के छापाखाना और सम्पादक के मकान को आग लगा दी।

कुछ लोग आग बुझाने का यत्न करना चाहते थे, परन्तु आग लगाने वाले जोश में थे और महात्मा गांधी की जय के नारे लगाते हुए, उन्होंने आग बुझाने वालों को पकड़-पकड़ कर आग में धकेलना आरम्भ कर दिया। इस पर आग बुझाने का यत्न करने वाले लोग वहाँ से भाग खड़े हुए। दो व्यक्ति आग में जीवित जला दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लहरों की टक्कर

(चतुर्थ भाग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

"अब बताओ, रीनी बेटी !" नलिनी ने गाड़ी से उतर, पूना रेल्वे स्टेशन के प्लैटफॉर्म पर खड़े होकर पूछा।

रीनी ने उत्तर देने के स्थान, प्रतिप्रश्न किया, "आप लोग कहाँ ठहरेंगे ?"

नलिनीकान्त ने मुस्कराते हुए कहा, "देख रही हो न। मेरे साथ कितनी लम्बी-चौड़ी मेरी प्रजा है। यहाँ के किसी होटल में जाकर ठहरूँगा।"

रीनी सामने खड़े वृद्ध पुरुष की निश्चयात्मक बुद्धि को देख, चकित थी। वह उसके केवल इतना कहने पर कि यदि वह उनके स्थान पर हो, तो अपने ज्ञान के आधार पर, रात उस घर में न रहे, अपने घर को छोड़, घर के बीस प्राणियों को साथ लेकर आधे घण्टे में बम्बई से बाहर जाने को तैयार हो गया था। उसके पति हमीद ने उसे बताया था कि नलिनीकान्त एक क्रान्तिकारी विचारों का व्यक्ति है। इसके एक लड़के को बम्ब फैक्टरी चालू करने पर आजन्म का दण्ड मिला था।

पिछले दिन की घटना से वह समझ गयी थी कि यह व्यक्ति क्रान्तिकारियों का नेता होने के योग्य है।

उससे भी अधिक उसके परिवार के लोग सतर्क, सचेत और आज्ञाकारी थे। केवल टेलीफोन पर कहने पर सब लोग जैसे खड़े थे, वैसे ही घोड़ा-गाड़ियों में सवार हो, स्टेशन पर चले आये थे। वह देख रही थी कि बच्चों के अतिरिक्त बड़ों के पास एक-एक अटैची-केस से अधिक अन्य कुछ नहीं था। सम्भवत: घर का सब नकद और आभूषण ही उन अटैची-केसों में थे।

इस वृद्ध व्यक्ति की पत्नी ने केवल एक बार ही पूछा था, "हम कहाँ जा रहे हैं ?"

यह प्रश्न सुवर्णा ने तब किया था, जब वह अपने परिवार-सहित तीन घोड़ा-गाड़ियों में विक्टोरिया टर्मिनस पर पहुँची थी। इसका उत्तर उसके पति ने दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, "हम पूना जा रहे हैं।"

इसके उपरान्त सब अपना-अपना अटैची-केस उठाये हुए ऐसे चल पड़े थे, जैसे कि वे सब-कुछ जानते हैं। नलिनी के बड़े लड़के विजय ने सवारियाँ गिनीं और सैकिण्ड क्लास के पूना के टिकट ले आया था।

मार्ग में वे सब सैकिण्ड क्लास के दो डिब्बों में भर गये थे। सबके लिये सोने को स्थान नहीं था। सोते-जागते वे रात-भर की यात्रा के उपरान्त प्रातः पाँच बजे पूना पहुँचे थे।

सब अपना-अपना अटैची-केस उठाये हुए प्लैटफॉर्म पर खड़े थे। जब रीनी को नलिनी ने बताया कि वह किसी होटल में ठहरने जा रहा है तो रीनी ने मन में शान्ति अनुभव करते हुए कहा, "बाबा, क्षमा करना। मैंने आपको बहुत कष्ट दिया है; परन्तु परमात्मा जानता है कि मैंने आपके हित का विचार कर ही यह किया है। मुझे यह बात कि रात को आप सबकी हत्या का प्रबन्ध किया जा रहा है, एक विश्वस्त सूत्र से पता चली थी। तभी मैंने आपको सचेत करने का विचार बना लिया था। मैं आण्टी कैटालीना द्वारा आपको सचेत करना चाहती थी, परन्तु जब आपको स्वयं ही वहाँ उपस्थित देखा तो मैंने सीधी बात करनी ही उचित समझी।

"आप तो वह मकान छोड़ ही रहे थे। मैंने यही समझा कि आपको उसे तुरन्त छोड़ने के लिये कह दूँ।

"आपने जिस सतर्कता से यह कार्य किया, सत्य ही प्रशंसनीय है। फिर आपके परिवार के लोगों का, आप पर इतना विश्वास और इतनी श्रद्धा देख, मैं चकित हूँ। यह घटना मैं जीवन-भर नहीं भूलूंगी।

"मुझे चाहिये था कि मैं आपको अपने साथ ठहरने के लिये ले चलती, परन्तु मेरे पति किसी अन्य के मेहमान हैं और वहाँ आप सबके लिये स्थान भी नहीं होगा। अतः यदि होटल में ठहर कर इस नम्बर पर टेलीफोन कर दें तो मैं आपको पुनः मिलना चाहूँगी।"

इतना कह उसने एक कार्ड दिखा दिया। यह कमल की पहली पत्नी नीला के घर वाले का पता था। नलिनी ने कार्ड पढ़ा और वह रीनी को वापस करते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे विषय में इस कारण पूछा था कि तुम कहाँ जाना चाहती हो और वहाँ स्वयं चली जाओगी अथवा तुम्हें वहाँ तक पहुँचाना होगा। साथ ही कुछ रुपये-पैसे की आवश्यकता हो तो बता दो?"

रुपयों की बात होते ही रीनी को स्मरण आ गया कि उसने तो बम्बई से पूना तक का भाड़ा भी नहीं दिया। इस कारण उसने अपने पर्स में से दस रुपये का नोट निकाल, आगे करते हुए कहा, "ओह! मैंने रेल के टिकट का दाम भी नहीं दिया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसे रखो। मैंने यह लेने के लिये नहीं कहा।" नलिनी ने हाथ जोड़ रीनी को विदा किया और फिर 'ऐलफिन्स्टन' होटल को चल पड़ा। वहाँ तीन कमरों में ये लोग ठहर गये।

मध्याह्नोत्तर नलिनी होटल के कार्यालय में 'केसरी' पत्र को टेलीफोन करने गया तो वहाँ रखे समाचार-पत्र से पता चला कि बम्बई में 'बॉम्बे न्यूज़' के कार्यालय को आग लगा कर फूंक दिया गया है। साथ ही गांधी जी के पकड़े जाने पर बम्बई में हड़ताल, लूट-मार का भी समाचार था। नलिनी समझ रहा था कि रीनी ने तो उसे गांधी जी के पकड़े जाने के समाचार से पहले बम्बई से भागने के लिये कहा था। अतः उसकी हत्या का सम्बन्ध गांधी वाले बलवे से नहीं हो सकता। उसने 'केसरी' समाचार-पत्र के कार्यालय से टेलीफोन द्वारा पूछा कि तिलक जी वहाँ पर हैं अथवा नहीं? तिलक जी वहीं थे। वे स्वयं ही टेलीफोन सुन रहे थे। तिलक जी को जब पता चला कि बात करने वाला नलिनीकान्त है तो उसने पूछ लिया, "बहुत खूब! कहाँ से बोल रहे हैं?"

"ऐलफिन्स्टन होटल से।" नलिनी ने कहा।

"कब से यहाँ हैं?"

"मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।"

"तो चले आइये। आपके विषय में तो यहाँ भाँति-भाँति के समाचार आ रहे हैं।"

"मैं आ रहा हूँ।"

रात-भर रेल में सो न सकने के कारण घर के सब प्राणी होटल में प्रातः का अल्पाहार ले सो गये थे; मध्याह्नोत्तर उठे थे और चाय इत्यादि लेकर हटे थे जब नलिनी फोन करने कार्यालय में आया था।

नलिनी विजय को साथ लेकर 'केसरी' के कार्यालय में जा पहुँचा। बाल गंगाधर तिलक उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

तिलक जी ने उठ नलिनी से गले मिलकर भगवान् का धन्यवाद करते हुए कहा, "मैंने आपके टेलीफोन आने से पहले कमलनारायण को तार भेजा है। यहाँ हम सबको आपके जीवन की चिन्ता लग रही थी।"

"ईश्वर को अभी यहाँ से ले जाना स्वीकार नहीं। इस कारण कल सायं पांच बजे के लगभग एक ईश्वरीय दूत ने आकर कहा कि मुझे तुरन्त परिवार-सहित बम्बई छोड़ देना चाहिये।

"मैंने कुछ क्षण तक ही विचार किया और सब घर वालों के साथ विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन पर पहुँच गया। रात ग्यारह बजे की पैसेंजर गाड़ी से चलकर प्रातः पाँच बजे यहाँ पहुँच गया था। हम सब बाल-वृद्ध बीस प्राणी हैं और होटल में ठहरे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होटल के कार्यालय में आपके विषय में जानने के लिये टेलीफोन करने गया था। वहाँ समाचार-पत्र में अपने घर और परिवार के जला दिये जाने का समाचार पढ़ा है।"

नलिनी ने 'बॉम्बे न्यूज़' के बिक जाने का समाचार भी बताया तो तिलक ने पूछा, "तो अब क्या करने का विचार है ?"

"मैं देश की राजनीति से सर्वथा निराश हो, वापस भुवाली जाने का विचार कर रहा हूँ।"

"क्यों, निराश होने की क्या बात है ?"

"तो क्या आप चिरोल साहब से मुकद्दमा कर आशा से भर रहे हैं ?"

"यह तो प्रचार-कार्य था। उस मुकद्दमे में असफलता भी सफलता में ही बदल गयी है। दो मास तक इंगलैण्ड के समाचार-पत्रों में मुकद्दमे की धूम रही और भारत के साथ सहानुभूति रखने वालों का अंग्रेज़ी न्याय से विश्वास उठ गया है।"

"भगवन् ! यह इस प्रकार नहीं। इसके विपरीत प्रभाव यह हुआ है कि जो कुछ आरोप आप पर चिरोल ने लगाये थे, वे सत्य सिद्ध हो गये हैं।"

"वे सत्य तो हैं। परन्तु मुकद्दमे में सिद्ध नहीं हो सके।"

"परन्तु जज ने उनको सिद्ध माना है। मैं तो यह कह रहा हूँ कि भारत में जो कुछ हो रहा है, वह अनिच्छित है। जो स्थान आपका भारत की राजनीति में होना चाहिये था, वह गांधी जी को मिल गया है।

"आप भारत में होते तो दिल्ली अधिवेशन के प्रधान होते और फिर कांग्रेस में अपने विचार के लोग आगे लाने में सफल हो जाते। तब यह रौलेट ऐक्ट-आन्दोलन आपके हाथ में होता। आप इसे इस प्रकार न चलाते, जैसे कि गांधी जी ने चलाया है।"

"मैं कैसे चलाता ?"

"एक तो हिंसा-अहिंसा का झगड़ा न किया जाता। दूसरे, इसे सरकार को चुनौती के रूप में न लाते, वरन् कोक-संग्रह के रूप में प्रयोग करते। मैं इस कानून के विषय में इतने बड़े आन्दोलन के पक्ष में नहीं हूँ।"

"पर अब तो हो गया। सरकार गांधी जी को पकड़ कर बम्बई में ले आयी है और वे कह रहे हैं कि उनसे भूल हुई है। हिमालय जैसी भूल। साथ ही उन्होंने कहा है कि वे सत्याग्रह वापस ले लेंगे।

"उनका कहना है कि लोग अभी उनके उपाय के विषय में समझे नहीं। अर्थात् इस आन्दोलन के असफल होने का दोष लोगों पर है।"

"परन्तु क्या यह आन्दोलन असफल हुआ है ?" नलिनी ने पूछ लिया।

"यह गांधी ही कह रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्थात् वे दृष्टि-भ्रम उत्पन्न कर रहे हैं। सफलता को असफलता कह रहे हैं। परिणाम यह होगा कि लोग उन उपायों को, जो सफल होने वाले हैं, छोड़कर असफल उपायों का प्रयोग करने लगेंगे।

"देखिये, भगवन्! मैं यही कहता हूं कि यदि आज आप कांग्रेस के प्रधान होते तो इस भ्रमित नेता के नेतृत्व से देश को बचा कर रख सकते।"

"परन्तु आप तो," तिलक जी ने कह दिया, "कांग्रेस की नीति के विरुद्ध हैं न। यदि मैं प्रधान होता तो आप मेरे भी विरुद्ध होते।"

"मुझे यह दृढ़ विश्वास है कि आप कांग्रेस की रेलगाड़ी को ठीक दिशा में ले चलते। स्मरण है सन् १९०७ में मैंने कहा था कि आप कांग्रेस छोड़कर कोई नया राजनीतिक दल बनाइये, परन्तु आपने कहा था कि आप बारह-तेरह वर्ष के परिश्रम के उपरान्त कांग्रेस की गाड़ी के इंजन पर सवार हो पाये हैं और आप ड्राईवर के पद पर पहुँचने ही वाले हैं। ड्राईवर का पद पाते ही आप इस दल की रेलगाड़ी को ठीक मार्ग पर ले चलेंगे।

"तब आपको धक्का देकर गाड़ी के नीचे धकेल दिया गया था; परन्तु अब आप पुनः ड्राईवर के स्थान पर नियुक्त हुए थे और आपने चिरोल को दण्ड दिलवाने के लोभ में देश का नेतृत्व गांधी जी के हाथ में दे दिया है।"

"परन्तु कांग्रेस के प्रधान तो मदनमोहन जी हैं न।"

"वे तो पहले भी दो बार प्रधान रह चुके थे। उनमें यदि इतना साहस होता तो वे पहले ही कांग्रेस का कायाकल्प कर चुके होते। वे ब्राह्मण देवता सर्वथा साधु-स्वभाव हैं। आपमें क्षत्रियत्व दिखायी दिया था। जन्म से ब्राह्मण, कर्म से क्षत्रिय और ईश्वर की कृपा से वाक्-शक्ति के स्वामी होने से आप में और उनमें अन्तर है।"

"परन्तु मैं तो मालवीय और गांधी में अन्तर नहीं समझता। मैं यह भी मानता हूँ कि गांधी जी का उद्देश्य ठीक है।"

नलिनी ने एक क्षण तक आँखें मूंद विचार किया और कहा, "यद्यपि राजनीति में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, इस पर भी यदि मैं यह कहूँ कि वह समय दूर नहीं, जब पुनः आपको धक्का देकर देश की राजनीति से बाहर किया जाने वाला है तो आपको बुरा नहीं मानना चाहिये।

"मैं गांधी जी से उनके पंजाब जाने से पूर्व मिला था। अपनी उनसे भेंट का विवरण समाचार-पत्र में प्रकाशित करने वाला था, परन्तु उससे पूर्व समाचार-पत्र गांधी के सजातीयों ने मोल ले लिया और आज का समाचार निकल नहीं सका।"

"क्या लिखा था, उस लेख में आपने?"

"यही कि रौलेट एक्ट-आन्दोलन सफल हुआ है, परन्तु गांधी जी महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आन्दोलन को सफल होने नहीं देंगे। वे राजनीति नहीं जानते।

"खैर, तिलक जी! मैं तो इस क्षेत्र को छोड़ पुनः इतिहास और शास्त्र-विवेचना में लगने का विचार कर रहा हूँ। देश के वर्त्तमान को भगवान् के हाथ में छोड़, भविष्य के विषय में कुछ करने के विचार से मैं बम्बई से जा रहा हूँ।"

"और वर्त्तमान को छोड़, भविष्य निर्माण करने जा रहे हैं, अर्थात् नींव को छोड़, ऊपर की मन्ज़िल बनाने जा रहे हैं।"

"जी नहीं! आप समझे नहीं। आपकी 'ओरायन' द्वारा बनी नींव को खोद कर वहाँ पराशर नन्दन के महाभारत में रखी नींव पर नव-निर्माण करने का विचार रखता हूँ।"

नलिनी और तिलक जी कभी भी सहमत नहीं हुए थे। सन् १६०७ की अपेक्षा अब १६१६ में यह मतभेद बढ़ा ही था। तब तिलक जी ने यह कहा था, "और आप क्या हैं?"

अब नलिनी के विषय में वे ऐसा नहीं कह सके। उसने अपने छः वर्ष के समाचार-पत्र के सम्पादन-कार्य से यह सिद्ध कर दिया था कि वह भी कुछ बुद्धि रखता है।

: २ :

नलिनी होटल में पहुँचा तो रीनी और उसका पति हमीद खाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नलिनी ने उनको बैठे देखा तो पूछ लिया, "सुनाओ, हमीद खाँ साहब! यहाँ पूना में बैठे क्या कर रहे हो?"

"पण्डित जी! मैं अब हमीद नहीं रहा। मैं ईसाई बन गया हूँ। अपना नाम भी मैंने हैमिल्टन रख लिया है। हैमिल्टन इस कारण कि मेरे हस्ताक्षरों में अन्तर न पड़े।"

"ओह! कढ़ाही से कूदे तो चूल्हे में जा गिरे।"

"परन्तु इसमें मज़ा है।"

"क्या मज़ा है?"

"अब सूअर का मांस मज़े से खाता हूँ।"

"बस इसी में ज़िन्दगी का मकसद हासिल हो गया है?"

"तो यह क्या कम बात है?"

"अपना-अपना नज़रिया है। भाई हमीद, तुम्हारी पत्नी ने मेरा बहुत उपकार किया है। जो समाचार बम्बई से आये हैं, उनको पढ़ कर तो मैं रीनी का और तुम्हारा बहुत ही शुक्रगुज़ार हूँ।"

"हाँ; इसने मुझे बताया है कि किस तरह यह जान गयी थी कि आपकी हत्या की जाने वाली है। मैं उन हालात को बताना नहीं चाहता। खैर, आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमाल किया। यह बता रही है कि आपको घर छोड़ने में दो मिनट ही लगे थे। यह आपकी तारीफ करती थकती नहीं।"

"इसमें तारीफ की कोई बात नहीं है। मैं तो निर्लेप भाव में ही जीवन चला रहा था। मैं समाचार पढ़ने के उपरान्त अनुमान लगा रहा हूँ कि हमारा सब-कुछ स्वाहा हो गया है। इस प्रकार मेरे परिवार को चालीस-पचास हज़ार की हानि हुई है।

"इस पर भी परमात्मा का धन्यवाद है कि मेरा पुस्तकालय लाहौर में रखा है। वह कई लाख रुपये की सम्पत्ति है। कई बार उसे बम्बई लाने का विचार हो चुका था और प्रत्येक बार मकान अपना न होने के कारण उसे यहाँ नहीं लाया जा सका। वह सब बच गया है।"

"सुना है," हमीद ने कहा, "आपका अखबार बिक गया है?"

"भाई! अखबार तो कँटालीना का था। मैं वहाँ 'ऐलाउंस' पर कार्य करता था। वह काम अब नहीं रहा। इस पर भी मेरे शेष जीवन-भर के लिये मेरे पास कार्य है। मैं अब उसको पूरा करने का यत्न करूँगा।"

"क्या काम करेंगे?"

"मैं इस देश का सांस्कृतिक इतिहास लिख रहा था। इसके दो खण्ड लिख चुका हूँ। पिछले पन्द्रह वर्ष से वह काम रुका पड़ा था। अब पुनः मैं उसमें लग जाना चाहता हूँ। उसके तीन खण्ड अभी और लिखने रहते हैं। इसमें दस वर्ष लग जाने सहज हैं।"

"पर पण्डित जी! इससे लाभ क्या होगा?"

"इतिहास पढ़ने का लाभ क्या होता है?"

"मुझे तो कुछ लाभ दिखायी देता नहीं। नित्य नये राजे-महाराजे पैदा होते रहते हैं और फिर सुख-दुःख भोग मरते रहते हैं। कहाँ तक इनकी भूलों और चतुराइयों को पढ़ने में आँखें खराब की जायें?"

"मैं ऐसा नहीं समझता मेरे विचार में मनुष्य की स्मृति इतनी दुर्बल है कि इसे अपनी भूलें स्मरण कराने के लिये इतिहास का ज्ञान कराना आवश्यक है।

"और मनुष्य के सब कार्य उसकी संस्कृति से ही आविर्भूत होते हैं। इस कारण संस्कृति का ज्ञान राजनीति से भी अधिक आवश्यक है।

"देखो, मैं बताता हूँ। अपने देश की प्राचीन संस्कृति का ज्ञान वर्त्तमान युग के राजनीतिज्ञों को नहीं है। इस कारण राजनीति दूषित दिशा में जा रही है। इस राजनीति से देश तथा जाति की अवस्था सुधरेगी नहीं।"

"मेरे विचार में तो सुधर रही है। गांधी जी ने देश में इतना जोश पैदा कर दिया है कि अब अंग्रेज़ी राज्य यहाँ रह नहीं सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें दो भूलें हैं। एक यह कि यह जागृति और जोश गांधी जी ने पैदा नहीं किया। यह सब-कुछ पिछले बीस-पच्चीस वर्ष के क्रान्तिकारियों के कारनामों और लेखों का एकत्र हुआ परिश्रम है। इंगलैण्ड तथा जर्मनी के युद्ध ने भी देश को खबरदार कर दिया है।

"गांधी जी तो उस सब कर्म के फल का लाभ उठा कर एक गलत बात के लिये हलचल पैदा कर स्वयं लीडर बन गये हैं। इसमें भी गांधी जी की चतुराई तो है। एक कुशल बनिये की भाँति दूसरों की कमाई पर मालिक बन गये हैं।

"दूसरी बात यह है कि क्योंकि गांधी जी न तो इतिहास पढ़े हैं और न ही उन्हें अपने देश की संस्कृति का ज्ञान है, इस कारण अधिक सम्भव यह है कि वे राजनीति में भूलें करेंगे और फिर उन भूलों का नतीजा देश को सदियों तक भोगना पड़ेगा।"

"हमें तो कोई भूल दिखायी देती नहीं।"

"अच्छा, यह बताओ कि तुम मुसलमान से ईसाई क्यों हो गये हो?"

"अब्बाजान ने बहुत तंग कर रखा था।"

"क्यों तंग कर रखा था?"

"उन्होंने अपनी सामर्थ्य से अधिक बीवियाँ बना ली थीं। उनमें से एक ने मुझे फुसला कर अपना शिकार बना लिया और अब्बाजान से मेरी अनबन हो गयी।"

"परन्तु इतनी अधिक बीवियाँ रखने की ज़रूरत क्यों पड़ी?"

"ज़रूरत तो नहीं थी। मगर शरा में इजाज़त है, इस कारण कर लीं।"

"तो शरा में कहीं खराबी है?"

"हाँ, यह तो है।"

"और इस शरा वालों का राज्य हिन्दुस्तान में गांधी द्वारा कायम हो रहा है।"

"भला शादियों का राज्य से क्या सम्बन्ध है?"

"चार शादी वालों का राज्य हो गया तो गरीब-अमीर सब कम-से-कम चार-चार बीवियाँ रखना चाहेंगे। तब खानबहादुर के घर वाला झगड़ा देश के घर-घर में फैल जायेगा।

"और फिर खानबहादुर की बीवियाँ उनके खाविन्द के होने की नाकाबलीयत पर भी तलाक तो दे नहीं सकतीं और खान साहब जब भी चाहें, तलाक दे सकते हैं। अगर खान साहब के कानून वालों का राज्य हो गया तो देश-भर की औरतों की हालत अबतर तो हो ही जायेगी।"

"और हिन्दुओं में क्या हो रहा है? हिन्दुओं में तो शादी टूट ही नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती ।"

"यह ठीक है, जब हिन्दू बहु-संख्या में शादी तोड़ने की प्रथा चलाना चाहेंगे तो चल सकेगी । हमारे यहाँ विवाह के रीति-रिवाज को जीवन का लाज़मी जुज़ नहीं माना । ये बदल भी सकते हैं । इस समय भी भिन्न-भिन्न बिरादरियों में भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज हैं । परन्तु चार बीवियाँ रखने वाले तो अपनी शरा में कुछ भी तबदीली ला नहीं सकते ।"

हमीद शादी के रीति-रिवाज में तबदीली की बात समझ नहीं सका । इस पर भी वह यह तो समझ रहा था कि यदि इस्लाम में चार बीवियों की इजाज़त न होती तो उसके वालिद शरीफ पचपन वर्ष की आयु में बारह साल की लड़की से शादी करने की हिमाकत न कर सकते । साथ ही वह जानता था कि अम्मी तो तुरन्त तलाक दे देती, यदि उसे तलाक की इजाज़त होती ।

इस पर भी उसको नलिनी की बात भली-भाँति समझ नहीं आयी थी । वह समझता था कि विवाह के रसूम मज़हब के साथ सम्बन्ध रखते हैं, राज्य-नियम के साथ नहीं । इस कारण उसने पूछ लिया, "पर पण्डित जी ! क्या कोई भी राज्य जनता के मज़हब में दखल दे सकता है ?"

"हाँ; इस्लाम देता रहा है । इसलिये मैं किसी भी ऐसी हरकत को पसन्द नहीं करता, जिससे मुल्क के किसी भी हिस्से में शरा का राज्य कायम हो सके ।"

"मगर ऐसा किसी ने करने का यत्न किया है ?"

"अफगानिस्तान के अमीर के खिलाफ जिहाद किसलिये किया गया था ? अमानुल्ला को किसलिये मुल्क छोड़, भाग जाना पड़ा था ? बच्चा साका की हिमायत मुल्ला-मौलाना क्यों करने लगे थे ?"

हमीद के पास इतना समय नहीं था कि वह इतिहास के पन्नों को उलट कर पढ़े । रीनी चुपचाप नलिनीकान्त की दलील सुन रही थी । जब उसने देखा कि उसका बैरिस्टर पति बात का उत्तर नहीं दे सका तो वह बोल उठी, "मैं समझती हूँ कि अब ये ईसाई हो गये हैं । इस कारण इस्लाम के काले कारनामों की जिम्मेदारी से छुट्टी पा गये हैं ।"

"ईसाइयों की बात भी वही है जो इस्लाम की है । देखो, बेटी ! एक इन्सान की जिन्दगी में दो किस्म के काम हैं । एक जो हमेशा और हर शख्स से करने के लिये लाज़मी हैं । ये बदल नहीं सकते । मगर कुछ ऐसे काम भी हैं, जो जरूरत के मुताबिक कौम के अक्लमन्द लोग विचार कर बदल भी सकते हैं । विवाह-शादी और दूसरे रीति-रिवाज बदले जा सकते हैं ।

"इस्लाम और ईसाईयत में उनको बदलने की इजाज़त नहीं है । आजकल के इंगलैण्ड और फ्रांस की मिसाल ली जा सकती है । जंग की वजह से वहाँ जवान औरतों की तादाद बहुत बढ़ गयी है । उनको खाविन्द नहीं मिल सकते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर वहाँ ईसाइयों के राज्य के स्थान, किसी अक्लमन्द हिन्दू का राज्य होता तो एक से अधिक पत्नियाँ रखने की इजाज़त हो जाती। मेरे विचार का राज्य वहाँ होता तो सरकार की ओर से एक से अधिक शादी-शुदा बीवियाँ रखने वाले का वजीफा लगा होता।

"ईसाइयों ने इस बात की इजाज़त नहीं दी और परिणाम यह हुआ है कि वहाँ व्यभिचार बढ़ रहा है।"

रीनी निरुत्तर हो चुप कर गयी।

नलिनी का अभिप्राय था कि मुसलमानों को पृथक् प्रातिनिध्य मिलने से उन क्षेत्रों में जहाँ मुसलमान बहु-संख्या में हैं, इस्लामी राज्य स्थापित हुए बिना नहीं रहेगा और वहाँ सब प्रकार के बेहूदा कानून बनने लगेंगे।

रीनी के कहने पर हमीद नलिनी से सहानुभूति प्रकट करने आया था, परन्तु नलिनी ने तो बम्बई की हानि के विषय में बात ही नहीं की। हमीद ने पूछ लिया, "अब आपका क्या प्रोग्राम है?"

"मैं आज रात कैटालीना को पत्र लिखूंगा कि जब बम्बई में हालात सामान्य हो जायें, तब वह हमें लिखे। मैं बम्बई होता हुआ वापस पंजाब अथवा भुवाली जाना चाहता हूँ।"

: ३ :

बम्बई में सामान्य स्थिति होने में कई दिन लगे। गांधी जी को भी शान्ति स्थापित करने में यत्न करना पड़ा। १८ अप्रैल, सन् १९१९ को गांधी जी ने सत्याग्रह वापस ले लिया। तब तक पंजाब में मार्शल-लॉ लग चुका था।

१८ अप्रैल को नलिनी बम्बई वापस आया और कमलनारायण की कोठी में ठहर गया। कैटालीना पिछले दस दिन की घटनाओं पर परेशान थी। जो विचार वह और नलिनी 'बॉम्बे न्यूज़' द्वारा लोगों को देना चाहते थे, वे गांधी की जय-जयकार में बह गये थे।

'बॉम्बे न्यूज़' पुनः प्रकाशित होने लगा था। इसके सम्पादक एक गुजराती महानुभाव नियुक्त हुए थे। वे महोदय पंजाब की दुर्घटना का दोष पंजाबियों पर लगा रहे थे और लोगों के अहिंसात्मक न रहने के कारण गांधी जी की योजना के असफल होने में उनको दोषी ठहरा रहे थे।

पहले ही दिन रात के खाने के उपरान्त विजय, नलिनीकान्त और कैटालीना में भावी कार्यक्रम के विषय में वार्त्तालाप हो गया।

कैटालीना ने कहा, "एक विचार से तो समाचार-पत्र इत्यादि बेच देना ठीक ही हुआ है। यदि यह विक्रय न होता तो समाचार-पत्र चलता रहता और पण्डित जी, आप पूना जाने के विषय में विचार ही नहीं करते। तब परमात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही जाने क्या होता ।"

"जो कुछ होता, हो जाता । मुझे इसकी चिन्ता नहीं । यदि मुझे कुछ दिन और जीवित रहना था तो प्रह्लाद की भाँति मैं इस अग्नि-परीक्षा से बच जाता । परन्तु तुमने यह क्या किया कि चलते पत्र को इन बनियों के हाथ में दे दिया है । यह देखो, नेता का दोष जनता पर थोपा जा रहा है । एक शब्द भी तो इस विषय में नहीं लिखा जा रहा कि आन्दोलन का ढंग गलत था ।

"मैं समझता हूँ," नलिनी ने आगे कहा, "यह अधिक ठीक होता, यदि कोई एक मनचला वाइसराय पर बम्ब फेंक कर उन्हें मार डालता अथवा 'होम मैम्बर' को अपने पिस्तौल की गोली का निशाना बना देता और पीछे फाँसी चढ़ जाता । सहस्रों की भीड़ को उत्तेजित कर एक बैंक के निर्दोष मैनेजर का मरवाना तो महान् कायरता का काम था ।"

"परन्तु जो जन-जागृति हुई है, वह क्या एक-आध बम्ब चलाने से हो सकती थी ?" कैटालीना ने अपना संशय रख दिया ।

नलिनी का स्पष्ट कहना था, "यह जन-जागृति समाचार-पत्रों का काम होता है । जहाँ लॉर्ड हार्डिंग पर बम्ब फेंकने जैसा कार्य शौर्य का काम माना जाता है, वहाँ सहस्रों की भीड़ का एक बैंक को आग लगा कर उसके मैनेजर की हत्या करना कायरता उत्पन्न करने वाला कार्य हुआ है ।

"लॉर्ड हार्डिंग पर बम्ब का और इसी प्रकार के कारनामों का प्रभाव हुआ है और सदा होगा; परन्तु भीड़ को उत्तेजित कर इस प्रकार कायरता का काम देश के अभ्युदय में कारण नहीं होगा ।"

कैटालीना को बात कुछ समझ में आने लगी थी । नलिनी ने अपने विचारों की व्याख्या करते हुए आगे कहा, "देखो कैटालीना! इस देश के जैन मतावलम्बियों का ओढ़ना ओढ़े हुए यह महात्मा फ्रांसीसी क्रान्ति की नकल उतारना चाहता है । फ्रांस की क्रान्ति फ्रांस के हित में सिद्ध नहीं हुई और यह गांधी का आन्दोलन भी भारत के हित में नहीं होगा ।"

"परन्तु मौसा जी ! इस आन्दोलन में ज्वालामुखी पर्वतों के समान का-सा विस्फोट क्या आततायी के अत्याचार का स्वाभाविक परिणाम नहीं ?"

"हाँ; यह तुम ठीक कह रही हो कि जनता पर क्रूर, निरंकुश और लुटेरे शासन का यह परिणाम होना ही था । जनता छटपटा रही थी, परन्तु जनता के असन्तोष को फूटने की दिशा दी है गांधी जी ने । ब्रिटिश सरकार इस विस्फोट की आशंका कर रही थी और वह इस विस्फोट को दो उपायों से शान्त करना चाहती थी । एक तो रौलेट ऐक्ट जैसे कानून से कुछ युवकों को पकड़ कर जेल में डाल देने से और दूसरे, यहाँ के काले अंग्रेजों को जो अब देश-भक्ति के पहरावे में प्रकट होने लगे हैं, सुधारों से मुख बन्द कर देने से । परन्तु वास्तविक असन्तुष्ट जनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पेट इससे नहीं भरने वाला। यदि जनता में से दो-चार क्रान्तिकारी भी उत्पन्न होते तो खुदीराम बोस तथा मदनलाल ढींगरा जैसे क्रान्तिकारियों के से शौर्यवान लोगों के शौर्य के कारनामों से जाति में जीवन-ज्योति जाग्रत कर सकते।"

"परन्तु," कैटालीना का संशय था, "गांधी जी ने तो अमृतसर और गुजरांवाला में हुई घटनाओं की निन्दा की है। 'वे भी इन घटनाओं को कायरतापूर्ण कार्य कहते हैं।"

"यह तो अपनी तथा अपने प्रशंसकों की जान बचाने के लिये है। वास्तव में इस प्रकार के कायरतापूर्ण कारनामों के लिये वातावरण उन्होंने ही बनाया था।"

"परन्तु इसका प्रभाव तो इंगलैण्ड की पार्लियामैण्ट पर भी होने जा रहा है।"

"हाँ; और वह इस प्रकार है कि भारत में कायरों के नेता बन जाने पर सरकार देश में फूट के बीज को बोयेगी और भारत देश न केवल राजनीतिक दृष्टि से बटेगा, वरन् सांस्कृतिक दृष्टि से भी कई देशों में बट जायेगा। जो जीवित रहेगा, वह देखेगा। यह देश वास्तविक अर्थों में एक उप-महाद्वीप बन जायेगा।"

"आप एक बार गांधी जी से मिलकर अपने विचार उनको बताते क्यों नहीं?"

"यद्यपि आशा नहीं कि वे मेरी बात मानें, परन्तु तुम्हारा सुझाव ठीक है। मैं पूना में श्री तिलक जी से भी मिला था। उस समय तक पंजाब के समाचार विदित नहीं थे। इस कारण मैं अपना अभिप्राय भली-भाँति स्पष्ट नहीं कर सका। तिलक जी को यह भ्रम हो गया था कि पिछले चौबीस वर्ष के प्रयत्न से वे कांग्रेस में एक उच्च-स्तर के नेता बन गये हैं। अतः वे कांग्रेस की गाड़ी को ठीक मार्ग पर लाने में सफल हो जायेंगे। इसी कारण मेरी बातों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

"गांधी जी तो उनसे भी बड़े नेता बन चुके हैं। भला वे एक सामान्य व्यक्ति की बात क्यों सुनेंगे?"

"मेरा विचार है कि वकील साहब यत्न करें तो आपकी भेंट का प्रबन्ध हो सकता है।"

इस पर नलिनी कमल के मुख पर देखने लगा। कमल ने कुछ देर विचार कर कहा, "मैं मिस्टर जिन्ना को टेलीफोन कर भेंट का प्रबन्ध करा सकता हूँ।"

"तो क्या जिन्ना साहब तैयार हो जायेंगे इस भेंट का प्रबन्ध करने के लिये?"

"हाँ; पिछले शनिवार मेरी उनसे इसी विषय पर बातचीत हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि वे भी गांधी जी की हुल्लड़बाज़ी को पसन्द नहीं करते। यद्यपि वे बम्ब और पिस्तौल के प्रयोग के पक्ष में नहीं हैं। इस पर भी उनकी युक्ति यही है कि यदि सामान्य लोगों को भड़काया गया तो देश कभी भी स्वतन्त्र नहीं हो सकेगा और न ही यह एक रह सकेगा। वे तो कहते थे कि एक-एक ज़िले का एक-एक राज्य बन जायेगा।"

"हाँ; इस विषय में हम दोनों एक ही ढंग पर विचार करते हैं। तो वकील साहब ! प्रबन्ध करिये।"

कमलनारायण ने जिन्ना को टेलीफोन किया और उससे बात होने लगी। कमलनारायण ने कहा, "हमारे 'बॉम्बे न्यूज़' के सम्पादक मेरे पास बैठे हैं। वे मुझे गांधी जी के आन्दोलन के परिणामों का वही चित्र खींच कर बता रहे हैं, जो पिछले सप्ताह क्लब में आपने खींचा था।"

जिन्ना ने कहा, "परन्तु मैंने तो सुना था कि वे अपने मकान के अग्नि-काण्ड में जल कर मर गये हैं ?"

"नहीं, जिन्ना साहब ! वे जीवित, जाग्रत मेरे सम्मुख बैठे हैं।"

"मैं उनसे मिलना चाहूँगा।"

"और वे गांधी जी से मिलने के लिये उत्सुक हैं।"

"मैं गांधी से उनकी भेंट करा सकता हूँ, परन्तु भेंट मेरे सामने होगी और मैं देखना चाहता हूँ कि गांधी के हठ का उनके मन पर क्या प्रभाव पड़ता है।"

"ऐसा करिये," कमलनारायण ने कहा, "कि आप गांधी जी से समय निश्चित करिये और वे आपकी कोठी पर निश्चित समय से पन्द्रह-बीस मिनट पहले पहुँच जायेंगे। इस प्रकार आपसे भी वे मिल सकेंगे।"

पाँच मिनट उपरान्त जिन्ना का टेलीफोन आया कि अगले दिन ठीक दस बजे गांधी जी मिल सकेंगे। कमलनारायण ने कह दिया कि नलिनीकान्त उनके मकान पर साढ़े नौ बजे पहुँच जायेंगे।

नलिनीकान्त कमलनारायण के साथ ठीक साढ़े-नौ बजे जिन्ना साहब के बंगले पर जा पहुँचा। जिन्ना साहब नलिनी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

जिन्ना साहब ने इस कट्टर हिन्दू के दर्शन नहीं किये थे; यद्यपि वे इसके विषय में बहुत किंवदन्तियाँ सुन चुके थे। इसी कारण वे इससे साक्षात्कार करने के लिये बहुत उत्सुक थे।

नलिनीकान्त आया तो जिन्ना ने उठकर उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "थैंक गॉड ! आप अभी जिन्दा मौजूद हैं। यहाँ तो आपके मारे जाने पर बगलें बजायी जा रही थीं।"

"क्या आप बता सकते हैं कि कौन लोग हैं जो मुझ जैसे तुच्छ जीव पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कृपा दृष्टि रख रहे हैं ?''

''उनके नाम बताने की आवश्यकता नहीं। गांधी के चेले उनको छुड़ाने में सफल हो गये हैं। उनमें से कुछ तो आपके मकान को आग लगाते पकड़े गये थे, परन्तु सब गांधी के अनुयायी मान छोड़ दिये गये।''

''अब तो मैं बच गया हूँ और मैं विश्वास रखता हूँ कि जब तक मेरे भाग्य में ज़िन्दा रहना लिखा है, मुझे कोई भी मार नहीं सकता।''

जिन्ना ने बात बदल दी। उसने कहा, ''मेरी सूचना के अनुसार आप कट्टर हिन्दू हैं। भला आप इस राम-धुन गाने वाले महात्मा की नीति में क्या भूल देखते हैं ?''

नलिनीकान्त ने मुस्कराते हुए कहा, ''यह गांधीजी राम-राम जपते हैं, परन्तु जो कुछ राम ने किया था, वैसा करने से डरते हैं। अकेले राम ने अपने दिव्य शस्त्रों की सहायता से दस सहस्र राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया था। गांधी जी किस प्रकार राम के भक्त हो सकते हैं ?

''राम ने रावण के भाई विभीषण को अपना सखा बना लिया था। यह उससे रियायत करके नहीं, बल्कि उसके, दुष्ट भाई के पक्ष को छोड़ कर भले लोगों में आकर मिल जाने के कारण था। इसके विपरीत गांधी जी कहते हैं कि भले-बुरे का विचार छोड़ सब उनके भाई हैं। यह हिन्दू मीमांसा नहीं है। गांधी जी समाज की व्यर्थ की बातों को हिन्दू-धर्म मानते हैं और हिन्दुओं की जो असल बात है, उसे जानते तक नहीं।''

इस पर जिन्ना साहब के कान खड़े हो गये। उन्होंने पूछा, ''और आप मुसलमानों को क्या समझते हैं ? भला अथवा बुरा ?''

हिन्दू अथवा मुसलमान भले और बुरे होने का चिह्न नहीं। दोनों में भले लोग भी हैं और बुरे भी। हमारे यहाँ भले और बुरे की पहचान बतायी है। यदि उसे एक वाक्य में कहूँ तो वह यह है कि भला वह है जो दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करता है, जैसा कि वह दूसरों से अपने लिये आशा करता है।''

जिन्ना ने इस सिद्धान्त को समझने के लिये मन में इसे दोहराया और आखें मूंद उसने इस वाक्य पर विचार कर कहा, ''मुसलमानों में ऐसे आपको बहुत कम मिलेंगे।''

''इस पर भी यह असूल में ठीक है। यदि मुसलमान ऐसे नहीं तो वे भले लोगों की सोसायटी में बैठ नहीं सकते। जो भले नहीं हैं, वे दया के पात्र नहीं हैं।''

''तब तो वे अंग्रेज़ के पक्ष में हो जायेंगे।''

''मैं जानता हूँ और यह देख भी रहा हूँ। परन्तु इससे डरने की क्या बात है ? गांधी जी अवश्य डर रहे हैं। मुसलमानों के देश-द्रोही होने और अपने लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष हक-हकूक माँगने पर भी वे उनको गले लगाते रहे हैं। इससे मुसलमान और अंग्रेज दोनों यह समझेंगे कि हिन्दू भीरु हैं, दुर्बल हैं और मूर्ख हैं। इस कारण वे दोनों हिन्दू को दास बनाने का यत्न करेंगे।"

जिन्ना स्वयं भी इस बात को मानता था, परन्तु वह देख रहा था कि हिन्दू-मुसलमान में एकमयता गांधी की नीति से हो रही है। इस कारण उसे नलिनी-कान्त की नीति अव्यवहारिक प्रतीत हो रही थी। अतः उसने इस बात को छोड़ सत्याग्रह आन्दोलन पर बात आरम्भ कर दी। उसने पूछा, "आप सार्वजनिक सत्याग्रह के विषय में क्या समझते हैं ?"

"सार्वजनिक सत्याग्रह अव्यवहारिक बात है। व्यक्तिगत सत्याग्रह सम्भव है। कुछ लोगों का मिल कर भी अपने को फूंक देना सम्भव है। राजपूताने के इतिहास में कभी-कभी सैकड़ों और सहस्रों स्त्रियों ने अपने मान की रक्षा के लिये चिताओं में जल जाना स्वीकार किया था; परन्तु जब किसी ने अपने को भस्म करने के स्थान, शत्रु के पेट में छुरा घोंप देना उचित समझा तो इसे बुरा नहीं कहा गया। न ही ऐसे व्यक्ति को मना किया गया।

"परन्तु यहाँ तो यह है कि यदि किसी ने क्रोध में आकर किसी अंग्रेज को मार डाला तो वह निन्दनीय माना जाता है।

"साथ ही गांधी जी के आन्दोलन का प्रभाव यह है कि यदि आन्दोलन सफल हो तो गांधी जी की जय-जयकार और असफल हो तो लोगों को दोषी ठहरा दिया जाता है। मैं इसे राजनीति नहीं मानता।"

"आप जनता की वर्त्तमान उत्तेजित अवस्था में क्या करते ?"

"मैं जलसे-जलूसों में विश्वास नहीं रखता। इस पर भी समाचार-पत्रों द्वारा शिक्षात्मक कार्य जारी रखना आवश्यक मानता हूँ। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होता कि सन् १९०४ से सन् १९०९ वाली परिस्थिति उससे भी उग्र रूप में उत्पन्न हो जाती। सन् १९०५-६ में समाचार-पत्रों के पढ़ने वाले बहुत कम लोग थे। आज उनकी संख्या बहुत बढ़ गयी है। अतः छुट-पुट क्रान्तिकारी घटनाएँ होतीं। कुछ पुलिस अधिकारी तथा अंग्रेज़ अफसर मारे जाते और कुछ लोग फाँसी चढ़ जाते। परिणाम यह होता कि आगामी सुधार शीघ्र होते और ठीक दिशा में होते। साथ ही देश में बहादुरी की परम्परा चलती और डरपोक, कायर लोग नेता न माने जाते।

"शौर्यवान केवल बम्ब, पिस्तौल चलाने वाले ही नहीं होते। इस श्रेणी में वे लोग भी होते हैं जो शौर्यवानों की गाथाएँ गाते हैं और यदि उनका पक्ष सत्य और न्याय का होता है तो उस पक्ष की भी हिमायत करते हैं।

"यह परम्परा चलायी थी तिलक जी ने। वे निर्भीकता से क्रान्तिकारियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कामों का दोष उन पर न थोप कर अंग्रेज़ी राज्य का दोष बताते थे। इसको मैं हिन्दू-परम्परा मानता हूँ। इसी को मैं बुद्धि-युक्त और सफलता लाने वाली प्रथा मानता हूँ।"

जिन्ना जानता था कि गांधी जी ऐसा नहीं मानते, परन्तु बात गांधी जी की ही चलती थी। इस पर भी वह नलिनीकान्त के साहसिक कथन की प्रशंसा करता था।

उसने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "चलिये, समय हो गया है।"

: ४ :

गांधी जी जिन्ना साहब की प्रतीक्षा में थे। यह गांधी जी के जीवन का वह काल था, जब वे देश के पढ़े-लिखों से अपने सम्बन्ध बना रहे थे। एक ओर पण्डित मोतीलाल और सी० आर० दास से, वे सम्पर्क बनाये हुए थे और दूसरी ओर वे मुसलमान मुल्ला-मौलानाओं से सम्पर्क बनाने का यत्न कर रहे थे।

वास्तव में जिन्ना साहब देश में व्यापक जागृति को देख स्वयं भी विस्मित थे कि यह कैसे हो गया? वे इस जागृति का कारण यह समझते थे कि युद्ध-कालीन महँगाई और प्रतिबन्धों से लोग आतुर हैं; साथ ही रौलेट ऐक्ट ने ब्रिटिश न्याय पर रहा-सहा विश्वास निःशेष कर दिया था। यह कानून अंग्रेज़ी न्याय-पद्धति से विलक्षण था। इससे लोग भड़क उठे थे। ये कारण जिन्ना साहब ने नलिनी को मार्ग में बताये थे। नलिनी ने इस पर यह टिप्पणी की थी कि तनाव को इस पर स्थिर रखना समाचार-पत्रों का काम था और नेताओं का काम था कि सरकार की कड़ी-से-कड़ी भाषा में आलोचना की जाती। इस तनाव की अवस्था में क्रान्तिकारी घटनाएँ होतीं। व्यक्ति आगे आते और पुलिस अधि-कारियों के लिये जीवन हराम कर देते। तब आप जैसे नेता आने वाले सुधारों को स्वीकार कर प्रयोग करते और फिर अधिक सुधारों के लिये आन्दोलन चलता।

नलिनीकान्त का कहना था कि अहिंसात्मक व्यवहार इक्का-दुक्का तो कर सकता है, परन्तु यह कोई संस्था नहीं कर सकती।

गांधी जी से जिन्ना साहब ने कहा था कि 'बॉम्बे न्यूज़' के सम्पादक आपसे मेरे सामने कुछ परामर्श करना चाहते हैं। गांधी जी यह समझ कि एक अन्य प्रभावी लेखक से सम्बन्ध बन जायगा, इस भेंट के लिये उत्सुक थे।

सामान्य परिचय के उपरान्त गांधी जी ने पूछा, "आप जिन्ना साहब को साथ लेकर किसलिये आये हैं? मैं तो बिना इनकी सिफारिश के भी सबसे मिलने को तैयार रहता हूँ।"

नलिनी ने कहा, "परन्तु मैं केवल दर्शन करने की अभिलाषा से नहीं आया हूँ। मैं एक विषय पर आपसे विचार-विनिमय करने आया हूँ। दर्शन तो मैं आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार कर चुका हूँ। आपसे वार्त्तालाप का अवसर चाहता था। जिन्ना साहब मेरे विचार के हैं। इस कारण इनके साथ आया हूँ।"

"तो आप मुझसे बहस करने आये हैं? पर मैं तो एक अच्छा वकील नहीं हूँ। मैं बहस नहीं कर सकूँगा।"

"परन्तु आज देश ने आपको अपना वकील बना लिया है और मुझे भय लग रहा है कि आप देश का मुकद्दमा ठीक लड़ नहीं सकेंगे।"

"तो देश को कहिये कि मुझे दिया वकालत-नामा वापस ले ले।"

"गांधी जी! कठिनाई यह है कि आप एक सस्ते वकील हैं और सस्ते होते हुए आप स्वयं को अति योग्य प्रकट कर रहे हैं। दूसरे वकील देश से लम्बी-चौड़ी फीस, मेरा अभिप्राय है बलिदान, चाहते हैं।

"अत: कम फीस के लोभ में लोग एक 'थर्ड रेट' वकील को स्वीकार कर रहे हैं।"

गांधी जी का मुख लाल हो गया। नलिनी देख रहा था कि 'थर्ड रेट' का वकील कहे जाने से इस महानुभाव को क्रोध आ रहा है। इस कारण बात बदलने के लिये उसने कह दिया, "महात्मा जी! यह तो आपने ही कहा है कि आप एक अच्छे वकील नहीं हैं। मैंने तो आपकी बात दोहरायी ही है। परन्तु मैं आपको एक अति कुशल नेता मान आपके पास आया हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो एक-दो प्रश्न करूँ?"

"हाँ, करिये।"

"पंजाब में जो नर-हत्या हुई है उसमें आप अपने को दोषी मानते हैं अथवा नहीं?"

"हाँ, मैं इतना दोष मानता हूँ कि लोगों को अहिंसात्मक रहने की शिक्षा दिये बिना आन्दोलन आरम्भ कर बैठा था।"

"यही कहने आया हूँ कि अपने मन में प्रतिज्ञा करें कि बिना इस बात की परीक्षा लिये कि घोर उत्तेजना में भी लोग अहिंसात्मक रह सकते हैं, आप ऐसा आन्दोलन पुन: नहीं चलायेंगे।"

"हाँ, चाहिये तो यही। परन्तु............।" गांधी जी कहते-कहते रुक गये। नलिनी और मिस्टर जिन्ना गांधी जी के कहने की प्रतीक्षा करने लगे। गांधी जी ने बात बदल दी। वे कहने लगे, "मैंने तीन दिनों का व्रत रख कर प्रायश्चित्त किया है और आन्दोलन वापस ले लिया है।"

"यह आपने ठीक किया है। यह व्रत आपकी इस भूल का बहुत छोटा-सा प्रायश्चित्त है। इससे आपकी आत्मा शुद्ध हो सकेगी, परन्तु देश के लिये तो केवल मात्र आन्दोलन वापस लेना पर्याप्त नहीं, वरन् देश-व्यापी अहिंसात्मक आन्दोलन पुन: न चलाने का संकल्प करना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हिंसा का राज्य चलने दूं ?"

"हिंसा वालों से सरकार स्वयं निपट लेगी। आप किसी पर बम्ब अथवा पिस्तौल न चलायें।"

"यही मैं लोगों को कह रहा हूँ।"

"परन्तु आपने तो छः अप्रैल से सार्वजनिक सत्याग्रह करने का आदेश दिया था।"

"यह उनके लिये नहीं था जो अपने को अहिंसात्मक नहीं रख सकते थे।"

"परन्तु आपने अभी तो माना है कि उनके अहिंसात्मक रह सकने की तैयारी के बिना आन्दोलन चलाना भूल थी।"

गांधी जी चुप रह गये। नलिनी ने अपनी बात जारी रखी। उसने कहा, "आप गोखले जी के शिष्य हैं। अतः आपको अपने गुरु के पद-चिह्नों पर चलना चाहिये। अभी सुधार लागू होंगे। आप केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य बन जाइयेगा और तब सरकार को अहिंसात्मक रहने का उपदेश दिया करिये। जनता को समझाना आपके बस की बात नहीं है।"

"अभी तो सरकार को समझाना है कि उसने मार्शल-लॉ लागू कर बहुत बुरा किया है।"

"ठीक है। आप करिये। परन्तु भगवन्, सार्वजनिक आन्दोलन आपके बस की बात नहीं है।"

"परन्तु इससे हानि क्या होगी? धीरे-धीरे लोग अहिंसात्मक रहने का ढंग सीख जायेंगे।"

"ऐसा नहीं होगा महाराज! इतिहास इसका साक्षी नहीं। होगा यह कि लोग भीरु बन जायेंगे। बहुत से मिलकर इक्के-दुक्के को मार डालने का अभ्यास करने लगेंगे। साथ ही दुर्बल को लूट लेने की प्रवृत्ति पनपेगी।

"सबसे बुरी बात यह होगी कि आप अनिच्छित लोगों से मैत्री करने पर विवश हो जायेंगे। सरकार आपको मूर्ख और भीरु समझ, आपके विरुद्ध गुण्डों और शोदों को संगठित करने लगेगी।

"आपके भाई-बन्धुओं ने मुसलमानों के लिये विशेष समझौता स्वीकार किया है। अब आप छोटी जाति वालों के लिये भी यही मानेंगे। फिर ईसाई और सिक्खों के लिये विशेषाधिकार मानने पर विवश हो जायेंगे। आगे चलकर पठान, तुर्क, सुन्नी, शिया, भील, गोंड, द्रविड़ों इत्यादि के लिये विशेषाधिकार मानने होंगे और वह समय दूर नहीं, जब तमिल बम्बई में विशेषाधिकार मागेंगे और मराठे मद्रास में मागेंगे।

"यह निश्चय जानिये कि यह भीरुता के लक्षण हैं और आप यही प्रचार कर रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी उठ खड़े हुए और बोले, "मैं ऐसा नहीं मानता। अब मेरे मालिश कराने का समय हो गया है।"

नलिनी और जिन्ना भी उठे और बाहर चले आये। मोटर में वापस लौटते हुए जिन्ना साहब ने कहा, "यदि आप हिन्दू का पक्ष लेना छोड़ दें तो मैं आपको अपने दल में सम्मिलित कर लूँ।"

"आपका कौन-सा दल है?"

"होम-रूल लीग।'

"उसका तो मैं सदस्य पहले ही हूँ। उसके नेता से कुछ दिन हुए, पूना में मिला था और उसे मैं कांग्रेस छोड़ने के लिये तैयार नहीं कर सका।"

"कांग्रेस छोड़ने की क्या आवश्यकता है?"

"कांग्रेस में रहना नमक की खान में रहने के समान है। नमक की खान में सब कुछ नमक हो जाता है। इन अंग्रेज़ीयत के भक्तों में रहते हुए, सब काले अंग्रेज़ बन रहे हैं।"

"मैं ऐसा नहीं मानता। मैं नैक्टाई, कौलर, पतलून पहनता हुआ भी अपने को देश-भक्त और अंग्रेज़ीयत के खिलाफ समझता हूँ। मैं नैक्टाई, कौलर को अंग्रेज़ीयत के लक्षण नहीं समझता। परन्तु आप जब किसी आन्दोलन के नेता बनेंगे, तब पता चलेगा कि आप अंग्रेज़ का पक्ष ले रहे हैं अथवा हिन्दुस्तान का। अभी तो आप कांग्रेस में तीसरे दर्जे के नेता हैं और मुस्लिम लीग में आपकी गणना नहीं। होम-रूल-लीग में आपकी आवाज़ नहीं।"

"तो आप समझते हैं कि मैं भी सामान्य नेताओं की भाँति आँधी में बह जाऊँगा?"

"आपमें नेता बनने के लक्षण तो हैं। आपमें अपनी बात कहने का साहस है; परन्तु आप नेता बन सकेंगे अथवा नहीं, कहना कठिन है। आपमें एक भारी दोष है।"

"क्या?

"आप झूठ बोल नहीं सकते, आडम्बर कर नहीं सकते और अपने उसूलों को नेतागिरी पर कुरबान कर सकेंगे अथवा नहीं, अभी नहीं कहा जा सकता।"

जिन्ना मुस्कराया। यह उसके मन की बात थी। इस पर भी वह मौन रहा। नलिनी भी गांधी जी की अयुक्ति-संगत बातों से उचाट हो रहा था और वहाँ से निराश ही लौट रहा था।

ये लोग कमल की मोटर में ही गांधी जी से मिलने गये थे और लौटते हुए जिन्ना को उसके बंगले पर छोड़ने जाना था। जिन्ना ने कहा, "पण्डित जी! सुना है कि आपके घर में एक मुसलमान लड़की रहती है?"

नलिनी प्रश्न का आशय न समझते हुए जिन्ना साहब का मुख देखता रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। जिन्ना ने कहा, "इस कारण अगर मैं आपको चाय का निमन्त्रण दूं तो आपको परहेज़ नहीं होगा।"

"मुझे आपके घर चाय लेकर बहुत खुशी होगी, परन्तु मेरे घर में कोई मुसलमान लड़की नहीं है।"

"मगर मैंने तो सुना है कि आपको ज़िन्दा ज़ला देने की कोशिश भी तो इसी कारण की गई थी।"

"देखिये, मैं आपको वस्तु-स्थिति से अवगत कर देना चाहता हूँ। मेरे घर में सरस्वती नाम की एक लड़की रहती है। वह मेरे बड़े लड़के की पत्नी है। वह एक मुसलमान के घर में पैदा हुई थी और अब वह सब प्रकार से हिन्दू है।

"रही मुझे मार डालने की बात। वह इस कारण है कि मुसलमान उस उसूल को नहीं मानते जिसका मैंने आपके सामने वर्णन किया है। वे दूसरे के साथ वह व्यवहार नहीं करना चाहते, जिसे वे अपने साथ पसन्द करते हैं। वे हिन्दू को मुसलमान बनाना तो ठीक समझते हैं, परन्तु किसी मुसलमान का हिन्दू हो जाना पसन्द नहीं करते।"

"यही तो मैंने कहा था कि आपके विचार के भले लोग मुसलमानों में बहुत कम हैं।"

"ठीक है। उनके साथ जो भी मित्रता करेगा, वह भले विचार का व्यक्ति नहीं माना जा सकता।"

जिन्ना इस वृद्ध व्यक्ति की निर्भीक, परन्तु युक्तियुक्त बात सुन चकित था। इस पर भी वह उनको व्यवहारिक नहीं मानता था। वह युरोपियन राजनीति की उपज होने के कारण सत्य को व्यवहारिक का पर्याय नहीं मानता था। नलिनी-कान्त समझता था कि यदि व्यवहार में सत्य नहीं लाया जा सकता तो या तो वह सत्य ही नहीं अथवा सत्य का पालन न कर सकने वाला व्यवहार-कुशल व्यक्ति नहीं।

नलिनी यह तो मान सकता था कि वह व्यवहार-कुशल नहीं है, परन्तु वह यह मानने के लिये तैयार नहीं था कि उसका व्यवहार असत्य है।

: ५ :

नलिनी उस रात कैटालीना से कहने लगा, "मैं कल भुवाली जाना चाहता हूँ। कुछ समय तक वहाँ रहकर विचार करूँगा कि क्या करूँ। राजनीति में रहने का अभिप्राय है कि नेताओं की भाँति किसी बात को गलत समझता हुआ भी मैं उसको इसलिये करने लगूं, क्योंकि उस बात को अधिक संख्या में लोग गला फाड़-फाड़ कर कह रहे हैं। यदि मुझे यह नहीं करना तो मैं अब शेष जीवन में क्या करूँ? यह मैं एकान्त में बैठ विचार करूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"साथ ही मुझे इस लम्बे-चौड़े परिवार के भविष्य के विषय में भी निश्चय करना है। विजय का प्रश्न है। आनन्द अब भारत लौटना चाहता है। प्रज्ञा के दो पोते भी साथ हैं। उनके विषय में भी कुछ निश्चय करना है।"

कैटालीना भी सार्वजनिक मुआमलों में निराश थी। वह समझी थी कि छापाखाने और समाचार-पत्र को बेचकर वह श्रेष्ठ लोगों के हाथ में दे रही है। गांधी जी की देश में हवा बँधी देख वह समझी थी कि वे लोग नलिनी को ही सम्पादक रखेंगे और समाचार-पत्र एक व्यक्ति की सम्पत्ति होने के स्थान, एक पंजीकृत संस्था के अधीन ठीक रहेगा। परन्तु जब वह समाचार-पत्र प्रकाशित होने लगा तो उसमें दिये जाने वाले सम्पादकीय आँखों को चुभने लगे। अत: उसे समाचार-पत्र बेचने का शोक होने लगा था।

इस निराशा में वह नहीं जानती थी कि नलिनी को क्या सम्मति दे। इस सार्वजनिक बात के अतिरिक्त उसका जीवन अति सरस था। वह और कमल दोनों ईसाई थे। परन्तु वे अपने मन में विचार किया करते थे कि वे किस प्रकार ईसाई हैं? नलिनी और उसके परिवार के लोगों से सम्पर्क में रहकर वे अपने को अधिक दयनीय मानते थे। उनके विचार बाईबल और वेद के विषय में सर्वथा बदल चुके थे। वे कभी न तो गिरजाघर जाते थे, न ही कैथॉलिक होने पर भी कभी 'कन्फेशन' के लिये पादरी के पास जाने की आवश्यकता समझते थे।

नलिनी अगले दिन परिवार सहित बम्बई से दिल्ली के लिये चल पड़ा। दिल्ली से बरेली और बरेली से काठगोदाम होता हुआ वह भुवाली जा पहुँचा।

एक सप्ताह-भर आराम कर नलिनी परिवार को एकत्रित कर विचार-विनिमय करने लगा। लाहौर से पुस्तकालय लाने का विचार हो रहा था, जिससे नलिनी और विजय अपना लेखन-कार्य आरम्भ कर सकें। परन्तु वहाँ मार्शल-लॉ होने के कारण पुस्तकालय लाने का विचार स्थगित करना पड़ा।

भविष्य के कार्यक्रम के विषय में गोष्ठियाँ प्रात: के अल्पाहार के उपरान्त और मध्याह्न के भोजन से पूर्व होने लगीं। प्रथम ही गोष्ठी में विजय का प्रश्न उपस्थित हुआ। नलिनी का विचार था कि विजय कुछ काल के लिये विदेश-भ्रमण के लिये चला जाये और उन देशों की राजनीति का अध्ययन कर पुन: भारत में आकर काम करे।

विजय का विचार था कि यह धन का अपव्यय होगा। इस पर भी वह स्वयं अभी कोई करने योग्य कार्य हिन्दुस्तान में नहीं पाता था। इस कारण वह स्वयं अनिश्चित-मन था। हिन्दुस्तान में रह कर क्या करे, यह वह निश्चय नहीं कर सका।

दूसरा प्रश्न था विजय की दोनों पत्नियों का। यदि वह विदेश जाये तो उनको लेकर जाये अथवा अकेला ही जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा प्रश्न था प्रज्ञा और मीनाक्षी का। मीनाक्षी के दो बच्चे भी थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा की समस्या थी।

चौथा प्रश्न था आनन्द का। उसकी पत्नी हिन्दुस्तान में थी और वह अमेरिका में था। कई बार आनन्द अपनी पत्नी प्रभा को अमेरिका आने की बात लिख चुका था, परन्तु वह जा नहीं सकी थी। उसके जाने में दो बाधाएँ थीं। एक यह कि आनन्द वहाँ किसी प्रकार का स्थायी जीविकोपार्जन का उपाय बना नहीं सका था। वह वहाँ हिन्दुस्तानियों के संगठन में ही लगा हुआ था। सन् १९१४-१५ की ग़दर पार्टी के निर्माण में उसका प्रयास विशेष था। वह सानफ्रांसिस्को में दो कामों के लिये ठहरा था। एक तो भारत में आये विद्रोहियों को धन और जन की सहायता करना और दूसरा कार्य था लाला हरदयाल जी के प्रयास-कार्य में सहायता करना। ब्रिटिश सरकार ग़दर पार्टी की सन् १९१५ की हलचल से भयभीत हो गयी थी। भारत सरकार द्वारा ब्रिटिश सरकार को यह सूचना मिली थी कि लाला हरदयाल ही उस हलचल का जन्मदाता है और ऐसे व्यक्ति को जीवित रखने की स्वीकृति देना ब्रिटिश साम्राज्य के गले में उस्तरों का हार डाले रखना था।

इस समय तक तीन प्रयत्न लाला जी के जीवन को समाप्त करने के किये जा चुके थे। आनन्द इस विषय में भी लाला जी की सहायता कर रहा था।

इधर प्रभा का एक लड़का था और वह उसकी शिक्षा आदि के लिये भारत में ठहरी हुई थी।

जब पारिवारिक गोष्ठियाँ होने लगीं तो फिर नित्य-प्रति ही प्रातः का समय इन कामों में व्यतीत होने लगा।

जो कुछ एक दिन निश्चय होता था, वह अगले दिन रद्द हो जाता था। इसमें कारण यह था कि पिछले पाँच-छः वर्ष से पूर्ण परिवार राजनीति के प्रचार-कार्य में लगा रहा था और अब यह काम छूटा तो घर के सब बड़े लोग यह समझते थे कि वे अब अन्य कोई काम करने के योग्य नहीं हैं और प्रचार-कार्य गांधी की राजनीति के सामने चल सकना प्रायः असम्भव हो गया था।

इस प्रकार जून मास आ गया और तब तक लाहौर से और पंजाब के अन्य भागों से मार्शल-लॉ उठ गया। विजय लाहौर गया और वहाँ से पुस्तकालय की सभी पुस्तकें लकड़ी के बक्सों में बन्द करा कर भुवाली भेजने लगा।

इन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द, यह समाचार पा कि नलिनी भुवाली में आ गया है, कुछ दिन विश्राम करने आ गये। स्वामी जी ने मार्शल-लॉ के उपरान्त पंजाब का और विशेष रूप में अमृतसर का दौरा लगाया था। इन्होंने कई लेख मार्शल-लॉ अधिकारियों के क्रूरता-पूर्ण कार्यों पर लिखे थे।

एक दिन नलिनीकान्त को तार मिला। उसमें लिखा था, "मैं कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काठगोदाम पहुँच रहा हूँ। भुवाली के लिये सवारी का प्रबन्ध कर दो।''

उस दिन नलिनीकान्त स्वयं टट्टुओं को लेकर काठगोदाम स्टेशन पर जा पहुँचा।

नलिनी ने स्वामी जी के चरण छूकर प्रणाम किया तो स्वामी जी ने उठा कर उसे गले लगाया और पीठ पर हाथ रख कहा, ''मैं आपके 'बॉम्बे न्यूज़' में लेख पढ़ा करता था। जितनी स्पष्टता से आप भारतीय दृष्टिकोण जनता के सामने रखते रहे हैं, वैसी स्पष्टता तिलक अथवा ऐनिबिसेंट के लेखों में भी नहीं होती। परन्तु अब क्या चल रहा है?''

''गांधी जी की आँधी में सब घास-फूस उड़ गया है। मैं भी एक तिनके के समान बम्बई से उड़ कर भुवाली पहुँच गया हूँ।''

दोनों बातें करते हुए स्टेशन के बाहर आ गये। नलिनी अपने साथ दो फालतू टट्टू लाया था। एक स्वामी जी की सवारी के लिये था और दूसरा उनके सामान के लिये। स्वामी जी के पास सामान कुछ नहीं था। एक चादर थी, जो अपने नीचे बिछाये हुए थे।

दोनों टट्टुओं पर बैठ भुवाली के लिये चल पड़े। मार्ग-भर बातचीत होती रही? नलिनी ने 'बॉम्बे न्यूज़' बन्द हो जाने का पूर्ण वृत्तान्त बता दिया।

स्वामी जी का कहना था, ''राजनीति में अपना बलाबल देखकर व्यवहार का निश्चय करना चाहिये। इस समय गांधी के नाम की धूम है। इस कारण कोई ऐसा मार्ग ढूँढना चाहिये, जो गांधी के साथ रहकर अपना कार्य सिद्ध किया जा सके।''

नलिनी ने कह दिया, ''कार्यकर्त्ताओं के व्यवहार का यह पथ है, परन्तु विचारकों का नहीं। जिस दिन विचारकों ने अपने मन में समझौते करने आरम्भ किये, उसी दिन वास्तविक पतन आरम्भ हो जायेगा।

''स्वामी जी! ब्राह्मण-वर्ग विचार देने वाले हैं। उनसे सदा सत्य का ही प्रतिपादन होना चाहिये। व्यवहार में क्षत्रिय-वर्ग कभी विवश हो मार्ग बदल भी ले, तब भी विचारकों का मत स्पष्ट रहने से, वे पुनः मार्ग पर आ सकेंगे।

''आज ज़माने की सबसे बड़ी दुर्घटना यह है कि विचारक समझौते करने लगे हैं।''

''परन्तु विचारक कौन हैं?''

''लेखक, वक्ता और समाचार-पत्रों के सम्पादक।''

''इससे तो भारी गड़बड़ मच जायेगी। नेता को अपना मार्ग निश्चय करने का अवसर ही नहीं मिलेगा।''

''देखिये, मैं बताता हूँ कि प्रायः विद्वान् यह समझते हैं कि गांधी जी ने सत्याग्रह चला कर भूल की है, परन्तु अब नीति के विचार से वे गांधी जी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल को कम कर बता रहे हैं और सब दोष जनता पर मढ़ रहे हैं।

"महाराज! यह पाप हो रहा है। लेखक और समाचार-पत्रों वाले मिथ्या बात लिख रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनको या तो सत्य मार्ग बताना चाहिये था अथवा मौन रहना चाहिये था।

"भूल करने वाले की प्रशंसा करनी, वह भी इस कारण कि यदि गांधी जी के कार्य की आलोचना की गयी तो उनका मान कम होगा, इससे देश को हानि पहुंचेगी।

"विचारक को झूठ नहीं बोलना चाहिये। मैं एक बात मानता हूँ कि देश की जागृति गांधी जी के कारण नहीं हुई। इसमें कई कारण हैं। गांधी जी ने तो उस जाग्रत जनता की वकालत अपने हाथ में ले ली है।

"कुछ अन्य वकील भी थे जो देश की वकालत कर रहे थे। एक प्रकार के वकील थे तिलक, ऐनिबिसेंट, डाक्टर मुंजे इत्यादि। दूसरी प्रकार के वकील थे लाला हरदयाल और लाला लाजपतराय। मैं आपको भी इन दूसरी प्रकार के वकीलों में सम्मिलित करता हूँ। तीसरी प्रकार के वकील बन गये हैं मोहन-दास कर्मचन्द गांधी।

"तिलक जी अपनी वकालत की फीस कठोर तपस्या और बलिदान माँगते हैं। लाला हरदयाल इत्यादि की श्रेणी के वकील तो घर को फूंक कर प्रकाश करना चाहते हैं और गांधी जी ने सहज ही मुकद्दमा जीतने की आशा दिलवा सस्ता सौदा कर लिया है।

"अभी गांधी जी की वकालत सफल नहीं हुई। कदाचित् यह सफल होगी भी नहीं। यह स्वराज्य का दाम नहीं। यह गांधी जी को नेता मानने का दाम है।"

इसके बाद नलिनी ने गांधी जी से भेंट का वृत्तान्त बता दिया। स्वामी जी नलिनी की तर्क-शक्ति को स्वीकार करते थे। गांधी जी के इस कहने पर कि वे बढ़िया वकील नहीं हैं, नलिनी ने लाभ उठा कर गांधी जी को निरुत्तर कर दिया था। इस पर भी स्वामी जी गांधी के क्रोध में मुख लाल हो जाने को समझ नहीं सके।

नलिनी ने कहा, "मैं समझता हूँ कि उनका यह कहना कि उनके मालिश कराने का समय हो गया है, एक झूठ था। दिन के दस बजे का समय उन्होंने स्वयं निश्चय किया था। हम उनसे केवल पांच-सात मिनट ही वार्त्तालाप कर सके थे। उनका मुझे और जिन्ना को केवल पांच-दस मिनट वार्त्तालाप के लिये समय देना समझ में नहीं आता।"

"नलिनी बाबू! उन्होंने आपके वहाँ आने का प्रयोजन केवल दर्शन मात्र ही समझा हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, ऐसा भी हो सकता है। यद्यपि उनके इस प्रकार समझने में मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता।"

"देखो, नलिनी बाबू! मुझे कांग्रेस का आगामी अधिवेशन पंजाब में करने के लिये कहा जा रहा है। मेरा विचार है, अमृतसर में किया जाये। बताइये, आप मेरी सहायता करेंगे अथवा नहीं?"

"किस विषय में सहायता चाहते हैं?"

"मैं अमृतसर में एक प्रबल स्वागत-समिति बनाना चाहता हूँ और इसी में आप मेरी सहायता करिये। लगभग एक लाख रुपया व्यय होगा। यह एकत्रित करना है और फिर अधिवेशन का प्रबन्ध करना है।"

"मुझे इसमें केवल एक ही लाभ दिखायी देता है। वह यह कि नौकरशाही को बता दिया जाये कि उनके सब ज़ोरो-ज़ुल्म पर भी हम लोग भयभीत नहीं हैं। इस पर भी इससे हानि भी होगी। वह यह कि इसके फलस्वरूप गांधी जी देश के असंदिग्ध नेता बन जायेंगे। मैं समझता हूँ कि इससे लाभ की तुलना में हानि अधिक हो सकती है।"

"मैं समझता हूँ कि कांग्रेस का 'प्रेस्टिज'[1] बढ़ेगा, तब भी देश का कल्याण ही होगा। किन्हीं कारणों से कांग्रेस ने गांधी जी को नेता मान लिया है। समय पाकर हम गांधी जी का स्थानापन्न ढूँढ सकेंगे। तब कांग्रेस हमारे हाथ में होगी।"

नलिनी हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, "इसको 'विशफुल थिंकिंग'[2] ही कहा जा सकता है। इस पर भी स्वामी जी! यदि आप कहते हैं तो आपके अधीन इस दिशा में कार्य कर सकता हूँ। लोगों का अत्याचार के विपरीत साहस बाँध खड़ा हो सकना भी एक वांच्छनीय गुण है।"

"यह व्यवहार ठीक है।" स्वामी जी का कहना था।

"परन्तु मैं जानता हूँ कि आप कांग्रेस में रह नहीं सकेंगे। मेरा इस संस्था से सम्पर्क उस दिन से है, जिस दिन इसका विचार मात्र सर ह्यूम के मस्तिष्क में था। मैं उस दिन भी इसकी मीटिंग में उपस्थित था, जिस दिन इसकी बम्बई में नींव रखी गयी थी। तबसे मैं इसकी गतिविधियाँ जानता हूँ और मैं कहता हूँ कि हमारे विचारानुसार राष्ट्र की कल्पना करने वाले इसमें कार्य नहीं कर सकते। जो करते भी हैं, वे अपने आत्मा का हनन करके ही करते हैं।"

"इसे आप परमात्मा पर छोड़िये कि मैं, आप अथवा कोई अन्य इसमें रहता है अथवा नहीं रहता। जो आवश्यक बात है, वह यह कि हम भी देश की कुछ तो सेवा कर सके हैं। यह सन्तोष का विषय होगा।"

नलिनी चुप रहा। स्वामी जी भी गम्भीर विचार में मग्न हो गये। बहुत

---

१. मान-मर्यादा; २. इच्छा-जनित धारणा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर तक चलते हुए वे मौन रहे। आखिर नलिनी ने मौन भंग किया। उसने कहा, "यह सन् १९०७ की बात है। मैं तिलक जी से बम्बई में मिला था। मैंने उनसे यही बात कही थी जो आपसे कह रहा हूँ। मेरा कहना था कि इस संस्था के बीज में ही दोष है। उस दोष के कारण इसमें दोषों से युक्त लोग ही इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। वे आपको इस संस्था में कभी मान पाने नहीं देंगे।

"तिलक जी का तब विचार था कि सन् १९०६ में कलकत्ता में हो रहे कांग्रेस के अधिवेशन के सभापतित्व के लिये उनका नाम प्रस्तावित हुआ था; वे निर्वाचित होने ही वाले थे कि विपक्षियों ने दादा भाई नारोजी को लाकर बीच में खड़ा कर दिया। इस कारण उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया। साथ ही वे समझते थे कि अब वे अवश्य सभापति बन सकेंगे। एक बार वे सभापति बन गये तो फिर पुराने सरकार-भक्तों के लिये कांग्रेस में स्थान नहीं रहेगा।

"मैंने यह भविष्यवाणी की थी कि कांग्रेस-रूपी रेल के इंजन में सवार तिलक जी को धक्के देकर नीचे गिरा दिया जायेगा और रेल अर्थात् कांग्रेस उसी पथ पर चलती जायेगी, जिस पर पहले से चल रही है।

सन् १९०७ में सूरत में यही हुआ था। मैं अब इस वर्ष अप्रैल मास में पुनः तिलक जी से मिला हूँ। मैंने अब भी उनको वही बात कही है कि इस संस्था की गाड़ी में सवार हो, वे अपने लक्ष्य-स्थान पर नहीं पहुँच सकेंगे। अब भी उनका वही उत्तर है कि सन् १९१८ में हुए कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में वे प्रधान चुन लिये गये थे, परन्तु वह इंगलैण्ड से, अधिवेशन के समय लौट नहीं सके। इस कारण उनके स्थान, पण्डित मदनमोहन मालवीय को प्रधान बना दिया गया था। इससे तिलक जी यह सिद्ध करना चाहते थे कि अब उनके साथियों का प्रभाव कांग्रेस पर इतना हो गया है कि वे कांग्रेस की गाड़ी को अपने मार्ग पर ले चलेंगे। मुझे विश्वास है कि यह नहीं हो सकेगा। किसी महत्वपूर्ण निर्णायक समय पर सरकार-भक्त ऐसी 'लंगड़ी' मारेंगे कि तिलक जी चारों खाने चित्त दिखायी देंगे।"

"परन्तु नलिनी जी!" स्वामी जी ने कहा, "अब तो सरकार-भक्त भी स्वराज्य माँग रहे हैं। इससे मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तिलक जी का प्रभाव कांग्रेस में व्यापक हो गया है। अब कांग्रेस स्वराज्यवादी हो गयी है।"

नलिनी ने स्वामी जी को समझाने का यत्न किया। उसने कहा, "यह ऐसा नहीं जैसा कि आप समझ रहे हैं। कांग्रेस आज भी अंग्रेजी सरकार की भक्त है। बदली तो सरकार है।

"क्रान्तिकारियों के दबाव के कारण ब्रिटिश सरकार ने अपनी बोली बदल ली है। साथ ही आज ब्रिटिश पार्लियामैण्ट में उदार-पंथियों का जोर बढ़ रहा है। उनका राज्य-सम्बन्धी दृष्टिकोण अनुदार दल वालों से भिन्न है। वे समझते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि औपनिवेशिक स्वराज्य देने से इंगलैण्ड की शक्ति और व्यापार वृद्धि पायेगा। इस कारण वे हिन्दुस्तान को औपनिवेशिक स्वराज्य देकर सदा के लिये अपने कारखानों की मण्डी बनाये रखना चाहते हैं।

"इसका परिणाम यह हो रहा है कि इंगलैण्ड में अनुदार दल वाले भी हिन्दुस्तान को एक सीमा तक स्वतन्त्र करने के लिये तैयार हो रहे हैं। उसके अनुरूप ही कांग्रेस वही कुछ माँगने लगी है, जो इंगलैण्ड देने के लिये तैयार हो रहा है।"

"और आप क्या चाहते हैं?" स्वामी जी ने नलिनीकान्त की युक्ति को न समझते हुए पूछ लिया।

"मैं राज्य के विषय में इतना चिंतित नहीं हूँ। स्वराज्य प्राप्त होने पर भी विदेशों से हमारे सम्बन्ध बनेंगे और यदि मैत्री के सम्बन्ध इंगलैण्ड से बनेंगे तो कुछ अच्छा ही होगा। मैं जिस बात से डर रहा हूँ, वह यह है कि कांग्रेस का स्वराज्य माँगना इंगलैण्ड की नीति के अनुसार ही हो रहा है। ब्रिटिश सरकार की नीति है कि इस देश में मुसलमान एक पृथक् जाति के रूप में स्वीकार हों। कांग्रेस ने भी ऐसा स्वीकार कर वास्तव में ब्रिटिश सरकार को प्रसन्न करने का यत्न किया है।"

"मुसलमानों को क्यों नहीं? अधिकार मुसलमानों को मिल रहे हैं। अतः उनको ही प्रसन्न करने के लिये इसे मानना चाहिये।"

"देखिये, महाराज! मुसलमान प्रसन्न होंगे अथवा नहीं, यह एक विवादास्पद विषय है। मैं कहता हूँ कि इतने मात्र से मुसलमान प्रसन्न नहीं होंगे। कांग्रेस ने इसे ब्रिटिश नीति का एक अंग मान कर स्वीकार किया है।

"यह भी सम्भव हो सकता है कि कभी विश्व की अन्य शक्तियों से प्रभावित हो अंग्रेज़ हिन्दुस्तान छोड़ने पर विवश हो जायें तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज्य की माँग करने लगेगी। वह माँग भी, वास्तव में इंगलैण्ड की पार्लियामैण्ट की नीति के अनुरूप ही होगी।

"महाराज! यह ब्रिटिश सरकार की संस्था है और ये लोग वही चाहेंगे जो ब्रिटिश पार्लियामैण्ट यहाँ करना चाहेगी।

"स्वराज्य प्राप्त होने पर भी यदि राज्य इस संस्था के हाथ में रहा तो ये अंग्रेज़ के इतने हितैषी रहेंगे कि अधिक-से-अधिक अंग्रेज़ की बातों को हिन्दुस्तान में बनाये रखेंगे।"

"कुछ भी हो। पंजाब में हो रहे कांग्रेस-अधिवेशन को सफल बनाना चाहिये। यह हमारे देश-भक्ति और जाति-प्रेम की परीक्षा का प्रश्न है। क्या हिन्दुस्तानी गाय, भैंस की भाँति हाँके जायेंगे अथवा क्या इनमें यह स्वभाव अभी है कि ये देश के लिये भारी-से-भारी त्याग और तपस्या कर सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी ने कह दिया, "हाँ; इस दृष्टि से मैं अपना पूर्ण सहयोग इस काम में दूंगा।"

"तब ठीक है। शेष हम पीछे देख लेंगे।"

: ६ :

नलिनी के परिवार की समस्या अस्थायी रूप में सुलझ गयी।

प्रज्ञा, सरस्वती, मीनाक्षी और सुवर्णा भुवाली में ही रहीं। छोटे बच्चे भी उनकी देख-रेख में रहे। सुवर्णा, सरस्वती और मीनाक्षी उन बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करने लगीं। नलिनी और विजय अमृतसर में कांग्रेस-अधिवेशन के स्वागत-समिति के कार्यालय में जा बैठे।

स्वामी श्रद्धानन्द की वाणी में जादू था। भयभीत और हीन भावना से दबे हुए लोग सिर ऊँचा कर चलने लगे थे। सबसे अधिक नृशंस व्यवहार अमृतसर में हुआ था और अमृतसर ही पंजाब का अग्रणी बन गया था।

जनता ने रौलेट ऐक्ट-आन्दोलन में जो कुछ भी किया था, उसका परिणाम भी हुआ था। रौलेट ऐक्ट लागू नहीं हो सका। इसे वापस ले लिया गया। 'चैल्म्स फोर्ड मान्टेग्यू सुधार' ब्रिटिश पार्लियामैण्ट द्वारा कांग्रेस-अधिवेशन के कुछ ही पूर्व पारित किये गये और इंगलैण्ड के राजा ने उनकी घोषणा करते हुए हिन्दुस्तानियों से यह माँग की कि वे इन सुधारों को प्रयोग करें और आश्वासन दिया कि सरकार के अधिकारी भी इन सुधारों से लोगों का हित करने का यत्न करेंगे।

'हिज़ मैजेस्टी दि किंग' के इस कथन को तिलक जी ने भी पढ़ा तो उनके मस्तिष्क में एक विचार स्फुरित हुआ। वह यह कि 'किंग' के इस कथन के आधार पर ही, इन सुधारों को स्वीकार कर, कांग्रेस की ओर से 'प्रतिक्रियाशील' सहयोग का आश्वासन दे दिया जाये।

तिलक जी ने पूना से अमृतसर आते हुए समाचार-पत्रों में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी। वे चाहते थे कि 'रिस्पौंसिव को-ऑपरेशन'[1] के आश्वासन का प्रस्ताव पास किया जाये।

'किंग' की इस घोषणा के साथ ही हिन्दुस्तानी सरकार ने राजनीतिक लोगों के विरुद्ध सरकारी कार्रवाई रद्द कर दी। परिणामस्वरूप मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना शौकत अली भी छिन्दवाड़ा जेल से छूट कर अमृतसर आ पहुँचे।

नलिनी और विजय मेहमानों के ठहरने का और उनकी सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर रहे थे। इस कार्य में नलिनी को मुख्य-मुख्य नेताओं से मिलने का

---

१. प्रतिक्रियात्मक सहयोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर प्राप्त हो गया।

बहुत रोचक भेंट गांधी जी के साथ हुई। महात्मा जी के अमृतसर में निवास का प्रबन्ध अन्य कई नेताओं के साथ ही किया गया था। महात्मा जी के ठहरने और उनके खान-पान का प्रबन्ध करने के लिये नलिनी स्वयं देखने आया तो स्वामी श्रद्धानन्द जी साँथ थे। महात्मा जी नलिनीकान्त को देख मुस्कराये और पूछने लगे, "तो आप यहाँ हैं ?"

"जी।" नलिनी ने हाथ जोड़, नमस्कार करते हुए कहा, "यह सब स्वामी जी की कृपा का फल है।"

"क्या फल है ?"

"देश के नेताओं की सेवा का अवसर मिल रहा है।"

"परन्तु तुम तो मेरे विरोधी हो।"

"विचार में विरोधी हूँ। इस पर भी आपके सद्गुणों का प्रशंसक भी हूँ।"

"क्या सद्गुण देखा है मुझमें जिसकी तुम प्रशंसा करते हो ?"

"आपकी हठधर्मी।"

स्वामी श्रद्धानन्द नलिनीकान्त के सतर्क उत्तर देने की प्रवृत्ति को जानते थे। वे कुछ इसी प्रकार के उत्तर की आशा करते थे।

गांधी जी हठ-धर्मी को प्रशंसा के योग्य गुण नहीं मान सके। इससे वे नलिनीकान्त का मुख देखने लगे।

"महाराज !" नलिनी ने अपना आशय समझाते हुए कहा, "आपने अफ्रीका में सार्वजनिक रूप में अहिंसात्मक विरोध की बात सन् १९०७ में आरम्भ की थी। आपको अफ्रीका में आंशिक सफलता मिली सन् १९१३ में। इसमें कारण आपकी आत्म-शक्ति से गौर-वर्णीय लोगों का आत्म-परिवर्तन नहीं था, वरन् युरोप में होने वाले युद्ध की सम्भावना थी। इससे सरकार को समझौता करना पड़ा था।

"तदनन्तर आपको आंशिक सफलता ही मिली थी, चम्पारन में और अहमदाबाद के मजदूरों की हड़ताल में। वास्तव में ये सफलताएँ भी ऐसी नहीं थीं, जिनसे विपक्षियों की आत्मा बदली हो। तब भी युद्ध के दिन थे और युद्ध भी एक संकटावस्था में पहुँचा हुआ था।

"उसके उपरान्त आपका प्रथम महान् सत्याग्रह बुरी तरह से असफल रहा है। इस पर भी आपके अपनी पत्रिका 'यंग इण्डिया' में अहिंसात्मक सत्याग्रह की प्रशंसा में लेख निकलते हैं और आपकी योजना की असफलता का दोष लोगों पर थोपा जा रहा है।"

"तो इसमें बुराई कहाँ है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अच्छाई और बुराई की बात नहीं कर रहा। इस पर भी इतना कहता हूँ कि 'ए बैड वर्कमैन क्वर्ल्स विद हिस टूल्स'[1] की बात है।"

गांधी जी हँस पड़े। हँसते हुए स्वामी जी को कहने लगे, "मिस्टर सरकार एक अच्छा 'पार्लिमैन्टेरियन' है।"

स्वामी श्रद्धानन्द इस वार्त्तालाप में रस प्राप्त कर रहे थे। महात्मा जी के कथन पर वे भी हँसने लगे।

तिलक जी से भी अपने कर्त्तव्य-पालन के सन्दर्भ में नलिनी की भेंट हुई। तिलक जी से, नलिनी का वार्त्तालाप गांधी जी की अपेक्षा लम्बा हुआ था। तिलक जी ने नलिनी को देखा तो पूछ लिया, "आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

"मैं यहाँ स्वयंसेवक के रूप में आप लोगों की सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर रहा हूँ।"

"देखा है न, कांग्रेस का प्रभाव? इस नगर में सबसे अधिक अत्याचार किया गया था और यहाँ के मृत-हृदयों में भी कांग्रेस के नाम ने जीवन फूंक दिया है।"

"हाँ, भगवन्! यह तो देख रहा हूँ। परन्तु इस जीवन फूंकने में किसका हाथ है, इस पर मतभेद है। यह श्रेय कांग्रेस को प्राप्त नहीं है।"

"तो किसको प्राप्त है?"

"पंजाब में आर्य-समाज का बहुत प्रभाव है। यह मिस्टर चिरोल ने अपनी पुस्तक 'इण्डियन अनरैस्ट' में भी लिखा है। उसी आर्य-समाज के एक महान् नेता ने यहाँ के लोगों में पुनः जान फूंकी है।"

"तुम्हारा अभिप्राय है स्वामी श्रद्धानन्द जी ने?"

"जी; और वे कांग्रेस की नीतियों को स्वीकार नहीं करते।"

"हो सकता है! परन्तु यह काम कांग्रेस का है कि यहाँ अधिवेशन किया है और लोग बहुत बड़ी संख्या में यहाँ एकत्रित हुए हैं।"

"यहाँ के लोग एक आर्य-समाजी के नेतृत्व में देश-भक्ति से परिपूर्ण होने के कारण आप लोगों का स्वागत कर रहे हैं। यह एक सौभाग्य की बात है। परन्तु महाराज, आप इन लोगों को मिथ्या दिशा देने वाले हैं, यह भी निश्चय है।"

"कैसे कहते हो? मेरा वक्तव्य पढ़ा है?"

"जी, पढ़ा है। परन्तु मैं जानता हूँ कि वह स्वीकार नहीं होने वाला। मैं आपकी सेवा में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि कांग्रेस में तीन विचार के लोग हैं। एक हैं सरकार की मार्शल-लॉ के विषय में निन्दा करने वाले और सरकारी सुधारों को अस्वीकार करने वाले; दूसरे हैं आपके पक्ष के लोग, जो प्रतिक्रियात्मक

१. एक निकम्मा कारीगर अपने हथियारों से ही झगड़ता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग का प्रस्ताव करना चाहते हैं। आप चाहते हैं कि यहाँ पर हुए अत्याचारों के लिये सरकार की घोर भर्त्सना की जाये। एक तीसरा पक्ष भी है। वह है गांधी जी का। गांधी जी हैं गोखले जी के शिष्य। वे सरकार की निन्दा को कम-से-कम तीखे शब्दों में करना चाहते हैं। साथ ही अपनी राज्य-भक्ति प्रकट करते हुए, हाथ जोड़, सुधारों को स्वीकार करेंगे।"

"आप क्या चाहते हैं ?"

"मैं तो नेता हूँ नहीं। इस कारण मेरे चाहने-न-चाहने का प्रश्न ही नहीं है। इस पर भी नेताओं से मिल कर मैं एक बात समझ रहा हूँ।"

"क्या ?"

"वास्तव में यहाँ पक्ष दो हैं। ये दो पक्ष इस देश में वही हैं, जो कांग्रेस के जन्म के समय भी थे और वे तब तक रहेंगे, जब तक कांग्रेस का नाम रहेगा। एक पक्ष है अराष्ट्रवादियों का, और दूसरा पक्ष है राष्ट्रवादियों का। आपको मैं राष्ट्रवादी समझता हूँ, जो अराष्ट्रवादियों के पंजे में फँस गये हैं। अराष्ट्रवादियों का नेतृत्व करेंगे गांधी जी और राष्ट्रवादियों के नेता हैं आप और आपकी यहाँ सुनवायी नहीं होगी।"

"मैं समझता हूँ कि मेरा मार्ग बीच का है और दोनों किनारे वाले पक्ष मेरी बात मानेंगे।" तिलक जी ने मुस्कराकर कहा।

"ईश्वर करे, ऐसा ही हो। परन्तु आशा बहुत कम है। इसमें युक्ति यह है कि आप लोग अपने विपक्षी की वाह-वाह करते हैं और आशा करते हैं कि नीति आपकी स्वीकार हो जाये। ऐसा होगा नहीं। आप जैसों ने गांधी जी की ख्याति इतनी अधिक कर रखी है कि वे किसी भी नेता की अवहेलना करने की सामर्थ्य पा गये हैं। महात्मा जी की जनता में ख्याति के कारण उनका विरोध करना अपने नेतृत्व की बाज़ी लगा देना है। ऐनिबिसेंट ने यह किया है और गांधी जी तथा उनके साथी उसे कांग्रेस से बाहर करने वाले हैं।"

तिलक जी समझ रहे थे कि यह भविष्य-वाणी गलत सिद्ध होगी। उन्होंने कह दिया, "कल विषय-निर्धारिणी की बैठक है। मैं आशा करता हूँ कि आपकी भविष्य-वाणी सत्य सिद्ध नहीं होगी।"

अगले दिन विषय-निर्धारिणी की बैठक हुई और उसमें मार्शल-लॉ सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित हुए। इस प्रस्ताव में एक ही स्वर से भीड़ द्वारा की गयी हिंसा और मार्शल-लॉ अधिकारियों द्वारा किये गये अत्याचार की निन्दा की गयी।

प्रस्ताव गांधी जी द्वारा लिखा गया था और इस प्रस्ताव में जनता द्वारा की गयी हिंसा, तथा सरकार द्वारा सम्पन्न जलियाँवाला बाग-हत्याकाण्ड, दोनों को बराबर मानने पर सदस्यों में उत्तेजना भर गयी। पंजाब के एक सदस्य ने

—२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यहाँ तक कह दिया कि इस प्रस्ताव का लिखने वाला कोई हिन्दुस्तानी माँ के पेट से पैदा मालूम नहीं होता।

प्रस्ताव का वह भाग अस्वीकार हो गया, जिसमें जनता की निन्दा की गयी थी। केवल वह भाग स्वीकार किया गया, जिसमें मार्शल-लॉ अधिकारियों की निन्दा की गयी थी।

नलिनी विषय-निर्धारिणी सभा के सदस्यों की मीटिंग में उपस्थित उनके जलपान का प्रबन्ध कर रहा था। जब वह तिलक जी के सामने पहुँचा तो तिलक ने व्यंग में कहा, "नलिनीकान्त जी! देखा है, क्या हो गया है?"

तिलक जी भी प्रस्ताव के उस भाग के विरुद्ध बोले थे, जिसको अस्वीकार कर दिया गया था और इस समय वे बहुत प्रसन्न थे।

नलिनी ने कहा, "जी, देख रहा हूँ। परन्तु कुछ भूल हो गयी है।"

"किससे?"

"सदस्यों से।"

"मीटिंग के उपरान्त डेरे पर आइयेगा।"

"यत्न करूँगा। मैं यहाँ किसी के अधीन कार्य कर रहा हूँ।"

"किसके?"

"स्वामी श्रद्धानन्द जी के।"

"उनसे कह देना कि मैं आप से मिलना चाहता हूँ।"

"कह दूंगा।"

उस दिन कई सामान्य प्रस्ताव भी पारित किये गये। सायंकाल तिलक जी का सार्वजनिक सभा में भाषण था। सभा जलियाँवाला बाग में होने वाली थी। वह घोर वर्षा के कारण नहीं हो सकी।

नलिनी तिलक जी के डेरे पर जा पहुँचा। उसने नमस्कार की तो तिलक जी ने पूछ लिया, "अब बताओ! क्या भूल हुई है और किससे हुई है?"

"भूल सामान्य सदस्यों से हुई है और वह यह कि उनको ज्ञात नहीं था कि प्रस्ताव किसने लिखा है।"

"यह प्रस्ताव ऐनिबिसेंट का लिखा हुआ है। यह स्त्री लॉर्ड मौण्टेग्यू के सम्मोहन में आ गयी है और वह अंग्रेज़ों की प्रशंसा तथा उनकी कम-से-कम निन्दा करना चाहती है। इसी कारण उसने यह प्रस्ताव लिखा है।"

"मैं समझता हूँ कि आपका ज्ञान ठीक नहीं है। यह प्रस्ताव श्रीमती ऐनिबिसेंट का लिखा नहीं है। यह गांधी जी का लिखा हुआ था। जिस समय लोगों को पता चला कि प्रस्ताव गांधी जी ने लिखा था तो इसके अस्वीकार करने का सबको शोक लगने लगेगा।"

"कैसे कहते हो यह? मैं गांधी जी को इतनी अयुक्ति-संगत बात लिखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला नहीं मान सकता। देखिये न, पूरे पंजाब में उत्तेजित भीड़ द्वारा केवल तीन अंग्रेज़ मारे गये और दूसरी ओर जलियाँवाला बाग में हज़ारों निर्दोष शान्तिपूर्वक बैठे लोगों की हत्या कर दी गयी।

"एक ओर भीड़ ने उत्तेजना में ये दो-तीन हत्याएँ कीं और दूसरी ओर नियन्त्रित शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित सैनिकों ने हत्या-काण्ड किया। दोनों में भला क्या तुलना हो सकती है?"

"तो आप ऐनिबिसेंट को सर्वथा युक्ति-विहीन नेता मानते हैं?"

"उसने लन्दन में जो व्यवहार अपनाया था, वह लज्जास्पद था।"

"वहाँ की बात मैं जानता नहीं। परन्तु मैं एक बात मानता हूँ कि ब्रिटिश पार्लियामैण्ट ने हिन्दुस्तान को स्वराज्य देने के लिये प्रथम पग उठाया है। ऐनिबिसेंट ने उस समय मौण्टेग्यू साहब की प्रशंसा अथवा समर्थन किया होगा तो सम्भवतः एक नीति से ही ऐसा किया होगा। वैसे मैं जानता हूँ कि वह किसी भी हिन्दुस्तानी से कम स्वराज्य की इच्छुक नहीं है।"

"बस यही तो आपका हठ है कि आप किसी जानकार की बात भी नहीं मानते।"

"महाराज! मैं क्षमा चाहता हूँ। परन्तु मैं अभी-अभी श्री सी० आर० दास के कैम्प से आ रहा हूँ और वहाँ भी इसी प्रस्ताव के विषय में बात हो रही थी। सब कह रहे थे कि उस पंजाबी नेता ने भारी भूल की है, जिसने यह कहा था कि प्रस्ताव लिखने वाला किसी हिन्दुस्तानी माँ के पेट से पैदा नहीं हुआ होगा। यह चर्चा वहाँ थी कि प्रस्ताव लिखने वाले गांधी जी थे।"

"परन्तु उन्होंने उस समय इस बात का खण्डन क्यों नहीं किया?"

"यह मैं बता नहीं सकता।"

"खैर, अब तो पास हो गया। गांधी जी का हो अथवा ऐनिबिसेंट का हो। हम यह नहीं मान सकते कि मार्शल-लॉ अधिकारियों की एक भीड़ से तुलना की जाये।"

नलिनी चुप रहा। वह पार्लियामैण्ट से पारित सुधारों और ब्रिटिश सम्राट् के वक्तव्य के विषय पर अगले दिन आने वाले प्रस्ताव पर विचार कर रहा था। वह प्रस्ताव सी० आर० दास ने लिखा था और इसमें उसने सुधारों को असंतोष-जनक कह कर अस्वीकार करने के लिये कहा था।

नलिनी ने पूछ लिया, "महाराज! आपके पास कल आने वाले मुख्य प्रस्ताव की प्रतिलिपि आयी है?"

"हाँ; परन्तु वह गुप्त है। इस कारण इस पर चर्चा नहीं करूँगा।"

"परन्तु उस प्रस्ताव में लिखी बात का मुझे ज्ञान है।"

"तो आपको भी उस पर वार्त्तालाप नहीं करना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपसे भी नहीं ?"

"मैंने उस पर एक संशोधन भेजा है।"

"वह भी मुझे ज्ञात है। परन्तु वह स्वीकार नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि गांधी जी आपके प्रस्ताव का घोर विरोध करने वाले हैं। वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि ब्रिटिश सरकार और हिन्दुस्तानी प्रजा को एक ही स्तर पर समझा जाये।"

"परन्तु ऐसा तो सम्राट् ने अपने ऐलान में कहा है।"

"वह सम्राट् है और आप तिलक हैं, जो चिरोल से पराजित होकर आ रहे हैं।"

तिलक जी हँस पड़े। फिर कुछ विचार कर कहने लगे, "आपके कहने के ढंग पर हमें रस प्राप्त होता है, यद्यपि हम उससे सहमत नहीं होते। इस कारण कल सायंकाल समय निकाल कर आइयेगा। कल खुला अधिवेशन होगा। प्रधान का भाषण पढ़ा जायेगा और हम वहाँ से अवकाश पाकर यहाँ आ जायेंगे।"

: ७ :

स्वागत-कारिणी के कार्यालय में स्वामी जी अपने मुख्य कार्यकर्त्ताओं को, वर्षा से हुई अव्यवस्था में प्रबन्ध करने के लिये प्रेरणा दे रहे थे।

अमृतसर के प्रतिष्ठित परिवारों से कम्बल और रजाईयाँ एकत्रित की गयी थीं और दक्षिण से आये प्रतिनिधियों में बाँटी जा रही थीं। वे बेचारे उत्तरी भारत की दिसम्बर मास की सर्दी से अपरिचित, अपने साथ पर्याप्त वस्त्र नहीं लाये थे। पाँच सौ के लगभग रजाईयाँ, कम्बल तथा गद्दे एकत्रित किये गए थे और प्रतिनिधियों में वितरित किये गए थे।

स्वामी जी के मुख से सरस्वती बोलती थी। वे जो कुछ भी लोगों से माँगते थे, लोग देते थे। स्वामी जी का इकत्तीस मार्च के दिन, दिल्ली में घण्टा-घर के समीप गोरखा सिपाहियों की तनी संगीनों के सामने सीना तान कर खड़े हो जाना देश-भर में विख्यात हो चुका था और उनके किंचित्-मात्र संकेत पर महान्-से-महान् त्याग करने के लिये लोग एक-दूसरे से स्पर्धा कर रहे थे।

नलिनी तिलक जी के कैम्प से स्वागत कार्यालय में पहुँचा तो स्वयंसेवक रजाईयाँ इत्यादि उठा कर दक्षिण से आये प्रतिनिधियों के कैम्प में ले जा रहे थे।

नलिनी को देख, स्वामी जी ने पूछ लिया, "पण्डित नलिनीकान्त ! किधर गये थे ?"

"तिलक जी के कैम्प में था।"

"अच्छा, इधर आइये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी स्वामी जी के साथ एक कमरे में चला गया। वहाँ नलिनी को अपने सामने बैठा कर स्वामी जी बोले, "मैं अभी-अभी गांधी जी के कैम्प से आ रहा हूँ। वहाँ दोनों अली भाई बैठे महात्मा जी से बातचीत कर रहे थे।"

"चर्चा का विषय क्या था ?" नलिनी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"हिन्दू-मुसलमान-ऐक्य।"

"वह तो हो चुका है। लखनऊ में सन् १९१६ में यह हुआ था और तबसे हिन्दू लोग उस समझौते का पालन कर रहे हैं।"

"वह तो है। परन्तु अली भाई एक अन्य समस्या लेकर गांधी के पास आये हैं। उनका कहना है कि वास्तविक ऐक्य दोनों समुदायों में रोटी-बेटी का सम्बन्ध हुए बिना नहीं हो सकता।"

"स्वामी जी ! यह तो मैं भी मानता हूँ। मैं इस पर अमल भी कर रहा हूँ। भुवाली में मैंने आपसे सरस्वती नाम की एक लड़की का परिचय कराया था। वह एक खानबहादुर की लड़की है।"

"परन्तु नलिनी जी ! सब हिन्दू आप जैसे तो हैं नहीं। देखा नहीं था, 'सबजैक्ट कमेटी' की बैठक में तिलक जी ने चाय लेने से इन्कार कर दिया था।"

"जी, मैं जानता हूँ। एक बार तिलक जी 'बॉम्बे न्यूज़' के कार्यालय में पधारे थे। वहाँ उसी सरस्वती ने तिलक जी और उनके साथियों के लिये जलपान का प्रबन्ध किया था। ज्यों ही तिलक जी को पता चला कि वह एक मुसलमान माता-पिता की सन्तान है, उन्होंने चाय लेने से इन्कार कर दिया था।

"मैं यह समझता हूँ कि जब तक हिन्दू इस छुआछूत की बीमारी से मुक्त नहीं हो जाते, तब तक मुसलमानों से रोटी-बेटी का सम्बन्ध नहीं होना चाहिये।"

"स्वामी जी ! ऐसा ज़माना आ रहा है कि जब हिन्दू आपसे पूछे बिना रोटी-बेटी का सम्बन्ध करने लगेंगे। यदि हम लोगों ने उस आने वाले काल से पूर्व हिन्दू समाज को सचेत और सतर्क नहीं किया तो एक ही झटके में हिन्दू नामधारी मुसलमान हो जायेंगे।"

"क्या सतर्कता चाहते हैं आप ? मैं तो जब से अली भाईयों के विचार सुनकर आया हूँ तब से पुनः शुद्धि का काम आरम्भ करने का विचार कर रहा हूँ।"

"बात ठीक है, परन्तु शुद्धि उस आने वाली 'फ्री-सोसायटी' का इलाज नहीं है। उसका इलाज तो यह है कि एक व्यापक प्रचार हो, जिसमें सामान्य जनता को समझाया जाये कि हिन्दूपन और आर्यपन खान-पान और छुआछूत में नहीं है।

"मैं एक घटना बताता हूँ। बात कलकत्ता की है। मैं एक होटल में खाना खा रहा था। भोजन वितरण करने वाला बैरा मुसलमान था। होटल का मालिक ईसाई था और वहाँ का क्लर्क एक भंगी की सन्तान ईसाई था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कलकत्ता के एक मुसलमान रईस वहाँ भोजन कर रहे थे और वह मेरे संरक्षक राजा साहब से परिचित थे। राजा साहब कट्टर सनातन-धर्मी वैष्णव हैं।

"वह मियाँ मेरे पास उस समय आये, जब मैं भोजन कर रहा था। आते ही वे कहने लगे, 'पण्डित जी! यह क्या कर रहे हैं?'

"मैंने कहा, 'मैं भोजन कर रहा हूँ।' इस पर वे बोले, 'आपको पता है यह बैरा मुसलमान है?'

"मेरे मुख से अकस्मात् निकल गया, 'पर मैं तो खाना ही खा रहा हूँ, मुसलमान को नहीं खा रहा।'

"वह मुसलमान मेरे उत्तर का अर्थ समझने के लिये विचार करने लगा और फिर बोला, 'यह बात राजा साहब से कह दूंगा।'

" 'राजा साहब मेरी इस बात को जानते हैं।'

"स्वामी जी! मैं चाहता हूँ कि पूर्ण हिन्दू-समाज ऐसा हो जाये। तब शुद्धि इत्यादि की आवश्यकता नहीं रहेगी। हिन्दू-धर्म के तत्त्व को समझने वाले होने चाहियें।

"क्षमा करें, आर्य-समाज भी इस बात को पैदा नहीं कर सका। आपने एक पढ़े-लिखे मुसलमान को शुद्ध किया था। नाम भी उसका धर्मपाल रख दिया, परन्तु किसी आर्य-समाज की लड़की ऐसी नहीं समझी गयी जो उसकी पत्नी बन हिन्दू बच्चे उत्पन्न कर सकती। वह पुनः मुसलमान हो गया। बताइये, क्या लाभ हुआ शुद्धि का?"

"परन्तु तुम मांस खाते हो क्या?"

नलिनी इस प्रश्न का अर्थ नहीं समझ सका। वह स्वामी जी का मुख देखता रह गया। स्वामी जी ने अपने प्रश्न का कारण बता दिया। उन्होंने कहा, "तुम कहते हो न कि एक ईसाई के होटल में खाना खा रहे थे?"

"जी। मेरी पत्नी एक अंग्रेज़ की लड़की है। उसके कुछ सम्बन्धी विलायत से आये हुए थे। वे उसी होटल में ठहरे हुए थे। मैं वहाँ मिलने गया तो उन्होंने भोजन का निमन्त्रण दे दिया। मैं मान गया। हम चार व्यक्ति थे। मेरी स्त्री सुवर्णा थी। उसका 'कज़न ब्रदर' और उसकी पत्नी थीं। जब हम भोजन कर रहे थे तो वह मियाँ कहीं से टपक पड़ा। मेरा उत्तर सुनकर ऐसा निरुत्तर हुआ कि मेरी पत्नी खिलखिलाकर हँस पड़ी।"

"पर मैं तो पूछ रहा हूँ कि मांस खाते हो क्या?"

"मांस तो नहीं खाता, परन्तु कभी ऐसा अवसर आ जाये कि मांस वाला साग सामने हो तो मांस छोड़कर उसमें पड़ी सब्ज़ी खा लेता हूँ।"

"बहुत दुष्ट हो तुम!" स्वामी जी ने मुस्कराते हुए कहा, "हमें तुम्हारे घर पर खाने का पश्चात्ताप लगने लगा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु वहाँ तो शुद्ध निरामिश भोजन बनता है। यह आपको भी विदित है।"

"परन्तु तुम्हारे मुख को मांस लगा तो है?"

"परन्तु महाराज! उसको तो वर्षों व्यतीत हो चुके हैं। यह मांस खाने न खाने की बात नहीं। यह तो खान-पान को आचरण से गौण मानने की बात है। मैं हिन्दू अथवा आर्य तो इस कारण हूँ कि मैं सत्य बोलता हूँ और धर्म के नियम पालन करता हूँ।"

"तो सात्त्विक भोजन करना धर्म नहीं है क्या?"

"मैं तामसी भोजन करने को पाप मानता हूँ। मांस न तो सात्त्विक है, न राजसी और न ही तामसी। जैसे मसाले इसमें डाले जाते हैं, यह वैसा ही बन जाता है।"

"परन्तु इसके खाने में हिंसा तो होती है।"

"मैं हिंसा-अहिंसा के पचड़े में नहीं पड़ता। इस विषय में मेरे विचार भिन्न हैं।"

स्वामी जी को समझ आ गया कि वे चर्चा के विषय से भटक गये हैं। इस कारण उन्होंने पुन: अली भाईयों की बात बतानी आरम्भ कर दी। स्वामी जी ने कहा, "वे दोनों भाई कह रहे थे कि मुस्लिम लीग के नेताओं ने हिन्दू-मुसलमान ऐक्य का यह उपाय माना है कि दोनों जातियों में रोटी-बेटी के सम्बन्ध हों और वे महात्मा जी से कहने आये हैं कि वे इस विषय में प्रचार करें।

"महात्मा जी कह रहे थे कि यदि मुसलमान मांस खाना छोड़ दें तो वे यह प्रचार भी कर सकते हैं।

"मैं यह बात सुन रहा था। इस पर मैंने कहा, 'महात्मा जी! केवल रोटी-बेटी के सम्बन्ध से काम नहीं चलेगा।'

"गांधी जी पूछने लगे, 'तो किस बात से चलेगा?'

"मैंने कहा, 'जहाँ तक विवाह का सम्बन्ध है, यह तब हो सकेगा, जब विवाह और तलाक के नियम बदले जायेंगे।'

"यह दोनों भाई नहीं माने। मैंने आगे कह दिया, 'खान-पान तब तक नहीं हो सकता, जब तक वे गो-मांस खाना नहीं छोड़ देते।'

"अली भाई यह भी नहीं माने। तब गांधी जी ने बात बदल दी और मुझे कुछ व्यर्थ-सा काम बता कर वहाँ से टाल दिया।

"मैं इस सबका इलाज शुद्धि-आन्दोलन समझता हूँ, और यह कार्य पुन: जारी करने का विचार कर रहा हूँ।"

"भगवन्! शुद्धि-आन्दोलन ठीक है। यह उन लोगों में कार्य कर सकता है जो नाम मात्र के मुसलमान हैं। उनको पुन: हिन्दुओं में ले आने के लिये यह रीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक है, परन्तु वर्त्तमान काल में हिन्दू-जाति की समस्या यह नहीं। समस्या यह है कि हम वास्तविक हिन्दू-धर्म के तत्त्व को न समझ बाहरी रीति-रिवाजों को हिन्दू-धर्म मान रहे हैं। किसी की चोटी कट गयी तो वह अपने को हिन्दू-धर्म से पतित हो गया मानता है। किसी का यज्ञोपवीत टूट गया तो वह मुसलमान बन गया माना जाता है।

"यही बात खान-पान की है। कहीं खाना खाते हुए मुसलमान का हाथ लग गया तो हिन्दू मानता है कि वह पतित हो गया है। यह बात ठीक नहीं। हिन्दू अथवा आर्य होना इनके अतिरिक्त बात है।

"एक हिन्दू वेद को प्रमाण मानता है; धर्म के दस नियमों का पालन करना आवश्यक समझता है; दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा कि वह दूसरों का अपने साथ पसन्द करता है; विद्वान् का मान करता है; यज्ञ-रूप कर्म करने वाले को देवता मानता है; इन्द्रिय-लोलुप को असुर मानता है; हिन्दू-देवताओं का पक्षपाती है और स्वार्थी तथा भोग-विलास में लिप्त व्यक्ति का शत्रु है।

"जब तक आप एक हिन्दू के मन में यह तत्त्व की बात बैठा नहीं देते, तब तक भविष्य में बन रही समाज में आप हिन्दू-जाति की रक्षा नहीं कर सकते।"

"मैं शुद्धि करने का यही अर्थ समझता हूँ।"

"तो करिये। शुद्ध किये हुओं के साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध बनाना होगा। उस समय यदि हमारी बेटियाँ अथवा हमारे बेटे इस धर्म के तत्त्व को नहीं जानेंगे तो विवाह होते ही वे विधर्मी हो जायेंगे।

"देखिये महाराज ! जब विजय का सरस्वती से विवाह होने लगा तो विजय सरस्वती के माता-पिता के साथ बैठकर चाय पी रहा था। वे समझे कि जैसे सामान्य हिन्दू मुसलमान से छुआ हुआ खाने से मुसलमान हो जाता है, वैसे ही विजय भी मुसलमान हो गया है अथवा हो जायेगा।

"हुआ यह कि उक्त प्रकार के तत्त्व की बात को समझते हुए सरस्वती हिन्दू हो गयी और विजय मुसलमान नहीं हुआ।"

स्वामी जी इस बात को समझ रहे थे। इस कारण वे बोले, "दोनों कार्य आवश्यक हैं। हिन्दू-समाज को तत्त्व-ज्ञानी बनाना भी और मुसलमानों को हिन्दू बनाने के लिये शुद्धि का कार्य करना भी।"

"परन्तु स्वामी जी ! यदि यह ठीक है कि गांधी जी ने आपको वहाँ से टाल दिया है तो वे आपसे कुछ चोरी, अली भाईयों से कहने वाले थे। मुझे भय है कि वे अवश्य कुछ अनिच्छित वचन देने वाले हैं।"

"परन्तु हम क्या कर सकते हैं?"

"यदि हम सब जो गांधी जी से मतभेद रखते हैं, उनको सहयोग देना छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें तो उनकी आवाज़ में और उनसे दिये वचन में बल नहीं रह जायेगा। तब वे व्यक्तिगत रूप में वचन दे सकते हैं; परन्तु वर्त्तमान अवस्था में तो उनसे दिया वचन हिन्दू-समाज से दिया वचन माना जायेगा।''

: ८ :

अगले दिन तिलक जी विषय-निर्धारिणी समिति में पहुँचे तो अध्यक्ष पं० मोतीलाल नेहरू ने खड़े होकर कहा, ''महात्मा गांधी जी ने मुझको यह लिखकर भेजा है कि कल के पारित प्रस्ताव पर वे पुन: कुछ कहना चाहते हैं।''

तिलक जी ने तुरन्त खड़े होकर कहा, ''यह अनियमित है।''

अध्यक्ष ने कहा, ''यह नियम है कि अध्यक्ष अपने विशेषाधिकारों से किसी भी विषय को पुन: विचार के लिये उपस्थित कर सकता है।''

''मैं यही कहना चाहता हूँ कि प्रधान इसकी स्वीकृति न दें।''

''अर्थात् प्रधान आप हैं और मैं नहीं ?''

तिलक जी निरुत्तर हो गये। अब मिस्टर जिन्ना ने कहा, ''हम इस विषय पर पुन: विचार की स्वीकृति देने का विरोध करते हैं।''

पण्डित मदनमोहन मालवीय जी ने भी कहा, ''विशाल बहुमत से पारित प्रस्ताव को पुनः विचारार्थ उपस्थित करना सभी का समय व्यर्थ गँवाना है।''

श्री खापर्डे ने कहा, ''महात्मा जी क्या चाहते है ? यह पहले बता दिया जाये, तब हम देखेंगे कि हम उस प्रस्ताव पर पुन: विचार करना चाहते हैं अथवा नहीं।''

मोतीलाल नेहरू ने महात्मा जी का पत्र पढ़कर सुना दिया। पत्र में लिखा था—''कल पारित हुए प्रस्ताव में से हिन्दुस्तानियों द्वारा हिंसा-कार्यों की निन्दा निकाल देना मेरे आत्मा की आवाज़ के विपरीत है। यदि कांग्रेस का ऐसा मत है कि भारतीयों द्वारा की गयी हिंसा निन्दनीय नहीं है तो मैं ऐसी कांग्रेस में सम्मिलित नहीं रह सकता। मुझे अपने विचार पुन: सभा में रखने का अवसर दिया जाये और यदि मेरे विचार सुनकर भी समिति मेरी बात नहीं मानती तो मैं यह विचार करने पर विवश हो जाऊँगा कि मेरा कांग्रेस से क्या सम्बन्ध रहे।''

इस पत्र को सुनकर सदस्य मौन हो गये। तिलक-दल के कुछ लोग महात्मा जी के पत्र पर आपत्ति करते रहे, परन्तु अध्यक्ष ने महात्मा गांधी को आगे आकर अपनी बात कहने का अवसर दे दिया।

महात्मा जी अपनी आत्मा की आवाज़ और ईमानदारी इत्यादि की दुहाई देते रहे। वे एक घण्टा-भर बोले। तब तक प्रस्ताव में संशोधन कराने वाले मौन हो गये थे और प्रस्ताव अपने पूर्व रूप में पारित हो गया।

उस दिन दूसरा प्रस्ताव था, भारत के शासन में सुधार और उस पर ब्रिटिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राट् का वक्तव्य।

सी० आर० दास का प्रस्ताव था कि कांग्रेस इन सुधारों को असन्तोषजनक मानती है और इनके प्रयोग का विरोध करेगी।

गांधी जी ने इस प्रस्ताव पर संशोधन उपस्थित कर दिया। उनका संशोधन था कि यद्यपि कांग्रेस ब्रिटिश सरकार का धन्यवाद करती है और इन सुधारों को पर्याप्त न समझते हुए भी ब्रिटिश सम्राट् की 'अपील' के अनुरूप वफ़ादारी से इन प्रस्तावों को प्रयोग करेगी।

तिलक जी ने गांधी जी के संशोधन को मान कर उसमें यह संशोधन और उपस्थित कर दिया कि ब्रिटिश सम्राट् की अपील के अनुरूप ब्रिटिश अफसरों के साथ प्रतिक्रियात्मक सहयोग किया जाये।

इस प्रतिक्रियात्मक सहयोग की व्याख्या पूछी गयी तो तिलक जी ने समझा दी। उन्होंने कहा, "प्रान्तीय कौंसिलों में कुछ विषय सरकार के अधीन हैं और कुछ जनता के प्रतिनिधियों के अधीन। जनता के प्रतिनिधि अपने विभाग को चलाने के लिये धन मागेंगे, परन्तु धन गवर्नर के अधीन है। इस कारण यदि गवर्नर जनता के वज़ीरों को कार्य चलाने के लिये धन नहीं देता तो जनता के वज़ीर सरकारी कामों में धन अस्वीकार कर देंगे और उनके प्रत्येक काम में बाधा खड़ी कर देंगे।"

गांधी जी ने तिलक जी के संशोधन का विरोध किया और कहा, "हमें ईमानदारी से सुधारों पर अमल करने की बात कहनी चाहिये।"

तिलक जी का संशोधन स्वीकार नहीं हुआ और सी० आर० दास ने गांधी जी का संशोधन मान लिया। इस प्रकार शब्दों का हेर-फेर कर एक समझौते का प्रस्ताव पास हो गया। उसमें सुधारों पर अमल करने का वचन दिया गया। सुधारों को अपर्याप्त तो कहा गया, परन्तु असन्तोषजनक नहीं। अन्त में यह कह दिया गया कि कांग्रेस आशा करती है कि सरकारी अधिकारी भी सुधारों में नियमों का उदारता से पालन करेंगे।

इस प्रकार उस दिन तिलक जी विषय-निर्धारिणी समिति के पण्डाल से मुख लटकाये हुए बाहर निकले। आज भी नलिनी वहाँ जलपान का प्रबन्ध करने आया हुआ था। वह आज पण्डाल के द्वार पर ही खड़ा था और तिलक जी जब बाहर निकले तो नलिनी ने हाथ जोड़ नमस्कार किया और गम्भीर भाव में उनका मुख देखता रह गया। वह हिन्दू-समाज के एक महान् नेता की, भारत की इस राजनीतिक सभा में पराजय पर अत्यन्त दुःखी था।

तिलक जी जाते-जाते रुक गये और बोले, "आज हमारे कैम्प में मिलने आइयेगा।"

"आऊँगा।" बस इतनी ही बात हुई। नलिनी समझ नहीं सका, तिलक जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब क्या कहना चाहते हैं। आज यह स्पष्ट हो गया था कि अभी भी कांग्रेस की बागडोर राज-भक्तों के हाथ में है।

विलायत जाने पर तिलक जी के दृष्टिकोण में भी अन्तर आया था। वे समझने लगे थे कि इंगलैण्ड में बहुत-से लोग हैं जो हिन्दुस्तान के साथ सहानुभूति रखते हैं, यद्यपि अल्प-संख्या में होने के कारण वे कुछ कर नहीं सकते थे। अतः अंग्रेज़ों के प्रति वे अब उस प्रकार का द्वेष नहीं रखते थे जैसा कि पहले रखते थे। साथ ही वहाँ वे विरोधी पक्ष के काम करने के ढंग को सीख आये थे। इस कारण ही उन्होंने प्रतिक्रियात्मक सहयोग की बात कही थी। इस पर भी उनको अपनी बात के स्वीकार न किये जाने का शोक था।

नलिनी रात खाने के उपरान्त तिलक जी के कैम्प में पहुँचा तो तिलक जी ने छूटते ही कहा, "पण्डित नलिनीकान्त! देखा है, क्या हुआ है?"

"हाँ, महाराज! देखा है। मैं तो कल ही ऐसी आशा कर रहा था।"

"गांधी की धमकी कि वे कांग्रेस छोड़ जायेंगे, काम कर गयी है।"

"परन्तु क्यों? क्या गांधी जी की बात को गलत समझने वाले भी गांधी के कांग्रेस छोड़ने पर कांग्रेस की हानि समझते हैं?"

"बात यह है कि वे आज देश में बहुत बड़ी शक्ति हैं। उनकी इस शक्ति के निर्माण में उन नेताओं का भी हाथ है, जो उनसे मतभेद रखते हुए भी उनका साथ देते हैं।

"इस समय देश में गांधी जी के नाम की आँधी बह रही है और जो कोई भी उस आँधी में खड़ा रहने का यत्न करता है, वह आँधी के सामने बड़े-बड़े वृक्षों की भाँति उखाड़ कर फेंक दिया जाता है।

"मैं ऐनिबिसेंट का बुरा हाल देख रहा हूँ। वह यहाँ अधिवेशन में आयी है, परन्तु उसके अपने सूबे के लोग भी उससे बात करना पसन्द नहीं करते।"

"भगवन्! आपको भी क्या उसी प्रकार का भय लग गया है? गीता पर भाष्य लिखने वाला व्यक्ति अपने सांसारिक भले-बुरे का विचार कर अपने कर्म का निश्चय करे, यह विस्मयजनक ही है।

"देखिये महाराज! 'बॉम्बे न्यूज़' मेरे सार्वजनिक जीवन का प्रतीक था, परन्तु उसकी नीति बदली तो मैंने एक क्षण में ही निर्णय कर लिया कि मैं समाचार-पत्र के सम्पादक पद के लिये अपनी नीति को नहीं बदल सकता।

"आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते? परमात्मा ने आपको शास्त्र-बुद्धि दी है। आप शास्त्र-विवेचना का काम आरम्भ कर दें तो समय पाकर आप एक राज-नीतिक नेता की अपेक्षा अधिक ख्याति प्राप्त कर लेंगे।"

तिलक जी नलिनी का मुख देखते रह गये। उन्हें कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि यह व्यक्ति उसकी बुद्धि को चुनौती दे रहा है। नलिनी इस नेता के मुख पर बदलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग देख समझ रहा था कि वह उसके विषय में क्या विचार कर रहा होगा? जब वह कुछ नहीं समझ सका तो उसने कहा, "महाराज ! मैं आपको शिक्षा देने का अधिकार नहीं रखता। केवल अपनी मति से ही यह निवेदन कर रहा हूँ कि सफल वे व्यक्ति होते हैं, जो विचार कर अपने संकल्प बनाते हैं और फिर उस संकल्प पर दृढ़ हो निष्काम भाव से कर्म करते हैं।

"मैं गांधी जी में यही गुण देखता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि उनका विचारित संकल्प मिथ्या है, परन्तु उस मिथ्या संकल्प पर भी वे दृढ़ हैं। यही उनकी सफलता का रहस्य है।

"हम अपने शुद्ध हृदय से एक संकल्प बनाते हैं, परन्तु हवा का बहाव विपरीत देख स्वयं उसके साथ बह जाने में कल्याण समझते हैं। परिणाम यह होता है कि हमारे कार्य सफल नहीं होते।"

"तो आप स्वयं मैदान में क्यों नहीं आ जाते?"

"इस कारण कि जिनके उद्धार के लिये मैं संकल्प बनाये हुए हूँ, वे अभी अपना उद्धार नहीं चाहते। उनकी मति सागर की एक विपरीत तरंग में बह रही है। उस तरंग का विरोध करने के लिये मैं शक्ति का संचय कर रहा हूँ।

"आपमें और अपने में अन्तर मैं यह मानता हूँ कि आप उस तरंग में बह कर शक्ति-संचय कर रहे हैं और मैं उस तरंग से पृथक् होकर शक्ति-संचय करना चाहता हूँ।

"मेरे व्यवहार में युक्ति यह है कि उस तरंग में बहते हुए मैं शक्ति-संचय कर सकने से पूर्व ही अपने लक्ष्य-स्थान से इतनी दूर ले जाकर पटक दिया जाऊंगा कि अपना लक्ष्य-स्थान भी मेरी दृष्टि से ओझल हो जायेगा।

"मेरा अभिप्राय यह है कि उस तरंग में बहते हुए कदाचित् किसी प्रकार की स्वतन्त्रता मिल जाये, परन्तु वह स्वतन्त्रता अपने विचार की स्वतन्त्रता से विलक्षण ही नहीं, वरन् विपरीत भी हो सकती है।"

तिलक जी नलिनी के अलंकार को समझने लगे थे। इस कारण उन्होंने पूछ लिया, "आप किस प्रकार की स्वतन्त्रता चाहते हैं?"

"मैं भारतवर्ष में हिन्दू राज्य चाहता हूँ। हिन्दुओं को दैवी गुण सम्पन्न देखना चाहता हूँ और उनको संसार-भर के दैवी सम्पदा वालों की सहायता करते हुए, प्रभावी कार्य करते हुए देखना चाहता हूँ। यही मेरी कल्पना है भारतीय चक्रवर्ती राज्य की।"

"यह असम्भव है।"

"तो मैं इसका स्वप्न लेता हुआ मर्त्य-लोक को छोड़ जाऊंगा। परन्तु महाराज, मैं असुरों से समझौता नहीं कर सकता।"

"असुर कौन हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो जीवन के भोग-विलास के लिये सब-कुछ निछावर करने को तैयार हो जाते हैं।"

"तो तुम यह गांधी जी में देखते हो ?"

"इसमें गांधी जी कहाँ से आ गये ? वे क्या हैं, यह कुछ भी कहना कठिन है। क्या आपको रावण की घोर तपस्या की कथा स्मरण है ? उस समय ब्रह्मा भी जान नहीं सका था कि उसकी तपस्या का क्या उद्देश्य है। वह यही समझा था कि यह ऋषि-पुत्र है और उसे वर देना चाहिये।

"यह तो पीछे जाकर पता चला था कि वह देवताओं का घोर विरोधी है। उस समय ब्रह्मा का वर उसका सहायक हो रहा था।

"इस समय महात्मा जी घोर तपस्या कर रहे हैं। मैं कैसे बता सकता हूँ, जब कि एक समय ब्रह्मा भी नहीं जान सका था।"

"आपकी यह उपमा आपत्तिजनक है।"

"मैंने किसी की निन्दा नहीं की। केवल यह कहा है कि गांधी जी क्या करेंगे, कहा नहीं जा सकता। रावण का उदाहरण तो उसकी तपस्या और ब्रह्मा की भूल बताने के लिये था।"

: ६ :

अमृतसर कांग्रेस-अधिवेशन से लौटते हुए पण्डित मोतीलाल और श्री सी० आर० दास रेल के एक ही डिब्बे में बैठे यात्रा कर रहे थे। दोनों को स्पष्ट बात करने का अवसर मिल गया। मोतीलाल जी ने दास बाबू के विचार जानने के लिये पूछ लिया, "दास बाबू ! क्या समझे हैं इस अधिवेशन का अर्थ ?"

"मैं तो सर्वथा असन्तुष्ट लौट रहा हूँ।" दास का उत्तर था।

"किसलिये ?"

"इस कारण कि मुझे अंग्रेज़ की नीयत पर विश्वास नहीं। विशेष रूप में ब्रिटिश सरकार के अधिकारी जो हिन्दुस्तान में राज्य चला रहे हैं, सर्वथा अविश्वास के योग्य हैं। मैं चाहता था कि कांग्रेस यह निश्चय करती कि हम इन सुधारों को असन्तोषजनक समझते हैं और इनको स्वीकार नहीं करते।"

पण्डित मोतीलाल दास बाबू की बात सुनकर गम्भीर हो विचार करने लगे। वे यह विचार कर रहे थे कि कितनी ख्याति है गांधी की ! वे एक अयुक्ति-संगत बात भी करते हैं तो नेता लोग उनको मान जाते हैं। वे गांधी जी से सहमत न होते हुए भी उनके पक्ष में मत देते हैं अथवा मौन हो जाते हैं। वे उनके विरोध का साहस नहीं कर सकते। यही बात उसने मिस्टर दास में देखी थी।

उन्होंने जब देखा कि गांधी जी की बात का विरोध नहीं हो सकता तो गांधी जी से समझौता कर लिया। पण्डित मोतीलाल भी देख रहे थे कि अभी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास गांधी जी की युक्तियों को ठीक नहीं समझता, परन्तु कुछ कर नहीं सकता। एकाएक उनके मन में आया कि गांधी जी की ख्याति का लाभ उठाना चाहिये। उन्होंने अपने मन के भावों को गुप्त रख, एक कार्य-दिशा का विचार किया और दास बाबू से कहने लगे, "मुझे गांधी किसी प्रकार भी प्रखर बुद्धि का व्यक्ति प्रतीत नहीं हुआ।"

"यह तो है ही। एक थर्ड क्लास बैरिस्टर और मुकद्दमे जीतने के स्थान, समझौते करने वाला वकील भला देश का मुकद्दमा क्या लड़ेगा?"

"मैं समझता हूँ कि मूर्ख जनता किसी भी नेता को गांधी के विरुद्ध स्वीकार नहीं करेगी। इस समय गांधी का विरोध करना ऐसे ही है, जैसे कि तूफान में तिनकों की कुटिया निर्माण करना।"

"मैं यह समझता हूँ कि हम लोग अपनी नेतागीरी के लोभ में गांधी का मुकाबला नहीं कर सकते।"

"इसी कारण मैं इस गांधी-रूपी तरंग में बह जाने के स्थान, इस तरंग पर सवार हो, इसकी दिशा बदलने का यत्न करना चाहता हूँ।"

"क्या लाभ होगा इससे?"

"गांधी-रूपी आंधी की दिशा बदल जाने से देश का कल्याण होगा।"

"कठिन है। यह महात्मा बहुत ही हठी व्यक्ति है। यह अपना मार्ग बदलेगा नहीं।"

"हमारी चतुराई इसी में है कि यह मार्ग बदल भी दे और इसे पता भी न चले कि इसने मार्ग बदला है।"

"परन्तु यह किया जा सकेगा क्या?"

"यह यत्न करने योग्य बात है।"

"आजकल गांधी जी, पण्डित मालवीय और श्रीनिवास शास्त्री के साथ घुल-घुल कर बातें करने लगे हैं।"

"मैं समझता हूँ," पण्डित मोतीलाल ने कहा, "गांधी जी इस समय एक महान् शक्ति हैं। यह शक्ति अंग्रेज़ी सरकार की भक्ति में प्रयोग होने वाली है। मैं इसे अपने लाभ में प्रयोग करना चाहता हूँ।"

"हमारा अपना लाभ किस बात में है?" दास का प्रश्न था।

अब मोतीलाल जी पुनः विचार-मग्न हो गये। दास उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर तक चिन्तन कर मोतीलाल जी ने कहा, "देखो, दास बाबू! इस समय देश में हम दोनों चोटी के वकील हैं। मेरी आय दो-ढाई लाख रुपया वार्षिक है। मैं समझता हूँ कि आपकी भी आय इससे कम नहीं होनी चाहिये। हमारा राजनीति में प्रवेश करने का अभिप्राय है, इतनी आय को लात मारना। इतना कुछ करने पर भी एक थर्ड रेट के वकील की अंगुलियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नाचना है तो यह बहुत घाटे का सौदा है ।

"इस कारण मैं तीन बातों में से एक करने का विचार कर रहा हूँ । एक तो यह कि गांधी को 'राईट ऐबाउट टर्न' करा कर अपने मतानुसार कार्य करने पर लगा दूं । दूसरो बात यह हो सकती है कि ऐसी स्थिति पैदा कर दी जाये, जिससे कि इस महात्मा की भी वही दुर्दशा हो, जो ऐनिविसेंट की हो रही है । तीसरा यह कि आराम से घर बैठ कर अपनी प्रैक्टिस चलाऊँ और अपनी आय का भोग करूँ ।"

दास मुख देखता रह गया । कुछ विचार कर बोला, "यह बात कुछ कठिन हैं । मैं पुनः प्रैक्टिस करना चाहता नहीं । इन ब्रिटिश अफसरों के सामने खड़े हो, 'माई लॉर्ड ! माई लॉर्ड !!' कहने को चित्त नहीं करता ।"

"ठीक है, मैं भी यही समझता हूँ । इसी कारण मैं विचार कर रहा हूँ कि आँधी में बहते हुए इसका रुख बदल दिया जाये । यदि हम योग्यतम वकील ऐसा नहीं कर सकते तो फिर कौन कर सकेगा ? मुझे यही समझ में आ रहा है कि अनपढ़ भीड़ को सीधे मार्ग पर लाने के स्थान, एक सामान्य बुद्धि के व्यक्ति को अपने पीछे लगा लेना अधिक सुगम होगा ।"

इसके उपरान्त योजनाएँ बनने लगीं कि किस प्रकार इस महात्मा का मुख 'ब्रिटिश हिज़ मैजेस्टी दि किंग' की ओर से घुमा कर अपनी ओर कर लिया जाये ?

इसी गाड़ी के एक अन्य डिब्बे में सुवर्णा तथा नलिनी कलकत्ता जा रहे थे । सुवर्णा भी नलिनी से अमृतसर कांग्रेस की प्रतिक्रिया जानने का यत्न कर रही थी ।

सुवर्णा स्वयं कांग्रेस-अधिवेशन में सम्मिलित होने नहीं आयी थी । वह सर्दी के दिन, लाहौर में अपनी कोठी में व्यतीत कर रही थी । उसके परिवार वालों में विजय तथा उसका बड़ा लड़का सोमदेव कांग्रेस में स्वयंसेवक का कार्य कर रहे थे । सोम शान्ति-निकेतन में पढ़ता था और वह कांग्रेस-अधिवेशन से शान्ति-निकेतन को लौट रहा था । नलिनी और सुवर्णा तथा विजय उसे छोड़ने जा रहे थे ।

विजय का छोटा लड़का चारुदेव भी कलकत्ता में पढ़ रहा था ।

सुवर्णा अमृतसर कांग्रेस के विषय में अपनी जानकारी प्राप्त कर रही थी । उसने पूछा था, "तो अब हिन्दू-मुसलमान सरकार के विरुद्ध साँझा मोर्चा बनायेंगे ?"

"यह किसने कहा है ?"

"समाचार-पत्रों में इस बात की धूम है कि अमृतसर में अली भाईयों का भव्य स्वागत किया गया है और 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' के नारे लगाये जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे हैं।"

"मुझे तो अमृतसर में हिन्दू-मुसलमानों में किसी प्रकार के साँझे मोर्चे की बात हुई दिखायी नहीं दी। गांधी जी यह कहते हैं कि मुसलमानों को प्रसन्न करना बहु-संख्यक समुदाय का कर्त्तव्य है। हिन्दुओं को मुसलमानों की प्रत्येक माँग स्वीकार कर लेनी चाहिये। हिन्दू यह मानने को तैयार प्रतीत होते हैं, परन्तु मुसलमानों की माँगें बढ़ती जाती हैं। अब वे माँगने लगे हैं कि उनको हिन्दू लड़कियाँ विवाह में मिलनी चाहियें। यह इसलिये कि उनमें चार-चार विवाह करने की 'शरा' है, जिससे उनके समुदाय में लड़कियों की कमी पड़ रही है। मैं समझता हूँ कि ऐसे समुदाय से हिन्दू समझौता नहीं कर सकेंगे।"

"यह माँग किसने की है?"

"मौलाना मुहम्मद अली ने। वैसे वे मुसलमान लड़कियों के विवाह भी हिन्दुओं से करना चाहते हैं, परन्तु उनके समुदाय में लड़कियों की कमी के कारण बहुत कम संख्या में ये विवाह हो सकेंगे।"

"वैसे तो," सुवर्णा ने कहा, "हिन्दू लड़कियाँ कई कारणों से इस्लाम स्वीकार करती देखी जा रही हैं। परन्तु यह दोनों समुदायों में सुलह की शर्त की गयी तो एक भयंकर भूल होगी।"

"मुझे विश्वास है कि हिन्दू-मुसलमान में, यदि कभी सुलह हुई तो इस प्रकार की शर्तों से नहीं होगी। सुलह ले-देकर कभी नहीं होती। यह तो मन-परिवर्तन से होती है। जब मनों में परिवर्तन हो जाता है तो फिर यह ले-दे का विचार उत्पन्न नहीं होता। स्वतः ही समन्वय होने लगता है।"

"परन्तु मनों में परिवर्तन कैसे हो?"

"इस्लाम की कुछ बातें हैं जिनके रहते यह होना असम्भव है। मुसलमानों के हिन्दुस्तान में आने से पूर्व हिन्दुओं में सबको अपने समान देखने की प्रवृत्ति थी और तब जो भी समुदाय भारत में आया, वह भारतीय बन गया। उसने हिन्दुओं से कुछ लिया और कुछ दिया। परन्तु यह किसी समझौते के आश्रय नहीं, वरन् उदारता से समझ-समझा कर।

"इस्लाम के यहाँ आने पर स्थिति यह हो गयी कि इस्लाम ने कुछ भी सीखने से इन्कार कर दिया और हिन्दुओं को सिखा न सकने पर भी उनको बल-पूर्वक स्वीकार करने पर विवश करना आरम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि दोनों में एक दीवार बन गयी, जिसमें एक ओर जाने का ही द्वार था, वह भी बल-पूर्वक खींचकर।

"परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं को भी संकीर्ण विचारों की दीवार बनानी पड़ी है। हिन्दू मुसलमान बना लिये जाते थे, परन्तु मुसलमान हिन्दू बनने पर मार डाला जाता था और ऐसी प्रेरणा देने वालों की भी हत्या कर दी जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इसकी प्रतिक्रिया ही यहाँ पर हुई थी कि विचारों को संकुचित और सुदृढ़ किया गया। वह कुछ तो नहीं किया जा सका जो मुसलमान करते थे, परन्तु हिन्दुत्व की रक्षा के लिये विचारों की सुदृढ़ प्राचीर बन गयी। वह समाज के चारों ओर बनायी गयी।

"अब इस्लामी राज्य नहीं रहा; परन्तु एक ओर तो हिन्दू अब भी उसी प्राचीर के भीतर रहने में सुख अनुभव करते हैं तथा दूसरी ओर दीवार को सेंध लगाने में ईसाई और अंग्रेज़ी सरकार भी यत्नशील हैं। यह सेंध इस विचार से लगायी जा रही है कि उससे बने छिद्र से दूसरे समुदाय भीतर घुस कर हिन्दू-समाज में लूट मचा दें।

"मेरी सम्मति में अब दीवार गिरा देनी चाहिये, परन्तु सीमा बनी रहनी चाहिये। वही विचारों में सुदृढ़ता की, जो दीवार बनने से पहले थी। यह पुनः बन जानी चाहिये, परन्तु दीवार के भीतर छुप कर बैठने की संकीर्णता दूर हो जानी चाहिये।

"यदि स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो विचार-संघर्ष दीवार के बाहर आकर दूसरे समुदायों से करना चाहिये। यही बात स्वामी दयानन्द ने करनी चाही थी। अपनी विचारधारा और दूसरों की विचारधारा में अन्तर स्पष्ट होना चाहिये। इसे ही मैं सीमा कहता हूँ। हमारे मस्तिष्क में स्पष्ट होना चाहिये कि हिन्दुत्व है क्या और हिन्दू समुदाय से बाहर वाले क्या हैं? इस स्पष्ट ज्ञान के होने पर जो बाहरी लक्षणों की रक्षा की दीवार खड़ी की थी, वह मिटा देनी चाहिये।

"तब जो श्रेष्ठ होगा, वह रहेगा और जो निकृष्ट होगा, वह मलियामेट हो जायेगा। मेरा विश्वास है कि ऐसा होने पर हिन्दुओं का विरोध समाप्त होगा और उदार दैवी गुणों वाले लोग हमारी विचार-सीमा में आने पर गर्व अनुभव करेंगे।"

कलकत्ता स्टेशन पर उतरे तो नलिनी को पता चला कि बगल वाले डिब्बे में सी० आर० दास यात्रा कर रहे हैं। कलकता में दास बाबू का रेल के स्टेशन पर स्वागत करने के लिये एक लम्बी-चौड़ी भीड़ खड़ी थी। नलिनीकान्त अपने परिवार-सहित डिब्बे से निकल नहीं पा रहा था। बहुत लोग थे। नलिनी अपने डिब्बे का द्वार खोल दास बाबू का पुष्प-मालाओं से स्वागत होता देखने लगा।

दास बाबू गाड़ी से उतरे तो किसी ने वहीं डिब्बे के समीप एक स्टूल लगा कर रख दिया और उनसे कांग्रेस-अधिवेशन का सन्देश लोगों को देने का आग्रह किया गया।

दास बाबू स्टूल पर खड़े हो गये और बंगला भाषा में बोलने लगे। उन्होंने कहा, "हमने नये सुधारों का स्वागत किया है और उनसे देश को लाभ

—२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचाने का यत्न करेंगे। कांग्रेस ने जलियाँवाला बाग के हत्या-काण्ड की निन्दा की है और हमने एक दर्जन से अधिक अन्य विषयों पर प्रस्ताव पारित किये हैं।

"इस अधिवेशन से एक बात सिद्ध हो गयी है कि महात्मा गांधी देश के नेता हैं और पूर्ण देश उनके साथ है। इस कारण मैं कांग्रेस का यही सन्देश समझता हूँ कि गांधी जी का कहना मानो।

"शीघ्र ही नये सुधारों के अनुसार निर्वाचन होंगे और गांधी जी जिस किसी को जहाँ से भी खड़ा करेंगे, सबको उसी व्यक्ति का समर्थन करना चाहिये। यही अमृतसर-कांग्रेस का सन्देश है।"

नलिनीकान्त अपने डिब्बे के द्वार पर खड़ा दास बाबू का वक्तव्य सुन रहा था। उसे समझ आ रहा था कि दास बाबू ने अमृतसर कांग्रेस-अधिवेशन का सन्देश बहुत ही संक्षेप में सत्य-सत्य दे दिया है। परन्तु क्या वे मन से भी यही चाहते हैं? उसे सन्देह हो रहा था। सुधारों के विषय में गांधी जी से समझौता करते समय वह दास बाबू के विवर्ण मुख को देख चुका था। वह समझ रहा था कि दास बाबू मन से ऐसा नहीं मानते जैसा कि वे कह रहे हैं। वह विस्मय कर रहा था कि यह योग्य वकील अपने मन की बात को अभी बता क्यों नहीं रहा? यह संस्था की प्रतिष्ठा के कारण ही है। ऐसा उसे समझ में आया था।

: १० :

'दास बाबू की जय। भारत माता की जय' इत्यादि के समाघोषों में दास बाबू स्टेशन से बाहर गये तो नलिनी, सुवर्णा इत्यादि डिब्बे से निकल सके और बाहर आये। विजय का छोटा लड़का चारुदेव बाबा, दादी और पिता जी को मिलने आया हुआ था। चारु इस समय सोलह वर्ष का कुमार था। उसके साथ एक स्त्री और एक लड़की थी। उस स्त्री को नलिनी जानता था, परन्तु साथ वाली लड़की के दर्शन उसने पहले कभी नहीं किये थे। जब चारुदेव बाबा और पिता से मिल चुका तो उसके साथ आयी स्त्री नलिनी को नमस्कार कर सामने खड़ी हो गयी।

"ओह!" नलिनी के मुख से निकल गया, "तुम तो गौरी हो।"

"हाँ, बाबा! ईश्वर का धन्यवाद है कि आपने पहचान लिया है।"

"सुनाओ, तुम्हारी माता माला कैसी हैं?"

"वह श्वास रोग में ग्रसित हो गयी हैं। आजकल कुछ ठीक हैं, परन्तु ऋतु-परिवर्तन होते ही रोग बढ़ जाता है।

"और यह कौन है?" नलिनी ने साथ लड़की की ओर देख पूछ लिया।

"यह मेरी लड़की है। यह भी उसी स्कूल में पढ़ती है जिसमें चारु पढ़ता है। दोनों का स्कूल में ही परिचय हुआ था और फिर पता लगा कि आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोता है तो मैंने इसे अपने घर आमन्त्रित करना आरम्भ कर दिया है। लड़का मुझे पसन्द है। इस श्रद्धा का एक भाई है, भगवती। वह अपनी नानी की भाँति बीमार रहता है।"

नलिनी ने पूछ लिया, "इस सुवर्णा को जानती हो?"

"हाँ, चारु की दादी हैं। कल चारु हमारे घर आया था और बताने लगा कि आप आ रहे हैं। इससे मैं आपको स्टेशन पर अपनी घोड़ा-गाड़ी में ले चलने के लिये आयी हूँ।"

"परन्तु हम तो कलकत्ता में प्रायः होटल में ठहरा करते हैं।"

"तो बाबा! हमारे घर को होटल ही समझ लेना। होटल का भाड़ा इत्यादि दे देना।"

"परन्तु गौरी! सुवर्णा से पूछ लो। यह चले तो मैं भी चल सकूंगा।"

सुवर्णा ने कह दिया, "गौरी बेटी ठीक कहती है। इनके मकान को होटल समझ चल देते हैं। यदि होटल बहुत बढ़िया हुआ और इनके होटल में कमरों का भाड़ा बहुत अधिक हुआ तो कल 'शिफ्ट' कर लेंगे।"

गौरी ने हँसते हुए कहा, "दादी ठीक कह रही हैं। अब बाबा, आइये।"

चारु और विजय पृथक् में बात करने लगे थे। विजय ने कहा, "चारु! तुम यहाँ अपना समय व्यर्थ गँवा रहे प्रतीत होते हो?"

"पिता जी, नहीं। मैं क्लास में प्रायः प्रथम रहता हूँ। सप्ताह में एक-आध बार गौरी 'आण्टी' के घर मनोरंजनार्थ आया करता हूँ।"

इस कथन को सुन कि चारु यहाँ मनोरंजन के लिये आता है, विजय ने पूछ लिया, "यहाँ क्या मनोरंजन है?"

"आण्टी बहुत प्यार करती हैं और श्रद्धा मेरा बहुत आदर करती है।"

"आदर कैसे?"

"जब मैं इनके घर आता हूँ तो मिठाई और भाँति-भाँति की मछली खाने को मिलती है। श्रद्धा बहुत ही मधुर गाती है और वायलिन बजाती है।"

"ओह!"

"कभी-कभी दादा शान्ति-निकेतन से यहाँ आते हैं तो फिर एक बहुत बड़ी दावत हो जाती है।" सोम बाबा के पास खड़ा उसकी बातें सुन रहा था।

"तो सोम भी यहाँ आया करता है?"

"हाँ, और पिता जी! सोम के साथ एक कीर्ति भी आया करती है। वह रवीन्द्रनाथ ठाकुर के परिवार की लड़की है। उनके किसी चचेरे अथवा ममेरे भाई की सन्तान है।"

"कितनी बड़ी है वह?"

"वह वहीं शान्ति-निकेतन में दादा की श्रेणी में ही पढ़ती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारु, नलिनी, गौरी, श्रद्धा और सुवर्णा गौरी के घर की गाड़ी में सवार हो, गौरी के घर को चल पड़े और एक भाड़े की गाड़ी में विजय और सोम यात्रा का सामान, बिस्तर और सूटकेस तथा टिफन-कैरियर इत्यादि लाद चल पड़े।

चारु का संकेत था कि सोम के साथ एक लड़की प्रायः कलकत्ता आया करती है। विजय को उस लड़की के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हो गयी। विजय गाड़ी में बैठा तो सोम से पूछने लगा, "सोम ! तुम्हारा कलकत्ता बहुत आना-जाना रहता है।"

"पिता जी ! बहुत तो नहीं। कभी-कभार जब शान्ति-निकेतन से जी ऊब जाता है तो दो दिन के लिये कलकत्ता आ जाया करता हूँ। यहाँ गौरी आण्टी के घर में रहा करता हूँ।"

"अकेले ही आया करते हो या अन्य विद्यार्थी भी साथ होते हैं ?"

"मेरी एक सखी है। नाम है कीर्ति देवी। एक-दो बार वह मेरे साथ आयी है। उसके सम्बन्धी भी कलकत्ता में रहते हैं। वह उनके यहाँ ठहरा करती है। पिछली बार जब वह आयी थी तो एक रात गौरी मौसी के कहने पर वहाँ भी ठहरी थी।"

"तुमने अपनी सखी का उल्लेख पहले कभी नहीं किया।"

"तो यह करना चाहिये था, पिता जी ?"

"हाँ; यदि सखापन विशेष हो तो बताना चाहिये।"

सोमदेव बातों की दिशा से घबरा रहा था और विजय इसे देख रहा था। सोम ने बात टालने के लिये कहा, "विशेष सम्बन्ध तो नहीं हैं; इस पर भी अन्य लड़कियों से अधिक सामीप्य का तो है।"

"तो वहाँ कम सामीप्य में अन्य लड़कियाँ भी हैं ?"

"हाँ, पिता जी ! वहाँ लड़के-लड़कियाँ सब इकट्ठे ही पढ़ते हैं। कुछ विषय ऐसे हैं जो केवल लड़कियाँ ही पढ़ती हैं। उन श्रेणियों में वे पृथक् हो जाती हैं, अन्यथा लड़के-लड़कियाँ इकट्ठे ही पढ़ते हैं।"

"मैं तुम्हारे साथ शान्ति-निकेतन चल रहा हूँ।"

"चलिये ! दादी और बाबा भी चलेंगे ?"

"उनको एक सप्ताह तक कलकत्ता में कुछ काम है। वे यहीं रहेंगे। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

सोम ने अब साहस पकड़ कहा, "तब मैं आपकी कीर्तिदेवी से भेंट करा सकूंगा।"

"यह भी ठीक रहेगा। तुमको अभी बहुत-कुछ करना है। उसके लिये तुम्हें हमारी और बाबा की सहायता की आवश्यकता रहेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लोग गौरी के मकान पर पहुँचे तो वार्त्तालाप बन्द हो गया। गौरीदेवी एक ज़मींदार की विधवा थी। ज़मींदारी 'कोर्ट ऑफ वार्ड्ज़' में थी। कारण यह कि ज़मींदार गौरी के पति विभूतिचरण के देहान्त के समय गौरी का लड़का भगवतीचरण अभी पाँच वर्ष का था और एक अल्प-वयस्क बालक की सम्पत्ति की रक्षा के लिये सरकार ने गौरी को गुज़ारेदार मान, सम्पत्ति को सरकारी संरक्षण में ले लिया था।

गौरी ज़मींदारी पर बहुत कम जाती थी। वह प्रायः कलकत्ता में रहती थी। भगवती अब तेरह वर्ष का था और कलकत्ता में सरकारी स्कूल में पढ़ता था। वह माँ के पास ही रहता था। गौरी के परिवार के गुज़ारे के लिये दो सहस्र रुपया प्रति मास मिल जाता था। इससे बहुत मज़े में निर्वाह होता था। परिवार का अपना मकान भवानीपुर में था। यह एक बहुत बड़ी तीन-मन्ज़िला हवेली थी। नीचे की मन्ज़िल में चौकीदार और नौकर रहते थे। प्रथम मन्ज़िल पर मेहमानों के लिये स्थान था और दूसरी मन्ज़िल पर गौरी, उसकी लड़की और लड़का रहते थे।

नलिनी, विजय इत्यादि को प्रथम मन्ज़िल के कमरों में ठहरा दिया गया। सोम और चारु तो मकान से पहले ही भली-भाँति परिचित थे। इस कारण वे ही अपने पिता तथा दादी, बाबा की सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर रहे थे। इनके भोजन का प्रबन्ध ऊपर की मन्ज़िल पर किया गया था।

स्नानादि से अवकाश पा, प्रातः का भोजन करने सब लोग ऊपर की मन्ज़िल पर खाने के कमरे में एकत्रित हो गये। भगवतीचरण, गौरी का लड़का, बहुत ही दुबला-पतला और बीमार प्रतीत होता था। चारुदेव उसके मुकाबले में हृष्ट-पुष्ट और गौरवर्णीय था। श्रद्धा दोनों लड़कों के बीच में बैठी चारु से बहुत घुल-मिल कर बातें कर रही थी। बच्चों ने आज स्कूल से छुट्टी ली हुई थी।

भोजन करते हुए गौरी ने विजय से पूछ लिया, "विजय भैया! पत्नी को साथ नहीं लाये?"

"एक तो अमृतसर में साथ थी। उसकी अम्मी बीमार है; इस कारण वह अमृतसर से ही बम्बई अपनी अम्मी से मिलने चली गयी है। दूसरी लाहौर में है। उसे राजनीति में रुचि नहीं। इस कारण वह अमृतसर नहीं आयी थी और लाहौर में ही रही है। कलकत्ता से मैं सोम के साथ शान्ति-निकेतन जा रहा हूँ।"

"कुछ काम है वहाँ?"

"तनिक देखना चाहता हूँ कि सोम की पढ़ाई कैसे चल रही है?"

"और बाबा!" गौरी ने नलिनीकान्त को सम्बोधन कर पूछ लिया, "आप तो यहाँ कलकत्ता में कुछ दिन रहेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पांच-सात दिन तो रहूँगा। तब तक विजय शान्ति-निकेतन से लौट आयेगा।"

"जब दास बाबू प्लैटफॉर्म पर जनता को अमृतसर का वृत्तान्त बता रहे थे तो मैं भी एक ओर खड़ी सुन रही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि दास बाबू प्रसन्न थे।"

"हाँ; मैंने भी उनको सुना है, परन्तु मुझे कुछ ऐसा लगा था कि वह प्रसन्नता बनावटी थी।"

"देखने से तो वे हृदय से प्रसन्न प्रतीत होते थे, परन्तु वे कुछ ऐसा कह रहे थे जो वह जाने से पूर्व नहीं कहते थे।"

"जाने से पूर्व क्या कहते थे ?"

"अमृतसर जाने से पूर्व उन्होंने वक्तव्य दिया था कि सुधार असन्तोषजनक हैं और कांग्रेस उन्हें अस्वीकार करेगी। यह वक्तव्य समाचार-पत्रों में छपा था। परन्तु आज तो उन्होंने कहा है कि कांग्रेस ने यह निश्चय किया है कि सुधारों पर अमल किया जायेगा।"

"यही मैं कह रहा हूँ कि हृदय से दास बाबू सन्तुष्ट नहीं, परन्तु प्रत्यक्ष में वे सन्तोष प्रकट कर रहे थे।"

"आप इससे मिले हैं ?"

"दूर-दूर से देखा है। बातचीत नहीं की।"

"आप मिलना चाहेंगे ?"

"मेरा इनसे परिचय नहीं और आज मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ। कदाचित् वे मिलना पसन्द भी नहीं करेंगे।"

"मैं आपकी भेंट करा सकती हूँ।"

"कैसे जानती हो इनको ?"

"भगवती के पिता के यह वकील थे और उनके देहान्त के उपरान्त वे मेरी ओर से सरकार से मुकद्दमा करते रहे थे। इन्हीं के कारण मुझे दो हज़ार प्रति मास व्यय मिलता है। अन्यथा सरकार दो सौ रुपया महीना निश्चय कर चुकी थी।"

"तो अब भी कोई मुकद्दमा चल रहा है जिसमें दास बाबू वकील हैं ?"

"नहीं। अब कोई मुकद्दमा नहीं है, परन्तु मेरा उनके घर आना-जाना है।"

"तो एक दिन मुझे ले चलो। मैं इनसे मिलने की इच्छा तो रखता हूँ।"

"मैं ले चलूंगी।"

मध्याह्नोत्तर विजय ने पिता से कहा, "बाबा ! मुझे दोनों लड़के बिगड़ रहे प्रतीत होते हैं।"

"कैसे कहते हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दोनों ने अपनी सखी लड़कियाँ ढूंढ रखी हैं। चारु की दृष्टि श्रद्धा पर लगी हुई है और सुना है कि सोम की भी कोई सखी वहाँ इसके कालेज में है।"

"किसने बताया है तुम्हें ?"

"श्रद्धा को तो मैं खाना खाने के समय देख रहा था। मुझे श्रद्धा की आँखों में चारु के लिये मोह दिखायी दिया है। चारु ने ही बताया है कि सोम की गहरी मित्रता एक कीर्ति नाम की लड़की से है। सोम ने भी इस बात को स्वीकार किया है।"

"देखो विजय !" नलिनी ने गम्भीर हो कहा, "चारु के विषय में बात को सुलझाने का यत्न करूँगा। यह अभी अल्पायु है। श्रद्धा के मन की भावना बदलनी चाहिये। बहन-भाई की भावना निर्माण करने की आवश्यकता है।

"सोम की सखी यदि सोम की आयु की है तो वह सज्ञान कुमारी होगी। उस विषय में सावधानी से समझाने की आवश्यकता है।"

अगले दिन ही नलिनी ने गौरी से कहा, "श्रद्धा का चारु के साथ मेल-जोल उनमें अशुभ व्यवहार का भी कारण हो सकता है।"

"क्या अशुभ व्यवहार हो सकता है ?" गौरी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

नलिनी ने कहा, "वे मन में पति-पत्नी की भावना बना, वैसा व्यवहार कर भी सकते हैं।"

"श्रद्धा इस समय चौदह वर्ष की है। वह रजस्वला होने लगी है। मैं समझती हूँ कि चारु भी कौमार्यावस्था को प्राप्त हो चुका है। अतः जो भावना उनके मन में बन चुकी है, उसको बदलने से विकार उत्पन्न होगा।

"मैंने श्रद्धा से बात की है और वह अपने को चारु की होने वाली पत्नी मानती है। मैंने उसे समझाया है कि विवाह से पूर्व दोनों को एकान्त में नहीं बैठना चाहिये और परस्पर पति-पत्नी भाव की बातें नहीं करनी चाहियें। मैंने श्रद्धा के मन में यह बात बैठाने का यत्न किया है कि पति-पत्नी तो विवाह के उपरान्त ही बनने चाहियें। अन्यथा घोर पाप हो जाता है। पाप का फल इस जन्म में भी मिल सकता है और अगले जन्म में भी।

"बाबा ! मेरा यह कहना है कि इस अवस्था में बच्चे को अज्ञानी रखना उसके साथ अन्याय करना है और उसे उचित मार्ग पर रखने का यत्न धर्म-भावना से ही करना चाहिये। उन्हें धर्म-अधर्म और पाप-पुण्य के अर्थ समझाती रहती हूँ।

"मैंने एक-दो बार चारु से भी इस विषय पर बात की है, परन्तु उससे बात उतनी स्पष्ट नहीं हो सकी, जितनी कि श्रद्धा से हो सकी है।"

नलिनी गौरी की जीवन-मीमांसा को समझ गया। उसे यह समझ आया कि गौरी ने अपनी लड़की की शिक्षा, धर्म और पुण्य के आश्रय चलायी है। युक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से वह इस बात को ठीक मानता था, परन्तु इसमें सफ़लता किस सीमा तक मिल सकती है; कहा नहीं जा सकता था।

इस सूचना के उपरान्त उसने उसी सायंकाल चारु को अपने साथ भ्रमण के लिये ले जाते हुए कहा, "चारु! श्रद्धा बहन तुमसे कैसा व्यवहार रखती है?"

चारु ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "बहन! नहीं बाबा, वह बहन नहीं है। वह मुझसे विवाह की इच्छा करती है।"

"और तुम?"

"जब वह विवाह के लिये कहेगी तो मैं इन्कार क्यों करूँगा?"

"तो सब लड़कियाँ, जो तुमसे विवाह करना चाहेंगी, उनको पत्नी बना लोगे?"

"यह मैं जानता नहीं कि तब क्या करूँगा। हाँ, यदि श्रद्धा से कोई अधिक सुन्दर और सुघड़ हुई तो उससे भी विवाह करने में हानि नहीं मानूँगा।"

नलिनी की हँसी निकल गयी। हँसते हुए उसने कहा, "और यदि ऐसा किया तो श्रद्धा नाराज़ हो जायेगी।"

"पर पिता जी के विषय में तो ऐसा नहीं हो रहा। हमारी दो मातायें हैं। हम देख चुके हैं कि न तो सरस्वती माता जी और न ही ललिता माता जी पिता जी से लड़ती हैं।"

नलिनी समझ गया कि कलकत्ता का वातावरण वह नहीं रहा जो उसके यौवन-काल में था। बच्चे स्कूलों और कालेजों में पढ़ने से अपने विचार स्वयं निर्माण करने लगे हैं। इनके विचारों की दिशा ठीक अथवा गलत उनकी अपनी होती है। स्कूलों व कालेजों में अध्यापकों और छात्रों का सम्बन्ध गहरा नहीं रहा। अतः उनका ऐसे विषयों में प्रभाव बहुत कम होता है।

उसने समझाने का यत्न किया, "देखो चारु! तुम्हारे पिता की बात दूसरी है। तुम उसका इतिहास नहीं जानते। इसी कारण उसकी तुलना तुम्हारे साथ ठीक नहीं बैठेगी।

"मैं तुम्हें समझाता हूँ। तुम्हारे पास पाँच सौ रुपया है। वह तुमने श्रद्धा पर व्यय करना है। यदि उसमें से कुछ किसी दूसरे पर व्यय करोगे तो श्रद्धा का नाराज़ होना सम्भव है।"

"यदि मेरे पास," चारु ने भी युक्ति कर दी, "इतना कुछ हो जो एक से अधिक को खिलाने-पिलाने के लिये पर्याप्त हो तो कोई नाराज़ क्यों होगा?"

"यह नहीं होता। पति का पुरुषत्व धन की भाँति किसी कोश में जमा नहीं हो सकता। यह शरीर में बनता है और नित्य-प्रति शरीर को चालू रखने के लिये व्यय होता रहता है। यह जमा नहीं रह सकता। इस कारण इसे जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर की आवश्यकता से बचा कर किसी स्त्री को देते हो तो फिर दूसरे के लिये नहीं रह जाता। जब तक पुनः नव-निर्माण न हो, तब तक दूसरी स्त्री को तृप्त नहीं कर सकते। अतः एक से अधिक पत्नियाँ बनाने पर प्रायः कलह-क्लेश उत्पन्न होता है।"

चारु को एक बात पता थी। उसने कह दिया, "बाबा! भगवती को यही कष्ट है।"

"क्या कष्ट है?"

"उसका पुरुषत्व स्वतः नष्ट होता रहता है और वह कहता था कि वह विवाह के अयोग्य है।"

"परन्तु यह तो रोग है। तभी उसका मुख निस्तेज रहता है। उसे अपनी चिकित्सा करानी चाहिये।"

"वह डाक्टरों से चिकित्सा करा रहा है। परन्तु कल भी बता रहा था कि उसे लाभ नहीं हो रहा।"

"उसके विषय में उसकी माँ से बात करूँगा। यह सत्य ही भयंकर रोग है। इससे बचना चाहिये। उसमें पुरुषत्व शरीर-पोषण के लिये नहीं रहता और वह अनुभव करता है कि वह एक पत्नी को देने लिये भी नहीं रखता।

"यही बात एक से अधिक पत्नियों से विवाह करने पर होती है। प्रायः दोनों ही असन्तुष्ट रहती हैं। कभी तो दोनों मिल कर पति की जूतों से मरम्मत करती हैं और कभी परस्पर लड़ती हैं।

"इसका परिणाम यह होता है कि पुरुष अपना जीवन-कार्य चला नहीं सकता।"

"जीवन-कार्य क्या है?" चारुदेव ने बाबा का मुख देखते हुए पूछ लिया।

"हमारे एक शास्त्र में लिखा है कि परमात्मा ने इस संसार की सृष्टि करते समय यज्ञ रचाया था। वह यज्ञ है प्रकाश, वर्षा और अन्य प्राकृतिक वस्तुएँ। ये वस्तुएँ सबको समान-रूप में बाँटी जानी चाहियें।"

"परन्तु यह तो होता नहीं। यह हो सकता भी नहीं।"

"परमात्मा की ओर से उपलब्ध पदार्थ सबके लिये बने हैं। वे सबको मिलते रहने चाहियें। सामान्यतया उनके वितरण में बाधा नहीं होनी चाहिये।"

"और अपने धन का?"

"धन के विषय में पहले समझ लो कि यह है क्या? जब यह समझ जाओगे तो तुम इसके वितरण का रहस्य भी समझ जाओगे।" इस समय नलिनी को पार्क में घूमता हुआ एक मित्र मिल गया और चारु से बात समाप्त हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ११ :

नलिनी का कलकत्ता आना-जाना होता रहता था। इस प्रकार उसका अपने पुराने मित्रों से सम्बन्ध बना हुआ था। उसके प्रायः मित्र जानते थे कि वह एक समाचार-पत्र का सम्पादक रहा है। अतः सब उससे वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते थे। नलिनी इस स्थिति से उत्साह अनुभव नहीं करता था। चारुदेव के साथ भ्रमण करते हुए उसका एक मित्र, जिसे पण्डित विद्याविलास की पत्नी इन्द्राणी ने गोद ले पुत्र बनाया था, मिल गया। वह पण्डित जी का एक शिष्य ही था। बनारस से न्यायतीर्थ की उपाधि प्राप्त कर कलकत्ता में एक बंगाली विद्यालय में संस्कृत पढ़ाता था।

"बाबू साहब ! देश को क्या हो गया है ?" औपचारिक अभिवादन के उपरान्त पण्डित सुधाकर ने पूछ लिया।

नलिनी ने कहा, "यह नव-चेतना का परिणाम है। हम संस्कृत पढ़े-लिखों ने इसका अध्ययन नहीं किया और इसका विश्लेषण कर इसके गुण-दोष जनता के सामने रख सके नहीं। इस कारण जनता इसके पीछे पागल हो भाग रही है।"

"दादा ! यही तो पूछ रहा हूँ कि यह कल्याणकारी है अथवा अकल्याण-कारी ?"

"यह इस चेतना का लाभ उठाने वाले नेताओं पर निर्भर करता है। दुर्भाग्य यह है कि मुझे उन नेताओं में ज्ञान-शून्यता दिखाई दे रही है। मैं अमृतसर के कांग्रेस-अधिवेशन से आ रहा हूँ और इस अवसर पर मुझे अनेकों बड़े-बड़े नेताओं के हाव-भाव जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि प्रायः सब-के-सब नेता अपनी नेतागीरी छिन जाने के भय से त्रसित, वहाँ एकत्रित हुए थे। कुछ ने तो महान् त्याग और तपस्या से नेतापन प्राप्त किया है और वे यह समझ कि अब उस त्याग और तपस्या का लाभ उठाने का समय आ गया है, इस बात से भयभीत थे कि कहीं इस समय उनको पदच्युत किया गया तो वे कहीं के नहीं रहेंगे।"

"और महात्मा गांधी के विषय में क्या समझे हो ? क्या वे भी अपनी नेतागीरी के छिन जाने के भय से त्रसित हैं ?"

"गांधी जी को एक बात समझ में आ गयी है। वह यह कि आम जनता पर अपना प्रभाव स्थिर रहेगा तो लोग उनके विरुद्ध नहीं जा सकते। सामान्य जनता की कुछ भावनाएँ रहती हैं। गांधी जी उन भावनाओं को जान गये हैं और एक योग्य मनोवैज्ञानिक होने के नाते, वे उन भावनाओं को उभार कर अपनी नेतागीरी बनाये हुए हैं।

"भारत की भोली-भाली हिन्दू जनता के सामने धर्म, परमात्मा, सबमें एक ही आत्म-तत्व इत्यादि बातों का बार-बार उच्चारण कर, वे हिन्दुओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता बन गये हैं। अब उनके विरुद्ध किसी भी व्यक्ति को खड़े होने का साहस नहीं होता।

"देखो, सुधाकर! ये भावनाएँ मनुष्य को पाप से बचाने के साधन हैं। ये स्वयं साध्य अर्थात् लक्ष्य नहीं हैं, प्रत्युत लक्ष्य-प्राप्ति के उपाय हैं। कभी मार्ग साफ-सुथरा और विशाल होने पर भी मिथ्या दिशा को जाने वाला हो सकता है। इस कारण मार्ग की केवल सफाई और विशालता देख कर ही तो उस पर चला नहीं जा सकता।

"यह बात गांधी जी नहीं समझ सके। सुहृदयता एक सद्‌गुण होते हुए भी दुष्ट के साथ की जाने पर दुष्परिणाम उत्पन्न करने वाली हो सकती है। साँप को दूध पिलाने से वह साँप से कुछ अन्य नहीं बन सकता। इस कारण मानव-कल्याण के कुछ अर्थ नहीं, यदि मानवों में पात्र-कुपात्र का भेद न किया गया। कुपात्रों का कल्याण करने से सुपात्रों का अकल्याण होता है और यह ही समझने की बात है।

"हिन्दू-समाज इस रहस्य को न समझ मनुष्य-समाज में समानता, सुहृदयता और सद्व्यवहार के समाघोष पर लट्टू हो रहा है और परिणामस्वरूप दुर्जनों का ही कल्याण हो रहा है।

"इसमें दोष हमारा ही है। हम अपने शास्त्र-सम्मत विचार का प्रचार नहीं कर सके। गांधी जी तो शास्त्र के ज्ञाता हैं नहीं। वे बेचारे संस्कृत भाषा क्या, हिन्दी भी नहीं जानते। उन्हें शास्त्र का ज्ञाता मानना, हिन्दू-समाज की भूल है। इस पर भी वे शास्त्र के कुछ शब्दों को, बिना उनका अर्थ और भाव समझे, उच्चारण करते फिरते हैं और हिन्दू-समाज, गांधी जी को हिन्दू-धर्म और शास्त्र का ज्ञाता मान बैठी है और उसके पीछे लग पड़ी है। हिन्दू-समाज को शास्त्र के तत्त्व से अनभिज्ञ रखने का अपराध हमने ही किया है।"

सुधाकर नलिनी का बहुत मान करता था। उसकी माता इन्द्राणी भी नलिनी से अपने पुत्र-समान स्नेह रखती थी। इस कारण उसकी विवेचना पर सुधाकर उसका मुख देखता रह गया।

नलिनी ने बात बदल दी और पूछ लिया, "कभी राजा साहब के परिवार से भी मिलते हो?"

"हाँ; पूर्णिमादेवी जी कभी-कभी मेरी माता जी से मिलने आती हैं। उनके घर के अन्य प्राणी उनसे मेलजोल नहीं रखते।"

"क्यों?"

"पूर्णिमादेवी आनन्द से बहुत स्नेह रखती हैं और उसकी सदा सहायता करती रहती हैं। राजा साहब के उत्तराधिकारी नरेन्द्रमोहन आजकल सरकार के अनन्य भक्त बने हुए हैं और वे गजेन्द्रमोहन जी से बोलते भी नहीं थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजेन्द्र जी के देहान्त के उपरान्त नरेन्द्र इत्यादि ने मौसी पूर्णिमा को अपने घर में आने का निमन्त्रण दिया था, परन्तु वे नहीं आयीं।"

"यह तो मैं सब जानता हूँ। सुधाकर, कुछ अन्य कारण तो नहीं ?"

"अन्य कारण क्या हो सकता है ?"

"पूर्णिमा की लड़कियाँ प्रायः ब्रह्म-समाजी हैं।"

"हाँ; यह भी कारण है। नरेन्द्र उनको भी सरकार से बाग़ी समझता है। वह उन्हें कभी भी अपने घर में नहीं बुलाता।"

"और पूर्णिमादेवी आजकल कहाँ हैं ?"

"आजकल वे अपनी बड़ी लड़की के पास मैमनसिंह में हैं। एक सप्ताह के लगभग हुआ है, वे कलकत्ता आयी थीं। दो दिन यहाँ रह कर वापस चली गयी हैं।"

"कुछ विशेष काम से आयी थीं क्या ?"

"उन्होंने बताया तो नहीं, परन्तु वे यहाँ दास बाबू और सुभाषचन्द्र जी से मिली थीं। किस कारण ? यह पता नहीं। एक बात वे माता जी से कह रही थीं कि आनन्दकुमार हिन्दुस्तान आने वाला है।"

नलिनी के लिये यह एक समाचार था। वैसे तो आनन्द उसको अथवा अपनी माता को पत्र नहीं लिखता था। उसे सन्देह था कि पिताजी के राजनीतिक विचारों के कारण उनके पत्र खोल कर पढ़े जाते होंगे। वह अपना सम्बन्ध अपने पिता से नहीं रखता था, जिससे उन पर सरकार की किसी प्रकार से वक्र-दृष्टि न पड़ने लगे। इस पर भी आनन्द के समाचार नलिनी को मिलते रहते थे। वह अमेरिका में ग़दर-पार्टी को संगठित करने तथा उस पार्टी द्वारा युद्ध-काल में अंग्रेज़ी सरकार पर प्रहार कराने का यत्न करता रहता था।

नलिनी की इच्छा हो गयी कि आनन्द का और समाचार प्राप्त करे। इस पर भी उसने सुधाकर से इस विषय पर बात आगे नहीं चलायी।

"अच्छा, सुधाकर जी !" नलिनी ने कहा, "अपनी माता जी से मेरी चरण-वन्दना कहना। मैं अभी एक सप्ताह तक कलकत्ता में हूँ और मैं माला बहन की लड़की गौरी के घर में ठहरा हुआ हूँ। मेरे साथ मेरी धर्म-पत्नी सुवर्णा भी हैं।"

सबसे रुचिकर वार्तालाप दास बाबू से हुआ। विजय शान्ति-निकेतन गया हुआ था। नलिनी अपने बहुत से परिचितों से मिल चुका था। एक दिन गौरी ने टेलीफोन से दास बाबू से सम्पर्क बनाया और उनके दर्शन की इच्छा प्रकट कर दी।

"गौरी जी ! पुनः किसी मुकद्दमे में उलझ गयी हैं क्या ?" दास बाबू ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, दास बाबू ! बम्बई के एक सम्बन्धी यहाँ आये हुए हैं। वे आपके दर्शन करना चाहते हैं।"

"कौन हैं ?"

"बम्बई के 'बॉम्बे न्यूज़' के भूतपूर्व सम्पादक श्री नलिनीकान्त सरकार। वे आजकल कलकत्ता में हैं और बिना परिचय के आपसे मिलने में संकोच अनुभव करते हैं।"

"मैंने उनके विषय में सुना है। गांधी जी उनका ज़िक्र कर रहे थे। उन्हें कहो कि चले आयें। मध्याह्नोत्तर मैं लगभग अवकाश में होता हूँ।"

"मैं भी साथ आ रही हूँ। भाभी से तो भेंट हो सकेगी।"

"तो आ जाओ।"

इस प्रकार नलिनीकान्त उसी दिन तीन बजे चितरंजन बाबू के निवास-स्थान पर जा पहुँचा। अभिवादन के बाद उसने कहा, "मैंने आपको अमृतसर में देखा था। परन्तु किसी प्रकार का परिचय न होने के कारण बातचीत नहीं हो सकी।"

"वहाँ आप क्या कर रहे थे ?"

"जी; वहाँ आप जैसे नेताओं की सुख-सुविधा का प्रबन्ध करने में लीन था। मैं आपसे सर्वथा एकान्त में बात कर कुछ जानने की अभिलाषा रखता हूँ। अतः गौरी जी से कह कर आपको कष्ट देने चला आया हूँ।"

"हाँ, बताइये। क्या चाहते हैं ? मुझे गांधी जी ने बताया है कि आपके हाथ से 'बॉम्बे न्यूज़' निकलवाने में वे सफल हो गये हैं।"

"तो गांधी जी को यह ज्ञात है ?"

"ज्ञात हीं नहीं, वरन् उनकी योजनानुसार ही यह हुआ था। उनका कहना था कि रौलेट-आन्दोलन के समय आप अहिंसा की नीति का घोर विरोध कर रहे थे। अतः अहमदाबाद के कुछ धनी लोगों से बात कर उस समाचार-पत्र को क्रय कर लिया गया था। दुर्भाग्य यह है कि वह समाचार-पत्र उन लोगों से चल नहीं रहा और वे उसे बन्द कर देने का विचार कर रहे हैं।"

"यह मुझे पता नहीं।"

"उस पत्र के अतिरिक्त बम्बई में गांधी जी की विचारधारा के विरुद्ध कार्य करने वाली एक संस्था थी, होम-रूल लीग। उसकी जड़ों में भी गांधी जी ने तेल दे दिया है।"

"कैसे ?"

"वास्तव में भूल तिलक जी की तथा उनके कुछ साथियों की थी। उन्होंने होम-रूल लीग की कार्यकारिणी में गांधी जी और उनके पिट्ठू मोतीलाल जी को सम्मिलित कर लिया था। यह अमृतसर कांग्रेस से पहले की बात है। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी का कार्यकारिणी में लिये जाने का घोर विरोध किया था। परन्तु मेरी चल नहीं सकी। पिछले मास जब अक्टूबर में उस कार्यकारिणी की मीटिंग हुई तो गांधी जी दल-बल सहित वहाँ जा पहुँचे और उसके संविधान में परिवर्तन कराने में लग गये। वे चाहते थे कि होम-रूल लीग का उद्देश्य हिन्दुस्तान में होम-रूल अहिंसात्मक उपायों से स्थापित करना हो जाये। मिस्टर जिन्ना और उनके कुछ साथी तो इस परिवर्तन में कुछ तथ्य नहीं समझते थे।

"गांधी जी ने 'रूलिंग' से सब बाधाएँ हटा कर लीग का संविधान बदल दिया। गांधी जी का बहुमत था और जिन्ना इत्यादि को लीग छोड़नी पड़ी है।

"अतः गांधी जी की नीति का विरोध होम-रूल लीग की ओर से भी मिट गया है और होम-रूल लीग प्रभावहीन हो गयी है। परन्तु मुझे विस्मय यह हो रहा है कि तिलक जी ने गांधी जी के इस कार्य की निन्दा क्यों नहीं की?"

"और मुझे विस्मय हो रहा है कि अमृतसर-कांग्रेस में आपने अपनी पराजय को स्वीकार क्यों कर लिया है?" नलिनीकान्त ने पूछ लिया।

"तो क्या करता?"

"गांधी जी के हठ का उत्तर आप, पण्डित मोतीलाल और तिलक जी मिल कर देते तो गांधी जी का अयुक्ति-संगत व्यवहार चल न सकता।"

"परन्तु सुधारों के विषय में प्रस्ताव तो लगभग तिलक जी की इच्छा के अनुसार ही हो गया है।"

"जी नहीं! आपके समझौते के प्रस्ताव और तिलक जी के प्रस्ताव में आकाश-पाताल का अन्तर है। जहाँ तिलक जी का प्रस्ताव सुधारों का प्रयोग करते हुए सरकारी अधिकारियों की उद्दण्डता को चुनौती थी, वहाँ आपके समझौते वाले प्रस्ताव में तो सरकार से निवेदन किया गया था कि उसे हिन्दुस्तानियों की भावनाओं का आदर करना चाहिये।"

दास स्वयं भी मन में यही अनुभव कर रहा था। वह मन में दृढ़-संकल्प हो चुका था कि गांधी जी से कलाबाज़ी लगवायी जायेगी। परन्तु वह अपनी मोतीलाल जी से विचार की हुई योजना इस समाचार-पत्रों में लिखने वाले के सामने प्रकट करना नहीं चाहता था। नलिनी ने दास बाबू को चुप देख कहा, "मैं एक निवेदन करने के लिये आपसे मिलने की इच्छा रखता था। मेरी इच्छा है कि देश की राजनीति से इस महापुरुष को पृथक् करने में आप सक्षम हैं। आप यह कल्याण का कार्य कर दें।"

"गांधी जी की एक योजना है," दास ने अपनी योजना बताने के स्थान, गांधी की योजना बता दी। उसने कहा, "गांधी जी यह चाहते हैं कि ईमानदारी से सुधारों पर अमल किया जाये और सुधारों की अगली किस्त के लिये ब्रिटिश पार्लियामैण्ट को अर्जी-पर्चा किया जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु मैं जानता हूँ कि आप यह नहीं चाहते।"

"क्या नहीं चाहता ?"

"कि सरकार से अर्ज़ी-पर्चा किया जाये।"

"यह हमारे राष्ट्रीय मान-मर्यादा के विरुद्ध है।"

"जी। मैं यह मानता हूँ, परन्तु एक तो मैं यह जानना चाहता था कि आपने इस समझौते के प्रस्ताव पर स्वीकृति देकर अपना मार्ग क्यों अवरुद्ध कर लिया है ? दूसरे, जो कुछ भी आपकी आगामी योजना हो, उसकी सफलता की आशा तब ही हो सकती है, जब आप गांधी जी की नेतागीरी को एक सीमा तक छोटा कर सकें।"

"परन्तु उनकी जन-साधारण में ख्याति को कैसे कुतरा जा सकता है ?"

"मैं तो एक ही उपाय जानता हूँ, वह यह कि उनकी आधारभूत बातों का जनता में विरोध किया जाये।"

"उनकी आधारभूत बात क्या है ?"

"अहिंसा और सरकार की भक्ति।"

"परन्तु उनके विरुद्ध बात तो कोई सुनेगा नहीं।"

"मैं समझता हूँ कि देश के नेताओं को समझाने का यत्न किया जाये कि ये दोनों नीतियाँ अशुद्ध और देश का अहित करने वाली हैं।"

"आप क्या नीति चाहते हैं ?"

"मैं चाहता हूँ कि प्रान्तीय कौंसिलों में कांग्रेस का बहुमत हो जाये। जनता के मन्त्री योग्यतम और नीतिमान लोग हों। कृषि, उद्योग और शिक्षा में पूर्ण देश में एक नीति का निर्माण किया जाये और उसे द्रुत-गति से चलाया जाये।"

"परन्तु इसके लिये धन चाहिये।"

"धन सरकार आपको कभी नहीं देगी। इसके लिये आपको जनता के धनी-वर्ग से सहायता लेनी चाहिये। और मुझे विश्वास है कि देश का धनी-वर्ग इसके लिये धन देगा।

"सरकारी ढांचे के बाहर सब प्रान्तों के शिक्षा, उद्योग और कृषि-मन्त्रियों का एक संगठन बनाना चाहिये और जनता से करोड़ों एकत्रित कर शिक्षा इत्यादि को दिशा दी जाये।

"मैं यह भी चाहता हूँ कि शिक्षा का माध्यम बदल दिया जाये। अपने देशीय शास्त्र और ज्ञान-विज्ञान को युरोपीय तकनीकी ज्ञान से संयुक्त किया जाये।"

"मैं समझता हूँ कि आप ब्रिटिश सरकार के विषय में कुछ नहीं जानते।" दास बाबू ने मुस्कराते हुए कहा, "ये लोग मिनिस्टरों को डिसमिस कर देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब कौंसिलों में आपका बहुमत होगा तो ऐसा नहीं हो सकेगा। मैं इन कौंसिलों का और शिक्षा, उद्योग तथा कृषि-विभाग का भारतीय-करण चाहता हूँ।"

दास गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। नलिनी अपने कथन की प्रति-क्रिया देखता रहा। एकाएक दास बाबू ने पूछ लिया, "आप यहाँ कब तक हैं?"

"मैं अभी चार-पाँच दिन और हूँ।"

"अच्छा, मैं आपके कथन पर विचार करूँगा और तब आपसे समय निश्चय कर, इस विषय पर बात करूँगा।"

दास बाबू से पुनः भेंट नहीं हुई। नलिनी ने एक-दो बार मिलने का यत्न भी किया, परन्तु दास बाबू कलकत्ता से बाहर घूम-घूम कर कांग्रेस का प्रचार कर रहे थे।

: १२ :

विजय शान्ति-निकेतन से लौटा तो पुनः सोम और चारुदेव के विषय में विचार होने लगा। विजय शान्ति-निकेतन से एक बुरी खबर लाया था।

कलकत्ता में आते ही उसने पिता को बताया, "सोम ने गुप्त-रूप से ठाकुर-परिवार की एक लड़की कीर्ति से सम्बन्ध बना लिया है। मैं लड़की से भी मिला हूँ। वह गर्भवती हो चुकी है। इस समय तीसरे मास में जा रही है।"

"और तुम क्या निश्चय कर के आये हो?"

"मैं लड़की को कलकत्ता में अपने माता-पिता के पास चले आने का आग्रह कर आया हूँ और सोम को साथ ले आया हूँ। मैंने उसे कीर्ति के पिता बैद्यनाथ ठाकुर के घर भेजा है और कहा है कि उनसे विवाह का प्रस्ताव करे और वहाँ की प्रतिक्रिया से हमें सूचित करे।"

"तो यह विवाह होगा?"

"पिता जी! विवाह तो हो गया है। मैंने यही सोम और कीर्ति के मन पर अंकित करने का यत्न किया है। वे मेरे विचार को ठीक मानते हैं।"

"ठीक है, सोम को वहाँ से आने दो। फिर विचार कर लेंगे।"

सोम आया तो उसने बताया, "कीर्ति की माँ ने तो भरपूर गालियों से मेरे कथन का स्वागत किया। उसका पिता मेरी बात सुन, गम्भीर विचार में मग्न हो गया था। उसने मेरे ठहरने के स्थान का पता लिख लिया है और कहा है कि वह मुझे इस विषय पर लड़की से सम्मति कर कह सकेगा कि क्या होना चाहिये।"

"दो बातें हो सकती हैं। एक यह कि कीर्ति के माता-पिता यह सम्बन्ध स्वीकार न करें। दूसरी बात यह हो सकती है कि वे विवाह स्वीकार कर, तुम्हें पढ़ाई छोड़ किसी जीविकोपार्जन-कार्य में लग जाने के लिये कहें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा ! मैं सब विकल्प विचार कर चुका हूँ। अपने मन में प्रत्येक विकल्प का प्रतिकार भी मैंने सोच रखा है।"

"यह तुमने ठीक नहीं किया।" नलिनी का कहना था, "इससे यह स्पष्ट हो गया है कि तुम अति दुर्बलात्मा हो। पहली दुर्बलता का फल तो भोगना ही चाहिये, परन्तु उससे भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों से बचने का यत्न करना चाहिये।

"भविष्य में जीवन कैसा भी हो। एक बात निश्चय ही है कि तुम्हें इस दुर्बलता में सुधार करने का उपाय करना होगा। अन्यथा पग-पग पर ठोकर खाते हुए चले जाओगे। इससे जीवन दूभर हो जायेगा।"

"बाबा !" सोम ने कहा, "मैं आज जब उन परिस्थितियों पर अवलोकन करता हूँ जिनमें हमारी प्रथम भेंट हुई थी तो मैं समझता हूँ कि उसमें आत्मा का इतना दोष नहीं जितना कि वातावरण और परिस्थितियों का है। इस पर भी मैं अपने को सर्वथा निर्दोष नहीं पाता।"

"अब तो कीर्ति के अपने माता-पिता से बात कर अपनी इच्छा प्रकट करने पर ही आगे विचार किया जा सकता है।"

नलिनी समझता था कि भोगों की ओर प्रवृत्ति मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलता है और इस प्राकृतिक दुर्बलता का कोई भी इलाज शत-प्रतिशत सफल नहीं हो सकता। कारण यह कि इसका सम्बन्ध मनुष्य की प्रवृत्तियों से है और हर मनुष्य की प्रवृत्ति अलग-अलग है। असंख्य मनुष्य इस भूमण्डल पर रहते हैं और असंख्य ही प्रवृत्तियों के रूप हैं। अत: उनके व्यवहार को ठीक करने के लिये असंख्य ही उपायों की आवश्यकता है।

यही कारण है कि आदि-काल से मनुष्य ने अपनी इस दुर्बलता को दूर करने के उपाय विचारने आरम्भ किये हैं और प्रत्येक बार समस्या का नवीन स्वरूप सम्मुख उपस्थित होता है।

वह यह भी जानता था कि आदि काल से ही कुछ विचारक इस समस्या को सुलझाने का यह उपाय भी बताते आये हैं कि इस व्यवहार पर कुछ अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं। इसे स्वच्छन्द प्रवाह में बहने देना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य में यह स्वत: नियम में आ जायेगा और दूसरों को इसमें चिन्ता नहीं करनी चाहिये। इस पर भी एक बात में वह निश्चित-मन था कि एक व्यक्ति का यह अधिकार नहीं कि वह अपनी इच्छा किसी पर बलपूर्वक थोप दे। इस कार्य से सम्बन्धित सब व्यक्तियों को समझ-समझा कर ही अपना व्यवहार निश्चय करना चाहिये।

अपने इस पूर्व-विचारित मत को नलिनी ने सोम के सम्मुख स्पष्ट कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। उसने कहा, "देखो सोम! जो कुछ हुआ सो हुआ। तुम दोनों सज्ञान हो और मैं समझता हूँ कि तुम्हें अपने जीवन को चलाने में पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये, परन्तु यह बात तुमको भी समझ लेनी चाहिये कि तुम्हें किसी दूसरे की स्वतन्त्रता हनन करने का कोई अधिकार नहीं।

"यदि तुम अवयस्क होते तो तुम्हारे माता-पिता को तुम्हारी रक्षा का अधिकार था और वे तुम्हारे सज्ञान होने तक तुम्हें शारीरिक अथवा मानसिक बन्धनों में बाँध सकते थे; परन्तु अब सज्ञान होने पर वे तुम्हें सुझाव ही दे सकते हैं।

"अब मेरा सुझाव यह है कि तुम्हें और कीर्ति को ही यह निश्चय करना चाहिये कि तुम्हारा भविष्य में क्या व्यवहार रहेगा? आपस में और अपने सगे-सम्बन्धियों के साथ?"

"परन्तु बाबा! मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि मेरा और कीर्ति का मतभेद नहीं होगा। मतभेद होगा तो कीर्ति और उसके माता-पिता में। इस कारण यह उसके विचार का विषय है कि उस मतभेद में वह क्या करेगी। इसमें मैं उसे पूर्ण स्वतन्त्रता देना चाहता हूँ।"

बात अगले दिन ही हुई। कीर्ति ने उस दिन शान्ति-निकेतन से आना था। सोम रेल्वे स्टेशन पर गया और कीर्ति को उसके माता-पिता के व्यवहार के विषय में बता आया। उस दिन और उससे अगले दिन और फिर दिन-दिन कर एक सप्ताह तक जब कीर्ति का किसी प्रकार का समाचार नहीं आया तो सोम उसके पिता के घर में पहुँचा और वहाँ से वह यह समाचार लाया कि कीर्ति का विवाह एक बंगाली युवक से हो गया है।

उसने अपने पिता को बताया, "मैंने इस विवाह का प्रमाण माँगा था। इस पर कीर्ति के पिता ने कीर्ति के हाथ का लिखा एक पत्र मुझे दे दिया है। उस पत्र के पढ़ने से उसके पिता के कथन का समर्थन मिलता है।"

विजय ने पूछा, "और तुम क्या करना चाहते हो?"

"कुछ नहीं। मैं शान्ति-निकेतन लौट जाना चाहता हूँ और एक वर्ष के उपरान्त वहाँ की पढ़ाई समाप्त कर आपसे अपने भावी जीवन के कार्यक्रम पर विचार करने के लिये आऊँगा।"

इस प्रकार बात समाप्त हो गयी। चारुदेव के लिये भी नलिनी का यही सुझाव था। उसने कहा, "देखो चारु! अभी तुम्हारी आयु पन्द्रह वर्ष की है। तुम्हारा विवाह इक्कीस वर्ष की वयस् से पहले नहीं होगा। तब तक तुम्हें श्रद्धा से मेल-जोल न्यूनातिन्यून कर देना चाहिये और वह भी एकान्त में बिल्कुल नहीं। सदा उसकी माता के सामने ही मिला करो।

"इसके साथ ही तुम्हें अपना चित्त किसी अन्य रुचिकर कार्य में लीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना चाहिये, क्योंकि 'ऐन आइडल माइण्ड इज़ ए डैविल्स वर्कशाप' ।"[१]

कलकत्ता से वापस भुवाली को लौटते हुए रेल के डिब्बे में सोम और चारु के विषय में बातचीत होने लगी तो नलिनी ने कहा, "हमारे पूर्वजों ने लड़के और लड़कियों के गुरुकुल पृथक्-पृथक् रखने का निर्णय किया था और मैं समझता हूँ कि इस समस्या के आज तक के सब सुझावों से वह ही सर्वोत्कृष्ट था।

"गृहस्थ-जीवन से अलग और लड़के-लड़कियों को पृथक्-पृथक् रखकर ही इस प्रकार की समस्याओं से बचा जा सकता है।"

इन लोगों के भुवाली वापस पहुँचने के एक सप्ताह के भीतर सोम एक लड़की को लेकर वहाँ आ पहुँचा। उन्हें देख नलिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "तो तुम आ गये हो ? और यह साथ कौन है ?"

"बाबा ! यह कीर्तिदेवी है। इसे आशीर्वाद दो। मैं इसको विवाह कर साथ ले आया हूँ।"

"परन्तु तुम तो कहते थे कि इसका विवाह किसी अन्य से हो चुका है ?"

"वह सूचना गलत थी।"

"और तुमने इससे विवाह कब और कहाँ किया है ?"

"आपके चले जाने के उपरान्त मुझे इसका एक पत्र मिला था। उसके अनुरूप मैं इसको पुन: शान्ति-निकेतन में ले गया। वहाँ गुरुदेव के समक्ष वेद-मन्त्रों से हमारा विवाह हो गया है। विवाह करते ही मैंने इसे यहाँ लाना उपयुक्त समझा है।"

"क्या प्रमाण है इसका ?"

"वहाँ का सर्टिफिकेट मेरे पास है।"

इस पर पूर्ण परिवार की गोष्ठी हुई। विजय बम्बई किसी व्यवसाय की खोज में गया था और सरस्वती उसके साथ थी। सोम की माता ललिता भुवाली में थी।

पारिवारिक गोष्ठी में नलिनीकान्त, सुवर्णा, प्रज्ञा, प्रमा, मीनाक्षी और ललिता थीं। सर्व-सम्मति से सोम का विवाह स्वीकार किया गया और फिर उनके विषय में विचार होने लगा कि वे अब क्या करें ?

नलिनी का विचारित मत था कि कीर्ति भुवाली में रहे। हाँ, सोम को कहीं काम-धन्धा ढूँढने के लिये भुवाली से बाहर यत्न करना चाहिये।

---

१. कार्य से रिक्त मन शैतान का कारखाना होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

समय व्यतीत होता गया। हिन्दुस्तान के वायुमण्डल में विद्रोह की भावना भर रही थी। हिन्दू सरकार के व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं थे। पंजाब के मार्शल-लॉ के अफसरों की किसी प्रकार की भी भर्त्सना करने के स्थान, सरकार द्वारा उनकी प्रशंसा की गई थी और उनको पूरी पैंशन दे-देकर हिन्दुस्तान से विदा किया जा रहा था। इंगलैण्ड में जलियाँवाले बाग़ के हत्यारे जनरल डायर के भव्य स्वागत की तैयारी हो रही थी। उसे एक लाख पौण्ड की भेंट देने की घोषणा की गई थी।

मुसलमान खिलाफत के विषय में ब्रिटिश सरकार का घोर विरोध कर रहे थे। जर्मनी और उसका साथी टर्की भी पराजित हो गये थे। टर्की का खलीफा भाग कर रोम चला गया था। वहाँ से वह स्विटज़रलैण्ड जा पहुँचा था।

टर्की में यद्यपि राज्य करने के लिये वहाँ के अधिकारियों की एक कौंसिल बना दी गयी थी, परन्तु वास्तविक शासन ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों के हाथ में था और मित्र राष्ट्रों के साथ टर्की की शासक कौंसिल की संधि की चर्चा थी। दूसरी ओर कमाल पाशा टर्की में प्रगतिशील राज्य स्थापित करने के लिये सेना तैयार कर रहा था।

हिन्दुस्तान के मुसलमान चाहते थे कि खलीफा का पद बना रहे और जो खलीफा बने, वह टर्की का शासक हो। टर्की में अस्थायी शासक कौंसिल और अता तुर्क कमाल पाशा, मज़हब को शासन से पृथक् करने पर तुले हुए थे। ब्रिटिश अधिकारी उनकी सहायता कर रहे थे और उनसे ही संधि करने का यत्न कर रहे थे। यह हिन्दुस्तानी मुसलमानों को पसन्द नहीं था। इस कारण वे भी असन्तुष्ट थे।

इसके साथ ही कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार के सामने घुटने टेक दिये थे। कांग्रेस ब्रिटिश सरकार के कोप से डर कर जहाँ पंजाब के मार्शल-लॉ अधिकारियों की निन्दा के साथ कुछ-एक हिंसक काम करने वाले हिन्दुस्तानियों की भी निन्दा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना अपना धर्म समझ बैठी थी, वहाँ अधूरे अधिकारों के लिये ब्रिटिश अधिकारियों का धन्यवाद करती फिर रही थी।

सुधारों के विषय में गांधी जी के प्रस्ताव को न तो मुसलमानों ने पसन्द किया था और न ही हिन्दुओं ने। यद्यपि उनसे न-पसन्द किये जाने का कारण भिन्न-भिन्न था, तथापि लक्ष्य दोनों का सरकार की निन्दा थी।

एकाएक समाचार आया कि असन्तोष को प्रकट करने वालों में सी० आर० दास और पण्डित मोतीलाल थे। सी० आर० दास के विषय में तो नलिनी को समझ में आ रहा था, परन्तु पण्डित मोतीलाल के विषय में यह विख्यात था कि वे अंग्रेज़ी सरकार के अनन्य भक्त हैं। उनके विषय में अमृतसर-कांग्रेस प्रस्ताव को रद्द करने का यत्न विस्मयजनक था।

कांग्रेस में बदलती स्थिति के विषय में बम्बई से विजय ने एक लेख में लिखा था कि अमृतसर के सुधारों से सम्बन्धित प्रस्ताव को 'डिनामाइट' किया जा रहा है। विजय ने लेख के अन्त में लिखा था कि पंजाबी में कहावत है कि 'नानी ने विवाह किया तो भूल की और विवाह कर तलाक दिया तो और भी भारी भूल की।' पहले तो कांग्रेस ने इन राज्य में तुच्छ सुधारों के लिये ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्ति के मनोद्‌गार प्रकट किये और अब सरकार के अन्य कामों के लिये उसकी निन्दा की जा रही है।

विजय ने गांधी जी की घोर निन्दा की थी। उसका कहना था कि उन्होंने प्रतिक्रियात्मक सहयोग की निन्दा कर ब्रिटिश सम्राट् के भक्त होने की घोषणा की और अब उनको सरकारी अधिकारियों के क्रुद्ध होने पर रोष हो रहा है।

इसी लेख में विजय ने यह रहस्योद्‌घाटन किया कि गांधी जी के इस रोष में कुछ नेताओं की महत्वाकांक्षा कारण है। एक इलाहाबाद और दूसरे कलकत्ता के वकील अमृतसर में अपना किसी प्रकार का स्वागत तो दूर रहा, वरन् अपनी पूर्ण अवहेलना होती देख छटपटा रहे हैं। उन्हें तिलक तथा मौलानाओं का भव्य स्वागत पसन्द नहीं आया। वैसे तो वे गांधी की कलाबाज़ियों पर भी सन्तुष्ट नहीं हैं। इस कारण वे अपने नेता बनने का मार्ग प्रशस्त करने के लिये देश की वर्त्तमान बेचैनी की स्थिति से लाभ उठाना चाहते हैं।

बम्बई से एक 'हिन्दू पॉयैण्ट ऑफ व्यू' नाम का साप्ताहिक पत्र निकलने लगा था। यह विजय के प्रयास का ही फल था। इसमें सम्पादकीय के अतिरिक्त एक मुख्य लेख विजय के नाम से हुआ करता था। उसकी एक प्रति भुवाली में आया करती थी।

नलिनी को इलाहाबाद के एक वकील का नाम पढ़कर विस्मय हुआ। वह अमृतसर में देख आया था कि कांग्रेस के प्रधान पण्डित मोतीलाल को उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन में कुछ भी गणना नहीं थी। वहाँ गांधी, तिलक, अली भाईयों की जय-जयकार हुई थी। अतः उसे इलाहाबाद के वकील के ईर्ष्या से भड़क उठने की बात भी समझ में आने लगी।

अगले सप्ताह समाचार मिला कि कांग्रेसी नेता मुसलमानों में असन्तोष पर एक अन्य आन्दोलन आरम्भ करने का यत्न कर रहे हैं और इसमें इलाहाबाद के एक वकील सबसे अधिक हाय-तौबा मचा रहे हैं।

विजय ने अपने इस लेख में लिखा था कि खिलाफत का हिन्दुस्तान से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। खिलाफत की प्रथा इस्लाम के प्रचार से सम्बन्ध रखती है और इस्लाम के प्रचार का हिन्दुस्तान के हिन्दुओं को बहुत ही कड़ुवा अनुभव है। खिलाफत ने प्राचीन काल में भूमण्डल के अन्य अनेकों देशों में अति भयंकर अत्याचार किये थे। अतः ऐसे पद को आज के वातावरण में बनाये रखना, हिन्दुओं से पसन्द नहीं किया जाना चाहिये।

इसी प्रकार के लेख पूना के केसरी में भी प्रकाशित हुए थे। परन्तु जब गांधी जी की सहानुभूति खिलाफत-आन्दोलन के पक्ष में हुई तो हिन्दू-मत खिलाफत के पक्ष में होने लगा।

दिल्ली के एक सम्वाददाता ने यह समाचार दिया था कि गांधी जी को पण्डित मोतीलाल जी का एक पत्र मोतीलाल जी के इकलौते बेटे जवाहर-लाल ने दिया है। वह पत्र गांधी जी को पंजाब में किसी नगर में दिखाया गया। गांधी जी मार्शल-लॉ के पीड़ितों की साक्षी लेने पंजाब में दौरा कर रहे थे।

ऐसा कहा जाता है कि उस पत्र में पण्डित मोतीलाल जी ने गांधी जी को सचेत करते हुए उनको धमकी दी है कि यदि वे मालवीय और अन्य राजभक्त नेताओं से सहयोग करेंगे तो उनकी दशा भी वही कर दी जायेगी जो ऐनिबिसेंट की कर दी गयी है।

इस पत्र के मिलने पर ही गांधी जी दिल्ली में मुसलमानों के एक 'डैपुटेशन' के मुख्य-प्रवक्ता बन, वाइसराय से मिलने के लिये तैयार हुए हैं।

इसके उपरान्त बनारस में ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। विजय इसमें पत्र-प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुआ। वह यह देख चकित रह गया कि गांधी जी और मोतीलाल जी की गुप्त गोष्ठियाँ चल रही हैं।

इस सभा में मुख्य प्रस्ताव था खिलाफत के विषय में किसी प्रकार का आन्दोलन खड़ा करने का, परन्तु प्रस्ताव स्वीकार नहीं हुआ। कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को खिलाफ़त को भारत का लक्ष्य बनाना पसन्द नहीं था।

इसी मीटिंग में इलाहाबाद में एक विशेष सर्वदलीय सम्मेलन बुलाकर खिलाफत के विषय में आन्दोलन करने का प्रस्ताव किया गया।

विजय इलाहाबाद की कान्फरेंस के बाद अपने माता-पिता से मिलने भुवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला आया। वह मार्ग में एक दिन कानपुर और दो दिन लखनऊ में ठहरा था। जिस दिन वह भुवाली पहुँचा, 'हिन्दू पॉयेंण्ट आफ व्यू' का नवीनतम अंक वहाँ पहुँच चुका था। उसमें उसका लेख 'कांग्रेस गोइंग इट्स नैचुरल वे' प्रकाशित हुआ था।

नलिनी अपनी कोठी के ड्रायंग-रूम में बैठा यह लेख पढ़ कर गम्भीर विचार में मग्न था कि कोठी में विजय के पहुँचने का शब्द सुनायी दिया। ललिता को भी विजय की आवाज भीतर गयी थी और वह भागी-भागी वहाँ आ गयी थी। नलिनी ने उठकर ड्रायंग-रूम से बाहर देखा तो विजय को टट्टुओं से उतरता देख बाहर चला आया। विजय को सबसे पहले सुवर्णा ने देखा था। वह उस समय बरामदे में ही खड़ी थी।

जब नलिनी बाहर आया तो विजय ने अपनी माता के चरण-स्पर्श किये और फिर ललिता से हाथ जोड़ मिला। वह पिता जी को बाहर आते देख लपक कर आगे बढ़ा और पिता जी के चरण-स्पर्श करने लगा तो नलिनी ने कह दिया, "मैं अभी-अभी तुम्हारा लेख पढ़ रहा था।"

"तो वह अंक यहाँ पहुँच गया है ?"

"हाँ; आज की डाक में ही आया है और सबसे पहले मैं उसे ही पढ़ता हूँ।"

दोनों भीतर को चल पड़े। सुवर्णा टट्टू से सामान उतरवा रही थी। ललिता भी पति के पीछे-पीछे ड्रायंग-रूम में पहुँच गयी। वहाँ प्रज्ञा इत्यादि भी आ गयी थीं। जब प्रभा वहाँ पहुँची तो विजय ने उसे कहा, "भाभी! तुम्हारे लिये एक शुभ समाचार है। आनन्द अगले सप्ताह कलकत्ता पहुँच रहा है।"

प्रभा का लड़का वेदप्रकाश लाहौर में पढ़ रहा था और वह भुवाली में अकेली अनुभव करती थी। विजय से समाचार पा उसने केवल यह कहा, "शोर तो बहुत सुन रही हूँ, परन्तु चाँद अभी दिखायी नहीं दिया। भैया, मुझे तो कोई पत्र नहीं आता, तुम्हें किसने बताया है ?"

"पर मैं टोकियो का समाचार लाया हूँ। वह वहाँ से चल एक सप्ताह में कलकत्ता आने वाला है।"

प्रभा की आँखें मनोद्गारों के आँसुओं से भर आयी थीं। वह अति प्रसन्न प्रतीत होती थी।

उसी दिन पिता-पुत्र पुस्तकालय में बैठे देश की अवस्था पर विचार करने लगे तो विजय के नवीनतम लेख पर चर्चा चल पड़ी। विजय ने बताया, "मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि गांधी जी को पण्डित मोतीलाल जी ने १८ फरवरी को एक पत्र लिखा था। इस पत्र ने ही गांधी जी के जीवन का कांटा बदला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसी मास के अन्त में बम्बई में खिलाफत-कान्फरेंस हुई थी। इसमें ब्रिटिश पार्लियामैण्ट को चेतावनी दी गई थी कि केवल मुसलमान ही नहीं, वरन् समस्त हिन्दू जनता इस खिलाफत-आन्दोलन में सम्मिलित होगी और इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

"इस कान्फरेंस में गांधी जी उपस्थित नहीं थे और अभी तक किसी भी हिन्दू अथवा राजनीतिक संस्था ने खिलाफत के विषय में रुचि नहीं ली थी।

"परन्तु पण्डित मोतीलाल जी के इस पत्र के उपरान्त गांधी जी इस आन्दोलन में रुचि लेने लगे हैं और हिन्दू-मन भी खिलाफत-आन्दोलन के अनुकूल होने लगा है। १९ मार्च को गांधी जी ने एक घोषणा-पत्र प्रकाशित करवाया था। इसमें पहली बार गांधी जी ने कहा कि वाइसराय तथा सैक्रेटरी ऑफ स्टेट ने यदि न्याय न किया तब असहयोग आन्दोलन होगा। इस घोषणा-पत्र में असहयोग की दिशा भी वर्णन की गयी है।"

विजय ने आगे बताया, "गांधी जी के व्यवहार में यह परिवर्तन मोतीलाल जी की धमकी के उपरान्त ही दृष्टिगोचर हुआ है।

"तिलक जी ने गांधी जी के होम-रूल लीग पर अधिकार कर लेने के उपरान्त 'डैमोक्रेटिक पार्टी' के नाम से एक नयी संस्था बनायी है। इस दल के घोषणा-पत्र में लिखा गया है कि यह पार्टी मुसलमानों की माँग कि खिलाफत का प्रश्न उनके अपने विश्वासों और सिद्धान्तों के आधार पर सुलझाया जाए, का अनुमोदन करती है।"

विजय का कहना था—"इस प्रकार तिलक जी ने खिलाफत से अपनी सहमति कांग्रेस से भी पहले दे दी है और हमारे हिन्दू-विचारों को भारी ठेस पहुँचायी है।

"तिलक जी का गांधी जी से मतभेद केवल आन्दोलन के उपायों और ढंग से है, उद्देश्यों से नहीं। तिलक ज़ी कौंसिल में जाकर देश में सुधारों से लाभ उठाना चाहते हैं और गांधी जी सुधारों को गौण मान, जातीय-संगठन को मुख्य मानते हैं।

"मोतीलाल जी के उक्त पत्र से पहले गांधी जी सुधारों को अमल में लाने के पक्ष में थे। अब वे इनको अनावश्यक मान, खिलाफत के प्रश्न पर आन्दोलन के पक्ष में हो रहे हैं।

"बनारस में यह चर्चा खूब जोरों पर थी कि सुधारों की बात छोड़ भी दी जाये, तब भी खिलाफत और स्वराज्य में मुकाबला तो है ही कि किसे अपने आन्दोलन का आधार बनाया जाये?

"सी० आर० दास ने यह कहा था कि पंजाब के मार्शल-लॉ के आततायी अधिकारियों को दण्ड दिलवाना ही स्वराज्य-प्राप्ति है। परन्तु बनारस में एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए नेताओं को यह बात व्यर्थ प्रतीत हुई थी।

"इलाहाबाद मोतीलाल जी का अपना नगर है। इस पर भी उनका प्रभाव मुसलमानों में अधिक है। खिलाफत के प्रश्न पर पढ़े-लिखे हिन्दुओं में उत्साह नहीं था। अब गांधी जी का सुझाव है कि कांग्रेस का एक विशेषाधिवेशन बुलाया जाये और उनका असहयोग-आन्दोलन का प्रस्ताव उसमें पारित कराया जाये।

"मैं इसका अर्थ यह समझा हूँ कि वहाँ खुले अधिवेशन में यह आन्दोलन का प्रस्ताव पारित करवा कर गांधी जी कांग्रेस के कन्धों पर सवार हो, देश में क्रान्ति लाने का यत्न कर रहे हैं।"

"और इसका परिणाम क्या हो सकता है?" नलिनी का प्रश्न था।

"मैं यह समझता हूँ कि यह आन्दोलन अहिंसात्मक तो रहेगा नहीं। इसमें मुख्य प्रश्न खिलाफत का है। इस कारण इसमें मुसलमान आगे आकर भाग लेंगे। मुसलमान अहिंसा को साधन मानते हैं, उद्देश्य नहीं। साथ ही यह उनकी प्रकृति में नहीं कि धैर्य और क्षमा के आधार पर आन्दोलन चलायें। अत: आन्दोलन में हिंसा होगी और भरपूर होगी। उस समय गांधी जी इस आन्दोलन को इसके स्वाभाविक परिणामों पर पहुँचने देंगे अथवा इसे बीच में ही रोक लेंगे, कहना कठिन है। पहले भी तो वे ऐसा कर चुके हैं। रौलेट ऐक्ट का आन्दोलन वापस ले लिया था। पण्डित मोतीलाल तथा उनके साथी मुसलमानों का यह कहना है कि इस बार आन्दोलन बन्द नहीं होगा; इस बार 'फाईट टू फिनिश'[1] होगी।"

अब नलिनीकान्त ने अपना अनुमान बता दिया। उसने कहा, "तुम्हारा यह कहना ठीक है कि यह आन्दोलन अहिंसात्मक नहीं रहेगा। परन्तु अहिंसा करने वाले प्राय: मुसलमान होंगे। वे गांधी जी के तथा उनकी मनोवृत्ति के अनुयायी नहीं हैं। इस कारण वे हिंसा पर उतर आयेंगे। गांधी जी उन्हें रोक नहीं सकेंगे। मुसलमान उनका कहना नहीं मानेंगे। यद्यपि उनकी श्रद्धा-भक्ति उनके अपने समुदाय के नेताओं पर भी नहीं है। उनसे अधिक वे अपनी स्वकल्पित शरा की बात मानेंगे। परन्तु उनके नेता भी तो अहिंसात्मक रहने के लिये वचनबद्ध नहीं हैं।

"परन्तु एक बात होनी स्वाभाविक प्रतीत होती है। हिंसा सदैव दुर्बल के विपरीत चलती है। इस कारण हिंसा भारत में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध न होकर दुर्बल हिन्दुओं के विरुद्ध प्रयोग की जायगी। ब्रिटिश राज्य के पास गोली, बन्दूक, तोपें हैं। हिन्दू के पास कुछ भी नहीं। साथ ही यह हिंसा हिन्दुओं में भी उस समुदाय के विपरीत प्रयोग होगी, जो हिन्दुओं में भी दुर्बल है। मेरा अभिप्राय है कि व्यापारी-वर्ग अथवा स्त्री-वर्ग। जिस वर्ग से विरोध की सम्भावना होगी,

---

१. अंत तक संघर्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके विरुद्ध हिंसा नहीं होगी। हाँ, यह हो सकता है कि उसके विपरीत हिंसात्मक कार्य करने के लिये मुसलमान शक्तिशाली के साथ मिलकर दुर्बल को लूटना आरम्भ कर दें। मेरा अभिप्राय यह है कि हिंसा करने वाले मुसलमान सरकार के साथ मिलकर दुर्बल हिन्दू-समुदाय पर लूट-मार मचा दें।

"ऐसी स्थिति में सरकार गांधी के चेले हिन्दुओं को लूटने दे सकती है। यह उन्हें तब ही रोकेगी, जब मुसलमान ब्रिटिश सत्ता को हानि पहुँचाने लगेंगे।"

"पिता जी!" विजय ने पूछ लिया, "आपका मतलब है कि हिन्दू-मुसलमान बलवे होने लगेंगे?"

"बहुत बड़े स्तर पर। जितना और जहाँ असहयोग आन्दोलन प्रबल होगा, उतने ही प्रबल हिन्दू-मुसलमान फसाद वहाँ होंगे।"

विजय माता-पिता से मिलकर बम्बई अपने काम पर चला गया। इस बार ललिता उसके साथ थी। सरस्वती वहाँ पर हिन्दू 'पॉयेण्ट आफ व्यू' के प्रकाशन इत्यादि का प्रबन्ध कर रही थी।

विजय को एक परिवर्तन प्रतीत होने लगा था। जहाँ उसके दिल्ली, बनारस जाने से पूर्व उसके कार्यालय में ग्राहकों, सहायकों और बम्बई में कार्यकर्त्ताओं की भीड़ लगी रहती थी, वहाँ दो महीने में ही वातावरण बदलने लगा था। वह बम्बई में पहुँचा तो उसे पता चला कि उसके साप्ताहिक-पत्र के लिये विज्ञापन मिलने में कठिनाई होने लगी है। उसके कर्मचारी गांधी जी तथा अन्य कांग्रेसी एवं मुसलमान नेताओं के भाषण सुनने जाते थे और समाचार-पत्र का कार्य गौण मानते थे।

जिस दिन विजय बम्बई पहुँचा, गांधी जी और अली भाईयों का व्याख्यान चौपाटी पर होने वाला था। वह यह देख विस्मय करने लगा कि उसका छापा-खाना और कार्यालय रिक्त पड़ा है। सरस्वती वहाँ अकेली बैठी अगले दिन छपने वाले पत्र के प्रूफ देख रही थी।

छापाखाना और कार्यालय के ऊपर ही उसका निवास-स्थान था। वह वहाँ पर अपना बिस्तर इत्यादि रख, जब कार्यालय में आया तो सरस्वती को अकेले बैठे काम करते देख पूछने लगा, "सब लोग कहाँ गये हैं?"

"आज गांधी जी और अली भाईयों का चौपाटी पर व्याख्यान है। सब लोग वहाँ गये हैं और सोम उनके साथ है। वह कहता था कि उसने अपना नाम स्वयंसेवकों में लिखा दिया है और वह मीटिंग में प्रबन्ध के लिये जा रहा है।"

विजय सरस्वती के सामने मेज़ के दूसरी ओर बैठ गया था। उसने पूछ लिया, "यह कांग्रेस का ज्वर यहाँ भी आ पहुँचा है?"

"इस ज्वर का प्रभाव केवल कर्मचारियों और आपके परिवार वालों पर ही नहीं, वरन् आपके पत्र की बिक्री तथा इसको मिलने वाले विज्ञापनों पर भी हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अब तो खापर्डे प्रभृति नेता भी हमारे पत्र की नीति पर सन्देह करने लगे हैं।''

विजय मुख देखता रह गया। बात सरस्वती ने ही जारी रखी। उसने कहा, ''बनारस से लौटते हुए खापर्डे आपको पूछते हुए यहाँ आये थे। आपको यहाँ न देख वे कुछ निराश प्रतीत हुए तो मैंने पूछ लिया, 'बाबू साहब! कुछ विशेष काम है तो बताइये? मैं यदि कुछ सेवा कर सकूँ तो कर दूँगी।'

''इस पर वे कुछ विचार कर कहने लगे, 'मैं विजय जी से आपके पत्र की नीति के विषय में विचार करना चाहता था।'

''मेरा प्रश्न था, 'आपका क्या विचार है?'

'' 'मैं समझता हूँ कि इसे अब बदल लेना चाहिये।'

'' 'इसमें कौन-सी बात आप बदलना चाहते हैं?'

''वे बोले, 'मैं चाहता हूँ कि आपका यह पत्र तिलक जी का समर्थक हो जाना चाहिये।'

''मैंने अभी भी उनके आशय को न समझते हुए पूछ लिया, 'तिलक जी की कौन-सी बात का समर्थन हमसे चाहते हैं, जिसका हमने अभी तक नहीं किया?'

''इस पर वे बोले, 'आप खिलाफत का विरोध करना छोड़ दें।'

''मेरा यह कहना था, 'हमने इस आन्दोलन का विरोध तो किया नहीं। हाँ, समर्थन नहीं किया। मैं समझती हूँ कि इस प्रकार के निरर्थक आन्दोलन के लिये धन और परिश्रम व्यय नहीं होना चाहिये।'

''उनका कहना था, 'यह प्रश्न सात करोड़ मुसलमानों की भावना का है। यदि हमने उनके साथ रहना है तो उनकी भावनाओं का हमें आदर करना चाहिये।'

''मैंने कुछ उद्विग्न भाव में कहा, 'हमारा पत्र किसी भी मुसलमान की भावना का विरोध नहीं करता। हमारा तो यह कहना है कि यह भावना अशुद्ध है। हमारे पास इससे अधिक आवश्यक कार्य करने को है और वह है स्वराज्य-प्राप्ति। उसके लिये इस समय मुसलमानों से सहयोग के स्थान, ब्रिटिश पार्लियामैण्ट से सहयोग करना चाहिये।

''हम समझते हैं कि मुसलमान को उनकी अपनी किस्मत पर छोड़, प्रान्तीय कौंसिलों की सब हिन्दू-सीटों पर सरकारी पिट्ठुओं को पराजित कर अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिये। इस प्रकार नौ प्रान्तों में से सात में हम बहुमत पा जायेंगे। तत्पश्चात् शिक्षा, उद्योग और कृषि के विषयों में देश को उन्नत करने में सारा ध्यान लगाना चाहिये।

''गांधी जी के पीछे भाग कर हम देश का अकल्याण ही करेंगे। गांधी जी स्वयं व्यवहारिक राजनीति से अनभिज्ञ होने के कारण देश को मिथ्या मार्ग पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले जा रहे हैं।'

"तिलक जी के विषय में मैंने कह दिया, 'हम उनका विरोध नहीं कर रहे। परन्तु हम मुसलमानों की मज़हबी बातों में जहाँ विरोध नहीं करते, वहाँ उनका समर्थन भी नहीं कर सकते। तिलक जी ने अपने दल के घोषणा-पत्र में लिखा है कि वे खिलाफत के मसला का, उनकी भावनाओं और कुरान के आदेशों के अनुसार होने पर समर्थन करते हैं।

" 'हमारी नीति यह है कि हम न विरोध करते हैं और न समर्थन करते हैं। इस बात से हमारा सम्बन्ध नहीं है।'

" 'तब तो हिन्दू-मुसलमान में सुलह नहीं होगी।'

" 'खिलाफत के विषय में समर्थन से सुलह के स्थान विग्रह बढ़ेगा।"

"इस पर वे यह कह कि वे फिर आयेंगे, चले गये। जाते हुए उन्होंने एक वाक्य कहा है, जो मेरे मस्तिष्क में हलचल मचा रहा है। वह है 'नीति को समझो।' "

विजय ने मुस्कराते हुए कह दिया, "सरस्वती! पिता जी से इस विषय पर मेरा लम्बा वार्त्तालाप हुआ है। उनका कहना है कि नीति में समझौते वे करते हैं, जो कार्य करने की सामर्थ्य रखते हों। रियायतें वे देते हैं, जो देने के लिये कुछ रखते हैं। इस समय हिन्दू-समाज न कुछ करने की स्थिति में है और न ही यह देने के लिये कुछ रखता है। इस समय हिन्दू का मुसलमान के साथ नाता अथवा किसी प्रकार की रियायत करना उस निर्धन व्यक्ति की भाँति है, जो किसी नीलामी में खड़ा, बिना जेब में एक भी पैसा रखते हुए, बढ़-चढ़ कर बोली देने लगे। वस्तुस्थिति यह है कि हमारे पास बोली देने के लिये कुछ है नहीं।

"उनका अनुमान है कि कि देश के लिये बहुत कठिन घड़ी आ रही है।"

"परन्तु वस्तुस्थिति यह है यदि जनता का यही व्यवहार रहा तो हमें अपना पत्र बन्द करना पड़ेगा। इसका मासिक व्यय दस हज़ार रुपया है और पिछले मास आय सात हज़ार हुई है। इस मास आय में और कमी होने की आशा है।"

"कुछ चिन्ता नहीं। मैं समाचार-पत्र बन्द कर दूंगा। समाचार-पत्र चलाना धर्म नहीं है। सिद्धान्त और बुद्धि से विचारित बात पर आरूढ़ रहना धर्म है।"

"मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी आवाज़ में कोई भी सम्मिलित नहीं होगा।"

सरस्वती को उदासीन भाव में देख विजय ने कह दिया, "चिन्ता नहीं। मेरा तो यह समाघोष है कि कोई चले न चले बावरे, तुझको तो चलना होगा। सो मैं अपनी राह पर चलता जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

सोमदेव बम्बई में किसी स्थान पर सेवा-कार्य करने के लिये आया था। अतः विजय ने उसे छापाखाना में ही काम करने पर लगा दिया था।

दो सौ रुपया महीना वेतन पर सोम कार्य कर रहा था। वह जनवरी मास के अन्त में वहाँ आया था और अब जून का आरम्भ था। इन चार महीनों में उसकी रुचि कांग्रेस के प्रचार की ओर हो रही थी। पहले तो वह तिलक जी का भक्त था और पीछे वह तिलक जी के विचार को छोड़ असहयोग की ओर चल पड़ा था। छापाखाना के कर्मचारी तो पहले ही गांधीवादी हो रहे थे। अतः पत्र के काम में ढील होने लगी और सोम अपने पूर्ण कर्मचारी-वर्ग को लेकर कांग्रेसी जलसे-जलूसों के प्रबन्ध करने में रुचि लेने लगा।

जिस दिन विजय बम्बई पहुँचा था, सोम पत्र के सब कर्मचारियों को लेकर कांग्रेस के चौपाटी पर हो रहे जलसे का प्रबन्ध करने गया हुआ था। इससे विजय को कुछ अटपटा तो लगा, परन्तु सरस्वती को काम पर जुटा देख, वह भी उसकी सहायता में लीन हो गया।

सायं छः बजे तक काम कर और अगले दिन के लिये प्रैस का मैटर तैयार कर, दोनों उठे। कार्यालय और प्रैस को ताला लगा कर वे ऊपर निवास-स्थान पर आ गये। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए विजय ने सरस्वती को सूचना दी कि ललिता मेरे साथ आयी है। सरस्वती ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "इससे तो सोम और भी अधिक उच्छृङ्खल हो जायेगा।"

"अर्थात् ललिता भी उसके साथ सम्मिलित हो जायेगी ?"

"कम-से-कम उसे किसी प्रकार दण्डित करना कठिन हो जायेगा।"

इस संकेत पर विजय के माथे पर त्योरी चढ़ गयी। वे इस समय सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। उनका निवास-स्थान तीसरी मंज़िल पर था। विजय आगे-आगे था और सरस्वती पीछे। सरस्वती ने पति के मुख पर त्योरी नहीं देखी। इस पर भी उसने अपने कथन की सफाई देने के लिये कह दिया, "वह माँ तो है ही। मुझे स्मरण है कि उसने ही हठ कर दोनों लड़कों को पढ़ाई के लिये कलकत्ता भिजवाया था। सोम में व्यवहार में विलक्षणता से यही कारण समझ में आ रहा है। हमारा सारा परिवार गांधी के आन्दोलन को निरर्थक और एक सीमा तक हानिकारक मानता है और परिवार का यह सदस्य बुद्धि से ऊपर भावनाओं को समझ, उनमें बहने लगा है।"

ये अपने कमरों में पहुँचे तो देखा कि ललिता अपने रहने के लिये एक कमरे में सामान रख, वहाँ बैठ एक पुस्तक पढ़ने लगी थी। रेल में आते हुए उसने मार्ग के एक स्टेशन पर से अंग्रेजी का एक नावल खरीदा था और इस समय वह उसी को पढ़ रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय और सरस्वती के वहाँ पहुँचते ही ललिता ने पूछा, "सोम कहाँ है ?"

"वह अपनी पढ़ाई को सार्थक करने गया हुआ है।" विजय ने उत्तर में कहा।

"कहाँ गया हुआ है ?" ललिता ने व्यंग को न समझते हुए पूछ लिया।

"आज गांधी जी और अन्य कांग्रेसी नेता चौपाटी पर व्याख्यान देने आ रहे हैं और सोम अपने छापाखाना के सब कर्मचारियों को लेकर वहीं गया है।"

"वहाँ वह क्या करने गया है ?"

"सम्भवत: वह आन्दोलन में आगे होकर भाग लेना चाहता है।"

ललिता चुप रही। विजय ने सेवक को चाय बनाने के लिये कहा और स्वयं यात्रा के वस्त्र बदल, स्नान करने चला गया।

सरस्वती को स्नान करने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। वह शैंक में हाथ-मुख धो, पोंछ चली आयी। ललिता ने साप्ताहिक-पत्र की प्रगति के विषय में पूछ लिया।

सरस्वती ने बताया, "गांधी जी के वर्त्तमान आन्दोलन के कारण पत्र घाटे में जाने लगा है। देखो ललिता बहन ! पत्र-पत्रिकायें विज्ञापनों के आश्रय चलती हैं और बम्बई के प्राय: व्यापारी-वर्ग गांधी जी के आन्दोलन में बह गये हैं। वे हमारे पत्र की नीति को हानिकारक समझने लगे हैं। अत: विज्ञापन कम आने लगे हैं। पत्र में अब घाटा दिखायी देने लगा है।

"परन्तु अब महादेव के पिता आ गये हैं और उनसे सम्मति कर ही भविष्य के विषय में विचार करना पड़ेगा।" सरस्वती के बड़े लड़के का नाम महादेव था। वह लाहौर में डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ता था और वहीं बोर्डिंग हाउस में रहता था।

"हमने यह काम किसी प्रकार से भी लाभ करने के लिये नहीं चलाया था। हम आय-व्यय बराबर हो जाने पर सन्तोष कर रहे थे, परन्तु अब तो घाटे में पत्र चल सकेगा अथवा नहीं, विचारणीय हो गया है।" सरस्वती ने आगे कह दिया।

अभी विजय स्नान कर बाथ-रूम से बाहर नहीं आया था कि सोमदेव आ गया और माँ को बैठा देख, उससे भुवाली का सुख-समाचार पूछने लगा। वहाँ के सुख-समाचार पूछने का अभिप्राय कीर्तिदेवी के विषय में जानना था। ललिता ने सबके विषय में बता दिया। वह कीर्ति के विषय में कुछ नहीं बोली।

इस पर सोम ने कहा, "माता जी ! मैं समझता हूँ कि वहाँ एक अन्य प्राणी रहता है। उसका समाचार आपने नहीं बताया।"

"मैंने जान-बूझ कर नहीं बताया। मैं समझती हूँ कि वह तुमको पत्र भेजती होगी। मैंने तो उनका समाचार ही दिया है, जो तुम्हें पत्र भेजते प्रतीत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते ।"

"उसके पत्र तो आते हैं, परन्तु उनमें वह अपने स्वास्थ्य के विषय में नहीं लिखती।"

"यह इसलिये कि उसमें कुछ विशेष लिखने के लिये है नहीं। वह सब प्रकार से स्वस्थ और सक्रिय है। बाबा का विचार है कि यदि वह दो-तीन वर्ष वहाँ रही तो वह उनके कार्य में एक अन्य सहायक हो जायेगी। वह बाबा को बहुत समझदार प्रतीत हुई है।"

इससे सोम को प्रसन्नता हुई। परन्तु इसका अर्थ यह समझ कि वह कीर्ति की संगत से वंचित हो जायेगा, पूछने लगा, "तो क्या मुझे भी वहाँ जाकर रहना पड़ेगा?"

"मैं समझती हूँ कि तुम्हारा काम यहाँ भी अधिक देर तक नहीं रहेगा और तुम अपने चाचा आनन्द की भाँति पत्नी की संगत से वंचित ही रहोगे।"

इस पर सरस्वती ने एक सूचना दे दी। उसने कहा, "कलकत्ता से एक तार आया था कि आनन्द कलकत्ता में पहुँच गया है। उसने पिता जी के विषय में पूछा था। तार भेजने वाली कुमुद थी।"

"और तुमने क्या लिखा है?" ललिता ने पूछ लिया।

"हमने तार का उत्तर तार से भेज दिया है कि पिता जी भुवाली में हैं। पीछे एक पत्र भी लिखा है।"

इस समय विजय स्नान कर वस्त्र पहन आ गया। सेवक चाय और साथ पकौड़े ले आया था। सरस्वती ने आनन्द का समाचार अपने पति को भी दिया तो उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "यह ठीक ही हुआ है। मैं समझता हूँ कि देश में रहकर ही कार्य करना चाहिये।"

सोम तो आनन्द को भूल ही चुका था। वह बहुत छोटा था, जब आनन्द पकड़ा गया था और जब वह पाँच वर्ष की कैद का दण्ड भोग कर आया था तो घर पर दो-चार दिन ही रहा था। तब सोम बारह वर्ष की आयु का था। इस बात को अब आठ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। उसे अब स्मरण आने लगा था कि आनन्द की रूप-रेखा कैसी थी।

विजय ने बात बदल सोम से पूछ लिया, "क्या कहा है गांधी जी ने?"

"कोई नवीन बात तो नहीं कही। यही कहा है कि मुसलमान हमारे भाई हैं। उनकी मज़हबी भावनाओं का हमें आदर [illegible] हिये और उनकी पूर्ति में हमें सहायक होना चाहिये।"

"यह तो वे तब से कह रहे हैं जबसे हिन्दुस्तान में आये हैं।"

"जी; परन्तु किसी बात को कराने के लिये सर्वसाधारण को बार-बार स्मरण कराना पड़ता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ; यह तो है, परन्तु तुम अपने को सर्वसाधारण में मानते हो अथवा पढ़ा-लिखा बुद्धिशील व्यक्ति समझते हो ?"

"परन्तु पिता जी ! मैं सुनने नहीं गया था। सुनने वालों के लिये प्रबन्ध करने गया था। हमने 'नैशनल वालण्टियर कोर' बनायी है और मैं उसका कप्तान हूँ।"

"ओह ! और छापाखाना के सब कर्मचारी भी उसके कप्तान हैं ?"

"वे वालण्टियर हैं।"

"और अपने पत्र का क्या होगा ? कल सोमवार है और पत्र अभी पूर्ण कम्पोज़ भी नहीं हुआ।"

"पिता जी ! इस समय देश में संकट-कालीन स्थिति है। ऐसी स्थिति में पत्र एक दिन देर से भी निकल सकता है।"

"परन्तु संकट-कालीन स्थिति में भी कुछ सेवायें अनिवार्य होती हैं। उनको तो चलाना ही पड़ता है।"

"हमारा पत्र इस संकट को टालने के स्थान, इसे बनाये रखने का यत्न कर रहा है।"

"अर्थात् यह पत्र पंच-माँगियों का है ?"

"हम ऐसा ही मानते हैं। इस समय राष्ट्रीय आन्दोलन के अतिरिक्त कुछ अन्य काम करना देश-द्रोह है।"

"किस राष्ट्रीय काम की बात कर रहे हो ?"

"गांधी जी का असहयोग कार्य। यही राष्ट्रीय काम है। हमारा पत्र कह रहा है कि यह राष्ट्रीय काम नहीं है।"

"तो इस पत्र को बन्द कर देना चाहिये ?"

"नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं है। मैं तो यह कह रहा हूँ कि हमारे पत्र को आन्दोलन का समर्थन करना चाहिये।"

"अभिप्राय यह कि जिसको हम गलत मानते हैं, उसका समर्थन करना चाहिये।"

"तो हम एक बात कर सकते हैं कि राजनीति पर लिखना छोड़ दें।"

"जहाँ तक मेरा ज्ञान है कि हमारे पत्र में राजनीति पर नहीं लिखा जाता। हमारा पत्र राज-धर्म पर ही अपने विचार व्यक्त करता है।"

"दोनों में वर्त्तमान प्रवहन के अनुसार अन्तर नहीं है।"

"अन्तर तो है। एक नीति है; दूसरा धर्म है। नीति दूसरों का मुख देखकर निर्माण की जाती है, और धर्म अटल तथा सैद्धान्तिक होता है।"

"आज जब हम शत्रु से मोर्चा ले रहे हैं तो नीति और सिद्धान्त में अन्तर नहीं माना जा सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सोम ! नीति धर्म-विरोधी नहीं हो सकती। जब कभी किसी समय भी नीति स्थायी धर्म से कुछ अन्य हो तो मौन रहा जा सकता है, परन्तु धर्म का विरोध नहीं हो सकता।"

"और धर्म क्या है ?"

"जो मानवता-विरोधी भावनाओं में सहायक नहीं हो। खिलाफत अमानवीय प्रथा है। इसका विरोध होना ही चाहिये।"

"पिता जी ! इस पर भी देश-भर में इसका समर्थन किया जा रहा है।"

"तो इस अमानवीय प्रथा के समर्थन का दण्ड देश को भोगना पड़ेगा।"

"तो स्वराज्य मिलना दण्ड होगा क्या ?"

"यह तो सोम, जब मिलेगा तब पता चलेगा कि दण्ड है अथवा पुरस्कार। अब तो प्रश्न यह उत्पन्न हो रहा है कि हमारा पत्र चले अथवा नहीं ?"

"वर्त्तमान स्थिति में यह केवल निरर्थक ही नहीं, वरन् हानिकर भी हो सकता है।"

"मैं कल से इस पत्र को बन्द करने पर विचार करूँगा।"

"परन्तु इसकी नीति को ही बदल दीजिये।"

"अर्थात् पत्र को हरजाई बना दूँ ?"

"तो यह चलेगा नहीं।"

विजय अपने पिता का-सा स्वभाव रखता था। वह समझता था कि सिद्धान्त-हीन व्यक्ति सफलता तो प्राप्त करते हैं, परन्तु उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकते। उद्देश्य छोड़कर सफलता का अर्थ वह यह मानता था कि कीर्ति-लाभ तो होगा, परन्तु यात्रा की दिशा बदल जायगी।

रात सरस्वती से इस विषय में बात हुई। सरस्वती और विजय ने कैटालीना के समाचार-पत्र में काम कर अपने वेतन में से कुछ धन बचा कर रखा था और उसी के भरोसे वे बम्बई में साप्ताहिक-पत्र निकाल रहे थे। आरम्भ में तो सफलता मिली थी, परन्तु ज्यों-ज्यों गांधी जी के विचारों का प्रसार होता गया। इनकी साप्ताहिक बिक्री और विज्ञापन की आय कम होती गयी।

सरस्वती की सूचना थी कि हज़ारों रुपये प्रति मास का घाटा हो रहा है। विजय ने सरस्वती से कहा, "मैं समझता हूँ कि साप्ताहिक-पत्र बन्द कर देना चाहिये।"

"और जीवन-कार्य ?"

"उसका एक अन्य मार्ग मैं विचार कर रहा हूँ। राजनीति पर स्थायी साहित्य निर्माण करने के लिये एक पुस्तक प्रकाशन संस्था की स्थापना करना चाहता हूँ।"

—२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु इस कार्य को लाभ देने की स्थिति में लाने में समय लगेगा।"

"हाँ; परन्तु इसमें घाटा नहीं रहेगा। उत्तरोत्तर लाभ भी होगा। मैं समझता हूँ कि यह दूसरे दर्जा का कार्य तो होगा, परन्तु उसे ठीक दिशा में रखा जा सकेगा।"

सरस्वती ने कहा, "तो ठीक है। कब से यह काम हो सकेगा?"

"कर्मचारियों को छुट्टी करनी होगी। इन्हें नोटिस देना होगा और पत्र तो इसी सप्ताह में घोषणा कर बन्द करना पड़ेगा। प्रकाशन विभाग के लिये अपने छापेखाने की आवश्यकता नहीं होगी। हम उजरत पर छपाई का काम करवाया करेंगे।"

सरस्वती मन-ही-मन गणना कर रही थी कि इससे हानि-लाभ क्या होगा। जय ने उसे गम्भीर भाव में देख पूछ लिया, "सरस्वती! क्या विचार कर रही हो?"

"आपसे विपरीत दिशा में नहीं विचार कर रही। मुझे आपकी योजना पसन्द है। मैं तो अपने बम्बई में रहने के व्यय पर विचार कर रही थी।"

"मैं समझता हूँ कि बम्बई में रहने का कुछ अर्थ नहीं। हमें बम्बई, लाहौर, दिल्ली, लखनऊ, पटना, कलकत्ता में अपने बिक्री-स्थान बनाने होंगे।"

"परन्तु छपाई का काम?"

"इस विषय में विचार करूँगा। कारण यह कि हमें उलटी आँधी में अपने पाठक, प्रकाशक, मुद्रणालय और पुस्तक-विक्रेता सब स्वयं ही निर्माण करने पड़ेंगे।"

"पाठकों से पूर्व अपने विचार के विभिन्न लेखक भी तो ढूंढने पड़ेंगे।"

"ये सब कार्य एक महान् कार्य का अंग ही हैं। महान् कार्य है अपनी विचारधारा के पोषक साथी एकत्रित करना। जिस किस प्रकार से भी हो सके, वह होना चाहिये।"

: ३ :

अगले ही दिन सोम सहित सब कर्मचारियों को सूचना दे दी गयी कि छापाखाना और साप्ताहिक-पत्र बन्द किये जा रहे हैं। अगले मास की पहली तारीख से वे सेवा में नहीं रहेंगे।

सोम अपने अधीन कर्मचारियों का प्रतिनिधि बनकर पिता से कहने आया, "आप यह छापाखाना और समाचार-पत्र हम कर्मचारियों को ठेके पर दे दें। हम इसे सहकारी-समिति बना कर चलायेंगे।"

"समाचार-पत्र ले सकते हो। छापाखाना दे सकता हूँ, परन्तु उसका पूर्ण दाम पहले आना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सोम ने मुस्करा कर कहा, "वह मैं अपने पिता जी से लेकर दे सकूँगा।"

विजय ने इसका अर्थ समझ कह दिया, "नहीं; उस पूँजी को तुम्हारे पिता किसी अन्य काम में लगाना चाहते हैं।"

"किस काम में लगाना चाहेंगे, वह ?"

"तुम्हारे पिता समाचार-पत्र बन्द कर रहे हैं और उसके स्थान, एक पुस्तक-प्रकाशन का कार्य करेंगे। उस कार्य में वे पचास हज़ार रुपया लगाना चाहते हैं और उस पचास हज़ार में मुद्रणालय का धन सम्मिलित है।"

"परन्तु मुद्रणालय का पचास हज़ार तो मिलेगा नहीं।"

"मुद्रणालय का मूल्य वे बीस हज़ार आँकते हैं। शेष वह अन्य स्रोतों से उपलब्ध करना चाहते हैं।"

"आप यह मुद्रणालय मुझे उत्तराधिकार में दे दीजिये।"

"मैं समझता हूँ कि मेरी अर्जित सम्पत्ति में से तुम्हें उत्तराधिकार देने का समय अभी नहीं आया। यह तो तब आयेगा जब तुम एक-दो वर्ष जेल काट कर आओगे।"

"गांधी जी कह रहे हैं कि उसकी आवश्यकता नहीं रहेगी। जब सरकारी कर्मचारियों ने सेवा-कार्य छोड़ा तो न पकड़ने वाली पुलिस रहेगी और न जेलों में बन्द करने वाले जेलखाने के कर्मचारी।"

"इस पर भी सोम ! लोग जेलों में ठूँसे जायेंगे। कदाचित् तुम भी उनमें एक होगे। दो वर्ष तक जेल का अनुभव प्राप्त कर आओगे तो फिर मैं तुम्हें अपना उत्तराधिकारी मानूँगा। मैं इतनी ही जेल स्वयं भोग चुका हूँ।"

सोम समझ गया कि उसकी योजना उसके पिता को पसन्द नहीं। परन्तु वह जेल भोगने की शर्त को समझ नहीं सका। जेल जाने का उत्तराधिकार के साथ क्या सम्बन्ध है ?

इस कारण उसने पूछ लिया, "परन्तु पिता जी ! अभी तो सत्याग्रह आरम्भ हुआ नहीं। इसके आरम्भ होने में अभी देर है। तब तक मैं क्या करूँगा ?"

"देखो सोम ! दो में से एक काम हो सकता है। या तो सार्वजनिक कार्य करो अथवा सेवा-कार्य करो। यह छापेखाने के प्रबन्ध में नहीं आता कि तुम कार्य करने के समय चौपाटी पर सभा का प्रबन्ध करते रहो।

"मैंने तुम्हें उस काम से मना नहीं किया। तुम अब सज्ञान हो और अपने कार्य के विषय में स्वयं विचार कर सकते हो। जब तुम विवाह जैसे पारिवारिक कृत्य को परिवार से पूछे बिना करने में स्वतन्त्र हो तो छापाखाना की मैनेजरी करनी अथवा सार्वजनिक मीटिंगों का प्रबन्ध करने में स्वतन्त्र तो हो ही सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु पिता जी ! निवास, खाना और पहनना आदि, ये सब कैसे होगा ?"

"यह तो तुम्हारे जन्म-काल से ही हो रहा है और जब तक हमारी सामर्थ्य है, होगा । हाँ, पाकेट खर्चा जो पहले दो सौ रुपया मिलता था, वह बीस रुपया मासिक हो जायेगा ।"

सोम गम्भीर विचार में मग्न अन्य कर्मचारियों के पास चला गया । जब उसने पिता जी से हुआ पूर्ण वार्त्तालाप बताया तो एक कर्मचारी ने पूछा, "अर्थात् हमें छुट्टी ?"

"हाँ, यह तो है ही ।"

एक अन्य ने कह दिया, "सोम बाबू ! आपने ही हमें इस मुसीबत में फँसा दिया है । आपने हमें प्रेरणा दे-देकर कांग्रेस का स्वयंसेवक बना लिया था । हमें यह विदित नहीं था कि आप अपने पिता की स्वीकृति के बिना यह कर रहे हैं ।"

"देखो देशपाण्डे ! मैंने अपने स्वार्थ के लिये कुछ भी नहीं किया । अपने विचार से देश-सेवा के लिये ही कर रहा था । साथ ही यह भी समझ लो कि यह काम बन्द इस कारण नहीं किया जा रहा कि तुम कांग्रेस में काम करने लगे हो, वरन् इस कारण कि समाचार-पत्र में भारी घाटा हो रहा है और वह घाटा अधिक काल तक सहन नहीं किया जा सकता । पिता जी इस व्यवसाय को बन्द कर रहे हैं ।"

इसके उपरान्त कर्मचारियों का एक 'डैपुटेशन' सोम से पृथक् सरस्वती से मिला और अपनी बेबसी का वास्ता डाल, छापाखाना चालू रखने के लिये कहने लगा ।

प्रायः कर्मचारी परिवार वाले थे । सरस्वती उनकी कठिनाई समझती थी । इस कारण कुछ विचार कर वह कहने लगी, "आपको एक महीने की अवधि काम ढूंढ़ने के लिये मिली है । इसमें एक सहायता मैं यह कर सकती हूँ कि समाचार-पत्र का वर्त्तमान अंक निकल जाने के उपरान्त, आपको आधे दिन की छुट्टी वेतन सहित दे दिया करूँ, जिससे आप अपने लिये नया काम ढूंढ सकें ।"

इसके लिये सब तैयार हो गये । सरस्वती ने कर्मचारियों को दो मण्डलियों में बाँट दिया । एक दिन के प्रथम भाग में काम करने के लिये और दूसरा भाग दिन के दूसरे भाग में काम करने के लिये । इस प्रकार छापाखाने का फुटकर काम चलाने का प्रबन्ध कर कर्मचारियों को छुट्टी दे दी गयी ।

विजय ने अपने मित्रों, परिचितों और देश के अन्य विद्वानों से पुस्तकें लिखवाने की योजना बना ली । वह स्वयं समाचार-पत्र में लिखने के लिये नित्य प्रातः तीन घण्टे व्यय किया करता था । उस समय को उसने साहित्य निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में लगाने का विचार बना लिया। वह अपने लिखने के लिये विषय का चयन करने लगा।

सोम को एक बात से प्रसन्नता हुई थी। उसको घर में रहते हुए सार्वजनिक कार्य करने का अवसर मिल गया था। यद्यपि वह पाकेट व्यय के लिये बीस रुपये अपर्याप्त मानता था, परन्तु इस विषय में वह पीछे कभी बात करने का विचार कर अपने सार्वजनिक कार्य में लीन हो गया।

इस समय गांधी जी तथा अन्य नेताओं के विपुल प्रयास से देश में एक अति तनाव-पूर्ण अवस्था उत्पन्न हो गयी थी। पंजाब में मार्शल-लॉ पर 'हण्टर कमेटी' की जाँच की रिपोर्ट छप गयी थी। उसके मुकाबिले में कांग्रेस कमेटी की जाँच की रिपोर्ट भी छपी। इस पर समाचार-पत्रों में टीका-टिप्पणियाँ छपीं और फिर मुख्य लेख छपे।

इसने देश के नगरों की पूर्ण हिन्दू जनता को विक्षुब्ध कर दिया। इस विक्षुब्ध अवस्था को देख मुसलमान अपने खिलाफत-आन्दोलन को दिन-प्रतिदिन उग्र कर रहे थे।

मुस्लिम लीग तो एक मुर्दा संस्था थी, जिसमें सरकारी अधिकारी और रईस तथा नवाब सम्मिलित थे। वे काल की गति के साथ चल नहीं सके और उन्होंने खिलाफत-आन्दोलन का समर्थन नहीं किया। इस कार्य के लिये मुसलमानों की एक पृथक् संस्था खिलाफत-कान्फरेंस संगठित की गयी। गांधी जी उस संगठन के पथ-प्रदर्शक बन गये।

इस समय तिलक जी का छः-सात दिन बीमार रहने के उपरान्त देहान्त हो गया। इससे गांधी जी का विरोध सर्वथा ढीला पड़ गया।

इस पर भी कलकत्ता में कांग्रेस का विशेषाधिवेशन हुआ तो असहयोग आन्दोलन के लिये विशेष बहुमत नहीं मिला। कार्यकारिणी कमेटी में तथा विषय-निर्धारिणी समिति में गांधी जी के प्रस्ताव का मोतीलाल जी के अतिरिक्त किसी अन्य नेता ने समर्थन नहीं किया। हाँ, खुले अधिवेशन में गांधी जी को ८७२ मतों के विरोध में १८७५ मत मिले और उनका प्रस्ताव भारी बहुमत से पारित हो गया।

गांधी जी इससे सन्तुष्ट नहीं हुए। वे कहते थे कि यदि प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो तभी वे अपने कार्य में सफल हो सकेंगे।

गांधी जी के प्रस्ताव के केवल दो उद्देश्य थे। हिन्दुस्तान के मुसलमानों की इच्छानुसार खिलाफत का सन्तोषजनक समाधान और पंजाब के मार्शल-लॉ अधिकारियों को उचित दण्ड। इस असहयोग आन्दोलन के उद्देश्यों में स्वराज्य-प्राप्ति सम्मिलित नहीं किया गया।

सोमदेव इस अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित था और विजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शक के रूप में पहुँचा हुआ था। पिता-पुत्र दोनों कलकत्ता के एक होटल में ठहरे हुए थे।

विजय का वहाँ पर आने का उद्देश्य अपने पुस्तक-विक्रय कार्य के लिये केन्द्र खोलने का भी था। पिछले चार महीनों में उसने एक तो यह निश्चय किया था कि अपना छापाखाना बम्बई में ही रहना चाहिये। उसको छोटा कर दिया गया था। उसने बड़ी मशीन बेचकर दो छोटी मशीनें खरीद ली थीं। समाचार-पत्र के स्थान पर पुस्तक छपवाने और बिक्री का कार्य आरम्भ हो गया था। कालबादेवी रोड पर एक दुकान पुस्तक बेचने के लिये खोल दी गयी थी। नलिनीकान्त की सम्मति से दुकान पर सब प्रकार का साहित्य रखने की योजना बना ली गयी। विशेष रूप में स्कूल तथा कालेज विद्यार्थियों के उपयोग का साहित्य रखने का प्रबन्ध किया गया। उसके साथ राष्ट्र-सम्बन्धी साहित्य भी रखा गया था। प्रकाशन के लिये केवल सांस्कृतिक और राष्ट्रीय साहित्य ही स्वीकार किया गया।

वैसी ही एक दुकान विजय कलकत्ता में खोलने का विचार रखता था। इस कार्य के लिये धर्मतल्ला में कलकत्ता बुक सैण्टर वालों के साथ प्रबन्ध हो गया। वे स्कूल-कालेजों की पुस्तकें बेचा करते थे। इस दुकान के एक कोने में सामान्य साहित्य के प्रदर्शन और बिक्री का प्रबन्ध हो गया।

इस प्रकार का प्रबन्ध करते हुए भी विजय कांग्रेस-अधिवेशन में दर्शक के रूप में सम्मिलित होता रहा।

इस अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिये आनन्द भी आ पहुँचा। अमरीका से लौटकर वह भुवाली चला गया था और अब कलकत्ता के कांग्रेस-अधिवेशन में दर्शक के रूप में उपस्थित होने आया हुआ था।

आनन्द को यह तो ज्ञान था कि सोमदेव बम्बई-कांग्रेस से प्रतिनिधि बन कर आया है, परन्तु उसे विजय के आने का समाचार नहीं था।

पहले ही दिन खुले अधिवेशन के उपरान्त आनन्द ने सोम को ढूंढ लिया और उससे ही उसे पता चला था कि उसका बड़ा भाई भी कलकत्ता में है। आनन्द ने पूछ लिया, "कहाँ ठहरे हुए हैं भैया ?"

"हम इकट्ठे ही ठहरे हुए हैं। आइये, वहाँ चलें।" सोम ने कहा।

सोम आनन्द को अपने निवास-स्थान होटल में ले गया। वह समय मध्याह्न के भोजन का था। विजय होटल में खाना लेने आया हुआ था। वह सोम के साथ आनन्द को कमरे में प्रवेश करते देख प्रसन्न-वदन उठा और आनन्द से गले मिलने लगा।

"कब आये हो ?" विजय ने पूछा।

"आया हुआ तो तीन-चार दिन से हूँ। पण्डित सुधाकर जी के घर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठहरा हुआ हूँ। वहाँ मैमनसिंह से चाची भी आयी हुई हैं।"

"अच्छा, भोजन कर लें। फिर पण्डित जी तथा चाची से मिलने चलेंगे।"

होटल के खाना खाने के कमरे में बैठ, भोजन की प्रतीक्षा करते हुए आनन्द ने पूछ लिया, "भैया! सुना है कि आप कांग्रेस-अधिवेशन में दर्शक के रूप में आये हुए हैं। परन्तु आपको आज वहाँ नहीं देखा।"

"मैं कल विषय-निर्धारिणी की बैठक में गया था और वहाँ प्राय: सब-कुछ सुन आया हूँ। आज तो प्रधान का अध्यक्षीय भाषण ही पढ़ा जाना था। वह मैं कल वहाँ से ले आया था और रात उसे पढ़ डाला है।

'वह भाषण असहयोग के पक्ष में प्रतीत नहीं होता। उसका आशय कुछ ऐसा है कि कौंसिलों में पहुँच, रचनात्मक कार्य किया जाए।"

"परन्तु गांधी जी उसके विरुद्ध कल मध्याह्नोत्तर अपना असहयोग का प्रस्ताव रखने वाले हैं। उस समय मैं देखूंगा कि क्या होता है?"

"आज के अध्यक्षीय भाषण से सामान्य प्रतिनिधि प्रसन्न नहीं हैं।" आनन्द ने बताया।

"वह तो मैं भी नहीं हूँ।" सोम ने चाचा के इस कथन से उत्साहित हो कह दिया।

"वैसे तो मैं भी प्रसन्न नहीं।" विजय का कहना था, "परन्तु मेरी अप्रसन्नता इस कारण नहीं कि इसमें रचनात्मक कार्य की ओर संकेत है। मैं इस कारण अप्रसन्न हूँ कि लाला जी ने गांधी जी की विचारधारा का खण्डन क्यों नहीं किया।"

"अपना भाषण वे लाहौर से ही छपवा कर लाये हैं। उनको यह विदित नहीं था कि यहाँ गांधी जी द्वारा विरोध होगा।"

"हाँ; वे यह समझे होंगे कि नेतागण उनकी भाँति ही गांधी जी का समर्थन भावावेश में कर रहे हैं। वास्तव में बहुमत रचनात्मक काम के पक्ष में है।"

"देखो, सोम! मैंने सुना है कि बंगाल के 'डैलीगेटों' में मुसलमान बहुत बड़ी संख्या में हैं।"

"भापा! यह स्वाभाविक नहीं है क्या?"

"मैं समझता हूँ प्रांतों में से आने वाले 'डैलीगेटों' की संख्या निश्चित है। परन्तु आसाम और बर्मा के नाम पर यहाँ कलकत्ता से और वे भी मुसलमान एक भारी संख्या में भरती किये गये हैं।"

"परन्तु यहाँ तो दास बाबू का बहुत दबदबा है और दास बाबू गांधी जी के विरुद्ध हैं।"

"उनका दबदबा तो हिन्दुओं पर है। कलकत्ता के मुसलमान तो खिलाफत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्फरेंस के भक्त हैं और वे गांधी जी का समर्थन करेंगे। इसी कारण तो भारी संख्या में उन्हें भरती किया गया है।"

"प्रस्ताव पर मतदान कल होगा। आज तो केवल समर्थन और विरोध में भाषण ही होंगे।" सोम ने बताया।

"मैं समझता हूँ," विजय का कहना था, "भाषण ही मुख्य बात है। मेरी सूचना है कि मतदान गांधी जी के प्रस्ताव के पक्ष में होगा।"

इस पर आनन्द ने कहा, "सुधाकर जी कह रहे हैं कि मुसलमान दास बाबू के पक्ष में जायेंगे। बंगाल में बंगाली और अबंगाली का विचार प्रबल है। इस कारण पूर्ण बंगाल, मुसलमान और गैर-मुसलमान सब दास बाबू के पीछे हैं।

"और पण्डित सुधाकर जी क्या दास बाबू के प्रस्ताव को ठीक मानते हैं?" विजय का प्रश्न था।

आनन्द ने बताया, "सुधाकर जी दास बाबू के विचारों के विषय में कुछ भी नहीं जानते। उनकी रुचि राजनीति में नहीं है। इस पर भी वे गांधी जी के नेतृत्व के विरुद्ध हैं। इसमें मुख्य कारण है उनका गुजराती होना। एक गौण कारण भी है। वह है गांधी जी का अहिंसा पर बल देना।

"पण्डित जी मेरे कार्य की प्रशंसा करते नहीं थकते। वे हिंसात्मक क्रान्ति के पक्ष में हैं।"

विजय हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "हिंसात्मक आन्दोलन दो प्रकार के हैं। एक सार्वजनिक और दूसरा व्यक्तिगत। क्रान्तिकारी दोनों प्रकार के आन्दोलन चला चुके हैं। व्यक्तिगत रूप में बम्ब, पिस्तौल का व्यक्तियों के विरुद्ध प्रयोग कर चुके हैं और ग़दर पार्टी की ओर से समष्टिगत हिंसा का भी प्रयोग करने का प्रयास तो किया ही गया है।

"मैं समझता हूँ कि यहाँ भारत में व्यक्तिगत हिंसा का आन्दोलन एक सीमा तक सफल हुआ है। सन् १९०९ के और सन् १९१९ के शासन-सुधार उसी प्रकार के आन्दोलन के परिणामस्वरूप हैं।

"परन्तु ग़दर पार्टी का समष्टिगत हिंसा का आन्दोलन सफल नहीं हुआ। वह चल ही नहीं सका। इस आन्दोलन का वह प्रभाव तो हुआ था, जो व्यक्तिगत हिंसा-कार्यों का हो रहा था, परन्तु समष्टिगत कार्य का मूल्य बहुत अधिक देना पड़ा था और प्रभाव उतना अधिक नहीं हुआ।

"लॉर्ड हार्डिंग पर बम्ब फेंकने का अधिक प्रभाव हुआ है। उसके मुकाबले में ग़दर पार्टी के सहस्रों सदस्यों को पकड़ कर फांसी पर चढ़ा देने का प्रभाव उतना नहीं हुआ, जितना कि छुट-पुट हिंसात्मक कार्यों का होता रहा है।

"यह मैं मानता हूँ कि जैसे तिलक इत्यादि का समर्थन सन् १८९८ से १९०८ तक के व्यक्तिगत हिंसा कार्यों को प्राप्त था, वैसा समर्थन अब नहीं रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लाला लाजपतराय अमेरिका से लौटने पर अपने को चोटी के नेताओं में समझते हैं और इस नेतागीरी का वह त्याग नहीं कर सकते। बिपिनचन्द्र पाल में अब वह अग्नि नहीं रही, जो सन् १९०५-१९०७ तक थी। तिलक जी विलायत से लौटने पर हिंसात्मक कार्यों के पक्ष में नहीं रहे। दूसरी ओर गांधी जी आपके हिंसात्मक कार्यों का घोर विरोध कर रहे हैं। अतः वर्त्तमान परिस्थिति में व्यक्तिगत हिंसा भी वह प्रभाव उत्पन्न नहीं करेगी, जो सन् १९०५-१९०९ तक हो सका था।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि हिंसात्मक-आन्दोलन का प्रचार-अंग ढीला पड़ गया है। इस कारण अब कार्य का कोई नया रूप निर्माण करना पड़ेगा।"

"क्या रूप निर्माण करना होगा ?"

"इसमें मेरा सुझाव कुछ ऐसा है कि अब कार्य प्रान्तीय और केन्द्रीय कौंसिलों के भीतर होना चाहिये। क्रान्तिकारियों को अब अपना ध्यान इस ओर करना चाहिये। समाचार-पत्रों का समर्थन जो 'केसरी', 'युगान्तर' और पंजाब में पंजाबी समाचार-पत्र देते थे, वह अब नहीं मिलेगा। अब इन कौंसिलों के सदस्य वह कार्य कर सकते हैं।

"मैं कुछ ऐसी कल्पना करता हूँ कि कौंसिलों में कुछ सदस्य ऐसे होने चाहियें, जो वही भूमिका निभा सकें, जो किसी काल में 'केसरी' इत्यादि समाचार-पत्र निभाते थे। तब कौंसिल के भीतर और बाहर हिंसात्मक कार्य किये जा सकेंगे और फिर उनका प्रभाव ब्रिटिश मस्तिष्क पर होगा।"

आनन्द इस सुझाव पर फड़क उठा, परन्तु वह अपना जीवन-कार्य बदल चुका था।

उसके पिता नलिनीकान्त ने उसे अपने लेखन-कार्य में सम्मिलित कर लिया था। नलिनीकान्त का कहना था कि वास्तविक बात जनमत तैयार करना है और यह साहित्य से ही हो सकेगा।

नलिनी चाहता था कि देश में सब प्रकार के राष्ट्रीय साहित्य की बाढ़ आ जानी चाहिये; यह देशवासियों के मस्तिष्क में एक बार तो क्रान्ति उत्पन्न करेगी। तब देश में क्रान्ति होगी। वह हिंसात्मक होगी अथवा शान्तिमय ? इसका निर्णय तत्कालीन सरकारी अधिकारियों की मानसिक अवस्था पर निर्भर करेगा; वे भारत की जनता को दमन से अपने अधीन रखना चाहेंगे अथवा जनता की भावनाओं का आदर करेंगे।

यह व्याख्या पिता जी के विचारों की आनन्द ने की। इस पर सोमदेव फड़क उठा। उसने कह दिया, "यही तो गांधी जी कह रहे हैं।"

विजय हँस पड़ा। उसने कहा, "गांधी जी अभी तक तो स्वराज्य के पक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी नहीं हैं। वे कौंसिलों का बहिष्कार इस कारण नहीं कर रहे कि सुधार असन्तोषजनक हैं। उनके वर्त्तमान आन्दोलन का उद्देश्य तो खलीफा को कुस्तनतीनिया में शासक बनवाना है अथवा पंजाब के मार्शल-लॉ अधिकारियों को दण्ड दिलवाना है।

"साथ ही वे यह नहीं मानते कि यदि सरकारी अधिकारी जनता की बात न मानें तो न मानने वाले अधिकारियों को जहन्नुम रसीद कर दिया जाये। वरन् उनके प्रति प्यार और आदर निर्माण किया जा रहा है।

"देखो सोम! यह आन्दोलन, यदि चला तो बुरी तरह से असफल होगा। इसका परिणाम यदि कुछ होगा तो वह यह कि जनता में अनैतिक्ता असीम हो जायेगी। नेता कौड़ियों के दाम बिकेंगे।

"साथ ही एक विदेशीय साम्प्रदायिक मसला पर आन्दोलन का परिणाम यह होगा कि ऐसी साम्प्रदायिकता पनपेगी, जिसका केन्द्र विदेश होगा। यह घोर अराष्ट्रीयता उत्पन्न करेगी और देश में साम्प्रदायिक दंगे भारी मात्रा में होंगे।"

"भापा!" सोम ने कहा, "और यह 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' का क्या होगा?"

"ये नेता लोग सरकारी धन से उपलब्ध मदिरा में घोल कर पी जायेंगे।"

इस पर आनन्द ने पूछ लिया, "तो पिता जी का विचार ठीक है कि जनता को शिक्षित करना चाहिये, जिससे नेता बनने के लिये और भी उच्च शिक्षा की आवश्यकता अनुभव होने लगे?"

"हाँ; इसी कारण मैंने राष्ट्रीय साहित्य निर्माण करने की योजना बनायी है। मैं आयरलैण्ड, फ्रांस और रूस में से क्रांतिकारी साहित्य मँगवाने का प्रबन्ध कर रहा हूँ और साथ ही उसे हिन्दी, बंगला तथा मराठी भाषाओं में अनूदित करने की योजना बना रहा हूँ। मेरे कार्य को पिता जी का आशीर्वाद प्राप्त है।"

आनन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "पिता जी ने मुझे कहा है कि मैं क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रीय क्रान्तिकारी कथा-साहित्य का निर्माण करूँ।"

"हाँ; मैं समझता हूँ कि वह अग्नि जो बंकिमचन्द्र, तिलक जी, लाला लाजपतराय और हरदयाल जी ने देश में उत्पन्न की थी; गांधी जी ने ठण्डी करनी आरम्भ कर दी है। अतः उसे पुनः तीव्र करना चाहिये।

"जहाँ तक मैं समझा हूँ पिता जी भी अहिंसात्मक कार्यवाही के विरुद्ध नहीं हैं। परन्तु वे अहिंसात्मक कार्य का क्षेत्र कौंसिलों के भीतर समझते हैं। कौंसिलों के अहिंसात्मक कार्य का समर्थन कौंसिलों के बाहर हिंसात्मक उपायों से होना चाहिये।"

आनन्द इस सुझाव पर फड़क उठा। भोजन समाप्त हो चुका था। विजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अपने कमरे का नम्बर बिल पर लिख दिया और सब उठ कर पण्डित सुधाकर के घर की ओर चल पड़े।

: ४ :

कांग्रेस के खुले अधिवेशन में गांधी जी के प्रस्ताव के पारित हो जाने पर सिवाय पण्डित मोतीलाल के, सब नेताओं को विस्मय हुआ। विस्मय करने वालों में सबसे अधिक बाबू चितरंजनदास थे।

दास बाबू का विचार था कि बंगाली प्रतिनिधि सबके-सब उनके संशोधन का समर्थन करेंगे। दास बाबू का बंगाली मुसलमानों पर विश्वास निराधार सिद्ध हुआ। उनके प्रस्ताव को तो बंगाल के बाहर के लोग वाग्जाल और धोखे की टट्टी मानते थे। इस कारण उसे तो वैसे ही हाथ खड़ा कर अस्वीकार कर दिया गया। मुख्य प्रस्ताव था सरकार से असहयोग का। वह दो-तिहाई मतों से पारित हो गया। बंगाल के प्रायः प्रतिनिधियों ने और पंजाब के सभी प्रतिनिधियों ने इसका भरपूर समर्थन किया।

आनन्द का सामान्य परिचय लाला लाजपतराय से था। अगले दिन लाला जी के साथ पंजाब-मेल में कलकत्ता से वापस होते हुए, उसे उनसे बातचीत करने का अवसर मिल गया। आनन्द उसी गाड़ी में बरेली तक जा रहा था।

मुगलसराय के स्टेशन पर आनन्द समाचार-पत्र खरीदने प्लैटफॉर्म पर निकला तो उसकी दृष्टि लाला लाजपतराय पर जा पड़ी। वह उनके डिब्बे में चढ़ गया और नमस्कार कर अपना परिचय देने लगा।

"ओह !" लाला जी ने उसे पहचान लिया। वे कहने लगे, "तुम तो वही हो, जो मुझे टोकियो में मिले थे और रासबिहारी घोष के लिये सहायता माँग रहे थे।"

"जी, वही हूँ। एक बार आपसे न्यूयॉर्क में भी मिला था। परन्तु वह एक सार्वजनिक-समारोह में था। तब आपसे वार्त्तालाप का कुछ अधिक अवसर नहीं मिल सका था।"

"कहाँ से आ रहे हो ?"

"कलकत्ता कांग्रेस का अधिवेशन देखने गया था।"

"और भारत में कहाँ रहते हो ?"

"पिता जी का मकान भुवाली में है। वहीं जा रहा हूँ।"

"वे वहाँ क्या करते हैं ?"

"पढ़ते रहते हैं अथवा लिखते रहते हैं।"

"क्या लिख रहे हैं ?"

"वे भारत का सांस्कृतिक इतिहास लिख रहे हैं। उसके दो खण्ड लिख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके हैं। एक खण्ड सन् १६१३ में छपा था। दूसरा खण्ड अब तैयार है और शीघ्र ही प्रकाशित हो जायेगा।"

लाला जी की रुचि इस प्रकार के साहित्य में नहीं थी। वे चुप ही रहे। गाड़ी चल पड़ी थी। आनन्द इसी डिब्बे में बैठा रहा। कुछ बात करने के लिये ही उसने कह दिया, "पिता जी आपको भली-भाँति जानते हैं। उनका कहना है कि वे आपके सम्पर्क में सन् १६०० से लेकर १६०७ तक रहे हैं।"

"क्या नाम है उनका ?"

"नलिनीकान्त सरकार। लाहौर आर्य-समाज से उनका सम्बन्ध रहा है।"

"ओह ! तो तुम नलिनी बाबू के लड़के हो। अब तो वे बहुत बूढ़े हो गये होंगे ?"

"इस समय उनकी आयु सत्तर से ऊपर है।"

"और तुम्हारी माता जी ? मैं उनका नाम भूल गया हूँ।"

आनन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "सुवर्णा देवी।"

"हाँ; कैसी हैं वह ?"

"ठीक हैं। वे भी पिता जी के साथ हैं।"

"तुम कहाँ से प्रतिनिधि बनकर गये थे ?"

"मैं दर्शक के रूप में था।"

"इससे क्या लाभ हुआ होगा ?"

"मुझ स्वयं को लाभ हुआ है। बड़े-बड़े नेताओं के विचार सुनने का अवसर मिला है।"

"ओह ! क्या समझे हो उन विचारों को सुनकर ?"

"यही कि जहाँ गांधी जी अपने बाल्यकाल के जैन संस्कारों पर दृढ़ खड़े हैं, वहाँ देश में कोई भी नेता नहीं है, जो उनको उन्हीं के शब्दों में उत्तर दे सकता हो।"

"तुमने जिन्ना का भाषण सुना था ?"

"सुना था। परन्तु उनके मस्तिष्क में खिलाफत के भूत का भय अधिक था और उन्होंने गांधी जी के आन्दोलन की विवेचना नहीं की थी। कुछ दास बाबू और बिपिनचन्द्र पाल ने की थी; परन्तु लाला जी ! आपने तो उतना भी नहीं किया।"

"बात यह है कि मैं स्वयं अभी बात को ठीक प्रकार से समझ नहीं सका। मेरी बुद्धि गांधी जी के विपरीत कह रही है और मेरा दिल गांधी जी के साथ चलने को कहता है।"

आनन्द मुस्करा कर पूछने लगा, "तो आपका दिल भी बातें करता है ?"

लाला जी इसका मतलब समझ हँस पड़े। हँसते हुए बोले, "तुम अभी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही हो, जो टोकियो में थे। तुमने कहा था कि तुम हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने के लिये एक सेना वहाँ भेज रहे हो और इसके लिये बहुत बड़ी धन-राशि चाहिये।

"जब मैंने कुछ भी देने से इन्कार किया तो तुमने कहा था कि क्या मेरी सहानुभूति हिन्दुस्तान के स्वातन्त्र्य-संग्राम के साथ नहीं रही। मैंने कहा था कि सहानुभूति ही नहीं, वरन् इसकी उत्कट अभिलाषा भी है। केवल मैं तुम जितना तेज़ भाग नहीं सकता। स्मरण है कि तब तुमने क्या कहा था ?"

"जी, स्मरण है। मैंने कहा था कि हम आपको मोटरगाड़ी पर बैठाकर साथ ले चलेंगे। और आपने कहा था कि उसके लिये आपके पास दाम नहीं है। इस पर मेरा कहना था कि इसके लिये न्यूयॉर्क नैशनल बैंक पर डाका डाला जा सकता है।"

"मैं तुम्हारी हाज़िर-जवाबी पर मुग्ध हो, तुम्हें एक सौ डालर का नोट देने पर तैयार हो गया था।"

इस पर आनन्द हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, "और अब मैं यह कह रहा हूँ कि दिल न बोलता है और न विचार करता है। यह तो केवल रक्त-संचालन का कार्य करता है।

"देखिये, लाला जी ! हमारा भारतीय विज्ञान यह कहता है कि हमारी खोपड़ी में दो कलायें हैं। एक बुद्धि और दूसरा मन। इन दोनों के समूह को मस्तिष्क अर्थात् 'माइण्ड' कहते हैं। दोनों कलाओं के कार्य भिन्न-भिन्न हैं। एक विचार करती है और दूसरी केवल संस्कार संचय करती है। ईश्वरीय विधान है कि दोनों कलायें परस्पर समन्वय करती हुई चलें। एक पर संचित संस्कारों के आधार पर दूसरी विचार करे और उस विचारित मत पर मनुष्य का जीवात्मा कार्य करे।

"आपका मन तो है हिन्दू वैष्णवों के संस्कार लिये हुए और आपकी बुद्धि है स्वामी दयानन्द जी द्वारा शिक्षित। दोनों में समन्वय बन सकता था चिन्तन से। वह आपने छोड़ रखा है। जबसे आप विदेश गये हैं, आपका चिन्तन शिथिल पड़ा हुआ है। अतः आपके संस्कार आपको गांधी जी के पीछे ले जाना चाहते हैं और आपकी दयानन्द की शिक्षा से प्राप्त बुद्धि गांधी के विपरीत सम्मति दे रही है।

"यह है आपकी विडम्बना। मुझे यही कुछ हिन्दुओं के प्रायः सब नेताओं में दिखायी दिया है। यही हमारे देश का दुर्भाग्य है।"

लाला जी इस मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर विचार करने लगे। वे मौन हो गये। आनन्द कुछ देर तो लाला जी के कुछ कहने की प्रतीक्षा करता रहा। जब लाला जी मौन रहे तो वह समाचार-पत्र, जो वह प्लैटफॉर्म से खरीद कर लाया था, पढ़ने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद से छपने वाला 'लीडर' पत्र था और उसमें कांग्रेस पर हँसी उड़ायी गयी थी। सम्पादकीय में लिखा था—गांधी महान् ब्रिटिश राज्य-भक्त है। वह वर्त्तमान देश की जागृति को ऐसा मोड़ दे रहा है कि जाग्रत तत्त्व परस्पर लड़-झगड़ कर ब्रिटिश सरकार से प्राप्त किये सुधारों को देश-द्रोहियों के हाथ में दे देंगे।

"यह बात गांधी स्वयं कर रहा है अथवा इसे भी कोई ब्रिटिश-भक्त करवा रहा है, कहना कठिन है। हमारा विचार है कि गांधी राजनीति और डिप्लोमेसी से सर्वथा अनभिज्ञ होने के कारण देश को मिथ्या दिशा में ले जा रहा है।"

आनन्द सम्पादकीय में से इस अंश को पढ़कर लाला जी को सुनाने लगा। लाला जी इस प्रकार मन के चिन्तन से छूट, सुख अनुभव करते हुए सुनने लगे।

जब आनन्द पढ़ चुका तो लाला जी बोले, "इस पत्र का सम्पादक गांधी जी के साथ भाग नहीं सकता। इसीलिये गांधी जी की निन्दा कर रहा है।"

आनन्द मुस्कराता हुआ बोला, "गांधी जी को चाहिये कि इस सम्पादक को एक मोटर-गाड़ी ले दें।"

लाला जी ने मुस्कराते हुए कहा, "कुछ भी कहो, मेरा मन गांधी जी का समर्थन करने को कहता है।"

इस समय बनारस स्टेशन आ गया और आनन्द उतर कर अपने डिब्बे में चला गया। वह हिन्दू-मन पर विस्मय करता था। उसने जो विश्लेषण लाला लाजपतराय के सम्मुख किया था, वह सर्वथा स्पष्ट प्रतीत नहीं होता था। वह मन-ही-मन विचार कर रहा था कि किस बात की कमी है उसमें ?

विजय और सोम भी आनन्द के साथ यात्रा कर रहे थे। विजय ने आनन्द को गम्भीर मुख बनाये भीतर आते देखा तो पूछ लिया, "आनन्द ! किधर रह गये थे ?"

"साथ के डिब्बे में लाला लाजपतराय बैठे थे। उनको नमस्ते करने चला गया था।"

"क्या कहते थे ?"

"मैंने पिता जी का परिचय दिया। अपनी भी उनसे टोकियो और न्यूयॉर्क में मिलने की बात कही। इससे वे हमारे विचार समझ गये। वे भी सामान्य हिन्दुओं की भाँति अभी न तो गांधी जी को समझ सके हैं और न ही उनके विरोधी पक्ष के विषय में कुछ जानते हैं।

"भैया ! गांधी जी की पूर्ण नीति की पृष्ठ-भूमि उनके संस्कार ही हैं। कम-से-कम मुझे यह समझ में आया है कि न तो वे वर्त्तमान राजनीतिक विचार-धारा को जानते हैं और न ही उनको भारतीय जीवन के आधार का ज्ञान है। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावुक व्यक्ति हैं और संस्कारों से प्रेरित हो वह सब-कुछ कर रहे हैं। उनके कथन और कार्यों में न कोई युक्ति है और न पूर्व अनुभवों से कुछ समझने की प्रवृत्ति।

"आनन्द!" विजय का कहना था, "किसी मनुष्य को समझने के लिये उसकी जीवन-कथा बहुत दूर तक सहायक होती है। किसी की जीवन-कथा में मैं मनुष्य के माता के आचार-विचार और स्वभाव को भी सम्मिलित करता हूँ।

"गांधी जी के पिता कर्मचन्द, जो कानोजी गांधी के नाम से विख्यात थे, अपने दृढ़-संकल्प और मान-प्रतष्ठा पर सब-कुछ निछावर करने के लिये विख्यात थे।

"मैं तुम्हें कर्मचन्द गांधी के जीवन की एक घटना सुनाता हूँ। वे राजकोट राज्य के दीवान थे। राजकोट के पड़ोस में एक छोटा-सा राज्य था वन्कानेर। वन्कानेर के स्वामी ने कर्मचन्द की सेवाएँ राजकोट के स्वामी से माँग लीं। न चाहते हुए भी, मित्रता के विचार से राजकोट के स्वामी ने कर्मचन्द को कुछ शर्तों पर वन्कानेर में काम करने के लिये भेज दिया।

"वहाँ राजा साहब से प्रबन्ध के विषय में झगड़ा हो गया। लगान में वसूल हुए अन्न की नीलामी बहुत सस्ते दाम पर की गयी तो कर्मचन्द ने उसको अनियमित ठहरा दिया। इस पर वहाँ के शासक ने कर्मचन्द द्वारा उस नीलामी पर रोक को पसन्द नहीं किया। कर्मचन्द ने बताया कि नीलामी धोखा है और इसमें भारी लेन-देन हुआ है। इस पर भी जब वन्कानेर के शासक ने नीलामी की स्वीकृति दी तो कर्मचन्द ने त्याग-पत्र दे दिया और उसमें कारण लिख दिया।

"वन्कानेर अधिपति ने कहा कि त्याग-पत्र में जो कारण लिखा है, उसे निकाल दो। कर्मचन्द ने बताया कि यदि कारण नहीं लिखूंगा तो उनका त्याग-पत्र अकारण होगा और शर्त के अनुसार उन्हें मिलने वाला प्रतिकार नहीं मिलेगा। इस पर अधिपति ने कहा कि उसे बिना किसी हिसाब के दस हज़ार रुपया दे दिया जायेगा और उसे अपने त्याग-पत्र में से कार्य-भार के त्याग का कारण नहीं लिखना चाहिये।

"कर्मचन्द नहीं माने और इस प्रकार उन्होंने रुपया लेने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि किसी के पाप को छुपाने के लिये यह रिश्वत है, और वे यह रिश्वत नहीं ले सकते।

"कर्मचन्द वहाँ से खाली हाथ अपने घर राजकोट को लौटने लगे तो वन्कानेर के शासक ने दस हज़ार रुपये थैलियों में बन्द करा कर गाड़ी में उनके बैठने के स्थान के नीचे रखवा दिये।

"कर्मचन्द जब गाड़ी में सवार हुए तो उन्हें कुछ सन्देह हो गया। एक थैली बैठने के स्थान से कुछ बाहर दिखायी देती थी। कर्मचन्द उसी समय गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नीचे उतर आये और कोचवान से पूछने लगे, 'यह क्या है ?'

"कोचवान रुपयों के विषय में कुछ नहीं जानता था। यह रुपया कर्मचन्द के एक सेवक नवलराम ने मालिक और कोचवान के ज्ञान के बिना वहाँ छुपा दिये थे।

"जब कर्मचन्द को पता चला तो उन्होंने स्वयं रुपयों की थैलियाँ गाड़ी से निकाल, वहीं चौपाल पर रख दीं और चल दिये।

"यह दृढ़-निष्ठा थी कर्मचन्द गांधी की, जो मोहनदास गांधी को अपने उत्तराधिकार में मिली है। इस घटना के समय मोहनदास गांधी छ: वर्ष की वयस् का था।

"कर्मचन्द का हठ एक सनातन व्यवहारिक सत्य पर था, परन्तु राजनीति में सत्य और झूठ में भेद जानना एक सामान्य बुद्धि का काम नहीं। इसके लिये इतिहास का गहन अध्ययन, राजनीतिक व्यवहार का ज्ञान और फिर जनता के मनोवैज्ञानिक चलन के विषय में अनुभूति होनी चाहिये। यह इस महानुभाव में नहीं है, यद्यपि वह हठ तो है।

"उस हठ को हिन्दू-समाज बहुत बड़ी बात मानती है। हिन्दू एक पत्थर की मूर्ति को एक अनपढ़, मूर्ख और दुराचारी कारीगर से बनवाता है और फिर उसे मन्दिर में स्थापित कर उसकी पूजा करने लगता है। केवल पूजा ही नहीं करता, वरन् उसको भोग लगाता है, उसे पंखा करता है, उसे सुलाता है, जगाता है और उसे भूषण-वस्त्र पहनाता है। उस मूर्ति पर लाखों रुपयों की लागत का मन्दिर बनवाता है और यह सब-कुछ जानते हुए भी वहाँ लाखों की भीड़ लग जाती है और लाखों रुपये प्रति वर्ष उस पर चढ़ावा चढ़ाया जाता है। यह सब निष्ठा के कारण ही है। इस निष्ठा के विषय में कोई विचार नहीं करता कि जिस पर इतना कुछ किया जा रहा है, वह मूर्ति भगवान नहीं है; परन्तु हठ-वश सब अपना व्यवहार चलाते हैं।

"यही निष्ठा एवं हठ गांधी में है, और यही हिन्दू-समाज में है।"

"पर भैया!" आनन्द ने पूछ लिया, "ये बड़े-बड़े ख्याति-प्राप्त नेता भी क्या देखते नहीं कि इस असहयोग आन्दोलन का उद्देश्य बहुत ही घटिया और मिथ्या है। इस नकारात्मक कार्य के स्थान, यदि वर्त्तमान जागृति का उपयोग ठीक प्रकार के व्यक्ति करने लगें और शिक्षा, कृषि तथा उद्योग में सुधार एवं उन्नति करने का यत्न किया जाये तो जनता का अधिक कल्याण होगा।"

"देखो," विजय ने अपनी जानकारी बताते हुए कहा, "मैं गौरी बहन के साथ दास बाबू से मिलने गया था और उससे खुल कर बातचीत हुई थी। दास बाबू भी कौंसिल के बहिष्कार का विरोध करते थे। इस कारण मैंने पूछ लिया था कि वे कौंसिलों में प्रतिनिधि भेज कर क्या करना चाहते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनका कहना था कि सरकारी कामों का विरोध।"

"मैंने पूछा, 'जैसा तिलक जी चाहते थे ?'

" 'नहीं !' उनका सतर्क उत्तर था। उन्होंने कहा, 'तिलक जी तो सहयोग और असहयोग सौदेबाज़ी के रूप में करना चाहते थे और मैं शुद्ध विरोध के लिये ही वहाँ जाना चाहता हूँ।'

"मैंने कहा, 'आप शिक्षा में सुधार के लिये वहाँ जाना पसन्द क्यों नहीं करते ?'

" 'शिक्षा ठीक चल रही है। इसमें क्या दोष है ?'

" 'तो शिक्षा में दोष का प्रचार क्यों किया जाता है ?' मैंने पूछा।

"वे बोले, 'जनता में असन्तोष उत्पन्न करने के लिये। यह एक राजनीतिक नारा है। वास्तव में मैं समझता हूँ कि शिक्षा में किसी प्रकार का दोष नहीं है।'

" 'और शासन में ?' मेरा अगला प्रश्न था।

" 'वैसे तो शासन और कानूनी व्यवस्था भी ठीक ही है। केवल जहाँ हिन्दुस्तानी और अंग्रेज़ में तथा सरकार में झगड़ा होता है, वहाँ हाकिमों का झुकाव अंग्रेज और सरकार की ओर हो जाता है। इसी कारण हम अपने हाकिम चाहते हैं।'

"इस पर मैंने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'तो यह पक्ष-विपक्ष की बात ही है, न्याय-अन्याय की नहीं ?'

"दास बाबू जैसे योग्य वकील के लिये इतनी सरल-सी बात समझने में कठिनाई नहीं थी। वे हँस पड़े और बोले, 'राजनीति में अपना पक्ष न्याययुक्त होता है और विपक्ष सदा अन्याययुक्त।'

"मुझे यह बात ठीक नहीं लगी। परन्तु उनसे और अधिक बात करने में लाभ न समझ, मैं अपने काम के विषय में बातचीत करने लगा। मैंने उनसे कहा, 'यदि वे भारत में भावी कानूनी ढांचे पर कोई पुस्तक लिखकर दें तो मैं उनको बीस प्रतिशत रॉयल्टी देकर पुस्तक प्रकाशित करने के लिये तैयार हूँ।'

"उन्होंने कहा, 'इच्छा तो होती है कि कुछ लिखूँ, परन्तु समय नहीं। मैं अपना सार्वजनिक कार्य अधिक आवश्यक और सामयिक समझता हूँ।'

"मैंने उनसे एक बात कही, 'लिखने से आपके मस्तिष्क में भारत की समस्या का चित्र अधिक स्पष्ट हो सकेगा और तब आप अपना सार्वजनिक कार्य भी भली-भाँति कर सकेंगे।'

"उनका कहना था, 'उसकी आवश्यकता स्वराज्य मिलने के पीछे होगी।'

" 'परन्तु बाबू साहब ! इस वर्तमान आन्दोलन में स्वराज्य की चर्चा तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है ?'

" 'हाँ; परन्तु वह प्रश्न हमारे मस्तिष्क में तो है। हम इसे कांग्रेस के असहयोग-आन्दोलन के प्रस्ताव में भी रखना चाहते थे, परन्तु गांधी जी का विचार था कि यह न रखा जाये।

" 'अब हम कांग्रेस के नागपुर-अधिवेशन में इस शब्द को प्रस्ताव में लाने का यत्न करेंगे।' "

आनन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "तब तो 'लीडर' समाचार-पत्र के सम्पादक का यह कहना ठीक ही प्रतीत होता है कि गांधी जी ब्रिटिश राज्य-भक्त हैं और वे जानबूझ कर अथवा अनजाने में हिन्दुस्तान में ब्रिटिश-राज्य को बचाने का यत्न कर रहे हैं।"

विजय ने कहा, "मैं इससे कुछ विलक्षण समझता हूँ। मेरा विचार है कि गांधी जी मैकॉले की शिक्षा का छात्र होने के कारण ब्रिटिश राज्य तथा ब्रिटिश सभ्यता के प्रति निष्ठा छोड़ नहीं सकते। साथ ही उनके माता-पिता के घर के वातावरण के संस्कार उन्हें हिन्दू नाम से चिपटे रहने पर विवश कर रहे हैं। यही हिन्दू संस्कार वे उस बात से जोड़ रहे हैं, जो मैकॉले की शिक्षा ने उनके मस्तिष्क में भर रखा है।"

: ५ :

बरेली स्टेशन पर दोनों भाई और सोम भुवाली जाने के लिये रेलगाड़ी से उतरे तो ये तीनों लाला लाजपतराय को नमस्ते करने उनके डिब्बे में चले गये।

आनन्द ने विजय और सोम का परिचय कराया और विजय ने अपना वही विचार जो उसने दास बाबू से प्रकट किया था, लाला जी के सम्मुख भी रखा। यह पुस्तक लिखने के लिये था। लाला जी ने इन्कार तो नहीं किया। इस दिशा में यत्न करने की बात कह दी।

इस बार भुवाली में एक अन्य समस्या उत्पन्न हो गयी। सोम अपनी पत्नी को अपने साथ बम्बई चलने के लिये कहने लगा तो कीर्ति ने पूछ लिया, "वहाँ क्या है ?"

"वहाँ मैं हूँ।"

"परन्तु क्यों हैं ? यदि अकारण हैं तो यहाँ ही रह जाइये ?"

"अकारण तो नहीं। वहाँ मैं एक महान् सार्वजनिक कार्य में लग रहा हूँ।"

"तो ऐसा करिये कि उस सार्वजनिक कार्य से छुट्टी पा लीजिये और फिर जब आप कोई जीविकोपार्जन का कार्य करने लगेंगे तो मैं आपके साथ चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकूँगी।"

सोम कीर्ति का मुख देखता रह गया। कीर्ति ने आगे कहा, "देखिये जी! आपके चाचा जी अमेरिका में एक सार्वजनिक कार्य करते थे और आपकी चाची आठ वर्ष तक उनके बिना आपके बाबा के पास रही हैं। मैंने चाची प्रभा से पूछा है कि वे उनके पास अमेरिका में क्यों नहीं चली गयीं? उन्होंने बताया कि वे अपने पति के सार्वजनिक कार्य में बाधा बनना नहीं चाहती थीं। यहाँ पिता जी खाने-पहनने और वेद की शिक्षा-दीक्षा का व्यय देते थे। अमेरिका में व्यय बहुत बैठता और वह वेदप्रकाश के पिता को करना पड़ता तो निस्सन्देह उनके सार्वजनिक कार्य में बाधा पड़ती। अतः उनका यही निश्चय रहा कि जब तक वे वहाँ सार्वजनिक कार्य छोड़, अर्जन का कार्य नहीं करते, उन्हें अपना बोझा उन पर नहीं डालना चाहिये।"

"परन्तु वह बात मेरी नहीं है। मुझे तो खाने-पहनने के लिये मेरे पिता जी देते हैं। वहाँ अमेरिका में बाबा चाचा जी को किसी प्रकार का व्यय नहीं भेजते थे। दे भी नहीं सकते थे। परन्तु वह बात यहाँ नहीं है।"

"परन्तु मैं जानती हूँ कि आपके पिता का भी काम बहुत ढीला है। उन्होंने एक नया व्यवसाय आरम्भ किया है और पहले ही वे घर के बोझे को कठिनाई से सहन कर रहे हैं।"

"यह तुम्हें किसने बताया है?"

"इसकी चर्चा परिवार में होती रहती है। आपके पिता जी ने, लगभग तीस हज़ार अपना रुपया व्यवसाय में झोंक दिया है और वे अपने पिता अर्थात् बाबा से और रुपया माँग रहे हैं।

"इस अवस्था में मैं उनके ऊपर बोझा बनने के लिये नहीं जा सकती। मैंने यहाँ दादी जी से बात की है और उन्होंने मेरी बात की सराहना की है। उन्होंने मुझे बताया है कि प्रभा को भी उन्होंने यही सम्मति दी थी।"

सोम ने अपने पिता विजय से कीर्ति की बात कही तो विजय ने कह दिया, "मैं उसका यह त्याग तुम्हारे त्याग से किसी प्रकार कम नहीं समझता। इससे वह भी अपनी शक्ति अनुसार तुम्हारे स्वराज्य-आन्दोलन में भाग लेने वाली बन रही है।

"देखो सोम! वह तुम्हारे साथ जायेगी तो जब तक सत्याग्रह आरम्भ होता है, एक अन्य बच्चे को भी जन्म दे सकती है। यही बात भाभी प्रभा कहती थी। उसका कहना था कि एक क्रान्तिकारी की एक ही सन्तान पर्याप्त है। अधिक सन्तान क्रान्ति के कार्य में बाधा बनेगी।"

सोम ने अपने बाबा से भी यह बात कही तो नलिनी ने कह दिया, "इसमें मैं कुछ सम्मति नहीं दे सकता। देखो सोम, तुम अपने विचार से देश का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हो। हम उस कार्य को ठीक दिशा में न समझते हुए भी तुम्हारी भावना की प्रशंसा ही करते हैं और विजय ने तुम्हारे बम्बई रहने का बोझा सहन करने को स्वीकार किया है। यदि तुम अपनी पत्नी को वहाँ ले जाओगे तो विजय तुम्हें अथवा तुम्हारी पत्नी को घर से निकाल नहीं देगा। परन्तु यह तो तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी के विचार करने की बात है कि तुम्हारे पत्नी के सुख-भोग का बोझा और तुम्हारे बच्चे तथा अन्य होने वाले बच्चों का बोझा तुमने अपने पिता पर डालना है अथवा नहीं। सबसे बड़ी बात यह है कि भुवाली और बम्बई में व्यय का अन्तर भी है।"

सोम ने अब अपनी पत्नी को कहा कि वह उसकी संगत से वंचित हो जायेगा। कीर्ति का सहज उत्तर था कि इसमें दोनों बराबर हैं।

इसने सोम को निरुत्तर कर दिया और एक सप्ताह तक भुवाली में रह वह बम्बई लौट गया। विजय तो भुवाली से लाहौर चला गया था। वह अपनी पुस्तकों की एक दुकान लाहौर में चालू करना चाहता था।

अब घर की स्थिति यह थी कि सरस्वती के दो लड़के लाहौर में शिक्षा पा रहे थे। सरस्वती की एक लड़की थी इन्द्रा। वह भुवाली में ही थी। ललिता का एक लड़का कलकत्ता में पढ़ता था। वह स्कूल की अन्तिम परीक्षा दे चुका था और उसके परिणाम की प्रतीक्षा में भुवाली में आया हुआ था। चारुदेव यह चाहता था कि वह शान्ति-निकेतन में पढ़े, परन्तु नलिनी का विचार था कि उसे ललिता के लड़के के साथ लाहौर के कालेज में भरती करा देना चाहिये।

नलिनी का मितव्ययता के विचार से यह प्रस्ताव भी था कि ललिता लाहौर जाकर अपनी कोठी में रहे, जिससे लड़के कोठी में रहते हुए अच्छा और सस्ता जीवन चला सकें।

प्रज्ञा भाई के परिवार में द्रुत-गति से वृद्धि होती देख अपना पृथक् मकान बना कर रहने का विचार करने लगी। उसके अपने साधन सीमित थे और उसका परिवार भी वृद्धि पा गया था। वह स्वयं थी, मीनाक्षी थी, उसके दो लड़के और एक लड़की थी। लड़के अब बीस तथा अट्ठारह वर्ष की आयु के थे। लड़की नौ वर्ष की थी। इनके अतिरिक्त एक लड़का ज्ञान का ललिता से भी था।

प्रज्ञा ने सुवर्णा की कोठी के साथ ही दो सहस्र गज़ भूमि सरकारी वन-विभाग से मोल लेकर उस पर अपना मकान बनवाना आरम्भ कर दिया और जब वह मकान बन गया तो उसमें रहने चली गई।

गांधी जी का आन्दोलन ज़ोरों पर चल रहा था। नागपुर-कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी की शानदार विजय हुई। दस-बारह व्यक्ति गांधी जी के सत्याग्रह का विरोध करते रहे, परन्तु विशाल बहुमत से असहयोग आन्दोलन चलाना स्वीकार किया गया। इस प्रस्ताव का विरोध करने वालों में मुख्य थे पण्डित मदन मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालवीय, मिस्टर जिन्ना और खापर्डे। जिन्ना और उनके साथ दस-बारह व्यक्ति तो कांग्रेस छोड़ गये, परन्तु मालवीय जी ने कांग्रेस से त्याग-पत्र देना स्वीकार नहीं किया। वे कांग्रेस में डटे रहे, परन्तु उनको गांधीवादी कांग्रेस ने छोड़ दिया। सन् १९२१ के उपरान्त कांग्रेस ने मालवीय जी को मुख नहीं लगाया।

अब कांग्रेस में हकीम अजमल खाँ, डाक्टर अंसारी, पण्डित मोतीलाल और सी० आर० दास प्रमुख नेता थे। मौलाना मुहम्मम अली और शौकत अली भी कांग्रेस में बड़े नेताओं में माने जाते थे, परन्तु वे गांधी जी के अहिंसावाद के पूरे-पूरे समर्थक नहीं थे और उन्होंने कभी भी खिलाफत-कान्फरेंस में अहिंसा की नीति का समर्थन नहीं किया। सन् १९२१ में वे कराची-खिलाफत कान्फरेंस में हिंसा को प्रोत्साहन देने के अपराध में पकड़े जाकर दो वर्ष की कैद का दण्ड पा गये।

मौलानाओं के भड़काने वाले व्याख्यानों का परिणाम हुआ विख्यात 'मोपला-बलवा'। इसमें सरकारी इमारतों के अतिरिक्त हिन्दुओं की सम्पत्ति बहुत बड़ी मात्रा में नष्ट की गई; सहस्त्रों की संख्या में हिन्दुओं की हत्या की गई तथा हिन्दू स्त्रियों से बलात्कार और उनका अपहरण किया गया। हिन्दुओं को बल-पूर्वक मजहब-परिवर्तन पर विवश भी किया गया। यह खिलाफत-आन्दोलन का प्रथम परिणाम था।[1]

सन् १९२४ में नलिनी स्वामी श्रद्धानन्द जी के विशेष आग्रह पर बनारस में था, जब हिन्दू महासभा की स्थापना हुई। स्थापना के प्रस्ताव से पूर्व मालवीय जी ने देश की वस्तु-स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गांधी जी को खिलाफत आन्दोलन में सहयोग देने से मना किया गया था, परन्तु वे माने नहीं। उसका ही यह परिणाम है कि देश में प्रगति के स्थान, विगति हुई है। इस बिगड़ी स्थिति में हिन्दू हितों की रक्षा के लिये हम एक हिन्दू राजनीतिक संगठन निर्माण करना चाहते हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि जैसे कांग्रेस में जमीयतुल-उलेमा मुसलमानों के हितों की रक्षा के लिये कार्य कर रही है, उसी प्रकार यह हिन्दू-महासभा कांग्रेस में हिन्दू हितों की रक्षा के लिये कार्य करे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने नलिनी से आग्रह किया कि वह भी अपने विचारों को इस हिन्दुओं की सभा में उपस्थित करे। नलिनी उठा और एक घण्टा से ऊपर बोला। सभा-मण्डप में श्रोतागणों के पूर्ण शान्ति और रुचि-पूर्वक श्रवण

---

१. कांग्रेस का कहना है कि इस विद्रोह में असहयोग आन्दोलन का हाथ नहीं; परन्तु कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले डाक्टर सीतारामय्या ने अपनी पुस्तक में यह स्वीकार किया है कि यह आन्दोलन केरल में भी उसी प्रकार फैला, जैसा अन्य प्रान्तों में फैला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते रहने से उत्साहित हो नलिनी ने मन की बात कह दी।

नलिनी ने कांग्रेस का पूर्ण इतिहास और उसकी स्थापना में उद्देश्य वर्णन कर कांग्रेस के सब पुराने नेताओं की मानसिक अवस्था का विश्लेषण किया। तदनन्तर वर्त्तमान स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उसने कहा, "कांग्रेस की भूल यह है कि यह समझती है कि बिना मुसलमानों की सहायता के, देश का कल्याण सम्भव नहीं। ये भूल जाते हैं कि संसार के इतिहास में ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि जब मुट्ठी-भर दृढ़-संकल्प व्यक्ति विशाल जन-समूह पर शासन कर सकते हैं। यह हिन्दुस्तान में भी हो चुका है। अल्प-संख्यकों के बहु-संख्या पर शासन में खराबी यह होती है कि शासक बनने के साथ अल्प-संख्यक भूल जाते हैं कि शासक को निष्पक्ष और न्यायकर्त्ता होना चाहिये।

"मैं समझता हूँ कि हिन्दू इस देश में बहु-संख्या में हैं। इनका बाहुल्य अन्य मज़हब वालों की तुलना में एक और चार का है। साथ ही हिन्दू-मन सदा मज़हबों के मामलों में स्वतन्त्रता देने वाला रहा है। इस कारण यदि इस देश में, हिन्दू अकेले राज्य लेते हैं और अकेले ही चलाते हैं तो किसी प्रकार से यह न तो असम्भव है और न ही अनुपयुक्त।

"मैं चाहता हूँ, हमें कांग्रेस छोड़कर स्वतन्त्र रूप से स्वराज्य के लिये यत्न करना चाहिये। यदि मुसलमान स्वराज्य चलाने में सहयोग न दें तो स्वत: ही स्वराज्य-आन्दोलन चलाना चाहिये। मुझे विश्वास है कि किसी भी हिन्दू माँ का बेटा कभी भी मज़हब के आधार पर किसी के साथ अन्याय नहीं करेगा।

"इस कारण मेरा यह सुझाव है कि हिन्दुओं को तुरन्त कांग्रेस छोड़ देनी चाहिये और हिन्दू-महासभा को भारत में निष्पक्ष, पंथ-निरपेक्ष और न्याय-युक्त स्वराज्य स्थापित करने के लिये यत्न आरम्भ कर देना चाहिये।

"कांग्रेस ने सन् १९१६ के समझौते के द्वारा हिन्दुओं को एक सामान्य नागरिक स्वीकार किया है और मुसलमान को एक विशेषाधिकार सम्पन्न नागरिक। इसका उत्तर मैं यह देना चाहता हूँ कि हिन्दू हिन्दुस्तान का नागरिक है और कांग्रेस एक अहिन्दुस्तानी अहिन्दू संस्था है। उसके द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने तथा उसे न्याय-युक्त राज्य स्थापित करने के मैं अयोग्य समझता हूँ।"

हिन्दुओं ने नलिनीकान्त के भाषण के समाप्त होने पर तालियाँ खूब बजायीं, परन्तु जिस प्रस्ताव द्वारा हिन्दू महासभा की स्थापना की गई, उसे पारित करते हुए उसमें कांग्रेस छोड़ना स्वीकार नहीं किया। यह एक अति दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति थी, क्योंकि सन् १९२५ में कांग्रेस ने वह बात सम्पन्न कर दी, जो हिन्दू महासभा सन् १९२४ में नहीं कर सकी। कांग्रेस ने यह निश्चय कर दिया कि हिन्दू महासभा के सदस्यकांग्रेस में किसी पद पर नियुक्त नहीं हो सकते।

इस प्रस्ताव ने देश में एक नये राजनीतिक दल को जन्म दिया, परन्तु इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय तक इस दल के हाथ से 'ट्रम्प कार्ड'[1] छिन चुका था।

इस पर भी पंजाब, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में इस दल ने उल्लेखनीय विजय प्राप्त की। यह सन् १९२६ में ही हो सका।

: ६ :

सोमदेव खिलाफत के विषय में व्याख्यान देता हुआ पकड़ा गया था और छः मास का कारावास भुगत कर जब बाहर आया तो पुनः पकड़ा गया और इस बार उसको दो वर्ष का कठोर दण्ड मिला। वह दूसरी बार जेल का दण्ड भोग कर सन् १९२३ में छूट कर आया।

सन् १९२३ में देश का वातावरण बदल चुका था। खिलाफत आन्दोलन समाप्त हो चुका था। गांधी जी के सन् १९२२ फरवरी मास में असहयोग आन्दोलन वापस ले लेने के कारण मुसलमान गांधी जी के सामान्य रूप में और हिन्दुओं के विशेष रूप में विरोधी हो गये थे तथा कनखल, हरिद्वार, कलकत्ता और इलाहाबाद में हिन्दू-मुसलमान दंगे हो चुके थे।

सोम को जेल से छूटे अभी दो दिन ही हुए थे कि वह मौलाना मुहम्मद अली के एक बयान को पढ़ कर वे स्तब्ध रह गया। उसके विचार गो-हत्या के विषय में ऐसे थे, जिसे हिन्दू, स्वभाव से ही पसन्द नहीं करते थे। किसी ने व्याख्यान के उपरान्त पूछ लिया, "मौलाना साहब! लखनऊ में बलवे के विषय में आप क्या समझते हैं।"

लखनऊ में बलवा एक गाय के जलूस के विषय में हुआ था। मौलाना साहब का कहना था, "यह फसाद हिन्दुओं ने किया है। उन्होंने गाय के जलूस को रोकने का यत्न किया, जबकि इसकी सरकारी अधिकारी स्वीकृति दे चुके थे।"

किसी ने जलसे में ही कह दिया, "सरकार तो हिन्दू-मुसलमानों में फसाद करवाना चाहती थी। मुसलमानों को गाय का जलूस नहीं निकालना चाहिये था।"

इस पर मौलाना का सतर्क उत्तर था, "हिन्दुओं को जलूस को रोकना नहीं चाहिये था।"

यह समाचार इलाहाबाद के एक समाचार-पत्र में छपा। सोम इस पत्र को पढ़ता हुआ समझने का यत्न कर रहा था कि दोष किसका था? उसे परेशान देख, उसकी माँ ललिता ने पूछ लिया, "सोम! क्या विचार कर रहे हो?"

"माँ! जेल से छूट कर आने पर देश में बहुत ही विचित्र बातें हो रही

---

१. जीतने वाला ताश का पत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख रहा हूँ। मैं जब पकड़ा गया था तो हिन्दू और मुसलमान गले मिलते दिखायी देते थे। आज हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के विषय में विचार करते समय भी आँखें लाल कर लेते हैं।"

"परन्तु यह स्थिति तो पहले भी थी। केवल हिन्दू आँखें मूँद इस प्रकार की बातों को न देखने का यत्न कर रहे थे। अब आँखें खोल, देख रहे हैं और आँखें लाल कर लेते हैं।"

"तो तुम भी दोष हिन्दुओं का समझती हो?"

"देखो सोम! मैं राजनीति में रुचि नहीं रखती। मैं तो यह समझती हूँ कि मुसलमानों को इस देश में आये आठ सौ वर्ष हो चुके हैं और तबसे ही ये गो-हत्या करने में रुचि लेते रहे हैं। हिन्दू उनकी इस अभिरुचि को सहन करते चले आये हैं तो अब क्यों नहीं सहन कर सकते?"

"परन्तु माँ! मुझे जेल में एक मौलाना ने बताया था कि गाय की कुरबानी की बात कुरान में नहीं लिखी। वहाँ तो भेड़ की कुरबानी की बात लिखी है।"

"परन्तु यहाँ कुरान की बात नहीं है। यहाँ तो जो प्रचलित रिवाज है, वह ही कानून है। यह मुसलमानों का अधिकार हो गया है कि वे गाय की कुरबानी कर सकते हैं। जो कोई भी इसे मना करता है, वह एक मज़हबी रीति-रिवाज को मना करता है।"

"अर्थात् हिन्दू अपराधी हैं?"

इस समय सरस्वती दुकान के मुख्य कार्यालय को बन्द कर आ गई। उसने हाथ में एक पुस्तक पकड़ी हुई थी। यह उनके 'नैशनल पब्लिकेशंस' ने प्रकाशित करवायी थी।

सोम सरस्वती को माता जी कह कर सम्बोधन किया करता था। उसने उनको कार्यालय से आया देख कुछ लिया, "माता जी! दुकान बन्द हो चुकी है क्या?"

"हाँ; हमारा काम डाक और रेल से रहता है और डाकखाना तो चार बजे बन्द हो जाता है। रेल का बुकिंग-आफिस भी इस समय माल नहीं लेता। इस कारण इस समय कार्यालय बन्द कर देते हैं। हमारी कालबा देवी वाली बिक्री की दुकान खुली रहती है। वह रात्रि आठ बजे बन्द करते हैं।"

"यह कौन-सी पुस्तक है?"

"लखनऊ के एक सैयद हसन अली एम० ए० ने लिखी है और हमने प्रकाशित करवायी है। आज ही प्रेस से आयी है।"

"क्या लिखा है हसन साहब ने?"

"इसमें गाय की कुर्बानी के पक्ष में जो-जो युक्तियाँ मुसलमान प्रायः देते हैं, उनका उत्तर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु माता जी ! पुस्तक अंग्रेज़ी में है। इसका क्या लाभ होगा ?"

"होगा यह कि कुछ हिन्दू इसे मुसलमानों का स्वाभाविक अधिकार मानने लगे हैं। उनका मुख बन्द करने के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है और प्रकाशित करवायी गयी है।"

"इसका उर्दू में अनुवाद प्रकाशित करवाना चाहिये। होना तो यह चाहिये था कि हसन साहब इसे उर्दू में ही लिखते। इस बात के प्रचार की आवश्यकता मुसलमानों में अधिक है।"

"तो ऐसा करो, सोम ! तुम इस पुस्तक का उर्दू में अनुवाद कर दो।"

"परन्तु माता जी ! मुझे तो उर्दू आती नहीं।"

"तब तो इसका अंग्रेज़ी में होना ही ठीक है। कारण यह कि इस बात के प्रचार की आवश्यकता तुम जैसे बुद्धिमानों में भी है।"

ललिता हँस पड़ी। सरस्वती इस समय चाय लिया करती थी। विजय कार्यालय का काम बन्द कर कालबादेवी वाली दुकान पर चला जाया करता था और वहाँ से साढ़े-आठ बजे लौटा करता था। तब रात का भोजन होता था। अभी सवा-पांच बजे थे। सरस्वती चाय घर पर लिया करती थी।

ललिता उठी और रसोईघर में चाय बनाने चली गयी। सरस्वती नवीन छपी पुस्तक की प्रति वहीं बैठकघर में छोड़, हाथ-मुख धोने चली गयी। सोम ने पुस्तक उठा ली और उसको देखने लगा।

पुस्तक का नाम था, 'रॉयट्स इन दि नेम ऑफ काऊ'। सोम ने पुस्तक खोली और देखने लगा। गाय के नाम पर हुए विख्यात बलवों का उल्लेख उसमें था। वह मोपला बलवे का वृत्तान्त निकालकर पढ़ने लगा। उसमें रोमांचकारी घटनाओं का वर्णन था। जब वह पढ़ने लगा तो पढ़ता ही गया। सरस्वती मुख-हाथ धो लौट आयी। सोम को पता नहीं चला। ललिता चाय बनाकर ले आयी। तब भी वह पढ़ने में लीन था। ललिता ने ही पूछ लिया, "सोम ! चाय लोगे अथवा नहीं ?"

"ओह ! माँ, पियूंगा।"

उसने पुस्तक खुली ही अपने समीप सोफा पर रख दी और सरस्वती से कहने लगा, "माता जी ! यह पुस्तक तो शरारतपूर्ण है। इसे बग़ावत फैलाने वाली पुस्तक समझ, ज़ब्त कर लेना चाहिये।"

"तो बहुत खराब बातें लिखी हैं इसमें ?"

"मैं समझता हूँ कि यह बलवों को रोकने के स्थान, उनको अधिक ही करेगी। मुसलमान हठपूर्वक गो-हत्या करेंगे ही। हाँ, हिन्दू इसे मुसलमानों की अनाधिकार-युक्त हरकत मान, इसका विरोध करेंगे और फिर बलवा हो जायेगा।"

"तो ऐसा करो। तुम एक पस्तक ऐसी लिख दो, जिसमें यह लिखा हो कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुओं को मुसलमानों के इस अधिकार का विरोध नहीं करना चाहिये।"

"बात तो ठीक है। पर क्या आप उसको प्रकाशित करवायेंगी ?"

"इस विषय में तो तुम्हारे पिता जी निश्चय करेंगे। यह काम उन्होंने अपने अधिकार में ले रखा है।"

"तब तो मेरी पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकेगी।"

"पहले लिखो तो सही। प्रकाशन की बात तो पीछे विचार कर ली जायेगी।"

"मैं अपनी पुस्तक की रूप-रेखा पहले पिता जी को दिखा दूंगा। यदि उन्होंने स्वीकार की तो लिखने का यत्न करूंगा।"

तीनों चाय पीने लगे थे। चाय पीते हुए सरस्वती ने कहा, "मैं गो-हत्या पर आपत्ति पसन्द नहीं करती।"

सोम के मुख से निकल गया, "तो आप भी हिन्दुओं को दोषी मानती हैं ?"

सरस्वती ने पुनः प्याला सॉसर में रखते हुए कहा, "परन्तु अब तो हिन्दू गो-हत्या का विरोध नहीं कर रहे। कर सकते भी नहीं। प्रायः सब बड़े-बड़े नगरों में बूचड़खाने खुले हुए हैं। कोई झगड़ा नहीं करता। झगड़ा तो कुरबानी की गाय का जलूस निकालने पर आपत्ति करने के समय होता है। मुसलमान अपने निजी अधिकारों को एक सार्वजनिक अधिकार बना लेते हैं।"

सोम समझा नहीं। उसने कहा, "माता जी! मैं समझा नहीं।"

"इसमें कुछ समझने की बात नहीं है। निजी अधिकार को हम इस सीमा तक स्वीकार करते हैं कि मुसलमान जो चाहें, खायें और जो चाहें न खायें। परन्तु जो बात हिन्दू पसन्द नहीं करते, वह कुरबानी की गाय के जलूस की है। जलूस एक सार्वजनिक कृत्य है। इसको 'पर्सनल-लॉ' में नहीं माना जा सकता।"

सोम को बात समझ में आने लगी थी। वह समझने लगा था कि मौलाना मुहम्मद अली का हिन्दुओं पर बलवों का दोषारोपण अशुद्ध था। परन्तु वह विस्मय करता था कि मौलाना मुहम्मद अली जैसा पढ़ा-लिखा विद्वान् इतनी साधारण-सी बात क्यों नहीं समझ सका ? वह गम्भीर विचार में मग्न हुआ तो सरस्वती ने पूछ लिया, "सोम ! क्या विचार कर रहे हो ?"

"मैं विस्मय करता हूँ कि इतनी सरल बात जो आपने बतायी है, इसे मुसलमान नेता समझ क्यों नहीं रहे ? जवाहरलाल जी ने भी लखनऊ में हुए बलवे पर अपनी सम्मति मुसलमानों के पक्ष में दी है।"

"क्या कहा है पण्डित जी ने ?"

"यही कि इतनी साधारण-सी बात पर इतना हो-हल्ला और इन्सानी खून बहाना महामूर्खता है। हम एक महान् कार्य स्वराज्य-प्राप्ति में लगे हैं। ये बलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति का ध्यान उस महान् कार्य से बदल कर इस अनावश्यक झगड़े पर केन्द्रित कर रहे हैं।"

"कौन कर रहे हैं ?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"कोई भी हो। सिद्धान्तात्मक बात तो यह है कि गाय की हत्या झगड़े का विषय नहीं होना चाहिये।"

सरस्वती मुस्कराती हुई सोम की बात सुन रही थी। वह जानती थी कि सोम गांधी जी के 'ओवन' में पका हुआ पकवान है। इस कारण वह चुपचाप सोम के मनोद्‌गारों को सुन रही थी। इस पर ललिता ने कहा, "सोम का दृष्टि-कोण युक्तियुक्त नहीं।"

"क्या खराबी है मेरे कथन में ?" उसने माँ की ओर देखकर पूछ लिया।

"यही कि तुम सरस्वती बहन की बात समझे नहीं। गो-हत्या का प्रश्न नहीं है। प्रश्न है सार्वजनिक स्थानों पर कुरबानी वाली गाय के प्रदर्शन का। यह तो जान-बूझ कर हिन्दुओं के निजी मनोभावों में हस्तक्षेप करना कहा जायेगा।"

"ऐसा तो है ही।" सरस्वती ने कह दिया, "एक मुसलमान को किसी हिन्दू लड़की से विवाह करने की स्वीकृति तो है। परन्तु बर-लबे-सड़क हिन्दू लड़कियों से बलात्कार का अधिकार नहीं दिया जा सकता।"

इस कथन पर सोम गम्भीर हो गया। वह आँखें नीचे किये विचार करता रहा। सरस्वती ने देखा कि यह चाय पीते हुए दूसरी बार है कि सोम परेशानी अनुभव कर रहा है। वह उससे इसका कारण पूछना चाहती थी। वह अभी इस विषय पर पूछने के लिये विचार ही कर रही थी कि सोम ने पूछ लिया, "माता जी ! क्या मैं दूसरा विवाह नहीं कर सकता ?"

इस पर तो सरस्वती और ललिता दोनों ही चौंक उठीं। ललिता ने पूछा, "तो तुम किसी लड़की को पसन्द कर आये हो ?"

"हाँ, एक अति दुखियारी है। वह और उसके पिता मुझसे भीख माँग रहे थे। मैंने लड़की को पसन्द कर लिया। वे उसका विवाह करने को तैयार हो गये हैं।"

"तो एक भिखारी की लड़की को घर में लाओगे। एक पत्नी को तो कुछ दे नहीं सकते। अब एक दूसरी को लाओगे तो उसे कहाँ से खिलाओगे ?"

"मैं अब कहीं नौकरी ढूँढूँगा।"

"तो पहले नौकरी ढूँढ लो। तब कर लेना।"

"परन्तु," सरस्वती ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "पहली का क्या करोगे ?"

"वह तो भुवाली के साथ ब्याही गयी है।"

"तुम कहीं कुछ काम करते होते तो वह तुम्हारे पास आकर रहती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ तो कर रहा था। हाँ, वह काम अवैतनिक था।"

"वह इसको समझती है। यह हमारे परिवार में स्त्रियों की रीति है कि वे सार्वजनिक कार्य करने वाले पुरुषों से झगड़ा नहीं करतीं। अपना व्यय भी उन पर नहीं डालतीं। प्रश्न यह है कि नयी जो ढूंढ कर ला रहे हो, वह क्या कहती है?"

"मैंने उससे बात की है। वह कहती थी कि यदि माँग कर ही पेट भरना है तो वह पहले ही यह कर रही है। फिर विवाह की क्या आवश्यकता है?"

"और तुम नौकरी ढूंढने लगे हो?"

"अभी ढूंढनी आरम्भ नहीं की। पिताजी रात आयेंगे तो उनसे बात करूँगा।"

"ठीक है। उनसे बात करना।" ललिता ने पुत्र का समर्थन कर दिया।

: ७ :

रात भोजन के समय सोम ने अपने दूसरे विवाह की बात पिता से की तो विजय ने पूछ लिया, "कौन है वह?"

"परसों मैं 'गेट वे ऑफ इण्डिया' के समीप खड़ा अस्त होते सूर्य को देख रहा था कि एक वृद्ध पुरुष के साथ एक लड़की भीख माँगने आयी। मैं उसकी रूप-रेखा देख उस वृद्ध से कहने लगा, 'इस जवान लड़की से भीख मँगवा रहे हो! इसका किसी से विवाह क्यों नहीं कर देते?'

"इस पर लड़की ने कह दिया, 'भिखमंगों से कौन विवाह करता है?'

"मेरे मुख से निकल गया, 'मैं तुमसे विवाह कर सकता हूँ। बताओ, है स्वीकार?'

"लड़की ने तीव्र दृष्टि मुझ पर डाली; फिर कहने लगी, 'देखने में तो आप भले प्रतीत होते हैं। मैं समझती हूँ कि मैं आपका प्रस्ताव स्वीकार कर लूँ। चलिये, कहाँ चल कर विवाह करेंगे?'

"मैंने कहा, 'इस प्रकार नहीं। मैं अपने पिता के घर में रहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिये पहले स्थान बनाना पड़ेगा।'

" 'तो बना लीजिये। अभी तो भूख लग रही है, कुछ दे दीजिये।'

"मैंने उसे एक रुपया दिया तो वह चली गयी। आज फिर पिता-पुत्री मिले तो लड़की ने आते ही पूछ लिया, 'तो आपने पिता के घर में मेरे लिये स्थान बना लिया है?'

"मैंने कहा, 'नहीं।'

" 'क्यों?'

" 'मुझे विश्वास नहीं था कि तुमसे पुनः भेंट होगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'इस पर लड़की ने मुस्करा कर कहा, 'पिता जी से पूछने की क्या आव-श्यकता है ? कहीं कोई काम-धन्धा करते हैं अथवा नहीं ?'

" 'नहीं ।'

" 'तो इतने बड़े शरीर का पालन कैसे करते हैं ?'

" 'माता-पिता से माँग कर खाता हूँ ।'

" 'माँग कर तो हम अब भी निर्वाह करते हैं । यदि विवाह के उपरान्त भी माँग कर खाना है तो फिर विवाह किसलिये करूँ ?'

"लड़की समझदार मालूम होती है । आज हममें और भी बात हुई है । निष्कर्ष यही है कि यदि मैं स्वतन्त्र रूप में काम कर सकता हूँ तो वह मेरी पत्नी बन कर रह सकती है ।"

"सोम !" विजय ने कहा, "क्या सब भीख माँगने वाली स्त्रियों को विवाह की भीख दी जाती है ?"

"पिता जी ! वह कीर्ति से अधिक सुन्दर और समझदार है ।"

"देखो, मैं उसको काम बता सकता हूँ, जिससे वह अपना और अपने पिता का पेट भर सके । पेट भर कर किसी से विवाह करना चाहेगी तो विचार किया जा सकता है । किसी भूखे के सामने विवाह का प्रस्ताव करना, वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहन देना होगा ।"

सोम विचार करने लगा । उसने विचार कर कहा, "परन्तु बाहर से भले ही कोई न कहे, सब स्त्रियों के मन में छुपी बात यही होती है कि जीवन का निर्वाह जहाँ हो सके, वहाँ जाकर रहें ।"

"नहीं सोम ! मैं ऐसा नहीं मानता । अच्छा, तुम्हें वह फिर मिले तो उसे यहाँ ले आना । मैं देखूँगा कि वह निर्वाह के लिये विवाह करना चाहती है तो उसके निर्वाह का बिना विवाह के प्रबन्ध कर दूँगा और यदि विवाह की इच्छा करती है तो उसे बता दूँगा कि तुमसे वह वस्तु मिल सकती है अथवा नहीं ।"

"तो आप मुझमें किसी प्रकार की कमी देखते हैं ?"

"यह मैं क्या जानूं ? विवाह योग्य कमी अथवा सामर्थ्य के विषय में तो तुम ही जान सकते हो ।"

"आप मुझे छापाखाना अथवा दुकान पर काम दे दें । शेष मैं स्वयं समझ लूंगा ।"

"और कीर्ति का क्या करोगे ?"

"वह भी रहेगी । आना चाहेगी तो आ सकेगी । इस विषय पर मेरी उससे बात हुई है ।"

"तो तुमने इस नई लड़की को बताया है कि तुम्हारा एक विवाह हो चुका है और वह तुम्हारे साथ क्यों नहीं रहती ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सब तो नहीं बताया। इतना अवश्य कहा है कि मेरी एक अन्य पत्नी भी है।"

"इस पर भी वह विवाह के लिये राज़ी है ?"

"हां, पिता जी।"

"अच्छी बात है। उसे मुझसे मिलने के लिये कहना। क्या जाने बिना तुम्हारे नौकर हुए ही तुमसे विवाह के लिये तैयार हो जाये।"

पिता के इस कथन से सोम अपने मन में सन्तोष अनुभव करने लगा। भोजन समाप्त कर विजय, सोम, सरस्वती और ललिता बैठकघर में आ गये। वहाँ पहुँचे तो विजय की दृष्टि समाचार-पत्र पर जा पड़ी। इसी समाचार-पत्र में मौलाना मुहम्मद अली का वक्तव्य प्रकाशित हुआ था।

विजय एक-दूसरा समाचार पढ़ रहा था। मौलाना के व्याख्यान का तो शीर्षक पढ़ कर के ही उसने छोड़ दिया था। दूसरे पृष्ठ पर दास बाबू का जिन्ना से भेंट का समाचार छपा था। विजय उसे पढ़ने लगा। समाचार इस प्रकार था—

'सी० आर० दास, बम्बई की डेमोक्रैटिक पार्टी को पुन: 'प्रोचेंजर' कांग्रेस में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में बम्बई में आये थे। वे यहाँ के कई नेताओं से मिले, जिनमें सर्वश्री जयकर, खापर्डे, मुंजे तथा जिन्ना इत्यादि हैं।

'जहाँ श्री जयकर इत्यादि कांग्रेस के 'प्रोचेंजर' दल में सम्मिलित हो गये हैं, वहाँ जिन्ना ने इस आधार पर सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया है कि 'प्रोचेंजर' कांग्रेस वाले गांधी के साथ सम्बन्ध रखना चाहते हैं।

'सी० आर० दास का कहना है कि गांधी जी देश के मान्य नेता हैं। उनकी सरपरस्ती में ही राजनीतिक कार्य चलेगा। इस पर जिन्ना साहब का यह स्पष्ट उत्तर था कि जब तक कांग्रेस से गांधी जी का सम्बन्ध है, वे कांग्रेस में नहीं आ सकते। गांधी जी राजनीतिक नेता नहीं हैं। उन्हें राजनीति का ए-बी-सी भी पता नहीं। सी० आर० दास यद्यपि गांधी जी की बातों से सहमत नहीं, इस पर गांधी जी की सरपरस्ती को छोड़ना नहीं चाहते थे।'

समाचार पढ़ विजय ने मुस्कराते हुए सोम से पूछ लिया, "इस समाचार को पढ़ा है ?" यह पूछ विजय ने उस समाचार के शीर्षक की ओर संकेत कर दिया।

सोम ने कहा, "हां, पिता जी ! पढ़ा है।"

"क्या समझे हो ?"

"यही कि जिन्ना को गांधी जी से चिढ़ हो गयी है। उसे देश-हित की इतनी चिन्ता नहीं, जितनी कि नेतागीरी की है।"

"और दास बाबू गांधी जी के कार्यक्रम को तो पसन्द नहीं करते, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके नाम को छोड़ना नहीं चाहते। वे ऐसा क्यों करते हैं?"

"गांधी जी देश के नेता हैं और देश को साथ रखने के लिये वे उनके नाम को छोड़ना नहीं चाहते। यह नीति है।"

विजय ने बात बदल दी। उसने पूछा, "तुम किस गुट्ट में हो?"

"मैं तो 'प्रोचेंजर' हूँ। मैं आज डाक्टर जयकर से बुलायी सभा में गया था। अपना नाम स्वराज्य-दल में लिखवा आया हूँ।"

"खैर! कुछ तो बुद्धि तुममें है। मुझे इस पर सन्तोष है।"

"पिता जी! मैं आगामी चुनावों में केन्द्रीय कौंसिल की सदस्यता के लिये प्रत्याशी बनने की इच्छा करता हूँ। यदि टिकट मिल गया तो मैं अवश्य सफल हो जाऊँगा।"

"और वहाँ जाकर तुम्हारी नीति क्या होगी?"

"अभी मैं उस स्तर का नेता नहीं हो सका कि नीति के विषय में अपने मन की बात कर सकूँ। अभी तो बड़े नेताओं के बताये मार्ग पर ही चलूँगा।"

"बड़े नेता गांधी जी हैं।"

"परन्तु वे जेल में हैं। बाहर होते तो दास बाबू का कहा मान जाते।"

"मैं तुम्हारे वर्त्तमान विचार को पसन्द करता हूँ।"

"तब पिता जी! मुझे निर्वाचन लड़ने के लिये आप आर्थिक सहायता देंगे क्या?"

"मैं एक दिन तुम्हारा व्याख्यान सुनने जाऊँगा और यदि तुममें नेता बनने की योग्यता प्रतीत हुई तो मैं पाँच हज़ार रुपया व्यय करने के लिये दे दूंगा।"

"मैंने बाबा और दादी को भी लिखा है। कुछ तो वे भी देंगे।"

"तब मज़ा हो जायेगा। निर्वाचन के दिनों में रंगरलियाँ मनायी जा सकेंगी।"

"निर्वाचन के दिनों में तो नहीं। हाँ, निर्वाचित होने के उपरान्त हाथ रंगने का अवसर मिलेगा।"

"परन्तु यदि दल की नीति सरकार का विरोध करने पर डटी रही तो मस्जिद के चूहे की भाँति भूखे मरोगे।"

"पिता जी, नहीं। मैं देश-विदेश में घूमने की सुविधा तो पा जाऊँगा।"

"वह कैसे?"

"अभी बताना नहीं चाहता। जब कौंसिल का मैम्बर चुन लिया गया तो बताऊँगा।"

अगले दिन विजय अपने व्यवसाय के कार्यालय में बैठा पत्र-व्यवहार कर रहा था कि एक वृद्ध व्यक्ति के साथ एक युवती कार्यालय में आयी। उन्हें देख विजय का ध्यान तुरन्त सोम की ओर चला गया। उसको समझ आया कि यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवती वही है, जिसके विषय में कल रात सोम बता रहा था। उसने हाथ जोड़ युवती और वृद्ध व्यक्ति को नमस्कार किया और उन्हें मेज़ के दूसरी ओर रखी कुर्सियों पर बैठने का संकेत कर दिया।

युवती ने खड़े-खड़े ही बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "एक युवक सोमदेव ने मुझे मिलने के लिये इस स्थान का पता बताया था। मैं उससे ही मिलने आयी हूँ।"

"वह तो आज इस समय गोकुलदास हॉल में एक सभा में गया हुआ है। सायं पाँच बजे तक आ सकेगा।"

"इस अवस्था में मैं उनके पिता से मिलना चाहूँगी। वह होता तो परिचय कराने में सुभीता रहता।"

"सोमदेव का पिता मैं हूँ। लेकिन तुम लोग बैठकर बात करो तो ठीक होगा।"

अब वृद्ध और लड़की दोनों कुर्सियों पर बैठ गये। लड़की ने आगे कहा—"वह कहता था कि उसने मेरे विषय में आपसे बात कर रखी है। मैं लक्ष्मी पिल्ले हूँ। यह मेरे पिता हैं। इनका नाम है कृष्णन पिल्ले। हम मालाबार तट के समीप एक गाँव तिरुवल्ला के रहने वाले हैं। वहाँ हिन्दू-मुसलमान बलवे में हमारा घर जला दिया गया था और घर के सब प्राणी मार डाले गये थे। मैं और मेरे पिता भाग कर जान बचा सके हैं।

"पिछले छः महीने से हम बम्बई में हैं और भीख माँग-माँग कर निर्वाह कर रहे हैं। तीन दिन हुए, सोमदेव से भेंट हो गई। उसने मुझे कहा था कि मैं विवाह कर लूँ तो यह नित्य भीख माँगने से छुट्टी मिल जायेगी।

"वह स्वयं विवाह करने के लिये तैयार था। कल वह कहने लगा कि वह अपनी माँ से पता करेगा कि वह मुझे अपने घर में रखेगी अथवा नहीं? आज वह कहने लगा कि माँ मान गयी हैं, परन्तु वह स्वयं पिता जी के आश्रय है। और पिताजी हमसे मिलकर निर्णय करेंगे।"

"यह सब ठीक है। मैं एक बात जानना चाहता हूँ कि तुम्हें घर से निकले हुए दो वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इतने काल में क्या सोम पहला ही व्यक्ति है, जिसने विवाह का प्रस्ताव किया है? देखने में तुम एक अच्छी-खासी सुन्दर लड़की हो।"

"आप क्या समझते हैं कि मेरे साथ विवाह का प्रस्ताव कितने लोगों ने किया होगा?"

"मैं समझता हूँ कि सोम का प्रस्ताव पहला नहीं हो सकता।"

"विवाह का प्रस्ताव तो पहला ही है। वैसे मेरे प्रयोग का प्रस्ताव कई लोग कर चुके हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुमने अभी तक वैसा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया ?"

लक्ष्मी विजय का मुख देखती रह गयी। वह कुछ कहने का यत्न कर रही प्रतीत होती थी, परन्तु कह नहीं पा रही थी।

विजय एक लड़की की इस विषय पर स्वीकारोक्ति की कठिनाई को समझता था। वह कहने लगा, "ठीक है। यदि तुम इस विषय पर सत्य बात कहने से झिझक रही हो तो यह मौन ही बहुत कुछ बता रहा है।

"मैं तुमसे एक अन्य बात पूछना चाहता हूँ। वह यह कि सोम से विवाह स्वीकार करने में कोई विशेषता उपस्थित हो गयी है क्या ?"

"हाँ।" लक्ष्मी का उत्तर था, "मैं जानती हूँ कि उस प्रकार का जीवन अधिक काल तक चल नहीं सकेगा। एक भाड़े की वस्तु का प्रयोग लोग अति निर्दयता से करते हैं। मैं इनसे दया-भाव की आशा में इस विवाह के प्रस्ताव को मान रही हूँ।"

"अर्थात् तुम्हारा सोम से विवाह में कुछ भी उद्देश्य नहीं है ?"

"मेरे मन में इस समय यही विचार सबसे ऊपर है कि मैं एक स्थान पर और एक पुरुष का संरक्षण पा सकूँ। जब आपके पुत्र ने विवाह का प्रस्ताव किया तो इसे संरक्षण का सूचक समझ मैं मान गयी हूँ।"

"तुम कुछ पढ़ी-लिखी लड़की प्रतीत होती हो। तुमने कहीं किसी स्थान पर क्लर्क का काम पाने का यत्न क्यों नहीं किया ?"

"एक स्थान पर एक सप्ताह के लिये क्लर्क का काम पा गयी थी, परन्तु वहाँ तो दुर्दशा और भी अधिक हुई थी। जहाँ कभी अपना मान बेचती थी, वहाँ पाँच-दस दिन के निर्वाह के लिये तुरन्त मिल जाता था और नौकरी में तो तीस रुपये प्रति मास पर नित्य ही प्रयोग होने लगी थी। खाने-पीने को अवश्य अच्छा मिलता था, परन्तु वह तो अन्यत्र भी कभी-कभी मिल जाता है।"

विजय इस स्त्री का वृत्तान्त सुन-सुन रोमांच अनुभव करने लगा था। उसने एक प्रश्न कर दिया, "यदि तुम्हारे खाने-पहनने और अन्य आवश्यकताओं का प्रबन्ध बिना किसी प्रकार की मान-हानि कराये मिल जाये, तब भी सोम से विवाह करोगी ?"

"कह नहीं सकती। मैंने आपके लड़के के अन्य गुण नहीं देखे। केवल उसकी सूरत-शक्ल देखी है। परन्तु मनुष्य में केवल यही कुछ तो नहीं है। अन्य विषयों में जानने के लिये परिचय बहुत कम है।"

"उसकी एक बात तो मैं भी बता सकती हूँ। वह यह कि उसकी एक पत्नी पहले है। उससे उसका एक लड़का है।"

लक्ष्मी ने गम्भीर-भाव धारण कर कह दिया, "आप इस विवाह के अतिरिक्त

—२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाह का अन्य क्या उपाय बताना चाहते हैं ?"

"तुम किस स्थान पर रहती हो ?"

"अभी तो कभी सड़क की पटरी पर, कभी रेल के मुसाफिरखाने में, कभी कमेटी के बनाये गरीबखानों में।"

"तुम अपने गाँव में क्यों नहीं लौट जातीं ?"

"अब हमारा वहाँ न तो कोई सम्बन्धी है और न ही मकान है। हमारे मकान को गिरा कर वहाँ मस्जिद बना दी गयी है और उसे गिराने का प्रस्ताव करने पर मृत्यु मोल लेनी होगी।

"बलवा शान्त हो जाने पर हम वहाँ गये थे और वहाँ के लोग तो हमें मारा गया समझ ही मस्जिद बनाने के लिये तैयार हुए थे। अब एक बार मस्जिद बन जाने पर गिर नहीं सकती। हम वहाँ से लौट आये हैं।"

विजय ने कहा, "तुम अब यहाँ ही रह जाओ। सोम की पत्नी के रूप में अभी नहीं। वह तुम पीछे विचार कर लेना। अभी तो इस कार्यालय में सोम की माँ के अधीन क्लर्क का काम करने के लिये।

"तुम्हारा वेतन पीछे काम देख कर निश्चय करूँगा। अभी तुमको एक रुपया नित्य खाने के लिये मिल जायेगा। पन्द्रह दिन की परीक्षा पर वेतन निश्चय करूँगा।"

"परन्तु यहाँ रहते हुए तो आपका लड़का विवाह की याचना करने लगेगा।"

"वह तो करेगा ही, परन्तु वह तुम पर बलात्कार नहीं कर सकेगा। स्वेच्छा से विवाह करना चाहोगी तो कर सकोगी और यदि वेतन के अतिरिक्त पैदा करने के लिये उससे अथवा किसी अन्य को प्रयोग करने दिया तो नौकरी नहीं रहेगी।"

"यदि सोम जी के अतिरिक्त किसी अन्य से विवाह करूँ तो ?"

"विवाह तो करना ही चाहिये, परन्तु वेश्यावृत्ति नहीं।"

: ८ :

छापाखाना के ऊपर एक कोठरी में लक्ष्मी और उसके पिता कृष्णन को रहने का स्थान मिल गया। उसी कोठरी की बगल में छापाखाने का चौकीदार अपनी पत्नी के साथ रहता था। नाम था माधव। विजय ने माधव को बुला कर समझा दिया कि लक्ष्मी और उसका पिता उसकी बगल वाली कोठरी में रहेंगे। लक्ष्मी कार्यालय में काम करेगी।

उस दिन सोम गोकुलदास हॉल में हुई सार्वजनिक सभा से लौटा तो आते ही पिता जी से पूछने लगा, "पिता जी! कोई मुझसे मिलने आया था यहाँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ; एक लक्ष्मी पिल्ले और उसका पिता आये थे।"

"तो फिर आने के लिये कह गये हैं अथवा नहीं ?"

"लक्ष्मी सरस्वती के कमरे में है।"

"वहाँ क्या कर रही है ?"

"तुम्हारी माता जी से कार्यालय का काम सीख रही है।"

"पर वह तो कहती थी कि वह सेवा-कार्य नहीं करेगी।"

"हाँ, तुम्हारे अधीन। जो पत्नी बनाने का प्रस्ताव कर रहा हो, उसकी नौकरी नहीं की जा सकती।"

"पर पिता जी ! मैंने तो यहाँ दुकान पर ही नौकरी की बात विचार की थी। एक दिन माता जी कह रही थीं कि दुकान पर काम बढ़ गया है और उनको किसी सहायक की आवश्यकता है। वे मुझे काम करने के लिये कह रही थीं। परन्तु मैं तो राज्य-कार्य करने की अभिलाषा रखता हूँ; इस कारण मैं स्वयं तैयार नहीं हुआ और मैंने लक्ष्मी को यहाँ काम पर नियुक्त कराने के विचार से कहा था।"

"और यदि वह यहाँ काम करना मान जाती तो विवाह का प्रस्ताव न करते क्या ?"

"कदाचित् वह प्रस्ताव तब भी करता। परन्तु अभी कह नहीं सकता।"

"ठीक है। मैंने भी अभी उसे पुतोहू बनाने का विचार नहीं बनाया। साथ ही तुमको यह प्रस्ताव कीर्ति से पूछ कर करना चाहिये था।"

"परन्तु उसने तो बम्बई आने से इन्कार कर दिया है।"

"उसने यह इन्कार लिख कर किया है अथवा मौखिक बात हुई है ?"

"लिख कर तो नहीं किया। न ही इस प्रकार मुख से कहा है। इस पर भी वह यहाँ आने के लिये तैयार नहीं हो रही। यह तो स्पष्ट ही है।"

"परन्तु किसलिये ?"

"वह कहती है कि जब तक मैं किसी प्रकार का स्वतन्त्र रूप में निर्वाह का प्रबन्ध नहीं कर लेता, वह और बच्चे उत्पन्न करना नहीं चाहती।"

"यह इन्कार तो नहीं कहा जा सकता। यह विवाह के समय विचार करने की बात है। उसने इस पर विचार तो किया है, परन्तु देर से। मैं समझता हूँ कि 'देर आयद दुरुस्त आमद' वाली बात हो रही है।

"मैं एक बात पूछता हूँ कि जब तुम एक पत्नी का बोझा वहन नहीं कर सकते तो दूसरा विवाह किसलिये कर रहे हो ?"

सोम इसका उत्तर नहीं रखता था। उसने केवल इतना कहा, "मैं अगले वर्ष केन्द्रीय लैजिस्लेटिव कौंसिल का सदस्य बन कर अर्जन करने के विषय में विचार करूँगा। आय करने के कई उपाय होते हैं। कभी गुप्त भी होते हैं। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता हूँ कि कुछ-न-कुछ उपाय हो जायेगा ।"

"ठीक है । तब तुम कीर्ति को अपने पास बुला लोगे तो उसे इन्कार करने में कोई कारण नहीं रह जायेगा । फिर उसके रहते हुए दूसरी पत्नी ला सकोगे तो ले आना ।"

"पिता जी ! आपने दूसरा विवाह करते समय माँ से पूछा था ?"

"हाँ; परन्तु किस प्रकार और किस परिणाम से, यह तुम अपनी बड़ी माँ से पता कर सकते हो । वह अपने मन की बात बताना चाहेगी तो बता सकती है ।"

सोम चुप रहा और फिर ऊपर अपने कमरे में चला गया । वहाँ ललिता से कहने लगा, "पिता जी ने मिस पिल्ले को कार्यालय में नौकरी दे दी है । अतः एक प्रकार से उन्होंने लक्ष्मी को मुझसे विवाह करने में सहायता कर दी है ।"

"तो अब वह कहाँ है ?"

"इस समय माता जी के साथ कार्यालय में है ।"

"रात कहाँ रहेगी ?"

"यह तो मैंने पूछा नहीं ।"

"तुम भी गधे हो । वास्तविक पूछने की बात तो यही थी । यहाँ नौकरी करना क्या तुम्हारे विवाह का प्रतीक हो सकता है ?"

"माँ ! यदि घर में ही रखा तो विवाह की बात पक्की मान सकूँगा ।"

परन्तु मिस पिल्ले घर में नहीं आयी । वह छापाखाना के ऊपर की मंज़िल में चौकीदार माधव के बगल वाली कोठरी में रहने चली गयी । सरस्वती ने पिता-पुत्री के लिये बिस्तर और खाना बनाने के बर्त्तन तथा दो-चार दिन के लिये रसद-पानी कोठरी में रखवा दिया था ।

जब विजय और सरस्वती कार्यालय बन्द कर ऊपर की मंज़िल पर निवास-स्थान पर आये तो चाय-पानी का प्रबन्ध हो गया । आते ही सरस्वती ने लक्ष्मी के विषय में बात आरम्भ कर दी । उसने कहा, "लड़की मैट्रिक तक पढ़ी है । कार्यालय में अभी पत्रों को फाईल करने का काम उसे बताया है । उसे फाईलों का परिचय और पत्र लगाने का ढंग बता दिया है । यह तो कुछ दिन में पता चलेगा कि वह कार्य करने की बुद्धि रखती है अथवा नहीं ?"

"माता जी ! अब वह कहाँ है ?"

"उसे तुम्हारे पिता जी ने माधव की कोठरी के बगल वाली कोठरी रहने के लिये दे दी है । मैंने उनके खाने के लिये बर्त्तन और रसद-पानी उनको दिलवा दिये हैं ।"

इससे सोम को सन्तोष नहीं हुआ । उनके अपने मकान में भी तो एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरा रिक्त था, परन्तु वह इस विषय में कुछ कह नहीं सका।

माधव की कोठरी के साथ वाली कोठरी में लक्ष्मी से मिलने के लिये जाना सुविधाजनक नहीं था। चाय लेने के उपरान्त उसने अपनी माँ से कहा कि उसे लक्ष्मी को अपने यहाँ बुलाना और मेलजोल बढ़ाना चाहिये।

"इसके लिये तुम्हारे पिता जी से स्वीकृति लेनी होगी।"

"तो हम यहाँ जेलखाने के कैदी की भाँति रहते हैं?"

"यह बात नहीं। तुम और मैं स्वेच्छा से जहाँ चाहें जाते हैं, परन्तु घर के कुछ नियम हैं। हम जिस किसी को भी घर में आमन्त्रित करते हैं, उसकी सूचना घर के पुरखा को देते हैं। इस सूचना देबे का अर्थ ही यह है कि उनकी स्वीकृति माँगते हैं।"

"माँ! ऐसा नहीं। सूचना स्वीकृति की सूचक नहीं होती।"

"होती है। केवल इतना अन्तर है कि हम उनको ही आमन्त्रित करते हैं, जिनके विषय में हमें विश्वास होता है कि घर के बड़े व्यक्ति को आपत्ति नहीं। अभी तक कार्यालय का तथा छापाखाने का कोई भी कर्मचारी घर पर आमन्त्रित नहीं हुआ। इस कारण इस विषय में पूछना आवश्यक है।"

"माँ! तुम मेरा विवाह इस लड़की से पसन्द करती हो या नहीं?"

"मैंने तो अभी उसकी सूरत भी नहीं देखी। इस विषय में मैं कुछ सम्मति नहीं दे सकती।"

"तो जाकर उसे देख आओ।"

"पहले उसे कल कार्यालय में काम करने देखने जाऊँगी, पीछे उसके परिवार के विषय में जानकारी प्राप्त करूँगी। तब ही उसको घर का सदस्य बनाने के विषय में सम्मति दे सकूँगी।"

सोम के लिये चुप रह जाने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं रहा।

लक्ष्मी का पूर्ण इतिहास विजय ने दोनों पत्नियों को बताकर पूछा कि वे क्या समझती हैं? यह बात अगले दिन मध्याह्न के भोजन के समय हो रही थी। सोम उस समय बाहर गया हुआ था।

सरस्वती ने कहा, "आज प्रातःकाल मैंने लक्ष्मी के लिये अपने कुछ वस्त्र भेजे थे और वह उन वस्त्रों में कार्यालय में आयी तो कल से कुछ अधिक भली प्रतीत हुई। कदाचित् रात और सुबह पेट-भर रोटी खाने का भी इसमें हाथ हो। वैसे काम सीखने में वह योग्य प्रतीत होती है। एक बार बतायी बात वह समझ जाती है और स्मरण रखती है।"

अब विजय ने अपने मन की बात बता दी। उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि लक्ष्मी का विवाह सोम से ठीक नहीं रहेगा। मैं तो यह पसन्द करूँगा कि कीर्ति को पत्र लिखकर यहाँ बुला लिया जाये। जब वह यहाँ आयेगी तो सोम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ध्यान लक्ष्मी से हटाने में सहायता मिल जायेगी।"

इस पर ललिता ने पूछ लिया, "लक्ष्मी से विवाह में आपको क्या आपत्ति है? मैं उसे देखने कार्यालय में गयी थी और मेरा विचार है कि वह एक सभ्य परिवार की लड़की है।"

"इस विषय में मैं कुछ नहीं कह रहा। मैं तो सोम के विषय में ही विचार कर रहा हूँ। वह एक जीवन-कार्य में लगने वाला है। उसमें उन्नति करने के लिये उसे अभी अपने पर बोझा अधिक नहीं उठाना चाहिये।"

"तो आप समझते हैं कि उसका राजनीतिक कार्य ठीक दिशा में है?"

"दिशा के विषय में तो उससे कई बार बात हो चुकी है। मैं उसे अपने मन की बात बता चुका हूँ। इस बताने से अधिक मैं कुछ भी करना नहीं चाहता। वह राजनीति में दिशा का चुनाव अपनी रुचि और सूझ-बूझ से ही कर सकता है। इस पर भी मैं उसे उन्नति करने में सहायता देना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि उसको दूसरा विवाह करने से रोकना भी उसकी उन्नति में सहायक होना ही है।"

रात सोम ने ललिता से लक्ष्मी के विषय में बात चलायी तो उसने कह दिया, "मैं उसे इस स्थान पर तब तक आमन्त्रित नहीं करूँगी, जब तक वह विधिवत् तुम्हारी पत्नी नहीं बन जाती।

"तुम्हारे पिता तुम्हारे दूसरे विवाह के पक्ष में नहीं हैं। उनका विचार है कि तुम्हारे राजनीतिक जीवन में उन्नति करने में दूसरा विवाह बाधक होगा।"

"तो पिता जी मुझे राजनीति में उन्नत देखना चाहते हैं?"

"राजनीतिक कार्य को वे बुरा नहीं मानते। उनको तुम्हारे कार्य की दिशा पर मतभेद है, परन्तु इस विषय में वे तुमको विवश करना नहीं चाहते। वरन् वे इसमें तुम्हारी सहायता भी करेंगे।

"सरस्वती बहन ने कीर्ति को एक लम्बी चिट्ठी लिखी है और मैं समझती हूँ कि वह बम्बई में आ जायेगी।"

सोम का विचार था कि एक बात तो हुई है कि कीर्ति को उसके साथ रहने की प्रेरणा दी जा रही है।

पत्र के उत्तर में कीर्ति ने बम्बई आने का कार्यक्रम बना लिया।

: ९ :

सन् १९२३ के निर्वाचन हो चुके थे। कांग्रेस में स्वराज्य-दल बन चुका था और वह निर्वाचनों में एक सीमा तक ही सफलता प्राप्त कर सका था।

प्रान्तीय असेम्बलियों में बंगाल, बिहार, बम्बई और मद्रास में कुछ अधिक सफलता मिली थी और पंजाब, यू० पी० तथा आसाम और बर्मा में बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य चुने गये थे। केन्द्रीय असैम्बली में सोमदेव बम्बई नगर की ओर से निर्वाचित हो गया और वह पण्डित मोतीलाल के नेतृत्व में कांग्रेस की नीति चलाने का यत्न करने दिल्ली जा पहुँचा।

दो मास के दिल्ली प्रवास के उपरान्त सोम बम्बई लौटा तो विजय उससे पूछने लगा, "क्या अनुभव किया है ?"

"कुछ विशेषता नहीं देखी। जिन्ना साहब मुसलमानों के गुट्ट के साथ वहाँ विराजमान थे। उनका दृष्टिकोण मुसलमानों की उन्नति था। हमारी पार्टी का उद्देश्य केवल मात्र सरकारी कामों का विरोध करना था।

"इस पर भी जहाँ कहीं मुसलमान के हित की बात होती थी, हम जिन्ना की मुस्लिम लीग के साथ मत देते थे।

"उदाहरण के रूप में मुसलमानों के लिये नौकरियों में एक निश्चित प्रातिनिध्य का प्रश्न आया तो सरकार ने विरोध किया। सरकार सरकारी सेवाओं में फ़िरकावारा बटवारा नहीं चाहती थी। हमारी पार्टी भी यह नहीं चाहती थी, परन्तु इस विचार से कि हमारे मुसलमानों के विरुद्ध मत देने से मुसलमान नाराज़ हो जायेंगे, हम इस बिल के विपक्ष में न तो बोले और न ही हमने मत दिया। सरकार मुसलमानों का विरोध करती रही और विजयी भी हुई।

"इससे मुसलमान नाराज़ तो हुए ही; साथ ही सरकार भी हिन्दुओं के विरुद्ध हो गयी है।

"होम मैम्बर मिस्टर 'क्रेक' ने अपने घर पर कौंसिल के सदस्यों को दावत दी थी। दावत का हमारे दल ने विरोध नहीं किया। इस पर भी मोतीलाल जी नहीं गये। शेरवानी साहब अनुपस्थित थे। मैं और कुछ अन्य बम्बई के लोग उपस्थित थे।

"होम मैम्बर ने मुझसे हाथ मिलाते हुए कहा कि हमारे परिवार की परम्पराओं को देखते हुए, वे मेरे उस पार्टी में सम्मिलित होने की आशा नहीं करते थे।

"मैंने पूछ लिया, 'आप मेरे परिवार के विषय में क्या जानते हैं ?'

"वे बोले, 'दृढ़-निष्ठ और हिन्दुस्तान के हित में काम करने वाले।'

"मैं उनको इस विषय में ठीक जानकारी बताते हुए सुन चकित रह गया।

"पीछे मैं श्री जयकर के साथ एक मेज़ पर बैठा था कि होम मैम्बर हमारी मेज पर आ बैठे और जयकर से बातें करने लगे। उन्होंने पूछा, 'आपने सरकारी सेवाओं में मुसलमानों के पृथक् प्रातिनिध्य का भी विरोध नहीं किया ?'

"मिस्टर जयकर स्वयं इस विषय में दल के व्यवहार पर नाराज़ थे। अतः उन्होंने कह दिया, 'हमारे दल में इस विषय पर मतभेद था।'

" 'वह मैं जानता हूँ। परन्तु आप लोगों को मतदान में स्वतन्त्रता माँगनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये थी।'

"मिस्टर जयकर ने वस्तु-स्थिति बता दी। उन्होंने कहा, 'हमारी पार्टी में पाँच मुसलमान सदस्य हैं और वे सबके-सब मुसलमानों की इस माँग को उचित मानते थे। मैं तथा कुछ अन्य हिन्दू सदस्य इसका विरोध करना चाहते थे। जब हम एकमत नहीं हो सके तो मैंने मत की स्वतन्त्रता माँगी। हमारे दल के नेता ने कहा कि हमने यह निश्चय किया है कि हम सदा और सर्वत्र सरकार का विरोध करेंगे। इस कारण यदि हम सरकार के विरुद्ध मत नहीं दे सकते तो हम उसके पक्ष में भी नहीं देंगे।'

"होम मैम्बर साहब का कहना था, 'यह तो आपका स्वयं ही अपनी नाक काटने का यत्न है। आपके सरकार के पक्ष में मत न देने से सरकार उस बिल को कुछ सीमा तक लागू करने का विचार कर रही है। उसके लिये इस बात का अनुभव रखने वाले पंजाब के मियाँ फज़लहुसैन को हम केन्द्र में ला रहे हैं। उन्होंने पंजाब में बिना सरकार से कुछ भी स्वीकार कराये मुसलमानों की संख्या सरकारी कार्यालयों में अधिक कर दी है।'

"मिस्टर जयकर उस समय तो चुप रहे, परन्तु पीछे मुझे कहते थे, 'मेरा इस दल में अधिक काल तक रह सकना कठिन प्रतीत होता है।'"

इस पर विजय ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और तुम्हारा क्या हाल-चाल है?"

"पिता जी! वहाँ बहुत लेन-देन होता है।"

"लेन-देन का क्या अभिप्राय है?"

"जिस विषय पर पार्टी मतदान की स्वतन्त्रता दे देती है, उसमें सदस्यों का मूल्य बढ़ जाता है। पीछे सिनेमा व्यवसाय के लिये कुछ रियायतों का प्रस्ताव था। हमारे दल ने इस विषय में मत की स्वतन्त्रता दे दी और सिनेमा उद्योग वाले सदस्यों के मत खरीदने लगे। दो सहस्र रुपया मुझे भी मिला है।"

विजय के माथे पर की चिन्ता-रेखाएँ दिखायी देने लगीं। सोम इसका अर्थ नहीं समझ सका। इसका कारण उसने पूछ लिया, "पिता जी! इसमें क्या खराबी हुई है?"

"केवल इतनी कि तुम हरजाई का-सा अभिनय करने लगे हो।"

"पर पिता जी! दिल्ली में कम-से-कम तीस रुपये नित्य का व्यय है और वहाँ से भत्ता मिलता है बीस रुपये, जिसमें से आठ रुपये नित्य बंगले और फरनीचर का किराया कट जाता है। हमारा टैक्सी का भाड़ा ही दस रुपये नित्य का हो जाता था। यह दो सहस्र मिला तो हम सुख के दो मास निकाल सके हैं। कीर्ति को एक अँगूठी भी खरीद दी है।"

विजय के मुख से एक बात भी नहीं निकल सकी। सोम ने एक बात और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बता दी। उसने कहा, "एक दिन 'डिफेंस मैम्बर' के घर चाय-पार्टी पर 'होम मैम्बर' मुझसे कह रहे थे कि सरकार मिलिटरी-शिक्षा के विषय में एक कमीशन नियुक्त करने वाली है। यदि तुम पसन्द करो तो तुम्हें 'नौमिनेट' किया जा सकता है।'

"मैंने पूछा, 'हमारे दल के किसी अन्य सदस्य को क्यों नहीं ?'

"उसका उत्तर था, 'इस कारण कि तुम्हारा परिवार हिन्दू विचार का है और तुम इस विषय में पार्टी की आज्ञा नहीं मानोगे।'"

विजय ने पूछ लिया, "फिर क्या हुआ ?"

"हमारे दिल्ली से आने के पूर्व कमीशन की घोषणा हो गयी है और पण्डित मोतीलाल जी इसके सदस्य घोषित किये गये हैं।"

विजय की हँसी निकल गयी। सोम ने हँसी का कारण गलत समझते हुए सरकार की सफाई दे दी। उसने बताया, "इस कमीशन की घोषणा के उपरान्त 'होम मैम्बर' का गुप्त सन्देश मुझे मिला कि मुझे निराश नहीं होना चाहिये। सरकार को यह विदित हो गया था कि यदि पण्डित जी के स्थान, मुझे कमीशन का सदस्य घोषित किया जाता तो दल कमीशन का बहिष्कार कर देता। सरकार ने मेरे विषय में भी कुछ विचार किया है।"

"क्या विचार किया है ?"

"मुझे 'इण्टर-नैशनल लेबर कान्फरेंस' का सदस्य नियुक्त किया जा रहा है और आगामी जून कदाचित् मैं युरोप के लिये जाऊँगा।"

विजय ने कहा, "देखो सोम ! एक बात तो मैं यह समझा हूँ कि तिलक जी का प्रतिक्रियात्मक सहयोग ही ठीक नीति थी। परन्तु मैं गांधी जी की इस बात को भी सत्य मान गया हूँ कि हिन्दुस्तानी चरित्र अभी सरकार बनाने के उपयुक्त नहीं है। नैतिक दृष्टि से हम इस योग्य नहीं हैं।"

"तो आप गांधी जी को ठीक मानने लगे हैं ?" सोम ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

विजय ने गम्भीर हो कह दिया, "मेरा और पिता जी का गांधी जी से विरोध इस बात में नहीं। हमारा गांधी जी से विरोध इस बात में है कि वे अपने साथ उन लोगों को ले रहे हैं जो सदा बिकने के लिये तैयार रहते हैं।

"देश में सब लोग ऐसे नहीं जो बिक सकते हैं। परन्तु गांधी जी और कांग्रेस की दृष्टि में वे तो साम्प्रदायिक हैं और अपना स्वार्थ पूर्ण करने वाले देश-भक्त। कांग्रेस में भरती होने का नाप-तोल यह है कि सरकार से असहयोग करने वाले हों। भले ही वे चरित्र-हीन हों।"

"अपने दल में सैनिक कमीशन पर चर्चा हुई थी। जयकर इत्यादि यह समझ रहे थे कि अपने दल के किसी योग्य व्यक्ति का वहाँ जाना ठीक हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं भी अपने को अभी सैनिक-शिक्षा कमीशन की सदस्यता के योग्य नहीं मानता।"

"और 'इण्टर-नैशनल लेबर' सदस्यता के योग्य समझते हो ?"

"पिता जी ! विलायत और युरोप की सैर फोकट में हो जायेगी। व्यय के लिये नब्बे रुपये नित्य का भत्ता मिलेगा। यदि वहाँ से कुछ भी बचाकर नहीं लाया तो दो महीने के लिये घर का खाना-पीना बचेगा और सैर फोकट में ही हो जायेगी।"

"ठीक है। घर में तुम्हारे जैसे एक प्राणी की भी आवश्यकता है।"

"पिता जी ! एक बात और हो रही है। यह बात बम्बई में कुछ लोगों को पता चल गयी है कि मैं एक सरकारी कार्य से विलायत जा रहा हूँ। यहाँ के कुछ व्यापारी लोग अपने सम्बन्ध, फ्रांस और जर्मनी की कुछ फर्मों से बनाने के लिये मेरी सेवाएँ लेने की बात कर रहे हैं।"

"और वे भी तुमको कुछ इसके लिये देंगे ?"

"राजनीति में और व्यापार में बिना पारिश्रमिक के कुछ भी किया नहीं जाता।"

"ठीक है। चलते जाओ। एक बात समझ लो कि आगामी चुनावों में तुम परिवार से किसी प्रकार की आशा मत करना।"

"विलायत जाने से पूर्व मैं बाबा से मिलने भुवाली जा रहा हूँ। कीर्ति का लड़का वहाँ है और वह पुनः प्रसव के लिये वहाँ ही रहना पसन्द करती है।"

"ठीक है। चले जाना।"

इससे आगे कोई बात नहीं हो सकी।

: १० :

लक्ष्मी पिल्ले अभी तक अविवाहित थी। वह विजय के पुस्तक-विभाग में ही काम करती थी। उसकी कार्य करने में कुशलता देख, उसका वेतन बढ़ा दिया गया था और अब वह छापाखाना वाली कोठरी छोड़, पड़ोस के ही एक मकान में, दो कमरों का फ्लैट लेकर अपने पिता के साथ वहाँ रहती थी।

सोम कीर्ति के साथ भुवाली गया हुआ था। एक दिन लक्ष्मी पिल्ले कार्यालय में काम करती हुई सरस्वती से कहने लगी, "माता जी ! आगामी जून की पन्द्रह तारीख से मैं दो मास की छुट्टी चाहूँगी।"

"किसलिये ?"

"मैं युरोप में भ्रमणार्थ जा रही हूँ।"

"ओह ! अकेली ही ?"

"नहीं; सोम जी की प्राईवेट सैक्रेटरी बनकर।"

"यह सोम ने कहा है अथवा तुम स्वयं ही इसके लिये यत्न कर रही हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोम जी जब दिल्ली से लौटे थे तो उन्होंने मुझे पासपोर्ट के लिये प्रार्थना करने को कहा था। मैंने कागज़ भर कर दे दिये थे।

"पासपोर्ट बन कर आ गया है और सोम जी ने मुझे अपने लिये पी० ऐण्ड ओ० शिप में एक 'बर्थ' रिज़र्व कराने के लिये कहा है।"

सरस्वती ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि मुझे अपने कार्यालय के लिये किसी अन्य क्लर्क की आवश्यकता उत्पन्न हो गयी है।"

"मैं विलायत से लौटने पर पुनः आपकी सेवा करना चाहूँगी।"

"मुझे आशा नहीं। एक एम० एल० ए० की प्राईवेट सैक्रेटरी एक दुकान का काम करना पसन्द नहीं करेगी।"

"कर सकूँगी। दो मास तक तो आप किसी अन्य को मेरे स्थान पर अस्थायी रूप में रख लीजियेगा। मैं समझ रही हूँ कि हिन्दुस्तान में रहती हुई मैं आपके यहाँ ही काम करूँगी।"

"अच्छी बात है।" सरस्वती ने बात अभी टाल दी। यह तो उसको पहले ही सन्देह था कि लक्ष्मी के सोम के साथ अनियमित सम्बन्ध हैं। परन्तु वह इस विषय में हस्तक्षेप नहीं करना चाहती थी। आज लक्ष्मी के उसके साथ युरोप जाने की बात पर तो उसे अपने सन्देह का प्रमाण मिल गया।

इस पर भी उसने लक्ष्मी से इस विषय पर बात नहीं की। सोम भुवाली से अकेला लौटा और अब वह युरोप जाने की तैयारी करने लगा।

इस विषय पर बात विजय ने ही चलायी। उसने एक रात खाने के उपरान्त पूछ लिया, "लक्ष्मी तुम्हारे साथ युरोप जा रही है?"

"हाँ, पिता जी! मैंने उसे कहा है कि उसे दुकान के काम से त्याग-पत्र दे देना चाहिये।"

"उसने त्याग-पत्र तो नहीं दिया। हाँ, दो महीने की छुट्टी मांगी है।"

"इसका अर्थ यह है कि उसे अभी मेरी आर्थिक स्थिति के सुधरने का विश्वास नहीं हुआ।"

"तो अब इस स्थिति में स्थायित्व आ गया है क्या?"

"लैजिस्लेटिव असैम्बली का सदस्य बनने के साथ ही मेरे लिये आय के कई स्रोत खुल गये हैं।

"बम्बई के तीन व्यापारिक संस्थानों ने मुझे लन्दन, पैरिस और कोपनहैगन की कुछ फर्मों से बातचीत करने का अधिकार-पत्र दिया है। साथ ही उन्होंने अपने व्यापार के नियमोपनियम बताये हैं।"

विजय समझ रहा था कि आज संसार में राजनीति की महिमा तो अधिक है ही। हिन्दुस्तान के व्यापारी भी उस महिमा का लाभ उठाना चाहते हैं। परन्तु वह लक्ष्मी के साथ जाने का यह अर्थ भी समझता था, जिसकी सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पहले केवल आशंका थी और अब विश्वास हो गया था।

इस विषय पर बात घुमाकर विजय ने पूछ लिया, "परन्तु मैं समझा नहीं कि यह लक्ष्मी तुम्हारे साथ जाकर क्या करेगी ? किसी 'लेबर मूवमैण्ट' के ज्ञाता को साथ ले जाते तो अच्छा होता।"

"लक्ष्मी उन व्यापारियों के काम करेगी जो मुझे भारी रकमें उनका काम करने के लिये दे रहे हैं।"

"परन्तु उसके तुम्हारे साथ जाने से तुम्हारे उससे घनिष्ट सम्बन्धों का सन्देह होगा। इससे तुम्हारे राजनीतिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।"

"पिता जी ! ऐसे सम्बन्ध तो प्रायः सभी राजनीतिक लोग रखते हैं। मैं समझता हूँ कि स्त्री राजनीति के जीवन का एक अत्यावश्यक अंग है।"

विजय को अपने ही परिवार के एक घटक के इस प्रकार के विचार सुनकर रोमांच हो आया। वह स्वयं और उसका पिता यह मानते थे कि राजनीति में भाग लेने वालों का नैतिक और धार्मिक व्यवहार निर्दोष रहना चाहिये। वह किसी स्त्री से बिना विवाह किये, पत्नी का-सा सम्बन्ध रखना दोष मानता था।

परन्तु सोम की माँ का व्यवहार देख वह उसकी भाँति उसके पुत्र को भी सहन कर, उससे सहानुभूति का व्यवहार रखना चाहता था। इस कारण वह चुप कर रहा।

बात सोम ने ही आगे चलायी। उसने कहा, "पन्द्रह जून को मैं यहाँ से जहाज़ पकड़ूँगा। उससे पहले मुझे दिल्ली आवश्यक कागज़ात और सरकारी आदेश लेने के लिये जाना है। एक सप्ताह वहाँ लगेगा। मैं पाँच-छः जून को दिल्ली जाऊँगा और वहाँ से तेरह अथवा चौदह को लौटूंगा। लक्ष्मी मेरा 'किट' तैयार रखेगी। इस प्रकार हम दोनों पन्द्रह को यहाँ से चल देंगे।

"प्रथम जुलाई से हमारी कान्फरेंस जनेवा में आरम्भ होगी। यह पन्द्रह दिन तक चलेगी। तदनन्तर अपने ब्रिटिश ऐम्पायर के प्रतिनिधि लन्दन में तीन दिन के लिये मिलेंगे। मैं जुलाई की पच्चीस-छब्बीस को सरकारी काम से रिक्त हो जाऊँगा। तदनन्तर मैं लन्दन, पैरिस, कोपनहैगन में व्यापार-सम्बन्धी कार्य करूँगा। आशा करता हूँ कि उस दिशा में भी सफल होकर लौटूंगा।"

इस पूर्ण व्याख्या सुनने में विजय की रुचि नहीं थी। वह पण्डित मोतीलाल जी के विषय में सोच रहा था। वह मन-ही-मन विचार कर रहा था कि क्या वे भी भ्रमण करने के विचार से युरोप जा रहे हैं अथवा देश-हित में यह सब कष्ट कर रहे हैं ?

सरस्वती पिता-पुत्र में हो रही बात सुन रही थी। जब पिता चुप कर गया तो सरस्वती ने सोम को कह दिया, "मैं समझती हूँ कि मुझे लक्ष्मी को दुकान के काम से मुक्त कर देना चाहिये। इस युरोप के भ्रमण से उसकी आकांक्षाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी अधिक हो जानी स्वाभाविक हैं कि उसका इस छोटी-सी दुकान पर काम करना अति कठिन हो जायेगा। यदि सर्वथा असम्भव भी हो जाये तो विस्मय करने की बात नहीं होगी।"

"हाँ।" विजय ने अपनी सम्मति बता दी, "उसे सब प्रकार से ले-देकर सेवा-मुक्त कर दो। इससे हम अपने लिये कोई नया कर्मचारी ढूंढने में स्वतन्त्र हो जायेंगे।"

सोम ने कहा, "मैं भी यही चाहता हूँ। इससे वह मुझ पर अधिक आश्रित अनुभव करने लगेगी और इससे मुझे सुख मिलेगा।"

अगले ही दिन सरस्वती और लक्ष्मी में बात हो गयी। सरस्वती ने लक्ष्मी को कहा, "सोम के पिता ने यह निश्चय किया है कि तुम्हारे युरोप जाने से पूर्व ही तुमको इस दुकान से सर्वथा सेवा-मुक्त कर दिया जाये।"

लक्ष्मी इस निर्णय को सुन, सरस्वती का मुख देखती रह गयी। सरस्वती ने आगे कह दिया, "तुम अपनी नियुक्ति की शर्तों को देखकर अपने काम छोड़ने पर वेतन इत्यादि का बिल बना दो, जिससे तुम्हें चौदह तारीख को सायंकाल सेवा-मुक्त किया जा सके।"

सोम दिल्ली गया तो वहाँ से निराश लौटा। युरोप में हो रहे दोनों काम स्थगित हो गये थे। अन्तर्राष्ट्रीय लेबर कान्फरेंस अगले वर्ष के लिये स्थगित हो गयी थी और ब्रिटिश सरकार की ओर से सैनिक-शिक्षा के विषय में कमीशन की नियुक्ति पूर्ण नहीं हो सकी। अतः दोनों स्वराज्य-पार्टी के सदस्य विदेश नहीं जा सके।

परन्तु देश में पूर्ण वर्ष-भर हिन्दू-मुसलमान फसाद होते रहे। दिल्ली, गुलबर्गा, नागपुर, लखनऊ, शाहजहाँपुर, इलाहाबाद, जब्बलपुर, कोहाट, सहारनपुर और अन्य कई स्थानों पर फसाद हुए और देश में इन फसादों को रोकने के कई उपाय भी किये गये। इन उपायों में एक उपाय गांधी जी का इक्कीस दिन का व्रत था।

व्रत दिल्ली में रखा गया और कोहाट में फसाद के विषय में जाँच करने के लिये कांग्रेस-कार्यकारिणी ने एक कमेटी बनायी, जिसमें मौलाना शौकत अली और गांधी जी सदस्य नियुक्त हुए।

कोहाट के फसाद में दो सौ हिन्दुओं की हत्या हो गयी थी और चार हज़ार से ऊपर हिन्दू पुरुष, स्त्री, बच्चे कोहाट छोड़कर रावलपिण्डी में चले आये थे।

जून के महीने में सोम दिल्ली से लौटा तो लक्ष्मी सामान बाँध, युरोप जाने के लिये तैयार हो चुकी थी। इस समय तक लक्ष्मी को पुस्तकों की दुकान से सेवा-मुक्त किया जा चुका था और जब सोम ने बताया कि वह विलायत नहीं जा रहा तथा वहाँ होने वाली कान्फरेंस इस वर्ष नहीं हो रही तो लक्ष्मी को भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत निराशा हुई।

सोम ने यत्न किया कि लक्ष्मी को पुनः दुकान पर काम मिल जाये, परन्तु सरस्वती ने स्पष्ट कह दिया, "सोम! लक्ष्मी ने यह स्वीकार किया है कि पिछले डेढ़ वर्ष से तुम्हारे उससे सम्बन्ध रहे हैं। यह सम्बन्ध विवाह के अतिरिक्त हैं। हम अपने व्यवसाय में दुकान के एक कर्मचारी का घर के एक घटक से इस प्रकार का सम्बन्ध पसन्द नहीं करते। इस कारण लक्ष्मी को दुकान पर काम करने के लिये स्वीकृति नहीं मिल सकती।"

सोम और ललिता को यह समझ आया कि सरस्वती का सौतेला डाह उमड़ रहा है। इस कारण दोनों सरस्वती से पृथक् विजय से मिलने उसके पास जा पहुँचे। ललिता ने कहा, "सोम के युरोप न जा सकने के कारण उसको भारी आर्थिक हानि हुई है। दूसरी ओर लक्ष्मी को सेवा-मुक्त कर देने से सोम पर व्यय का अतिरिक्त बोझा हो गया है। अब लक्ष्मी के घर का पूर्ण व्यय भी सोम को देना पड़ेगा। सोम ने अपने और लक्ष्मी के युरोप-भ्रमण के योग्य कपड़े बनवाने में बहुत कुछ व्यय कर दिया है। साथ ही बम्बई के व्यापार-मण्डलों ने जो कुछ उसे देना था, वह अब नहीं दे रहे। इस कारण सोम की आर्थिक स्थिति दुर्बल हो गयी है।"

विजय ने पूर्ण बात सुनकर कह दिया, "सोम! माँ को साथ, सिफारिश करने के लिये ले आये हो?"

"पिता जी! कठिनाई के समय माँ के अतिरिक्त अन्य कोई सहायक भी तो नहीं होता।"

"ठीक है। मैं ललिता के तुम्हारी सहायता के लिये आने पर नाराज़ नहीं हूँ, परन्तु मैं जानना चाहता हूँ कि तुम क्या चाहते हो और तुम्हारी माँ इसमें क्या करने को कहती है?"

"आप मुझे दो सौ रुपया महीना दे रहे हैं। इसमें पचास मैं कीर्ति को भेज देता हूँ। शेष डेढ़ सौ रुपया तो मेरी स्थिति में किसी भी व्यक्ति के लिये पर्याप्त नहीं होता। अब लक्ष्मी का बोझा अधिक हो जाने से मेरा तो दिवाला पिट जायेगा। मैं चाहता हूँ कि लक्ष्मी को पुनः दुकान पर सेवा-कार्य के लिये रख लिया जाये। इससे लक्ष्मी का बोझा मुझ पर से कम हो जायेगा और मैं वर्त्तमान भत्ते में जैसे-तैसे कर अपना निर्वाह कर सकूँगा।"

"और जो लड़की लक्ष्मी के स्थान पर नौकर रखी है, उसका क्या करूँ?"

"उसे आप एक महीने का वेतन देकर छुट्टी कर दीजिये।"

"किस अपराध पर?"

"कोई आरोप लगाने की आवश्यकता नहीं। आप कह सकते हैं कि आपका पुराना कर्मचारी आ गया है। इस कारण नये सेवक की आवश्यकता नहीं रही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सोम ! पुराने कर्मचारी के चले जाने पर उसका दुकान में स्थान रिक्त नहीं हुआ था, वरन् दुकान ने उसे निकाला था । यह इस कारण कि उसका मालिक के परिवार के एक घटक से अविवाहित पत्नी का-सा सम्बन्ध है ।"

"इसका दुकान के काम से क्या सम्बन्ध है ?"

"इसका दुकान के नैतिक व्यवहार से सम्बन्ध है । ऐसा सम्बन्ध न मैं पसन्द करता हूँ और न सरस्वती स्वीकार करती है । जहाँ तक मैं तुम्हारी माँ के विषय में जानता हूँ, वह भी इस प्रकार के सम्बन्धों के लिये कुछ अच्छी सम्मति नहीं रखती ।"

ललिता अपने जीवन के कटु अनुभवों का विचार कर चुप कर रही । माँ को मौन देख सोम ने कहा, "यदि मैं लक्ष्मी से विधिवत् विवाह कर लूं तो आप क्या कहेंगे ?"

"उस स्थिति में हम उसे एक विवाहित महिला मान, पति के घर का अंग बन जाने में उसकी सहायता करेंगे ।"

"क्या तब वह दुकान पर काम कर सकेगी ?"

"वर्त्तमान कार्य करने वाली को निकाला नहीं जायेगा । लक्ष्मी तब सरस्वती की दुकान पर स्थानापन्न बनायी जा सकेगी । वह भी कुछ काल की शिक्षा के उपरान्त ।"

"और माता जी क्या करेंगी ?"

"वह अपने लिये कुछ अधिक उपयोगी काम ढूंढ लेंगी । देखो सोम, वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की स्नातिका हैं । वहाँ की स्नातकोत्तर शिक्षा भी प्राप्त कर चुकी हैं । इस कारण वे दुकान पर जो कार्य करती हैं, वह उनकी योग्यता से बहुत नीचे का कार्य है । वे अपनी योग्यता का ठीक उपयोग करने का यत्न करेंगी ।"

"यह ठीक है । मैं लक्ष्मी को इस भावी उज्ज्वल स्थिति का दर्शन करा, विवाह के लिये तैयार कर लूंगा ।"

"कर लो ।"

ललिता को इस आश्वासन पर सन्तोष था, परन्तु सोम को लक्ष्मी का इस प्रस्ताव के मानने पर सन्देह था । वह अपनी माँ को साथ लेकर लक्ष्मी के घर पहुँचा । लक्ष्मी अपने पिता से अपनी तत्कालीन स्थिति पर विचार कर रही थी । उसका पिता, सोम तथा उसकी माँ को आया देख, अपनी बात बन्द कर उठा और दूसरे कमरे में चला गया ।

ललिता को यह बात पसन्द नहीं आयी । परन्तु उसने उसके चले जाने की ओर अधिक ध्यान न देते हुए लक्ष्मी से बात करनी आरम्भ कर दी । ललिता ने कहा, "देखो लक्ष्मी ! सोम के पिता से हमने यह स्वीकार करवा लिया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम हमारे घर में चल कर रह सकोगी और तुम्हारा तथा तुम्हारे पिता का पूर्ण खर्चा घर वहन करेगा। जितना घर के प्राणियों को निजी व्यय के लिये मिलता है, उतना तुमको भी मिला करेगा। परन्तु इस सबमें एक शर्त है कि तुम सोम से विधिवत् विवाह कर लो और उसकी विधिवत् पत्नी बन कर रहो।"

"यह प्रस्ताव आपके सुपुत्र ने पहले भी किया था, परन्तु मैंने इसे अस्वीकार कर दिया था।"

"परन्तु तुम पहले, अर्थात् जब पहली बार सोम से मिली थीं, तब तो विवाह के लिये तैयार थीं।"

"ठीक है। तब मेरी स्थिति विवशता की थी। मुझ निर्धन को चिथड़ों में देख, लोग मेरा अनुपयुक्त प्रयोग करते थे और मैं समझी थी कि आपके पुत्र ने भी मेरे प्रयोग का एक उपाय बताया था। जैसे अन्य पुरुषों के प्रयोग को मैं स्वीकार कर रही थी, वैसे ही इनके बताये प्रयोग के लिये भी मैं तैयार हो गयी थी।

"तब की स्थिति में और आज की स्थिति में अन्तर पड़ गया है। अब मैं अपने प्रयोग किये जाने की विवशता में नहीं हूँ। मैं अब ऐसी स्थिति में हूँ कि मैं पुरुषों का प्रयोग कर सकती हूँ। इस कारण उस समय की स्वीकृति आज लागू नहीं होती।"

सोम तो इस प्रकार की युक्तियाँ कई बार सुन चुका था। इस कारण उसे इसमें कोई नवीन बात समझ नहीं आयी, परन्तु ललिता इस पूर्ण वार्त्तालाप में अपनी उस समय की मनःस्थिति का दर्शन कर रही थी, जब उसका सम्पर्क ज्ञानस्वरूप से हुआ था। वह भी तब यही समझती थी कि स्त्री प्रयोग की वस्तु है। इसके प्रयोग करने वाले मिल सकते हैं यदि स्त्री प्रयोग होने के लिये तैयार हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

लाहौर शाह-आलमी दरवाज़े के भीतर एक कटरा परीमहल है। यह कटरा उन दिनों सार्वजनिक राजनीतिक हलचल का केन्द्र बना हुआ था।

सन् १९२२ में पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का कार्यालय मत्ती के चौक में एक बड़े से मकान में था। असहयोग आन्दोलन के समय यह मकान ही राजनीतिक हलचल का केन्द्र बना हुआ था।

उस समय अन्य कोई राजनीतिक दल क्षेत्र में नहीं था। इससे पूर्व सन् १९०७ में शाह-आलमी दरवाज़ा और लाहौरी दरवाज़ा के मध्य में सरक्युलर रोड पर शीतला के मन्दिर के समीप भारत माता संस्था का कार्यालय खुला था। परन्तु भारत माता संस्था गैर-कानूनी संस्था घोषित होने पर क्रान्तिकारियों का अड्डा मोहल्ला 'मोहल्लियाँ' में एक मास्टर धनीराम के घर में स्थानान्तरित हो गया था।

सन् १९१३ में क्रान्तिकारियों का पंजाब में उन्मूलन होने पर ग़दर पार्टी के सदस्यों ने अमरीका से आकर अमृतसर ज़िले के एक गाँव में अपना केन्द्र-स्थान बना लिया था।

सन् १९१९ में गांधी जी के आन्दोलन के उपरान्त देश में क्रान्तिकारी विचार के लोग तो थे; परन्तु उनका कोई केन्द्रीय अथवा प्रान्तीय कार्यालय नहीं था। गांधी जी के विपुल प्रचार से सन् १९१९ से १९२२ तक क्रान्तिकारियों को भूले-भटके समझने वाले लोगों की अपार संख्या हो गई थी। वे लोग भी, जो किसी काल में क्रान्तिकारी रह चुके थे, अब गांधी जी के प्रभाव के कारण व्यक्तिगत हिंसा के कार्यों को व्यर्थ समझने लगे थे।

परन्तु सन् १९२२ के गांधी जी के असहयोग आन्दोलन को वापस लेने पर हवा का रुख पुन: बदला। अहिंसात्मक कार्यवाही का थोथापन युवकों को समझ में आने लगा। गांधी जी के अपना आन्दोलन वापस लेने के परिणाम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप पंजाब में कई दिशाओं में प्रतिक्रिया हुई।

सन् १९२२ में मत्ती के चौक वाले कांग्रेस कार्यालय को आग लग जाने के कारण कार्यालय परीमहल में चला गया और कांग्रेस के आन्दोलन के असफल होने पर उसकी प्रतिक्रिया से उत्पन्न संस्थाएँ भी परीमहल में ही बनने लगीं।

सन् १९२४ की बात है। आर्य-समाज का एक युवक कार्यकर्त्ता अजीतसिंह सत्यार्थी आर्य-समाज अनारकली के साप्ताहिक अधिवेशन से लौटते हुए अपने एक साथी को कह रहा था, "पण्डित जी ! अब आर्य-समाज तो एक निर्जीव संस्था प्रतीत होती है।"

"भाई, जीवित तो है। देखा नहीं, आर्य-समाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर साठ हज़ार रुपया चन्दा एकत्रित हुआ है।"

"इससे क्या होता है ? यह रुपया अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ीयत की शिक्षा देने में व्यय होगा। मेरे बड़े भाई साहब बताते थे कि जब लाला लाजपतराय माण्डला जेल से छूटकर आये थे, तब उनके दर्शनों के लिये इतनी भीड़ उमड़ पड़ी थी कि डी० ए० वी० मिडल स्कूल की बड़ी ग्राउण्ड में समा नहीं सकी थी और जलसा वहाँ नहीं किया जा सका था। परिणामस्वरूप जलसा डी० ए० वी० कालेज की विशाल ग्राउण्ड में किया गया था।"

"हाँ; परन्तु आर्य-समाज और डी० ए० वी० कालेज तो वही हैं। लाला जी अवश्य बदल गये हैं। मैं समझता हूँ कि आर्य-समाज में तो जान है, परन्तु लाला जी आर्यसमाजी नहीं रहे।"

अजीतसिंह सत्यार्थी उन दिनों 'वन्दे मातरम्' अखबार में कार्य करते थे। उनके साथ वार्त्तालाप करने वाले थे पण्डित भूमानन्द। वे किसी काल में आर्य-समाज के उपदेशक थे और अब अपना स्वतन्त्र किताबत का काम करते थे। परन्तु उपदेशक रह चुकने के कारण सार्वजनिक संस्थाएँ उनको अब भी व्याख्यान देने के लिये बुलाती रहती थीं।

अजीतसिंह समझता था कि लाला जी तो देशभक्त वैसे-के-वैसे ही हैं। हाँ, यह आर्य-समाज देशभक्ति छोड़ बैठी है। परन्तु भूमानन्द जी अभी भी आर्य-समाज को देशभक्तों की एक संस्था मानते थे और गांधी जी तथा कांग्रेस को देशभक्ति से भटके हुए समझते थे। लाला लाजपतराय भी कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन में पकड़े जाकर कैद हुए थे; इस कारण पण्डित जी उन्हें भी भटका हुआ समझते थे।

पण्डित भूमानन्द की बात सुन अजीतसिंह पूछने लगा, "आप क्या समझते हैं कि लाला जी अब देशभक्त नहीं रहे और आर्य-समाजी, जो सरकारी पदवियाँ पाने के लिये परेशान प्रतीत होते हैं, अधिक देशभक्त हैं ?"

"देखो सत्यार्थी जी ! देशभक्ति के अर्थ यह कैसे हो गये कि सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी अथवा पदवी नहीं पाना ?"

"पण्डित जी ! सरकार विदेशीय है। उसकी सेवा करने वाले विदेश-भक्त ही होंगे।"

"तुम अभी युवक हो और तत्त्व की बात समझते नहीं। देखो, मैं बताता हूँ। देश न तो हिमालय और गंगा-यमुना है और न ही यहाँ पर राज्य करने वाले अधिकारी देश हैं। देश यहाँ के रहने वाले कोटि-कोटि लोग हैं। हिमालय, यमुना, गंगा तो इस विशाल जनता के चिह्न मात्र हैं।

"भला बताओ, तुम कहाँ रहते हो ?" भूमानन्द ने बात बदल कर पूछा।

"कूचा 'बाल माता' में।"

"किसके मकान में रहते हो ?"

"लाला बिशनदास ब्याजरिये के मकान में।".

"ठीक है। यह बताओ कि यदि बिशनदास मर जाये तो तुम क्या करोगे ?"

"कुछ नहीं ! मैं बिशनदास के लड़के हाकिमराम को किराया दे दिया करूँगा।"

"और यदि मकान को आग लग जाये तो क्या करोगे ?"

"किसी दूसरे मकान में जाकर रहने लगूँगा।"

"बस यही बात देश की है। हम देश के वासी, देश के समुद्र में डूब जाने पर भी रहेंगे और यहाँ का राज्य बदल जाने पर भी यहाँ रहेंगे। हम मुख्य हैं, न कि यह हिमालय और गंगा अथवा यहाँ के राजे-महाराजे।

"हम यहाँ के रहने वाले एक-राष्ट्र हैं। यह देश और यहाँ के राजा-महाराजा हमारे संरक्षक हैं। कठिनाई यह है कि हम एक सुसंगठित और श्रेष्ठ राष्ट्र नहीं रहे। इसी के निर्माण में आर्य-समाज लगी है। जब यहाँ के लोग श्रेष्ठ हो जायेंगे तब यहाँ का राष्ट्र, राज्य और राज्य की सीमायें भी ठीक हो जायेंगी।"

"और यह गांधी जी तथा देश के अन्य लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह देश-भक्ति नहीं क्या ?"

इस समय ये दोनों चलते-चलते 'सूत्तर मण्डी' में पहुँच गये थे। भूमानन्द ने पूछा, "अब किधर जाओगे ?"

"जाना तो 'जौड़े मोरी' की ओर था, परन्तु आपकी बात रुचिकर है। इस कारण इधर आपके साथ आ गया हूँ।"

"यहाँ से भी तो जा सकोगे। थोड़ा चक्कर पड़ेगा। देखो, मैं तुम्हें बताऊँ। हिन्दू पिछले एक सहस्र वर्ष से अपना राज्य नहीं जमा सके। यह क्यों ? यह इस कारण कि हिन्दू एक-राष्ट्र नहीं रहा और जब तक यहाँ के रहने वाले एक-राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो जाते, तब तक न राज्य अपना होगा और न देश अपना।''

''क्या कमी है हिन्दुओं में ?''

''अच्छा, अब मैं तुम्हें बहुत देर तक रोकना नहीं चाहता। तुम आज मध्याह्नोत्तर पाँच बजे मोहनलाल रोड पर भाई जी के मकान पर मिलना। शेष बात वहाँ करूँगा। भाई जी इस विषय पर अपने विचार रखते हैं। उनसे भी तुम्हारी बात कराऊँगा।''

भूमानन्द का भाई जी से अभिप्राय था, भाई परमानन्द। अजीतसिंह समझता था कि कांग्रेस-आन्दोलन को आर्य-समाज ने सहयोग नहीं दिया और डी० ए० वी० कालेज ने अपना सम्बन्ध पंजाब विश्वविद्यालय से विच्छेद नहीं किया, इस कारण दोनों संस्थाएँ देश-द्रोही हैं। अपनी मन की यह बात वह भूमानन्द जी से कर बैठा था।

पंडित भूमानन्द के निमन्त्रण पर वह विचार करने लगा था कि भाई जी के मकान पर चलना चाहिये। अतः ठीक पाँच बजे वह वहाँ जा पहुँचा।

भूमानन्द मकान के नीचे खड़ा आने वालों का स्वागत कर रहा था। अजीतसिंह पण्डित जी को नमस्ते कह कर उनके समीप खड़ा हो गया।

भूमानन्द ने कहा, ''तो तुम आ गये हो। बहुत अच्छा किया है। यहाँ आज एक सभा हो रही है। तुम भी उसमें सम्मिलित हो जाओ और पीछे भाई जी से उस विषय पर भी बात करेंगे।''

''कैसी सभा हो रही है ?''

''हमने एक संस्था बनायी है। इसका नाम है 'जात-पात तोड़क मण्डल'। आज इसकी साप्ताहिक बैठक हो रही है।''

'जात-पात तोड़क' का नाम सुन अजीतसिंह मुस्कराया और मुस्कराकर पूछने लगा, ''तो कोई इस सभा में आया भी है ?''

''हाँ, दस-बारह लोग आ चुके हैं और मैं यहाँ सवा-पाँच बजे तक रहूँगा।

''तो मैं भी यहाँ रहूँगा।''

''ठीक है। बताओ, भाई जी से पहले भी कभी मिले हो ?''

''एक-दो बार मैं यहाँ आया था, परन्तु इनसे मिलने वाले कुछ अन्य लोग यहाँ थे। इस कारण किसी विशेष विषय पर बात नहीं हो सकी।''

''तो आज हो जायेगी। वैसे तो मैं भी भाई जी के सामने युक्ति करने से झिझकता हूँ। भाई, तुम अखबार-नवीस हो। तुम खुलकर बात कर सकोगे।''

सवा-पाँच बजे तक बीस-पच्चीस लोग एकत्रित हो गये थे। भूमानन्द तब अजीतसिंह को साथ ले, ऊपर खुली छत पर आ गया। भाई जी लोगों से घिरे वहाँ बैठे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई जी किसी काल में डी० ए० वी० कालेज के मैम्बर थे और पचहत्तर रुपये महीना वेतन पर कालेज में पढ़ाते थे। इंगलैण्ड में इतिहास के विषय पर वे शोध-कार्य करने गये तो लन्दन म्युज़ियम के पुस्तकालय में अपने शोध-लेख पर कार्य करते-करते वे लन्दन की क्रान्तिकारी पार्टी के सम्पर्क में आ गये और इंगलैण्ड की सरकार की दृष्टि उन पर पड़ गई। तदनन्तर जो शोध-लेख भाई जी ने लन्दन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया, उसे पढ़कर तो भाई जी को एक महान् क्रान्तिकारी समझा जाने लगा। उनके लेख की एक प्रति भाई जी के पास थी। वह भारत लौटते हुए जहाज़ में से चोरी हो गयी और भाई जी लाहौर पहुँचते ही पकड़ लिये गये। उनसे तीन वर्ष तक किसी सार्वजनिक कार्य में भाग न लेने के लिये साठ हज़ार की ज़मानत माँगी गयी। भाई जी के कुछ मित्रों ने मिलकर वह ज़मानत दी और भाई जी अमरीका में फार्मेसी का कार्य सीखने चले गये।

अमरीका में इनका सम्बन्ध वहाँ बन रही ग़दर पार्टी से हो गया और जब सन् १९१५ में वे हिन्दुस्तान लौटे तो पुनः पकड़ लिये गये। इस बार इन पर आरोप यह लगाया गया था कि इन्होंने ग़दर पार्टी का संगठन करने में भाग लिया था और उसी पार्टी के लोगों से उनका हिन्दुस्तान में भी सम्बन्ध है।

इन आरोपों पर भाई जी को फाँसी का दण्ड हुआ, परन्तु पीछे फाँसी का दण्ड रद्द कर इनको आजन्म कैद का दण्ड हुआ और वे अण्डमान जेल भेज दिये गये।

सन् १९२१ में छोड़े गये कैदियों में भाई जी भी एक थे और ये पुनः लाहौर में आकर मोहनलाल रोड पर एक अति सामान्य मकान में रहने लगे थे।

सन् १९२४ में कांग्रेस द्वारा स्थापित नैशनल कालेज में भाई जी पढ़ाने लगे और उसी कालेज से सम्बद्ध स्कूल में व्यवस्थापक के रूप में कार्य करने लगे। यह कार्य अवैतनिक था और जीविका के लिये वे लेखन-कार्य करते थे।

'जात-पात तोड़क मण्डल' का उद्देश्य यह था कि हिन्दुओं में जो रोटी-बेटी के सम्बन्ध में जात-पात के कठोर बन्धन थे, इन बन्धनों के कारण लड़के और लड़कियों के विवाहों में बाधाएँ थीं। खान-पान का विषय और भी बेढब था। छोटी कही जाने वाली अछूत जातियों में तो बन्धन और भी कठोर थे। बड़ी जाति वाले परस्पर छुआछूत का व्यवहार नहीं करते थे, परन्तु छोटी जाति वाली एक अछूत जाति, दूसरी अछूत जाति से परहेज़ करती थी।

इसका परिणाम यह हो रहा था कि ईसाईयत और इस्लाम का प्रचार बढ़ने लगा था।

हिन्दू-समाज में रोटी-बेटी के बन्धनों को तोड़ने के लिये 'जात-पात तोड़क मण्डल' की स्थापना की गई थी और इसकी सभाओं में इसके उद्देश्य के प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये विचार-विमर्श होता रहता था।

इस दिन की सभा में इस विषय पर समाचार-पत्रों में लेख लिखने और पुस्तकें लिखने पर विचार-विनिमय हुआ। इस समय अजीतसिंह के उर्वरा मस्तिष्क में एक विचार प्रस्फुरित हुआ और उसने कहा, "मैं एक प्रस्ताव उपस्थित करता हूँ।"

भाई परमानन्द जी ने अजीतसिंह को पहचान लिया और कहा, "अजीत! तुम आये हो। यह अच्छा हुआ। अब तुम भी इस सभा के सदस्य बन जाओ।"

"भाई जी! सदस्य तो यहाँ आने मात्र से ही मैं बन गया हूँ। सभ्य गुणों में बैठने से सभ्य बना जा सकता है।"

इस पर सभा के मन्त्री मास्टर सन्तराम बोले, "चार आने चन्दा निकालो।"

मन्त्री जी की बात सुन सब हँसने लगे। अजीतसिंह ने चार आने दिये तो रसीद काट दी गयी। सन्तराम ने रसीद अजीतसिंह को देते हुए कहा, "हाँ, अब तुम भी प्रस्ताव रख सकते हो।"

अजीतसिंह ने मुस्कराकर कहा, "तो यह थियेटर है, जिसमें टिकट लिये बिना भीतर नहीं आ सकते ?"

पुन: सब हँसने लगे। परन्तु अजीतसिंह ने मतलब की बात कह दी। उसने कहा, "मेरी सम्मति है कि एक बड़ा सहभोज किया जाये। उसमें खाने का एक रुपया टिकट रखा जाये और छोटी जाति वालों को टिकट मुफ्त दिया जाये। इस प्रकार हजारों की संख्या में सब जाति के हिन्दू इकट्ठे बैठ कर भोजन करें।"

"बात तो ठीक है।" भाई परमानन्द जी ने कहा, "परन्तु इतने बड़े भोज का प्रबन्ध कठिन हो जायेगा।"

"भाई जी! यह प्रबन्ध मै करूँगा। आप अपना संरक्षण रखिये। मैं सब प्रबन्ध कर दूँगा।"

"तुम कैसे करोगे ?"

"हमारी युवकों की एक सभा है। वह सभा प्रबन्ध कर देगी।"

"तो करो। यह बहुत अच्छा प्रस्ताव है।"

"भाई जी! मैं इस विषय में आगामी रविवार आपको सूचना दूंगा कि मैंने क्या कुछ किया है।"

"हाँ; ठीक है।"

अजीतसिंह के वहाँ पहुँचने से 'जात-पात तोड़क मण्डल' में नये जीवन का संचार होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

सभा विसर्जित हुई तो पण्डित भूमानन्द ने अजीतसिंह को भाई जी के सम्मुख खड़ा कर कह दिया, "यह युवक आपसे अपने कुछ संशय निवारण करना चाहता है।"

"हाँ पूछो।" भाई जी ने कहा।

वे लोग पुनः बैठ गये। अन्य उपस्थित सदस्य छत से नीचे उतर गये थे। बैठकर अजीतसिंह ने पूछ लिया, "क्या आज के युग में आर्य-समाज जैसी संस्था की आवश्यकता है?"

भाई जी ने इस प्रश्न पर विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "इस प्रश्न की आज आवश्यकता किस कारण अनुभव हुई है?"

"मैं एक दुबिधा में फँसा हुआ हूँ। महर्षि स्वामी दयानन्द का मैं अनन्य भक्त हूँ। परन्तु अनारकली आर्य-समाज में आज व्याख्यान हो रहा था 'दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कालेज की महिमा' पर।

"वक्ता महोदय बता रहे थे कि डी० ए० वी० कालेज के स्नातक इस समय सरकारी उच्च सेवाओं में पहुँच गये हैं। वे जज, मैजिस्ट्रेट, पुलिस-अधिकारी, ठेकेदार, वकील, बैरिस्टर, कारखानेदार और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्थानों पर नियुक्त हैं।

"प्रवक्ता इसे कालेज की महिमा और विराट् सफलता बताते थे। मुझे उनके कहने पर सन्देह है। आप क्या समझते हैं?"

"देखो अजीतसिंह! राज्य के खुशामदी बड़े-बड़े ओहदों पर पहुँचते ही हैं। इसमें न तो उन खुशामदियों की महानता है और न ही सरकार की किसी प्रकार की विशेषता।

"आज डी० ए० वी० कालेज वह उद्देश्य पूर्ण नहीं कर रहा, जिसके लिये इसकी स्थापना की गयी थी। यह हिन्दू-समाज की रक्षा नहीं कर रहा।"

इस पर भूमानन्द ने पूछ लिया, "भाई जी! क्या अपने कालेज के स्नातक सरकारी कालेज के विद्यार्थियों से भी गये-गुज़रे हैं?"

भाई जी ने कहा, "मुझे दोनों में कोई अन्तर दिखायी नहीं देता। वैसे अच्छे लड़के सब स्थानों पर मिलते हैं। देखो, मैं बताता हूँ। महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, हरदयाल और सैकड़ों अन्य स्नातक ईसाईयों के कालेजों में पढ़कर भी त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इससे क्रिश्चियन कालेजों की शिक्षा की प्रशंसा नहीं की जा सकती।

"कालेज की प्रशंसा इस बात से है कि वहाँ क्या पढ़ाया जाता है? दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कालेज की पढ़ाई में और किसी अन्य कालेज की पढ़ाई में अन्तर नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु कालेज का वातावरण, वहाँ के प्रोफेसरों का त्याग और तपस्या का जीवन क्या कुछ भी प्रभाव नहीं रखता ?"

"वह इतना बड़ा सफेद हाथी पालने के अतिरिक्त भी कई उपायों से हो सकता है। विद्यार्थियों के लिये होस्टल, क्लब, म्युज़ियम, थियेटर और जिमनेज़ियम चलाने से यह कार्य अधिक श्रेष्ठता से हो सकता है।"

अब अजीतसिंह ने बातों का सूत्र पुनः अपने हाथ में लेते हुए कहा, "आप यह बताइये कि लाला लाजपतराय जी की वर्त्तमान राजनीति ठीक दिशा में है क्या ?"

"देखो अजीत ! व्यक्तिगत जीवन में छिद्र निकालने वाले अपने-आपको ही पतनोन्मुख बनाते हैं। इस कारण लाला जी की बात छोड़ो। मैं तुम्हें कांग्रेस की नीति के विषय में बताता हूँ। इस देश में दो प्रबल तरंगें चल रही हैं। एक तरंग है जीवन को पश्चिमाभिमुख करने वाली, और दूसरी है पूर्वाभिमुख करने वाली। पहली विचार-तरंग कें पोषक में राजा राममोहन राय तथा उनकी ब्रह्म-समाज, मैकॉले, ह्यूम, दादा भाई नारौजी, फिरोज़शाह महता, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी प्रभृति महापुरुष हैं। इन्हीं की परम्परा में वर्त्तमान युग के गांधी, मोतीलाल, सी० आर० दास इत्यादि हैं।

"एक दूसरी विचार-तरंग है, जिसे स्वामी दयानन्द ने चलाया था। उसी विचार-तरंग के पोषक थे बंकिम, बिपिन, विवेकानन्द, अरविन्द, गुरुकुल चलाने वाले, मदनमोहन इत्यादि।

"पहली तरंग की सहायक सरकार रही है और दूसरी तरंग का विरोध न केवल सरकार करती है, वरन् देश-भर की शिक्षा-प्रणाली और युरोप के प्रायः लेखक, राजनयिक तथा शिक्षक कर रहे हैं।

"इन दो तरंगों में जो पूर्वाभिमुख तरंग के सहायक हैं, वे हिन्दू-पक्ष में कहे जा सकते हैं और जो पश्चिमाभिमुख तरंग की सहायता कर रहे हैं, वे हिन्दू-पक्ष के विरोधी हैं।"

"परन्तु गांधी जी और कांग्रेस भी सरकार का विरोधी पक्ष है।"

"नहीं भाई सत्यार्थी ! ऐसा नहीं है। गांधी जी सरकार के विरोध को मिथ्या दिशा में ले जा रहे हैं। देखो, मैं बताता हूँ। यदि राष्ट्र का अहित कर राज्य भी प्राप्त करते हो तो तुम हिन्दू-पक्ष के विरोधी ही माने जाओगे।

"मैं लायड जॉर्ज के शासन से मौलाना मुहम्मद अली के शासन को श्रेष्ठ नहीं समझता। कांग्रेस और गांधी ऐसा समझते हैं।"

"तो फिर क्या किया जाये ? स्कूल, कालेज सरकारी शिक्षा देते हैं। राजनीतिक संस्था कांग्रेस, आप कह रहे हैं कि छद्म रूप से सरकार की सहायता कर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं; मैंने यह नहीं कहा। मैंने छद्म शब्द प्रयोग नहीं किया। मैंने तो यह कहा है कि दो विचार-तरंगें हैं। मैं पहली विचार-तरंग को हिन्दू, हिन्दुस्तान और हिन्दी संस्कृति की विरोधी समझता हूँ। आज जन्म के हिन्दू भी इस विचार-तरंग की सहायता कर रहे हैं। यह सरकारी शिक्षा-प्रणाली की उपज होने के कारण है। मैं न तो गांधी के व्यवहार को छद्म मानता हूँ और न ही महात्मा हंसराज जी के। दोनों महात्मा अनजाने में अपने महात्मापन की सरलता में स्वयं और देश को भी उसी ओर ले जा रहे हैं, जिधर युरोप और सरकार ले जाना चाहती है।"

"तो क्या किया जाये ?"

"मैं समझता हूँ कि हम हिन्दू इसलिये नहीं कि सिन्ध के इस पार के क्षेत्र में उत्पन्न हुए हैं। न ही हम हिन्दू इसलिये हैं कि मेरा नाम रामकृष्ण अथवा परमानन्द है। हम हिन्दू इस कारण हैं कि हमारी कुछ मान्यताएँ हैं। हम उन मान्यताओं से ही मानव-समाज का और भारतीय समाज का कल्याण मानते हैं। समाज का कल्याण होगा तो राज्य भी कल्याण-मय हो जायेगा। अन्यथा राज्य अपने, परन्तु विदेशीय आचार-विचार वाले लोगों का हो जाने से समाज का कल्याण नहीं हो सकता।

"समाज का कल्याण सर्वोपरि है। राज्य इत्यादि उसके अन्तर्गत हैं।"

अजीतसिंह अनुभव करने लगा कि उसको मानसिक अवस्था का कायापलट हो गया है। वह भाई जी के वचन सुनकर घर लौटा तो पण्डित भूमानन्द उसके साथ-साथ थे। अजीतसिंह ने पूछा, "पण्डित जी ! अब बताइये ?"

"मैं तो भाई जी की बात सुन चकाचौंध रह गया हूँ, परन्तु इसका अर्थ तो यह निकला है कि जब तक शिक्षा-प्रणाली आजकल वाली रहेगी, तब तक कुछ नहीं हो सकता। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि देश का कल्याण कभी भी नहीं होगा। देखो न, कांग्रेस ने नैशनल कालेज खोला है और उसमें चालीस-पचास लड़के पढ़ते हैं और डी० ए० वी० कालेज में दो हज़ार लड़का पढ़ता है।" भूमानन्द ने संशय प्रकट कर दिया।

"यह ठीक है, परन्तु यह कोई युक्ति नहीं कि डी० ए० वी० कालेज की शिक्षा ठीक है और नैशनल कालेज की गलत है।" अजीतसिंह का कहना था।

"परन्तु व्यवहारिक बात तो ठीक है ?"

"व्यवहार में तो यह हो रहा है कि कांग्रेस का विरोध किया जा रहा है। इससे अनजाने में सरकार का पृष्ठ-पोषण किया जा रहा है. और यह बात व्यवहारिक होते हुए भी देश-द्रोह है। यह भी नहीं कि डी० ए० वी० कालेज चलाते हुए कांग्रेस का समर्थन करने से देश-हित हो जाता। वास्तव में कालेज की शिक्षा चलाते हुए कांग्रेस का विरोध अथवा समर्थन दोनों अर्थहीन हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्यार्थी जी ! बात तो तुम ठीक कहते हो, परन्तु किया क्या जाये ? देखो, मेरे कस्बे में ईसाईयों का स्कूल है। विवश हो मुझे अपना लड़का उस स्कूल में भेजना पड़ रहा है। और कोई शिक्षा का साधन भी तो नहीं।"

"तो नैशनल स्कूल में क्यों नहीं भरती करा देते ?"

भूमानन्द निरुत्तर हो रहा था। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "सहभोज का प्रबन्ध कैसे करोगे ?"

"मैं आज रात ही अपनी सभा के प्रधान से बात करूँगा और मैं समझता हूँ कि दो सहस्र लोगों के खाने-पीने का प्रबन्ध हो जायेगा।"

"कौन-सी सभा है आपकी ?"

"आर्य स्वराज्य सभा। अभी नयी-नयी ही स्थापित की है।"

"क्या उद्देश्य है सभा का ?"

"कांग्रेस में सम्मिलित हो आर्य-समाज के पक्ष को प्रबल करना।"

"तो आप छद्म व्यवहार चालायेंगे ?"

"अब नहीं। आज के ज्ञान-वर्धक वार्त्तालाप के उपरान्त कांग्रेस के साथ सम्मिलित होने का प्रश्न ही नहीं रह जाता।"

"तो सभा के नाम में स्वराज्य शब्द का क्या अर्थ रह जायेगा ?"

"यह रहेगा। स्वराज्य की ठेकेदार कांग्रेस ही नहीं है। स्वराज्य का अर्थ अपना राज्य है। हम अपनी राजनीति पृथक् बनायेंगे।"

भूमानन्द ने पूछ लिया, "कब तक सहभोज हो सकेगा ?"

"आगामी रविवार को बताऊँगा।"

अजीतसिंह अपने साथियों से बातचीत करने सभा के कार्यालय 'परीमहल' में पहुँच गया। वहाँ कुछ सदस्य उपस्थित थे। पन्द्रह-बीस आर्य युवकों का यह संगठन था और ये सब-के-सब कांग्रेस में कार्य करने वाले थे। ये लोग आर्य-समाज की नीति से निराश अपना पृथक् संगठन बना रहे थे, इस पर भी इनका कांग्रेस छोड़, राजनीति में कांग्रेस के मुकाबिले की संस्था बनाने का विचार नहीं था।

इस दिन अजीतसिंह कार्यालय में पहुँचा तो वहाँ उपस्थित सदस्यों को वह भाई जी के साथ हुआ वार्त्तालाप सुनाने लगा। अजीतसिंह की इस बात को तो स्वीकार कर लिया गया कि एक सहभोज किया जाये जिसमें सब वर्ण के और वर्णों के अतिरिक्त भी सब हिन्दू सम्मिलित हो सकें।

अगले दिन सभा की मीटिंग में प्रस्ताव पारित हो गया और तदनन्तर सहभोज की तैयारी होने लगी। इस सहभोज में भंगी, चमार, जुलाहे, वैश्य, क्षत्रिय तथा ब्राह्मण, सब वर्णों के हिन्दू सम्मिलित होने थे।

यह थी एक प्रतिक्रिया गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन को वापस लेने की। एक दृष्टि से यह गांधी जी के जातीय निर्माण-कार्य की गूँज ही प्रतीत होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। वास्तव में यह इस आन्दोलन के वापस लेने की प्रतिक्रिया थी। कारण यह कि दोनों में दिशा-भेद था। एक दिशा थी राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिये, और दूसरी थी सामाजिक असमता दूर करने के लिये।

गांधी जी का अछूतोद्धार अछूतों को राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिये था। अछूत कहे जाने वाले हिन्दुओं को उच्च जातियों के बराबर राजनीति सत्ता दिलवाने के लिये।

वह लगभग वैसा ही आन्दोलन था जैसा कि मुसलमानों को हिन्दुओं के बराबर अधिकार दिलवाने का था। मुसलमानों में देश-विरोधी भावना के रहते हुए भी उनके अधिकार न केवल हिन्दुओं के बराबर करने थे, वरन् हिन्दुओं से ऊँचे करने थे।

मुसलमानों में त्रुटि यह थी कि वे हिन्दुस्तान को अपना देश नहीं समझते थे। न ही वे हिन्दुस्तान में सब रहने वालों को अपने बराबर स्वीकार करते थे। इस पर भी उनको उन लोगों के समकक्ष ही नहीं रखा गया, वरन् वरीयत की स्थिति में रखा गया था। जो लोग हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों के लिये त्याग और तपस्या करने के लिये तैयार थे, उनको सामान्य दर्जा दिया जा रहा था।

यही बात गांधी जी के अछूतोद्धार में थी। अछूतों में कुछ कमियाँ थीं। वे गन्दे रहते थे, अशिक्षित तो थे ही, और निर्धन भी थे। गांधी जी बिना इन त्रुटियों को दूर किये, उनको उच्च-वर्ण वालों के बराबर करना चाहते थे। मैले, गन्दे वस्त्रों के साथ, बिना स्नान किये अथवा किसी प्रकार की श्रेष्ठ भावना मन में लिये हुए उनको मन्दिरों में घुस जाने के लिये प्रोत्साहन दिया जा रहा था।

यह कहा जाता था कि जब राजनीतिक और आर्थिक अधिकार मिलेंगे तो श्रेष्ठता स्वयमेव आ जायेगी। परन्तु इस सहभोज का प्रबन्ध करने वाले ऐसा नहीं मानते थे।

इस विषय पर प्रबन्ध करने के समय 'जात-पात तोड़क मण्डल' में बहुत ही रुचिकर वार्त्तालाप हुआ। यह उस दिन की बात है, जिस दिन सत्यार्थी सहभोज की योजना और प्रबन्ध के विषय में सूचना देने भाई जी के मकान पर आया। जात-पात तोड़क मण्डल की साप्ताहिक बैठक हो रही थी।

सत्यार्थी ने कहा, "भाई जी! इस सहभोज के कार्य को 'आर्य स्वराज्य सभा' ने अपने हाथ में ले लिया है। हमने चार हजार टिकट छपवा लिये हैं और उनकी बिक्री आरम्भ कर दी है।

"सहभोज डी० ए० वी० कालेज के प्रांगण में होगा। एक सहस्र टिकट अछूतों को बिना दाम के दिये जायेंगे। टिकट में हमने यह भी छपवा दिया है कि सहभोज में सम्मिलित होने वालों के लिये यह आवश्यक है कि वे साफ तथा धुले हुए वस्त्र पहनकर आएँ और हाथ-मुख धोकर सहभोज में सम्मिलित हों।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई जी ने पूछा, "यह सब टिकटों पर छपवाया है ?"

"जी ।"

भाई जी हँस पड़े, परन्तु पण्डित भूमानन्द ने इस पर आपत्ति कर दी। उसने कहा, "निर्धनों को यह कहना कि कपड़े धोकर आएँ, उनको दण्ड दिया गया समझा जायेगा ।"

भाई जी ने कहा, "पण्डित जी ! आपमें से अभी तक राजनीति की बू नहीं गयी। राजनीति में बिना योग्यता प्राप्त किये लोगों से मतदान माँगा जा रहा है। बिना ज्ञान-ध्यान और श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न किये, मन्दिरों में प्रवेश की बात कही जाती है। वही आप कह रहे हैं।

"मैं इस बात से प्रसन्न हूँ कि छोटे-बड़े सबके लिये यह शर्त लगा दी गयी है।"

"परन्तु भाई जी !" पण्डित भूमानन्द ने कहा, "जिनके पास कपड़े धुलाने के लिये दाम नहीं, उनको कठिनाई उत्पन्न हो जायेगी ।"

भाई जी ने सत्यार्थी से देखने के लिये एक टिकट माँगा। सत्यार्थी ने अपने थैले में से टिकट निकाल कर दिखा दिया। टिकट पर लिखा था—'धुले हुए वस्त्र पहनकर आएँ।' भाई जी ने पढ़कर कहा, "इसमें कहाँ लिखा है कि कपड़े धुलवा कर पहनो। स्वयं भी तो धोये जा सकते हैं।"

इस पर सत्यार्थी ने कह दिया, "और यह भी नहीं लिखा कि साबुन से धुले वस्त्र हों।"

सब हँसने लगे।

: ३ :

गांधी जी के सत्याग्रह वापस लेने की एक अन्य प्रतिक्रिया भी हुई। वह यह कि नैशनल कालेज के एक प्रोफेसर ने लाहौर में एक क्रान्तिकारी-दल की स्थापना करने का यत्न किया।

यदि यही यत्न सन् १९२०-२१ तथा १९२२ में किया जाता तो सफल न होता। परन्तु सन् १९२३ में यह सफल हो गया। अब युवक परवानों की भाँति देश पर जल-मरने के लिये आगे आने लगे थे।

दल बना, दल की योजना बनी और फिर उस योजना के लिये साधन ढूँढे जाने लगे।

एक दिन कांग्रेस द्वारा स्थापित 'नैशनल स्कूल' के मुख्याध्यापक स्कूल के ग्राउण्ड में खड़े कुछ विचार कर रहे थे कि स्कूल का एक विद्यार्थी सामने आ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ नमस्ते कर कहने लगा, "मास्टर जी ! एक बात आपसे जानना चाहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, पूछो।"

"क्या देश शान्तिमय उपायों से स्वतन्त्र होगा ?"

हेड-मास्टर साहब विद्यार्थी के मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे। लड़का उत्सुकता से मास्टर जी के मुख पर देखता हुआ उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर मास्टर जी ने पूछा, "किसलिये पूछते हो यह ?"

"आजकल विद्यार्थियों में यह चर्चा है कि शान्तिमय उपायों के प्रयोग से तो हिन्दू-मुसलमान फसाद हुए हैं। इस कारण जो देश को स्वतंत्र कराना चाहते हैं, उन्हें हिंसात्मक उपायों का अवलम्बन करना चाहिये।"

मास्टर जी का स्वभाव था कि वे प्रत्येक समस्या का सिद्धान्तात्मक विश्लेषण उपस्थित कर देते थे। उन्होंने विद्यार्थी के ज्ञान-वर्धन के लिये कह दिया, "यदि किसी एक शासक के हाथ में राज्य हो तो हिंसात्मक उपाय सर्वथा सफल होते हैं। वहाँ समझाने-बुझाने से कार्य नहीं चलता।

"परन्तु जब शासक पूर्ण जाति हो तो केवल हिंसात्मक उपायों से कार्य सफल नहीं हो सकता।"

"आजकल कौन शासन करता है ? एक व्यक्ति अथवा जाति ?" विद्यार्थी का प्रश्न था।

"तो तुम नहीं जानते ? तुम इस समय इस स्कूल की नवीं श्रेणी में पढ़ते हो और 'सिविक्स' के विद्यार्थी हो।"

"मास्टर जी ! मैं तो जानता हूँ, परन्तु जातियों में भी तो प्रधानमन्त्री ही राज्य करता है। मन्त्री-मण्डल का निर्माता भी प्रधानमन्त्री ही है।"

"परन्तु एक राजा-महाराजा की भाँति उसकी हत्या कर देने से राज्य बदल नहीं सकता। तुरन्त एक नया प्रधानमन्त्री बनाया जा सकता है।"

"जी; यह मैं जानता हूँ। साथ ही यह भी जानता हूँ कि यदि किसी के प्रधानमन्त्री होने के कारण उसकी हत्या की जाये तो उसके स्थान पर नियुक्त हुआ नया प्रधानमन्त्री अपनी नीति बदल देगा और यदि दो-तीन ऐसी हत्याएँ हो जाएँ तो राज्य बदल सकता है।"

"इस पर भी राज्य नहीं बदलेगा। पूर्ण शासक जाति हत्याओं का बदला और हत्याओं से लेगी।"

"तब युद्ध हो जायेगा।"

मुख्याध्यापक प्रसन्न थे कि लड़का बुद्धि रखता है और ठीक प्रकार से युक्ति करता है। परन्तु वे समझते थे कि विद्यार्थी की युक्ति और योजना में दोष है। इस कारण उन्होंने कहा, "देखो बालक ! तुम ठीक समझते हो। एक-आध हत्या से राज्य नहीं बदलेगा और यदि कई हत्याएँ की गयीं तो युद्ध होगा। युद्ध से भी राज्य तब बदलेगा, जब युद्ध के लिये शासित जाति तैयार हो। अन्यथा हत्याएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यर्थ जायेंगी ।"

इस पर विद्यार्थी परेशानी अनुभव करता हुआ मास्टर जी का मुख देखता रह गया। मास्टर जी विद्यार्थी के मुख पर निराशा के लक्षण देख, उसे उत्साहित करने के लिये पूछने लगे, "अब चुप क्यों कर गये हो ?"

"मास्टर जी ! एक-आध क्रान्तिक़ारी उत्पन्न तो किया जा सकता है, जो गवर्नर तथा वाइसराय पर बम्ब फेंक दे, परन्तु जाति को युद्ध के लिये तैयार करना अति कठिन है।"

"यह कठिन नहीं है। हमारे हिन्दुस्तान की अवस्था में तो और भी सुगम है। एक समय गैरिबाल्डी ने पाँच सौ सैनिकों के आश्रय पूर्ण देश को स्वतन्त्र करा लिया था। यहाँ तो उससे भी सुगम है।"

विद्यार्थी ने उत्सुकता से पूछ लिया, "कैसे ?"

"जनता में यह भावना उत्पन्न करने से कि हम हिंसात्मक उपाय भी सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकते हैं। उनका प्रयोग करना महापुण्य का कार्य है। जब जनता का एक विशाल अंग ऐसा समझने लगेगा तो हिंसात्मक उपायों के प्रयोग करने वाले शौर्यवान, पुण्यात्मा और नेता माने जायेंगे। तब दो-चार सौ बन्दूकें भी देश को स्वतन्त्र करने में सफल हो जायेंगी। शर्त यह है कि देश की स्वतन्त्रता में हिंसात्मक उपायों के प्रयोगं करने वाले देश-भक्तों की मान-प्रतिष्ठा बढ़ा दो।

"नागरिकों और सेना में भी उनकी प्रतिष्ठा बढ़ा देने से हिंसात्मक उपाय जातियों के राज्यों को भी उलट सकते हैं।"

"यह कैसे होगा ?"

"जो हिंसात्मक उपायों को पाप कहता है, उसके स्थान पर हिंसात्मक उपायों को श्रेष्ठ मानने वाले को नेता स्थापित करने से।

"इसके लिये क्रान्तिकारियों को अपने चारों ओर अपने पक्ष में जनमत को एकत्रित कर लेना चाहिये।"

इस विचार से विद्यार्थी के मुख पर प्रसन्नता तथा आशा की रेखाएँ विराजमान हो गयीं। उसने प्रफुल्लित हो हाथ जोड़ नमस्ते कही और उधर को ही चल दिया, जिधर से आया था।

इस विद्यार्थी का नाम था पृथिवीराज। मास्टर जी उसे जाते हुए देख विचार करते रहे कि वह क्यों आया था ? जब वे कुछ नहीं समझ सके तो अपने विचार में मग्न हो गये और कुछ दिन में पृथिवीराज की बात भूल गये। पृथिवीराज मास्टर साहब को प्रायः नित्य मिलता था, परन्तु पुनः दोनों में हिंसा-अहिंसा के विषय पर बातचीत नहीं हुई।

परन्तु इस वार्त्तालाप का परिणाम निकला। उक्त वार्त्तालाप के कई मास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरान्त नैशनल कालेज के दो विद्यार्थी मास्टर जी से मिले। मास्टर जी स्कूल का काम समाप्त कर घर को जा रहे थे और अभी वे स्कूल से निकल कुछ ही दूर गये थे कि दोनों विद्यार्थी मास्टर जी को नमस्ते कह, उनके साथ-साथ चलने लगे। मास्टर जी ने पूछ लिया, "सुखदेव जी! किधर चल रहे हैं?"

उत्तर दूसरे लड़के ने दिया। उसका नाम भगतसिंह था। वह पंजाब के एक कर्मठ कांग्रेसी कार्यकर्त्ता का लड़का था और एक विख्यात जलावतन क्रान्तिकारी का भतीजा था। उसने कहा, "जिधर आप जा रहे हैं।"

"मैं तो अपने घर जा रहा हूँ। वहाँ कुछ खा-पीकर परीमहल में 'आर्य स्वराज्य सभा' के कार्यालय में जाऊँगा।"

दोनों विद्यार्थी हँसने लगे और बोले, "हम भी उधर ही जा रहे हैं।"

"तो चलो।"

मतलब की बात सुखदेव ने कही। उसने कहा, "हमें पता चला है कि आप समझते हैं कि देश का कल्याण गांधी जी के स्थान पर किसी हिंसा के उपासक को नेता बनाने से हो सकता है।"

मास्टर जी को पृथिवीराज से हुई बात स्मरण हो आई। इस कारण उन्होंने कहा, "यह इस प्रकार नहीं। मैं हिंसात्मक उपायों को देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में वर्जित नहीं मानता, परन्तु उन उपायों को सफल करने के लिये भी जनता को इन उपायों के पक्ष में तैयार करना पड़ेगा।

"देखो भगतसिंह! आज राज्य किसी राजा अथवा राज-परिवार का नहीं है, जो उस एक राजा की हत्या कर देने से अथवा राजा के परिवार को आतंकित कर देने से तुम राज्य बदल सकोगे। वर्त्तमान काल में हिन्दुस्तान पर एक जाति राज्य करती है। पूर्ण जाति की हत्या नहीं की जा सकती। न ही एक-दो घटनाओं से पूर्ण जाति आतंकित हो सकती है। हाँ, एक जाति दूसरी जाति को आतंकित कर सकती है। इसके लिये पूर्ण जाति को हिंसा के पक्ष में तैयार करना होगा। जब यह हो जायेगा तो फिर कुछ सौ जंगबाज़ स्वराज्य स्थापित कर सकते हैं।"

"इसके लिये आप क्या सुझाव देते हैं?"

"मेरा सुझाव यह है कि हिंसात्मक कार्य कुछ थोड़े से मनचले युवक ही कर सकते हैं, परन्तु उनके कार्य के अनुकूल सारी जनता को बनाना अत्यावश्यक है।

"किसी काल में यह कार्य बिपिनचन्द्र पाल, बाल गंगाधर तिलक, लाजपतराय इत्यादि नेता कर रहे थे और मेरा विचार है कि इन नेताओं के कारण ही क्रान्तिकारियों को भारी सफलता मिली थी। सन् १९०९ के सुधार और प्रान्तीय 'डायार्की'[1] क्रान्तिकारियों के प्रयास का ही फल है। उन

---

१. द्वितंत्रीय शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रान्तिकारियों का प्रयास सफल इस कारण हुआ था कि जनता में उनके लिये सहानुभूति ये नेता लोग निर्माण करते थे।"

तीनों चलते-चलते बात कर रहे थे। सुखदेव ने पूछा, "यदि हम कोई ऐसी सार्वजनिक सभा बनायें तो कैसा रहे ?"

"कैसी सार्वजनिक सभा ?"

"जो गांधी जी के मिथ्यावाद का खण्डन करे और देश को श्रेष्ठ राजनीतिक दिशा दे सके।"

"यह कार्य बहुत ही शुभ होगा।"

"तो आप इस सभा के प्रधान बन सकेंगे ?"

"प्रधान तो पीछे बनते हैं। पहले सभा बनायी जाती है।"

"हम सभा बनाने का विचार कर रहे हैं।"

"मेरी शुभकामना आपके साथ है।"

"तो हम उसकी प्रथम सभा में आपको आमन्त्रित करेंगे।"

"मैं समय निकाल कर अवश्य आऊँगा।"

इसके कुछ दिन उपरान्त सुखदेव मास्टर जी से स्कूल में मिला और 'परीमहल' में खद्दर भण्डार के ऊपर एक कमरे में रविवार के दिन प्रातः दस बजे पहुँचने का निमन्त्रण देने लगा।

मास्टर जी ने सुखदेव से पूछा, "क्या है वहाँ ?"

"कुछ वैसी ही बात है, जैसी हमने आपसे उस दिन आपके घर जाते हुए की थी।"

मास्टर जी समझ गये कि नयी संस्था के विषय में है। अतः निश्चित दिन और समय पर मास्टर जी वहाँ जा पहुँचे। दस-ग्यारह युवक बैठे थे। उनमें एक बड़ी आयु का व्यक्ति भी था। सबका परस्पर परिचय कराया गया। परिचय कराने वाले नैशनल स्कूल के ही एक मास्टर थे।

सबसे पहले बड़ी आयु के व्यक्ति का परिचय कराया गया। कहा गया, "यह हैं श्री आनन्दकुमार, नैनीताल के समीप भुवाली में रहते हैं और आजकल प्राचीन शास्त्रों पर शोध-कार्य कर रहे हैं।

"यह अमरीका में सन् १९१२ से १९२० तक रहे हैं और वहाँ के हिन्दुस्तानी क्रान्तिकारियों से इनका सहयोग रहा है। अमरीका जाने से पूर्व ये एक बम्ब फैक्टरी चलाने के अपराध में पकड़े गये थे। अपराध सिद्ध नहीं हो सका था। इस पर भी पाँच वर्ष का दण्ड इनको दिया गया था।"

इस परिचय पर सब उपस्थित युवकों की दृष्टि में आनन्दकुमार का आदर बढ़ गया। आनन्दकुमार के उपरान्त एक अन्य उपस्थित व्यक्ति का परिचय कराया गया। यह थ श्री एम० ए० मजीद। इनके विषय में परिचय कराने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा, "ये साहब लाहौर के ही रहने वाले हैं। लाहौर से हिजरत कर अफगानिस्तान जा पहुँचे थे। वहाँ की सरकार ने इनको चौबीस घण्टे में अफगानिस्तान से निकल जाने की आज्ञा दी तो ये हिन्दुस्तान वापस आने के स्थान, रूस की ओर भाग निकले। परन्तु ज्यों ही ये रूस की सीमा में पहुँचे कि पकड़ लिये गये और मास्को भेज दिये गये। वहाँ इन्होंने सोशलॉजी की दो वर्ष तक पढ़ाई की है और वहाँ से ये हिन्दुस्तान लौट आये हैं।"

सुखदेव ने बताया कि आज की यह सभा इनकी यात्रा का वृत्तान्त सुनने के लिये ही बुलायी गयी है।

इसके उपरान्त मजीद ने अपने रूस पहुँचने की कथा के साथ-साथ वहाँ दो वर्ष की पढ़ाई का भी संक्षिप्त वर्णन कर दिया।

यह पढ़ाई कम्युनिज़्म के विषय में थी। इसे वह वैज्ञानिक समाजवाद कहता था। समाजवाद के संक्षिप्त विवरण में रूस में एक पार्टी के राज्य का वर्णन कर दिया।

डेढ़ घण्टा के व्याख्यान के उपरान्त प्रश्नोत्तर होने लगे। सबसे अधिक प्रश्न आनन्दकुमार ने किये। उसने पूछा, "आपने बताया है कि गाँवों में, नगर में तथा मोहल्लों में 'सोवियत' स्थापित की गयी हैं। उसमें विश्वस्त और शिक्षित व्यक्तियों को ही लिया जाता है। शिक्षित से आपका क्या अभिप्राय है?"

मजीद साहब का उत्तर था, "समाजवाद का प्रशिक्षण।"

"यह प्रशिक्षण कौन देता है?"

"प्रायः सोवियत का मन्त्री ही देता है और कभी-कभी नगरों और राजधानी से नेतागण भी गाँवों में घूम-घूम कर इस प्रशिक्षण में योगदान देते हैं।"

"और कैसे पता चलता है कि कोई इतना शिक्षित हो गया है कि उसे सोवियत का सदस्य बनाया जाये?"

"मन्त्री ही इस बात का निश्चय करता है। जो शिक्षित हो गये समझे जाते हैं, उनको सोवियत का सदस्य बना लिया जाता है और तब वे सदस्य ही सरकार बनाने में सहायता देते हैं।"

"सोवियत का मन्त्री कौन नियुक्त करता है?"

"ज़िले का मन्त्री।"

"और ज़िला के मन्त्री की नियुक्ति कौन करता है?"

"राज्य का मन्त्री।"

"और राज्य के मन्त्री की नियुक्ति कैसे होती है?"

"देश का चीफ सैक्रेटरी उसे नियुक्त करता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और उसकी नियुक्ति कैसे होती है ?"

"तीन अथवा चार वर्ष के उपरान्त सुप्रीम कौंसिल ऑफ दि सोवियत होती है और उसमें नियुक्ति होती है।"

"यह सुप्रीम कौंसिल कैसे संगठित होती है ?"

"देश-भर की सोवियतों के प्रतिनिधि मास्को में एकत्रित होते हैं और वे चीफ सैक्रेटरी का चुनाव करते हैं। चीफ सैक्रेटरी प्रैज़िडियम का संगठन करता है और वह देश का राज्य करती है।"

"देश-भर की सोवियतों के कितने सदस्य हैं ?"

"सन् १९२१ में सुप्रीम कौंसिल की बैठक हुई थी और उसकी रिपोर्ट के अनुसार 'सोवियतों' की सदस्य संख्या तीस लाख के लगभग है।"

आनन्दकुमार ने कहा, "जहाँ तक मुझे स्मरण है, पूर्ण रूस की जनसंख्या अठारह करोड़ के लगभग है। इसका अर्थ है कि वहाँ पर चीफ सैक्रेटरी को चुनने का अधिकार केवल दो प्रतिशत लोगों को है। ये दो प्रतिशत भी मन्त्रियों से नियुक्त होते हैं। इससे अधिक मतदाता तो भारत में हैं और यहाँ एक विशेषता यह है कि यहाँ वोटर स्वतन्त्र होते हैं। वे मन्त्रियों से नियुक्त नहीं होते।"

"हाँ, यह तो है।" मजीद का कहना था, "परन्तु इसमें लाभ यह है कि देश में एक स्थायी राज्य बन सकता है।"

"ठीक है। वह तो इन कौंसिलों के और केन्द्रीय असैम्बली के बनने से पहले अंग्रेज़ी राज्य भी था।"

"परन्तु वह विदेशीय राज्य था।"

"हाँ, यह एक बात है। परन्तु वहाँ तो, सुना है कि जो सरकार का ढाँचा बदलना चाहे, उसे मौत का दण्ड दिया जाता है।"

"यह बात वहाँ देश-द्रोह समझी जाती है।"

"मैं ऐसा राज्य यहाँ नहीं चाहता।"

"परन्तु वहाँ कोई बेकार नहीं है। सबको काम और वेतन मिलता है।"

"यह तो जेलखानों में भी होता है। सब कैदियों को काम करना पड़ता है और सबको खाना-कपड़ा मिलता है। रहने को स्थान भी मिल जाता है।"

मजीद समझ गया कि इस व्यक्ति को समझाया नहीं जा सकता। यह समझने की आयु से ऊपर हो चुका है। उसने कह दिया, "यहाँ भी एक प्रचार-सभा बनाने की तजवीज़ है।"

आनन्द ने इस विषय में कुछ नहीं कहा। अन्य सब उपस्थित युवकों ने प्रस्ताव का समर्थन किया और सभा का नाम तथा उसका संविधान बनाने के लिये एक छोटी समिति बना दी गयी और नैशनल स्कूल के मुख्याध्यापक को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका अस्थायी रूप में प्रधान बना दिया गया।

कई दिन के विचार के उपरान्त सभा का नाम, काम और नियमावली बना दी गयी। सभा का नाम था—नौजवान भारत सभा। मास्टर जी ही इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये।

: ४ :

कांग्रेस के सन् १९२१-२२ के आन्दोलन के असफल होने का एक अन्य परिणाम हुआ। देश में हिन्दू-मुसलमान फसाद व्यापक रूप में होने लगे और उन फसादों के विषय में कांग्रेस का विचार ऐसा था कि हिन्दू इन फसादों का कारण है। ऐसा समझा जाता था कि मुसलमानों के मज़हबी अधिकारों में हिन्दू बाधा डालते हैं।

कोहाट, सहारनपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, पटना, कलकत्ता, गुलबर्गा, बम्बई और अहमदाबाद में बलवे हुए। पूर्ण देश में एक तनाव की अवस्था हो गयी थी। मुसलमान मस्जिदों के सामने बाजा बजाते हुए अथवा कीर्तन करते हुए जलूसों में बाधा डालते थे। हिन्दू समझते थे कि यह उनका मज़हबी हक है कि शरा-ए-आम पर जलूस निकालें।

फसादों का दूसरा कारण होता था कुर्बानी की गाय का जलूस। इस पर हिन्दू आपत्ति करते थे। जहाँ-जहाँ कांग्रेस का प्रचार ज़ोर का था, वहाँ गाय का जलूस निकालने की स्वीकृति मिल जाती थी और फिर वहाँ फसाद होता था, खून होते थे, अग्नि-काण्ड होते थे और स्त्रियों पर बलात्कार तथा उनका अपहरण होता था। प्रायः बलवों के आरम्भ करने वाले मुसलमान होते थे और हानि उठाने वाले हिन्दू।

बलवे के उपरान्त शान्ति-सभाएँ स्थापित की जाती थीं और उनमें कांग्रेस के नेता चौधरी बन जाते थे और वे हिन्दुओं को डाँट-डपट कर सुलह तथा शान्ति कराने का यत्न किया करते थे।

इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं ने हिन्दू महासभा की स्थापना कर दी और कांग्रेस ने इसका विरोध इस प्रकार किया कि हिन्दू महासभा के सदस्य कांग्रेस के पदाधिकारी नहीं हो सकते।

देश में क्रान्तिकारियों ने सिर उठाया और धन के लिये एक-दो स्थान पर डाके डाले गये तथा बम्ब बनाये गये और पिस्तौल खरीदे गये।

नौजवान भारत सभा का कार्य पंजाब में फैल रहा था और जब दो-तीन क्रान्तिकारियों के ऐक्शन हुए तो नौजवान भारत सभा अनियमित सभा घोषित कर दी गयी।

राज्य में सुधार के विषय में जाँच-पड़ताल करने के लिये मिस्टर साइमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अधीन एक कमीशन नियुक्त की गयी, परन्तु क्योंकि उसमें कोई हिन्दुस्तानी नहीं था, इस कारण कांग्रेस ने इसका बहिष्कार किया।

जहाँ-जहाँ साइमन कमीशन गयी, इसका बहिष्कार किया गया। बड़े-बड़े जुलूस निकाल कर कमीशन को काले झण्डे दिखा कर और 'साइमन गो-बैक' के नारे लगा कर कमीशन का विरोध किया गया।

इस पर भी साइमन कमीशन ने देश का दौरा किया। लखनऊ में कमीशन के विरोध में प्रदर्शन करते हुए। जवाहरलाल नेहरू को भी एक लाठी का प्रहार सहन करना पड़ा और लाहौर में तो लाठी के प्रहार से लाला लाजपतराय का देहान्त हो गया।

कमीशन को मुसलमानों ने सहयोग दिया। हिन्दू कांग्रेस के पीछे लगकर कमीशन का बहिष्कार करते रहे।

इस कमीशन की रिपोर्ट के उपरान्त वाइसराय ने राउण्ड टेबल कान्फरेंस में कांग्रेसियों को भी आमन्त्रित किया। परन्तु कांग्रेसियों ने इसमें जाने से इन्कार कर दिया और सरकार के विरोध में नमक-सत्याग्रह आरम्भ कर दिया।

इस समय तक विजय की पुस्तकों की दुकान और प्रकाशन संस्था चल पड़ी थी और भारी लाभ देने लगी थी। सोम अभी भी केन्द्रीय असैम्बली का सदस्य था। इतना अन्तर आ गया था कि वह पण्डित मालवीय और लाला लाजपतराय की पार्टी के टिकट पर सफल हुआ था। उसने कांग्रेस छोड़ दी थी।

सोम की इस मानसिक अवस्था के उत्पन्न होने में कांग्रेस ही कारण थी। सन् १६२३ में जब वह स्वराज्य कांग्रेस दल के टिकट पर सफल हुआ था तो उसने देखा था कि उसके विचार श्री जयकर के विचारों से मेल खाते हैं। पार्टी की मीटिंगों में जब भी किसी विवादास्पद विषय पर बात होती तो वह अपने को श्री जयकर का समर्थन करता हुआ पाता था। स्वराज्य-पार्टी के नेता पण्डित मोतीलाल और जयकर में बनती नहीं थी। इस कारण सोम को समझ आ रहा था कि दल का नेता उससे भी प्रसन्न नहीं। अतः दिन-प्रतिदिन वह अपने को जयकर की ओर आकर्षित हो रहा अनुभव कर रहा था।

जब नैशनल दल की स्थापना हुई तो जयकर और सोमदेव इस दल में सम्मिलित हो गये। महाराष्ट्र और बम्बई के कई अन्य सदस्य भी इस दल में सम्मिलित हो गये।

सन् १६२६ के लाहौर-कांग्रेस अधिवेशन के समय सोम लाहौर गया तो फिरोज़पुर रोड पर अपनी कोठी में ठहर गया। उस समय लगभग पूर्ण परिवार लाहौर में था। नलिनी, सुवर्णा, प्रज्ञा, मीनाक्षी, उसके दोनों लड़के, विजय, उसकी दोनों पत्नियाँ और विजय के लड़के सोम, चारु, कृष्ण, आनन्द, प्रभा तथा उसका लड़का वेद प्रकाश, सरस्वती और उसका लड़का तथा लड़की, सब थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवर्णा और नलिनी तो शीत-काल में पहले भी लाहौर आ जाया करते थे। इस वर्ष कांग्रेस के अधिवेशन के कारण कलकत्ता से कुमुदिनी और उसका पति सुशान्तकुमार सेन तथा कुमुद के पाँचों बच्चे भी आये हुए थे।

कांग्रेस के अधिवेशन में रुचि लेने वालों में सोम और आनन्द तो दर्शक के रूप में थे और सुशान्तकुमार कलकत्ता से डैलीगेट बन कर आया था। परिवार के अन्य सदस्य तो मेला देखने वाले थे। नलिनी, सुवर्णा, प्रज्ञा इत्यादि भुवाली की सर्दी से बचने के लिये लाहौर आये हुए थे। ये कांग्रेस पण्डाल की ओर मेला देखने भी नहीं गये।

प्रथम दिन का खुला-अधिवेशन देख कर सोम और आनन्द आये तो नलिनी ने पूछ लिया, "क्या देख आये हो ?"

उत्तर सोम ने दिया, "ए होपलैस अफेयर[1]।"

"क्या मतलब ?"

"बाबा ! आज अध्यक्षीय भाषण हुआ है। उसमें कुछ भी नवीन बात नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस फिर कोई अहिंसात्मक आन्दोलन चलाना चाहती है। यह स्पष्ट रूप में तो नहीं कहा गया, परन्तु इसका संकेत किया गया है। पण्डित जवाहरलाल जी ने कहा है कि हम अनन्त-काल तक स्वराज्य की प्रतीक्षा नहीं कर सकते।"

"यह तो बड़ी बात कही है। तुम कहते हो कि यह 'होपलैस' है।"

"इस बात को तो दादा भाई नारोजी सन् १६०६ में कह चुके हैं। उसे आज चौबीस वर्ष हो चुके हैं। मैं तो यह विचार कर रहा था कि युवक नेता आगे आया है और वह स्वराज्य-प्राप्ति की योजना बतायेगा।"

"सोम !" नलिनी ने कहा, "प्रधान अपने अध्यक्षीय भाषण में योजना बता दे तो फिर अधिवेशन करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। यह तो अधिवेशन के किसी प्रस्ताव में बताया जायेगा।"

अब आनन्द ने अपना मुख खोला। उसने कहा, "इस अधिवेशन का मुख्य प्रस्ताव कल आने वाला है। सुशान्त जी विषय-निर्धारिणी सभा में गये हैं और वहाँ आज गांधी जी का प्रस्ताव उपस्थित होना है। गांधी जी ने वाइसराय की ट्रेन के नीचे बम्ब फटने की घटना की निन्दा और बम्ब रखने वालों की भर्त्सना का प्रस्ताव रखा है।"

"और तुम इनसे क्या आशा करते हो ?" नलिनी का प्रश्न था।

आनन्द ने कहा, "विषय-निर्धारिणी में तो गांधी जी का प्रस्ताव पारित हो जायेगा, परन्तु कल खुले-अधिवेशन में इसका घोर विरोध किया जायेगा।"

---

१. एक निराशाजनक संगम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विरोध का स्वरूप क्या होगा ?"

"कवीश्वर शर्दूलसिंह और पंजाब के कुछ अन्य डैलीगेट कैम्पों में जा-जाकर प्रतिनिधियों को इस प्रस्ताव के विरुद्ध मत देने का प्रचार कर रहे हैं।"

इस पर सोम ने कह दिया, "बाबा ! चाचा जी ने भी इस काम में सहयोग दिया है।"

"क्या सहयोग दिया है तुमने ?" नलिनी ने आनन्द से पूछ लिया।

"मैं कवीश्वर जी से मिलने गया था। मेरा उनसे पहले का परिचय है। वहाँ सुभाषचन्द्र बोस बैठे परामर्श कर रहे थे। कवीश्वर ने मेरा उनसे परिचय कराया तो बोस बाबू को स्मरण हो आया। उन्होंने बताया, 'मेरे विषय में दास बाबू से चर्चा होती रहती है। कहाँ रहते हो तुम ?' उन्होंने पूछा। मैंने भुवाली का पता बताया तो पूछने लगे, 'वहाँ क्या करते हो ?'

"मैंने बताया, 'अपने पिता जी के लेखन-कार्य में सहायता दे रहा हूँ। वे भारत के सांस्कृतिक इतिहास पर एक बहुत बड़ा ग्रन्थ लिख रहे हैं। उनके दो खण्ड लिखे जाकर प्रकाशित हो चुके हैं और तीसरा खण्ड प्रैस में है।"

" 'और कितने खण्ड लिखने का विचार है ?'

" 'पिताजी का अनुमान है कि पाँच खण्ड में समाप्त होगा।'

" 'ओह ! परन्तु इससे लाभ क्या होगा ?' वे पूछने लगे।

"मैंने बताया, 'पिता जी का विचार है कि जैसे महाभारत ग्रन्थ बहुत-सी बातों का संग्रह है और प्राचीन भारत पर लिखने वाले, महाभारत को आधार मान कर अनेकानेक रचनाएँ करते हैं, वैसे ही भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप देखने के लिये लेखक एवं प्रचारक इस ग्रन्थ को आधार बनाया करेंगे।'

"इस पर बोस बाबू ने कांग्रेस के इस प्रस्ताव के विषय में पूछ लिया, जिसमें क्रान्तिकारी घटनाओं की निन्दा की गई थी। मैंने कहा, 'इस समय भारत के प्रायः युवक इस बम्ब की घटना से अति उल्लसित और उत्साहित हुए हैं। इस कारण इस निन्दा के प्रस्ताव का घोर विरोध होना चाहिये।'

" 'ठीक है। मैं विषय-निर्धारिणी में यही कहने जा रहा हूँ। परन्तु यह सरदार साहब कह रहे हैं कि प्रस्ताव में संशोधन उपस्थित करना चाहिये।'

"मैंने कहा, 'जी नहीं। इसका विरोध कर, प्रस्ताव को अस्वीकार कर देना चाहिये।'

" 'परन्तु विरोध बिना किसी विकल्प के करना सम्भव नहीं।'

" 'बोस बाबू ! इसके विकल्प में क्या प्रस्ताव हो सकता है ?'

" 'कवीश्वर साहब कह रहे हैं कि इस ट्रेन के नीचे बम्ब रखने वाले बहादुर व्यक्ति की प्रशंसा की जाये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी हँसी निकल गयी। मैंने कहा, 'बोस बाबू ! बात तो यही ठीक है। परन्तु मैं समझता हूँ कि इस प्रस्ताव का विरोध कर इसे पारित न होने दिया जा सके, तब भी बहुत है। यही कांग्रेस के मान के अनुरूप होगा।'

"मेरे इस कथन से प्रसन्न हो बोस बाबू उठ खड़े हुए। इस पर कवीश्वर जी भी उठे और दोनों पण्डाल को चल दिये। तदनन्तर मैं भी डैलीगेटों से मिलने उनके कमरे में चला गया। बातचीत करने से तो ऐसा प्रतीत होता है कि कल गांधी जी का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया जायेगा।"

इस समय सुशान्त कमरे में आ पहुँचा। वह प्रसन्न दिखायी देता था। आते ही सोम ने पूछ लिया, "दादा ! क्या कर आये हो ?"

"किस विषय में पूछ रहे हो ?"

"गांधी जी के प्रस्ताव के विषय में।"

"बोस बाबू ने प्रस्ताव का विरोध किया था। इस पर प्रधान ने कह दिया कि मैं समझता हूँ कि इस विषय पर दोनों पक्ष सामने आ गये हैं। अधिक व्याख्यानों की आवश्यकता नहीं। मेरा विचार है कि यह प्रस्ताव बहुत बड़े बहुमत से पारित हो गया समझा जा सकता है।

"किसी ने आपत्ति नहीं उठायी और प्रस्ताव पारित हुआ समझ लिया गया। कल खुले-अधिवेशन की प्रातः की बैठक में इस पर बहस होगी और मध्याह्नोत्तर इस पर आवश्यकता हुई तो मतदान होगा।"

इस पर सोम ने पूछ लिया, "इस प्रस्ताव पर मतदान नहीं हुआ ?"

"मैं समझता हूँ कि खुले अधिवेशन में भी यह बिना मतदान कराये पारित हो जायेगा।"

आनन्द तो मुस्करा रहा था, परन्तु सोम निराश हो रहा था। नलिनी ने पूछ लिया, "अब बताओ, क्या कहते हो ?"

सोम से यह पूछा गया था, परन्तु वह उठकर अपने कमरे में चला गया। आनन्द ने कहा, "सब प्रतिनिधि यह आशा कर रहे थे कि इस प्रस्ताव का विषय-निर्धारिणी समिति में जवाहरलाल विरोध करेंगे।"

सुशान्तकुमार ने कहा, "मैं समझता हूँ कि वे प्रस्ताव के पक्ष में हैं।"

"देखो, कल क्या होता है।" आनन्द ने अभी भी आशा करते हुए कहा।

इस पर नलिनी ने पूछ लिया, "आनन्द ! किस बात की आशा कर रहे हो ?"

"मैं समझता हूँ कि जवाहरलाल को अपने प्रधान के अधिकार से प्रस्ताव को उपस्थित ही नहीं करने देना चाहिये था।"

सुशान्त ने कहा, "और मैं समझता हूँ कि इस प्रस्ताव के पक्ष में जवाहरलाल कल बोलेंगे और यह प्रस्ताव पारित होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आनन्द ! जवाहरलाल जी के विषय में तुम कुछ मिथ्या अनुमान लगा रहे हो।" नलिनी ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं समझता हूँ कि वह अभी युवा है। कलकत्ता के अधिवेशन में उसने अपने पिता का विरोध करने में साहस और विचार की उग्रता प्रकट की थी।"

"परन्तु उसमें और वर्त्तमान प्रस्ताव में अन्तर है। वह वाक्-युद्ध था और यह कर्म-युद्ध है। वाक्-युद्ध में तो बड़ी-बड़ी बातें कही जा सकती हैं, परन्तु कर्म-युद्ध में कुछ करना पड़ता है और उसके परिणामों को भोगना पड़ता है।"

"परन्तु पिता जी !" आनन्द ने कहा, "यदि जीजा जी की बात सत्य निकली तो देश-भर के युवा वर्ग को भारी निराशा होगी। युवक लोग पण्डित जी से बहुत आशा लगा रहे हैं।"

"युवक नील गाय से दूध की आशा करने लगे हैं। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह कश्मीरी युवक नीम मुसलमान और नीम अंग्रेज़ हैं। ऐशो-आराम में पला हुआ अपने जातीय गुणों से प्रेरित हिंसावादियों का पक्ष कभी भी नहीं लेगा। इसमें क्षत्रिय-स्वभाव नहीं है !"

: ५ :

अभी नलिनी इत्यादि लाहौर में ही थे कि गांधी जी ने वाइसराय को पत्र लिख दिया कि यदि सरकार ने उनकी तेरह माँगों को स्वीकार नहीं किया तो वे सत्याग्रह करने का विचार रखते हैं।

वाइसराय लॉर्ड इरविन ने गांधी के पत्र की अवहेलना की तो गांधी जी ने सत्याग्रह के लिये कूच कर दिया। सत्याग्रह के लिये साबरमती से ३८५ किलो-मीटर की दूरी पर दण्डी नाम का स्थान निश्चय किया गया और यह पूर्ण मार्ग गांधी जी पैदल चल कर गये। मार्च की १२ तारीख को यह यात्रा आरम्भ की गयी और पाँच अप्रैल को वे दण्डी पहुँचे। पच्चीस दिन की यात्रा के दिनों में देश-भर में इस सत्याग्रह की धूम रही।

नमक-सत्याग्रह की यात्रा आरम्भ से पूर्व ही असैम्बली की नैशनलिस्ट पार्टी ने कांग्रेस की देखादेखी असैम्बली की सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया। पार्टी-मीटिंग में त्याग-पत्र देने का निश्चय कर और त्याग-पत्र पर हस्ताक्षर कर सोम बाबा की कोठी में आया तो सीधा बाबा के कमरे में जाकर बोला, "बाबा ! हम भी सत्याग्रह में सम्मिलित हो गये हैं।"

"क्या मतलब ?" नलिनी ने सिर उठाकर पूछा।

"हमारे दल ने यह निश्चय किया है कि हम सब असैम्बली की सदस्यता से त्याग-पत्र दे दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! फिर ?"

"मैं भी त्याग-पत्र पर हस्ताक्षर कर पार्टी के सैक्रेटरी को दे आया हूँ।"

"पर यह क्यों ?"

"यह तो मैं भी नहीं समझा। परन्तु सब सदस्य यह कह रहे थे कि यदि हमने त्याग-पत्र न दिया तो दल इतना बदनाम हो जायेगा कि पुनः निर्वाचनों में सफल नहीं हो सकेगा।"

"असफल तो यह अभी ही हो गया है। बात यह है कि तुम्हारे दल के लोग भी भूल गये हैं कि उन्होंने यह दल किसलिये बनाया था ?"

"किसलिये बनाया था ?" सोम ने गम्भीर हो पूछ लिया।

"मैं क्या जानूँ ? तुम बताओ कि तुम कांग्रेस में थे। तुमने कांग्रेस छोड़, नैशनलिस्ट दल क्यों बनाया था ?"

"कांग्रेस की सदा सरकार का विरोध करने की नीति मुझे पसन्द नहीं थी और इसकी अपने सिद्धान्तों के विपरीत भी मुसलमानों को प्रसन्न करने की नीति देश-घातक प्रतीत हुई थी।"

"तो यह नमक-सत्याग्रह देश के हित में प्रतीत हो रहा है ?"

"यह तो सांकेतिक मात्र है। वास्तव में जाति को स्वराज्य के लिये तैयार करना ही उद्देश्य है।"

"क्या कानून भंग का स्वभाव डालने से देश में जनता स्वराज्य-प्राप्ति के लिये तैयार की जा रही है ? सोम, स्वराज्य-प्राप्ति के लिये सहस्रों एवं लाखों की संख्या में लोगों को कवायद करायी जाये तो अधिक हितकर होगा। कानून अथवा नेताओं का आदेश पालन का स्वभाव स्वराज्य की प्राप्ति और भोग में अधिक सहायक होगा। कानून भंग करने का स्वभाव तो घातक सिद्ध होगा।

"साथ ही कानून भंग किया जा रहा है नमक-कर देने का। मेरी बात लिख लो। यह सत्याग्रह तो नमक-कर की छूट भी नहीं दिला सकेगा। स्वराज्य तो बहुत दूर की बात है।"

"हमारे दल के लोग कह रहे थे कि स्वराज्य न सही, परन्तु कुछ तो रियायतें सरकार को देनी ही पड़ेंगी।"

"हाँ; यह बात मैं मानता हूँ कि इतने हो-हल्ला को शान्त करने के लिये कुछ तो करना पड़ेगा। परन्तु जानते हो, क्या होगा ? सरकार एक हाथ से एक छटाँक-भर देगी और दूसरे हाथ से सेर-भर छीन लेगी।

"इसमें युक्ति यह है कि बिना वास्तविक शक्ति संचय किये इस प्रकार का सत्याग्रह एक निस्सहाय बालक के रोने के समान कार्य है। इस रोने को चुप कराने के लिये एक सौतेली माँ यदि रोने वाले बालक को एक लड्डू देगी तो अपने प्रिय पुत्रों को पाँच-पाँच दे देगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम इस अलंकार को समझा नहीं। उसने पूछ लिया, "बाबा ! सौतेली माँ से क्या मतलब है और उसके अपने बच्चों और सौतन के बच्चों से क्या अभिप्राय है ?"

"तुम भी बुद्धू हो। इतनी मोटी बात भी नहीं समझे। बच्चे के रोने-धोने से अपनी माँ का हृदय तो द्रवित हो जाता है, परन्तु अंग्रेज़ी सरकार अपनी माँ नहीं है। यह सौतेली माँ की भाँति परायी है। इसके अपने बच्चे हैं ऐंग्लो-इण्डियन, मुसलमान और फिर राजे-महाराजे तथा अछूत, जाट, अहीर इत्यादि जातियाँ। ये जातियाँ ब्रिटिश सरकार की युद्ध के समय और अन्य समय भी सहायता करती रही हैं।

"अतः परिणाम यह होगा कि यदि हिन्दुओं को यह एक अधिकार देगी तो पाँच इन अपने सहायकों को देगी। पहले भी ऐसा हुआ है। सन् १६०६ में मुसलमानों को पृथक् मतदाता-सूची और हिन्दुओं पर अधिमान का स्थान दे चुकी है। अब यह नये कानून में मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य अनेकों जातियों, उप-जातियों को विशेषाधिकार दे देगी।"

"तो क्या किया जाये ?" सोम युक्ति से निरुत्तर हो पूछने लगा। नलिनी ने कहा, "दो ही मार्ग हैं। या तो अपने में इतनी शक्ति उत्पन्न कर ली जाये कि सौतेली माँ अगर हमारे उचित अधिकार न दे तो उसे धक्के दे-देकर घर से बाहर निकाल सकें और यदि उतनी शक्ति निर्माण नहीं कर सकते तो माँ को यह विश्वास दिलाया जाये कि हम सौतेली माँ के सगे पुत्रों से भी अधिक उसके हितचिन्तक हो सकते हैं।

"यह बात सौतेले भाईयों को प्रसन्न करने से नहीं, वरन् सौतेली माँ को अपनी नेक नीयत का विश्वास दिलाने से हो सकती है। सौतेली माँ को तो विश्वास दिलाना ही है।

"यदि विश्वास हो नहीं रहा तो यह इस कारण है कि हम नीति में अपने सौतेले भाईयों से अधिक मूर्ख हैं। उन्होंने अपना मान-अपमान घोल कर पी डाला है, परन्तु हमें अंग्रेज़ को यह समझाने का यत्न करना चाहिये कि हिन्दू को अपने साथ रखने से भूतल पर उसके हितों की रक्षा हो सकेगी।"

"यही समझ में नहीं आ रहा।" सोम का कहना था।

"यह इसलिये कि समझने का यत्न नहीं किया जा रहा। होना यह चाहिये कि कांग्रेस के योग्यतम वकीलों को राउण्ड टेबल कान्फरेंस में जाना चाहिये और वहाँ जाकर अपने सौतेले भाईयों को प्रसन्न करने के स्थान, सौतेली माँ को समझाना चाहिये कि हिन्दू का पक्ष लेने में उसका ही हित है।

"यदि मुसलमान जो अल्प-संख्या में हैं, ब्रिटिश सरकार को मूर्ख बना रहे हैं तो हम, जिनका मुकद्दमा सत्य है, क्यों नहीं समझा सकेंगे ? परन्तु समझाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये युक्ति के साथ सत्यानाश करने की शक्ति का भी विश्वास कराना आवश्यक होता है।

"यदि लाहौर-कांग्रेस में हिंसा का विरोधी प्रस्ताव पारित न होता तो यह इस बात का सूचक होता कि कांग्रेस भी हिंसा का पथ स्वीकार कर सकती है। साथ ही जितनी लोकप्रियता कांग्रेस की है, उसके साथ-साथ यह भय कि कांग्रेस भी हिंसात्मक उपायों को अपना सकती है, इस आधार पर राउण्ड टेबल कान्फरेंस में जाते। सफल हो जाते। साथ ही जो लंगड़े, लूले, अपने प्रिय-पुत्र ब्रिटिश सरकार ने अपने चारों ओर एकत्रित कर रखे हैं, वे सरकार को छोड़ने लग जाते।"

"बाबा! यह कल्पना मात्र है। यह व्यवहारिक राजनीति नहीं कही जा सकती।"

"तुम ठीक हो सकते हो। परन्तु मैं तुम्हें अपना अनुमान बताता हूँ। यह नमक-सत्याग्रह असफल होगा। इसके उपरान्त गांधी जी विवश हो, राउण्ड टेबल कान्फरेंस में जायेंगे। परन्तु तब हारे हुए वहाँ जाकर ब्रिटिश सरकार पर वे दबाव नहीं डाल सकेंगे, जो यहाँ के आन्दोलन में सफल होकर जाने वाले डाल सकते हैं।

"और तब अपनी आवाज़ को दुर्बल पा, गांधी जी पुनः अपने सौतेले भाईयों की खुशामद करेंगे। इसमें भी वे सफल नहीं हो सकेंगे। वे सौतेले भाई दूध पीने वाले मजनूँ हैं। वे अपना दूध छोड़ नहीं सकेंगे।

"एक बात यह भी है कि तुम और तुम्हारे जैसे लोग जो भारतीय परम्पराओं से अनभिज्ञ हैं, वे मेरी युक्तियों और भविष्यवाणी को समझ नहीं सकेंगे।"

"बाबा! वास्तव में बात यह है कि कांग्रेस में जिन्ना जैसी योग्यता का कोई वकील दिखायी नहीं देता, जो जाकर देश की वकालत कर सके।"

"मैं समझता हूँ कि वकील तो हैं। जिन्ना से अधिक योग्य भी हैं, परन्तु इस समय कांग्रेस पर जनमत के बल से नेतृत्व उनके हाथ में जा चुका है, जो थर्ड क्लास वकील हैं और वे प्रथम दर्जा के वकीलों को आगे आने नहीं देते।"

"कौन हैं जिन्हें आप गांधी जी से अधिक योग्य समझते हैं?"

"गांधी से योग्य तो बहुत हैं। उदाहरण के रूप में डाक्टर सप्रू हैं, पण्डित मोतीलाल हैं, मेहता जमुनादास हैं, सरदार वल्लभ भाई पटेल हैं, सरदार विट्ठल भाई हैं, राजगोपालाचार्य हैं।

"परन्तु सोम!" नलिनी ने अपना कहना जारी रखा, "गांधी और जवाहरलाल अपनी लोकप्रियता को वकालत में योग्यता समझ रहे हैं और योग्य व्यक्तियों को आगे आने नहीं देना चाहते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि यदि योग्य राष्ट्रवादी वकीलों का एक आयोग राउण्ड टेबल कान्फरेंस में जाता और यहाँ लोकप्रिय नेताओं से किंचिन्मात्र प्रोत्साहन क्रान्तिकारियों को मिल गया होता तो बात एक-दो महीने में ही निश्चय हो जाती।"

बाबा-पोता में यह वार्त्तालाप समीप बैठा आनन्द भी सुन रहा था।

आनन्द को तो क्रान्तिकारियों के कार्यक्रम पर भी सन्तोष नहीं था। इस कारण उसने कहा, "पिता जी! आजकल के क्रान्तिकारी तो नीम कम्युनिस्ट और नीम मुसलमान हैं।"

"सत्य! कैसे जानते हो?" नलिनीकान्त ने पूछ लिया।

"मैं इनकी एक सभा में आमन्त्रित था। यह चार-पाँच वर्ष पूर्व की बात है। इनकी मीटिंग में मास्को में पका हुआ एक क्रान्तिकारी वैज्ञानिक-समाजवाद का प्रचार कर रहा था और इनकी एक सार्वजनिक सभा में हिन्दुओं के नेता भाई परमानन्द की हँसी उड़ायी गयी थी। यहाँ तक कि इन सभा वालों ने अपने प्रधान की निन्दा कर दी थी, क्योंकि वे भाई जी के प्रशंसक थे।"

"इसमें दोष उन युवकों का प्रतीत नहीं होता।" नलिनीकान्त ने निराशा का भाव दिखाते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि दोष हिन्दू विद्वानों का है। वे उन युवकों को हिन्दू के वास्तविक स्वरूप का दर्शन करा नहीं सके।

"भारत की वर्त्तमान स्थिति का मूल कारण हिन्दुओं में रूढ़िवादिता ही है। यदि स्वामी दयानन्द ने हिन्दुओं को कहा कि पुराणों को छोड़ कर वैदिक वाङ्मय में अपनी निष्ठा रखें तो हिन्दुओं के रूढ़िवादियों ने स्वामी जी की हत्या करा दी।

"अब भी 'रघुपति राघव राजा राम' के घोष के अधीन हिन्दू-विरोधी विचार वालों को हिन्दू अपने सिर पर उठाये फिरते हैं। गांधी जी के घर में हिन्दू-संस्कारों के अभाव का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि उनका लड़का इस्लाम स्वीकार कर बैठा है और उनका एक अन्य पुत्र सुरा-सुन्दरी के मोह में फँस गया है।

"यह हमारे ब्राह्मण देवताओं का ही दोष है, जो कोरी निष्ठा और श्रद्धा की कूक लगाते फिरते हैं और बुद्धि को तिलाञ्जलि दे बैठे हैं।

"देखो आनन्द! इसी कारण मैंने सक्रिय राजनीति को छोड़ दिया है और उसके आधार, मानव अर्थात् हिन्दू-संस्कृति की व्याख्या पर कार्य करना आरम्भ कर दिया है। मैं समझता हूँ कि यदि जनता में विचारों का आधार सत्य और सुदृढ़ होगा तो व्यवहार भी सत्य और श्रेष्ठ होंगे। उनसे कल्याण की आशा की जा सकेगी।"

गांधी जी डण्डी में पकड़े गये। देश-भर में नमक-सत्याग्रह की धूम मच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी । इस पर भी इससे सरकार को करों में कोई हानि नहीं हुई । न ही सरकारी काम-काज ठप्प हुआ । हाँ, जेलों में सहस्रों लोग भर दिये गये ।

दो-तीन महीने में ही सत्याग्रह शान्त हो गया और फिर सरकार से संधि होने लगी । पहले तो गांधी जी और मोतीलाल जी ने संधि की बात पर घृणा प्रकट की, परन्तु जब देखा कि सत्याग्रह तो चल नहीं सकता और सरकार नियम-पूर्वक अपने मार्ग पर चल रही है तो गांधी जी सुलह करने के लिये राज़ी हो गये ।

"गांधी जी और लॉर्ड इरविन में एक समझौता हुआ । इसमें सरकार ने कुछ नयी बात नहीं कही । हाँ, गांधी जी राउण्ड टेबल कान्फरेंस में जाने के लिये तैयार हो गये । कांग्रेस का कराची-अधिवेशन हुआ और उसमें अकेले गांधी जी को प्रतिनिधि बना दिया गया ।

गांधी जी इंगलैण्ड गये और सिक्खों, अछूतों और मुसलमानों से सुलह करने में लग गये । इनका कान्फरेंस की मीटिंग में भाषण भी हुआ, जिसमें इन्होंने पूरा बल इस बात पर दिया कि कांग्रेस देश के सब फिरकों की प्रतिनिधि है । परिणाम यह हुआ कि गांधी जी की वहाँ एक नहीं सुनी गयी । कारण यह कि सब समुदाय वाले कांग्रेस की निन्दा ही करते रहे ।

कान्फरेंस के समय पण्डित मोतीलाल का देहान्त हो चुका था और जवाहरलाल, गांधी जी के कान्फरेंस में जाने को पसन्द नहीं करता था । अतः गांधी जी के कान्फरेंस में जाने पर वह उत्तर-प्रदेश के किसानों को भूमिपतियों के विरुद्ध भड़काने में लगा रहा ।

यह सन् १९३१ के अन्तिम दिन थे । नलिनीकान्त हर वर्ष की भाँति जाड़ों में परिवार के साथ लाहौर आया हुआ था । गांधी जी कान्फरेंस से लौटते हुए पुनः सत्याग्रह चलाने का संकेत करने लगे । यह समाचार लाहौर में भी पहुँचा तो नलिनीकान्त खिलखिलाकर हँस पड़ा ।

आनन्द अपने पिता के साथ भारत में सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ पर काम कर रहा था । दोनों एक मेज़ पर आमने-सामने बैठे थे और मेज़ पर पुस्तकें लदी पड़ी थीं । कार्य करते-करते माली समाचार-पत्र दे गया था । उसे पढ़ते हुए ही नलिनीकान्त की हँसी निकल गयी थी ।

आनन्द हँसी की आवाज़ सुन पिता का मुख देखने लगा । इस पर नलिनी ने समाचार-पत्र में प्रकाशित समाचार को पढ़ दिया । नलिनीकान्त ने पढ़ा, "यह समाचार है कि मॉनचैस्टर गार्डियन के प्रतिनिधि से गांधी जी ने रोम में कहा है कि वे लन्दन से निराश लौट रहे हैं और पुनः अपना सत्याग्रह-आन्दोलन चलाने का विचार रखते हैं ।"

"तो इसमें हँसने की क्या बात है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि गांधी जी अपनी तीन महान् असफलताओं को देखते हुए भी कुछ सीख नहीं रहे।

"नमक-सत्याग्रह सर्वथा असफल रहा है। आन्दोलन सर्वथा निरर्थक सिद्ध हुआ है। इससे एक बात हुई है कि मुसलमानों के साथ अब बीसियों और संस्थाएँ तथा समुदाय तैयार हो गये हैं, जो अपने लिये संरक्षण की माँग उपस्थित कर रहे हैं।"

"परन्तु रियायत चाहने वालों को कौन रोक सकता है ? इतने बड़े देश में दस-बीस देश-द्रोहियों को ढूंढ निकालना कठिन नहीं।"

"यदि यह दस-बीस लोगों की बात है तो फिर उनके सम्प्रदाय के अन्य लोगों को उन दस-बीस के विरुद्ध जलसे और जुलूस निकालने चाहियें, जिससे वे झूठे सिद्ध हो सकें। देखो आनन्द, वस्तुस्थिति यह है कि इन समुदायों में यदि कोई कांग्रेस का समर्थन करता है तो कांग्रेस उसका विरोध करती है; उसकी निन्दा करती है और उन समुदायों के सरकार-भक्तों को प्रसन्न करने के लिये उनके जूते चाटती है।

"इससे मैं यह समझा हूँ कि उन समुदायों में कांग्रेस का समर्थक कोई नहीं और राउण्ड टेबल कान्फरेंस में गये दस-बीस देश-द्रोही नहीं, वरन् पूर्ण समुदाय ही ऐसा है।

"इसका अर्थ यह है कि कांग्रेस ने ठीक नीति का अवलम्बन नहीं किया। यह देश को राष्ट्रवादी और अराष्ट्रवादियों में बाँट नहीं सकी। इसने देश को पहले हिन्दू और मुसलमानों में बांटा। अब यह अन्य अल्प-संख्यकों को भी देश की मुख्य समाज से पृथक् कर रही है।

"होना यह चाहिये था कि राष्ट्रवादियों का एक दल होता और उसमें लोग समुदायों का विचार छोड़, देश-हित की बात पर एकत्रित किये जाते।

"एक बार किसी एक समुदाय को समान अथवा अधिमान की मान्यता दी तो फिर अन्य समुदायों को भी मान्यता देनी स्वाभाविक है। समुदायों को मान्यता देने पर उन समुदायों को अपने नेता पृथक् बनाने पड़े हैं। ठीक वैसे ही जैसे कि समुदाय कांग्रेस के नेताओं को मान्यता न देकर अपने नेताओं को मान देती है।

"देखो आनन्द ! मूलभूत धारा वही है, जो राजा राममोहन राय ने चलायी थी। उन्होंने सांस्कृतिक विषयों में हिन्दू-मुसलमान को पृथक्-पृथक् मान कर भी सबको सत्य कहा था। उसी की प्रतिलिपि राजनीति में हो गयी है। सब समुदाय राष्ट्रवादी हो गये हैं और सब पृथक्-पृथक् भी हैं और परस्पर विरोधी भी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

सन् १६३५ का भारत राज्य का संविधान बना। उससे ये सब अल्प-संख्यक जातियाँ प्रसन्न थीं, परन्तु कांग्रेस अप्रसन्न थी।

नलिनीकान्त बहुत वृद्ध हो गया था। इस समय उसकी वयस् चौरासी वर्ष की थी। उसकी पत्नी सुवर्णा का देहान्त हो चुका था। प्रज्ञा का भी देहान्त हो चुका था और मीनाक्षी अपने बच्चों के साथ लाहौर में रहती थी। उसका बड़ा लड़का जीवनदास एम० ए० पास कर दयालसिंह कालेज में अंग्रेज़ी पढ़ाता था। आनन्द के पुत्रों में विजय बम्बई में प्रकाशन-कार्य चला रहा था। आनन्द अपनी पत्नी प्रभा के साथ पिता जी के पास भुवाली में रहता था।

विजय ने अपने दोनों लड़कों को अपने व्यापार में सम्मिलित कर लिया था। ललिता का ज्ञान से लड़का कृष्णस्वरूप अब ललिता के साथ ही रहता था। वह बम्बई में देश से निर्यात और आयात का व्यापार करता था। वह युरोप में आता-जाता रहता था और वहाँ से एक फ्रांसीसी लड़की को विवाह कर ले आया था।

विजय ने एक बड़ा मकान ले लिया था। पहला मकान पूर्णरूप से व्यापार के काम में आने लगा था।

सरस्वती का लड़का महावीर बम्बई विश्वविद्यालय का स्नातक था। वह एम० ए० पढ़ने के उपरान्त अपनी रुचि लेखन-कार्य में प्रकट कर रहा था। विजय का कहना था, "महावीर! यदि लेखक बनना चाहते हो तो भुवाली चले जाओ और वहाँ पिता जी के पुस्तकालय में दो-तीन वर्ष तक डुबकियाँ लगा आओ।"

"परन्तु यहाँ विश्वविद्यालय का अपना बहुत अच्छा पुस्तकालय है।"

"अच्छा, ऐसा करो कि भुवाली में बाबा जी को लिखो कि वे कौन-कौनसी पुस्तक पढ़ने के लिये तुम्हें सम्मति देते हैं? तब देखना कि वह पुस्तक यहाँ के पुस्तकालय में है अथवा नहीं। यदि है तो उसका अध्ययन करो। साथ ही उनसे मिलते रहा करो तो वह तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेंगे।"

महावीर ने लिखा और वहाँ से उत्तर आया। लिखा था, "मैं समझता हूँ कि मेरे लिखित भारतीय संस्कृति पर पाँचों ग्रन्थ पढ़ डालो। इसके साथ ही महाभारत, रामायण, श्वेताश्वतर उपनिषद् और ईशावास्योपनिषद् का अध्ययन करना। उसके बाद मुझे लिखना, तब और बताऊँगा।"

नलिनी ने विजय को भी लिखा, "मैं समझता हूँ कि अपने वृक्ष की शाखाएं फैल रही हैं। वे बदल रही ऋतुओं की सर्दी, गर्मी, वर्षा, सूखा, धूप छाँव के आघात को सह रही हैं। यदि कुछ विशेष असुविधा न हो तो अपने ग्रन्थ का आद्योपान्त घर पर पारायण कराओ। महावीर को कहो कि रात भोजनो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परान्त पूर्ण परिवार को वह ग्रन्थ सुनाया करे और उस परायण को रुचिकर बनाने के लिये तुम पढ़े विषय पर प्रश्नोत्तर की प्रथा डालो।"

विजय को यह बात पसन्द आयी और उसने महावीर को कहा, "आज रात से ही तुम इस ग्रन्थ का पाठ आरम्भ कर दो। इससे तुम्हारा ज्ञान बढ़ेगा और मैं समझता हूँ कि परिवार का कल्याण होगा।"

महावीर ने कह दिया, "पिता जी! बात तो ठीक है, परन्तु परिवार के सब सदस्य इसे पसन्द नहीं करेंगे।"

"यत्न करते हैं। देखें कि कौन क्या चाहता है?"

उसी रात के खाने के समय विजय ने घोषणा कर दी। उसने कहा, "बाबा का महावीर को आदेश आया है कि भारतीय संस्कृति की पुस्तक का पाठ परिवार के सब सदस्यों को सुनाया जाए और फिर उस पर संशय-निवारण किया जाया करे।"

यद्यपि सरस्वती ने पूर्ण पुस्तक पढ़ी थी, परन्तु उसे कई स्थल समझ नहीं आये थे और कईयों पर उसको संशय था। इस कारण उसने कहा, "यह सम्मति ठीक है।"

ललिता ने पुस्तक नहीं पढ़ी थी, परन्तु वह सुनने के लिये उत्सुक थी। कृष्णस्वरूप ने कह दिया, "पिता जी! हमें उस ग्रन्थ में रुचि नहीं है।"

महावीर के छोटे भाई रघुवीर ने कह दिया, "मैं तो रात के समय कालेज की पढ़ाई करता हूँ।"

"किस समय सोया करते हो?"

"ग्यारह बजे। कभी-कभी बारह भी बज जाते हैं।"

"और प्रातः किस समय जागते हो?"

"सात-साढ़े सात बजे।"

"देखो, मेरी सम्मति मानो। सायंकाल भोजन से पूर्व कुछ पढ़ लिया करो और भोजनोपरान्त रात्रि नौ बजे से दस बजे तक गोष्ठी हुआ करेगी। तदनन्तर साढ़े-दस बजे तक सो जाया करो और प्रातः चार बजे से सात बजे तक पढ़ लिया करो।"

"नींद नहीं खुलेगी।"

छोटे बच्चों में सरस्वती की लड़की इन्द्रा थी और एक सोम का लड़का गोपाल था। उनको यह कहा गया कि वे स्वेच्छा से आ और जा सकते हैं। यदि उनको रुचि हो तो आ जाया करें। न रुचि हो तो जाकर सो जाया करें और सब प्रातः चार बजे उठा करें।

विजय का कृष्णस्वरूप को भी यही कहना था कि कुछ दिन वह आये। यदि पुस्तक नीरस प्रतीत हो तो आना छोड़ दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णस्वरूप की पत्नी अब हिन्दी समझने लगी थी। इस कारण उसने पति को समझाया, "आपके बाबा की पुस्तक है, सुनकर देखिए तो। जो पुस्तक भूमण्डल के पुस्तकालयों में ली जा रही है, उसे हम भी सुन लें तो क्या हानि है ?"

अत: उसी रात भारतीय संस्कृति के इतिहास का परायण आरम्भ हो गया।

पुस्तक का आरम्भ भूमिका से ही किया गया। भूमिका में सृष्टि का आरम्भ तथा सृष्टि में भारत के स्थान पर विवेचना थी। जब पौन घण्टा-भर पुस्तक का पाठ हो चुका तो पहले ही दिन सजीव विवाद आरम्भ हो गया।

कृष्णस्वरूप ने ही कहा, "दुनिया-भर के विद्वान् यह मानते हैं कि सबसे प्रथम 'अमीबा' की प्रकार के जन्तु बने और यहाँ पुस्तक में लिखा है कि छ: फुट और कदाचित् इससे बड़े-बड़े मनुष्य एकाएक बने। इसे पढ़कर हँसी आती है।"

कृष्णस्वरूप के आक्षेप का उत्तर उसकी पत्नी मेरी ने ही दिया। उसने कहा, "वाह ! इसमें विस्मय करने की बात क्या है ? जब अमीबा बन सकता है तो कुत्ता, बिल्ली भी बन सकते हैं और कुत्ता, बिल्ली बन सकते हैं तो मनुष्य भी बन सकता है। सिद्धान्त की बात यह है कि निर्जीव से जीव की सृष्टि हुई।

"प्रश्न यह है कि कैसे हुई ? इस ग्रन्थ में कहा गया है कि जैसे स्त्री के गर्भ में बच्चा बन सकता है वैसे ही पृथिवी के गर्भ में बच्चा बना था। आरम्भ में बीज कहीं से तो आया होगा। पुरुष-बीज और स्त्री-अण्डे कहाँ से आये ? जहाँ से अमीबा का बीज आया, वहाँ से घोड़े, गधे, बिल्ली, कुत्ते का बीज भी आया मान सकते हैं।"

विजय ने कहा, "मीरा ने," घर के लोग उसे मीरा के नाम से पुकारते थे, "युक्ति बहुत ही प्रबल दी है। देखो कृष्ण, माँ के पेट में पुरुष-बीज और स्त्री-बीज मिलकर एक संयुक्त कोषाणु बनता है और उस कोषाणु से बढ़ते-बढ़ते पूर्ण बच्चा बन जाता है। नौ मास में लाखों ही जीवित कोषिकाएँ बन जाते हैं। अत: समस्या यह नहीं कि इतना बड़ा जन्तु कैसे बन गया ? समस्या यह है कि वह पुरुष-बीज और वह स्त्री-बीज कहाँ से आये और कहाँ मिले ? एक बार वे आये और निषेचित (फर्टीलाईज़्ड) कोषिका बनी तो शेष सब सम्भव है।

"बाबा ने लिखा है कि पृथिवी ने गर्भ-स्थान प्रस्तुत किया। रोहिणी नक्षत्र की रश्मियों से पुरुष-बीज कण आये और गर्भ स्थित होने के उपरात जन्तु बनना आरम्भ हो गया।

"भारतीय परम्परा यह है कि सब प्रकार के जन्तु एक समय नहीं बने। प्रत्येक जन्तु अपने-अपने काल पर बना। वनस्पतियाँ पहले बनीं। छोटे जन्तु कीट,

—३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतंग बने; तदनन्तर पशु-पक्षी बने और मनुष्य सबके अन्त में बना। जो बात भारतीय ज्ञान-विज्ञान नहीं मानता, वह यह है कि एक प्रकार के जन्तु दूसरी प्रकार के जन्तु के पूर्वज हैं। यह न युक्ति से सिद्ध है और न प्रमाण से।"

कृष्ण ने कहा, "परन्तु पिताजी! युरोपियन विचार विकासवाद को क्यों न मान लिया जाये?"

"यह इस कारण कि ऐसा मानने से पूर्व की सन्तति पीछे आने वाली सन्तति का अविकसित रूप माननी पड़ेगी। यह मानना पड़ेगा कि मनुष्य का शरीर, इन्द्रियाँ और मस्तिष्क उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है। वस्तु-स्थिति यह है कि यह अवनति कर रहा है। युरोप के लोग यह मानते हैं कि वे प्राचीन से श्रेष्ठ संस्कृति के मालिक हैं। विकासवाद उनके दावे का समर्थन करता है, परन्तु घटनायें इसका समर्थन नहीं करतीं।"

"पिता जी! कोई घटना बताइये जिससे कि पता चले कि भूत-काल के लोग आज के लोगों से अधिक उन्नत थे।"

"हाँ; जानते हो न्यूटन कब पैदा हुआ था?"

"ठीक-ठीक ज्ञात नहीं।"

"मैं बताता हूँ। उसका जन्म सन् १६४२ में हुआ था। उसका देहान्त सन् १७२७ में हुआ था। जानते हो कि उसने 'लॉ ऑफ मोशन्स'[1] पता किये थे?"

"हाँ, यह तो विदित है।"

"उनमें प्रथम नियम है कि प्रत्येक जड़ वस्तु यदि चलती है तो नियत गति से चलती ही रहती है और यदि खड़ी है तो खड़ी ही रहती है, जब तक कोई बाहरी शक्ति उसका विरोध न करे।

"हाँ, पिता जी! ऐसा पढ़ा है।"

"तो सुनो। एक ऋषि हुए हैं जिनका नाम व्यास मुनि था। उन्होंने एक ग्रन्थ लिखा था ब्रह्म-सूत्र। उस ग्रन्थ पर भाष्य मिलता है स्वामी शंकराचार्य का। स्वामी शंकराचार्य सातवीं शताब्दी में हुए थे।

"इसका अभिप्राय यह है कि ब्रह्म-सूत्र उससे पहले लिखे गये थे। एक और बात; महाभारत का ग्रन्थ युरोपियन विद्वानों के विचार से ईसा की प्रथम शताब्दी में लिखा गया है और हमारे कैलेण्डर से ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व लिखा गया था। महाभारत में गीता नाम के प्रकरण में ब्रह्म-सूत्रों का उल्लेख है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि ब्रह्म-सूत्र कम-से-कम आज से दो सहस्र वर्ष पहले लिखे गये थे और जो कुछ न्यूटन ने सत्रहवीं शताब्दी में पता किया था, वह व्यास मुनि

---

१. गति के नियम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दो सहस्र वर्ष पहले विदित था। व्यास मुनि ने अपने ग्रन्थ 'ब्रह्म-सूत्र' में लिखा है—

व्यतिरेकानवस्थितेश्च अनपेक्षत्वात् ॥[1]

"इसका अभिप्राय है कि प्रकृति अपनी स्थिति नहीं बदलती, बिना किसी चेतन के उस पर प्रभाव के।

"अब बताओ, यदि हम युरोपियन विकासवाद को मानें तो यह बात विडम्बना प्रतीत होगी कि न्यूटन से सहस्रों वर्ष पहले उस द्वारा पता किया गया सिद्धान्त भारतीय दार्शनिकों को ज्ञात था।"

कृष्ण निरुत्तर हो पिता का मुख देखता रह गया। मीरा ने पूछ लिया, "परन्तु इस सिद्धान्त का ज्ञान होने पर भी भारतीयों ने मैकेनिक्स[2] में वह उन्नति क्यों नहीं की, जो युरोप वालों ने की है ?"

"उन्होंने इस सिद्धान्त को जान कर प्रयोग तो किया है; यद्यपि उस प्रयोग की दिशा वह नहीं, जो वर्त्तमान युग के वैज्ञानिकों की है।"

"उन्होंने इस और ऐसे ही अन्य सिद्धान्तों के ज्ञान का प्रयोग किस कार्य में किया है ?"

"उस काल में अन्न की कमी नहीं थी। जीवन सुगम और सस्ता था। इस कारण जीवनोपयोगी कामों के लिये ज्ञान-विज्ञान का प्रयोग करने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। हां, एक रहस्य दिमाग़ पर ज़ोर डालता रहता था। वह यह कि मनुष्य क्या है ? यह संसार क्या है और क्यों है ? इन रहस्यों को समझने के लिये भारतीय विद्वानों ने अपने ज्ञान-विज्ञान का प्रयोग किया था।

"ज्यों-ज्यों भूमि में उपज करने की शक्ति कम होती गयी और जन-संख्या बढ़ती गयी, ज्ञान-विज्ञान के प्रयोग की दिशा बदलती गयी। मूल ज्ञान तो पहले भी पता था।"

उस दिन साढ़े-दस बजे गोष्ठी समाप्त हो गयी। कृष्णस्वरूप और उसकी फ्रांसीसी पत्नी अपने सोने के कमरे में गये तो कृष्ण ने मीरा से पूछ लिया, "मीरा डीयर ! क्या समझी हो ?"

"आज की बात तो बहुत रुचिकर प्रतीत हुई है। जब मैं अभी तेरह-चौदह वर्ष की थी तो माँ के साथ गिरजाघर जाया करती थी। वहाँ का रैक्टर व्याख्यान में कभी-कभी इसी विषय पर आजकल के वैज्ञानिकों को गलत कहा करता था। उसका भी यह कहना था कि मनुष्य बन्दर की सूरत-शक्ल पर नहीं बना, वरन् यह परमात्मा की प्रतिलिपि है। तब मैं और मेरी आयु के लड़के-लड़कियाँ उस रैक्टर को मूर्ख कहा करते थे। आज वही बात आपके पिता कह रहे थे। आपके

---

१. ब्रह्म-सूत्र, २-२-४; २. मशीनों की विद्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा ने लिखा है कि विकासवाद मिथ्या ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक वैज्ञानिक यह कहते हैं कि एक प्रकार के जन्तुओं से दूसरी प्रकार के जन्तु बने, परन्तु बाबा ने लिखा है कि सब जन्तु जब भी बने, ऐसे ही बने जैसे आज हैं। उनमें विकास अथवा ह्रास हो रहा है। यह है विकासवाद। यही बात आपके पिता जी ने कही है, परन्तु जिस ढंग से कही गयी है, वह सर्वथा युक्तियुक्त है। हमारे पादरी भी इस प्रकार नहीं समझा सके थे।"

"परन्तु इसका हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है ?" कृष्ण ने कहा।

"सम्बन्ध तो है। इसका ज़ीवन से वही सम्बन्ध है जैसा इस ज्ञान का सम्बन्ध है कि जल ऑक्सीजन और हाईड्रोजन गैसों के संयोग से बना है।"

"मेरे लिये न इस बात का प्रयोग है कि मनुष्य को परमात्मा ने बनाया है अथवा वन-मानुष ने, और न ही इस बात का कि हाईड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोग से जल बनता है।"

"तो आपका किस बात से सम्बन्ध है ?"

"मेरा सम्बन्ध है तुमसे और तुम्हारे बच्चों से। मेरा सम्बन्ध है खाने-पीने और वस्त्रों से। मेरा सम्बन्ध है सब प्रकार की सुख-सुविधा से और उसे उपलब्ध करने के लिये धन के उपार्जन से।"

मीरा समझ गयी कि उसके पति के मस्तिष्क में आज फिर सुख-भोग का ज्वार आने लगा है। वह इससे प्रसन्न थी। कारण यह कि सुख-भोग की प्राप्ति में उसे भी उसका भाग मिलता था। इस पर भी वह उस दिन की ज्ञान और युक्तियुक्त बात से प्रसन्न थी।

उसने सोने की तैयारी करते हुए कह दिया, "कुछ भी हो। आपके बाबा की पुस्तक विचार प्रोत्साहक तो है।"

: ७ :

सोम को सक्रिय राजनीति छोड़े पाँच वर्ष से ऊपर हो चुके थे। यद्यपि वह मुद्रणालय में छपाई का काम करता था, इस पर भी उसका ध्यान राजनीति पर केन्द्रित था। जब नया विधान लागू हुआ तो उसके मन में पुनः केन्द्रीय असैम्बली के चुनाव लड़ने की इच्छा होने लगी। नयी मतदाता सूची तैयार होने लगी तो वह उसमें रुचि लेने लगा। उसने बम्बई में एक क्षेत्र अपने लिये निश्चय कर लिया था और उस क्षेत्र में वह घूम-घूम कर यत्न से मतदाताओं के नाम लिखा रहा था। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हो रहा था कि वह मुद्रणालय से अनुपस्थित दिखायी देने लगा। चारुदेव तो लखनऊ में बिक्री-विभाग में कार्य करता था। एक दिन विजय को प्रतीत हुआ कि सोम मुद्रणालय में नहीं है और वहाँ का कार्य उसकी मेज़ पर जमा हो गया है। उस दिन वह दुकान से मुद्रणालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पहुँच गया। वह वहाँ मध्याह्नोत्तर तीन बजे पहुँचा था और स्वयं उसकी मेज़ पर बैठ, वहाँ एकत्रित हुए कागज़ देखने लगा तो उसे पता चला कि तीन दिन पहले के प्रूफ ठीक हुए रखे हैं और उन पर 'प्रिंट आॅर्डर' नहीं लिखा। उसने कम्पोज़िंग-विभाग के मुख्य कर्मचारी को बुलाकर पूछा, "यह काम छपा क्यों नहीं ?"

उसने कहा, "यहाँ का नियम है कि बिना बाबू जी के हस्ताक्षर के काम मशीन पर नहीं चढ़ता।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि काम पर हस्ताक्षर क्यों नहीं कराये ?"

"तीन दिन से बाबू जी यहाँ नहीं आये।"

"तो कहाँ रहे हैं ?"

"वे आजकल निर्वाचन-कार्य में लगे हुए हैं।"

"निर्वाचन का क्या कार्य है ?"

"आगामी वर्ष होने वाले निर्वाचनों की अभी तो मतदाता-सूची बन रही है।"

विजय समझ गया कि राजनीति-सम्बन्धी संस्कार पुनः उभरने लगे हैं। उसने स्वयं ही कुछ प्रूफ देखे और उनको ठीक कर कम्पोज़िंग विभाग का काम चालू कर दिया। इतना कार्य कराते-कराते पाँच बज गये। इस समय सोम मुद्रणालय के कार्यालय में आ गया। पिता को अपनी मेज़ पर बैठे देख, मुस्करा कर बोला, "पिता जी! मैं आ गया हूँ।"

"परन्तु अब तो मुद्रणालय बन्द होने का समय हो गया है।"

"मैं कह गया था कि मैं पाँच बजे आऊँगा। सब लोग मेरे आने की प्रतीक्षा करें।"

"हाँ, वे तो प्रतीक्षा कर रहे हैं। परन्तु काम प्रतीक्षा नहीं कर सकता। वह चलना चाहिये। मशीनें भी खाली पड़ी थीं। वे काम माँग रही थीं।"

"पिता जी! बस अब तीन-चार दिन का काम शेष रह गया है। तब मैं छुट्टी पा जाऊँगा।"

"किस काम से छुट्टी पा जाओगे ?"

"मैं कालबा देवी क्षेत्र में मतदाता-सूची बनवा रहा हूँ। मैं इस क्षेत्र से केन्द्रीय असैम्बली के लिये खड़ा होना चाहता हूँ।"

"और फिर गांधी जी के कहने पर त्याग-पत्र दे दोगे ?"

"हाँ; यदि आवश्यकता हुई तो त्याग-पत्र दे दूँगा।"

"परन्तु तुमको कांग्रेस का टिकट मिल सकेगा क्या ?"

"मैं भोलाभाई देसाई से मिला हूँ और मैं समझता हूँ कि उन पर मैंने अच्छा प्रभाव उत्पन्न किया है। मुझे विश्वास है कि उनकी अंगुली पकड़, टिकट प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकूंगा।"

"खैर, एक बात तुम अक्लमन्दी की कर रहे हो। वह यह कि मतदाता सूची बनवाने से ही काम आरम्भ कर दिया है। यह तो तुमने जीतने का आधार बना लिया है, परन्तु तुमको टिकट मिल सकना कठिन है।"

"क्यों?"

"यह इस कारण कि तुम कांग्रेस से पहले विद्रोह कर चुके हो और उसके नेतागण तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे। साथ ही तुम एक ऐसी लहर में पड़े हुए हो, जो कांग्रेस की विरोधी लहर है।"

"परन्तु पिता जी! अब तो कांग्रेस भी पूर्ण स्वराज्य के लिये यत्न कर रही है। इस अवस्था में कम-से-कम मेरा उससे मतभेद नहीं रहा। सन् १९३० से पूर्ण स्वराज्य के लिये यत्न किया जा रहा है।"

"हाँ, गांधी जी के बहुत यत्न करने पर भी जवाहरलाल की चल गयी है। यह झगड़ा तो सन् १९२८ से चल रहा है। कलकत्ता में पण्डित मोतीलाल जी ने स्वराज्य की एक योजना बनायी थी। वह थी औपनिवेशिक स्वराज्य की। जवाहरलाल ने बग़ावत कर दी और पिता-पुत्र में संघर्ष होने वाला था कि गांधी जी ने पिता-पुत्र में सुलह करा दी। सुलह में शर्त यह थी कि यदि सरकार एक वर्ष में उनकी योजना स्वीकार नहीं करती तो गांधी जी पूर्ण स्वराज्य के पक्ष में हो जायेंगे।

"एक वर्ष व्यतीत होने से पहले ही मुसलमानों ने बग़ावत कर दी और योजना अस्वीकार करने में सरकार को बहाना मिल गया। यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट ने मुसलमानों को भड़काया था और मुसलमानों ने नेहरू योजना मानने के लिये ऐसी शर्तें उपस्थित कर दी थीं, जो कांग्रेस कभी मान ही नहीं सकती थी।

"इस पर बूढ़े बाबा दोष सरकार पर लगाकर पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव लाहौर-कांग्रेस में पारित करा बैठे हैं। परिणाम यह हुआ है कि सरकार ने मुसलमानों के अतिरिक्त अछूतों, सिक्खों, ऐंग्लो-इण्डियन तथा पिछड़ी जातियों को भड़का कर कांग्रेस के विरुद्ध कर दिया है।

"देखो सोम! हमारी प्रकाशन संस्था यह प्रचार कर रही है कि देश में हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिक्ख और अछूत इत्यादि जातियां नहीं हैं। हम मानते हैं कि यहाँ दो श्रेणियों के लोग हैं। राष्ट्रवादी और अराष्ट्रवादी। यह कांग्रेस मानती नहीं।"

"पर पिता जी! यही तो कह रहा हूँ कि अब कांग्रेस शुद्ध, पवित्र, राष्ट्रवादी संस्था है।"

"मैं समझता हूँ कि तुम भूल कर रहे हो। यह ठीक है कि कांग्रेस एक ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्था है जो पूर्ण स्वराज्य चाहती है, परन्तु उसमें अहिंसावादी सरकार चाहती है। उसमें मुसलमान, सिक्ख, अछूत इत्यादि जातियाँ पृथक्-पृथक् अस्तित्व रखती हैं।

"और हम क्या चाहते हैं ? हम, मेरा अभिप्राय है मैं, तुम्हारे बाबा तथा उनसे पहले महर्षि स्वामी दयानन्द यह समझते हैं कि इस देश में राष्ट्र हिन्दू है और उनके विरोधी हैं अराष्ट्रीय विचार वाले। कांग्रेस सन् १९३० से पहले राष्ट्रीय संस्था थी ही नहीं। यह ब्रिटिश सरकार का एक अंग थी। अब यह पूर्ण स्वराज्य माँगती है तो यह एक अंश में राष्ट्रवादी तो हो गयी है, परन्तु अराष्ट्रीयता का विरोध न करती हुई और अराष्ट्रवादियों के लिये उनको पृथक् राष्ट्र का पद देते हुए।

"मैं समझता हूँ कि तुम भले ही वर्त्तमान काल में अराष्ट्रीय तत्त्वों का विरोध न करो, परन्तु तुम उनसे सहयोग भी नहीं करो। बस यही अन्तर है हममें और कांग्रेस में।

"देखो, राष्ट्रीयता औपनिवेशिक स्वराज्य में भी हो सकती है और पूर्ण स्वराज्य का पक्षपाती होते हुए एक व्यक्ति अथवा संस्था भी अराष्ट्रीय हो सकती है, जब वह अराष्ट्रीय तत्त्वों का पक्ष ले रही हो।"

सोम इस विवेचना पर चुप हो गया। उसे भोलाभाई देसाई पर बहुत विश्वास था और समझता था कि उनके आश्रय वह टिकट पा जायेगा। उसे असेम्बली के सदस्य होने के दिन स्मरण आ रहे थे और उसे स्मरण कर उसके मुख से लार टपकती रही थी।

सन् १९३६ की लखनऊ-कांग्रेस में वह बम्बई से प्रतिनिधि बनकर गया। वहाँ वह बढ़-चढ़ कर भाग लेता रहा। उसे समझ आया कि उसके पिता का कथन सर्वथा सत्य सिद्ध हुआ है। गांधी जी पण्डित जवाहरलाल की सहायता में वहाँ पहुँचे हुए थे। गांधी जी कांग्रेस छोड़ चुके थे, परन्तु जवाहरलाल को प्रधान बनाने में उन्होंने प्रमुख भाग लिया था और फिर कांग्रेस में एक प्रबल विरोध उत्पन्न हो रहा था। उस विरोध को रोकने में गांधी जी सिर-तोड़ यत्न कर रहे थे। यह गुट्ट सरदार पटेल के साथियों का था।

लखनऊ में इस विरोध में सोम भी सम्मिलित हो गया। देसाई जी भी उसी गुट्ट में थे। परन्तु जब भी कोई ऐसी बात होती, जिसमें जवाहरलाल जी का विरोध प्रतीत होता तो गांधी जी उसके पक्ष में खड़े हो जाते।

सोम पहले ही दिन देसाई से मिल कहने लगा, "देसाई जी ! अध्यक्षीय भाषण तो हमारे विचार का विरोध करता है।"

"हाँ; परन्तु इससे क्या होता है ?"

"होगा यह कि यदि कांग्रेस में कोई ऐसा प्रस्ताव पारित नहीं हुआ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस भाषण की विचारधारा का विरोध करे तो कांग्रेस प्रधान समझेगा कि उसके विचार ही कांग्रेस के विचार हैं।"

बात देसाई जी की समझ में आ गयी। वे सोम को सरदार पटेल के कैम्प में ले गये। वहाँ बाबू राजेन्द्रप्रसाद भी उपस्थित थे। देसाई जी ने सरदार से कहा, "यह युवक कुछ कहना चाहता है।"

सरदार पटेल ने कहा, "मैं इसे जानता हूँ। यह विजयकुमार का लड़का है और राष्ट्रीय प्रकाशन संस्था में काम करता है।" सरदार पटेल ने सोम की ओर देखकर कहा, "हाँ, बताओ! क्या कहते हो?"

सोम ने अपने विचार बता दिये। उसने कहा, "अध्यक्षीय भाषण में समाजवाद की चर्चा की गयी है। मैं चाहता हूँ कि कोई ऐसा प्रस्ताव कांग्रेस में पारित होना चाहिये, जिसमें यह प्रकट किया जाये कि कांग्रेस समाजवाद को पसन्द नहीं करती।"

"क्या आवश्यकता है इसकी?"

"आवश्यकता यह है कि यदि ऐसा कोई प्रस्ताव पारित न किया गया तो प्रधान यह समझेगा कि कांग्रेस उसके भाषण में कही बात को प्रचार करने की स्वीकृति देती है।"

"तुम कैसा प्रस्ताव चाहते हो?"

"मैं चाहता हूँ कि यह कांग्रेस कुछ इस प्रकार का प्रस्ताव पारित करे, जिसमें यह प्रकट किया जाये कि व्यक्ति के कुछ ऐसे अधिकार होंगे, जो उसके मूलभूत अधिकार माने जायेंगे और कांग्रेस ऐसी सरकार बनायेगी, जो उन अधिकारों का मान करेगी।"

"तो यह समाजवाद का विरोध होगा?"

"हाँ, सरदार जी! सामाजिकता और समाजवाद में यही अन्तर है कि एक में सब कार्य सरकार के अधीन होते हैं और दूसरे में सामाजिक न्याय तो होता है, परन्तु राज्य का अधिकार नहीं होता।"

"तो वह सामाजिकता पालन कौन करेगा?"

"करेंगे तो लोग ही और पालन करायेगा राज्य। परन्तु सरकार स्वयं भी चाहेगी तो उनको बदल नहीं सकेगी।"

सरदार पटेल मुख देखते रह गये। उनके मुख पर बात समझने की झलक दिखायी देने लगी थी। बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने पूछ लिया, "कोई एक बात ऐसी बताओ जिसकी सरकार को रक्षा करनी चाहिये, परन्तु जो सरकार स्वयं छीन नहीं सकती।"

सोम ने तुरन्त कह दिया, "उदाहरण के रूप में धर्म-युक्त उपायों से बनी सम्पत्ति। सरकार व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा तो करती है, परन्तु उसे छीन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती।"

"धर्म-युक्त का क्या अभिप्राय है ?" भोलाभाई देसाई ने पूछ लिया।

"देश के कानून के अनुसार उपार्जन पर दूसरों का तथा सरकार का भाग देकर जो बचे, वह धर्म-युक्त आय होती है और मितव्ययता से जो बचाया जाये, वह धर्म-युक्त सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति व्यक्ति के प्रयत्न का फल है। इसे सरकार भी छीन नहीं सकती।"

इस पर पटेल ने पूछ लिया, "यदि सरकार को उसकी आवश्यकता पड़ जाये, तब भी नहीं ले सकती क्या ?"

"आपत्-काल के समय सरकार ऋण के रूप में ले सकती है।"

इस पर वहाँ बैठे तीनों नेता विचार करने लगे और एक प्रस्ताव लिखा गया। तीनों उस प्रस्ताव को सैक्रेटरी के पास ले गये।

सोम ने समझा कि उसने कांग्रेस को एक दिशा देने में सफल यत्न किया है। वह अपने प्रयत्न के फल पर बहुत प्रसन्न था।

परन्तु वह प्रस्ताव उपस्थित नहीं हो सका। तीसरे दिन जब खुले-अधिवेशन की अन्तिम बैठक हो रही थी, सोम भोलाभाई देसाई के पास पहुँचा और पूछने लगा, "श्रीमान् ! उस दिन के प्रस्ताव का क्या हुआ है ?"

"वह अजैण्डा में नहीं आया।"

"क्यों ?"

"गांधी जी ने प्रस्तावकों को कहा है कि वे प्रस्ताव वापस ले लें।"

"और उन्होंने ले लिया है ?"

"हम गांधी जी का विरोध नहीं कर सकते।"

सोम चुप कर गया। उसे अपने पिता की बात स्मरण हो आयी थी कि ये नेता पहले तो गांधी जी की ख्याति की वृद्धि करते हैं और फिर अपने मार्ग में ही बाधा खड़ी करते हैं। उसके पिता का कहना था कि यह इस कारण है कि ये लोग अपनी नेतागीरी के मोह में फँसे हुए सिद्धान्त के विपरीत कार्य करने पर विवश हो जाते हैं; जो लोग मोह से ग्रसित होते हैं, वे न अपना और न किसी अन्य का कल्याण कर सकते हैं।"

सोम ने बम्बई से आये हुए तीस के लगभग प्रतिनिधियों को लखनऊ के एक रैस्टोरैण्ट में चाय-पार्टी दी। चाय-पार्टी का निमन्त्रण राष्ट्रीय प्रकाशन संस्था की लखनऊ शाखा की ओर से दिया गया।

उस चाय-पार्टी में कांग्रेस की राजनीति पर देसाई और पटेल बोले। सोम ने आतिथेय संस्था की ओर से धन्यवाद दिया और साथ ही यह कह दिया, "हम लोग हिन्दुस्तान में एक प्रजातन्त्र स्वराज्य के लिये यत्न कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ज्यों-ज्यों हम मन्ज़िल के समीप पहुँचते जाते हैं, उसमें अधिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बाधाएँ उत्पन्न होती जाती हैं। कांग्रेस उन बाधाओं से पार पाने के लिये विचार को अभी टाल रही है।

"बाधाएँ हैं भिन्न-भिन्न वर्ग के लोगों में स्वार्थ का समावेश। ये वर्ग अपने स्वार्थ के साँझे जातीय हितों का भी विरोध करने लगे हैं।

"कुछ नेतागण अब स्वराज्य की ड्योढ़ी पर खड़े एक ऐसी नीति निर्धारित करना चाहते हैं, जिससे भिन्न-भिन्न समुदायों के हितों से सरकार को बाहर रखते हुए उसे केवल साँझे हितों का ही अधिकार दिया जाये, परन्तु इस बात पर नेता लोग सहमत नहीं हो सके। वे सहमत न होने वाले यह चाहते हैं कि समाज को दो भागों में विभक्त कर दिया जाये। एक धनी वर्ग और दूसरा निर्धन वर्ग और ऐसी समाज में निर्धनों के अधिकारों की रक्षा सरकार हाथ में ले और धनियों के अधिकारों को मिटा दिया जाये।

"इन निर्धनों का पक्ष लेने वालों ने सरकार के अधिकारों को सीमित करने में बाधा खड़ी की है। वे कहते हैं कि सरकार ने धनियों के अधिकार सीमित नहीं किये तो सरकार डैमोक्रेटिक नहीं रहेगी।

"कुछ दूसरे नेता हैं जो चाहते हैं कि सरकार समुदायों के निजी अधिकारों में उनको स्वतन्त्रता दे दे और उनमें हस्तक्षेप न करे। इनकी चल नहीं सकी।

"कांग्रेस में इसी कारण हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा उत्पन्न हुआ है। अब सवर्ण और अछूतों का झगड़ा भी उत्पन्न होगा। निर्धन तथा धनियों में झगड़ा भी होगा। इस प्रकार देश की समाज टुकड़े-टुकड़े हो परस्पर झगड़ेगी।

"मैं इस प्रवहण को मिथ्या मानता हूँ। समाज के सम्पूर्ण कार्य सरकार ही करे, यह समाजवाद है और सरकार शासन के कुछ साँझे कार्यों को करे, यह व्यक्तिवाद है। अतः व्यक्तिवाद और समाजवाद में झगड़ा होगा। मेरा नेताओं से निवेदन है कि वे समाजवाद के स्थान पर व्यक्तिवाद के लिये यत्न करें। इसमें ही देश का ऐक्य और कल्याण है।

"मैं आप सबका धन्यवाद करता हूँ, जो अपना अमूल्य समय निकाल कर आपने हमारे इस आयोजन की शोभा बढ़ायी है।"

: ८ :

बम्बई के डैलीगेट इकट्ठे ही वापस जा रहे थे। सोम भोलाभाई देसाई और सरदार पटेल के डिब्बे में ही था। लखनऊ से गाड़ी चलते ही देसाई ने कहा, "सोम! तुमने तो बहुत ही भयंकर बात कही है।"

"क्या भयंकर बात कही है मैंने?"

"तुमने समाजवाद का विरोध किया है।"

"हाँ;" सरदार ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "तुमने यह भी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा है कि अब कांग्रेस में हिन्दू-मुसलमान की भाँति धनियों और निर्धनों का झगड़ा भी होगा।''

''सरदार जी ! आपने ठीक समझा है और मुझे विस्मय हो रहा है कि गांधी जी समाजवाद को पसन्द न करते हुए भी इसको प्रोत्साहन दे रहे हैं और आप लोग गांधी जी के कारण अपनी समझी-बूझी बात के विरोध को सहन कर रहे हैं।''

''सोम ! यह नीति है। तुम्हारा खून अधिक गर्म है। इससे तुम नीति की बात, जो मस्तिष्क का विषय है, समझ नहीं सकते। मैंने यह पढ़ा है कि जिस रक्त में गर्मी अधिक होती है, वह दूर क्या समीप की बात भी समझ नहीं सकता।''

इस प्रकार वृद्ध नेताओं ने युवक नेता का मुख बन्द कर दिया। इस पर भी सोम यह समझ गया था कि सत्य ही उसके विचारों में और कांग्रेस के नेताओं के विचारों में भेद है।

बम्बई पहुँच कर उसने अपने पिता को पूर्ण वृत्तान्त बताया तो विजय खिलखिलाकर हँस पड़ा। जब सोम इसमें हँसने का कारण नहीं समझा तो विजय ने समझाया। उसने कहा, ''मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि तुमको निर्वाचनों में कांग्रेस पार्टी का टिकट नहीं मिलेगा।''

''तो पिता जी ! यह हंसने का विषय है ?''

''यह हँसने का विषय नहीं कि तुम्हें टिकट नहीं मिलेगा; परन्तु मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुमको एक बहुत शिक्षा-प्रद पाठ पढ़ाया जायेगा। इसी पर मुझे हँसी आयी है। मेरी बहुत अभिलाषा थी कि हमारे परिवार का एक व्यक्ति सक्रिय राजनीति में आगे आवे, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह अभिलाषा तुम्हारे द्वारा फलीभूत नहीं होगी।''

''राजनीति में आगे आना कोई धर्म है ?''

''तो क्या पीछे रहना धर्म है ? नहीं सोम, तुम समझे नहीं। न आगे आकर कार्य करना धर्म है और न पीछे खड़े मुख देखना धर्म है। धर्म है ठीक दिशा में काम करना। यह हमारा परिवार कर रहा है।

''यह तुम जानते हो कि पिछले चौदह-पन्द्रह वर्ष में हमने अपनी विचार-धारा के पचास से ऊपर ऐसे ग्रन्थ मुद्रित करवाये हैं, जो राजनीति को एक दिशा देने का यत्न करते हैं। उनका कुछ विशेष प्रभाव दिखायी नहीं देता। इसमें कारण यह है कि हमारे विचार का विरोध न केवल युरोपीय साहित्य, कला-विज्ञान कर रहा है, वरन् हमारे हिन्दू नेता भी युरोप से सीखकर इसे हिन्दुस्तानी नाम देकर प्रचार कर रहे हैं।''

''आपका अभिप्राय है कि हमारा कार्य विफल हो रहा है ?''

''प्रत्यक्ष रूप में यह विफल ही हो रहा है। मैं समझता हूँ कि हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासभा कांग्रेस विरोधी संस्था बन जायेगी। तुम्हारा स्थान उस सभा में है।''

''पर वह है कहाँ ?''

''अभी तो वह कहीं नहीं। इसका मुख्य कार्यालय दिल्ली में है। इसमें कुछ पंजाबी और कुछ मराठे हैं, परन्तु उनमें स्वयं भी मतैक्य नहीं।''

''तो फिर ?''

''अभी तुम अपने कांग्रेस के टिकट की प्रतीक्षा करो। पीछे बात करेंगे।''

सन् १९३७ में प्रान्तीय कौंसिलों और केन्द्रीय असैम्बली के निर्वाचन हुए और कांग्रेस आठ में से पाँच प्रान्तों में विशाल बहुमत से सफल हो गयी। केन्द्र में भी प्रायः हिन्दू प्रतिनिधि कांग्रेस दल में सफल हुए। मुसलमान प्रायः मुस्लिम लीग के टिकट पर सफल हुए।

हिन्दू महासभा के दो अथवा तीन सदस्य सफल हुए। पंजाब के लाहौर डिवीज़न में से भाई परमानन्द सफल हुए।

सोम को तो टिकट ही नहीं मिला। भोलाभाई देसाई ने उसे कह दिया था—''कांग्रेस में एक प्रबल दल तुम्हारा विरोध कर रहा है। इस कारण तुम टिकट मिलने की आशा छोड़ दो। वह प्रबल दल वही है, जिसके तुम विरुद्ध हो।''

''परन्तु वह ग्रुप तो अल्प-मत में है।'' सोम का कहना था।

''यह ठीक है, परन्तु जो विवाद तुमने लखनऊ की चाय-पार्टी में उठाया था, वह समय से पूर्व था। इस कारण बहुमत तुम्हारे विरोध में है।''

इस प्रकार सोम चुनाव नहीं लड़ सका। इसके साथ ही उसका उत्साह कांग्रेस के लिये शिथिल होने लगा। उसने निर्वाचनों में भाग नहीं लिया और परिणाम यह हुआ कि उसके अपने क्षेत्र में एक निर्दलीय प्रत्याशी जीत गया। वहाँ का कांग्रेसी प्रत्याशी अनजाना व्यक्ति होने से सफल नहीं हो सका।

विजय ने उससे पूछ लिया, ''सोम! निर्वाचनों में तुमने बिल्कुल रुचि नहीं ली। क्यों ?''

''पिता जी! हमारे क्षेत्र में कांग्रेस के दोनों प्रत्याशी केन्द्रीय असैम्बली के लिये तथा प्रान्तीय कौंसिल के लिये समाजवादी थे। उनके विरुद्ध निर्दलीय प्रत्याशी बे-पैंदी के लोटे थे। उनका कोई दीन-ईमान नहीं। इस कारण किसका पक्ष लेता और किसका विरोध करता ?''

''अभिप्राय यह कि तुम राजनीति से उचाट नहीं, केवल इन प्रत्याशियों से उचाट थे ?''

''राजनीति तो इन कांग्रेसियों और इन निर्दलीयों की भी है, परन्तु इस प्रकार की राजनीति में मुझे रुचि नहीं। पिता जी, मुझे बम्बई प्रान्त के कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मन्त्री ने बुलाकर काम करने के लिये कहा था और मैंने उससे पूछा था कि किसके लिये करूँ ? कांग्रेस है क्या ?

"इस पर वह मुस्कराया और कहने लगा, 'राष्ट्रीय संस्था है।'

"मेरा कहना था, 'कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था है, जिसमें अराष्ट्रीय लोगों का बोलबाला है।'

"वह मेरे कहने का अर्थ नहीं समझा। मैंने उसे समझाने के लिये कहा, 'मनु भाई ! राष्ट्र क्या कोई तबेला है जहाँ भेड़-बकरियाँ, कुत्ते, बिल्लियाँ सब बँधे हैं ? राष्ट्र उस समाज को कहते हैं, जो एक आचार और भावनाओं वाले घटकों की हो। आपकी इस कांग्रेस में न तो देश के विषय में, न ही देशवासियों के विषय में एकरूपता है। इस कारण कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था नहीं है।'

"वह बेचारा समझा नहीं और कहने लगा, 'तुम किसी हिन्दू-सभाई के प्रभाव में आ गये हो।'

"मुझे आपकी बात स्मरण आ गयी। आपने एक दिन कहा था कि मेरे लिये हिन्दू महासभा ठीक रहेगी। इस कारण मैंने उससे पूछ लिया, 'हिन्दू महा-सभा में क्या खराबी है ?'

" 'वे साम्प्रदायिक हैं।' उसका कहना था। मैंने पूछा, 'मौलाना आज़ाद से भी अधिक ?' इस पर वह रुष्ट हो गया।

"मुझे विस्मय हो रहा है कि लोग उस जैसे मूर्ख को कैसे मन्त्री पद पर बैठाये हुए हैं ?"

"इसमें मैं किसी को दोष नहीं देता।" विजय ने कहा, "ये सब विघटनात्मक प्रवृत्तियाँ हमारी राजनीति में ब्रिटिश शासन ने उत्पन्न की हैं और हम इनको परमात्मा का वरदान समझ रहे हैं।

"पहले हमारी राजनीति में हिन्दू-मुसलमान का भेद-भाव उत्पन्न किया गया। फिर हिन्दू-मुसलमान भेद को स्थायी रूप देने के लिये देश के हिन्दुओं के मन में इस्लाम एक राजनीतिक तत्त्व और हिन्दू एक साम्प्रदायिक तत्त्व का विचार बैठाया गया। जो राष्ट्रीय था, वह साम्प्रदायिक बन गया और जो साम्प्रदायिक था, वह राष्ट्रीय तत्त्व माना जाने लगा। अब इन अंग्रेज़ों से राजनीति का पाठ पढ़ा हुआ एक हिन्दू यह समझने लगा है कि हिन्दू न केवल साम्प्रदायिक हैं, वरन् ये शोषणकर्त्ता (बुर्जुआ) भी हैं।

"जबसे जवाहरलाल कांग्रेस के प्रधान बने हैं, वे कहते फिरते हैं कि हिन्दू-धर्म निर्धनों के शोषण की प्रेरणा देता है। उनको इस्लाम एक प्रजान्तत्रात्मक समाज दिखायी देता है और हिन्दू एक शोषण-कर्त्ता सम्प्रदाय।

"यह महानुभाव इस प्रकार सभ्यता, संस्कृति और राजनीति को परस्पर गलत-मलत कर रहा है कि हिन्दू शब्द और समाज निन्दनीय बनता जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम तथा हमारे विचार के लोग यह मानते हैं कि हिन्दू एक सम्प्रदाय नहीं है। इसमें अनेक सम्प्रदाय हैं। हिन्दू एक सभ्यता भी नहीं। इसमें कई प्रकार की सभ्यता के लोग सम्मिलित हैं। यह एक संस्कृति है और इसका एक देश के साथ सहस्रों-लाखों वर्ष का सम्बन्ध होने से यह एक राष्ट्र है।

"अधिकांश कांग्रेसियों के विचार से इस्लाम एक राष्ट्र है। हिन्दुओं को उसके साथ मिलकर रहना चाहिये। इस मेल-मिलाप के लिये हिन्दुओं को इस्लाम के साथ किसी प्रकार का समन्वय करना चाहिये।

"हम यह कहते हैं कि इस्लाम एक मज़हबी सम्प्रदाय है। इसे हिन्दुस्तान के रहने वाले हिन्दू-समाज के साथ समन्वय कर रहना चाहिये।

"यही मतभेद है। हमारा आधार परस्पर विरोधी होने के कारण हम एक-दूसरे को उलट देखते हैं।

"यह दृष्टि-भेद मिट नहीं सकता, जब तक यह अंग्रेज़ी राज्य और अंग्रेज़ी साहित्य, कला, ज्ञान-विज्ञान यहाँ उपस्थित है।"

"पर पिता जी! विज्ञान में क्या दोष है? विज्ञान तो सत्य ही है। यदि सत्य न होता तो यह औद्योगिक उन्नति न हो सकती।"

"मेरा अभिप्राय इससे नहीं है। यह विज्ञान नहीं है। यह तो तकनीकी ज्ञान कहलाता है। इसे संस्कृत भाषा में कार्य-कुशलता कहा जाता है। ज्ञान सृष्टि-रचना की जानकारी को कहते हैं। उसमें हमारे विज्ञान और इनके विज्ञान में अन्तर है।"

"क्या अन्तर है?"

"ज्ञान के दो भाग हैं। एक को विज्ञान अर्थात् विशेष ज्ञान कहा गया है और दूसरे को सामान्य ज्ञान कहा जाता है। विज्ञान में इस जगत् के मूल-तत्त्वों का ज्ञान लिया जाता है। बस यहीं मूल में अन्तर है। हम मूल-तत्त्व तीन मानते हैं। पाश्चात्य विज्ञान वाले केवल एक तत्त्व मानते हैं।

"भारतीय विज्ञान में तीन तत्त्व हैं परमात्मा, मूल प्रकृति और आत्मा। जबकि पाश्चात्य विज्ञान में केवल प्रकृति को ही लिया गया है।"

"परन्तु आत्मा-परमात्मा को स्वीकार करने से क्या अन्तर पड़ जाता है?"

"अन्तर पड़ता है जीवन के व्यवहार अर्थात् आचरण में। यदि यह मानें कि प्रत्येक व्यक्ति में एक जीवात्मा रहता है, वह अपने कर्मों में तो स्वतन्त्र है, परन्तु कर्मों का फल अनिवार्य रूप में उसे भोगना पड़ता है तो मनुष्य प्रत्येक कर्म करते समय बहुत सावधानी का प्रयोग करता है। वे जो किसी जीवात्मा को नहीं मानते और जन्म से मरण-पर्यन्त ही जीवन मानते हैं, वे अपने आचरण को ऐसा बनाना चाहते हैं जिससे वर्त्तमान-काल में सुख-सुविधा मिलती रहे। भविष्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन तो है नहीं; इस कारण उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। खाओ, पियो और आनन्द करो। 'ईट, ड्रिंक एण्ड बी मैरी' वाली बात हो जाती है। जिस-किस प्रकार भी ऐसा हो सके, वैसा करो।

"इससे प्रत्येक प्रकार की दुर्व्यवस्था होने लगती है। यह युरोप में हो रही है और अब हिन्दुस्तान में भी होने लगी है। यह विज्ञान में त्रुटि के कारण ही है।"

"इस विचार से यहाँ कौन-सी बात होने लगी है ?"

"देखो सोम ! बातें तो अनेक हो रही हैं। तुम्हारी राजनीति में ही बताता हूँ। गांधी जी की ख्याति इतनी अधिक है कि राजनीति में उनसे विपरीत मत रखने वाला भी उनकी बात का खण्डन नहीं कर सकता। गांधी जी जवाहरलाल का समर्थन करते हैं और इसे बहुत लोग स्वीकार नहीं करते। यह तो तुम लखनऊ-कांग्रेस अधिवेशन में भी देख आये हो, परन्तु गांधी जी का विरोध कोई नहीं करता। यह इस कारण कि ऐसा करने से जनता विरोधी हो जायेगी और फिर नेतागीरी ही नहीं रह जायेगी।

"यह व्यवहार इसी बात का सूचक है कि ये सब नेता सत्य-हृदय से ठीक मार्ग पर नहीं चल रहे। ये लोग संसार का अस्तित्व अपने जीवन के लिये और उसके उपरान्त कुछ नहीं, ऐसा मानते हैं। इस कारण ऐसा समझते हैं कि यदि इस समय नेतागीरी गयी तो फिर वह गयी। इस जन्म के उपरान्त तो उनको कुछ दिखायी ही नहीं देता।

"है न अन्तर ? तुम्हारे बाबा ने अपने पूर्ण जीवन के परिश्रम का फल एक पुस्तक में लिख दिया है। यह क्यों ? वे मानते हैं कि मानव-समाज के सुधार से उनको भी सुख और शान्ति मिलेगी। अगले जन्मों में वे मनुष्य ही बनेंगे और यदि भावी मानव-समाज आज से अधिक भले लोगों की होगी तो उनको भी इससे सुख मिलेगा। इसी जीवन के अधीन हम समाज में नवीन स्थायी साहित्य निर्माण करने का यत्न कर रहे हैं। इस सब प्रयास के मूल में यही विचार है कि जीवात्मा अमर है। वह बार-बार जन्म लेता है और भूमण्डल की मानव-समाज को यदि हम एक इंच-भर भी उन्नत कर जाते हैं तो इसका लाभ हमें अगले जन्म में होगा।"

सोम समझ गया कि युरोपीय विज्ञान में और भारतीय विज्ञान में कहाँ और क्या अन्तर है ? साथ ही उसकी समझ में यह भी आ गया कि इस विज्ञान के भेद से व्यवहार में क्या अन्तर आ रहा है ?

वह विचार करने लगा कि एक क्रान्तिकारी किस कारण अपनी जान हथेली पर रखकर भयंकर-से-भयंकर कार्य कर सकता है। वह जानता है कि वह अपने भावी जीवन के लिये समाज को रहने योग्य बना रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम को एक नवीन विचार-दिशा मिल गयी।

: ६ :

विजय का सुविचारित मत था कि व्यक्तियों से समाज बनती है, समाज से व्यक्ति नहीं बनते। यही विचार उसके व्यवसाय में काम करता था। उसने पहले 'राष्ट्र' में एक सहस्र रुपया मासिक वेतन पर नौकरी की थी। उसकी पत्नी सरस्वती भी उसी समाचार-पत्र में काम करती रही थी। दोनों ने अपने वेतन में से चालीस हज़ार रुपये से अधिक जमा कर लिया था। अत: जब 'बॉम्बे न्यूज़' बिका और वह अपना व्यवसाय आरम्भ करने लगा तो उस चालीस हज़ार को पूंजी के रूप में प्रयोग कर, उसमें से आय करने लगा।

पीछे जब पुस्तक-प्रकाशन और विक्रय का काम आरम्भ हुआ तो उसने सोम और पीछे चारु को भी इसी व्यवसाय में सम्मिलित कर लिया। उसका लड़का महादेव और रघुवीर बड़े हुए तो उनको भी काम में लगा लिया। सोमदेव की पत्नी कीर्ति भी व्यवसाय में सहयोग देती थी। उसने अपने को लेखाकार के काम में योग्य बनाया था और वह पूर्ण व्यवसाय का लेखा-जोखा देखती थी। उसकी सहायता के लिये दो क्लर्क रखे हुए थे। महादेव की पत्नी एक पंजाबी लड़की थी। नाम था माधुरी। माधुरी एक आर्य-समाजी ब्राह्मण की लड़की थी। वह घर के काम में अधिक रुचि लेती थी। पूर्ण परिवार एक ही मकान में इकट्ठा रहता था और सबके खान-पान, वस्त्रादि तथा घर का अन्य प्रबन्ध माधुरी करती थी। दो स्त्रियाँ उसकी सहायता के लिये रखी हुई थीं। एक घर की सफाई करती थी और दूसरी कपड़े धोती तथा उनको लोहा कर तैयार रखती थी।

विजय माधुरी के प्रबन्ध से बहुत प्रसन्न था। अत: वह उसको व्यवसाय का अंग ही मानता था। इस प्रकार उसने व्यवसाय प्रकाशन, मुद्रण तथा विक्रय को एक पार्टनर-शिप कम्पनी में संगठित कर रखा था। सब हिस्सेदारों को वेतन मिलता था और वर्षोपरान्त बोनस भी मिलता था। कम्पनी की पूंजी में निरन्तर वृद्धि हो रही थी और उसमें से ही समय-समय पर विशेष आवश्यकताओं के लिये धन निकाला जाता था।

विशेष आवश्यकताएँ विवाहादि के समय पर होती थीं। महादेव के विवाह के समय तथा बच्चों के मुण्डन के समय पूंजी में से धन निकाल कर व्यय किया गया था। ज्यों-ज्यों पूंजी बढ़ती जाती थी, व्यवसाय को विस्तार दिया जा रहा था। सन् १९३७ में व्यवसाय की छः शाखाएँ थीं। लाहौर, कराची, दिल्ली लखनऊ, पटना और कलकत्ता में। बम्बई का मुख्य कार्यालय पृथक् था। सब शाखाओं सहित व्यवसाय की पूंजी दस लाख रुपये से अधिक हो गयी थी।

ललिता का ज्ञानस्वरूप से लड़का कृष्णस्वरूप व्यवसाय में सम्मिलित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। उसकी प्रकृति अपने भाईयों से मिलती नहीं थी। इस कारण जब उसने पृथक् काम करने में रुचि प्रकट की तो उसे पचास हज़ार रुपया दे दिया गया और उसने आयात-निर्यात का व्यवसाय आरम्भ कर दिया। उसे कार्य करते हुए भी चार वर्ष हो चुके थे, और उसका कार्य उन्नति कर रहा था।

कृष्ण जब विवाह कर पत्नी मेरी को लाया तो प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह सब के साथ रहे अथवा अपना मकान पृथक् ले ले। वह पृथक् और स्वतन्त्र रहना चाहता था। इस कारण विवाह के कुछ ही दिन पश्चात् उसने अपने पिता से कह दिया, "पिता जी ! मैं अपनी पत्नी के साथ पृथक् मकान में रहना चाहता हूँ।"

"तो ऐसा तुम्हारी पत्नी चाहती है ?"

"उसने तो कुछ नहीं कहा। मैं अपने मन से ही कहता हूँ। एक विदेशीय लड़की भारतीय परिवार में खप नहीं सकेगी।"

"उससे इस विषय में पूछा है ?"

"अभी तो उसे आये एक सप्ताह ही हुआ है। वह इस विषय में कुछ नहीं कह रही। पर मैं विचार करता हूँ कि उसके कहने से पहले ही प्रबन्ध कर दिया जाये तो ठीक होगा।"

"देखो कृष्ण ! तुमको इस परिवार में रहते हुए इतना काल व्यतीत हो चुका है। तुमको कोई कष्ट है तो बताओ ?"

"अभी तक तो किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ, परन्तु एक विदेशीय लड़की की सुविधा के लिये ही ऐसा कह रहा हूँ।"

"अच्छा, उसे बुलाओ। मैं उसे अपने विषय में स्वयं निश्चय करने देना चाहता हूँ।"

मेरी आई तो विजय ने बात अंग्रेज़ी में आरम्भ की। मेरी अंग्रेजी भाषा ही भली-भाँति समझती थी। विजय ने कहा, "मेरी ! तुम्हें इस घर में आये हुए एक सप्ताह होने जा रहा है। तुम इस घर में कैसा अनुभव करती हो ?"

"मैं सुखी हूँ।" मेरी इस प्रश्न का आशय नहीं समझी थी। इस पर भी उसने अपनी स्वाभाविक प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी।

"देखो, तुम्हारी दो सास हैं। इनसे तुम्हें किसी प्रकार की शिकायत है ?"

इस प्रश्न पर मेरी अपने श्वसुर का मुख देखने लगी। उसे मौन देख, विजय ने पूछ लिया, "तुम चुप हो। इसका यह अभिप्राय भी हो सकता है कि तुम्हें उनसे कष्ट है और तुम उनके मुख पर कहना नहीं चाहतीं।"

"नहीं;" मेरी ने सतर्क उत्तर दिया, "मेरा चुप रहने का यह अर्थ नहीं।"

"तो जो अर्थ है, वह तुम बताना नहीं चाहतीं क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बताना तो चाहती हूँ, परन्तु आपके प्रश्न का अभिप्राय नहीं समझी। इस कारण मैं विचार कर रही थी कि किस बात का उत्तर दूँ।"

विजय ने कहा, "प्रश्न बहुत ही सरल है। देखो मेरी! अपने ससुराल में लड़की का सम्बन्ध दो मुख्य व्यक्तियों से होता है। एक अपने पति से और दूसरा अपनी सास से। तुम्हारा विचार तुम्हारे पति के विषय में जो कुछ भी है, वह तुम्हारी निजी बात है। परन्तु परिवार में दूसरे दर्जे के लोगों के प्रति ही तुम्हारे विचार जानना चाहता हूँ।"

"परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि इस प्रश्न का प्रयोजन क्या है? बिना प्रयोजन जाने उसका उत्तर ठीक-ठीक नहीं दे सकूँगी।"

विजय समझ गया कि लड़की बहुत ही समझदार है। वह भी उसको समझाने के लिये बोला, "इस प्रश्न का आशय यह है कि तुम एक विदेश की लड़की का इस देश के रहन-सहन से समन्वय किया जा सके। बहुत प्राचीन-काल से यहाँ हमारे देश में दो प्रकार के पारिवारिक जीवन रहे हैं। संयुक्त पारिवारिक जीवन और असंयुक्त। मैं दोनों का स्वरूप तुम्हें बताना चाहता हूँ। संयुक्त पारिवारिक जीवन में सब एक ही मकान में इकट्ठे रहते हैं। इकट्ठे खाते, पहनते और परस्पर सहायक बने रहते हैं। पृथक् पारिवारिक जीवन में लड़के का विवाह होते ही वह माता-पिता से पृथक् जाकर रहना आरम्भ कर देता है।

"पहली प्रकार के पारिवारिक जीवन में इकट्ठे रहने के साथ साँझा व्यवसाय भी हो सकता है। यह नहीं भी हो सकता। उदाहरण के रूप में यहाँ मेरे चार लड़के केवल इकट्ठे ही नहीं रहते, वरन् व्यवसाय भी इकट्ठा करते हैं। इससे हमें बहुत लाभ हुआ है। परन्तु व्यवसाय इकट्ठा नहीं भी हो सकता। इस पर भी हम इकट्ठे एक ही घर में रह सकते हैं। इसमें भी लाभ है।

"इस प्रकार इकट्ठे रहने में एक शर्त रहती है। वह यह कि जब परस्पर मन न मिले तो हम लड़ते नहीं। हर्ष के साथ पृथक्-पृथक् हो जाते हैं।

"अब तुमसे यह प्रश्न है कि तुमको अपनी सासों के साथ रहना है अथवा पृथक्?"

मेरी ने पूछ लिया, "इकट्ठे रहने में क्या करना होगा?"

"कुछ नहीं। तुम्हें पृथक् कमरा मिला है। वह तुम्हारे व्यक्तिगत साम्राज्य की सीमा-रेखा है। उसके बाहर परिवार का साँझा क्षेत्र है। वहाँ एक-दूसरे की सुविधा का विचार करना पड़ता है। उस क्षेत्र में परस्पर सहयोग और सहायता भी होती है। यह भी स्वेच्छा से है, विवशता से नहीं।"

"और घर का व्यय?"

"घर, भोजन और घर की सेवाएँ, जब तक मैं जीवित हूँ, मैं अपने किसी बच्चे से नहीं लेता। मेरे मरने के उपरान्त तुम सब बराबर-बराबर रहोगे। तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम स्वयं आपस में निश्चय कर लेना।"

"दूसरे लोग क्या देते हैं ?"

"मैंने बताया है न, कि मेरे जीवन में मकान, भोजन और घर की सेवाएँ मैं देता हूँ। इनके लिये मैं किसी बच्चे से नहीं लेता।"

"यदि हम देना चाहें तो ?"

"तुम क्यों देना चाहोगी ?"

"हमारे पास देने को है। इसलिये।"

"मैं नहीं लूँगा। वह तुम रुचि के अनुसार स्वेच्छा से व्यय कर सकोगी। उसमें हममें से कोई तुमको कहेगा नहीं और उसके प्रतिकार में तुमको कुछ दूसरों से अतिरिक्त नहीं मिलेगा। ऐसी स्थिति में तुम वह, जो कुछ देना चाहती हो, यदि स्वेच्छा से अपने पर अथवा घर के किसी अन्य प्राणी पर व्यय करो तो अधिक ठीक होगा।"

"यदि घर छोड़ना हो तो ?"

"तो अपने कमरे का सामान उठाना और जहाँ इच्छा हो चली जाना।"

मेरी इस प्रबन्ध पर चकित थी। उसने केवल यह कहा, "मैं यह विचार कर रही हूँ कि आपको हमारे यहाँ रहने से कष्ट होगा।"

"मैं समझता हूँ कि यदि तुम यहाँ रहती हुई सुख अनुभव करोगी तो तुम्हें सुखी देख, हमें अति प्रसन्नता होगी। मैं अपने सब बच्चों को अपने पास रख कर अत्यन्त सुख अनुभव करता हूँ।"

"मैं आपको आपके प्रस्ताव का उत्तर अपने पति के द्वारा कल तक दे सकूँगी।"

"ठीक है। हमने कृष्ण से पूछा था। वह कह रहा था कि तुम्हारी रुचि के अनुरूप ही वह करेगा।"

दूसरे दिन रात के समय जब पूर्ण परिवार भोजन के लिये बैठा तो कृष्ण ने कह दिया, "मेरी कहती है कि यद्यपि यह प्रथा उनके देश में नहीं है, इस पर भी वह इसे मजेदार अनुभव करती है। इस कारण वह इसकी परीक्षा करना चाहती है। जब पिता जी ने यह अनुमति दी है कि हम जब चाहें तब बिना नोटिस के भी अपना सामान उठा कर यहाँ से जा सकते हैं तो फिर आज जायें अथवा कुछ वर्ष उपरान्त जायें, किसी प्रकार की असुविधा नहीं होगी। इस कारण मेरी अभी यहीं रहने का विचार रखती है।"

"बहुत खूब ! मैं इससे प्रसन्न हूँ।"

इसके कई मास उपरान्त नलिनी द्वारा लिखा ग्रन्थ 'भारतीय संस्कृति का इतिहास' पढ़ा जाने लगा। उस समय भी मेरी का यही कहना था कि वह कुछ दिन पुस्तक सुन कर परीक्षा करेगी और यदि उसे रस आया तो सुनती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ का परायण होते हुए एक वर्ष से ऊपर हो चुका था, अभी तक एक खण्ड भी समाप्त नहीं हुआ था। इसमें समय लगने का कारण यह था कि पढ़ा कम जाता था और प्रश्नोत्तर अधिक होते थे। एक-दो बार तो संशय लिखकर भुवाली में नलिनी के पास भी भेजे गये थे और वहाँ से व्याख्या सहित उत्तर आया था।

मेरी परिवार की इस प्रकार की स्वतन्त्र सामाजिकता देख, चकित थी। वह बहुत प्रसन्न थी।

सरस्वती की लड़की इन्द्रा के विवाह पर परिवार ने बीस सहस्र रुपया व्यय किया था। विवाह के उपरान्त मेरी ने अपने पति से पूछा था, "इन्द्रा के विवाह पर क्या खर्च हुआ है? बहुत धूमधाम रही है।"

"हाँ।" कृष्ण का उत्तर था, "परिवार ने बीस हज़ार रुपये के लगभग व्यय किया है। इसके अतिरिक्त हमारी तरह अन्य परिवार के लोगों ने भेंट में वस्तुएँ और नकद भी दिया है। हमारे बाबा ने भुवाली से पाँच हज़ार भेजा है।"

"उनकी आय का स्रोत क्या है?"

"भुवाली में फलों का एक उद्यान है और हमारी दादी कुछ धन इच्छा-पत्र लिख कर छोड़ गयी है। उसमें से ही यह दिया गया है।"

"यदि हमारे बच्चों का विवाह होगा तो उनको भी ये सब लोग देंगे?"

"हाँ; 'प्रेजैण्ट्स' तो निश्चित नहीं होते। सब अपनी-अपनी सामर्थ्य और रुचि अनुसार देते हैं। परन्तु परिवार के व्यवसाय में से कुछ नहीं मिलेगा।"

"पर आप घर के व्यवसाय में सम्मिलित क्यों नहीं हो जाते?"

"अपना व्यवसाय उनके व्यवसाय में मिलाना पड़ेगा।"

"तो मिला दीजिये। इसमें तो हमारा खर्चा ही निकलता है।"

"परन्तु उस अवस्था में वेतन मिलेगा और वेतन के अनुसार खर्च रखना होगा। अब तो यह है कि जब अधिक आय होती है तो अधिक व्यय करते हैं और जब आय कम होती है तो व्यय कम करते हैं। तब हमें नियम में बँध जाना होगा और साथ ही वेतन में से भी कुछ बचाना पड़ेगा।"

"परन्तु यदि किसी दुर्घटना अथवा कोई बीमारी आने पर अधिक व्यय हुआ तो क्या होगा?"

"संयुक्त पारिवारिक जीवन में इस प्रकार के आपत्कालीन खर्च परिवार देता है।"

"तब तो मैं समझती हूँ कि हमें कल ही परिवार में सम्मिलित होने का प्रस्ताव कर देना चाहिये।"

"तुरन्त?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, मैं अब विस्तार की ओर चल पड़ी हूँ। इस कारण अकेली रहने के स्थान, इकट्ठे रहने में सुख लग रहा है।"

"ओह! यह नया विस्तार कब तक हो रहा है?"

"अभी तो इसका प्रारम्भ ही है। इस पर भी मैं उसके लिये अभी से चिन्ता करने लगी हूँ।"

कृष्ण हँस पड़ा और बोला, "बहुत दूरदर्शी बन रही हो।"

: १० :

मेरी को विस्मय हुआ कि उनके परिवार के व्यवसाय में सम्मिलित होने के प्रस्ताव पर किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। विजय ने उस प्रस्ताव को ऐसे सुना, मानो खाने के 'मीनू' में एक पदार्थ और सम्मिलित किया जा रहा है।

विजय का कहना था, "ठीक है। कृष्ण को चाहिये कि अपने व्यवसाय के सब रजिस्टर कीर्ति को चैक करने के लिये दे-दे। बैंकों में नकद और व्यवसाय में पूँजी भी बतानी पड़ेगी।"

यद्यपि कृष्ण कुछ जल्दी दोनों व्यवसायों को मिश्रित करने की आवश्यकता अनुभव नहीं कर रहा था, परन्तु उसकी पत्नी मेरी अर्थात् मीरा जल्दी मचा रही थी। इससे कृष्ण अगले दिन व्यवसाय के कार्यालय में सब रजिस्टर, बैंकों की पास-बुक और चैक-बुक लेकर कीर्ति के पास जा पहुँचा।

कीर्ति ने रजिस्टर इत्यादि अपने अधिकार में कर लिये और कहा, "मैं इनका अध्ययन कर लूंगी। आप अब अपना कार्यालय यहीं ले आइये। यह साथ वाला कमरा आपके कार्यालय के लिये नियत किया जा रहा है।"

यह कमरा उसके कार्यालय से कुछ छोटा था, परन्तु वहाँ कमरे का भाड़ा देना पड़ता था और यहाँ मकान परिवार की सम्पत्ति थी।

कृष्ण ने भीतर जाकर कमरे को देखा। उसके साथ कीर्ति भी वहाँ जा पहुँची और उसने समझा दिया, "यह कमरा केवल आपके बैठने, पत्र-व्यवहार करने तथा मिलने आने वालों से बातचीत करने के लिये होगा। अब आपको हिसाब-किताब नहीं रखना होगा। वह मैं रखूँगी।

"शेष, काम करते हुए सुविधानुसार प्रबन्ध हो जायेगा। अभी मेरे कार्यालय का चपरासी आपकी भी सेवा करेगा। पीछे यदि काम बहुत अधिक हुआ तो एक चपरासी पृथक् रख दिया जायेगा।"

कृष्ण को इसमें किसी प्रकार की आपत्ति प्रतीत नहीं हुई। उसने पूछा, "तो उस कार्यालय को अभी छोड़ दूँ?"

"नहीं; पिता जी की सम्मति है कि वह कार्यालय अभी तीन महीने तक रखना होगा। आपका चपरासी वहाँ बैठा करेगा और वहाँ आने वाली डाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ पहुँचा दिया करेगा। साथ ही कोई मिलने के लिये आये तो उसें यहाँ भली-भाँति पता बता कर भेज दिया करेगा।

"तीन महीने के उपरान्त वह स्थान छोड़ दिया जायेगा और फिर वहाँ चपरासी की भी आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"मेरा पर्याप्त समय हिसाब-किताब रखने में तथा पत्र-व्यवहार में व्यय होता है।" कृष्ण ने कहा।

"पत्र-व्यवहार में भी आप हमारे स्टेनो को पत्र लिखा दिया करिये और वह टाईप कर आपके हस्ताक्षर करा कर पोस्ट करवा दिया करेगा।"

"मैं तो फिर खाली हो जाऊँगा।"

"नहीं; तब आपसे अधिक काम लिया जा सकेगा। वह काम क्या होगा यह तो पिता जी ही बतायेंगे।"

"भाभी! अब तो पासा फेंक दिया है। अब जो हो, सो हो।"

"होगा यह कि आप शीघ्र ही लखपति हो जायेंगे।"

"तो इस व्यवसाय में सब लखपति हैं?"

"हाँ; हमारी सम्पत्ति अब कई लाख रुपये है। यह व्यवसाय चालीस हज़ार की पूंजी से आरम्भ किया गया था। वह सबका ही है। अब आपके व्यवसाय से हमारी आय बढ़ जायेगी।"

चार वर्ष में कृष्णस्वरूप की पूंजी केवल वही थी, जो कागज़, कलम, दवात, मेज़, कुर्सी में लगी थी। बैंक में जो रुपया था, वह पूंजी कही जा सकती थी। वह और दुकानदारों से लेना तथा देना गिनकर पचास हज़ार रुपये से अधिक नहीं था। इस पर भी वह दो हज़ार रुपये के लगभग प्रति मास आय करता था। वह लगभग सब व्यय कर देता था।

कीर्ति ने सब हिसाव-किताव देखा। उसकी रिपोर्ट पर विजय का यह कहना था कि इसमें से आधी पूंजी कृष्ण को दे दी जाये और आधी व्यवसाय में रहने दी जाये।

एक सहस्र रुपया प्रति मास का कृष्णस्वरूप का वेतन निश्चय हो गया। यह उसको नियम से मिलने लगा। कृष्ण को अपने व्यवसाय के प्रबन्ध के लिये युरोप, अमेरिका इत्यादि देशों में जाना पड़ता था। अब वह पूर्ण व्यवसाय का प्रतिनिधि था। पुस्तकों के व्यवसाय को विदेशों में विस्तार देने के लिये उसे व्यवसाय के नियमों से अवगत कर दिया गया।

अब सन् १९३८ में कृष्ण को परिवार के व्यवसाय में सम्मिलित हुए एक वर्ष हो चुका था। उसके एक लड़की हो चुकी थी। इस समय तक बाबा की पुस्तक का दूसरा खण्ड पढ़ा जा रहा था। मेरी के और परिवार के अन्य लोगों को घर के पुरखा के विस्तृत ज्ञान का पता चल चुका था और उससे सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावित थे।

सोम राजनीति में रुचि लेता हुआ अपने-आपको वायु में लटकता हुआ अनुभव करता था। सन् १९३७ के निर्वाचनों में वह कांग्रेस का टिकट नहीं पा सका था। इसका प्रभाव यह हुआ था कि उसका कांग्रेस से मतभेद बहुत अधिक हो गया और उसके लिये कोई राजनीतिक दल नहीं था, जहाँ वह काम कर सके।

एक बार विजय ने कहा था कि सोम के लिये हिन्दू महासभा में काम मिल सकेगा। अतः वह इसके विषय में विचार करने लगा। उसने अपने पिता से बात की तो पिता ने उसे भुवाली का मार्ग दिखा दिया। सोम ने कहा, "पिता जी! भुवाली तो कई बार जा चुका हूँ, परन्तु इस विषय में बाबा ने कभी बात नहीं की।"

"यह भी उन्हीं से पूछना कि उन्होंने इस विषय में तुम्हें अभी तक क्यों नहीं बताया। इस पर भी मैं जानता हूँ कि वे इस सभा के विषय में बहुत-कुछ जानते हैं।"

एक दिन सोम छापाखाना के काम से अवकाश लेकर भुवाली को चल दिया। भुवाली में नलिनी और आनन्द दोनों मिले। आनन्द ने भाई परमानन्द से सम्पर्क बनाया हुआ था। जब भी भाई जी असेम्बली में उपस्थित होने के लिये दिल्ली में होते थे, आनन्द भी वहाँ पहुँच जाया करता था। यह मई मास था और सोम बिना सूचना के वहाँ पहुँचा तो दोनों को विस्मय हुआ।

"सोम!" नलिनी ने कमरे से निकल, सोम की पीठ पर प्यार देते हुए कहा, "बिना सूचना के आ गये हो?"

"बाबा! बहुत दिन से आपसे मिलने का विचार कर रहा था, परन्तु मुद्रणालय से छोटी माँ ने छुट्टी दी तो फिर सूचना भेजने पर समय व्यर्थ गँवाना ठीक नहीं समझा।"

नलिनी की वयस् इस समय सत्तासी वर्ष की थी, इस पर भी वह सीधी कमर कर अभी चलता-फिरता था।

सोम अपने साथ केवल एक सूटकेस लाया था। वह काठगोदाम से बस में भुवाली आया था और वहाँ से अपना सूटकेस स्वयं ही उठाये हुए कोठी पर पहुँच गया था।

आनन्द ने कहा, "आओ, सोम! तुम्हें कमरे में ठहरा दूं। तुम्हें चाची से मिलना चाहिये। वह इस समय खाने के उपरान्त विश्राम कर रही मालूम होती है।"

आनन्द सोम को अपने कमरे के बगल में ले गया और वहाँ नौकर को बिस्तर इत्यादि लगाने के लिये कह, खाने के कमरे में ले आया। वहाँ पाचक को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया कि जो कुछ भी खाने के लिये तैयार है, ले आओ।

सोम ने पाचक को कहा, "मंगल ! चाय अथवा कॉफी। बस, और कुछ नहीं। भोजन मैंने काठगोदाम में ही ले लिया था।"

आनन्द सोम को वहाँ पृथक् में एक विशेष प्रयोजन से लाया था। उसने कहा, "पिता जी का स्वभाव देश की अवस्था देख-देख कर चिड़चिड़ा हो रहा है। इस कारण इनके सामने कांग्रेस के विषय में बात नहीं करना।"

"पर चाचा जी ! मैं तो कांग्रेस छोड़ चुका हूँ।"

"कब से ?"

"विचारों से तो सन् छब्बीस से ही मतभेद उत्पन्न हो गया था। उस समय सैद्धान्तिक मतभेद इतना प्रबल नहीं था, जितना कि नेताओं के व्यवहार से मन खिन्न था। मैं और पिता जी यह मानते थे कि यदि देश और जाति को उन्नति की ओर ले चलना है तो उपायों में मतभेद सहन करना चाहिये। इस कारण गांजी जी की नीतियों को पूर्ण रूप से स्वीकार न करते हुए भी कांग्रेस को सहन करता हुआ मैंने स्वराज्य-पार्टी की ओर से चुनाव लड़ा। परन्तु तत्कालीन पार्टी के नेता पण्डित मोतीलाल के व्यवहार से उचाट हो, मैं नैशनलिस्ट पार्टी में चला गया। नैशनलिस्ट पार्टी तो लाला लाजपतराय की मृत्यु के उपरान्त और पण्डित मदनमोहन मालवीय जी के राजनीति से पृथक् होने के कारण मृत-प्राय: हो गयी थी।

"अब सन् १९३५ के संविधान के बाद पुन: कांग्रेस में कार्य करने का विचार आया था। मुझे ज्ञात था कि कांग्रेस न-न करती हुई भी चुनाव लड़ेगी और फिर समय पाकर कौंसिलों में जाकर कार्य करेगी। अत: मैंने असैम्बली की एक सीट के लिये निर्वाचन लड़ने का पुन: विचार किया और लखनऊ-कांग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित हुआ। परन्तु मैं कांग्रेस के बहुमत को अपने अनुकूल समझ, विपक्षी मत का खण्डन करने लगा था। दुर्भाग्य यह हुआ कि विपक्षियों के नेता जवाहरलाल थे। गांधी जी के कहने पर बहुमत ने उन्हें प्रधान बनाया था, परन्तु जवाहरलाल जी ने अपने विरोधी-पक्ष के लोगों को चुन-चुन कर कांग्रेस से बाहर निकालना आरम्भ कर दिया। उनका रोष मुझ पर भी प्रकट हुआ और मुझे कांग्रेस का टिकट नहीं मिला।

"इस सब पर भी मेरे कांग्रेस से तटस्थ होने में कोई कारण नहीं था, परन्तु जिसको मैं बहुमत का पक्ष कहता था, उसके नेता गोबर-गणेश निकले। गांधी जी पूर्ण रूप से नेहरू के मत का विरोध करते हुए भी नेहरू का पृष्ठ-पोषण करते हैं और ये नेहरू के विरोधी-पक्ष वाले नेहरू के सामने चारों खाने चित्त हो गये हैं।

"पिता जी कहते थे कि इन नेताओं में दो दोष हैं। एक तो यह कि ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी आत्मा को अमर नहीं मानते । इस कारण सिद्धान्त पर दृढ़ रहते हुए भी अपनी कामना की पूर्ति न होती देख, समझते हैं कि उनका जीवन असफल हो जायेगा । वे अगले जीवन में विश्वास नहीं रखते और इस जीवन में सफलता न देख, सिद्धान्त-हीन हो सफलता प्राप्त करने का यत्न करते हैं ।

"दूसरी बात है इनकी मनोकामना की । ये नेता बनकर जन-जन की वाह-वाह सुनना चाहते हैं और ज्यों-ज्यों स्वराज्य समीप आता-जाता है, ये कांग्रेसी नेता अपनी नेतागीरी से मोह के कारण चंचलता अनुभव करने लगे हैं ।

"मैं इस स्थिति को देख अब कांग्रेस की विरोधी नीति वाली किसी संस्था में जाना चाहता हूँ । पिता जी ने बताया था कि यदि कांग्रेस का कोई विरोध कर सकता है तो हिन्दू महासभा ही कर सकती है । इस पर मैं हिन्दू सभा को ढूंढने लगा हूँ । इस खोज में पिता जी ने मुझे बाबा के पास भेजा है ।"

"हाँ; यहाँ पिता जी तुम्हारा मार्ग-दर्शन कर सकेंगे, परन्तु कदाचित् तुम वहाँ भी वही त्रुटि पाओगे, जो कांग्रेस में देख कर वहाँ से भागे हो ।"

"क्या त्रुटि है ?"

"तुम कांग्रेस से उचाट किसलिये हुए हो ?"

"वहाँ गांधी जी का प्रभाव इतना है कि उनका कोई विरोध नहीं कर सकता ।"

"परन्तु गांधी जी का प्रभाव तो देश-भर में है । कांग्रेस के बाहर भी है । कदाचित् तुम नहीं जानते कि मैं अभी-अभी दो सत्याग्रहों में भाग लेकर आया हूँ । हैदराबाद में आर्य-समाजियों का सत्याग्रह और भागलपुर में हिन्दू महासभा का सत्याग्रह । दोनों स्थान पर पकड़ा गया था और वहाँ के नेताओं के साथ रहने का अवसर मिला है । उनसे मैं जब कहता था कि देश में वर्त्तमान वैमनस्य गांधी जी की नीतियों के कारण है तो सब मुझे मूर्ख समझते थे ।

"हैदराबाद में आर्य-समाजियों के नेता श्री शुक्ल सत्याग्रह में महात्मा जी के आशीर्वाद के लिये व्याकुल हो रहे थे और भागलपुर में हिन्दू महासभा के नेता डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी गांधी जी के अनन्य भक्त थे ।"

सोम आनन्दस्वरूप का मुख देखता रह गया । इस समय मंगल कॉफी बना कर लाया और साथ ही बिस्कुट ले आया । चाचा-भतीजा दोनों पीने लगे । वे अभी कॉफी ले ही रहे थे कि सोम की चाची प्रभा वहाँ आ गयी और जब सोम ने उठ कर चाची के चरण-स्पर्श किये तो वह पूछने लगी, "सोम ! आज एकाएक बाबा की याद क्यों आ गयी है ?"

"चाची ! चाचा और चाची की भी याद यहाँ खींच लायी है ।"

"पत्नी को भी साथ लाये हो ?"

"वह बम्बई में बैठी व्यवसाय की गिनती-मिनती कर रही है । वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने अपने को परिवार का इतना आवश्यक अंग बना लिया है कि पिता जी उसको छुट्टी दे ही नहीं सकते ।"

"तो तुम कीर्ति से लड़ कर चले आये हो ?"

"लड़ कर तो नहीं आया । पर चाची, उसे बता कर भी नहीं आया । पिता जी ने पीछे उसे बता दिया होगा । उनसे मैं कह आया हूँ कि मैं यहाँ आ रहा हूँ ।"

"और अपना काम किसको सौंप आये हो ?"

"छोटी माँ को । वे ही मुद्रणालय का काम मेरी अनुपस्थिति में देखा करती हैं ।"

"और उन्हें क्या बता कर आये हो ?"

"यही कह आया हूँ कि मैं दो सप्ताह के लिये भ्रमण करने जा रहा हूँ। उन्होंने पूछा नहीं कि कहाँ और मैंने बताया नहीं ।"

आनन्द और प्रभा दोनों हँस पड़े थे । इस समय नलिनी भी वहाँ आ गया । मंगल, प्रभा और नलिनी के लिये भी कॉफी बना लाया ।

नलिनी विजय इत्यादि का स्वास्थ्य-समाचार पूछने लगा । जब सबकी कुशल-मंगल पूछ चुका तो नलिनी ने व्यवसाय के विषय में पूछ लिया । इस पर सोम ने बताया, "बाबा ! अब तो कृष्ण ने भी अपना व्यवसाय परिवार के व्यवसाय के साथ मिला दिया है ।"

"सत्य ? यह सूझ-बूझ उसे किसने दी है ?"

"भाभी मीरा ने ही दी प्रतीत होती है । एक रात, खाने के समय उसने पिता जी से पूछा था कि क्या वे अपना व्यवसाय परिवार के साथ नहीं मिला सकते ?

"पिता जी ने सहज भाव में कह दिया, 'क्यों नहीं ?'

"बस अगले दिन कृष्ण ने अपने व्यवसाय के सब कागज-पत्र कीर्ति की मेज़ पर ला रखे और दोनों व्यवसाय एक हो गये हैं ।

"इसे दो वर्ष होने जा रहे हैं । उनका कार्यालय भी अब अपने मकान में आ गया है । उनको अभी एक सहस्र रुपया मासिक वेतन मिलता है । दो मास हुए, कृष्ण फ्रांस और इटली गया हुआ था । उसे अपनी पुस्तकों का काम करने को भी कहा गया था । वह इन दो देशों से पाँच हज़ार पौण्ड का ऑर्डर लाया है ।"

"और उसका अपना काम कैसा चलता है ?"

"पहले से अच्छा ही है ।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि कृष्ण की पत्नी कृष्ण से अधिक समझदार है ।"

"हाँ, बाबा ! रात को जब आपके ग्रन्थ का पाठ होता है, तब सबसे अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न वही पूछा करती है ।"

"उसे मेरी ओर से ग्रीष्म-ऋतु में यहाँ आने का निमन्त्रण दे देना ।"

"कह दूँगा ।"

"और तुम अपनी सुनाओ ?"

सोम विचार करने लगा कि राजनीति की बात किस प्रकार आरम्भ करे ? वह बाबा को रुष्ट करना नहीं चाहता था ।

: ११ :

सोम ने विचार कर नपे-तुले शब्दों में अपनी समस्या उपस्थित कर दी। उसने कहा, "बाबा ! मैं पिछले वर्ष पुनः कांग्रेस में सम्मिलित हुआ था । देश में अन्य कोई राजनीतिक संस्था जीवित दिखायी नहीं देती । परन्तु कांग्रेस ने मुझे स्वीकार नहीं किया ।"

"क्यों ?"

"एक तो इसलिये कि सन् १९२६ में मैं नैशनलिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो गया था और दूसरे, मैंने जवाहरलाल के समाजवाद का खण्डन युक्तियुक्त ढंग से किया था ।"

"पर यदि तुम कांग्रेस में गये थे तो वहाँ के राजा का विरोध नहीं करना चाहिये था ।"

"विरोध तो किया था बुद्धि से विचार कर, और कांग्रेस में सम्मिलित हुआ था देश-भक्ति के मनोद्गार से प्रेरित होकर ।"

नलिनी हँस पड़ा । सोम इससे प्रसन्न था । वह समझ गया कि उसका अपनी समस्या रखने का ढंग बाबा के अनुकूल हुआ है । उसने भी बाबा के साथ हँसते हुए कहा, "बाबा ! मैं गांधी जी की नीति के कभी भी अनुकूल नहीं रहा । परन्तु क्योंकि वे कांग्रेस के सदस्य भी नहीं, इस कारण मैं कांग्रेस में जाने में हानि नहीं मानता था; परन्तु जवाहरलाल जी को मैं इतना शक्तिमान नहीं समझता था कि वे बहु-संख्यक नेताओं की भी अवहेलना कर सकेंगे ।"

नलिनी ने गम्भीर हो कहा, "यह गांधी जी की सहायता से ही सफल हुआ होगा ।"

"हाँ, बाबा ! विचित्र समस्या है । एक ओर हिन्दू-धर्म में निष्ठा, ब्रह्मचर्य की महिमा का बखान, परमात्मा में अगाध श्रद्धा रखने वाला और दूसरी ओर हिन्दू-धर्म की खिल्ली उड़ाने वाला; पर-स्त्रियों से सम्बन्ध रखने को न 'ऐमोरल[1]' न 'इम्-मौरल[2]' मानने वाला तथा ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करने

---

१. नैतिक; २. अनैतिक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला; दोनों में मित्रता और परस्पर का संरक्षण अति विस्मयजनक है।"

"इसमें विस्मय करने की कुछ भी बात नहीं। इतिहास में ऐसा अनेकों बार होता देखा गया है। कारण यह कि शारीरिक आकर्षण को मानसिक और आध्यात्मिक गुणों का विरोध करते कई बार देखा जाता है।

"यह सुना है अथवा नहीं कि राजा-रईस प्रायः अपने नाई और कहारों से मित्रता रखते थे। उनसे जो काम कोई विद्वान् अपनी योग्यता से नहीं निकाल सकता था, वह उनके नाई, कहार निकाल लेते हैं। यह शारीरिक आकर्षण कहलाता है। जब यह प्रबल हो जाता है तो फिर मन, बुद्धि और आत्मा शरीर के चाकर बन, उसके पीछे चल पड़ते हैं।"

"बाबा! शारीरिक आकर्षण का क्या अभिप्राय है? दोनों पुरुष-वर्ग में हैं। दोनों में आयु का भी भारी अन्तर है। जाति, बिरादरी और खान-पान का भी अन्तर तो स्पष्ट ही है।"

"सोम! मेरा अभिप्राय यौन-सम्बन्ध से नहीं है। मेरा कहना है कि पूर्व-जन्म के कर्मों से कभी शरीर में प्राणों का विशेष संचार होता है और उससे शरीर में कुछ ऐसा आकर्षण आ जाता है कि जो भी सामने आता है, वह नत-मस्तक हो जाता है।

"यह आकर्षण गांधी जी और जवाहरलाल में विशेष प्रतीत होता है। दोनों देश के बड़े-बड़े नेताओं पर ऐसे प्रभाव डालते हैं कि उनके मुख की बोली बन्द हो जाती है।

"देखो, मैं एक घटना बताता हूँ। मैं सन् १९२२ में लाहौर में था। एक गवर्नमैण्ट कालेज के सेवामुक्त प्रोफेसर, शिक्षा में एम० एस-सी० और ब्रह्म-समाज के कार्यकर्त्ता मुझे एक स्थान पर मिले और बताने लगे, 'मैं अहमदाबाद-कांग्रेस अधिवेशन से आ रहा हूँ। वहाँ जब गांधी जी भाषण देने मंच पर आये तो उनके सिर के चारों ओर प्रकाश-मण्डल दिखायी दे रहा था। मैं समझता हूँ कि वे भगवान् के अवतार हैं।'

"इसके उपरान्त मैं सन् १९२४ में पुनः उन्हीं प्रोफेसर साहब से मिला था। उस समय गांधी जी हस्पताल में बीमार पड़े थे। उनके 'अपैण्डेसाईटस' का ऑपरेशन हुआ था। एक साँझे मित्र के घर चाय पर वे मिले तो मैंने प्रोफेसर साहब से पूछा, 'आपके भगवान् बीमार पड़े हैं?'

"पहले तो वे समझे नहीं कि मैं क्या कह रहा हूँ। मैंने उन्हें दो वर्ष पहले की बात स्मरण करायी तो वे हँस पड़े और बोले, 'आप सत्य कहते थे कि सत्याग्रह सफल नहीं होगा। परन्तु इसमें गांधी जी का दोष नहीं। लोगों ने उनकी बात नहीं मानी।'

"मैं इतने पढ़े-लिखे अनुभवी व्यक्ति की इतनी न-समझी की बात सुन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गम्भीर हो गया। मैंने अनायास ही दीर्घ साँस लेकर कहा, 'नाच न जाने, आँगन टेढ़ा।'

"वे बोले, 'राजनीति में ऐसा ही होता है।'

" 'इससे देश का कल्याण नहीं होगा।' मैंने कहा और बात बदल दी।

"इस कारण, सोम ! मैं समझता हूँ कि स्वराज्य मिले अथवा न मिले; इसका सम्बन्ध देश के मानवों के कल्याण से नहीं है। यदि राजनीति धर्म तथा ईमानदारी से पृथक् है तो स्वराज्य भी कल्याणकारी नहीं होगा।

"उनकी असफलता को सबसे अधिक मोतीलाल और सी० आर० दास ने अनुभव किया था, परन्तु जब गांधी जी से पृथक् होने की बात आती थी तो वे मौन हो जाते थे।

"यह तो तुम भी जानते हो कि जब सी० आर० दास स्वराज्य दल संगठित करने बम्बई में गये, तब जिन्ना ने उनसे पूछा था, 'आपका गांधी से सम्बन्ध-विच्छेद हुआ है अथवा नहीं ?' दास का कहना था, 'वे हमारे नेता हैं।'

"बताओ, इसमें गांधी का क्या दोष है ? इस प्रकार मैं पूछता हूँ कि जब जवाहरलाल ने बिना कांग्रेस के समर्थन के, अपने समाजवाद की कूक लगानी आरम्भ की, तब जो समाजवाद में विश्वास नहीं रखते, वे भी भीगी बिल्ली की भाँति कांग्रेस में बैठे रहे, भला इसमें जवाहरलाल का क्या दोष है ?"

"पर बाबा ! मुझे तो रात नींद नहीं आती। मैं देश के लिये कुछ करना चाहता हूँ।"

"मेरा कहा मानो। तुम दिल्ली चले जाओ और भाई परमानन्द से मिल लो। अब तो सुना है कि सावरकर जी भी रत्नागिरी से बम्बई में रहने चले आये हैं। ये नेता लोग हिन्दू महासभा का पुनरुत्थान करने का यत्न कर रहे हैं। तुम उनसे मिल कर कोई अपनी योग्यता का काम ले लो और करो।

"एक बात का स्मरण रखना। प्रायः ख्याति और सिद्धान्त-परायणता साथ-साथ नहीं चलते। राजनीति में ख्याति प्रायः सिद्धान्तों को घोल कर पी जाने वालों को मिलती है। इस कारण यह मन में निश्चय कर लो कि तुमने कौन-सा मार्ग स्वीकार करना है। मैं तो यही सम्मति दूंगा कि सिद्धान्त पर दृढ़ रहो और ख्याति को लात मारो। इसमें ही देश का कल्याण है और श्रेय का मार्ग भी यही है।"

इस प्रकार सोम के भुवाली आने का प्रयोजन एक घण्टे के वार्त्तालाप में ही पूर्ण हो गया। इस पर भी वह भुवाली में पाँच दिन तक रहा।

आनन्द का एक ही लड़का था, वेदप्रकाश। वह भी पारिवारिक व्यवसाय में कार्य कर रहा था। एक पंजाबी आर्य-समाजी की लड़की से उसका विवाह हुआ था और वह कराची में रहता था। सोम ने चाची प्रभा से पूछ लिया, "वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पत्र आता है अथवा नहीं ?"

"पिछले सप्ताह उसका पत्र आया था। नीरा का एक पुत्र है। वह दो वर्ष का हो चुका है।"

सोम सुवाली की नियम से चलने वाली दिनचर्या से चकित था। एक दिन उसने प्रभा से पूछा, "चाची ! तुम्हारा यहाँ एकान्त में रहते हुए दिल नहीं ऊबता ?"

"दिल तब ऊबता है, जब एक ही कार्य बार-बार किया जाये। यहाँ तो मैं नित्य-नये लोगों से मिलती रहती हूँ।"

"सत्य ? परन्तु चाची, पिछले तीन दिन में तो यहाँ एक भी नया व्यक्ति नहीं आया।"

"सोम ! तुम अब ऐनक लगवा लो। तुमने देखा नहीं कि मैं नित्य प्रातः-काल चार घण्टे दुनिया के महान् लेखकों से बातें करती रहती हूँ। पिता जी का पुस्तकालय इतना बड़ा है कि जीवन समाप्त हो जायेगा, परन्तु वह समाप्त नहीं होगा और फिर प्रति मास नयी पुस्तकें आती रहती हैं।"

"तो इसमें तुम्हें जीवन का रस मिलता रहता है ?"

"जो तुम राजनीति में खेलते हुए प्राप्त करने की स्वप्न में भी आशा नहीं कर सकते।"

सोम विस्मित रह गया। उसने कुछ देर मन-ही-मन विचार कर कहा, "चाची ! राजनीति में तो प्रायः दुःख ही मिल रहा है। कभी सुख प्राप्त भी होता है तो क्षण-भंगुर ही रहता है। कुछ देर बाद उसके भी अनिच्छित और दुःखद् परिणाम निकलने लगते हैं।"

"और फिर भी उसके पीछे भागे जाते हो ?"

"चाची ! यह मेरी प्रकृति में है। अनायास ही मन उधर को दौड़ने लगता है और जब दौड़ने को मार्ग नहीं मिलता तो जीना हराम हो जाता है। नींद नहीं आती। रातें जागते-जागते कटने लगती हैं।

"जब मैं देखता हूँ कि कुछ ऐसा हो रहा है, जो मेरे विचार में देश और समाज के लिये हानिकर है तो उसको ठीक दिशा देने के लिये व्याकुल हो उठता हूँ और कुछ करने के लिये उतावला हो जाता हूँ।"

"पिता जी ने इस मनःस्थिति का एक इलाज ढूँढा है।"

"क्या ?"

"निष्काम-भाव से कर्म करना। अर्थात् कर्म तो करना, परन्तु उससे होने वाली हानि-लाभ की इच्छा न करना। साथ ही जो कुछ होता है, उसे अपने अदृश्य कर्मफलों का परिणाम समझना।"

"मुझे भी पिता जी ने बताया है कि हिन्दू महासभा से सहयोग करूँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु काम अपने मन के अनुसार निष्काम-भाव से करूँ। परन्तु मैं समझता हूँ कि यह कार्य तो वृद्ध-जनों से ही हो सकता है।"

"पिता जी का विचार है कि इस प्रकार का आचरण युवक भली-भाँति कर सकते हैं। वृद्ध व्यक्तियों में तो धैर्य की कमी हो जाती है। उनके पास धैर्य से प्रतीक्षा करने को समय भी कम रह जाता है। उनमें सहन करने की शक्ति भी कम हो जाती है।"

"मैं इससे उलट ही ठीक समझता हूँ।"

"तुम शक्ति के ह्रास को धैर्य और सहन-शक्ति समझते हो। यह ऐसा नहीं। वृद्ध जन प्रत्यक्ष रूप में सहन करते प्रतीत होते हैं। वास्तव में वह उनकी कार्य करने में असमर्थता होती है। युवक जब सहन करता है तो विवेक के कारण ही सहन करता है।"

"परन्तु चाची! मैं इससे उलट अपने में अनुभव करता हूँ।"

"वह इसलिये कि तुममें विवेक नहीं है। विवेक आने से स्वतः निष्काम-भाव से कर्म करने का स्वभाव बनने लगता है।"

"विवेक का क्या अर्थ है? इस शब्द को पढ़ता तो मैं भी बहुत रहता हूँ।"

प्रभा हँस पड़ी और बोली, "पढ़ने से विवेक नहीं आता। पढ़ने से ज्ञान-वृद्धि होती है, परन्तु ज्ञान को विवेक नहीं माना जाता।

"अपनी बात पर ध्यान दोगे तो तुम समझ सकोगे। तुम राजनीति पर बहुत पढ़ते रहते हो और इस समय भी तुम्हारे अटैचीकेस में दो पुस्तकें रखी हैं। यह 'पार्लियामैण्टरी प्रैक्टिसिज़' सम्बन्धी हैं। मैं कहती हूँ कि ये तुम्हारे ज्ञान में वृद्धि तो करती हैं, परन्तु तुममें विवेक निर्माण नहीं कर रहीं।

"विवेक से मेरा अभिप्राय है जीवात्मा का कर्म करने के रहस्य का अनुभव होना और फिर उस अनुभव पर चिन्तन करने की शक्ति। वह तुमने अपने में निर्माण नहीं की। देखो, सांख्य-दर्शन में लिखा है—

नोपदेशश्रवणेऽपि कृतकृत्यता परामर्शादृते विरोचनवत् ॥

"इसका अभिप्राय है कि उपदेश श्रवण करने पर भी कृत-कृत्यता नहीं आती बिना उस पर मनन किये। जैसे विरोचन को कृत-कृत्यता नहीं मिली थी।

"और लिखा है—

दृष्टस्तयोरिन्द्रस्य ॥

"उनमें इन्द्र को (विवेक) प्राप्त हुआ था।

"ये वचन उपनिषद् के एक कथानक पर आधारित हैं। यह कहा जाता है कि दैत्य और आदित्य मौसेरे भाई थे। एक बार दोनों में विवेक प्राप्त करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लालसा उत्पन्न हुई । दोनों ब्रह्मा के पास पहुँचे । ब्रह्मा दोनों का पुरोहित था । जब उन्होंने ब्रह्मा से अपनी अभिलाषा प्रकट की तो ब्रह्मा ने कह दिया कि यह बात सबको बतायी नहीं जा सकती । तुम अपने में से एक-एक प्रतिनिधि मेरे पास भेज दो तो मैं उनको समझाने का यत्न करूँगा । वह तुमको पृथक्-पृथक् समझा देगा ।

"दोनों ब्रह्मा के पास से लौट आये और अपने-अपने पुर में पहुँच, उन्होंने अपना-अपना प्रतिनिधि चुना तथा उसको ब्रह्मा के पास भेज दिया । दैत्यों का प्रतिनिधि विरोचन था और आदित्यों का इन्द्र ।

"इन्द्र और विरोचन ब्रह्मा के पास पहुँचे और कहने लगे, 'महाराज ! हमें आत्म-ज्ञान कराइये ।'

"ब्रह्मा ने कह दिया, 'अपना-अपना मुख का प्रतिबिम्ब समीप के सरोवर में जाकर देख लो ।'

"दोनों सरोवर पर गये और अपने-अपने मुख का प्रतिबिम्ब देख, प्रसन्न-चित्त लौट आये । दोनों अति सुन्दर और मूल्यवान भूषणों से अलंकृत थे । रत्न-जड़ित मुकुट, कुण्डल, कण्ठाहार इत्यादि पहने हुए थे । दोनों घर लौट गये ।

"विरोचन ने यह समझा कि मैं भूषण और सुन्दर वस्त्र हूँ । अतः वह इनको और अधिक सजाने तथा इनकी वृद्धि में लग गया । इन्द्र घर जाता हुआ ब्रह्मा के कथन पर विचार करने लगा ।

"उसने विचार किया कि जब रात को सोने के समय भूषण, वस्त्र उतार कर रख देता हूँ, तब ये मेरे शरीर पर नहीं होते, परन्तु मैं तो होता हूँ, इस कारण जो कुछ प्रतिबिम्ब में देखा था, वह आत्म-तत्त्व नहीं है ।

"वह पुनः ब्रह्मा के पास पहुँचा और पूछने लगा, 'महाराज ! जो कुछ मैंने प्रतिबिम्ब में देखा था, वह तो मैं नहीं हूँ । मैं यह पूछने आया था कि मैं क्या हूँ और आपने कहा है कि प्रतिबिम्ब देख लो । जो कुछ देखा था, वह उतार दिया, तब भी मैं तो रहा था । इस कारण जो मैं यथार्थ में हूँ, वह बताइये ?'

"ब्रह्मा मुस्कराया और पूछने लगा, 'भूषण-वस्त्रों के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखायी दिया ?'

" 'दिया था । वह मुख, नाक, कान, आँखें और हाथ इत्यादि थे ।"

" 'तो वही तुम हो ।'

"इन्द्र प्रसन्न हो लौट गया, परन्तु घर जा विचार कर पुनः लौटा और आकर कहने लगा, 'महाराज ! हमारे परिवार का एक व्यक्ति कुछ दिन हुए मर गया था । उसके नाक, कान, आँखें इत्यादि सब-कुछ था, परन्तु वह नहीं था । उसके पुत्र, पत्नी सब उसे रो-रोकर बुलाते थे, परन्तु वह न बोलता था और न उठता था ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर ब्रह्मा ने मुस्करा कर पूछा, 'उसके हाथ, पाँव, आँखें हिलते थे अथवा नहीं ?'

"इन्द्र ने उत्तर दिया, 'नहीं।'

" 'वह किसी को देखता था अथवा नहीं ?'

" 'जी, नहीं।'

"तब ब्रह्मा ने कहा, 'वही जो देखता है, बोलता है, सुनता है, इत्यादि जिससे शरीर कार्य करता है, वही तुम हो।'

"इन्द्र प्रसन्न हो चला गया, परन्तु पुनः कुछ विचार कर आया और पूछने लगा, 'पर पितामह ! चलते-फिरते तो सूर्य, चन्द्र तारागण भी हैं। तो क्या मैं वह हूँ जो सूर्य, चन्द्र तारों में है ?'

"ब्रह्मा ने कहा, 'इन्द्र ! तुम बहुत ही बुद्धिमान् व्यक्ति हो। अतः सुनो ! तुम्हारे हाथ, नाक, कान इत्यादि शरीर में एक है जो सूर्य, चन्द्र, तारागण को भी चलाता है। इसे प्राण कहते हैं, परन्तु तुम प्राण नहीं हो। सूर्य को, तुम चाहो तो रोक नहीं सकते। परन्तु तुम अपने हाथ को चाहो तो उठाओ और चाहो तो न उठाओ। तुम चाहो तो चलो और चाहो तो न चलो और बिस्तर में सोये रहो। परन्तु सूर्य ऐसा नहीं कर सकता। तुम उसे कह कर देख लो। वह तो चलेगा।'

" 'तो भगवन् ! उसमें और मुझमें क्या अन्तर है ?'

" 'कार्य करने वाला तुममें और अन्य कार्य करने वालों में पृथक्-पृथक् है। इसे जीवात्मा कहते हैं। जीवात्माएँ पृथक्-पृथक् हैं। देखो, तुम अपने भाईयों के साथ रहते हो, परन्तु तुम सब काम पृथक्-पृथक् करते हो। इस कारण तुम सबमें पृथक्-पृथक् आत्माएँ हैं। तुम एक आत्मा हो। तुम चेतन हो।"

" 'चेतन का क्या अर्थ है ?' इन्द्र का अगला प्रश्न था।

" 'चेतन उसको कहते हैं जो कर्म का काल, स्थान और दिशा निश्चय करता है। तुम्हारे सामने पचास पकवान बना कर पाचक रख देता है। तुम क्या, कब और कैसे खाओ, स्वयं निश्चय करते हो। यह तुममें चेतन आत्मा करता है।'

"इस बार इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न हो लौटा। उसने मन में विचार किया, 'मैं भूषण-वस्त्र नहीं, मैं शरीर नहीं, मैं प्राण नहीं, मैं चेतन हूँ जो अपनी इच्छानुसार इन प्राणों का प्रयोग करता हूँ।'

"परन्तु इन्द्र ने पुनः समस्या पर विचार किया और पुनः ब्रह्मा के पास आकर कहने लगा, 'भगवन् ! एक संशय अभी रह गया है।'

" 'पूछो।' ब्रह्मा ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन्द्र ने पूछा, 'यदि मैं चेतन हूँ और प्राण मेरे अधीन हैं तो सूर्य, चन्द्र, इत्यादि मेरे कहने से रुकते क्यों नहीं अथवा मेरे कहे अनुसार चलते क्यों नहीं ?'

" 'इस कारण कि उनमें के प्राणों के स्वामी तुम नहीं हो। वह कोई अन्य है। उसे परमात्मा कहा है। सब ब्रह्माण्ड में प्राण उसी के कारण कार्य करते हैं, परन्तु तुम्हारे शरीर में कार्य तुम्हारे अधीन है और तुम आत्मा हो।'

"इस प्रकार इन्द्र ज्ञान प्राप्त कर, उस पर चिन्तन करता रहा और संशयों के निवारण के लिये पुनः-पुनः ज्ञान प्राप्त करने ब्रह्मा के पास जाता रहा। वह ज्ञानवान होता गया। यह आत्म-ज्ञान ही विवेक है।

"सोम ! तुम पढ़ते हो। ज्ञान प्राप्त होता है, परन्तु तुम उस पर चिन्तन नहीं करते। इस कारण विवेक प्राप्त नहीं होता।"

सोम समझता था कि वह बहुत ज्ञानी है। आज उसे समझ में आया कि ज्ञान विवेक का प्रथम चरण है और उसे चिन्तन करना चाहिये। उसने प्रभा से ही पूछ लिया, "और चिन्तन किस प्रकार किया जाता है ?"

"वैसे इसकी कथा भी लम्बी है। इतना समझ लो कि ध्यान को विवेच्य विषय पर केन्द्रित कर, एकान्त में बैठ, विचार किया करो।"

सोम भुवाली में पाँच दिन रहा और दिल्ली जाने के लिये तैयार हो गया। उन दिनों सैण्ट्रल असैम्बली का सत्र चल रहा था। जब चलने लगा तो नलिनी ने कह दिया, "देखो, अब किसी से झगड़ा करने से पूर्व मुझसे सम्मति कर लेना। झगड़े को मिटाने के कई उपाय हैं। वह मैं तुम्हें बता सकूँगा।"

जब सोम चला गया तो नलिनी ने आनन्द को कहा, "मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि यह संन्यासी हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

Those who do not remember the past are condemned to relive it.[1] —Santyana.

महादेव के मुख से उक्त वाक्य अनायास निकल गया। परिवार नित्य की भाँति रात के खाने से पूर्व एकत्रित हुआ था और दैनिक घटनाओं पर चर्चा चल पड़ी थी। कृष्ण उसी दिन हवाई जहाज़ से रोम से आया था और वह वहाँ के कुछ अपने अनुभव और संस्करण परिवार को सुना रहा था। भुवाली के लोग भी बम्बई आये हुए थे। बम्बई में प्रान्तीय हिन्दू महासभा का अधिवेशन हो रहा था।

यह सन् १९३८ अक्तूबर मास का प्रथम सप्ताह था। कृष्ण ने उन दिनों की युरोपियन राजनीति का एक चित्र उपस्थित किया था। उसने कहा था, "पन्द्रह सितम्बर को मैं पैरिस में था। दिन-भर का काम कर मैं होटल 'डी-पैरिस होटे' में आकर 'रिसेप्शन रूम' में बैठा ही था कि बैरा समाचार-पत्र ले आया। मैंने पैसे दिये और समाचार-पत्र लेकर पढ़ने लगा।

"लिखा था—'चैम्बरलेन बर्कट्स गार्डन' पहुँच गये। वहाँ हिटलर से 'सूडेटन लैण्ड' के विषय पर वार्तालाप कर रहे हैं।

"इस समाचार में चैम्बरलेन की शान्तिप्रियता की प्रशंसा की गयी थी। कुछ अन्य लोग भी समाचार-पढ़ रहे थे। एक पुरुष और स्त्री मेरे समीप ही दूसरी मेज़ पर बैठे थे। वे इस समाचार को पढ़कर बेचैन हो रहे प्रतीत होते थे। स्त्री के मुख से निकल गया था—'दि डैविल्स!'

"इस शब्द से मेरा ध्यान उनकी ओर चला गया। मैं उनकी ओर देखने

---

१. जो इतिहास भूल जाते हैं, उनके भाग्य में उसी में पुनः जीवन व्यतीत करना लिखा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा तो स्त्री ने एक बात और कह दी। वह फ्रांसीसी भाषा में कह रही थी। उसके कथन का आशय यह था कि अब ब्रिटिश प्राइम-मिनिस्टर को गाऊन और स्कर्ट पहन लेना चाहिये।

"साथ बैठे पुरुष ने मुझे उनकी बात सुनते देख लिया था। स्त्री की पीठ मेरी ओर थी। वह पुरुष मुस्करा कर देखने लगा। मेरे मुख पर भी मुस्कराहट आ गयी। इस पर उस पुरुष ने अपने समीप बैठी स्त्री से कहा, 'देखो, वह जैण्टलमैन तुम्हारी बात पर मुस्करा रहा है।'

"यह सुन स्त्री घूमी और मेरी ओर देखकर पूछने लगी, 'तो आपको भी मेरे कहने में तत्त्व प्रतीत हुआ है?'

"मैंने हँसते हुए कहा, 'हाँ, मैडम! परन्तु मैं समझ नहीं सका कि यह स्त्री-नुमा पुरुष कैसे हिन्दुस्तानियों के लिये 'लायन' (सिंह) बन जाता है?'

"मेरे उनके वार्त्तालाप में भाग लेने ने उनको अपनी कुर्सियों का मुख मेरी ओर घुमाने में प्रोत्साहन दिया और हम एक ही मेज़ पर हो गये। उस पुरुष ने पूछा, 'आप हिन्दुस्तानी प्रतीत होते हैं?'

" 'जी; मैं एक व्यापारी हूँ और उसी सम्बन्ध में यहाँ आया हुआ हूँ।'

"इस पर उस फ्रांसीसी पुरुष ने अपना नाम बताया, 'मेरा नाम रिचर्ड माईकल है। यह मेरी पत्नी है। यह यहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी में है और वास्तव में इंगलैण्ड सरकार से घृणा करती है। यह मेरिया माईकल है।'

"पूर्व इसके कि मैं कुछ भी उत्तर देता, वह स्त्री बोल उठी, 'मैंने ब्रिटिश प्राइम-मिनिस्टर को इस कारण स्त्री नहीं कहा; क्योंकि मैं कम्युनिस्ट हूँ। वरन् यह इस कारण कि इंगलैण्ड फ्रांस को भी साथ में ले डूबेगा।'

" 'मैडम!' मैंने कहा, 'इस अवस्था में आप क्या समझती हैं कि इंगलैण्ड को क्या करना चाहिये?'

" 'इंगलैण्ड और फ्रांस को मिलकर इस समय तक हिटलर को कुचल डालना चाहिये था।'

" 'कदाचित् यह सम्भव नहीं था। और मैं समझता हूँ कि यह अभी भी सम्भव नहीं है। हमारे देश में एक कहावत है, जिसका भावार्थ यह है कि एक स्त्री जिसे 'लेबर पेन्स' (प्रसव पीड़ाएँ) हो रही हों, परन्तु अपने प्रेमी से प्रेम प्रकट कर रही हो। मैं समझता हूँ इंगलैण्ड की यही अवस्था है।'

"इस पर तो दोनों हँसने लगे। मैंने अपनी बात समझाने का यत्न किया। मैंने कहा, 'इंगलैण्ड की समस्या यह है कि इनका साम्राज्य इतना बड़ा हो गया है, जितना कि बड़ा उनका दिल और दिमाग नहीं है। इनकी दशा उस मनुष्य की-सी हो गयी है जिसका शरीर तो बड़ा हो गया हो, परन्तु दिमाग में विकास न हुआ हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये साहब ! हिन्दुस्तान में एक प्रान्त है पंजाब । उसमें एक मुसलमान सन्त की दरगाह है, जिस पर कुछ लोग अपने बच्चे चढ़ा देते थे । अर्थात् उनको दे देते हैं । वहाँ का पीर उन बच्चों के सिर पर लोहे की एक टोपी पहना देता था और वह टोपी उनके बड़े हो जाने तक सिर पर चढ़ी रह जाती थी । परिणाम यह होता था कि बच्चों का शरीर तो बड़ा हो जाता था, परन्तु दिमाग़ में विकास नहीं होता था । वे शाहदौला के चूहे कहलाते थे ।

"ब्रिटिश साम्राज्य की यही हालत हो गयी है । भूमण्डल पर सबसे बड़े साम्राज्य को नियन्त्रण में रखने वाला इंगलैण्ड छोटा हो रहा है । इसमें बुद्धिमानों की कमी हो गयी है । हराम (ill-gotten) दौलत-रूपी लोहे की टोपी उसके सिर पर चढ़ी हुई है और वह अब समझ नहीं रहा है कि इस लम्बे-चौड़े शरीर को नियन्त्रण में कैसे रखे ?

"मेरी इस कहानी और उपमा से पति-पत्नी दोनों बहुत हँसे । मैंने तब फ्रांस की अवस्था का वर्णन कर दिया । मैंने कहा, 'और फ्रांस की अवस्था यह है कि इसमें एक बहुत बड़ी संख्या में कम्युनिस्ट रहते हैं । कम्युनिज़्म तीन सौ वर्ष पुराने कैथॉलिक और 'ह्यूगनाट्स' की भाँति का ही एक मज़हब है । इनके लिये मज़हबी रीति-रिवाज़ बुद्धि और व्यवहार से भी ऊँचे हैं और उसके लिये ये लाखों की हत्या कर देने में भी संकोच नहीं करते ।'

"इस पर उस स्त्री के माथे पर त्योरी चढ़ गयी और उसने पूछा, 'मिस्टर ! क्या तुम कम्युनिज़्म को एक मज़हब समझते हो ?'

" 'हाँ, मैडम !' मैंने कहा, 'एक राजनीतिक मज़हब ।'

"इस समय बैरा हम तीनों के लिये चाय और स्नैक्स ले आया । हमने एक ही मेज़ पर बैरा को चाय रख देने के लिये कहा तो उसने मेरी मेज़ पर ही वह लगा दी ।

"वह स्त्री हम दोनों पुरुषों के लिये भी चाय बनाने लगी । मैंने अपने विचार की व्याख्या कर दी । मैंने कहा, 'एक मज़हबी व्यक्ति निरर्थक चिह्नों और रीति-रिवाजों के लिये मानवीय अधिकारों की भी हत्या कर सकता है । और यही कम्युनिस्ट कर रहे हैं ।

" 'देखो, मैडम ! एक अंग्रेज़ कवि ने यह कहा है—

'राज्य के स्वरूप के लिये झगड़ने वाले मूर्ख हैं । जो राज्य कल्याणकारी है, वह ही श्रेष्ठ है ।'

" 'परन्तु ।' उस स्त्री ने कहा, 'कम्युनिज़्म केवल एक राज्य ही तो नहीं है ?"

" 'यदि तो यह राज्य न होता, तब कुछ चिन्ता की बात नहीं थी । जैसे और अनेक मज़हब हैं, इसको भी हम बातचीत से कर निश्चय कर लेते । और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि यह केवल राज्य होता तब भी कुछ चिन्ता करने की बात न होती। तब हम उसके साथ वैसा ही व्यवहार कर लेते जैसे कई तानाशाही राज्यों के साथ किया जाता है।

" 'देखो, मैडम ! कैथॉलिक और प्रोटैस्टैण्ट मज़हब अब भी हैं, परन्तु वे इतने भयंकर नहीं रहे जितने तीन सौ वर्ष पहले थे। कारण यह था कि तब मज़हब और राज्य संयुक्त हो गये थे। इसी प्रकार कम्युनिज़्म, राज्य-सत्ता से संयुक्त होकर अति भयंकर हो गया है।'

"वह स्त्री मेरी बात और उसमें युक्ति को समझने के लिये चुपचाप चाय पीने लगी। वह पुरुष बोला, 'मिस्टर ! तुम्हारा क्या नाम है ?'

"मैंने नाम बताया और यह कहा कि भूमण्डल की राजनीति में मेरी विशेष रुचि है। इस पर हिन्दुस्तान और गांधी के विषय में बातें होने लगीं।"

कृष्णस्वरूप के इस संस्मरण पर ही महादेव के मुख से अनायास वह वाक्य निकल गया था, जो ऊपर लिख आए हैं।

नलिनी समझ रहा था कि महादेव का कथन ठीक है। उसने कहा, "हाँ, जर्मनी वाले कहते हैं कि सूडेटनलैण्ड में रहने वाले जर्मन उनके भाई हैं। प्रशिया में रहने वाले जर्मनों के साथ उनका सांस्कृतिक सम्बन्ध है। यह बात इतिहास के विपरीत है और चैम्बरलेन तथा अंग्रेज़ यह विख्यात नहीं कर सके कि वे भी जर्मनी वालों के साथ उतना ही सम्बन्ध रखते हैं, जितना कि भारत के मुसलमान अंग्रेज़ों के साथ रखते हैं।

"नेताओं का इतिहास में अधूरा ज्ञान मनुष्य-समाज की बहुत-सी मुसीबतों का कारण है।

"मनुष्य उस भाषा को भी नहीं समझता, जिसको वह नित्य बोलता रहता है। उदाहरण के रूप में मज़हब और संस्कृति में भ्रम है और संस्कृति तथा सभ्यता में भ्रम है। एक को दूसरे के स्थान पर समझ कर भ्रममूलक व्यवहार अपनाया जाता है। इसी प्रकार हिन्दुस्तान में मुसलमानों को यह ज्ञात नहीं कि वे मुसलमान पहले बने थे और इस्लाम का ज्ञान तो उनको अब भी नहीं है।

"विचित्र बात यह है कि हिन्दू नेता भी हिन्दुस्तान के मुसलमानों को एक पृथक् जाति मान रहे हैं। इनको एक मज़हब नहीं मानते।"

अब कृष्णस्वरूप ने एक अन्य घटना सुना दी। उसने कहा, "मैं पैरिस से रोम में आ गया था। जब वहाँ पहुँचा तो ऐसा प्रतीत होता था कि युरोप में भयंकर युद्ध आरम्भ होने ही वाला है। रोम में सब लोग यह समझ रहे थे कि इस युद्ध में इंगलैण्ड, फ्रांस, पोलैण्ड, युगोस्लाविया और रूस एक पक्ष में होंगे और जर्मनी तथा इटली दूसरे पक्ष में होंगे। जर्मनी, इटली का पक्ष दुर्बल होगा और फ्रांस तथा इंगलैण्ड का पक्ष प्रबल होगा। इस कारण युरोप में युद्ध की सम्भावना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रोम में सबके मुख पर शोक तथा चिन्ता की मुद्रा अंकित थी।

"प्रातः का अल्पाहार लेने के लिये मैं होटल के खाने के कमरे में आया तो प्रायः लोग समाचार-पत्र पढ़ रहे थे और सबके मुख चिन्ता से लम्बे हो रहे थे। मैंने एक व्यक्ति से पूछ लिया, 'क्या समाचार है?'

"वह व्यक्ति मेरे साथ ही हवाई जहाज़ से रोम पहुँचा था। मार्ग में भी हम दोनों साथ-साथ की 'सीट' पर बैठे थे। मैं प्रश्न करता हुआ उसके सामने ही मेज़ पर बैठ गया। उसने बताया, 'आज का समाचार है कि फ्रांस ने अपनी सेना को नकल-ओ-हरकत देने की आज्ञा दे दी है।'

"मैंने कहा, 'इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि वह दबाव डालकर हिटलर से कुछ मनवाना चाहता है।'

" 'कल चैम्बरलेन का अपने पार्लियामैण्ट में बयान यही प्रकट करता है कि इंगलैण्ड ने चैकोस्लोवाकिया से अपनी संधि पालन करने में असमर्थता प्रकट की है।'

" 'देखो, मिस्टर!' मैंने उसे कहा, 'यह युद्ध नहीं होगा। युद्ध तब होगा जब रूस, इंगलैण्ड, फ्रांस मिलकर जर्मनी पर आक्रमण करें और रूस अंग्रेज़ों से मिलेगा नहीं।'

" 'तो क्या वह जर्मनी और इटली से मिल जायेगा?' उस व्यक्ति ने पूछा।

" 'राजनीति के नियम से तो यही प्रतीत होता है। जर्मनी, इटली और रूस की मनोवृत्ति समान मालूम होती है। इंगलैण्ड और रूस की मनोवृत्ति परस्पर नहीं मिलती। फ्रांस के साथ भी अभी नहीं मिलती; परन्तु रूस यह यत्न कर रहा है कि फ्रांस में कम्युनिस्ट सरकार स्थापित हो जाये। यह हो नहीं सकेगी।'

" 'क्यों?'

" 'इस कारण कि जिस देश में स्वतन्त्र 'प्रैस' है, वहाँ कम्युनिज़्म सत्ता-सम्पन्न नहीं हो सकता।'

" 'परन्तु यह तो 'फासिज़्म' में भी है। इटली और जर्मनी में भी अल्प-मत वालों ने बलपूर्वक राज्य बनाया हुआ है और यहाँ के समाचार-पत्र भी स्वतन्त्र नहीं।'

" 'यही तो मैं कह रहा हूँ। रूस, जर्मनी और इटली में समानता है और अधिक सम्भावना यह है कि इंगलैण्ड तथा फ्रांस एक पक्ष में होंगे और वे रूस, इत्यादि का विरोध करेंगे।' "

कृष्ण की इस बात को सुन नलिनी ने यह कह दिया, "मैं तो यह भी कह सकता हूँ कि जर्मनी, इंगलैण्ड, फ्रांस और रूस के साथ कभी लड़ना नहीं चाहता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण यदि इंगलैण्ड तथा फ्रांस डट जाते तो जर्मनी चैकोस्लोवाकिया अथवा किसी भी अन्य युरोपीय देश पर आक्रमण न करता।''

''हाँ, बाबा!'' कृष्ण ने कहा, ''जब इंगलैण्ड और फ्रांस ने हिटलर को अपनी बातों और व्यवहार से यह विश्वास दिला दिया कि वे किसी सूरत में युद्ध नहीं करना चाहते, तब बर्लिन और रोम में खूब खुशियाँ मनायी गयीं और हिटलर की सेना चैकोस्लोवाकिया में घुस गयीं। चैकोस्लोवाकिया की सरकार ने अनुभव किया कि इंगलैण्ड, फ्रांस युद्ध करेंगे नहीं। इस कारण उसने भी विरोध नहीं किया। केवल प्रधान ने यह कहा, 'हमारे मित्रों ने हमें धोखा दिया है। हम निस्सहाय और निर्दोष मारे गये हैं।' ''

''परन्तु कृष्ण! मैं तुम्हारा ध्यान एक दूसरी बात की ओर खींचना चाहता हूँ। इस म्यूनिख-समझौते के उपरान्त चैम्बरलेन ने जब ब्रिटिश पार्लियामैण्ट में समझौते की सूचना दी तो पार्लियामैण्ट के सदस्यों ने चैम्बरलेन की जय-जयकार के नारे लगाये। प्रसन्नता में कागज़ और टोपियाँ उछालीं।

''पार्लियामैण्ट के छः सौ से ऊपर सदस्यों ने इस कारनामे पर प्रसन्नता प्रकट की। केवल दो आदमी थे, जिन्होंने चैम्बरलेन की इस घोषणा को इंगलैण्ड की महान् पराजय का नाम दिया था। एक थे फर्स्ट लॉर्ड ऑफ ऐडमिरैलिटी डफ कूपर। उसने मन्त्री-मण्डल से त्याग-पत्र दे दिया। दूसरा व्यक्ति था चर्चिल। चर्चिल ने नैवल चैम्बरलेन के इस कारनामे पर इस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की थी कि हमको पूर्ण और सब दृष्टिकोण से पराजय मिली है। हम घोर मुसीबत में फँस गये हैं। वे सब देश जिन्होंने म्यूनिख में हुए समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं, वे और डैन्यूब नदी के दोनों ओर के देश उस भंवर में फँस जाने वाले हैं जो अब चलेगा। यह अन्त नहीं है। यह मुसीबतों का आरम्भ है।

''जानते हो कृष्ण, इस कथन पर क्या हुआ? पार्लियामैण्ट के सदस्यों ने चर्चिल का 'शर्म-शर्म' के नारों से स्वागत किया और उसे बुरा-भला कहा। उसे 'वार मौंगर'[1] कहा गया।''

इस ससय तक खाना आरम्भ हो चुका था और सब खा रहे थे। नलिनी ने अपना कहना जारी रखा। उसने कहा, ''यही बात हिन्दुस्तान में हो रही है। पराजय को विजय माना जा रहा है। यदि चर्चिल के शब्दों में ही कहूँ तो मैं कहूँगा कि गांधी और कांग्रेस ने भारत में ऐसा भयंकर भंवर उत्पन्न कर दिया है कि जिसमें फँस कर लाखों हिन्दुस्तानी काल-कराल की गाल में भस्म होंगे। यहाँ डैन्यूब तो नहीं है, परन्तु सिन्ध तथा उसकी सहायक नदियाँ हैं। उनके किनारों पर रहने वाले लोग तन्नाह और बरबाद होंगे।''

१. युद्धोत्तेजक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

सोम हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो गया था। वह प्रान्तीय हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ताओं में था।

नलिनी और आनन्द भुवाली से इस हिन्दू महासभा का अधिवेशन देखने बम्बई आये थे। नलिनी हिन्दू महासभा के नेताओं से मिला भी था। पण्डित मदनमोहन मालवीय, श्री सावरकर, भाई परमानन्द, जमुनादास मेहता इत्यादि कई लोगों से मिलकर वह उनके विचार जान गया था।

एक दिन भोजन के समय सोम ने पूछ लिया, "बाबा! आप हिन्दू महासभा के नेताओं से मिले हैं। उनके विषय में क्या अनुमान है आपका?"

"किस विषय में पूछ रहे हो, सोम?"

"उनके विचार तथा कार्यक्रम के विषय में?"

"विचारों में मतभेद नहीं है। सबके-सब एक स्वर से हिन्दू का अभिप्राय हिन्दुस्तान का देश-भक्त, ऐसा मानते हैं। देश में वे देश की संस्कृति और मान्यताएँ भी लेते हैं। उनके विचार ठीक हैं। परन्तु जहाँ तक उनके कार्यक्रम का प्रश्न है, अभी तक तो उनके सम्मुख हिन्दू महासभा के विचार का प्रसार करने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्यक्रम नहीं। जहाँ कांग्रेस के अधिवेशन में लाखों की संख्या में लोग एकत्रित होते हैं, वहाँ हिन्दू महासभा के पण्डाल में दर्शक और प्रतिनिधि मिला कर दो सहस्र से अधिक लोग नहीं थे।

"देश के अधिकांश समाचार-पत्रों ने हिन्दू महासभा के समाचारों को स्थान नहीं दिया। इस कारण मैं समझता हूँ कि उनके सामने एक बड़ी समस्या यही है। मेरा यह मत है कि जब तक जवाहरलाल और गांधी के नाम की धूम रहेगी, तब तक कांग्रेस संस्था के अतिरिक्त किसी अन्य संस्था के लिये देश में स्थान नहीं बन सकता।

"इस कारण मेरा सुझाव था कि उनके कारनामों और नीतियों की घोर निन्दा करनी चाहिये। मेरे इस सुझाव को भाई परमानन्द के अतिरिक्त किसी ने स्वीकार नहीं किया। यद्यपि किसी ने विरोध भी नहीं किया, परन्तु किसी ने इसके विषय में अपना मुख नहीं खोला।

"भाई जी का कहना था, देश और देश के राष्ट्र को जितनी हानि गांधी जी के कार्यों और वाक्यों से हुई है, उतनी अन्य किसी के कथन इत्यादि से नहीं हुई।

"इस पर भी मैं प्रसन्न हूँ और समझता हूँ कि एक ठीक दिशा में कार्य होने लगा है।"

"बाबा! मैं प्रान्तीय हिन्दू महासभा का सैक्रेटरी बना दिया गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह ठीक ही हुआ है। मैं समझता हूँ कि तुम मेरी पुस्तक का अध्ययन करो और फिर निर्भय होकर काम करो। वह पुस्तक तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेगी।"

"मैं इस सम्मेलन से कुछ दिन पूर्व सावरकर जी से मिला था। उनसे सशस्त्र क्रान्ति के विषय में बातचीत हुई थी। उनका विचार था कि सशस्त्र क्रान्ति के लिये देश में कार्य सम्भव नहीं है। वे कह रहे थे कि सम्भवतः युरोप में और फिर भूमण्डल में युद्ध होगा। एक महान् दैत्य का हिटलर के रूप में प्रादुर्भाव हुआ है और वह अपना पेट भरने के लिये लाखों के रक्त की बलि चाहता है। युद्ध अवश्यम्भावी है। उस समय यदि राजा महेन्द्र प्रताप की भाँति, परन्तु उससे अधिक योग्य कोई व्यक्ति विदेश से भारत पर आक्रमण की तैयारी करे तो सशस्त्र क्रान्ति सफल हो सकती है। परन्तु दो शर्तें हैं। एक यह कि उससे पूर्व यहाँ गांधी के अहिंसावाद की असफलता का पर्दा-फ़ाश किया जाये, और दूसरी यह कि इस जोखम का काम करने वाला कोई चोटी का नेता तैयार हो।"

"इस समय," नलिनी ने कहा, "देश में ऐसा केवल एक ही नेता है। जिस समय युरोप में युद्ध की आशंका हो रही थी और लन्दन तथा पैरिस के गिरजाघरों में शान्ति के लिये घण्टे बज रहे थे, उस समय दिल्ली में कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक में एक नेता यह घोष कर रहा था कि युरोप का युद्ध आरम्भ करते ही भारत में सशस्त्र बग़ावत और 'जनरल स्ट्राइक' कर देनी चाहिये। वह नेता है कांग्रेस का प्रधान सुभाषचन्द्र बोस।

"उसके प्रस्ताव का गांधी जी ने घोर विरोध किया था और गांधी जी के विरोध के बाद किसी ने उसका समर्थन नहीं किया।

"इस कारण मैं यह समझता हूँ कि बोस बाबू की योजना भारत में रहते सफल नहीं हो सकती। कांग्रेस के अपने लोग ही उसे धोखा देंगे और उसका विरोध करेंगे।

"भारत दो खण्डों में विभक्त हो गया है। एक में मुसलमान हैं। सबके-सब मुसलमान ब्रिटिश सरकार के पक्ष में हैं। दूसरा ग्रुप पण्डित जवाहरलाल और कम्युनिस्टों का है। वे सशस्त्र क्रान्ति के लिये तैयार नहीं; और फिर वे युद्ध के समय तटस्थ रहेंगे।"

"क्यों? भला ये युद्ध में भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में साथ क्यों नहीं देंगे?"

"इसलिये कि रूस का क्या पक्ष होगा, अभी स्पष्ट नहीं। म्यूनिख कान्फरेंस में रूस को बुलाया नहीं गया। इस कारण रूस इस समय न तो फ्रांस और इंगलैण्ड के पक्ष में है और न ही जर्मनी के पक्ष में। हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट और पण्डित नेहरू की पार्टी भी अनिश्चित है। वे नहीं जानते कि युद्ध के समय अंग्रेज़ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध करें अथवा सहायता करें।"

सोम बाबा की इस व्याख्या पर चकित हो उसका मुख देखता रह गया। सावरकर ने भी कुछ ऐसे ही विचार प्रकट किये थे। यह विख्यात हो रहा था कि सावरकर एक विद्वान् व्यक्ति है और उसका अध्ययन विस्तृत है। विशेष रूप में क्रान्तिकारियों के इतिहास का वह पण्डित माना जाता था। अपने बाबा को भी वही विचार प्रकट करते देख वह चकित था। इस पर भी उसे दोनों के विचारों में अन्तर प्रतीत हुआ था। वह अन्तर सम्मेलन में उसे सावरकर जी का व्याख्यान सुनने पर अनुभव हुआ था। उसने बाबा से पूछ लिया, "सावरकर जी हिन्दू-संस्कृति और सभ्यता के नाम पर राजनीति का शिलान्यास करते हैं और आप भी ऐसा ही करते हैं। परन्तु बाबा, वे न तो हिन्दू-संस्कृति के लक्षण बताते हैं और न ही उन्होंने कभी यह बताया है कि दूसरों के राजनीतिक अधिकार क्या होंगे? परन्तु आप तो कुछ दूसरी बात ही कहते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि दोनों बातों में केवल इतना अन्तर है कि मैं कुछ व्याख्या से बात करता हूँ और वे सैद्धान्तिक बात कह देते हैं। वे व्याख्या में नहीं जाते; इस कारण अन्तर प्रतीत होता है।

"मैंने उनसे इस विषय पर बात की है। मैंने उनको कहा था कि संस्कृति का अर्थ सभ्यता से गलत-मलत करने से और धर्म को ही मजहब समझने से, न केवल हिन्दू और मुसलमान में मतभेद हो रहा है, वरन् हिन्दू और हिन्दू में भी मतभेद हो रहा है। परिणाम यह हो रहा है कि 'हिन्दू' शब्द की महिमा किसी के भी मन में बैठ नहीं रही।

"सावरकर जी का कहना था, 'राजनीति में सिद्धान्तों और मान्यताओं की व्याख्या कर देने से भेद बढ़ेंगे और लोग भेदों पर लड़ना आरम्भ कर देंगे। यह तो जो राजा होगा, वह समयानुसार व्याख्या कर लेगा।'

"मैं इस व्याख्या के विषय में मतभेद रखता हूँ। मैंने उनको बताया नहीं। कारण यह कि इस व्याख्या पर वार्त्तालाप करने का समय नहीं था। मेरा कहना यह है कि एक बात व्याख्या-सहित बता देनी चाहिये। वह यह कि हिन्दू मजहब नहीं है। हिन्दू एक जन-समुदाय है, जिनको एक इकाई में बाँधने वाली बात मजहब नहीं, वरन् संस्कृति है और हिन्दू संस्कृति में इस्लाम ऐसे ही समा सकता है, जैसे कि हिन्दू-समुदाय में बौद्ध, जैन, शैव, सिक्ख, राधास्वामी इत्यादि मत समाये हुए हैं। इस बात की व्याख्या करनी अत्यावश्यक है।"

"पर बाबा!" सोम ने सावरकर की मान्यताओं की सफाई देते हुए कहा, "वे कहते थे कि देश के नदी, नाले, पर्वत, उद्यानों से प्रेम एक ऐसी बात है, जो देश के सब रहने वालों को आकर्षित कर सकेगा। उनका यह भी विचार है कि पूर्वजों की स्मृति का भाव भी सबको एक सूत्र में बाँधने में सफल होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो देखने की बात है। अभी तक ये बातें मुसलमानों का समाधान नहीं कर सकीं।"

"बाबा! उनका समाधान तो वह बात ही कर सकेगी, जो वह दूसरों का समाधान करने के लिये प्रयोग करते रहे हैं।"

"वही तो मैं नहीं चाहता। बल, सत्ता, धन, जन इनका मान्यताओं के मनाने में प्रयोग नहीं होना चाहिये।"

इस पर सोम ने भाई परमानन्द जी के विचार बता दिये। उसने कहा, "भाई जी कहते थे कि मुसलमानों की समस्या, भूमण्डल की समस्या है। इसका समाधान भूमण्डल के किसी एक देश में किसी प्रकार भी कर देने से काम नहीं बनेगा। महर्षि स्वामी दयानन्द ने,'शुद्धि' इसका समाधान बताया है, परन्तु उनके विचार से यह सफल नहीं होगा। यह समस्या तो सब देशों को मिलकर हल करने की है।"

"इसमें भी कुछ सच्चाई तो दिखायी देती है।" नलिनी का कहना था, "परन्तु मुसलमानों की अन्तर्राष्ट्रीय समस्या तो सुलझेगी नहीं और अब कम्युनिज़्म की अन्तर्राष्ट्रीय समस्या उत्पन्न हो गयी है। जैसे किसी ज़माने में खलीफा बग़दाद में बैठा हुआ दुनिया-भर के मुल्कों में मिलिटरी-मिशन भेजता रहता था, वैसे ही आज स्टालिन मास्को में बैठा हुआ अपने मिलिटरी-मिशन भूमण्डल के देशों में भेज रहा है। ये मिशन और इस्लामी-मिशनों में अन्तर इतना है कि जहाँ खलीफा के पैराओ सैनिकों के रूप में जाते थे, वहाँ देश को विजय कर वे पद-दलित पहले करते थे और इस्लाम का विस्तार पीछे करते थे। परन्तु कम्युनिस्ट प्रचार पहले करते हैं और युद्ध पीछे करते हैं।

"भाई जी की और सावरकर जी की बात राजनीति है और मैं राजनीति को दूसरे दर्जा की बात मान विचारों की विजय पहले मानता हूँ। यह भी विचार-विनिमय और समाधान के द्वारा। इसमें समय लगेगा। इसमें दूसरों का सशस्त्र विरोध भी होगा। इस विरोध की प्रतिक्रिया तो समयानुसार होगी, परन्तु सिद्धान्त यही है कि सांस्कृतिक विजय पहले हो और राजनीतिक प्रभुता स्वतः आयेगी।"

"प्रजातन्त्रात्मक विधि-विधान से?"

"यह आवश्यक नहीं। इस दिशा में मत फैलाने वाले राज्य का आश्रय नहीं लेते। इस कारण प्रजातन्त्र अथवा अधिनायकवाद पृथक्-पृथक् समस्याएँ हैं। इनका सांस्कृतिक विजय से सम्बन्ध नहीं।

'रही बात इस विजय के क्षेत्र की। यह देशीय-स्तर पर हो अथवा अन्तर्देशीय-स्तर पर हो; काल, सामर्थ्य और अवसर पर निर्भर करती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

नलिनी के बम्बई आने पर एक पारिवारिक समस्या भी सामने आ गयी। यह विजय ने उपस्थित की। विजय का कहना था, "बाबा ! अपना परिवार हमारे नियन्त्रण की सामर्थ्य से कुछ बड़ा हो रहा है।

"इस समय व्यवसाय में हम घर के ग्यारह प्राणी कार्य करते हैं और घर के घटकों का मासिक वेतन-बिल दस हज़ार रुपया बन जाता है। इनके अतिरिक्त व्यवसाय में बाहरी लोग भी हैं। परिवार में घर बच्चे इत्यादि मिलाकर संख्या बीस से ऊपर है।

"परिवार के कुछ लोग यह अनुभव कर रहे हैं कि ज्यों-ज्यों परिवार बड़ा होता जायेगा, मितव्ययता का विलोप होता जायेगा। व्यवसाय में भी और घर के व्यय में भी। इस कारण कुछ लोग कह रहे हैं कि व्यवसाय का और घर का विकेन्द्रीय-करण कर दिया जाये।"

नलिनी ने कुछ क्षण आँखें मूंद विचार किया और फिर आँखें खोलकर कहा, "हो सकता है। इसमें मेरी सम्मति है कि जो परिवार से पृथक् होना चाहें, उनको होने दिया जाये। उदाहरण के रूप में इस समय पुस्तक-बिक्री की तुम्हारी आठ शाखाएँ हैं। उनमें से कुछ को आर्थिक और पारिवारिक दृष्टि से पृथक् कर दो। वे कौन हैं जो पृथक् होना चाहते हैं ?"

"पिता जी ! नाम पीछे बताऊँगा, परन्तु पहली बात तो यह है कि वे सब लोग बम्बई का काम ही लेना चाहते हैं।

"बम्बई में तीन काम हैं। छापाखाना है, विक्रय-केन्द्र दो हैं और प्रकाशन-केन्द्र एक है। तीन घटक हैं, जो विक्रय-केन्द्र को लेने के लिये उत्सुक हैं।

"पिता जी ! मैं चाहता था कि बम्बई का काम विखण्डित न किया जाये। परन्तु बम्बई से बाहर कोई जाना नहीं चाहता।"

"तो मैं इसके लिये एक सुझाव देता हूँ।"

"इसी कारण तो समस्या आपके सामने उपस्थित की है।"

"सुझाव जो ऐसी स्थिति में प्रायः प्रयोग में लाया जाता है, वह यह है कि तुम सम्पूर्ण सम्पत्ति का मूल्यांकन कर लो और देयादेय का विवरण तैयार कर लो। तदनन्तर पूर्ण व्यवसाय के ग्यारह खण्ड बना लो। प्रत्येक खण्ड में सम्बन्धित और स्थानीय कार्य हों। तब उन खण्डों को नीलाम कर दो। यदि किसी खण्ड को कोई न लेना चाहे तो उसको बन्द कर दो और वहाँ की पूर्ण सम्पत्ति को परिवार के भीतर अथवा बाहर बिक्री कर दो। उसे परिवार के आदेय में सम्मिलित कर लो।

"इस प्रकार बटवारा कर दो। तदनन्तर जो-जो घटक पुनः संयुक्त होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहें, हो जायें। जो न होना चाहें अपना-अपना काम सम्भाल लें।"

"यह बात मेरे मन में है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ सदस्य ऐसे हैं, जो यह चाहते हैं कि उनको व्यवसाय का प्रमुख कार्य खाते में लिखे मूल्य पर दे दिया जाये।"

"हाँ; यदि उसी दाम और शर्त पर कोई अन्य लेने वाला न हो तो उसको दे दिया जाये।"

"मुझे भय है कि घर में फैसला नहीं हो सकेगा और कोई भी न्यायालय का द्वार खटखटा सकता है।"

"अर्थात् जैसे आसुरी प्रवृत्ति राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में घुस आयी है, वैसी हमारे पारिवारिक जीवन में भी आ गयी है। यहाँ भी उन्हीं लीडरों की मनोवृत्ति आ पहुँची है, जो इस समय देश में व्याप्त हो रही है।"

"हाँ, पिता जी! और यहाँ भी पाश्चात्य-लहर प्रबल सिद्ध हो रही है।"

"तो ऐसा करो, कल रविवार है। तुम्हारे व्यवसाय में अवकाश रहेगा। परिवार की एक व्यवसायिक गोष्ठी बुला लो।"

"परन्तु घर के तीन सदस्य बम्बई से बाहर हैं।"

"शेष आठ तो यहाँ हैं। जो बाहर हैं, उनको यहाँ का निर्णय लिखकर भेज देना और जिसे स्वीकार न हो, वह अपनी युक्तियाँ लिखकर भेज दे अथवा स्वयं यहाँ आ जाये।"

यह वार्त्तालाप विजय और उसके पिता नलिनी में ही हुआ था। अब इस विचार को अगले दिन पारिवारिक गोष्ठी में रखा गया।

रविवार के दिन मध्याह्न के भोजन के उपरान्त परिवार की गोष्ठी मकान के ड्रायंग-रूम में सम्पन्न की गयी। गोष्ठी में नलिनी के अतिरिक्त विजय, सरस्वती, सोमदेव, कीर्ति, कृष्ण, महावीर और रघुवीर उपस्थित थे। कृष्ण, महावीर और रघुवीर की पत्नियाँ व्यवसाय में भागीदार नहीं थीं। इस कारण वे वहाँ नहीं बुलायी गयी थीं और बच्चे भी वहाँ बैठने नहीं दिये गये थे।

गोष्ठी का उद्देश्य विजय ने बताया। उसने कहा, "सरस्वती को यह पता चला है कि परिवार के कुछ सदस्य परिवार के इकट्ठा रहने में असन्तोष अनुभव कर रहे हैं। इस कारण पिता जी के यहाँ बम्बई में होने का लाभ उठाते हुए मैं उस असन्तोष के निवारण करने का उपाय करना चाहता हूँ।

"असन्तोष का कारण पता चलने पर उसका इलाज किया जा सकता है। अतः मैं चाहता हूँ कि वे सदस्य स्वयं ही बतायें कि किस विषय में उनको असन्तोष है और वे क्या चाहते हैं?"

इस प्रकार वार्त्तालाप आरम्भ कर विजय ने कह दिया "मैं चाहता हूँ, कृष्ण अपने विचार पहले बताये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण ने बाबा को सम्बोधन कर कहा, "मेरी पत्नी मीरा मुझे यह कहती रहती है कि घर में कुछ सदस्य हैं जो काम नहीं करते, परन्तु वेतन पाते हैं। इस कारण वह समझती है कि या तो उस सदस्य को व्यवसाय से पृथक् कर दिया जाये अथवा सबको पृथक्-पृथक् कर दिया जाये।"

"कौन है वह सदस्य जो वेतन तो पाता है, परन्तु काम नहीं करता।"

"सोम भैया हैं। पिछले दो वर्ष से वे काम पर कभी ही आते हैं। माता जी अब उसके भाग का काम करती हैं और एक सहायक मैनेजर पाँच सौ रुपये महीने का रखना पड़ रहा है।"

"अच्छा, और बताओ?" नलिनी का प्रश्न था।

"बाबा! मेरा तो यही कहना है। यदि सोम भैया को परिवार की ओर से सहायता देनी ही है तो उनको स्वामित्व का भाग तो मिले, परन्तु मासिक वेतन नहीं मिलना चाहिये।"

अब विजय ने कहा, "कुछ कीर्ति जी को कहना है।"

कीर्ति ने मुस्कराते हुए कहा, "परिवार के एक सदस्य को ही विदेश-भ्रमण के लिये अवसर मिलता है। वह सदस्य परिवार के अन्य सदस्यों से अधिमान की स्थिति में रहता है। मेरा प्रस्ताव यह है कि सब सदस्यों को बारी-बारी से बाहर भ्रमण के काम पर भेजा जाना चाहिये।"

"ठीक है। यह माँग अधिक मज़ेदार है।" नलिनी ने कीर्ति के मुस्कराने से समझा कि वह अपनी देवरानी मीरा और देवर कृष्ण पर कटाक्ष कर रही है।

"अन्य कोई?"

अब महावीर ने कहा, "मैं समझता हूँ कि व्यवसाय में केवल पुरुषों को ही काम करना चाहिये और स्त्रियों को व्यवसाय से छुट्टी दे देनी चाहिये। उनका वेतन बन्द और भागीदार होने के नाते उनका भाग व्यवसाय की सम्पत्ति में नहीं होना चाहिये।"

"बहुत खूब! स्त्री-वर्ग में कौन-कौन हैं, जो व्यवसाय में कार्य करती हैं?"

"एक तो माता जी हैं। उनको अब काम से मुक्त कर उनका काम किसी पुरुष को दे देना चाहिये। दूसरी भाभी कीर्ति हैं। मैं समझता हूँ कि लेखाकार का काम स्त्री के मान का है ही नहीं। यही कारण है कि वे दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती जाती हैं।"

"ओह! तो तुम अपनी माता और भाभी पर दया के भाव से उनको छुट्टी दिलवाना चाहते हो?"

"बाबा! यही कह रहा हूँ।"

"अच्छा। अन्य कोई बात है जिसे कुछ असन्तोष है?"

अब विजय ने कहा, "पिता जी! मैं समझता हूँ कि यह काल की गति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बोल रही हैं। जो बातें उपस्थित की गयी हैं, वे काल की गति का ही प्रतीक हैं।

"वस्तु-स्थिति यह है कि कृष्ण, महावीर और रघुवीर की पत्नियाँ घर में काम करती हैं। वे घर के काम को भी इतना ही आवश्यक मानती हैं, जितना कि सोम्र अथवा कीर्ति का काम। इस कारण वे अपने पतियों को कहती रहती हैं कि उनको भी कीर्तिदेवी के बराबर वेतन मिले, अन्यथा कीर्तिदेवी को भी काम से छुट्टी दे दी जाये।"

"क्यों रघुवीर!" नलिनी ने कहा, "सुना था कि तुम्हारी पत्नी घर का काम करने में बहुत सुघड़ है। क्या यह सुघड़ायी उसने प्रकट की है?"

"बाबा! वह कहती है कि उसे सुघड़ायी का लाभ ही क्या हुआ, जिसका प्रतिकार कुछ नहीं मिलता।"

"तो विजय की बात ठीक है?"

"पर बाबा! यह है न्याययुक्त।"

"देखो!" नलिनी ने अपना निर्णय बता दिया, "मैं ये सब बातें अर्थहीन समझता हूँ। ये अनुभव-विहीनता के लक्षण हैं। वास्तविक दोष यह नहीं कि तुम लोग दूसरों को वेतन लेते देख ईर्ष्या अनुभव करते हो; प्रत्युत यह है कि तुम लोग परिवार की आधार-भूत बात पर हीं कुठाराघात करना चाहते हो।

"परिवार की आधार-भूत बात यह है कि सब-कुछ साँझा है और सब उसकी बुद्धि में यत्नशील होते हैं। कोई घर में रहते हुए परिवार की सुख-सुविधा में वृद्धि करता है तो कोई हवाई-जहाज़ों में घूमते हुए ऐसा करता है। यह ईर्ष्या और द्वेष का विषय नहीं। मैं समझता हूँ कि परिवार में ले-दे की बात जो आ गयी है, वह दोष है और इसका बहिष्कार एक ही ढंग से हो सकता है कि व्यवसाय का और धन का बटवारा हो जाये।"

इस पर कृष्ण ने पूछा, "पर बाबा! इस बटवारे का आधार क्या होगा? बटवारा कितने लोगों में होगा?"

"देखो कृष्ण! जो परिवार के सदस्य घर का काम करते हैं, उनको भी मैं परिवार का उतना बड़ा ही सदस्य मानता हूँ, जितना बड़ा व्यापार में कार्य करने वाले को।

"मैं उदाहरण देता हूँ। कीर्ति घर का कार्य भी करती है और लेखाकार का भी। यह ठीक है कि जब घर का काम कर रही होती है तब दुकान का काम नहीं कर रही होती। अन्यथा वह चौबीसों घण्टे कार्य करती रहती है। इसी प्रकार रघुवीर की पत्नी भी चौबीसों घण्टे काम करती है। अतः जहाँ तक परिवार का सम्बन्ध है, दोनों बराबर कार्य करती हैं। परन्तु एक का कार्य व्यवसाय में सहायक हो रहा है और दूसरे का नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अत: मेरा सुझाव है कि परिवार में बटवारा हो जाये। व्यवसाय का बटवारा उन घटकों में ही हो, जो व्यवसाय में कार्य करते हैं और परिवार का बटवारा परिवार के सब सदस्यों में बराबर-बराबर हो।

"मैं यह चाहता था कि व्यवसाय का बटवारा होने पर भी परिवार का बटवारा न हो, परन्तु जिस प्रकार के भाव तुममें उद्भव हुए हैं, उनकी उपस्थिति में घर का बटवारा भी हो जाना चाहिये।

"अत: मैं कीर्तिदेवी से कहूँगा कि पूर्ण परिवार की सम्पत्ति का देयादेय तैयार कर दे तो बात हो सकती है।"

"बाबा! चाहें तो मैं अभी भी बता सकती हूँ। चालू व्यवसाय के कारण कुछ सहस्र का ही अन्तर होगा। यदि बाबा कहें तो मैं अभी कार्यालय से रजिस्टर लाकर एक विहंगम चित्र उपस्थित कर सकती हूँ।"

"बहुत खूब! ले आओ।"

कीर्ति मकान की नीचे की मंज़िल में कार्यालय में गयी और 'लैजर' उठा लायी। वह बोलती गयी और कृष्ण लिखता गया।

आधे घण्टे में मोटे तौर पर सब देयादेय की गणना हो गयी। सम्पत्ति और माल दस लाख, पाँच सौ, बत्तीस रुपये का था। बैंकों में नकद पाँच लाख, तीस हज़ार, पाँच सौ रुपये थे। ग्राहकों से प्राप्त करना चार लाख, पाँच हज़ार; देय, कागज़, पुस्तक और अन्य मद्दों में पाँच लाख, चालीस हज़ार, तीन सौ नब्बे रुपये।

शेष सम्पत्ति तेरह लाख, पच्चानवे हज़ार, छ: सौ बयालीस रुपये की थी।

"तो यह है बटवारे के लिये कुल रकम?" नलिनी ने विजय की ओर देखकर पूछ लिया, "विजय! अब तुम बताओ कि परिवार के कितने सदस्य काम करते हैं?"

"बाबा! ग्यारह हैं।"

"अन्य कितने हैं?"

"तीन स्त्रियाँ हैं, जो व्यवसाय में कार्य नहीं करतीं और वेतन नहीं पातीं। इनके अतिरिक्त आठ बच्चे हैं, जिनमें से कुछ अभी खेलते हैं और कुछ पढ़ते हैं।"

"देखो, विजय! मेरी सम्मति यह है कि व्यवसाय में काम करने वालों तथा घर पर काम करने वालों को सम्पत्ति के दो-दो भाग और शिशुओं को तथा पढ़ाई करने वालों को एक-एक भाग दे दो। पूर्ण सम्पत्ति को छत्तीस भागों में बाँट दो। इस प्रकार प्रत्येक के भाग में चालीस-चालीस हज़ार रुपया आ जायेगा।

"जितना नकद है, उसको तो बाँटा ही जा सकेगा और शेष जो ग्राहकों से लेना है वह वसूल कर बटवारे में ले आया जाये। अब प्रश्न रह गया है कि स्टाक

—३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और देनदारों से वसूल का बटवारा कैसे किया जाये ?

"मैं कीर्तिदेवी को यह कहूँगा कि इस कारोबार को ग्यारह भागों में बाँट दे। प्रत्येक की सम्पति का मूल्यांकन कर दे।"

"बाबा ! इसमें कुछ समय लगेगा।"

"कितना ?"

"एक सप्ताह लग जायेगा। मैं आज एक 'प्रोफार्मा' बना कर बाहर की शाखाओं को भेज दूंगी और उनसे उस फार्म पर सूचना एक सप्ताह में आ जायेगी। सूचना के उपरान्त हिसाब पृथक् रखने को कह दूंगी।"

"ठीक है। अभी मैं अगले सप्ताह तक यहाँ हूँ। मैं बटवारा करा कर ही यहां से जाऊँगा। होगा यह कि प्रत्येक खण्ड-कार्य का मूल्य बता कर उसकी नीलामी की जायेगी।

"जो भी वास्तविक मूल्य से अधिक या कम प्राप्त होगा, वह देयादेय के पर्चे में सम्मिलित कर लिया जायेगा और फिर जो-जो जिस-जिस भाग को लेगा, उतना उसे अपने भाग में से देना पड़ेगा। सब जमा उक्त प्रकार से बाँट दी जायेगी।

"अब बताओ, कृष्ण ! क्या कहते हो ?"

"मैं कालबा देवी रोड वाली पुस्तकों की दुकान लेना चाहता हूँ।"

"उसकी भी बोली हो जायेगी। जो उसके मूल्य से अधिक मिलेगा, वह पुन: सब में बंट जायेगा।"

: ४ :

सोम ने पृथक् में बाबा को कहा, "बाबा ! आपने परिवार को इकट्ठा रखने का यत्न ही नहीं किया। मैं तो अपने को पृथक् करने के लिये तैयार था।"

"सोम ! पृथक् होकर तुम निर्वाह कैसे करते ? वे तो कीर्ति को भी काम से हटाने की बात कह रहे थे।"

"मैंने कीर्ति से बात की है। वह कहती है कि उसको लेखाकार के काम में इतना अनुभव हो गया है कि वह कहीं भी नौकरी पा सकती है और घर का निर्वाह चला सकती है। और फिर आप हमें पृथक् करते समय कुछ रकम तो दिलवाते ही। मैं तो उसी पर सन्तोष करने को तैयार था।"

"नहीं सोम !" नलिनी ने निश्चयात्मक भाव में कहा, "मैं समझता हूँ कि तुम भी परिवार की सेवा कर रहे थे और कीर्ति का काम तो इतना श्रेष्ठ है कि एक क्षण के नोटिस पर उसने व्यवसाय का स्पष्ट चित्र उपस्थित कर दिया है। इससे मैंने जब देखा कि परिवार के कुछ लोग परिवार की वास्तविक सेवा को प्राप्त करते हुए भी वह अनुभव नहीं करते तो परिवार से उनको निकाल बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिये। उनको परिवार से पृथक् करने का मुझे यही उचित उपाय प्रतीत हुआ है। एक बात अब भी हो सकती है कि वे घटक जो व्यापार को साँझेदारी में रखना चाहते हैं, मिल जायें और परिवार की सम्पत्ति को ऊँची-से-ऊँची बोली देकर ले लें।''

''मैं समझता हूँ,'' सोम का विचार था, ''कि यह अब नहीं हो सकेगा। मानव-मन के दोष राग, द्वेष और लोभ उभर आये हैं।''

''तब ऐसा करो कि तुम अपने और कीर्ति को मिलने वाले धन को एक करके कीर्ति को व्यापार का कोई खण्ड ले दो। इससे वह स्वतन्त्र रूप से कार्य कर सकेगी।''

''उससे बात करूँगा।''

कीर्ति ने सरस्वती से बात की। उसने कहा, ''माता जी ! आपको अब एक पृथक् परिवार बनाना चाहिये।''

''परिवार अथवा लिमिटिड कम्पनी ?''

''व्यवसाय में साँझीदारों को आजकल की भाषा में प्राईवेट लिमिटिड कम्पनी ही कहते हैं।''

''पर मैं तो अब काम करूँगी नहीं। तुम्हारे पिता जी और मैं भी भुवाली चले जाने का विचार कर रहे हैं। मैंने आनन्द से भी विचार किया है। उसको मेरा विचार पसन्द है।''

''इस पर भी आप मेरी विचारिता प्राईवेट लिमिटिड कम्पनी में निष्क्रिय साँझीदार तो हो ही सकती हैं।''

''हाँ; यदि तुम उस कम्पनी की लेखाकार बन सको तो बात विचारणीय हो सकती है।''

''पिता जी से विचार कर लें। बाबा का यह कथन कि जो पुनः मिलना चाहें, मिल सकते हैं, इसी संयोग की ओर संकेत है।''

''तुम कुछ अन्य सदस्यों से भी बात कर लो। परन्तु कृष्ण, रघुवीर और वेद को इस कम्पनी में सम्मिलित नहीं करना होगा।''

कीर्ति ने कहा, ''मैं मीरा बहन से मिलूँगी। सुना है कि वह अब फ्रांस में जाकर रहना चाहती हैं। उसका हिन्दुस्तान में रहते-रहते जी ऊब गया है।''

''परन्तु वेद का पत्र आया है और वह स्वयं ही एक पृथक् दुकान लेना चाहता है। उसका चुनाव लाहौर वाली दुकान है।''

''और महावीर के विषय में आपकी अभिरुचि क्यों नहीं ?''

''उससे मेरी पृथक् में बात नहीं हुई। इस पर भी मैं समझती हूँ कि वह भी अपने माता-पिता के साथ भुवाली जाकर रहना चाहेगा और वह अपना कार्य वहाँ पर अधिक कुशलता से कर सकेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं यत्न करती हूँ और देखती हूँ कि अन्य कौन-कौन हमारे साथ सम्मिलित हो सकेंगे।"

इस खोज में कीर्ति का मीरा से भी सामना हुआ। वह तो सरस्वती के संकेत पर मीरा से बात करना नहीं चाहती थी, परन्तु मीरा कहीं से यह संकेत पा गयी कि कीर्ति एक प्राईवेट लिमिटिड कम्पनी का नियोजन कर रही है। अत: वह स्वयं उससे मिलने आयी।

कृष्ण कालबा देवी रोड वाली दुकान से अभी नहीं आया था। वह दुकान रात के आठ बजे तक खुली रहती थी। इस कारण वह मध्याह्नोत्तर की चाय दुकान पर ही लिया करता था।

कीर्ति चाय के लिये ड्रायंग-रूम में आकर बैठी तो मीरा भी वहाँ आ गई। उसने कहा, "बहन जी! आपने नयी कम्पनी बनाने का विचार किया है?"

"हाँ; परन्तु तुम्हें किसने बताया है?"

"बहन माधुरी बता रही थी कि आप ऐसा कर रही हैं।"

"कुछ तो करना ही होगा। मेरे घर वाले कह रहे हैं कि वे अपना शेष जीवन सार्वजनिक कार्य में लगाना चाहते हैं। अत: व्यवसाय के लिये मुझे ही यत्न करना होगा।"

"तो हमें नहीं सम्मिलित करेंगी उसमें?"

"परन्तु मैंने सुना था कि तुम फ्रांस में जाकर रहना चाहती हो। भाई साहब भी आपके साथ वहाँ ही कोई काम करेंगे।"

"हाँ; वे कह रहे हैं, परन्तु मैं इसे स्वीकार नहीं कर रही।"

"मैंने दूसरी ही बात सुनी थी।"

"क्या?"

"वह यह कि मीरा बहन फ्रांस लौटने के लिये उत्सुक हैं और भाई कृष्ण पत्नी के पीछे-पीछे वहाँ जाना चाहते हैं।"

मीरा हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "वे मेरे पीछे-पीछे कभी भी नहीं गये। अभी तक तो मैं ही उनके पीछे-पीछे यहाँ आयी हूँ। मैंने ही उनको परिवार के व्यवसाय में सम्मिलित होने के लिये कहा था। यह इस कारण कि मैं उनको इस देश और इस परिवार से बाँध देना चाहती थी।"

कीर्ति मुख देखती रह गयी। वह हिसाब-किताब की पुस्तकों से जानती थी कि कृष्ण का आयात-निर्यात का कार्य और उसका फ्रेंच, जर्मन और इटेलियन भाषा का अच्छा ज्ञान रखना पुस्तक-व्यवसाय में विशेष लाभकारी हो रहा था। इससे वह समझ गयी कि मीरा का कथन अधिक सत्य है। कृष्ण ने यह कहा भी था कि वह कालबा देवी वाला पुस्तक-विक्रय केन्द्र लेना चाहेगा। इससे उसे मीरा की बात में अधिक तथ्य प्रतीत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार बाहर की शाखाओं से सूचनाएँ आने तक और परिवार की गोष्ठी से पूर्व ही कीर्ति आठ सदस्यों की एक कम्पनी बनाने में सफल हो गयी। इसमें वह स्वयं थी; उसका पति सोमदेव था; महावीर था, उसकी पत्नी माधुरी थी; विजय और सरस्वती थे। इनके अतिरिक्त मीरा और सोम का लड़का गोपाल थे। कीर्ति ने मीरा से कह दिया था कि भाई कृष्ण की रुचि न होने से मीरा का सम्मिलित किया जाना संदिग्ध हो सकता है।

परन्तु जब प्रस्तावित कम्पनी के सदस्य इकट्ठे हुए तो मीरा वहाँ स्वयं आ गयी और सबसे पहले उसने ही अपनी बात कह दी। उसने कहा, "मैं भी आपकी कम्पनी में सम्मिलित होना चाहती हूँ।"

मीरा को बताया गया कि उसका और उसके पति का मतभेद उनमें पृथकता का भी सूचक हो सकता है।

मीरा ने कहा, "मैंने उनसे बात की है। वे अपना व्यवसाय पृथक् करना चाहते हैं, परन्तु परिवार से मुझे कुछ तो मिल रहा है। मैं उसको परिवार के व्यवसाय में निवेश करना चाहती हूँ। मैं निष्क्रिय साँझीदार रहूँगी।"

कीर्ति ने इस प्रस्ताव में आपत्ति नहीं की। आपत्ति नलिनी को थी। वह इस कारण कि उसे भय था कि मीरा का अपनी सम्पत्ति को पति से पृथक् कर लेने का परिणाम कहीं यह न हो जाये कि दोनों में तलाक तक की नौबत आ जाये।

मीरा ने यह आपत्ति सुनी और कह दिया, "मैंने उनसे इस विषय पर बात की है। वे समझते हैं कि पारिवारिक व्यवसाय का जो भाग वे लेना चाहते हैं, वह इस प्राईवेट लिमिटिड कम्पनी के बन जाने से संभव नहीं। वे कम्पनी के मुकाबिले में बोली नहीं दे सकेंगे। अतः अब वे अपना आयात-निर्यात का काम ही करेंगे।"

"परन्तु उसे भी तो अब बोली देकर लेना होगा।"

"यदि सदस्यों ने इसे वास्तविक मूल्य पर देना स्वीकार कर लिया तो ठीक है, अन्यथा इस कार्य की वे बोली दे देंगे। व्यवसाय के इस भाग को लेने में अन्य सदस्य कुछ अधिक उत्सुक नहीं होने चाहियें।"

नलिनी ने कहा, "मैं समझता हूँ कि कृष्ण का यह अनुमान ठीक ही है। इस पर भी इस बात का निर्णय तो पूर्ण परिवार की गोष्ठी में ही हो सकेगा। अभी मैंने जो सम्भावना बतायी है, उसको तुम समझ लो।"

इस प्रकार आठ पत्तीदारों की कम्पनी बन गयी और यह मुख्य व्यवसाय लेने की योजना बनाने लगी।

इसमें किसी को आपत्ति नहीं हुई। और कम्पनी पाँच लाख रुपये की पूंजी से निर्माण करने का निश्चय कर दिया गया। इसके पाँच-पाँच हज़ार के सौ हिस्से बना दिये गये और पचास प्रतिशत भागों की रकम तुरन्त देने का निश्चय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया।

मीरा ने इस कम्पनी में दस भाग खरीदने का निश्चय कर लिया। यह बात ठीक थी कि कृष्णस्वरूप ने समझा था कि कम्पनी के मुकाबिले में वह कालबा देवी रोड वाली दुकान ले नहीं सकेगा। अत: उसने अपना विदेश से आयात-निर्यात के व्यवसाय को लेने का निश्चय कर लिया और अब वह यह यत्न करने लगा कि उसे यह कार्य बिना नीलामी के ही मिल जाये।

पूर्ण परिवार की गोष्ठी में उसने इस प्रस्ताव को उपस्थित किया तो यह स्वीकार कर लिया गया। कृष्ण का इस व्यवसाय में सर्वाधिक अधिकार मान लिया गया।

शाखाओं का हिसाब आने पर सम्पत्ति और भी बढ़ गयी और व्यवसाय की प्रत्येक शाखा का मूल्य बताने के उपरान्त उसकी नीलामी होने लगी। कराची की शाखा पर तो बोली ही नहीं हो सकी। उसे कोई भी लेने के लिये तैयार नहीं था और व्यवसाय उसे घाटे पर देने के लिये तैयार हो गया। जब घाटे पर भी कोई लेने को तैयार नहीं हुआ तो उस शाखा को बन्द कर देने का निश्चय हो गया। कराची की दुकान को कालबा देवी रोड वाली दुकान से जोड़ कर दोनों की इकट्ठी ही बोली हुई तो वह दस हजार अधिक देकर कम्पनी ने ले ली।

मुद्रणालय पर भी कुछ थोड़ी-सी दाम में वृद्धि हुई। शेष काम प्राय: उसी मूल्य पर निश्चय हो गया था, जो किताबों में दर्ज था।

लाहौर की दुकान के अतिरिक्त अन्य सब काम कम्पनी ने खरीद लिये और लाहौर की दुकान को वेद की पत्नी कमला ने ले लिया।

: ५ :

बम्बई में तो परिवार के व्यवसाय ने सबके ध्यान को अपनी ओर इतना आकर्षित कर रखा था कि देश की बातों पर कुछ अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका। हिन्दू महासभा के अधिवेशन में नलिनी, विजय, सरस्वती, आनन्द और सोम सम्मिलित हुए थे। परन्तु पीछे सोम के अतिरिक्त अन्य कोई सदस्य इसमें सक्रिय भाग नहीं ले सका।

परिवार की समस्या का समाधान होते ही नलिनी भुवाली की ओर चल पड़ा। आनन्द और प्रभा तो नलिनी से पहले ही भुवाली चले आये थे। वे परिवार के लेन-देन में रुचि नहीं रखते थे। उनका लड़का वेदप्रकाश व्यवसाय की कराची शाखा का मैनेजर था। वह बम्बई में आया हुआ था और अब तो कराची की शाखा बन्द कर दी गयी थी। कराची का सब माल जहाज़ से बम्बई मँगवा लिया गया था। वह माल भी लिमिटिड कम्पनी ने खरीद लिया था। वेदप्रकाश ने लाहौर वाली दुकान चलानी आरम्भ कर दी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनी के साथ विजय, सरस्वती और महादेव भी भुवाली चले आये। चारुदेव कम्पनी की लखनऊ शाखा चलाने के लिये वहाँ चला गया। लखनऊ में वह अपनी पत्नी श्रद्धा के तथा अपनी सास गौरी के साथ रहने लगा था। गौरी के लड़के भगवतीप्रसाद का देहान्त हो चुका था और गौरी की ज़मींदारी अभी भी 'कोर्ट ऑफ वार्ड्ज़' में थी। गौरी ने श्रद्धा के प्रथम लड़के सुनीलकुमार को गोद ले लिया था। उसके सज्ञान होने तक ज़मींदारी पर सरकारी प्रबन्ध ही चलना था।

सब भुवाली पहुँचे तो आनन्द अपने लेखन-कार्य में लग चुका था। नलिनी ने उससे पूछा, "तुम जल्दी किसलिये चले आये थे ?"

"पिता जी ! मैंने विचार किया कि महादेव आपके साथ आने वाला है। इस कारण मैंने वहाँ रहना समय का अपव्यय समझा और चला आया।"

"तो हिन्दू महासभा का कार्य भी तुम्हें पसन्द नहीं आया ?"

"उनका उद्देश्य तो ठीक ही है, परन्तु कार्य-पद्धति निरर्थक प्रतीत हुई है।"

"क्या कार्य-पद्धति है उनकी जो तुम्हें गलत प्रतीत हुई है ?"

"मैंने सावरकर जी से बात की थी। वे संवैधानिक आन्दोलन में भाग लेना चाहते हैं। उनका कहना था कि हिंसात्मक आन्दोलन चलाने का समय अब नहीं रहा। हिंसात्मक आन्दोलन उस समय ठीक था, जब यह समझा जाता था कि अंग्रेज़ सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति हैं। ठीक उस समय हमने अंग्रेजों के अजेय होने को गलत सिद्ध कर दिया था।

"उसके उपरान्त समय आया, जब तिलक जी ने सेना में हिन्दुस्तानियों को कमीशन दिलवाने के लिये आन्दोलन चलाया था। वह बात भी अब सिद्ध हो चुकी है। हमारे योग्य समझदार हिन्दू युवक सेना में उच्च पदवियों पर पहुँच चुके हैं। अब समय है कि भारत की सेना में पढ़े-लिखे राष्ट्रवादी युवक पहुँचाये जाएँ। इसका परिणाम होगा कि जब कभी भी इंगलैण्ड पर भीर पड़ी तो वह भारतीय सेना की सहायता लेगी और हमारे युवकों को युद्ध-नीति का ज्ञान होगा। तब वे सैनिक पदाधिकारी अनायास ही स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे।"

"और इसमें तुम्हें भूल कहाँ दिखायी दे रही है ?"

"मैं समझता हूँ कि यदि देश का वातावरण गांधीवादी रहा और सावरकर जी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई कि इंगलैण्ड पर संकट का काल आ रहा है तथा हमारे सैनिक उस संकटावस्था में इंगलैण्ड की सहायता के लिये जायेंगे और तदनन्तर स्वराज्य प्राप्त करेंगे, तब भी सरकार तो शहरियों की बनेगी और वे गांधीवादी होने से देश को अनाधिकारियों के हाथ में बाँटना आरम्भ कर देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिता जी ! सैनिक अधिकारी राज्य छीन सकते हैं अथवा छीना हुआ वापस ले सकते हैं, परन्तु वे राज्य चला नहीं सकते।

"इस कारण मैंने सावरकर जी से कहा था कि कांग्रेस को एक अहिन्दू-दल घोषित कर इसका स्थान लेने का यत्न करना चाहिये। सैनिक अनुकूल होने पर भी राज्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे, जब तक वे नागरिकों के संरक्षण में कार्य नहीं करेंगे।

"वे मान गये थे, परन्तु इस दिशा में वे गांधी जी और जवाहरलाल जी का विरोध करना उचित नहीं समझते थे।

"परिणाम वही हो रहा है जो तिलक जी की नैशनलिस्ट पार्टी का हुआ था। उसका अब कहीं चिह्न मात्र भी नहीं है। वह दल एक ओर तो गांधी जी के बहिष्कार आन्दोलन में सम्मिलित होकर यह सिद्ध कर रहा था कि गांधी जी का कार्य ठीक है, तो दूसरी ओर वे कांग्रेस का मुकाबला करने की बात भी कहते थे।

"गुण गाओ गांधी का और कांग्रेस का और फिर स्वयं उसका स्थान लेना चाहो, यह कैसे सम्भव हो सकता है?

"मैंने सावरकर जी से कहा था कि वे घोषणा करें कि गांधी जी की कार्य-दिशा मिथ्या है; उनके दोष गिन-गिन कर जन-मानस पर अंकित करें।

"इस कार्य के लिये, मैंने उनसे कहा था कि हमें समाचार-पत्रों पर अधिकार कर लेना चाहिये। वहाँ अपने विचार के पढ़े-लिखे युवकों को भरती कराना चाहिये। क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार-पत्र निकलवाने चाहियें और अपने कार्य-कर्त्ताओं को हिन्दू-सांस्कृतिक आधार पर संगठित करना चाहिये।

"वे मेरे विचारों को तो ठीक समझते हैं, परन्तु वर्त्तमान युग में उसे अव्यवहारिक मान, चलाने के लिये तैयार नहीं।"

इस पर विजय ने कह दिया, "यह वही युक्ति है, जिसे प्रायः तत्कालीन नेता स्वामी महर्षि दयानन्द की योजना के विषय में दिया करते थे।"

"हाँ;" नलिनी ने विजय के कथन का समर्थन करते हुए कहा, "कलकत्ता में देवेन्द्र बाबू से वार्त्तालाप में स्वामी जी ने कहा था कि एक राज्य-सभा बननी चाहिये और उसमें अंग्रेज़ के साथ सहयोग करते हुए आर्य तथा वेद-धर्म को मानने वालों का संगठन बनाना चाहिये। स्वामी जी का यह कहना था कि देश की भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी हो और इस भाषा के पढ़ने-पढ़ाने वालों को राज्य में घुस जाना चाहियें। इसी प्रकार स्वराज्य स्थापित हो सकेगा।

"देवेन्द्र जी का कहना था कि यह योजना अव्यवहारिक है। इस वार्त्तालाप को हुए आज छयासठ वर्ष हो चुके हैं, परन्तु आज भी इसे अव्यवहारिक माना जाता है तो इस कारण कि स्वामी जी के अनुयायियों ने भी इस योजना को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव्यवहारिक माना था और उन्होंने इस पर काम नहीं किया था।

"भाषा और शिक्षा के विषय में आर्य-समाज के दो विभाग हुए थे, परन्तु दोनों ही समझे नहीं कि स्वामी जी का उद्देश्य क्या था। दोनों भाषा और शिक्षा में इतने उलझे कि उद्देश्य को ही भूल गये। यही कारण है कि एक विभाग तो सन् १९०७ में सरकार से पराजित हो घुटने टेक गया और दूसरा सन् १२१ में कांग्रेस के सामने नत-मस्तक हो उसकी नीतियों का अवलम्बन करने लगा था।

"जहाँ डी० ए० वी० स्कूल, कालेज सरकारी मशीन के पुर्ज़े बना रहे हैं, वहाँ गुरुकुल के प्रमुख विद्यार्थी कांग्रेस की नीति का समर्थन कर रहे हैं। सरकार और कांग्रेस दोनों, हिन्दू-राष्ट्र का विरोध करने का संकल्प किये हुए हैं।

"जवाहरलाल नेहरू ने अभी-अभी अपनी स्व-रचित जीवनी का एक संक्षिप्त विवरण प्रकाशित करवाया है और उसके साथ उन्होंने तत्कालीन देश की स्थिति की विवेचना भी की है। उन्होंने इस्लाम और मौलाना मुहम्मद अली के विषय में लिखा है कि मैं उनके साथ मज़हब के विषय में बात करने से बचता था। इसका कारण यह है कि मैं जानता था कि हम दोनों एक-दूसरे को उत्तेजित कर देंगे और मैं उन्हें दुःखी करना नहीं चाहता था।

"परन्तु उसी स्थान पर पण्डित जी लिखते हैं कि मैं विचार करता हूँ कि आजकल के आर्य-समाजी विशाल और उन्नत बुद्धि नहीं रखते। मुसलमानों की भाँति वे भी अपने सीधे और संकर मार्ग का ही अनुकरण करते हैं।

"पण्डित जी का यह विचार पूर्व-ग्रहों से ग्रसित है। और ये श्रीमान् गांधी जी के कंधे पर चढ़े हुए भारत-भाग्य के विधाता बन गये हैं। कहीं ये महानुभाव देश के स्वराज्य के निर्माता हुए तो वे अपने जीवन-काल में देश के न केवल खण्ड-खण्ड करने की नींव डालेंगे, वरन् स्वराज्य प्राप्त करके भी इसे किसी विदेश का उपनिवेश बना देंगे।"

"देखो, आनन्द!" नलिनी ने अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिये कह दिया, "ब्रिटिश पार्लियामैण्ट में एक विख्यात राजनीतिक नेता ने यह बयान दिया है कि हमने भारत में क्या किया है, जिसके लिये हम लज्जित हों? हम क्यों क्षमा का भाव प्रकट करें और कहें कि हम किसी ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा के कहने पर भारत छोड़ने के लिये तैयार हैं? हम कहते हैं कि हमने हिन्दुस्तान को आभ्यान्तरिक शान्ति और सुरक्षा दी है। ऐसी जैसी कि उस देश में पिछले दो सहस्र वर्ष से नहीं हुई थी। और कौन देश वैसी सुख और शान्ति का दावा कर सकता है? अमरीका में भी नागरिकों में युद्ध हुआ है, चीन के खण्ड-खण्ड हो रहे हैं, रूस में भयकर क्रान्ति हुई है, युरोप के प्रत्येक देश में झगड़े और फ़साद हैं। उन्हें धन्यवाद करना चाहिये कि हमारे राज्य में विघ्न-बाधा के बिना व्यापार और शान्ति स्थापित है। एक हिन्दुस्तानी स्त्री हाथों में सोने की चूड़ियाँ पहने, बिना किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार के भय के त्रावणकोर से चलकर पंजाब तक अकेली जा सकती है।

"आनन्द ! इस कथन का एक-एक शब्द सत्य है, परन्तु इतने से हमें सन्तोष नहीं। मनुष्य केवल सुख और शान्ति के लिये नहीं जीवित रहता। वह अपनी मान-मर्यादा पर इन सब बातों को निछावर कर देता है। उस मान और मर्यादा का प्रतीक ही है धर्म और संस्कृति। वैसे तो एक बुद्धिमान मालिक के तवेले में पशु भी सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु पशु और मनुष्य में अन्तर है। मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। उसे अपनी धारणाओं और परम्पराओं के साथ उत्कट प्रेम होता है और उनके पालन के लिये वह जीवन की आहुति देता रहता है।

"और ये कांग्रेसी अपने धर्म और अपनी संस्कृति के मूल्य पर सुख तथा शान्ति की खोज में चल पड़े हैं। कदाचित् ये स्वराज्य पा जायेंगे। उसका एक आभास-सा उन्हें सन् १९३५ के संविधान में मिल चुका है और ऐसा ही कुछ और दस-पन्द्रह वर्ष में मिल जायेगा, परन्तु इससे न तो सुख और शान्ति प्राप्त होगी और न ही अपनी मान-मर्यादा स्थिर रह सकेगी।

"कठिनाई यह है कि इस सुख तथा शान्ति की खोज में ही गांधी जी मुसलमानों, सिक्खों, ईसाईयों, अछूतों और अन्य लड़ने-झगड़ने के लिये तैयार समुदायों के सम्मुख नत-मस्तक हो रहे हैं और हिन्दुओं को होने की सम्मति दे रहे हैं।"

"परन्तु पिता जी !" आनन्द ने अपनी सावरकर जी से हुई बातचीत की ओर लौटते हुए कहा, "जनता को बिना अपनी संस्कृति का वास्तविक ज्ञान एवं दर्शन कराये यह हो नहीं सकेगा और इसके लिये बृहद् प्रचार का प्रबन्ध होना चाहिये। इसी के लिये सावरकर जी के सम्मुख मैं अपनी योजना रखने वाला था, परन्तु उन्होंने बात को सुने बिना ही उसे अव्यावहारिक कह दिया।

"मैं चुपचाप चला आया। गांधी जी ने कुछ विचारों को आधार लेकर ही अपना प्रचार-कार्य चलाया है। वे विचार देश में सरकारी शिक्षा प्रसारित कर रहे हैं। इस कारण उनकी मिथ्या धारणाएँ भी सत्य मानी जा रही हैं।

"पिता जी ! हमें तो उस शिक्षा का भी विरोध करना है, जो हमारी पूर्ण सांस्कृतिक मान्यताओं को पद-दलित करती हुई चल रही है। इसके लिये हमें कांग्रेस और गांधी जी से अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

"सावरकर जी और मुखर्जी समझते हैं कि वर्त्तमान शिक्षा को आधार बना कर वे भी गांधी जी की भाँति अपना कार्य सम्पन्न कर सकेंगे।

"मुझे हिन्दू महासभा के कैम्प में भाई परमानन्द जी का विचार अधिक व्यवहारिक प्रतीत हुआ है। वे कहते थे कि हम सब नेताओं को अपने-अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे युवकों को राष्ट्र का वास्तविक स्वरूप बताने का प्रबन्ध करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये और फिर सरकारी तथा कांग्रेसी प्रचार-तन्त्र पर अधिकार जमाना चाहिये।

"यद्यपि यह एक वक्तव्य मात्र था, परन्तु यही एक आधार समझ में आता है, जिससे हम अपने स्वत्व की रक्षा कर सकते हैं।"

"हिन्दू महासभा भी मुझे कांग्रेस का प्रतिलिपि मात्र समझ आ रही है। यह भी नारेबाज़ी में विश्वास रखती है।" नलिनी ने कह दिया।

: ६ :

आनन्द ने देश की राजनीति से बदल कर पारिवारिक विषयों पर बात आरम्भ कर दी। उसने पूछा, "मैं बम्बई से इस कारण शीघ्र ही चला आया था कि मैं व्यवसाय में हूँ नहीं। इस कारण मुझे उसमें रुचि नहीं थी। परन्तु पिता जी, आप क्या कर आये हैं ?"

"परिवार भी देश का एक छोटा-सा रूप ही है।" नलिनी ने परिवार की समस्या का विश्लेषण कर दिया, "देश में एक छोटा-सा समुदाय अथवा उस समुदाय का एक नेता पूर्ण देश में विक्षोभ उत्पन्न कर सकता है; इसी प्रकार एक सामान्य-सा व्यक्ति भी परिवार में विस्फोट उत्पन्न कर सकता है।

"मुझे इस घटना की आशंका आज से दो वर्ष पहले अनुभव हुई थी। मैंने तब ही विजय को लिखा था कि यदि हो सके तो मेरे ग्रन्थ 'भारत में संस्कृति का इतिहास' का पाठ नित्य परिवार में करो। विजय को परिवार में उमड़ रहे संकट का ज्ञान न होते हुए भी मेरी योजना पसन्द आयी और उन्होंने किसी धर्म-ग्रन्थ की कथा की भाँति इस ग्रन्थ का पाठ आरम्भ किया तो फिर वह चलता ही रहा। ग्रन्थ का विषय तो शुष्क ही है, परन्तु ग्रन्थ में उस विषय पर प्राचीन ऐतिहासिक गाथाओं के कारण उसका पाठ चलता रहा और उसका प्रभाव हुआ प्रतीत होता है। परिवार विखण्डित होता-होता बच गया है। एक जीव कृष्ण पारिवारिक व्यवसाय में सम्मिलित हुआ था। मुझे तभी यह समझ में आया था कि यह परिवार में विस्फोट उत्पन्न कर सकता है। उसके संस्कारों और बीज में दोष से मुझे भय था कि उसे परिवार में हो रही द्रुत-गति में उन्नति अटपटी प्रतीत होगी और वह इसमें अपने को मूल कारण मान, अपने को परिवार से पृथक् करने के लिये किसी प्रकार का षड्यन्त्र करेगा।

"यही हुआ। उसने अपना साथी बनाया वेदप्रकाश को। वेदप्रकाश परिवार से दूर रहता हुआ पारिवारिक वातावरण से वंचित हो गया था। वह संस्कृति के इतिहास के ग्रन्थ की कथा के प्रभाव में नहीं आया। परिणाम यह हुआ कि वह कृष्ण के प्रभाव में आ गया और दोनों ने मिल कर परिवार भंग करने का षड्यन्त्र किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे विस्मय इस बात पर हुआ है कि मीरा पर ग्रन्थ की कथा का सबसे अधिक प्रभाव हुआ है और उसने मेरे सुझाव को कि परिवार भंग कर एक लिमिटिड कम्पनी बनायी जाये, सबसे पहले समझा और अपने पति से पृथक् कम्पनी में भागीदार बन गयी है।

"इस समय परिवार का एक नया संगठन बन गया है। मैं इन संगठनों को साधन मानता हूँ। उद्देश्य व्यक्तिगत श्रेय है। जब भी संगठन श्रेय की प्राप्ति में बाधक होने लगे, वह बदला जा सकता है।

"श्रेय का साधन यह संगठन नहीं। साधन ज्ञान है। भगवान् की कृपा है कि हमारे परिवार के अधिक घटक वास्तविक ज्ञान से प्रकाशित हैं। इस कारण इस विस्फोट से परिवार विखण्डित नहीं हुआ।"

विजय ने कहा, "मीरा ही प्रेरणा देकर अपने पति को परिवार के व्यवसाय में ले आयी थी। जब घर में कथा होने लगी तो वह सुनने के लिये तैयार हो गयी। अब बटवारे के समय वह स्वेच्छा से कीर्ति के पास पहुँची और परिवार की कम्पनी में सम्मिलित किये जाने का आग्रह करने लगी।"

"यह पूर्व-जन्म के संस्कारों का ही फल कहा जा सकता है। वह वास्तविक व्यवहार को अवास्तविक बातों से पृथक् करने की विशेष योग्यता रखती है।"

इस पर विजय ने बताया, "हम जब बम्बई से चलने लगे थे तो उसने सरस्वती से पूछा था, बाबा ने हमें भुवाली आने का निमन्त्रण नहीं दिया ?

"सरस्वती ने उसे समझाया कि बाबा से निमन्त्रण मिलने की आवश्यकता नहीं है। बाबा का घर तो अपना ही घर है। अपने घर में हम सदा ही आमन्त्रित हैं, परन्तु तुम्हारा पति वहाँ नहीं आयेगा। वह तो निमन्त्रण पर भी वहाँ नहीं आता और हम बिना बुलाये ही वहाँ जा रहे हैं। महादेव के पिता ने बाबा को लिखा था कि वह बम्बई के जीवन से पृथक् हो, एकान्तवास की इच्छा करने लगा है, इस कारण शीघ्र ही वह भुवाली में आकर रहने लगेगा। जब बाबा इस बार बम्बई आये तो उन्होंने आते ही पूछा, 'तुम आये नहीं ? मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

"इस पर मीरा ने कहा, 'तब ठीक है। मैं एक दिन अकस्मात् वहाँ पहुँच जाऊँगी।'

"सरस्वती ने उसे भी कहा था, 'मैं तुम्हारी पतीक्षा करूँगी। परन्तु कृष्ण को साथ लाना।'

"मैं समझता हूँ कि विस्मय करने की बात यह है कि इन दोनों के स्वभाव एक-समान नहीं। फिर भी ये परस्पर सहचारिता रखते हैं। पिछले कई साल से ये साँझे घर में रहते हैं, परन्तु कभी झगड़ते नहीं देखे गये।"

"देखो विजय !" नलिनी ने समझाया, "सब कर्मों का कारण नहीं जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकता। भगवान् कृष्ण ने भी कर्म की गति को गहन लिखा है। अर्थात् इसका समझना कठिन है। कर्म का ज्ञान नहीं होता और उसका फल हम देख लेते हैं। यही बात यहाँ समझ लेनी चाहिये। पति-पत्नी का संयोग पूर्व-जन्म के कर्मों से होता है। इसी कारण ईसाईयों में यह माना जाता है कि विवाह स्वर्ग में निश्चय होते हैं। अर्थात् पति-पत्नी का सम्बन्ध पूर्व-जन्म के कर्मों से होता है।"

"और बाबा!" महावीर ने पूछ लिया, "क्या गांधी और जवाहरलाल का समागम भी कर्म-फल का परिणाम मानना चाहिये?"

"हाँ; यह संयोग किसी प्रकार से भी शुभ का सूचक प्रतीत नहीं होता। हिन्दुस्तान के रहने वाले हिन्दुओं को यह मिला है। मैं समझता हूँ कि इस मेल में भी हिन्दू जाति के पाप-कर्मों का फल ही है।

"देखो, मैं बताता हूँ कि हिन्दू-समाज का भविष्य क्यों अभी उज्ज्वल नहीं हो सकता। इस जाति ने बहुत ही पाप-कर्म किये हुए हैं, जिसका फल यह अभी और भोगेगी। परमात्मा ने इस जाति को उत्तराधिकार में वेद का ज्ञान दिया है। इस जाति के पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने अपने जीवन-भर में खून-पसीना एक कर, वेद मन्त्रों को स्मरण कर जाति की परम्परा को उज्ज्वल बनाया था। ज्ञान-विज्ञान के दुस्तर दर्शन-ग्रन्थ मुनियों ने अति कठोर तपस्या और साधना से लिखे और प्रचारित किये, परन्तु उन सबके परिश्रम को देखते हुए भी इस जाति ने अपना जीवन मूर्खता से भोग-विलास का बनाया और उनके परिश्रम को विस्मरण कर दिया।

"यहाँ ऐसे धूर्त्त और ठग उत्पन्न हुए हैं, जो अपने को पतित मानव जानते हुए भी परमात्मा का अवतार सिद्ध कर भक्तों और श्रद्धालुओं से सेवा ग्रहण करते रहे हैं। सरल-चित्त जनता को मूर्ख बना कर वे अपना हित साधन करते रहे हैं।

"ऐसी जाति का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप का काल अभी समाप्त नहीं हुआ। मैं ज्योतिष-विद्या नहीं जानता। न ही मैं ब्रह्म-ज्ञानी हूँ, जिससे भविष्य में होने वाली बात के ज्ञान का दावा कर सकूँ। इस पर भी देश में जो कुछ हो रहा है, उसका परिणाम मुझे ऐसा दिखायी दे रहा है कि यहाँ घोर विनाश होगा। लाखों मारे जायेंगे, अरबों रुपयों की सम्पत्ति लूट अथवा जला कर भस्म कर दी जायेगी। स्त्रियों का अपहरण होगा, बलात्कार होगा और अन्य अनेकों अत्याचार होंगे।

"और फिर यदि इन भोगवादियों का राज्य यहाँ स्थापित हो सका तो देश में रहने वालों का घोर नैतिक पतन होगा। मद्य-सेवन, दुराचार, चोरी, डाके—ये बातें तो सामान्य होंगी ही। हत्याओं की संख्या बढ़ जायेगी और जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज इस दासता के काल से भी अधिक अरक्षित हो जायेगा।

"जनता को अपार कष्ट और क्लेश होगा और यह सब न्यायानुसार ही होगा। कारण यह कि पूर्ण जाति ने ही धर्म-कर्म को तिलाञ्जलि दे रखी है। बुद्धि और ज्ञान का परित्याग कर रखा है।"

"परन्तु बाबा ! युरोप और अमेरिका के सितारे क्यों उच्च हैं?"

"मुझे तो वे भी उच्च दिखायी नहीं देते। इस पर भी इतना तो कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तान से उन देशों में सुख-सुविधा अधिक है। यह इस कारण है कि कई अन्य अनर्थकारी कर्म होते हुए भी उनमें सामाजिकता हमसे अधिक है।

"सामाजिकता का अभिप्राय है सर्वहितकारी नियमों में समाज के नियमोप-नियमों का पालन करना। हमारे यहाँ नगरों में ग्वाले दूध में पानी मिला-मिला कर दूध के दाम में बेच जाते हैं। खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट करने वाले भी हिन्दुस्तान में युरोप से अधिक हैं। इसके अतिरिक्त नगरों में चलने-फिरने के नियम हैं। उनका पालन हमारे यहाँ से वहाँ अधिक हो रहा है। इस प्रकार के व्यवहार को सामाजिकता कहते हैं। इसी के अन्तर्गत एक अधिकारी के मन में देश और जाति के प्रति निष्ठा उत्पन्न हो जाती है। अंग्रेज़ अधिकारी यहाँ आते हैं। वे हिन्दुस्तान को भले ही लूटें, परन्तु अपने देश और सरकार के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करेंगे।

"इन गुणों के कारण उनका अभी भी संसार में प्रभुत्व है और वे हमसे अधिक सुखी हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनमें कोई दुर्गुण नहीं है। प्रथम युद्ध की भीषणता देख, वे मरने से डरने लगे हैं। इस डर से ग्रसित वे आततायी और अत्याचारी को सहन करने लगे हैं। मृत्यु के भय से ग्रसित हो वे बुद्धि के स्थान, मनोद्गारों से अधिक प्रभावित हो रहे हैं।

"हिटलर ने सब संधियाँ और उत्तरदायित्वों को पालन करने से इन्कार कर जर्मन जाति को मज़बूत बनाने का यत्न करना आरम्भ किया तो फ्रांस और ब्रिटेन ने उसके व्यवहार को आपत्तिजनक मानते हुए भी उसमें बाधा उपस्थित नहीं की। न ही उसकी बढ़ रही शक्ति के मुकाबिले की अपने में सामर्थ्य उत्पन्न की। ये देश इतना समझते रहे कि युद्ध से बचना चाहिये। इसलिये नहीं कि युद्ध करना पाप-कर्म है, वरन् इसलिये कि युद्ध करने से हत्या करनी पड़ती है और बलि देनी पड़ती है।

"इस अनाचार का ही परिणाम अब निकल रहा है। हिटलर ने अपने आस-पड़ोस के देशों पर बलात्कार करना आरम्भ कर दिया है। अब फ्रांस और इंगलैण्ड को समझ में आने लगा है कि जिस बात का उनको भय था, वह होकर ही रहेगी। वे युद्ध की देवी के सम्मुख बलि चढ़ाने से डरते रहे थे और अब बलि देनी ही पड़ेगी। कदाचित् उससे बहुत अधिक, जितनी कि आज से तीन वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले देनी पड़ती, जब हिटलर ने 'लीग ऑफ नेशन्स' छोड़ी थी और संधियाँ, शिष्टाचार भंग करना आरम्भ किया था।

इंगलैण्ड और फ्रांस की जनता युद्ध टलने के लिये गिरजाघरों में प्रार्थनाएँ पढ़ती रही है और घण्टे बजाती रही है। इन भीरु जातियों को युद्ध तो करना ही पड़ेगा और निर्दोष लोगों को अपार बलिदान देना पड़ेगा।"

उन दिनों यह समाचार आने लगे थे कि हिटलर पोलैण्ड से एक क्षेत्र माँग रहा है और वह न मिलने पर सैनिक-कार्यवाही करने की धमकी भी दे रहा है। इंगलैण्ड का प्रधान-मन्त्री चैम्बरलेन अभी आशा व्यक्त कर रहा था कि हिटलर अपने वचन का पालन करेगा और वह दूसरे देशों से अपने मतभेद बातचीत द्वारा दूर करेगा।

: ७ :

देश में कांग्रेस ने हिन्दू-मतों में बयानवे प्रतिशत मत प्राप्त किये थे और मुस्लिम लीग ने मुसलमान मतों के अट्ठानवे प्रतिशत मत प्राप्त किये थे।

सिन्ध, पंजाब और बंगाल के अतिरिक्त अन्य सब प्रान्तों में कांग्रेस का बहुमत आ गया था। परन्तु मुस्लिम लीग कहती थी और उसके कहने में तथ्य भी था कि क्योंकि मुसलमानों के अट्ठानवे प्रतिशत मत उनको मिले हैं, अतः जहाँ-जहाँ कांग्रेस का मन्त्री-मण्डल बना है, वहाँ-वहाँ उनके प्रतिनिधि मन्त्री-मण्डल में लिये जाने चाहियें। कांग्रेस ने संयुक्त मन्त्री-मण्डल बनाने से इन्कार कर दिया।

इसे मुस्लिम लीग ने बहु-संख्यक जाति का अपने पर अत्याचार समझा। इस अत्याचार को प्रकट करने के लिये मुस्लिम लीग ने एक कमेटी नियुक्त कर दी। उस कमेटी की रिपोर्ट 'पीरपुर कमेटी की रिपोर्ट' के नाम से प्रसिद्ध की गयी। उसमें जितनी भी बातें कही गयी थीं, उन सबसे कांग्रेस ने इन्कार कर दिया।

इस पर मुस्लिम लीग ने प्रान्तों में कांग्रेस सरकार का घोर विरोध आरम्भ कर दिया।

नलिनी सर्दी की ऋतु के कारण लाहौर आया हुआ था। मार्च मास में लाहौर में हिन्दू-मुसलमान समस्या पर हिन्दू महासभा ने एक सम्मेलन का आयोजन कर दिया। पंजाब-भर से प्रतिनिधि एकत्र हुए और इसमें कई विषयों पर विचार किया गया। नलिनी इस सम्मेलन में दर्शक के रूप में उपस्थित हुआ तो जानकार लोगों ने उसे मंच पर ले जाकर बैठा दिया और फिर उसे 'पीरपुर कमेटी' के आरोप सम्बन्धी प्रस्ताव पर बोलने के लिये कहा गया। नेता-गणों के आग्रह पर नलिनी ने अपने विचार प्रकट करने स्वीकार कर लिये। सत्तासी वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वृद्ध रक्त में अभी भी अग्नि उपस्थित थी। उसने कहा, "जो प्रस्ताव हिन्दू महासभा की ओर से रखा गया है, वह कांग्रेस के मंच पर ही शोभा दे सकता है। कांग्रेस सदा वस्तु-स्थिति को तोड़-मरोड़ कर जनता के सम्मुख उपस्थित करती रही है और अब भी वह अपने पाप-कर्मों को छुपाने के लिये इस प्रकार का प्रस्ताव उपस्थित करती है, जैसा इस मंच से उपस्थित किया जा रहा है। मैं समझता हूँ कि यह हिन्दू महासभा का पक्ष नहीं है कि कांग्रेसी भूलों की रक्षा करे।

"जब पृथक् मतदाता-सूची मानी है, पृथक्-पृथक् निर्वाचनों में भाग लिया है और जब यह सिद्ध हो गया है कि कांग्रेस को मुसलमानों के दो-तीन प्रतिशत से अधिक मत नहीं मिले तो यह स्पष्ट है कि मुसलमानों पर कांग्रेस को शासन करने का अधिकार नहीं है।

"जब मुसलमानों के लिये कांग्रेस ने पृथक् प्रातिनिध्य स्वीकार किया था, तब हिन्दू महासभा बनी नहीं थी। मैं सन् १९१६ की लखनऊ-कांग्रेस की बात कर रहा हूँ। हिन्दू महासभा के जन्मदाता पण्डित मदनमोहन मालवीय उस अवसर पर वहाँ उपस्थित थे और उन्होंने कांग्रेस के इस प्रस्ताव का विरोध किया था। वे विरोध करने में अकेले थे। यद्यपि हिन्दू महासभा अभी स्थापित नहीं हुई थी, परन्तु हिन्दू महासभा की आत्मा उनके द्वारा मुखरित हो रही थी।

"उनके विरोध का यही आधार था कि देश में दो ही पक्ष हैं। राष्ट्रवादी और अराष्ट्रवादी। हिन्दू और मुसलमान-पक्ष नहीं हैं। जो इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस देश में दो राष्ट्र हैं और जिन्होंने इस द्विराष्ट्र सिद्धान्त को सन् १९१६ में स्वीकार किया था, वास्तव में वे राष्ट्र-विरोधी पक्ष में ही थे। वे अभी भी राष्ट्र-विरोधी ही हैं। कारण यह कि इसी सिद्धान्त को मान कर ही तो उन्होंने निर्वाचन लड़े हैं और अब उसी सिद्धान्त पर मन्त्री-मण्डल बनाने से इन्कार क्यों करते हैं?

"हिन्दू महासभा का पक्ष यह नहीं है। इसका पक्ष यह है कि हिन्दू यहाँ का राष्ट्र है। इसलिये मतदाता-सूची एक ही होनी चाहिये। जो उस सूची में नाम नहीं लिखाते, वे राष्ट्र से बाहर समझे जाने चाहियें। हिन्दू महासभा के विचार से पृथक्-पृथक् सूचियों में नाम लिखाने वाले राष्ट्रवादी नहीं। अतः यह दोनों अराष्ट्रीयों का झगड़ा है। हमारा इसमें कुछ मत नहीं।

"मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ और सभा से अनुरोध करता हूँ कि इन दो अराष्ट्रवादी दलों के झगड़े से पृथक् रहकर अपना पक्ष स्थापित करें।

"यदि मेरा विचार मानें तो होना यह चाहिये कि कौंसिलों में सक्रिय भाग तब लें, जब एक मतदाता-सूची हो। जो लोग यहाँ एक-राष्ट्र नहीं मानते, उनके झगड़े में हिन्दू महासभा को नहीं पड़ना चाहिये।

"तब विचारणीय यह रह जायेगा कि हम किस प्रकार अपनी बात मनवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं ? उसके कई उपाय हैं। उन पर विचार करने का समय तब होगा, जब कौंसिलों में एक-राष्ट्रवादी पर्याप्त संख्या में होंगे। कम संख्या में होने पर हम कौंसिलों के बाहर कार्य तो कर ही सकते हैं।

"वर्त्तमान प्रस्ताव में हमें यही कहना चाहिये कि पृथक्-पृथक् मतदाता-सूचियों पर निर्वाचितों का यह परस्पर का झगड़ा है। दोनों देश के साथ द्रोह कर रहे हैं। अतः हम दोनों के झगड़े में दोनों को निन्दनीय मानते हैं।

"रही बात मुसलमानों के भय की। उसमें हमें प्रस्ताव करना चाहिये कि हम प्रजातन्त्रवाद के मुख्य सिद्धान्त को मानते हैं। वह क्रिप्स के शब्दों में यह है कि—प्रजातन्त्र में सबको सब प्रकार की स्वतन्त्रता है। शर्त यह है कि सब वही स्वतन्त्रता दूसरों को देने के लिये तैयार हों।

"मुसलमानों को वह सब-कुछ प्राप्त होगा, जो वे दूसरों को देने के लिये तैयार हैं।

"हिन्दू स्मृतिकार इसे धर्म का एक आवश्यक अंग मानते हैं, जो सबको सब काल में और सब स्थान पर मानना होता है।

"जहाँ तक हिन्दू-समाज का सम्बन्ध है, हम उनको हिन्दू नहीं मान सकते, जो स्वयं कुछ न रखते हुए दूसरों को क्षीर-शक्कर बाँटते-फिरते हैं। ऐसा ये कांग्रेसी कर रहे हैं। उनका यह व्यवहार अहिन्दुओं का-सा है।

"यदि मुसलमान धर्म के इस एक सिद्धान्त को मान लें तो वे हिन्दू-राष्ट्र के मुख्य सिद्धान्त को मानने से राष्ट्र में हिन्दू के समान हैं।"

इस प्रस्ताव पर भाई परमानन्द जी का विचार पहले ही ऐसा था। वे चाहते थे कि मन्त्री-मण्डलों का झगड़ा कांग्रेस और मुस्लिम लीग का है। इसमें हिन्दू महासभा का कुछ भी पक्ष नहीं। अतः उन्होंने नलिनीकान्त का समर्थन किया।

समस्या यह थी कि हिन्दू महासभा के प्रस्तावों का देश पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होना था। कांग्रेस में जन्म के हिन्दू ही बहु-संख्या में थे, जो विवाद के मूल विषय को न छूकर, उसकी शाखाओं पर बहस में लग गये थे।

अब स्थिति यह हुई थी कि मुस्लिम लीग के कौंसिलरों ने बहिष्कार की नीति अपना कर मुसलमानों में कांग्रेस मन्त्री-मण्डल के विरुद्ध प्रचार-आन्दोलन आरम्भ कर दिया था।

भारत देश की यह स्थिति थी, जब युरोप में पोलैण्ड पर जर्मनी के अधिकार के विषय में युद्ध आरम्भ हो गया। युद्ध में जर्मनी, इटली और गौण रूप में रूस एक पक्ष था। इंगलैण्ड और फ्रांस दूसरा पक्ष था। पोलैण्ड ने जर्मनी का विरोध किया था, परन्तु उसकी सेनाएँ कम होने के कारण जर्मनी के आक्रमण

—३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रोक नहीं सकीं। इस स्थिति में जब तक जर्मन सेनाएँ पोलैण्ड की राजधानी वारसा में पहुँचीं, तब तक रूस ने वारसा से पूर्व का सब क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया। अतः पोलैण्ड को दस-बारह दिनों में ही जर्मनी और रूस ने आपस में बाँट लिया।

इंगलैण्ड ने भी अपनी सेनाएँ फ्रांस के किनारे पर उतार दीं और जर्मन सेनाओं को फ्रांस में घुसने से रोकने का प्रयत्न करने लगीं। यह हो नहीं सका। जर्मनी ने पोलैण्ड को विजय कर, हॉलैण्ड और बैलजियम पर अधिकार कर, अंग्रेज़ सेनाओं पर, जो युरोप महाद्वीप पर उतर चुकी थीं, आक्रमण कर दिया।

अंग्रेज़ सेनाओं को करारी पराजय हुई और सेना को अपने सब शस्त्रास्त्र छोड़, इंगलैण्ड को लौट जाना पड़ा। फ्रांस पर जर्मन सेनाएँ विजय-पताका फहराती हुई आगे बढ़ती गईं। वहाँ जर्मनी की एक पिट्ठू सरकार बना दी गई।

फ़्रांस की कुछ समुद्री सेना फ्रांस से भाग कर मोराको में चली गयी और वहाँ उसने जनरल डी-गाल के अधीन फ्रांस की राष्ट्रीय सरकार बना ली। इसके बाद जर्मनी ने नारवे पर अधिकार कर लिया और इंगलैण्ड पर आक्रमण की तैयारी करने लगा।

इस सबका हिन्दुस्तान पर भी प्रभाव हुआ। वाइसराय ने भारत की ओर से जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। कांग्रेस ने इसका विरोध किया और विरोध के लिये कौंसिलों तथा असैम्बली का बहिष्कार कर दिया।

कांग्रेस के इस बहिष्कार पर मुस्लिम लीग ने बगलें बजायीं और कौंसिलों में मन्त्री-मण्डल बनाने की इच्छा प्रकट की, परन्तु सरकार ने उन प्रान्तों में जहाँ कांग्रेस का बहुमत था, मुस्लिम लीग को मन्त्री-मण्डल बनाने की स्वीकृति नहीं दी। यह सम्भव भी नहीं था। अतः गवर्नरों के द्वारा उन प्रान्तों पर शासन होने लगा।

इस विशेष परिस्थिति में हिन्दुस्तान में उनका पक्ष दुर्बल हो गया, जिन्होंने कांग्रेस को अपना प्रतिनिधि बना रखा था और समझ रहे थे कि उनका यह कार्य भी स्वराज्य-प्राप्ति में सहायक होगा।

सोमदेव बम्बई में हिन्दू महासभा के कार्य में लीन था, जब युरोप में युद्धारम्भ हुआ और कांग्रेसियों ने कौंसिलों का काम छोड़ दिया। उसने यह देखा था कि कांग्रेस के इस व्यवहार पर मुस्लिम लीग ने खुशियाँ मनायी थीं और इसे नजात का दिन माना था।

सोम को यह समझ में आया कि युद्धारम्भ से भूमण्डल में एक नयी स्थिति उत्पन्न हुई है। उस स्थिति की प्रतिक्रिया भारत में दो प्रमुख समुदायों पर भिन्न-भिन्न हुई है। इस पर वह विचार करता था कि हिन्दू महासभा को भी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम का ढंग और दिशा बदल देनी चाहिये। अतः वह सावरकर जी के सम्मुख अपने विचार रखने के लिये जा पहुँचा।

सावरकर जी अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे कुछ लिख रहे थे, जब सोम ने अपना नाम उनके पास भेजा। उसे ऊपर बुला लिया गया।

"सुनाओ, सोमदेव! किस काम से आये हो?" सावरकर जी ने उसे समीप बैठाकर पूछा।

"आपसे अपने एक विचार पर सम्मति लेनी है।"

"हाँ, बताओ?"

"युरोप में युद्ध आरम्भ हो गया है और भारत में कांग्रेस ने कौंसिलों का बहिष्कार कर दिया है।"

"हाँ; मैं भी देख रहा हूँ।"

"इस पर मुस्लिम लीग ने खुशियाँ मनायी हैं।"

"फिर क्या समझे हो इससे?"

"मैं यह समझा हूँ कि कांग्रेस ने अपने व्यवहार से पुनः सत्य, न्याय और हिन्दू-राष्ट्र के कार्य को आघात पहुँचाया है।"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूँ। आरम्भ से ही कांग्रेस का व्यवहार ऐसा रहा है कि वह जान-बूझ कर अथवा अनजाने में ऐसा व्यवहार चलाती रही है, जिससे कि देश में राष्ट्र को हानि ही पहुँची है।

"देखो सोम! कांग्रेस की दृष्टि लोक-संग्रह पर लगी है। यह सदा ऐसा व्यवहार अपनाती रहती है, जिससे कि जनता में वाह-वाह प्राप्त हो सके। इस लोकप्रियता से कांग्रेस को लाभ यह होता है कि जब जनता को किसी प्रकार के अधिकार मिलते हैं तो कांग्रेस उन अधिकारों का भोग करने लग जाती है।

"कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था नहीं है, परन्तु दुर्भाग्य यह है कि देश में विदेशी शिक्षा के प्रभाव के कारण अराष्ट्रीयता को राष्ट्रीयता समझा जा रहा है। इस कारण कांग्रेस अपने अराष्ट्रीय व्यवहार से लोकप्रिय हो रही है।"

"सावरकर जी! ठीक यही बात मैं समझा हूँ। हमारी कल्पना का स्वराज्य वह नहीं, जिसमें विदेशीय संस्कारों को प्रभुता मिले। संस्कारों से ही कर्म का जन्म होता है। अतः यदि जाति के संस्कार विदेशीय होंगे तो कर्म भी वैसे ही होंगे और भारत, फ्रांस अथवा रूस बन जायेगा। यह न तो देश के कल्याण में होगा और न ही मानव-समाज के।"

"हाँ; यह तो वस्तु-स्थिति है। परन्तु क्या किया जाये? इस युद्ध के होने से मुझे स्वराज्य समीप आ गया प्रतीत हो रहा है। यद्यपि अभी तक अंग्रेज़ और फ्रांस की पराजय हो रही है, परन्तु मेरा विश्वास है कि अन्त में विजय इनकी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने अंग्रेज़ के स्वभाव को देखा और समझा है। इस जाति में जातीय मान-मर्यादा के लिये मर-मिटने की भावना है और जिस जाति में यह भावना होती है, वह कभी पराजित नहीं होती। यह किस प्रकार होगा, अभी कहा नहीं जा सकता। सम्भव यह है कि पिछले युद्ध की भाँति इस बार भी अमरीका सम्मिलित हो जाये। यदि विजय इसके उपरान्त होगी तो स्वराज्य निश्चित रूप में मिलेगा और कांग्रेस अपने वर्त्तमान व्यवहार से लोकप्रिय होने के कारण सत्ता प्राप्त कर जायेगी।"

इस प्रारम्भिक बातचीत के बाद सोम ने अब अपनी बात कह दी। उसने कहा, "मैं भी इसी प्रकार विचार कर अपने व्यवहार में कुछ परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि राष्ट्रवादी विचार के लोगों को कांग्रेस में सम्मिलित हो जाना चाहिये।"

"पर कितने हैं अपने विचार के लोग जो नमक की खान में जाकर स्वयं नमक नहीं हो जायेंगे?"

"जितने भी हों। उनको वहाँ जाकर उनकी नीति को ठीक दिशा देने की आवश्यकता है। यदि एक भी ऐसा व्यक्ति वहाँ चला गया जो निर्भीक एवं निःस्वार्थ भाव से कार्य करे तो कुछ लाभ कर ही सकता है।"

"तो तुम पुनः कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहते हो?"

"जी! मैं यह चाहता हूँ कि युद्ध-काल में ही कांग्रेस को सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करने पर तैयार कर दिया जाये और इस आन्दोलन में हिंसात्मक उपायों का भी प्रयोग किया जाये तो सम्भव है कि पूर्ण स्वराज्य, दान-दक्षिणा में नहीं, वरन् बाहुबल से प्राप्त हो जाये।"

सावरकर जी गम्भीर विचार में निमग्न हो गये। फिर कुछ विचार कर कहने लगे, "यदि यह हो सके तो बहुत अच्छा होगा।"

"तो आशीर्वाद दीजिये। मैं पुनः कांग्रेस में घुस जाना चाहता हूँ।"

"ठीक है। बीच में समय-समय पर मिलते रहोगे तो कुछ अपनी भी सम्मति दे सकूँगा।"

सोम के अभी तक कांग्रेस-नेताओं से सम्पर्क थे। इस कारण उसको पुनः बम्बई-कांग्रेस कमेटी का सदस्य बन जाने में कठिनाई नहीं हुई। भोलाभाई देसाई से उसका सबसे पहले सामना हुआ। बम्बई बोमन जी पैटिट हॉल में कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं की एक सभा थी। भोला भाई सभा के अध्यक्ष पद पर थे। वे कांग्रेस की वर्त्तमान नीति समझाने के लिये वहाँ आये थे।

देसाई साहब को सोम को सबसे आगे आकर बैठे देख विस्मय हुआ। परन्तु सबके सामने वे सोम की ओर देखकर केवल मुस्करा कर रह गये।

सभा में देसाई ने बताया कि कांग्रेस ने किसलिये कौंसिलों का बहिष्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है। उसने बताया कि जब तक सरकार पूर्ण स्वराज्य के विषय में कोई निश्चय नहीं करती, तब तक कांग्रेस सब सरकार के युद्ध-प्रयास में सहायक होना नहीं चाहती।

देसाई ने कांग्रेस वृकिंग कमेटी के प्रस्ताव का विश्लेषण कर बताया कि हम हिन्दुस्तानी जर्मनी के व्यवहार को पसन्द नहीं करते। हमें प्रजातन्त्रवादी होने के नाते फासिस्ट उपायों में रुचि नहीं है। इस पर भी अंग्रेज़ी सरकार से भी हमारे मतभेद हैं। उन मतभेदों को दूर कर दिया जाये तो हम युद्ध को चलाने में सहयोग दे सकेंगे।

"हम संविधान सभा का निर्माण चाहते हैं और स्वराज्य की तिथि निश्चय कर देना चाहते हैं।"

सभा में सामान्य उत्साह था। इस पर भी कार्यकर्त्ता भारी संख्या में आये थे। वास्तव में वे जानना चाहते थे कि कांग्रेस अब क्या करना चाहती है।

सभा के उपरान्त सोम देसाई साहब के समक्ष आ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ प्रणाम करने लगा तो देसाई ने पूछ लिया, "सोम भाई! तुम यहाँ कैसे आ गये?"

"जी; मैंने पुन: कांग्रेस की सदस्यता स्वीकार कर ली है?"

"ओह! परन्तु तुमने सुना है न कि लुढ़कते पत्थर पर घास नहीं जमती?"

"जी; परन्तु मैं अपने मस्तिष्क पर घास जमने नहीं देना चाहता। इसके लिये ही मुझे इधर से उधर लुढ़कना पड़ता है।"

"बहुत खूब! भाई, तुम्हारी हाज़िर-जवाबी पर मुग्ध हूँ। पर यह हुआ कैसे?"

"श्रीमान्! बात स्पष्ट ही है। इसमें जटलिता कहीं नहीं। सन् १९३६ के निर्वाचनों में कांग्रेस ने मुझे टिकट नहीं दिया और मेरे निर्वाचन-क्षेत्र में किसी अन्य को खड़ा कर दिया। इस कारण मैंने कांग्रेस छोड़ दी। अब कांग्रेस ने असैम्बली और कौंसिलें छोड़ दीं और मेरे स्थान पर चुना गया व्यक्ति अब बिना चुना हुआ हो गया। इसलिये मैं पुन: कांग्रेस में आ गया हूँ।"

"और जब कांग्रेस पुन: असैम्बली में जाकर बैठेगी, तब फिर इसे छोड़ दोगे?"

"जी; इसमें किसी को सन्देह नहीं करना चाहिये। यह इसलिये नहीं कि मैं स्वार्थी हूँ, वरन् इसलिये कि मैं सत्य-हृदय से जानता हूँ कि मैं असैम्बली का सदस्य अपने प्रतिद्वन्द्वी से अधिक मत लेकर विजयी होता और असैम्बली में दल की अधिक सहायता कर सकता।"

"अच्छा, ऐसा करो। कल मुझसे मेरे कार्यालय में मिलना। तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचिकर बात आराम से बैठकर सुनूँगा।"

"किस समय उपस्थित हो जाऊँ ?"

"मध्याह्नोत्तर की चाय के समय आ जाना।"

सोम इस भेंट से सन्तुष्ट था। उसी मीटिंग में वह बाबू जयप्रकाश नारायण से मिला। उन्होंने भी पृथक् में मिलने को कहा। इस पर सोम ने पूछा, "कहाँ मिलूँ ? बम्बई में अथवा बिहार में ?"

"नहीं, दिल्ली में।"

"तो समय और दिन बताइये ? मैं मिल सकूँगा।"

"यह तो मैं बता नहीं सकता।"

"इस अवस्था में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यत्न करूँगा

"ठीक है। यत्न करना।"

उसे भोलाभाई देसाई और जयप्रकाश नारायण में अन्तर समझ आ गया। एक मिलना चाहता है किसी निश्चित उद्देश्य से, और दूसरा नहीं जानता कि वह किसलिये मिले ? वह तो अन्धेरे में टटोल रहा प्रतीत होता है।

सोम अनुभव करने लगा था कि वह पुन: राजनीति के भँवर में आ रहा है। इस कारण उसे आवश्यकता अनुभव हुई कि तनिक सावधानी से पग उठाने चाहिएँ। वह अपने पिता और बाबा से भी सम्मति करना चाहता था, परन्तु वे बम्बई से दूर थे और, देसाई तो समीप थे। इस कारण वह उनसे मिलने, नियत समय पर उनके कार्यालय में जा पहुँचा।

वैसे तो उनकी बैठक में मिलने के लिये आये लोगों की भीड़ लगी थी, परन्तु सोम ने अपना नाम भीतर भेजा तो देसाई साहब ने उसे तुरन्त कार्यालय में बुलवा लिया। सोम को विस्मय हुआ, जब उसे एकान्त में वार्त्तालाप का अवसर मिला। उसके वहाँ पहुँचते ही देसाई साहब ने दो व्यक्तियों के लिये चाय मँगवा ली। सोम ने कहा, "बाहर आपकी प्रतीक्षा में बहुत लोग बैठे हैं।"

"मैं जानता हूँ। परन्तु वे बिन बुलाये आये हैं और तुम बुलाने पर आये हो। वे मनोरंजन के लिये आये हैं और मैं तुमसे मतलब की बात करना चाहता हूँ।"

"मैं उपस्थित हूँ।"

"सत्य बताओ, किस प्रयोजन से पुन: कांग्रेस में आये हो ? देखो, मैं जानता हूँ कि तुम सावरकर जी से मेल-मुलाकात रखते हो। वे कांग्रेस की नीति को अशुद्ध मानते हैं। इस पर भी तुम कांग्रेस में किसलिये आये हो ?"

"देखिये, देसाई जी ! मैं तो आपके बच्चों के समान हूँ, और मैं जानता हूँ कि आप ईमानदार व्यक्ति हैं। इस कारण आपके सम्मुख मैं अपने मन की सत्य बात बताने में संकोच नहीं कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं कांग्रेस की नीति को अशुद्ध मानता हूँ और उससे देश तथा जाति के कल्याण की आशा नहीं करता। मैं सावरकर जी को बताकर ही कांग्रेस का सदस्य बना हूँ। मैं समझता हूँ कि कांग्रेस अपने 'मोमैण्टम' (संवेग) से एक दिशा में बहती चली जाती है। इसके इस दिशा में बहने को रोकने का यत्न करना चाहिये। मेरे जैसा सामान्य सामर्थ्य का व्यक्ति कुछ अधिक प्रभाव नहीं रख सकेगा। इस पर भी प्रत्येक प्रयास, भले ही वह बहुत तुच्छ हो, अपना प्रभाव रखेगा।

"सावरकर जी ने पूछा था कि मैं किस गणना में हूँ? मैंने यह निवेदन किया है कि जातीय आन्दोलन में प्रत्येक का कार्य अपना प्रभाव रखता है। मैं उसका प्रयोग कर अपना कल्याण करना चाहता हूँ।"

देसाई साहब ने समझा कि सोम अपना कोई स्वार्थ लिये हुए आया है। इस कारण उन्होंने पूछ लिया, "तुम्हारा कौन-सा कल्याण सिद्ध होने वाला है?"

"मनुष्य निष्काम भाव से अपना कर्त्तव्य-पालन करता हुआ मोक्ष प्राप्त करता है। मैं कांग्रेस को अपनी अल्प-शक्ति से ठीक दिशा में धक्का देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।"

"और वह ठीक दिशा क्या है?"

"वह दिशा है राष्ट्र-हितों पर सुदृढ़ रहना।"

"तो स्वराज्य-प्राप्ति राष्ट्र-हित नहीं है क्या?"

"यह सम्पूर्ण हित नहीं है। यह हित का एक अंश मात्र है।"

"ओह! तो इससे अधिक भी कुछ है?"

"स्वराज्य शिशु के लिये माँ के दूध-समान है, परन्तु दूध सब-कुछ नहीं। दूध से अधिक माँ के स्नेहमय लालन-पालन, स्वच्छ वायु और वस्त्र इत्यादि अन्य अनेक बातें हैं।"

"परन्तु दूध मुख्य है।"

"जी; परन्तु माँ का दूध। बाज़ारी, कृत्रिम और मिलावट वाला नहीं।"

"तो स्वराज्य-कृत्रिम भी हो सकता है क्या?"

"जी; न केवल कृत्रिम, वरन् मिलावट वाला, दूषित पदार्थों को लिये हुए भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में माँ का शुद्ध निर्दोष दूध भले ही थोड़ी मात्रा में मिले, ठीक होगा।"

भोलाभाई देसाई इस अलंकार के माध्यम से बातों पर प्रसन्न और सन्तुष्ट थे। इस कारण उन्होंने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तनिक व्याख्या से बात करो।"

"जी, बात तो सरल ही है। जब तिलक इत्यादि नेताओं ने स्वराज्य की कल्पना की थी, स्वराज्य के नाम पर फिरोजशाह मेहता इत्यादि नेता घबरा उठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। उनमें माँ के उस स्वच्छ दूध को पचा सकने की सामर्थ्य नहीं थी।

"तब एक डाक्टर दादा भाई नारोजी ने अपना कृत्रिम दूध उपस्थित कर दिया। वह सुन्दर लेबल वाली बोतल में बन्द था।

"तिलक जी ने उसे एक ओर हटा कर पुनः भारत माँ का शुद्ध दूध उपस्थित किया। यह दूध हमारी प्राचीन स्मृतियों और शास्त्रों में से उपलब्ध किया गया था।

"इस पर तिलक इत्यादि को घर से निकाल दिया गया और जाति को दादा भाई नारोजी वाला दूध पिलाने का यत्न किया गया।

"फिर सन् १९१६ में सरकारी दूध—मुसलमानों को विशेषाधिकार-युक्त स्वराज्य—दादा भाई की बोतल से भी सुन्दर बोतल में उपस्थित किया गया। कांग्रेस ने वह दूध जाति को पिलाना आरम्भ किया।

"अब गांधी जी आये। वे तो स्वराज्य के पक्ष में नहीं थे। वे जो कुछ सरकार की बोतल में था, उसे ही अमृत मान जनता को पिलाने लगे। परन्तु पण्डित मोतीलाल जी ने उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी और उन्हें उठाकर तथा घुमा कर उस दिशा में खड़ा कर दिया जो दिशा खिलाफत की थी।

"वे तो स्वराज्य की सरकारी बोतल भी भूल गये और आँखों पर बँधी पट्टी के कारण कुछ न देखते हुए उसी दिशा में चल पड़े, जिधर मोतीलाल जी ने उनको खड़ा कर दिया था।

"तबसे आज तक महात्मा जी की आँखों पर वही पट्टी बँधी है। पहले उस पट्टी को कसते रहते थे पण्डित मोतीलाल जी और अब उसको पण्डित जवाहरलाल खुलने नहीं देते। साथ ही महात्मा जी की डुग्गी ज़ोर-ज़ोर से पीट रहे हैं।

"सन् १९३६ में कुछ लोगों ने महात्मा जी की पट्टी खोलने का यत्न किया था। इनमें सरदार पटेल, बाबू राजेन्द्रप्रसाद और आप भी थे। परन्तु महात्मा जी ने पट्टी खुलने नहीं दी और मैं समझता हूँ कि कांग्रेस तो एक पशु समान संस्था है, जिसकी डोर गांधी जी के हाथ में है। परन्तु गांधी जी की आँखों पर जवाहरलाल के प्रति स्नेह की पट्टी बँधी हुई है।

"मैं उस पट्टी को कुछ ढीला करने का यत्न करना चाहता हूँ, जिससे उनको कुछ तो पता चले कि वे किस दिशा में कांग्रेस और देश को ले जा रहे हैं।

"इस युद्ध से स्थिति बहुत ही नाजुक हो गयी है और मैं समझता हूँ कि कौंसिलों का बहिष्कार एक मिथ्या पग है।"

"ओह ! परन्तु कौंसिलों में रहकर युद्ध-प्रयास में सहायता देनी पड़ती।"

"तो फिर क्या होता ? युद्ध एक आततायी तानाशाह के विरुद्ध ही तो था।"

"परन्तु सोम ! महात्मा जी किसी भी दशा में युद्ध नहीं चाहते। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंसात्मक उपायों को मानव-समाज के लिये अहितकर मानते हैं।"

"यह तो मैं भी मानता हूँ, परन्तु कभी शरीर में चुभा काँटा निकालने के लिये काँटे का ही प्रयोग करना पड़ता है। यही तो हिटलर के साथ होने जा रहा है।"

भोलाभाई देसाई हृदय से कौंसिलों का बहिष्कार पसन्द नहीं करते थे, परन्तु पार्टी के नियन्त्रण से बँधे हुए वे पिछले दिन वाली सभा में कांग्रेस-नीति का वर्णन कर रहे थे। अब इस युवक को वही बात कहते सुन, उन्होंने भी अपने मन की बात कह दी। उन्होंने कहा, "मैं समझता हूँ कि तुम पत्थर की दीवार से माथा टकराने जा रहे हो। मैं स्वयं ऐसा ही मानता हूँ, जैसा कि तुम कह रहे हो और मैंने अपनी सम्मति लगभग इन्हीं शब्दों में दी थी, जिनमें तुम कह रहे हो; परन्तु किसी ने सुनी नहीं।"

"परन्तु श्रीमान्! इस पग का एक अन्य परिणाम भी है और मैं उससे देश को बचाना चाहता हूँ।"

"वह क्या है?"

"मुस्लिम लीग को देश में राष्ट्र-विरोधी कार्य करने का अवसर मिलेगा।"

"वह तो दोनों अवस्थाओं में मिल रहा था। जब हम कौंसिलों में थे तो वे हिन्दुओं के विरुद्ध विष-वमन कर रहे थे और अंग्रेज़ अधिकारी इस विष-वमन से लाभ उठा रहे थे।"

"उसका विरोध किया जा सकता था। उच्च-स्तर के न्यायाधीशों की एक कमीशन नियुक्त की जा सकती थी, जो इस मामले पर जाँच करती और 'पीरपुर कमेटी' की रिपोर्ट की छीछालेदर कर देती।"

"परन्तु न्यायाधीश निर्णय करने में तीन वर्ष लगा देते और उनका कार्य निरर्थक हो जाता।"

"सात में से पाँच प्रान्तों में बहुमत रखते हुए यह काम शीघ्र कराया जा सकता था। केन्द्र की सरकार की ओर से यह कमीशन नियुक्त की जा सकती थी। एक महीने में रिपोर्ट तैयार की जा सकती थी। साथ ही कमीशन द्वारा पीरपुर कमेटी' के सदस्यों की ओर से सम्मन जारी कर दिये जाते कि कमीशन के सम्मुख उपस्थित हों, सब बातें उपस्थित करें। यदि वे न आते अथवा उनकी रिपोर्ट मिथ्या सिद्ध होती तो उनको दण्ड दिया जा सकता था। दो समुदायों में मिथ्या प्रचार से वैमनस्य उत्पन्न करने का आरोप लग सकता था।"

"और यदि रिपोर्ट ठीक सिद्ध हो जाती तो?"

"तो कांग्रेसी मन्त्रियों को पदच्युत कर दिया जाता।

"देखिये, देसाई जी! मैं न्यायपालिका को एक राज्य का एक अति महत्व-पूर्ण अंग मानता हूँ। कोई भी राज्य इसको सुस्त और त्रुटिपूर्ण बनाकर जीवित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रह सकता। ठीक और अविलम्ब निर्णय में ही न्यायपालिका की सार्थकता है।"

"तुम कानून नहीं जानते। इस कारण तुम इसकी पेचीदगियों को समझ नहीं सकते।"

"भारत में यह होता रहा है और इसके होने से न्यायपालिका की प्रतिष्ठा रही है। अपराध का पता चलने के दो-तीन दिन के भीतर ही निर्णय होना चाहिये। इसकी अपील हो सकती है, परन्तु उच्चतम न्यायालय के निर्णय तक एक मास से अधिक समय नहीं लगना चाहिये।"

"यह असम्भव है।"

"हाँ; वर्त्तमान अवस्था में जब न्यायाधीश वेतनधारी, मद्य-सेवी हों। यदि वे सदाचारी, स्वतन्त्र और स्थिर-बुद्धि वाले हों तो न्याय का काल, पक्ष ठीक किया जाना सम्भव है।"

देसाई साहब ने समझा कि वे मतलब की बात से भटक गये हैं। इस कारण उसने बात को पुनः कांग्रेस की नीति में सुधार के विषय पर लाने के लिये कहा, "मैं समझता हूँ कि कौंसिलों का बहिष्कार भूल है। परन्तु यह हो गया है। अब तुम क्या करोगे?"

"मैं महात्मा जी की नीति का कांग्रेस के भीतर रहकर विरोध करना चाहता हूँ। महात्मा जी की नीति का आधार सर्वदा और सर्वत्र अहिंसा है। जहाँ जवाहरलाल जी और आप लोग इसे अपनी चमड़ी बचाने के लिये एक आड़ के रूप में प्रयोग कर रहे हैं, वहाँ गांधी जी इसे एक शाश्वत-धर्म के रूप में प्रयोग कर रहे हैं।"

"क्या मतलब है शाश्वत का?" देसाई ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"शाश्वत का अर्थ 'इटर्नल' अर्थात् सदा से और सदा रहने वाली। मैं इसके विपरीत ही कुछ कार्य करना चाहता हूँ।"

"तुम्हें कांग्रेस से बाहर कर दिया जायेगा।"

"तब कोई अन्य कार्य-क्षेत्र बना लूंगा।"

"यदि तुम बता देते कि यह कैसे करोगे तो कदाचित् मैं तुम्हारा सहायक हो जाता।"

"उस समय तो आप हुए नहीं जब मैंने सन् १९३९ में लखनऊ में एक विद्रोह का मार्ग बताया था। आप अपनी नेतागीरी छोड़ने के लिये तैयार नहीं थे। मैं तो नेता हूँ नहीं। बनना चाहता भी नहीं। इस कारण कुछ भी खो देने का मुझे भय नहीं है।"

जब भी देसाई सोम को घुमा-फिरा कर वास्तविक बात पर लाने का यत्न करता था, सोम सैद्धान्तिक बातें कर कर्म के विषय पर बातें करने से बच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता था।

परिणाम यह हुआ कि डेढ़ घण्टे के वार्त्तालाप का कुछ भी निष्कर्ष नहीं निकला। बात को समाप्त करने के लिये देसाई साहब ने कह दिया, "किसी दल में रहते हुए उस दल के विधि-विधान को मानना चाहिये।"

"दल की गलत नीति का विरोध करना और उसे गलत सिद्ध करने का यत्न करना नियन्त्रण भंग नहीं कहा जा सकता।"

: ६ :

सोम के कार्य करने का ढंग 'ह्विस्पिरिंग'[1] की नीति थी। वह मुख्य-मुख्य नेताओं से अपना सम्पर्क बना अपनी प्रतिष्ठा जन-साधारण में स्थापित करता जा रहा था और उनको यह समझाने का यत्न कर रहा था कि गांधी जी की अहिंसा की नीति दिखावे की है; वास्तव में हिंसा के प्रयोग का अभी तक अवसर नहीं आया था; अब अवसर आ गया है; इस युद्ध के काल में ही हमें चोट करनी होगी।

धीरे-धीरे यह विचार बल पकड़ रहा था। इस समय सुभाषचन्द्र बोस देश से लापता हो गये। लापता होने से दो-तीन मास पूर्व वे बम्बई में आये थे और सावरकर जी से मिले थे। दोनों में क्या बातचीत हुई, सोम को पता नहीं चला। परन्तु सावरकर जी का विदेशों से सम्पर्क होने से यह अनुमान लगाया जा रहा था कि बोस बाबू का देश से लापता होना सावरकर जी से भेंट के परिणामस्वरूप हुआ है।

लोग कानों-कान इसका उल्लेख करते थे, परन्तु प्रमाण न होने से मौन हो जाते थे।

एक दिन समाचार मिला कि सुभाष बोस सिंगापुर पहुँच गये हैं। इस समय तक सिंगापुर अंग्रेज़ों के हाथ से निकल कर जापानियों के हाथ में जा चुका था। इसके कुछ दिन उपरान्त सुभाष बाबू की रेडियो पर प्रसारित घोषणा को प्रकाशित करवा कर सोम कांग्रेस में और जनता में बाँट रहा था। तदनन्तर बोस की सेना द्वारा इम्फाल पर आक्रमण की सूचना मिली।

इस समय सोम बंगाल में 'गोरिल्ला' ढंग के युद्ध की तैयारी में लग गया। उसने अपने कुछ साथी भी तैयार कर लिये थे।

छापामार सेना को पण्डित जवाहरलाल का मौखिक आशीर्वाद मिला तो सोम ने इसे झूठा सिद्ध करने का यत्न किया। सोम नहीं चाहता था कि जो मोर्चा वह तैयार कर रहा है, उस पर युद्ध से डर जाने वाले नेताओं का प्रभाव

१. कानों-कान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ने दे ।

पण्डित सुधाकर का एक भक्त बैरिस्टर शैलेन्द्रकुमार सोम के साथियों में था और उसने ही सोम को सुझाव दिया कि इस काम में सहायता पण्डित नेहरू जी करेंगे ।

"अच्छी बात है," सोम ने कहा, "मैं दिल्ली जाकर पण्डित जी से बात करने का यत्न करूँगा ।"

इस पर भी वह पण्डित जी से मिलने नहीं गया ।

लगभग दो सौ युवकों को तैयार किया जा रहा था कि जब 'आज़ाद हिन्द सेना' देश में आये तो ब्रिटिश सेना के कार्य में बाधाएँ खड़ी की जाएँ, जिनसे उनको रसद-पानी और शस्त्रास्त्र न पहुँच सके । साथ ही जनता आज़ाद-हिन्द सेना का स्वागत एवं उसकी सहायता कर सके ।

किसी कार्यवश बंगाल से सोम बम्बई आया तो उसे बिहार के नेता प्रभुनारायण मिल गये । चौपाटी पर एक कांग्रेस सभा में सोम को स्वयंसेवकों में तथा सामान्य जनता में घूमते देख, बाबू प्रभुनारायण ने अपने समीप खड़े एक कार्यकर्त्ता से पूछ लिया, "उस व्यक्ति को जानते हो ?"

"जी; वह सोम जी हैं । यहाँ वाम-पंथियों में भली-भाँति जाने-बूझे व्यक्ति हैं ।"

प्रभुनारायण भी अपने को कांग्रेस के वाम-पंथियों में मानते थे । इससे उनके कान खड़े हो गये । उन्होंने कहा, "परन्तु यह तो हिन्दू सभाइट है ?"

"जी नहीं । यह समाजवादी है ।" कार्यकर्त्ता ने कह दिया ।

"मैं इससे मिलना चाहूँगा ।"

"मिल सकते हैं । बताइये, कब मिलना चाहेंगे ?"

"मीटिंग के उपरान्त अपने निवास पर ।"

"मैं प्रबन्ध कर दूँगा । उन्हें आपसे मिल कर बहुत प्रसन्नता होगी ।"

"तो तुम इससे बहुत मेल-जोल रखते हो ?"

"ये यहाँ बम्बई में अनेकों से मेल-जोल रखते हैं । प्रगतिशील विचारों के मनचले व्यक्ति हैं ।"

"अच्छा, इन्हें आज ले आओ । मैं कल प्रातःकाल दिल्ली जाना चाहता हूँ ।"

यह सन् १९४२ के अप्रैल मास के प्रथम सप्ताह की बात थी । इससे पहले प्रभुनारायण और सोम में बम्बई में ही भेंट हुई थी । तब सन् १९४० था । लगभग दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे ।

सोम उसी सायंकाल बाबू साहब के कमरे में आया तो बाबू साहब ने पूछा, "क्यों, भाई ! मैं तो बम्बई में कई बार आया हूँ, परन्तु आपके दर्शन आज ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए हैं।"

"जी, मैं आजकल बम्बई कम ही रहता हूँ। बंगाल ही मेरा कार्य-क्षेत्र है।"

"वहाँ क्या काम करते हैं?"

"कुछ विशेष नहीं। केवल आजकल की देश की स्थिति में कुछ करने को चित्त करता है। उसी के लिये इधर-उधर घूमता-फिरता हूँ।"

"देश की स्थिति क्या है?"

"तो आप नहीं जानते?"

"जानता तो बहुत-कुछ हूँ, परन्तु मेरी जानकारी क्या वही है, जो आपकी है, यह नहीं कह सकता।"

"हाँ; मैंने आपमें और अपने में अन्तर पर विचार नहीं किया था। आप नेता हैं और आकाश में विचरते हैं। मैं सामान्य जीव होने से भूमि पर चलता हूँ। तो सुनिये, मैं भूमि पर की बात बताता हूँ। जापान ने सिंगापुर और फिर रंगून पर अधिकार जमा लिया है। सुभाष जी बर्मा में पहुँच, रंगून में अपना 'हैड क्वार्टर' बना रहे हैं। यह भी समाचार है कि उनके नेतृत्व में चालीस से साठ हज़ार युद्ध-बन्दी और नागरिक भरती हो गये हैं और वे उनको लेकर आसाम पर आक्रमण करने वाले हैं।"

प्रभुनारायण हँस पड़ा और बोला, "यह मैं सब जानता हूँ।"

"अभी और सुन लीजिये। मैं तो आपको अपनी जानकारी बता रहा हूँ। आपकी जानकारी का मुझे ज्ञान नहीं। इन सूचनाओं से देश-भर में आतंक छा रहा है। हिन्दुस्तान में वाइसराय से लेकर तहसीलदार के चपरासी तक आतंकित हैं। उनकी रोज़ी छिन रही प्रतीत हो रही है। और इससे बड़े-से-बड़े उद्योगपति से लेकर पाँच-चार बीघा भूमि के स्वामी किसान तक सब घबरा रहे हैं। मैं देश के सबसे अधिक आतंकित क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को बताता रहता हूँ कि उनको इस भय का निवारण कैसे करना चाहिये।"

"कैसे करना चाहिये?"

"मैं लोगों को कह रहा हूँ कि जब तक लोग अपनी रक्षा का प्रबन्ध स्वयं नहीं करते, तब तक कोई सरकार जनता की रक्षा नहीं कर सकती। इसलिये गाँव-गाँव में अखाड़े, लाठी, तलवार चलाने और बन्दूक चलाने का अभ्यास करना चाहिये, जिससे अवसर पड़ने पर वे अपनी रक्षा कर सकें।"

"और यदि सुभाष बाबू की सेना आ गयी तो लोग क्या करें?"

"सुभाष जी की सेना का स्वागत करें और यदि सुभाष बाबू की सेना का मुकाबला करने अंग्रेज़ी अथवा अमरीकी सेना आये तो उसके मार्ग में बाधा खड़ी कर दें। पुलें तोड़ दें, सड़कों पर गड्ढे खोद दें अथवा पत्थरों की दीवारें बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंध लगा दें।"

"और तुम्हारी किसी ने थाने में रिपोर्ट नहीं की ?"

"देहातों के लोग बेचारे सरल-चित्त हैं। वे हृदय से देश-भक्त हैं। शहरी लोगों की भाँति देश-द्रोही नहीं हैं। ज्यों ही सुभाष बाबू का नाम सुनते हैं, तुरन्त मान जाते हैं।"

"और गांधी जी की अहिंसा का पुजारी कोई नहीं मिला ?"

"बहुत मिले हैं। परन्तु जब उनको समझाता हूँ तो समझ जाते हैं। मेरी युक्ति यह है कि सुभाष बाबू हिंसा और सेना के प्रयोग से स्वराज्य लेना पाप नहीं मानते। गांधी जी इसे पाप मानते हैं। दोनों हमारे पूज्य हैं। हमें इस मतभेद को उन्हीं तक रहने देना चाहिये। दोनों में से कोई भी आये, हमें तो फूलों की मालाएँ पहनानी हैं। गांधी जी सत्याग्रह करें तब भी हम फूलों की मालायें पहनायेंगे।

"मेरी बात प्रायः लोग समझते हैं। प्रायः देहाती कहते हैं, 'ठीक है। नेता लोग आपस में निश्चय कर लें कि कौन-सा उपाय ठीक है। हम तो स्वराज्य चाहते हैं।'"

"बहुत चतुर हो, सोम जी! क्या यह सब सावरकर जी ने सिखा कर भेजा है ?"

"सावरकर जी कहते हैं कि सुभाष बाबू विजयी हों अथवा पराजित हों, स्वराज्य तो मिलेगा। अन्तर यह होगा कि सेना स्वराज्य प्राप्त करेगी तो पूर्ण हिन्दुस्तान में एक राज्य होगा और यदि गांधी जी के ढंग से स्वराज्य मिला तो देश-विभाजन होगा।

"उनका यह भी कहना है कि यदि बोस बाबू ने मुसलमानों से लड़कर उनको भारत में रहने पर विवश करना आवश्यक न समझा तो विभाजन तो होगा, परन्तु उस समय दो राष्ट्रों में विभाजन होगा, न कि दो देशों में विभाजन होगा।"

प्रभुनारायण इस कथन का अर्थ समझने के लिये गम्भीर भाव में सोम का मुख देखते रह गये। सोम ने बाबू साहब को विचार-मग्न देख कह दिया, "तो आप नहीं समझे न ?"

"नहीं।"

"तो सुनिये। मैं त्रिपुरा-कांग्रेस के अवसर पर दर्शक के रूप में उपस्थित था। बोस बाबू कलकत्ता जाने लगे तो उनके साथ ही कलकत्ता पहुँचा था। जब वे स्वस्थ हुए तो मैं उनसे मिला। मैंने अपना परिचय देकर उनसे पूछा कि हम बल-पूर्वक अंग्रेज़ों को यहाँ से निकाल सकते हैं। मैं इसमें विश्वास रखता हूँ। केवल पन्द्रह सौ अंग्रेज अफसर यहाँ हैं। वे यहाँ से भगाये जा सकते हैं, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात-आठ करोड़ मुसलमानों का क्या होगा ?

"इस पर उन्होंने कहा था, 'उनको पृथक् देश दिया जा सकता है, परन्तु तब वे हिन्दुस्तान में नहीं रह सकेंगे।"

" 'जो यहाँ देश-भक्त बन कर रहना चाहें उनको भी ?' मेरा प्रश्न था। उनका स्पष्ट कथन था, 'देश-भक्ति की परीक्षा स्वराज्य-प्राप्ति से पूर्व देनी होगी, न कि स्वराज्य-प्राप्ति के उपरान्त। वह तो बिना परीक्षा के पुरस्कार पाने के तुल्य होगा।

" 'यदि मुसलमानों ने हमारे सत्याग्रह में अंग्रेज का साथ दिया तो हमारी विजय के उपरान्त दो ही विकल्प उनके सामने होंगे। या तो वे पूर्ण हिन्दुस्तानी समाज में घुल-मिल जायें और बिना किसी प्रकार के विशेषाधिकारों के समान नागरिक बनकर रहें, अन्यथा यहाँ से किनारा करें और चिनाव के पार निकल जायें। वे यहाँ हिन्दुस्तान में रहने नहीं दिये जायेंगे।"

"बाबू साहब ! इसी कारण कहता हूँ कि यदि सुभाष बोस विजयी हुए तो पूर्ण देश में हिन्दू-मुसलमान समस्या नहीं रहेगी। कुछ क्षेत्र पाकिस्तान बना दिया जायेगा। मुसलमानों को ट्रेनों में लाद-लाद कर उस क्षेत्र में भेज दिया जायेगा और वहाँ से हिन्दुओं को ट्रेनों में भर कर सीमा के इधर ले आया जायेगा।"

प्रभुनारायण जी को यह सुझाव समझ में नहीं आया। उन्होंने कहा, "क्रिप्स की घोषणा के विषय में क्या समझे हो ?"

"उसका मेरे काम से सम्बन्ध नहीं है। इस पर भी कांग्रेस का सदस्य होने के नाते मैं उस प्रस्ताव को स्वीकार करने को कहूँगा।

"उस पर अभी अंग्रेज़ से झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं। झगड़ा करने का समय होगा संविधान-सभा में। मैं समझता हूँ कि विशेषाधिकार, विशेष मतदाता-सूची, विशेष प्रातिनिध्य संविधान में नहीं मानने चाहियें। जो देश में सबके समान बनकर नहीं रहना चाहते, वे देश में नहीं रह सकते। यह झगड़ा संविधान सभा में होगा। उसका समय अभी नहीं।"

"और राजे-महाराजे ?"

"वे भारत की शान हैं। वे रहेंगे, परन्तु बिना राजनीतिक प्रभुता और अधिकारों के। उनकी रियासतें रहेंगी, परन्तु वहाँ का राज्य वहाँ के लोग करेंगे।"

"वे नहीं मानेंगे।"

"बाबू साहब ! पंजाबी में एक कहावत है 'डण्डा पीर मुच्टंडियाँ दा।"

प्रभुनारायण सोम को विदा करने के लिये उठ खड़े हुए और कहने लगे, "आप बहुत भयानक व्यक्ति हैं।"

"तो पुलिस में रिपोर्ट कर पकड़वा दीजिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह शुभ काम कोई और कर देगा।"

: १० :

युद्ध के दिनों में इस प्रकार के विचार रखना सत्य ही भयंकर बात थी और सोम की मुखबरी किसी ने कर दी। परिणामस्वरूप एक रात दो बजे पुलिस उसके घर पहुँची और उसे 'डिफैंस ऑफ इण्डिया ऐक्ट' के अधीन पकड़ कर ले गयी। उसकी सम्पत्ति भी ज़ब्त करने की आज्ञा थी, परन्तु जब उसका कमरा खोला गया तो उसमें से उसके पहनने की दो जोड़ी पोशाक तथा कुछ पुस्तकें ही मिलीं। उन दिनों कीर्ति भुवाली गयी हुई थी और उसका कमरा बन्द था। उसकी ताली उसी के पास थी।

पुलिस ने कीर्ति के कमरे के ताले को मुहरबन्द कर दिया। कम्पनी ने वह कमरा उनके लेखाकार का होने के नाते उसको खोल देने की याचिका प्रेज़िडेंसी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख कर दी।

भुवाली से समाचार आया था कि बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वे सर्दियों में लाहौर गये थे और वहाँ से ही बीमार होकर लौटे हैं। इस समाचार पर ही कीर्ति एक सप्ताह का अवकाश ले भुवाली आयी हुई थी, जब बम्बई से समाचार आया कि सोम पकड़ा गया है और उसके कमरे को पुलिस मुहरबन्द कर गयी है।

नलिनी इस समय इक्यानवे वर्ष का था। लाहौर में एकाएक उसे दुर्बलता अनुभव होने लगी थी और उसे ऐसा अनुभव हुआ था कि दीपक में तैल समाप्त हो जाने के समान उसमें जीवन-ज्योति बुझ रही है। इस कारण अपना अन्त समीप समझ, वह भुवाली चला आया था। परन्तु भुवाली आने पर उसे अपने में पुनः शक्ति का संचार होता प्रतीत होने लगा था।

जब नलिनी को बम्बई से आया तार कीर्ति ने सुनाया तो वह उठकर बैठ गया और कीर्ति से बोला, "तो तुम बम्बई लौट जाना चाहती हो ?"

"नहीं बाबा ! अभी मेरे यहाँ रहने के दो दिन और हैं। मैं दो दिन के उपरान्त ही जाऊँगी।"

"अच्छा, जब चाहो जाओ और देखो, यदि जेल में उससे मिलने जाओ तो मेरा आशीर्वाद देना। परमात्मा उसे स्वस्थ और प्रसन्न रखे और तुम सुहागवती बनी रहो।"

दो दिन बाद जब कीर्ति भुवाली से बम्बई रवाना हुई तो नलिनी के स्वास्थ्य में सुधार द्रुत-गति से आरम्भ हो गया था।

कीर्ति का कमरा खुलवाने में छः मास लग गये। इन छः महीनों में देश की अवस्था में भारी परिवर्तन हुए। क्रिप्स-योजना किसी ने नहीं मानी। गांधी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन गांधी जी तथा अन्य प्रमुख नेताओं के पकड़े जाने पर हिंसात्मक हो गया। लोगों ने सरकारी माल को भारी हानि पहुँचायी और सरकार ने सहस्रों को गोली का निशाना बना दिया।

आठ और नौ अगस्त की रात को नेता लोग पकड़े गये थे और नौ तारीख को ही हिन्दुस्तान-भर में बलवे, तोड़-फोड़ और अग्नि-काण्ड होने लगे।

एक सप्ताह तक तोड़-फोड़ और रेल की पटरियाँ उखाड़ने का कार्यक्रम जारी रहा और फिर धीरे-धीरे सब शान्ति हो गयी। कुछ समाजवादी कांग्रेसी भूम्यान्तर्गत हो गये और तोड़-फोड़ का काम करते रहे, परन्तु यह भी अधिक समय तक नहीं चल सका। दिसम्बर तक प्रायः शान्ति स्थापित हो चुकी थी।

भुवाली में नलिनी का स्वास्थ्य सुधर रहा था। अक्टूबर के महीने में ही वह लाहौर चला आया। पिछली बार जब वह लाहौर से वापस गया था तो उसे 'स्ट्रैचर' पर डाल कर ले जाया गया था। भुवाली से आने के समय वह पैदल चल कर, स्टेशन के बाहर मोटर से प्लैटफॉर्म पर रेल के डिब्बे तक जा सका था।

विजय, आनन्द और प्रभा उसके साथ थे। रेल के फर्स्ट-क्लास के डिब्बे में बैठते हुए विजय ने पूछ लिया, "बाबा! थकावट तो अनुभव नहीं करते?"

"नहीं; अंग चलते हैं। केवल पहले की भाँति चपल नहीं रहे। अब धीरे-धीरे काम करते हैं, परन्तु यह तो पिछले चार-पाँच वर्ष से हो रहा है। पिछले वर्ष लाहौर में क्या हुआ, समझ में नहीं आया। एकाएक टाँगों और बाँहों से प्राण लोप हो गये प्रतीत होने लगे थे। अब अगस्त के महीने से शरीर में शक्ति का पुनः संचार हो रहा प्रतीत होता है।"

"मैं समझता हूँ कि वर्षा ऋतु के समाप्त होते ही यह परिवर्तन उत्पन्न हुआ है।"

नलिनी गम्भीर हो विचार करने लगा। एकाएक वह बोला, "मुझे कुछ अन्य बात समझ में आ रही है। इसका ऋतुओं से सम्बन्ध नहीं है। हाँ, यह एक प्रकार की आत्म-तुष्टि प्रतीत होती है। मानो, मेरा जीवन-कार्य समाप्त नहीं हुआ। वह अभी भी चल रहा है।

"इसका सम्बन्ध सोम के पकड़े जाने से भी प्रतीत होता है। जिस दिन उसके पकड़े जाने का समाचार बम्बई से आया था, मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ, मानो नींद से जाग पड़ा हूँ। मैं चौंक कर उठा और पलंग पर बैठ गया था। पूर्ण शरीर में चेतना का संचार हुआ था। उस स्फूर्ति से मुझे पहले तो यह लगा कि बुझने वाले दीपक की भाँति यह अन्तिम प्रकाश ही है। कीर्ति ने कहा था, 'बाबा! लेटे रहो। यह कुछ विशेष बात नहीं है। जो आग से खेलते हैं, उनको आग से झुलसने की सम्भावना के लिये तैयार रहना चाहिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझा था कि मेरी हृदय-गति बन्द होने वाली है। इस पर मैं आँखें मूंद परमात्मा का चिन्तन करता हुआ पलथी मार पलंग पर बैठ गया। परन्तु मुझे भीतर से आवाज़ आई कि अभी अन्त दूर है। और जिस दिन कीर्ति बम्बई के लिये रवाना हुई थी, उस दिन कई मास के उपरान्त मैं उसे विदा करने के लिये कोठी के बाहर तक आया था।

"तब से स्थिति कुछ सुधरी ही प्रतीत होती है।"

विजय ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो आपका विचार है कि आपके स्वास्थ्य के सुधरने का सोम के पकड़े जाने से सम्बन्ध है?"

"हो सकता है। यह पारिवारिक प्रवृत्ति के जारी रहने की अनुभूति से भी हो सकता है। मेरी सन्तान में आत्म-स्वाभिमान की परम्परा अभी विद्यमान है। जब आप लोगों ने परिवार की लिमिटिड कम्पनी बनायी थी, तब भी मेरे मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ी थी और कुछ वैसी ही बात सोम के पकड़े जाने पर अनुभव हुई थी।"

अनुभव तो विजय को भी कुछ ऐसा ही हुआ था, परन्तु वह अपने मुख से इसे कहना नहीं चाहता था। आज तीन महीने के उपरान्त बाबा ने उस दिन की घटना का वर्णन किया तो विजय को अपने मन के उस समय के भाव स्मरण आने लगे। बाबा के एकाएक उठ कर खाट पर बैठने से उसे भी कुछ यही प्रतीत हुआ था कि अन्त समीप आ गया है। अब बाबा के कहने पर वह समझ गया कि वह स्फूर्ति की सूचक अन्त नहीं थी, वरन् जीवन के नये अध्याय के आरम्भ का संकेत था, मानो जीवन की पुस्तक का पन्ना उलट कर नया अध्याय सम्मुख आ रहा है।

उसने अपने मन में उठ रहे भावों को कहा नहीं। बात नलिनी ने ही जारी रखी। उसने कहा, "युद्ध की समाप्ति अभी समीप प्रतीत नहीं होती। मैं सोम के जेल से बाहर आने तक जीवित रहना चाहता हूँ।"

"पिता जी! सुभाष बोस का हिन्दुस्तान पर आक्रमण अभी आरम्भ हो रहा प्रतीत नहीं होता।"

"अब वह नहीं होगा। यदि हुआ भी तो वह सफल नहीं होगा। देश में वह वातावरण नहीं रहा, जो क्रिप्स के आने से पूर्व था। मैं समझता हूँ कि क्रिप्स के प्रस्ताव को अस्वीकार करना भूल थी और 'भारत छोड़ो' आन्दोलन तो बच्चों के रूठने के तुल्य था। उस आन्दोलन में यदि कुछ तत्त्व की बात दिखायी दी थी तो नेताओं के पकड़े जाने के उपरान्त तोड़-फोड़ की कार्यवाही है। परन्तु यह तोड़-फोड़ बोस बाबू के आक्रमण के समय होनी चाहिये थी। यह समय से पूर्व हो गयी।

"अब तो जापान की पराजय आरम्भ हो गयी है। फिलिपाइन्स से उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल दिया गया है। इधर आसाम की सीमा पर भी जापानियों को पछाड़ा जा चुका है। चीन में भी च्यांग काई शेक की सेना जापानियों को प्रशान्त महासागर की ओर धकेलने लग पड़ी है।"

"हाँ, बाबा! युरोप में भी इटली को अल-अमीन के मोर्चे पर भारी पराजय हुई है।"

"इस पर भी युद्ध का अन्त अभी दूर है। मुझे शोक है कि एक महा-असुर को पराजित करने में भारत का सहयोग होते हुए भी इन नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण भारत को उसका श्रेय नहीं मिलेगा।

"भारत के नेताओं ने भारत को 'वर्ल्ड कम्युनिटी'[1] में खड़ा होने नहीं दिया।

"ये नेतागण कदाचित् यह समझ रहे हैं कि जेल में अपने को बन्द करा कर वे भारी त्याग और तपस्या कर रहे हैं। यह त्याग, तपस्या तो है, परन्तु उन लोगों के मुकाबिले में, जो तोड़-फोड़ करते हुए सेना और पुलिस की गोली से मारे गये हैं, बहुत ही तुच्छ है।

"कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि ये नेता लोग सुभाष बोस के आक्रमण को विफल बनाने का यत्न कर रहे थे और वह भी बिना उसका मुकाबला किये।

"ब्रिटिश साम्राज्य को सबसे प्रबल चोट सुभाष बोस की विद्रोही सेना ने पहुँचाई है। नेताओं का जेल में जाना, लड़ती हुई सेना को छोड़, राजा के जंगल में भाग जाने के तुल्य ही है। और सेना के कार्य के परिणाम से प्राप्त विजय का श्रेय लेने के लिये ये लोग जेलों से बाहर आ जायेंगे।"

विजय ने इस तुलना पर हँसते हुए कहा, "और अपना राजतिलक करवा लेंगे?"

इस पर आनन्द इत्यादि भी हँसने लगे।

देश और विदेश में परिस्थिति द्रुत-गति से बदल रही थी। सुभाष का पूर्ण बल से आक्रमण नहीं हो सका। उसकी सेना की अग्रिम टुकड़ियाँ इम्फाल इत्यादि स्थानों पर पहुँच तो गयी थीं, परन्तु सैनिक सामग्री और रसद-पानी पहुँचाने के लिये रंगून से सीमा प्रदेश तक न सड़कें थीं और न ही उनकी रक्षा के लिये कोई बड़ा तोपखाना। हवाई जहाज़ों की सहायता भी नहीं मिल सकी। अतः एक-आध झड़प के उपरान्त ही सेना वापस रंगून पहुँच गयी।

युरोप में भी मित्र राष्ट्रों की सेनायें अफ्रीका से सिसेली और सिसेली से इटली में जा पहुँची थीं। फ्रांस के बर्गण्डी तट पर अमरीका और इंगलैण्ड अपनी एक प्रबल सेना उतारने में सफल हो गये थे और वह पैरिस तथा बैल्जियम की ओर बढ़ने लगी थी।

१. भूमण्डल का मानव समुदाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४५ के आरम्भ में हिटलर ने तो हथियार नहीं डाले । वह रावण की भाँति मरते समय भी राम को ललकारता दिखायी दिया था । परन्तु असुर सेना ने हथियार डालने आरम्भ कर दिये थे ।

अन्त में एक भीषण घटना हुई । जापान पर दो ऐटम बम्ब गिरा कर युद्ध का पटाक्षेप किया गया ।

महात्मा गांधी तो सन् १९४४ में ही छोड़ दिये गये थे और जेल से छूटते ही वे जिन्ना से बातचीत करने लगे ।

इस सब समय नलिनी अपनी नसों में नये जीवन का संचार होता अनुभव कर रहा था । यह समाचार भी उत्साहवर्धक था कि इंगलैण्ड में टोडी-सरकार के स्थान, मज़दूर दल सत्ताधीश हो गया था ।

सोम को तो जापान से युद्ध-विराम के उपरान्त जुलाई, १९४५ में ही छोड़ा गया था । पूना जेल से छूट सोम बम्बई में पहुँचा । बम्बई में परिवार के सदस्यों में एक दिन रह वह बाबा से मिलने भुवाली को चल पड़ा । उसकी पत्नी कीर्ति उन दिनों भी भुवाली में ही थी ।

: ११ :

इंगलैण्ड की मज़दूर दल की सरकार हिन्दुस्तान की अंग्रेज़ सरकार पर जोर डाल रही थी कि शासन हिन्दुस्तानियों को सौंप दिया जाये, परन्तु अंग्रेज़ नौकरशाही इसमें अड़ंगे लगा रही थी ।

आज़ाद हिन्द फौज के लगभग साठ हज़ार सिपाही बन्दी बनाये जा चुके थे । वास्तव में आज़ाद हिन्द फौज के आक्रमण ने अंग्रेज़ों के मन पर यह अंकित कर दिया था कि अब वे हिन्दुस्तान पर अधिक दिन हुकूमत नहीं कर सकते ।

आज़ाद हिन्द सेना के तीन उच्च अधिकारियों पर कोर्ट मार्शल किया गया । अभियुक्तों ने अपने को निर्दोष घोषित किया तो मुकद्दमा चलने लगा । इस मुकद्दमे में अभियुक्तों को निर्दोष सिद्ध करने के लिये राष्ट्रीय विचार के कुछ वकीलों के साथ जवाहरलाल सैनिक न्यायालय में जा पहुँचे । इसने देश में भारी हलचल मचा दी ।

पूर्ण देश एक तनाव की अवस्था में हो गया । इस पर भी हिन्दुस्तान में ब्रिटिश नौकरशाही इस हलचल को संगीनों की नोक पर दबा देना चाहती थी । आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों को मृत्यु-दण्ड की आज्ञा हुई तो देश सशस्त्र क्रान्ति के कगार पर खड़ा दिखायी देने लगा ।

इस समय वाइसराय की कौंसिल के एक हिन्दुस्तानी सदस्य ने वाइसराय को सुझाव दिया कि सेना के कमिशण्ड अफसरों में इनके अपराधी अथवा निर-पराधी होने पर मतदान कराया जाये । वाइसराय यह विचार कर तैयार हो गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यदि कमिशण्ड अफसर बहुमत से आज़ाद हिन्द फौज के उच्च-अधिकारियों को दोषी मान जाएँ तो उससे भारत की सेना बग़ावत नहीं कर सकेगी और तब जनता को दबा कर रखा जा सकेगा।

मतदान हुआ और मतदान में लगभग पचहत्तर प्रतिशत अधिकारियों ने आज़ाद हिन्द सेना को तथा उसके दण्डित अधिकारियों को निर्दोष घोषित किया। यह हिन्दुस्तान में ब्रिटिश-राज्य पर दूसरी गहरी चोट थी।

सरकारी अधिकारी समझ गये कि एक बार जनता में विद्रोह हुआ तो वर्त्तमान स्थिति में सेना जनता का साथ देगी और यहाँ अंग्रेज़ी राज्य समाप्त हो जायेगा। सरकार ने तीनों अफसरों को और सभी साठ हज़ार सैनिकों को मुक्त कर दिया।

जनता तो स्वराज्य लेने के लिये तैयार थी, परन्तु नेतागण तैयार नहीं थे। वाइसराय ने शिमला में नेताओं की कान्फरेंस बुलायी और उसमें यह योजना रखी कि वाइसराय की कौंसिल में जनता के नेताओं को सदस्य के रूप में ले लिया जाये और वाइसराय इस कौंसिल को मन्त्री-मण्डल का रूप दे देगी।

इस कौंसिल का निर्माण करने में कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहमत नहीं हो सकीं। मुख्य विवाद यह था कि कांग्रेस मुसलमानों का प्रातिनिध्य नहीं करती अथवा करती है? कांग्रेस को इतना तो ज्ञान हो गया था कि कांग्रेस पूर्ण मुसलमान समुदाय का प्रातिनिध्य नहीं करती। अतः कांग्रेस ने अपने भाग के पाँच सदस्यों में एक मुसलमान सदस्य भी उपस्थित किया। मुस्लिम लीग ने कहा कि मुसलमान सदस्यों का नामांकन मुस्लिम लीग ही करेगी।

वाइसराय मुसलमानों के पाँच सदस्यों में से तीन मुस्लिम लीग के और दो बाहर के लेना चाहते थे। दो में एक पंजाब की यूनियनिस्ट पार्टी का सदस्य और एक अन्य मुसलमानों का। मुस्लिम लीग ने यह भी नहीं माना। इस पर वाइसराय ने घोषणा कर दी कि आम-चुनाव हों, जिससे विदित हो सके कि मुसलमानों का प्रातिनिध्य कौन करता है। सन् १९४६ के आरम्भ में प्रान्तीय कौंसिलों और केन्द्रीय असैम्बली के निर्वाचन हो गये।

इन निर्वाचनों से समस्या पूर्णतः सुलझी नहीं। न तो कांग्रेस पूर्ण हिन्दुस्तानियों की एक-मात्र प्रतिनिधि संस्था सिद्ध हुई और न ही मुस्लिम-लीग पूर्ण रूप से मुसलमानों का प्रातिनिध्य प्राप्त कर सकी।

परन्तु मतों के विचार से मुस्लिम लीग की स्थिति अधिक सुदृढ़ रही। मुसलमान मतदाताओं के नब्बे प्रतिशत मत मुस्लिम लीग को मिले। कांग्रेस को मुसलमान मतदाताओं के तीन-चार प्रतिशत मत मिले। बंगाल में मुस्लिम लीग को बहुमत मिल गया। सिन्ध, पंजाब में किसी को बहुमत नहीं मिला। अन्य प्रान्तों में कांग्रेस को थोड़ा-बहुत बहुमत अवश्य मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय एक अन्य घटना घटी। नौ-सेना में विस्फोट हो गया। किसी अंग्रेज़ अधिकारी ने किसी हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तानी होने के नाते बुरा-भला कहा और नौ-सेना में विद्रोह हो गया। १६ फरवरी को वह विद्रोह आरम्भ हुआ। २० तारीख़ को विद्रोही सेना ने बम्बई नगर में जुलूस निकाला। एका-एक विद्युत् की भाँति नगर-भर में आग फैल गयी। इस विद्रोह को दबाने के लिये सेना भेजी गयी और दोनों ओर से गोली चली और कई मारे गये। अगले दिन विद्रोह ने विस्तार पाया। वायु-सेना के एक हज़ार से ऊपर जवान इसमें सम्मिलित हो गये।

कराची और कलकत्ता में भी जल और वायु-सेना में हड़ताल हो गयी। बम्बई बन्दरगाह में बीस सैनिक-जहाज़ों पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया और उनमें वाइस-ऐडमिरल का जहाज़ भी सम्मिलित था। सबने तोपों का मुख नगर की ओर कर दिया।

इसके साथ ही बम्बई की जनता ने विद्रोहियों का साथ देने के लिये हड़ताल कर दी। नगर में स्थान-स्थान पर जनता एकत्रित होकर नारे लगाने लगी। एक स्थान पर पुलिस और सेना ने जनता की भीड़ पर गोली चला दी। बस फिर क्या था। लोगों ने लूट मचा दी और सरकारी भवनों को आग लगानी आरम्भ कर दी।

सरदार पटेल और जिन्ना के विशेष प्रयत्नों से सेना का विद्रोह शान्त हो गया, परन्तु जनता द्वारा नगर की लूट-मार जारी रही।

बहुत कठिनाई से शान्ति स्थापित हुई। यह विद्रोह ब्रिटिश राज्य पर अन्तिम प्रहार हुआ और सरकार ने घुटने टेक दिये। इंगलैण्ड सरकार ने अपने तीन उच्च-अधिकारियों को भारत में स्वराज्य की समस्या सुलझाने के लिये भेज दिया।

इन दिनों सोम बम्बई में ही था और अपने ढंग से जनता को संगठित करने का यत्न कर रहा था। वह देख रहा था कि अनियंत्रित भीड़ प्रायः दुकानों को लूटने लगती है और नागरिकों के मकानों को ही आग लगाने लग जाती है। अतः जनता के द्वारा मचाई लूट-मार और अग्नि-काण्ड को केवल सरकारी सम्पत्ति तक सीमित करने के लिये उसने अपना संगठन बनाना आरम्भ कर दिया।

इस संगठन का नाम उसने 'शान्ति-दल' रखा। इसमें उसके विचार के कई कांग्रेसी तथा हिन्दू सभाई और कुछ ट्रेड यूनियन के लोग सम्मिलित थे।

बम्बई के विद्रोह में सोमदेव का दल काफ़ी सक्रिय रहा और जब नगर में शान्ति हो गई तो उसका दल स्थान-स्थान पर सभाएँ कर प्रस्ताव पारित करने लगा कि नगर में जो दंगे हुए हैं, वे सब सरकार द्वारा छोड़े हुए गुण्डों ने किये हैं, जिससे जनता भड़क उठे और पुलिस को उस पर गोली चलाने का अवसर मिल सके। सोम जानता था कि बलवे बन्द करने में उसका दल सहायक नहीं हो सकता। वास्तव में देश में सत्ता बदल रही थी और उस बदल रही सत्ता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशा देने के लिये एक प्रबल सेवा-दल होना चाहिये। यही उसके कार्य का आधार था।

परन्तु उसे यह देख अत्यन्त दुःख हुआ कि उसके दल का विरोध कांग्रेस-दल के नेता ही करने लगे हैं।

शान्ति-दल की बम्बई नगर में पाँच शाखाएँ खोली गई थीं। इन शाखाओं के अलग-अलग कार्यालय थे और इनके अलग-अलग मन्त्री थे।

यह संगठन-कार्य अभी चल ही रहा था कि एक दिन बम्बई कांग्रेस के प्रधान डा० खेर का उसे फोन आया। फोन सोमदेव ने स्वयं उठाया। डाक्टर खेर ने अपना परिचय देकर पूछा, "शान्ति-दल के अध्यक्ष आप ही हैं क्या ?"

"जी; मैं ही हूँ।"

"मैं इसके विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखता हूँ। आप किस समय मिलने आ सकते हैं ?"

"जब आप कहिये।"

"तो दस बजे दिन के समय आ जाइये। सोम जी, यह आवश्यक है। नेता-गण इस दल के विषय में चिन्ता करने लगे हैं।"

"मैं आ जाऊँगा। वैसे यह चिन्ता का विषय नहीं है।"

सोम नियत समय पर डाक्टर साहब की बैठक में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही डाक्टर खेर उसे लेकर एक पृथक् कमरे में चले गये। वहाँ बैठा कर पूछने लगे, "इस दल में कितने लोग भरती हो चुके हैं ?"

"इस समय तक इनकी संख्या एक सहस्र तक पहुँच गयी है। मैं बम्बई नगर में शान्ति रखने के लिये कम-से-कम पाँच सहस्र शान्ति-दूत चाहता हूँ।"

"सोम जी ! सुना है कि आपका कोई ट्रेनिंग-कैम्प चल रहा है, जहाँ अपने सदस्यों को आप ट्रेनिंग दे रहे हैं।"

"जी, आपने ठीक सुना है।"

"कितने लोग इस समय ट्रेनिंग ले रहे हैं ?"

"ट्रेनिंग-कैम्प की हाज़िरी दो सौ है।"

"वह कहाँ है ?"

"यह गुप्त है, मुझे बताने के लिये इसकी कार्य-कारिणी से पूछना पड़ेगा।"

"परन्तु यह तो कानून के विरुद्ध है।"

"डाक्टर साहब ! क्या हमने शपथ ले रखी है कि हम सब बातें विदेशीय सरकार के कानून के अनुसार करेंगे।"

"हाँ, तब तक जब तक हम सत्याग्रह करने की घोषणा न कर दें और साथ ही सत्याग्रह का स्थान न बता दें।"

"किनको बता दें ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो जानने का अधिकार रखते हैं।"

"डाक्टर साहब ! यही तो मैं कह रहा हूँ। मैंने कहा है कि दल की कार्यकारिणी से पता किया जायेगा कि आपको कैम्प का स्थान बताऊँ अथवा न। अर्थात् आप इस विषय में जानने के अधिकारी हैं अथवा नहीं।"

"ओह ! परन्तु आप कांग्रेस के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता होते हुए कांग्रेस की जानकारी के बिना एक पृथक् दल का संगठन नहीं बना सकते।"

"सत्य ? मैं यह नहीं जानता था। ऐसी अवस्था में डाक्टर साहब, दो बातें हो सकती हैं। एक तो यह कि मुझे कांग्रेस से बाहर निकाल दिया जाये और एक दूसरी बात भी हो सकती है। आप घोषणा कर दें कि कांग्रेस का इस दल से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।"

"ये दोनों ही बातें करनी होंगी, परन्तु यदि आप यह बता दें कि इस दल का उद्देश्य क्या है तो हम उक्त बातें नहीं भी कर सकते। यह उसी अवस्था में होगा, जब हम देखेंगे कि वर्त्तमान की नाजुक हालत में आप किसी प्रकार की गड़बड़ तो नहीं मचाना चाहते।"

"उद्देश्य तो हमने अपनी विज्ञप्ति में प्रकाशित करा दिये हैं। आप उनकी व्याख्या चाहते हैं तो मैं यह बता सकता हूँ कि जब भी नगर में दंगे-फ़साद होते हैं तो कुछ लोग इस अवसर का लाभ उठा कर लूट-मार करने लगते हैं। हम अपने स्वयंसेवकों द्वारा उन लोगों की लूट-मार करने को नियम-बद्ध करना चाहते हैं। वे कब लूटें, किसको लूटें और कितना लूटें, इसको एक नियम में बाँधने के विचार से इस दल का संगठन किया गया है।"

"यह कौन देखेगा कि किसको, कब और कितना लूटा जाये ?"

"इस दल की कार्य-कारिणी।"

"उसमें कौन-कौन हैं ?"

"एक तो आपके सामने उपस्थित है। अन्य कुछ कारखानों की ट्रेड यूनियनों के मन्त्री हैं।"

"देखिये, सोमदेव जी ! मेरे पास इन्स्पैक्टर जनरल पुलिस का पत्र आया है कि यदि मैं इस दल के विषय में जानकारी दे सकूँ तो वे कृतज्ञ होंगे।"

"परन्तु इन्स्पैक्टर जनरल तो मुझसे एक बार पहले प्रश्नोत्तर कर चुके हैं। वह अब भी कर सकते हैं।"

"यह कब की बात है ?"

"'भारत छोड़ो' आन्दोलन से पहले की बात है और जब वे मुझसे कोई सूचना प्राप्त नहीं कर सके तो मुझे उन्होंने 'डिफेंस ऑफ इण्डिया ऐक्ट' के अधीन पकड़ने की आज्ञा दिलवा दी।"

"यह तो वे अब भी कर सकते हैं। 'डिफेंस ऑफ इण्डिया ऐक्ट' अभी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे हटाया नहीं गया। अच्छा, ऐसा करो। तुम यह शस्त्रास्त्र की ट्रेनिंग बन्द कर दो और इसकी घोषणा कर दो तो कांग्रेस के लिये यह बहुत ठीक होगा।"

"क्या ठीक होगा ?"

"इससे सत्ता बदलने के समय कांग्रेस बदनाम नहीं होगी।"

"मैं तो एक दूसरी बात का विचार कर रहा था।"

"क्या ?"

"यही कि सरकार से अपने दल के नाम सौ बन्दूकों का लायसैंस माँगू।"

डाक्टर खेर हँस पड़े। हँसते हुए बोले, "और तुम समझते हो कि यह सौ बन्दूकें इस पब्लिक दल को मिल जायेंगी ?"

"कोई कारण नहीं कि न मिलें। हम सरकार को वचन देंगे कि इनका प्रयोग सरकारी पुलिस और सेना के विरोध में नहीं होगा, वरन् सरकार की सहायता में होगा। यह दल लूट-पीट को नियम-बद्ध कर देगा। सरकार भी तो यही कर रही है। अब एक सार्वजनिक संस्था यह काम करेगी।"

"आप बहुत गहरे पानी में जा रहे हैं। मुझे भय है कि आप और आपका दल इसमें डूब जायेगा।"

भेंट समाप्त हुई और सोम दल के कार्यालय को लौट आया। परन्तु इसके वहाँ पर पहुँचने से पूर्व ही दल के कार्यालय को पुलिस ने घेरा डाल रखा था और वहाँ बैठे स्वयंसेवकों को पकड़ लिया था।

सोम वहाँ पहुंचा तो उसे भी बन्दी बना लिया गया और उनके सम्मुख ही कार्यालय की तलाशी ले ली गई।

कार्यालय में पाँच शान्ति-दूतों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। एक पैंसिल और दो-तीन खाली कागज़ रखे थे। कार्यालय में न कोई अलमारी थी और न कोई सन्दूक।

तलाशी की रिपोर्ट लिखी गयी। उस पर सोम और दो पड़ोस के मुखबिरों के हस्ताक्षर किये गए और सोम तथा स्वयंसेवकों को पुलिस थाने में ले गये।

वहाँ एक पुलिस-अधिकारी सोम से पूछने लगा, "तुम रात कहाँ सोते हो ?"

"दल के कार्यालय में।"

"वहाँ तो कोई खाट अथवा बिस्तर नहीं है।"

"मैं मेज पर बिना बिस्तर के सो जाया करता हूँ। वहाँ पाँच शान्ति-दूत सदा रहते हैं। वे भूमि पर सोते हैं।"

"परन्तु वहाँ तो तुम्हारे पहनने के कपड़े भी नहीं हैं ?"

"वे घर का नौकर प्रातःकाल लाता है और मैले कपड़े ले जाता है।"

"घर से कौन भेजता है ?"

"मेरी पत्नी भेजती है। जब मैं 'डिफेंस ऑफ इण्डिया ऐक्ट' का बन्दी था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब भी कपड़े और पढ़ने की पुस्तकें घर से आती थीं। अब इतना अन्तर है कि ये नित्य आते हैं। वहाँ जेल में तो पन्द्रह दिन के उपरान्त मुलाकात के समय आते थे।"

"वह यह सहायता क्यों भेजती है?"

"यह तो उससे पता करना चाहिये। मेरे विचार में वह मेरी पत्नी होने के नाते यह सेवा करती है।"

"शान्ति-दल के सदस्यों की संख्या कितनी है?"

"मुझे ज्ञात नहीं।"

"दल के रजिस्टर इत्यादि कहाँ हैं?"

"दल के मन्त्री के पास होने चाहियें।

"मन्त्री कौन है?"

"एक अविनाश मित्र वसु हैं।"

"कहाँ रहते हैं?"

"जब बम्बई में होते हैं तो उसी कमरे में सोते हैं, जिसमें मैं सोया करता हूँ। वे आजकल कलकत्ता गये हुए हैं।"

"दल के कार्य से अथवा अपने निजी कार्य से?"

"दल के कार्य से।"

"वहाँ कलकत्ता में क्या कार्य है?"

"बम्बई की भाँति वहाँ भी दल की स्थापना करने का विचार है।"

"और कहाँ-कहाँ इसकी स्थापना कर चुके हो?"

"बम्बई में पाँच शाखाएँ हैं। पूना में तीन हैं। बेलगाँव में एक है। कलकत्ता में अभी खुलने वाली है अथवा खुल चुकी होगी। यह काम अविनाश बाबू का ही है।"

"आप विचित्र प्रधान हैं, जो आपको संस्था का ठीक-ठीक ज्ञान भी नहीं है। अच्छा, बम्बई की शाखाओं के पते बताओ?"

"देखिये, मौखिक सूचना तो मैं दे सकता हूँ जो मैंने दे दी है। लिखित और ठीक-ठीक सूचना तो अविनाश बाबू ही दे सकेंगे।"

सोम ने पाँच शाखाओं के पते बता दिये। उसका कहना था—"इन शाखाओं के कार्यालय भी ऐसे ही हैं, जैसे कि मुख्य कार्यालय आपने देखा है। वहाँ आपको कुछ भी लुकाव-छिपाव की बात का पता नहीं चलेगा। कारण यह कि कुछ भी लुकाव-छिपाव है नहीं। हम कुछ ईमानदार युवक इकट्ठे हुए हैं। यह इस कारण कि गांधी, जिन्ना इत्यादि नेता-गण देश में अव्यवस्था उत्पन्न करने का यत्न करते रहते हैं और जब उस अव्यवस्था में शान्ति-प्रिय नागरिकों को हानि होने लगती है तो वे शान्ति स्थापित करने के साधन नहीं रखते। पुलिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति स्थापित तो करती है, परन्तु वह लुट-पिट रहे निर्दोष नागरिकों की रक्षा नहीं कर सकती। हमने इस दल की स्थापना इस कारण की है। हम जहाँ उपद्रवियों को उपद्रव करने से रोकेंगे, वहाँ निर्दोषों को हानि उठाने से बचायेंगे।"

पुलिस उच्चाधिकारी जो सोम के बयान लिख रहा था, पूछने लगा, "यह कैसे करेंगे ?"

"विद्रोहियों को लूटने तथा आग इत्यादि लगाने से रोकने के लिये हमारे शान्ति-दूत उपद्रवी भीड़ में मिल जायेंगे और जब कोई कानून के विरुद्ध कार्य करेगा तो उसे मना करेंगे। नहीं मना होगा तो बल-पूर्वक रोकेंगे। भीड़ की मानसिक अवस्था के विषय में मेरा ज्ञान यह है कि उपद्रव आरम्भ करने वाले दो-चार व्यक्ति ही होते हैं। प्रायः एक ही होता है, परन्तु जब वह लूटना आरम्भ करने में सफल हो जाता है तो पीछे दूसरे उसमें सम्मिलित हो जाते हैं। हम आरम्भ में ही उपद्रव को रोकने का यत्न करना चाहते हैं।"

"यह काम तुम्हारा नहीं है।

"तो किसका है ?"

"पुलिस का है।"

"हम उसे मना नहीं करेंगे। न ही उसके काम में विघ्न डालेंगे। हम अपने ढंग से काम करेंगे। पुलिस का ढंग यह है कि जनता में हलचल को बन्द करने के लिये उनके एजेण्ट भीड़ में चले जाते हैं। वे भीड़ को लूट-मार और अग्नि-काण्ड के लिये उत्साहित करते हैं। आरम्भ एक-आध करता है और जब उसके साथ भीड़ व्यापक रूप में सम्मिलित हो जाती है तो फिर लाठी, गोली और अश्रु-गैस के हथ-गोले चलाते हैं और आन्दोलनों को समाप्त कर देते हैं।

"हमारा ढंग दूसरा है। हम भी भीड़ में मिल जायेंगे और जब भी, चाहे वह पुलिस का एजेण्ट हो, चाहे कोई दूसरा हो, अनियमित कार्य करने लगेगा तो उसे मना कर देंगे और नहीं मानेगा तो उसे बल-पूर्वक रोकेंगे।"

"यह योजना अव्यवहारिक है।"

"अभी हमने प्रयोग नहीं की। यदि प्रयोग करने पर अव्यवहारिक सिद्ध हुई तो फिर योजना में अनुभव के अनुसार संशोधन कर लेंगे।"

पुलिस-अधिकारी इस आन्दोलन का सिर-पैर नहीं समझ सका। पुलिस ने पाँच बताये पतों पर भी छापे मारे और कुछ लोग वहाँ ठहरे हुए पकड़ लिये। परन्तु किसी प्रकार का लिखित प्रमाण नहीं मिला, जिससे कोई मुकद्दमा चल सके।

सोम तथा उसके बम्बई में बाईस अन्य साथियों को डिफेंस ऑफ इण्डिया ऐक्ट के अधीन बन्दी बनालिया गया। इस बार सोम को किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया।

कीर्तिदेवी के भी बयान लिये गये। उससे पूछा गया, "आपका विवाह कब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था ?"

"सन् १९२० में।"

"कहाँ हुआ था ?"

"शान्ति-निकेतन में।"

"आपके कितने बच्चे हैं ?"

"चार हैं। दो लड़के और दो लड़कियाँ हैं। एक लड़की का विवाह कलकत्ता में हुआ है। उसके भी अब एक लड़का है।"

"लड़के कहाँ हैं ?"

"एक तो हमारी प्रकाशन-संस्था में कार्य करता है और एक इसी संस्था की पटना शाखा में काम कर रहा है।"

"सुना है कि आप भी इसी संस्था में कार्य करती हैं ?"

"हाँ, मैं वहाँ पर लेखाकार का कार्य करती हूँ।"

"आपको क्या वेतन मिलता है ?"

"सात सौ रुपये मासिक।"

"और आपके लड़के को ?"

"वह मुद्रणालय के मैनेजर के रूप में काम करता है। पाँच सौ रुपया महीना वेतन पाता है।"

"इस प्रकाशन संस्था का मालिक कौन है ?"

"एक प्राईवेट लिमिटिड कम्पनी है। इसमें परिवार के ग्यारह भागीदार हैं। ग्यारह में से आठ तो सक्रिय पत्तीदार हैं। वे वेतन भी पाते हैं और शेष आठ 'स्लीपिंग पार्टनर्स' हैं।"

"आप अपने पति के खाने-पीने के लिये कितना कुछ उसे भेजती हैं ?"

"मैं उनके वस्त्रादि धुलवा कर भेजने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं देती। कभी घर पर कोई विशेष पकवान हुआ और वह बम्बई में हुए तो उनको वह भी भेज देती हूँ। इसके अतिरिक्त उनको कुछ नहीं भेजती। यहाँ तक कि वस्त्र भी वे स्वयं बनवाते हैं। मैले होने पर धुलवाने के लिये मेरे पास भेज देते हैं।"

"आपसे वे कभी मिलते भी हैं ?"

"बहुत कम घर पर आते हैं। जबसे उन्होंने शान्ति-दल की स्थापना की है, वे घर पर एक दिन भी नहीं आये।"

इस प्रकार के बयान से पुलिस को कुछ अधिक पता नहीं चल सका। सोम के साथ भिन्न-भिन्न शाखाओं से पकड़े गये साथियों से भी कुछ विशेष बात पता नहीं चली। वे प्रायः कारखानों में काम करने वाले कर्मचारी थे। वे छोड़ दिये गए, परन्तु सोम को नहीं छोड़ा गया। अविनाशचन्द्र पकड़ा नहीं गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: १ :

कैबिनेट मिशन जब भारत के नेताओं में समझौता नहीं करा सका तो मुसलमान नेताओं ने अपनी योजना एक सार्वजनिक सभा में घोषित कर दी। सभा दिल्ली के अरैबिक कालेज में हुई थी और उसका विवरण पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो गया।

यह समाचार था कि इन भाषणों में मुस्लिम लीग के नेताओं ने हिन्दुओं को बहुत ही बुरा-भला कहा है और धमकी दी है कि यदि उन्होंने मुस्लिम लीग की माँगों को स्वीकार नहीं किया तो हिन्दुस्तान को उनके खून से रंग दिया जायेगा। उनको तैमूर, हलाकू और महमूद गज़नवी के कारनामे याद रखने चाहियें। उनके जांनशीन् अभी जीवित हैं।

इस सभा का समाचार भुवाली में भी पहुँचा। सत्ता-सम्पन्न मुसलमान अधिकारियों का वक्तव्य जब नलिनी ने पढ़ा तो उस पच्चानवे वर्ष के वृद्ध का रक्त भी उबल उठा। वह कोठी के बरामदे में बैठा हुआ समाचार-पत्र पढ़ रहा था। उसने विजय को आवाज़ दी और उसके आने पर उसको समाचार सुनाकर कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि एक अन्तिम चेतावनी नेताओं को और सरकार को दे दूं। यह मेरे पूर्ण जीवन के अनुभवों का निचोड़ होगा। इसके साथ मैं समझूंगा कि मैंने मानवता तथा भारत माता के प्रति अपना ऋण उतार दिया है।"

"पिता जी! समाचार-पत्रों में लेख भेजना चाहते हैं?"

"नहीं; मैं एक ओर तो ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मिस्टर ऐटली को, कैबिनेट मिशन के सदस्यों को, हिन्दुस्तान के वाइसराय को लिखना चाहता हूँ और दूसरी ओर महात्मा गांधी, मौलाना आज़ाद, पण्डित नेहरू, सावरकर, डाक्टर श्यामा-प्रसाद मुखर्जी और मिस्टर जिन्ना को लिखना चाहता हूँ। इन सबको अपने मन की बात कह कर मैं समझूंगा कि मैंने अपना कर्त्तव्य-पालन कर दिया है और फिर शान्ति से इस जीवन के अन्त की प्रतीक्षा करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय परेशानी में पिता का मुख देखता हुआ बोला, "पिता जी हमने जनता और नेताओं को अपने लेखों से समझाने का पर्याप्त प्रयत्न नहीं किया क्या? क्या आप समझते हैं कि हमने अपनी सामर्थ्य से कुछ कम यत्न किया है अभी तक?"

"हाँ, विजय! तभी तो अभी तक मैं जीवित हूँ और यहाँ का अन्न खाता हुआ जीवन चला रहा हूँ। इसी कारण अब पुस्तक अथवा समाचार-पत्र में लिखने के स्थान, सीधा मन से मन की बात कहना चाहता हूँ। ऐसा करो कि तुम कलम, कागज़ लेकर बैठ जाओ। फिर आनन्द इसको टाईप कर कई प्रतियाँ तैयार कर देगा और फिर रजिस्टर्ड डाक से भेज देना।

"देखो विजय! हम अपना कर्त्तव्य-पालन करते हैं। यह जानते हुए भी कि उनका प्रभाव नहीं हो रहा है, हमें अपना कार्य करना ही चाहिये।"

अत: विजय कागज़ और कलम लेकर वहीं आ गया। नलिनी ने अंग्रेज़ी में पत्र लिखाया। पत्र इस प्रकार था—

"आप लोग इस समय हिन्दुस्तान के भविष्य का निर्णय करने बैठे हुए हैं। इस कारण आपके सम्मुख मुख्य झगड़ा क्या है, इस विषय में कुछ लिखना चाहता हूँ।

"यह झगड़ा हिन्दू और मुसलमान का है।

"यह नया झगड़ा नहीं है। इसका आरम्भ उस समय हुआ था जब अरबों का प्रथम आक्रमण भारत पर हुआ था। यह सन् ७१२ की बात है। तबसे लेकर इस्लाम और भारतीय जीवन-मीमांसा का संघर्ष चला आ रहा है।

"जहाँ मध्य एशिया तथा अफगानिस्तान से लेकर मोराको तक इस्लाम कुछ वर्षों में, न केवल राजनीतिक क्षेत्र में विजयी हुआ, वरन् सांस्कृतिक क्षेत्र में भी विजयी हो गया था, वहाँ भारत में सन् ७१२ से लेकर आज तक यह अपना कार्य सम्पन्न नहीं कर सका।

"अन्य देशों में इस्लाम की दोनों प्रकार की विजय और भारत में राजनीतिक प्रभुता प्राप्त होने पर भी यहाँ सांस्कृतिक विजय नहीं हो सकी, इसमें कई कारण हैं। उनका उल्लेख यहाँ अनावश्यक है, परन्तु यह बताना असंगत नहीं होगा कि मुसलमान और हिन्दू परस्पर संघर्षरत थे, जब अंग्रेज़ यहाँ आये।

"अंग्रेज शासकों ने इस झगड़े को देखा, समझा और अपने राजनीतिक लाभ के लिये इस झगड़े का प्रयोग करना चाहा। तत्कालीन अंग्रेज़ शासकों ने यह समझा कि अल्प-मत को देश के बहुमत के विरुद्ध कर देने से उनका राज्य चिरस्थायी हो सकेगा। अत: उन्होंने इस्लाम द्वारा हिन्दुओं को वश में करने का यत्न किया।

"इस प्रयत्न में राजा राममोहन राय अनजाने में सहायक बन गये। उनका,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १८०९ से १८१४ तक रंगपुर में एक ब्रिटिश क्लैक्टर जौन डिगबी के अधीन काम करते हुए एक विचार बना कि सब धर्म समान रूप में श्रेष्ठ हैं। इसने हिन्दुओं की श्रेष्ठता को मुसलमानों की निकृष्टता के बराबर कर रख दिया। राजा राममोहन राय का विचार कुछ भी रहा हो, परन्तु इसने मुसलमानों को अपनी मजहबी वेहूदगियों को हिन्दुओं की श्रेष्ठ जीवन-मीमांसा के समकक्ष कर दिया। यह विचार अब तक चला आ रहा है।

"इससे अंग्रेज़ी राजनीति को सहायता मिली। मुसलमानों में जो एक सहस्र वर्ष (सन् ७१६ से १८०० तक) के हिन्दुस्तान में संघर्ष में असफल होने से उत्साह-हीनता हो रही थी, वह राजा राममोहन के विचार से उत्साह में बदलने लगी।

"हिन्दू आचार-विचार को विध्वंस करने का एक बृहद् प्रयास मैकॉले ने भारत में सन् १८३२ में आरम्भ किया। वह यहाँ की शिक्षा में अंग्रेज़ीयत घुसेड़ कर हिन्दुओं को आचार-विचार से हीन बनाना चाहता था।

"वह शिक्षा अभी तक चल रही है और सवा सौ वर्ष (१८३२ से १९४६) में जो विनाशकारी प्रभाव इस शिक्षा ने हिन्दू-समाज पर किया है, उसकी उपज ही महात्मा गांधी इत्यादि लोग हैं। ये समझ रहे हैं कि भारत देश में मुसलमान की सहायता के बिना भारतीय जीवन चल नहीं सकेगा और अंग्रेज राजनयिक भी इस विचार को प्रोत्साहन दे रहे हैं।

"मैं इस समय पच्चानवे वर्ष की वयस् का हूँ। कांग्रेस के जन्म के पहले से मैं देश की राजनीति का विद्यार्थी रहा हूँ। कांग्रेस का जन्म मेरी आँखों के सामने हुआ है और इसकी सम्पूर्ण गतिविधि से मेरा किसी-न-किसी प्रकार का सम्पर्क रहा है। कांग्रेस एक ओर तो राजा राममोहन राय की सन्तान है और दूसरी ओर लॉर्ड मैकॉले की। इन दोनों महापुरुषों के दूषित विचारों को लेकर यह पिछले इकसठ वर्ष से कार्य कर रही है। इसकी पूर्ण दूषित विचारधारा का ही अब यह परिणाम निकल रहा है कि मुसलमान किसी युक्तियुक्त समझौते के लिये तैयार नहीं हो सके।

"इसी वर्ष के अप्रैल मास में हुई मुस्लिम कान्फरेंस में प्रकट किये गये उद्गारों की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। उस कान्फरेंस में मिस्टर जिन्ना और अन्य मुसलमानों के प्रमुख नेता उपस्थित थे।

"उन व्याख्यानों की उपस्थिति में एक बात स्पष्ट है कि मुसलमान अपनी बात तलवार की नोक पर मनवाना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि गांधी जी के हिन्दुओं के नेता होने के कारण उनकी धमकी अमल में भी आ सकती है।

"इस धमकी का उत्तर तो है। धमकी देने वाले बेचारे नहीं जानते कि यदि वे अपने कथन को सत्य करने पर उतर आयें तो अंग्रेज उनको बचा नहीं सकेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वे भारत में अस्तित्व-हीन हो जायेंगे।

"परन्तु मेरा इससे कोई अभिप्राय नहीं है। मैं समझता हूँ कि अंग्रेज प्रतिनिधि, अंग्रेज़ी पार्लियामैण्ट और भारत में अंग्रेज़ी शासन अब मुसलमानों को इस देश में एक राजनीतिक ईकाई बना कर नहीं रख सकते। मुसलमान हिन्दुओं से अपना किनारा करें और पाकिस्तान ले लें। इसी में उनका भला है और मानव-कल्याण भी।

"परन्तु इसमें एक शर्त होनी चाहिये। वह यह कि हिन्दू-मुसलमान जनता की अदला-बदली भी हो। व्यवहारिक रूप में जनमत-संग्रह सन् १९४६ के निर्वाचनों में हो चुका है। हिन्दू पाकिस्तान नहीं चाहते और मुसलमान कन्या-कुमारी से पेशावर तक किसी भी प्रदेश का हो, वह पाकिस्तान चाहता है। अतः मुसलमानों को पाकिस्तान दे दिया जाये। परन्तु उन मुसलमानों का जो मद्रास अथवा महाराष्ट्र में रहते हुए भी पाकिस्तान के पक्ष में मतदान कर चुके हैं, क्या अधिकार है कि वे हिन्दुओं के देश में रहें ?

"देश-विभाजन के लिये सीमा-रेखा खींच दी जाये और आबादी की अदला-बदली कर दी जाये। यदि आबादी की अदला-बदली न हुई तो अत्यन्त भयंकर परिणाम होंगे।

"वर्त्तमान परिस्थिति में जो आबादी की अदला-बदली नहीं चाहते, वे किस प्रकार विश्वास दिला सकते हैं कि मुसलमानी क्षेत्रों में बसे हिन्दुओं पर वह अत्याचार नहीं किया जायेगा, जो उन्होंने अरैबिक कालेज की सार्वजनिक कान्फरेंस में करने की धमकी दी है।

"यदि पेशावर, कोहाट और लाहौर के पश्चिम में रहने वाले तथा ढाका, खुलना इत्यादि स्थान पर रहने वाले हिन्दू वहाँ से निकाले नहीं गये तो वहाँ उनकी रक्षा मौलाना आज़ाद अथवा महात्मा गांधी कर सकेंगे क्या ?

"फिर मैं यह भी प्रश्न करता हूँ कि यदि वहां पर हुए हिन्दुओं पर अत्याचार की प्रतिक्रिया में यहाँ के मुसलमानों को हिन्दुओं ने पीड़ित किया तो ये कांग्रेसी शासक ऐसा होने देंगे क्या ? मेरा विचार है कि यदि इसी समय उनको पाकिस्तान भेज दिया जाये तो उन पर किसी हिन्दू को अत्याचार करने का अवसर नहीं रहेगा और न ही यहाँ के शासन को हिन्दुओं पर गोली चला कर उनके क्रोध को शान्त करने का कष्ट करना पड़ेगा।

"मैं अपने जीवन-भर के अनुभव और मानव इतिहास के अध्ययन के परिणामस्वरूप यह निवेदन कर रहा हूँ कि लाखों की हत्या, अरबों रुपयों की सम्पत्ति का विनाश और अगणित स्त्रियों का अपहरण तथा मान-हानि के पाप के आप भागी मत बनें। इन सब बातों को बिना देश के विभाजन के भी रोका जा सकता था, यदि अंग्रेज़ अपनी विकृत कूटनीति का प्रयोग न करता अथवा यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का नेता कोई क्षत्रिय स्वभाव का बन जाता। बनिया और ब्राह्मण प्रवृत्ति के नेताओं ने देश को पंगु कर रखा है।

"बिना अधिक व्याख्या में जाते हुए मैं आप लोगों से निवेदन करता हूँ कि ऐतिहासिक दुर्घटनाओं से आप इस समय भारत के भाग्य-विधाता बने हुए हैं। आप अपनी कुनीतियों के परिणामों से देश को बचाने के लिये देश-विभाजन स्वीकार करिये, सीमा-रेखा पर बातचीत करिये और आबादी की अदला-बदली का प्रबन्ध करिये।

"मुझे विश्वास है कि वर्त्तमान मुसलमान नेताओं में से कोई भी पाकिस्तान को सुचारु रूप से चला नहीं सकेगा। तब समय आयेगा कि भारत अपनी स्वाभाविक सीमाओं को प्राप्त कर सके।"

इस पत्र की पन्द्रह प्रतियाँ करवा कर उस समय शासन को हस्तान्तरित करने वालों को भेज दी गयीं।

आनन्द ने पिता से इच्छा प्रकट की कि वह नेताओं से मिलकर आबादी की अदला-बदली की बात करना चाहता है और यदि हो सके तो उनके पत्र की प्रतिक्रिया देखना चाहता है। नलिनी ने इसे उचित ही समझा। उसने कहा, "मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि इतिहास और मनुष्य-प्रकृति से अनभिज्ञ, ये नेता देश में रक्त की नदियाँ बहाने का प्रबन्ध कर रहे हैं और कुछ लोग जो दूर तक भविष्य में देख सकते हैं, उनका यह कर्त्तव्य है कि इन नेताओं को समझाने का यत्न करें।

"जिन्ना से भी मिलने का यत्न करना। उसे स्मरण कराना कि सन् १९१९ में उसके साथ मैं गांधी जी से मिलने गया था। इस बात को स्मरण कराने पर कदाचित् वह तुमसे मिलने के लिये तैयार हो जाये।

"देखो, आनन्द! महाभारत के युद्ध से पूर्व भगवान् कृष्ण शान्ति के लिये अन्तिम उपाय करने धृतराष्ट्र की राज्य-सभा में पहुँचे थे। वहाँ जाकर उनके जीवन का भय उपस्थित हो गया था। इस पर भी उन्होंने नर-रक्त बहाने से बचने के लिये पाँच गाँव पर सुलह करने का प्रस्ताव भी कर दिया था, परन्तु धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधनादि नहीं माने थे। इस प्रकार सीमा-रेखा खींचने में कुछ क्षेत्र इधर अथवा कुछ क्षेत्र उधर पर झगड़ा अर्थहीन है। मुख्य बात है कि समुद्र में तैरने वालों के गले में बँधा यह इस्लाम का पत्थर उतार फेंकना चाहिये।

"मुझे विश्वास है कि यदि भारत के भावी शासकों में कुछ भी बुद्धि हुई तो पाकिस्तान चालीस-पचास वर्ष से अधिक काल तक जीवित नहीं रह सकेगा।"

आनन्द ने अगले दिन भुवाली से चलने का प्रबन्ध कर लिया। नलिनी ने आनन्द को यह समझाया, "देखो, कैबिनेट मिशन ने सावरकर और मुखर्जी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेंट की है। उन्होंने क्या कहा है ? इसको जानकर ही नेताओं से मिलना चाहिये।"

आनन्द भुवाली से विदा होने लगा तो बम्बई से तार द्वारा समाचार मिला कि सोम छूट गया है और वह शीघ्र ही भुवाली आने वाला है। इसके उत्तर में आनन्द ने तार दे दिया, "बम्बई में प्रतीक्षा करो। मैं बम्बई आ रहा हूँ।"

: २ :

सावरकर जी ने आनन्द को देखा तो उसका स्वागत करते हुए पूछा, "पिता जी का स्वास्थ्य कैसा है ?"

"आजकल तो वे बहुत ठीक हैं। आधा घण्टा नित्य वे कोठी के लॉन में घूम लेते हैं।"

"उनका पत्र मिला था और यह देखकर कि उसकी प्रतियाँ उन्होंने ब्रिटिश और हिन्दुस्तानी नेताओं को भी भेजी हैं, उनकी बुद्धि के सतर्क और सजग होने के लक्षण प्रतीत हुए हैं।"

"वे आजकल भी अपना स्वास्थ्य चला रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके रक्त में हमसे अधिक गर्मी विद्यमान है।"

सावरकर जी ने बात बदल दी। उन्होंने पूछ लिया, "तुम आजकल क्या कर रहे हो ?"

"मैं आजकल हिन्दू-समाज पर एक मध्यम आकार की पुस्तक लिख रहा हूँ। हिन्दुओं के शौर्य और श्रेष्ठता पर तो आपने बहुत कुछ लिखा है। एक ऐसा ग्रन्थ भी चाहिये, जिसमें हिन्दू समाज की भूलों पर भी कुछ लिखा हो।"

सावरकर जी हँसकर बोले, "ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे बीज में अभी आर्य-समाज का प्रभाव कार्य कर रहा है।"

आनन्द भी हँस पड़ा। उसने कहा, "सावरकर जी ! आपका विचार ठीक ही है, परन्तु मैं इसे दोष नहीं मानता। आत्म-निरीक्षण होते रहना चाहिये। जो व्यक्ति अथवा जो जाति समय-समय पर आत्म-निरीक्षण नहीं करती रहती, वह व्यक्ति और जाति पतनोन्मुख हो जाती है। वर्त्तमान कांग्रेसी हिन्दुओं का व्यवहार उस 'इण्ट्रोस्पेक्शन'[1] न करने का परिणाम ही है।"

सावरकर जी आनन्द के कथन पर विचार करने लगे तो आनन्द ने बात बदल दी। उसने कहा, "कैबिनेट मिशन आपसे भी मिला है। आपसे क्या बातचीत हुई है ? क्या मैं जान सकता हूँ ?"

"कुछ विशेष और प्राईवेट बात नहीं हुई। मैंने अपने मन की बात उनको

---

१. स्वदर्शन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दी थी। मैंने कहा था कि हिन्दू राज्य का अभिप्राय है हिन्दुस्तान में रहने वालों का राज्य। इस राज्य में प्रत्येक को मज़हबी आज़ादी देने की गारण्टी है। हिन्दुओं में अपने में भी तो कई मज़हब हैं। उनको और हिन्दू राष्ट्र से बाहर वालों को भी जीवन की सब सुविधाएँ मिलेंगी।

"इस पर क्रिप्स ने पूछ लिया कि यदि मुसलमान भी ऐसे ही वचन दें तो आप क्या कहेंगे ?

"मेरा कहना था, 'इस्लाम एक मज़हब है। अतः मुसलमान ऐसा वचन दे नहीं सकते। ऐसा वचन देना उनकी शरा के खिलाफ़ है।'

" 'परन्तु गांधी जी ऐसा नहीं मानते।'

" 'गांधी जी न तो इतिहास के ज्ञाता हैं और न ही इस्लाम मज़हब के। उनके लिये मज़हब और राज्य दो भिन्न-भिन्न बातें नहीं हैं। इसके विपरीत हिन्दू इस देश में रहने वालों का नाम है। यह अपने में और अपने से बाहर भी कई मज़हबों का होना स्वीकार करता है। यह राज्य की नींव मज़हबी आधार पर नहीं मानता।'

"इस पर सर पैथिक लारेंस ने बात बदल दी और मुझसे पूछा, 'हमारे प्रस्ताव पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?'

"मैंने कहा, 'मैं इसे सर्वथा अस्वाभाविक मानता हूँ। यह या तो एक भ्रान्त मन की उपज है अथवा एक महान् कूटनीति का प्रदर्शन।

" 'कैसे ?'

" 'प्रश्न यह है कि इस देश के सब रहने वाले बराबर-बराबर होकर राज्य करना चाहते हैं अथवा नहीं ? यदि चाहते हैं तो संविधान बनायें, जिसमें शासन का विधि-विधान हो; मज़हबों अथवा संस्कृतियों का शासन के साथ सम्बन्ध नहीं हो; सबके लिये समानाधिकार, समान अवसर और शासन में समानता हो।

" 'यदि कुछ लोग इन शर्तों पर मिल कर राज्य करना नहीं चाहते तो उनके लिये पृथक् राज्य हो और उनके विचार के लोग उस राज्य में बलपूर्वक भेज दिये जायें।'

" 'तो कोई समझौता नहीं हो सकता ?' लारेंस का प्रश्न था।

"मैंने कहा, 'समझौता तब होगा, जब आप लोग यहाँ से चले जायेंगे।'

" 'इसका परिणाम होगा हिन्दुस्तान सैकड़ों राज्यों में विखण्डित हो जायेगा।'

" 'आपके जाने पर हम एक बहुत बड़ा यूनिट (संयुक्त-राज्य) बनाने में सफल हो जायेंगे। आपके रहते यह सम्भव नहीं।"

" 'क्यों ?"

" 'इसलिये कि आपके अनुभव में संयुक्त-राज्य के संस्कार नहीं हैं। आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तिष्क में राज्य की भी कल्पना नहीं है। साथ ही आप भारत में एक स्वतन्त्र राज्य देखना भी नहीं चाहते।'

"इसके उपरान्त मेरी भेंट समाप्त हो गयी और पुनः मुझे नहीं बुलाया गया।"

आनन्द डाक्टर मुखर्जी से मिला। इसके लिये उसे कलकत्ता जाना पड़ा।

मुखर्जी से आनन्द का पूर्व परिचय नहीं था। इस कारण आनन्द को अपने पिता जी के पत्र का परिचय देना पड़ा। इस पर डाक्टर साहब ने कहा, "मैंने आपके पिता जी का पत्र पढ़ा है। एक बार बम्बई में हिन्दू महासभा के अधिवेशन पर उनके दर्शन का अवसर मिला था। अब तो वे बहुत वृद्ध होंगे?"

"बीच में तो उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था। अब ज्यों-ज्यों स्वराज्य मिलने की आशा होती जाती है, उनमें नव-रक्त का संचार होता प्रतीत होता है।"

डाक्टर साहब मुस्कराये और बोले, "अब तो दो-तीन वर्ष की प्रतीक्षा करनी शेष है।"

"उनका विचार है कि स्वराज्य उससे भी पहले होगा। वैसे स्वराज्य प्राप्त हो चुका होता, यदि नेता-गणों में कुछ भी बुद्धि होती।"

"निर्बुद्धि होने के लक्षण कहाँ दिखायी दिये हैं?"

"पिता जी का विचार है कि जिस बात पर विचार करना चाहिये, उसको हमारे नेता स्थगित करते जाते हैं और जो अवश्यम्भावी है, उसको टालने का यत्न कर रहे हैं।"

"क्या अवश्यम्भावी है?"

"जिसको सम्पन्न करने के लिये बड़े-बड़े नेता पिछले साठ वर्ष से यत्न कर रहे हैं, वही तो अब हो रहा है। मेरा अभिप्राय है कि मुसलमानों को इस देश में एक सशक्त जाति के रूप में देखना। ज्यों ही यह विचार उत्पन्न किया गया कि मुसलमान एक पृथक् राष्ट्र हैं, तब ही देश-विभाजन का बीजारोपण हुआ था। अंग्रेज़ इस बात को जानता था। अंग्रेज़ की भूल यह हुई है कि वह यह नहीं समझ सका कि उससे भी बढ़कर कोई अन्य शक्ति हो सकती है। उसका यह स्वप्न कि 'ब्रिटिश ऐम्पायर' पर सूर्यास्त नहीं होता, भंग होने वाला है। यह सब काल में नहीं रह सकता। इस कारण वह अपने साम्राज्य में जोड़-तोड़ लगाने के लिये वे बातें करते रहे जो धर्म, न्याय और बुद्धिमत्ता के विपरीत थीं।"

" 'डिवाइड ऐण्ड रूल'[1] की नीति बुद्धि के लक्षण ही तो थे।"

"हाँ; यह मैकाविली तथा चाणक्य की नीति का सार है, परन्तु यह

---

१. फूट डालो और राज्य करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिमत्ता का सार नहीं। इस नीति से चिर-स्थायी परिणाम नहीं निकल सकते। इससे इस देश में अंग्रेज़ के साथ घृणा ही उत्पन्न हुई है। वह समुदाय, जिसके पक्ष में 'डिवाइड ऐण्ड रूल' सिद्धान्त बनाया गया था, और उस समुदाय में भी जिसके विपरीत इस सिद्धान्त के प्रयोग करने का यत्न किया गया है, दोनों समुदाय अंग्रेज़ के विरुद्ध हैं। यह नहीं कि एक अंग्रेज़ के अधीन रहना चाहता हो, जबकि दूसरा नहीं चाहता।''

''दुनिया में बहुत शक्तियाँ कार्य कर रही हैं। नीतिज्ञ सबको अनुकूल नहीं कर सकते। इसी कारण परिणाम अनिच्छित निकलते हैं।''

''डाक्टर साहब! इसी को बुद्धिमान होने के लक्षण माने जाते हैं, जिससे वे सबको अपने अनुकूल रख सकें।''

''एक बात तो है। उनकी जन-मानस में ख्याति तो है। आज मुसलमानों की सब बातें मान जाने की सम्मति देने वाले गांधी जी की ख्याति भूमण्डल-भर में है।''

''जी; परन्तु ख्याति बुद्धि रखने का लक्षण नहीं है। यह किसी अन्य बात का लक्षण है। डाक्टर साहब, आपने किसी सामान्य बुद्धि वाले व्यक्ति को करोड़पति होते देखा है अथवा नहीं? वह बिना 'वर्ल्ड इकॉनॉमिक्स' की गति-विधियाँ जानें शेयर मार्केट में व्यापार करता है और फिर करोड़ों एकत्रित कर लेता है। यह भी देखा गया है कि एक ही ज्योतिषी से दो व्यक्ति किसी व्यापार में लाभ उठाने की भविष्यवाणी लेकर व्यापार करते हैं। उनमें से एक लाखों कमाता है, दूसरा लाखों हार जाता है।''

''तो यह क्यों होता है?''

''इसे हमारे शास्त्र में अदृष्ट का नाम दिया है। इसको सामान्य भाषा में कर्म-फल कहते हैं।''

''यह अनुमान भी तो बुद्धि का लक्षण नहीं है।'' डाक्टर मुखर्जी ने मुस्कराते हुए कह दिया।

आनन्द ने देखा कि वे व्यर्थ के विवाद में पड़ गये हैं। अत: उसने विषय पर आने के लिये कहा, ''हाँ, डाक्टर साहब! यह अनुमान तो है; परन्तु मैं तो आपसे यह जानने आया था कि आपने 'कैबिनेट मिशन' को क्या सम्मति दी है?''

''उनसे कुछ अधिक बातचीत नहीं हुई। उन्होंने अपनी योजना पर मेरी सम्मति माँगी थी और मैंने लगभग वही बात कही थी, जो आपके पिता जी ने पत्र में लिखी है। मैंने कहा था, 'देश-विभाजन अब रुक नहीं सकता। इसे रोकने से व्यर्थ का रक्तपात होगा। इस कारण देश-विभाजन के सिद्धान्तों पर बातचीत होनी चाहिये। देश के खण्डों में शासन के विधि-विधान को उन खण्डों के लोगों पर छोड़ दिया जाये। वह पीछे की बात है, विभाजन से पहले की नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विभाजन का आधार समुदायों की जन-संख्या होनी चाहिये। साथ-साथ लगने वाले प्रान्त, ज़िले, तहसीलें और गाँव तक का विचार होना चाहिये।"

"और आबादी की अदला-बदली के विषय में भी बात हुई थी क्या?"

"नहीं; हम सब इस बात को आधार मान कर चले हैं कि देश के दोनों खण्डों में दोनों समुदाय के लोग रहेंगे।"

"इसे मुस्लिम लीग तो नहीं मानती।"

"जिन्ना साहब मान गये हैं।"

"परन्तु यह सम्भव प्रतीत नहीं होता। जिन्ना साहब की इच्छा के बिना भी आबादी को मार-काट कर कम करने तथा किसी स्थान से भगाने की बात हो सकती है।"

"हम यत्न करेंगे कि यह न हो।"

"परन्तु आपको यह भय मोल लेने में कुछ लाभ प्रतीत होता है कि ढाका, खुलना इत्यादि क्षेत्रों के हिन्दुओं की हत्या हो?"

"कम-से-कम बंगाली अपने घर-बार को छोड़कर स्थान बदलना पसन्द नहीं करेंगे।"

"यह बात वे तब तक पसन्द नहीं करेंगे, जब तक नेता लोग उनको आश्वासन देते रहते हैं कि उनको अपने-अपने राज्य में सुखपूर्वक रहने का अवसर मिलेगा।"

"हाँ; हमारी बुद्धि यही कहती है।"

"परन्तु आपकी योजना से बंगाल प्रान्त भी विभक्त होगा।"

"हाँ; मेरा यही अभिप्राय है।"

"पिता जी ने अपने पत्र में लिखा है कि पाकिस्तान में हिन्दुओं को रहने की स्वीकृति नहीं मिलेगी।"

"यदि हिन्दू उस राज्य के वफादार बनकर रहेंगे तो उनको कोई कष्ट नहीं होगा।"

"परन्तु पाकिस्तान से वफादारी का अर्थ यह है कि बहु-संख्यक का मज़हब स्वीकार किया जाये। पाकिस्तान बनाया ही इस आधार पर जा रहा है। वह इस्लामी देश होगा और वहाँ राज्य इस्लामी शरा के अनुसार चलेगा।"

"नहीं; यह हो नहीं सकता। मैं जिन्ना साहब को जनता हूँ। ऐसा नहीं हो सकेगा।"

आनन्द ने बात बदल दी। उसने पूछा, "आपसे 'मिशन' ने पुन: मिलने की बात कही है अथवा नहीं?"

"नहीं; मेरे विचार सुन लिये गये हैं। मैं समझता हूँ कि यही सावरकर जी से किया गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उनसे मिल आया हूँ और उन्होंने भी यही बात बतायी है कि उनसे पुन: मिलने की बात नहीं हुई।"

आनन्द को पण्डित जवाहरलाल जी ने तो मिलने से ही इन्कार कर दिया। गांधी जी मिले और दो मिनट में ही भेंट समाप्त कर दी। उन्होंने कहा, "मुझे आपके पिता का पत्र मिला है। मैंने पढ़ा है। वह एक निराश व्यक्ति का कथन है। मैं समझता हूँ कि उनका परमात्मा पर विश्वास ढीला है। तभी वे मानव-समाज के विषय में बुरी-बुरी बातें विचार करते रहते हैं।"

"परन्तु आपका पिछले बत्तीस वर्ष का अनुभव क्या यह नहीं बताता कि मुसलमान विश्वसनीय नहीं हैं?" आनन्द ने पूछा।

"मैं समझता हूँ कि किसी अन्य विषय पर बात करो। मेरा मन इस विषय पर स्थिर है कि देश-विभाजन नहीं होना चाहिये और मैं इसके लिये यत्न कर रहा हूँ।"

सबसे मज़ेदार बात जिन्ना साहब से हुई। आनन्द ने भेंट के लिये भेजे पत्र में अपने पिता की उनसे सन् १९१९ में भेंट का उल्लेख किया था। अत: आनन्द के आते ही जिन्ना साहब ने पूछा, "किस पत्र का प्रातिनिध्य करते हो?"

"खुदाई समाचार-पत्र का।"

"वह कहाँ से निकलता है?"

"खुदा के घर से।"

"और वह कहाँ है?"

"हमारे शास्त्र में लिखा है कि जहाँ तक आकाश है वहाँ तक उसी का घर है।"

"मतलब यह कि तुम्हारा अखबार कहीं से नहीं निकलता?"

"मैं तो पिता जी के पत्र पर आपकी प्रतिक्रिया जानने आया हूँ।"

"मेरे पास उनका कोई पत्र नहीं आया।"

"हमारे पास तो उसके मिलने की रसीद आयी है। हमने रजिस्टर्ड डाक से भेजा था।"

इस पर जिन्ना साहब ने अपने सैक्रेटरी से पूछा, "कोई रजिस्टर्ड चिट्ठी भुवाली से आयी है?"

"हाँ, हज़ूर! जब हम शिमला में थे, तब आयी थी। वह अभी तक रखी है।"

"उसे ले आओ।"

सैक्रेटरी गया। उसे आने में देर लगी। कदाचित् वह चिट्ठी अनावश्यक और एक काफिर की लिखी देख पढ़ने के योग्य नहीं समझी गई थी। जब पाँच-सात मिनट तक सैक्रेटरी नहीं आया तो जिन्ना ने आनन्द से पूछ लिया, "उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या लिखा था ? उसका लुब्बे-लुबाब बता दो।''

''यही कि देश-विभाजन अब रुक नहीं सकता। इस कारण सूबों का संविधान सभा में आना और फिर बनाये संविधान को अस्वीकार कर यूनियन से बाहर रहने की बात तो जल मथने के समान है।

''पिता जी का विचार है कि दो देशों में सीमा-रेखा पर बातचीत होनी चाहिये और निश्चय हो जाने पर आबादी की अदला-बदली हो जानी चाहिये।''

''यही तो मैं चाहता हूँ।'' जिन्ना साहब ने कहा, ''लेकिन हिन्दुओं के नेता गांधी मानते ही नहीं। नेहरू भी तो इसको स्वीकार नहीं करता।''

''नेहरू जी के विषय में तो यह विख्यात है कि वे इस बात के लिये बेताब हैं कि शीघ्रातिशीघ्र स्वराज्य मिले और वे प्रधानमन्त्री बना दिये जाएँ।''

जिन्ना साहब मुस्कराये और पूछने लगे, ''तो क्या आप यह नहीं चाहते ?''

''क्या नहीं चाहते ?''

''यही कि पण्डित जवाहरलाल शीघ्रातिशीघ्र प्रधानमन्त्री बन जायें।''

''हम लोग स्वराज्य तो चाहते हैं, परन्तु प्रधानमन्त्री पद के लिये अन्य योग्य व्यक्ति कांग्रेस के बाहर और भीतर भी उपस्थित हैं।''

इस पर मिस्टर जिन्ना की आँखों में चमक दौड़ गयी और पूछने लगे, ''मसलन और कौन-कौन हैं ? कोई एक-आध नाम तो बताइये ?''

''वैसे तो आप एक हैं, परन्तु आपने गलत पक्ष लेकर अपने को बदनाम कर रखा है।''

''तो मुसलमानों का अपना देश निर्माण करना गलत बात है ?''

''मुसलमानों के कई देश पहले ही हैं। एक और निर्माण कर देंगे तो 'थर्ड रेट' के देशों में एक की वृद्धि कर सकेंगे। देश को उन्नत करने के कुछ गुण हैं, जो मुसलमानों में नहीं हैं।''

''ओह !''

''तो बता दीजिये कि भूमण्डल में कौन मुसलमान देश है, जिसे किसी भी विचार से प्रथम श्रेणी का देश माना जाये ?''

जिन्ना कुछ बताने के लिये विचार करने लगा। आनन्द मुस्कराता हुआ उसका मुख देखता रहा। कुछ विचार कर जिन्ना ने कहा, ''पाकिस्तान बीस वर्ष में इंगलैण्ड तथा फ्रांस के समान उन्नत देश हो जायेगा।''

''परन्तु वे उन्नत देश नहीं हैं। किसी काल में वे बहुत बड़े-बड़े साम्राज्य थे। ऐसे तो तुर्की भी था। वहाँ का खलीफ़ा दुनिया-भर के इस्लामी देशों का रूहानी सरपरस्त माना जाता था, परन्तु इससे महानता और बढ़ियापन उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती। इसी प्रकार ब्रिटिश ऐम्पायर का नाम दूर-दूर तक है, परन्तु वह महान् नहीं। न ही उसमें किसी प्रकार का बढ़ियापन है।"

"इंगलैण्ड की समुद्री शक्ति और तकनीकी उन्नति ने तो जर्मनी को भी मात कर दिया है।"

"श्रीमान्! ये लक्षण भी बड़प्पन के नहीं हैं। मनुष्यों में और इसी प्रकार की जातियों में उन्नत वह माना जाता है, जो एक ओर तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकारादि दुर्गुणों से ऊपर हो और दूसरी ओर सबके कल्याण के विचार से जीवन चलाये।"

जिन्ना हँस पड़ा। इस समय उसका सैक्रेटरी आया और बोला, "सर! वह पत्र तो मिल नहीं रहा।"

"तुम बहुत बेवकूफ हो। वह पत्र किसके नाम था?"

"हुजूर! था तो आपके नाम पर। उस वक्त शिमला से रवाना होने की तैयारी में लगे थे। इस कारण आपको दिखाने से रह गया और पीछे मैं भूल गया था।"

"अच्छा जाओ! काम करो।"

जब वह चला गया तो उन्होंने बात आगे चला दी। जिन्ना ने कहा, "कौमों की 'इथिक्स'[1] दूसरी होती है।"

"हम ऐसा नहीं मानते। हमारे देश में भी एक मैकाविली हो गये हैं। वे युरोपियन मैकाविली की-सी बातें लिख गये हैं और आजकल के कुछ राजनीतिज्ञ वैसा ही आचरण रखते हैं। असंख्य भारतवासी इसे पसन्द नहीं करते। हमारे एक ऋषि तो यह लिख गये हैं कि राजा का अपना व्यवहार सत्य पर आधारित होना चाहिये और राज्य-कार्य लोक-कल्याण के उद्देश्य से हो।"

"परन्तु हिन्दू नेता तो सदा झूठ बोलते हैं और मुसलमानों के अकल्याण की बात करते हैं।"

"इसी कारण तो पिता जी ने देश-विभाजन मान लेने की बात कही है। जब देश पृथक्-पृथक् हो जायेंगे तो फिर आप पाकिस्तानियों के व्यवहार को और गांधी जी हिन्दुस्तानियों के व्यवहार को शुद्ध, पवित्र करने का यत्न करेंगे।

"परन्तु श्रीमान्! हिन्दू राजनीति यह मानती है कि दुष्ट को दण्ड देना भी दुष्ट का कल्याण करना है।"

"ओह! मगर यह कैसे पता चले कि दुष्ट कौन है?"

"सर स्टैफर्ड क्रिप्स ने एक स्थान पर प्रजातन्त्र के लक्षण करते हुए लिखा है—Democracy gives freedom to all in all matters provided they

१. आचार-संहिता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

are prepared to give the same freedom to others."[1]

"क्रिप्स तो मूर्ख है।"

"तो उसकी बात छोड़िये। हमारे एक विद्वान् ने आज से सहस्रों वर्ष पहले यह कहा था कि—आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।"[2]

"मुझे स्मरण है कि यह बात आपके पिता ने भी कही थी, परन्तु यह सब अव्यवहारिक हैं।"

"देख लीजिये! मैं पिता जी की बात आपको स्मरण कराने आया हूँ और वे चाहते हैं कि आप इस प्रकार की माँग करें।"

"मैं समझता हूँ कि इस प्रकार की बात का समय निकल गया है। गांधी जी कहते थे कि ऐसा वे कभी भी नहीं होने देंगे। देश छोड़ने वालों के मार्ग को रोक, वे सड़क पर लेट जायेंगे और जनता को घर-बार छोड़ विदेश में जाने नहीं देंगे।"

आनन्द को नेताओं से मिलने पर यह समझ में आया कि सब नेताओं के मस्तिष्क एक ही सांचे में ढले हैं और वे अपने मन की बात को बुद्धि से विचार कर करने के लिये कभी तैयार नहीं होते।

अत: वह निराश हो भुवाली लौटने वाला था कि इस समय उसने समाचार-पत्रों में पढ़ा कि कांग्रेस कमेटी की मीटिंग बम्बई में होने वाली है। उसके मन में आया कि एक प्रयत्न वहाँ चलकर करना चाहिये। अत: वह बम्बई को चल पड़ा।

: २ :

परिवार में एक समस्या उत्पन्न हो चुकी थी। व्यवसाय में लाभ उतना नहीं हो रहा था, जितना कि विजय की अध्यक्षता में होता था। इस पर कुछ सदस्यों को हिसाब-किताब में किसी प्रकार की अनियमितता का सन्देह होने लगा था। सोम जबसे जेल से छूट कर आया था, घर में ही रहता था। उसकी रुचि राजनीति में नहीं रही थी।

जब आनन्द भुवाली से बम्बई आने वाला था तो उसने सोम को तार द्वारा कहा था कि वह बम्बई आ रहा है और उससे मिलना चाहता है; परन्तु सोम को आनन्द का तार विलम्ब से मिला। इसका परिणाम यह हो गया कि आनन्द के बम्बई पहुँचने से पूर्व सोम भुवाली चला गया था।

---

१. प्रजातंत्र सबको सब विषयों में स्वतंत्रता प्रदान करता है यदि वे वही स्वतंत्रता अन्यों को भी दें।

२. जो तुम्हें अपने लिये पसन्द नहीं, वह दूसरों के लिये मत प्रयोग करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्द का विचार था कि वह सोम को साथ लेकर नेताओं से मिलने जायेगा, परन्तु उसके भुवाली चले जाने पर वह अकेला ही कलकत्ता, इलाहाबाद शिमला, दिल्ली होता हुआ पन्द्रह दिन की यात्रा के उपरान्त पुनः बम्बई पहुँचा। इस समय सोम बम्बई लौट आया था।

जब आनन्द नेताओं से अपनी भेंट का परिणाम बता रहा था, तब सोम चिन्तित-मन उसकी बात सुनता रहा। आनन्द के बात समाप्त करने पर सोम ने कह दिया, "चाचा जी! घर में विभाजन के लक्षण दिखायी देने लगे हैं।"

"क्या लक्षण हैं?"

"परस्पर विश्वास नहीं रहा। इससे कीर्ति दुःख अनुभव कर रही है और वह कार्य छोड़ देने का विचार कर रही है।"

"तो कोई वैतनिक लेखाकार परिवार से बाहर का व्यक्ति ढूंढ लिया जायेगा।"

"उस स्थिति में वह कम्पनी में अपने हिस्से बेचना चाहेगी।"

"पर क्या हुआ है?'

"कीर्ति को लखनऊ और मद्रास की शाखाओं में पूंजी की 'लीकेज' का विश्वास होता जा रहा है।"

"तो उस 'लीकेज' को रोकने का कोई उपाय नहीं है?"

"है तो। परन्तु वह कहती है कि लखनऊ के भाई साहब और श्रद्धा भाभी वैसा करने पर तुरन्त काम छोड़ देंगे और व्यवसाय का विभाजन हो जायेगा। कीर्ति समझ रही है कि इस बार व्यवसाय पूर्णतया विखण्डित होगा।

"मैंने भुवाली में पिता जी से बात की है। उनका कहना है, जो कुछ करना है, चुपचाप कर लो। बाबा के सामने सब बात कही तो वे अत्यन्त दुःख अनुभव करेंगे। इसका उनके स्वास्थ्य पर भारी प्रभाव पड़ेगा। इस कारण मैं जबसे यहाँ आया हूँ, व्यवसाय में काँटा निकालने का प्रयास कर रहा हूँ। परन्तु यही समझ में आ रहा है कि ज्यों ही काँटा निकालने का यत्न किया, सब पृथक्-पृथक् होने की बात करने लगेंगे।

"कीर्ति का कहना है कि इस 'लीकेज' के कारण व्यवसाय में लाभ में कमी तो है ही, परन्तु विभाजन पर तो और भी अधिक हानि होगी।"

आनन्द ने कुछ विचार कर कहा, "तो क्या यह ठीक नहीं कि जो कल होने वाला है, वह आज ही कर दिया जाये? देखो सोम! वैसे तो देश में भी हम विभाजन नहीं चाहते, परन्तु जब हिन्दू-मुसलमान के इकट्ठे रहने में कठिनाई दिखायी देने लगी तो पिता जी ने यह सम्मति बनायी है कि देश-विभाजन मान लेना चाहिये और आबादी की अदला-बदली होनी चाहिये। यह हिन्दू नेता नहीं चाहते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि सरदार पटेल ऐसा चाहते हैं।"

"परन्तु उनको तो पिता जी का पत्र भेजा नहीं गया। मैंने उनसे मिलने का यत्न भी नहीं किया।"

"मेरा विचार है कि उनसे मिल लीजिए।"

"पिता जी का विचार है कि सरदार पटेल अपनी बात मानने का हठ कभी नहीं करते और ठीक अथवा गलत, गांधी जी के पीछे-पीछे चलते हैं।"

"तो भी मिलने में क्या हानि है! मैंने सुना है कि वे यहाँ होने वाली कांग्रेस कमेटी में मौलाना आज़ाद को प्रधान पद से हटा कर नये प्रधान का चुनाव करने जा रहे हैं। यह भी सुनने में आया है कि सरदार पटेल प्रधान बनने के प्रत्याशी हैं।"

"तब तो उनसे मिलने में कुछ लाभ होगा।"

"देखिये, मैं आपको एक पत्र श्री गॉडगिल के नाम का दे देता हूँ। वे आपका सरदार साहब से परिचय करा देंगे।"

"तब तो कुछ अर्थ होगा इनसे मिलने का। मैं सरदार पटेल को पिता जी के पत्र की एक प्रति भेज देता हूँ और फिर पहले श्री गॉडगिल से और पीछे इनसे मिलने का यत्न करूँगा।"

"ठीक है।" सोम ने कहा।

"परन्तु सोम! घर की समस्या का भी कुछ सुझाव ढूँढना चाहिये।"

"सुझाव तो यह है कि वेदप्रकाश की भाँति चारुदेव को भी कम्पनी से पृथक् होने के लिये कहा जाये। वह यदि चाहे तो काम को सर्वथा छोड़ भी सकता है और यदि न चाहे तो 'स्लीपिंग पार्टनर' भी रह सकता है।

"आजकल मीरा वहाँ गयी हुई है। वह चाहती थी कि वहाँ की हिसाब की किताबें देखे। इस प्रयोजन का वह यहाँ से अधिकार-पत्र भी ले गयी थी, परन्तु चारुदेव ने दो दिन तक उसे किताबें नहीं दिखायीं। दो दिन में वहाँ 'स्टॉक' में और नकली किताबों को हटा देने का काम होता रहा है। मीरा ने लिखा है कि वह यह बात देखती रही है। तीसरे दिन चारु ने कहा कि हिसाब तैयार है, वह देख सकती है। मीरा ने लिखा है कि उसे इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिल गये हैं कि गड़बड़ की गयी है। वह अभी वहाँ ही है।"

"वह क्या चाहती है? मेरा अभिप्राय है कि मीरा की क्या इच्छा है? सुना है कि उसके पति का काम भी कुछ ढीला हो गया है?"

"हाँ; युद्ध के उपरान्त विदेश का कार्य अभी युद्ध-पूर्व के स्तर पर नहीं आया।"

"अच्छा, ऐसा करो कि मीरा को लौट आने दो। पीछे तुम अपने पिता जी को बुला कर विचार कर लेना। परन्तु विजय भैया बाबा को वहाँ अकेला छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर आयेंगे नहीं। यह मेरे वहाँ जाने पर ही हो सकेगा।''

कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक हो रही थी। आनन्द ने पिता जी के पत्र की प्रतिलिपियाँ श्री गाडगिल, सरदार पटेल और आचार्य कृपलानी को भेज दीं। तदनन्तर वह एक दिन श्री गाडगिल को मिलने के लिये उनके निवास-स्थान पर पहुँच गया।

यह जुलाई का महीना था और दो-तीन दिन में कांग्रेस कमेटी की मीटिंग होने वाली थी। आनन्द का कार्ड भीतर जाते ही उसे काका साहब गाडगिल ने बुला लिया।

आनन्द ने अपने पिता के पत्र का उल्लेख कर कहा, ''मैं आपकी उस पत्र पर प्रतिक्रिया जानने आया हूँ।''

''आपका किस समाचार-पत्र से सम्बन्ध है ?''

''समाचार-पत्र से तो नहीं। हाँ, मैं इतिहास का लेखक हूँ और वर्त्तमान काल के इतिहास के विषय में कुछ 'नोट्स' एकत्र कर रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि समाचार-पत्र के सम्पादक से मैं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य कर रहा हूँ। इस कारण अधिक-से-अधिक सत्य स्थिति को जानने के विचार से मैं कई लोगों से मिल रहा हूँ।''

''ठीक है। आप प्रश्न पूछिये तब मैं अपनी जानकारी बताऊँगा।''

''सुना है कि कांग्रेस के नये प्रधान का चुनाव हो रहा है ?''

''हाँ।''

''मैंने सुना है कि प्रस्तावित नामों में सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम भी है।''

''था। परन्तु अब नहीं है।''

''क्यों ?''

''प्रान्तीय कमेटियों के प्रस्ताव तीन नामों के थे। आचार्य कृपलानी, पट्टाभाई और सरदार के। परन्तु आचार्य कृपलानी ने घूम-घूमकर पण्डित जवाहरलाल का नाम कार्यकारिणी की ओर से प्रस्तावित करा दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मौलाना आज़ाद स्वयं प्रेज़िडेण्ट का पद छोड़ना नहीं चाहते थे। गांधी जी के कहने पर उन्होंने छोड़ा है, पर वे और गांधी जी तथा कृपलानी भी सरदार का नाम नहीं चाहते। ये तीनों सिर-तोड़ यत्न कर रहे हैं कि सरदार प्रधान न बन सके।''

''क्यों ? उनको सरदार पटेल जी से क्या रोष है ?''

''कहने को तो बहुत बातें कह रहे हैं, परन्तु मेरा विचार है कि वे सब बातें लोगों की आँखों में धूल झोंकने के लिये हैं। वास्तविक बात यह है कि कांग्रेस के प्रधान को 'अन्तरिम' सरकार बनाने का निमन्त्रण दिया जायेगा और ये लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चाहते कि सरदार अन्तरिम सरकार का नेता बन सके।''

"परन्तु महात्मा जी को सरदार साहब के प्रधान बनने में क्या आपत्ति है ?''

"बहुत आपत्ति है। उस आपके पत्र में जो योजना आपने लिखी है, वह गांधी जी पसन्द नहीं करते और सरदार उस योजना को ही उचित समझते हैं।''

"आप उस योजना के विषय में क्या समझते हैं ?''

"पिछले निर्वाचनों का विश्लेषण करने से मैं भी उसी योजना को ठीक समझता हूँ। उसमें मैं एक संशोधन यह चाहूँगा कि एक सीमित संख्या में मुसलमानों को हम हिन्दुस्तान में रहने दें। इसके लिये एक शर्त यह हो कि मतदाता-सूची एक होगी। किसी भी समुदाय का विशेष प्रातिनिध्य नहीं होगा। साथ ही हम मुसलमानों को अथवा किसी भी अल्प-मत को एक स्थान पर केन्द्रित नहीं होने देना चाहते।''

"उदाहरण के रूप में आप पश्चिमोत्तरी सीमा के मुसलमानों का क्या करेंगे ?''

"वहाँ इस समय मुसलमानों की संख्या नब्बे प्रतिशत है। हम उनकी इतनी बड़ी जन-संख्या अपने एक सीमा प्रान्त पर नहीं रहने देना चाहेंगे।''

"यह कैसे करेंगे ?''

"देखिये मिस्टर आनन्द ! हमें, मेरा अभिप्राय है कि मेरे विचार के लोगों को यह समझ में आ रहा है कि पाकिस्तान बनेगा। उसमें पश्चिमोत्तरी सीमा प्रान्त किस प्रकार हमारे साथ रह सकेगा, यह समझ में नहीं आ रहा है।''

"इसके लिये कश्मीर को अपने अनुकूल बनाइये और कश्मीर तथा पश्चिमोत्तरी सीमा प्रान्त को एक इकाई बना सकते हैं।''

"परन्तु कश्मीर हिन्दुस्तान के साथ रहेगा अथवा पाकिस्तान के साथ, कहा नहीं जा सकता।''

"यदि आप जवाहरलाल जी को कांग्रेस का प्रधान बनायेंगे और वे हिन्दुस्तान सरकार के प्रधानमन्त्री बन गये तो कौन आत्माभिमानी व्यक्ति है जो महाराजा कश्मीर को हिन्दुस्तान की सरकार के साथ सम्बन्ध रखने के लिये कह सकेगा ?''

"जवाहरलाल अब कांग्रेस के प्रधान बनेंगे ही और निश्चय ही वे हिन्दुस्तान के प्रथम प्रधानमन्त्री बनेंगे।''

"तो निश्चय जानिये कि महाराजा कश्मीर हिन्दुस्तान को चिमटे से भी छूना पसन्द नहीं करेंगे। किसी कारण से विवश हो गये तो बात दूसरी है, परन्तु उस अवस्था में आप पश्चिमोत्तरी सीमा प्रान्त और उसके साथ उन पठान देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तों को खो देंगे जो स्वतन्त्रता-संग्राम में आपके साथ रहे हैं।''

''तो क्या किया जा सकता है? गांधी जी जवाहरलाल को चाहते हैं और हम गांधी जी को नाराज़ नहीं कर सकते।''

इस भेंट के उपरान्त आनन्द ने सरदार साहब से मिलने में कोई लाभ नहीं समझा। वह भुवाली लौट गया।

भुवाली पहुँच आनन्द ने अपने भ्रमण और भेंटों में हुआ वार्त्तालाप सुनाया तो नलिनी ने कहा, ''देखो आनन्द! मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि अंग्रेज़ स्वेच्छा से स्वराज्य नहीं दे रहे। अमरीका, ब्रिटिश सरकार को विवश कर रही है कि हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र कर दे। दूसरी ओर इंगलैण्ड की मज़दूर सरकार अपने भविष्य के विषय में आश्वस्त न होने के कारण यह नेक काम अपने ही शासन-काल में कर जाने की हड़बड़ी मचा रही है।

''स्वराज्य के मार्ग में दो बाधायें हैं। एक तो मुस्लिम लीग है जो सिंध, बिलोचिस्तान, पश्चिमोत्तरी प्रदेश, पंजाब, आसाम और बंगाल को पाकिस्तान में सम्मिलित करना चाहती है और यह वह मार-पीट की धमकी से सम्पन्न करना चाहती है। दूसरी ओर कांग्रेसी नेता हैं। बातों-ही-बातों से हिन्दुस्तान जैसे बड़े देश का राज्य पाना चाहते हैं। वे स्वयं राज्य पाने के लिये उत्सुक हैं, इस कारण जल्दी मचा रहे हैं। इस प्रकार दोनों ओर से जल्दी मचायी जाती देख हिन्दुस्तान में ब्रिटिश नौकरशाही, स्वराज्य को तोड़-फोड़ से विकृत कर देना चाहती है।

''ब्रिटिश शासक चाहते हैं कि उनके शान्तिमय राज्य को भी जब लोगों ने पसन्द नहीं किया तो इनको अपनी मूर्खता का दण्ड देना चाहिये। अतः वे यहाँ 'सिविल-वार' करा कर जाना चाहते हैं।

''तुम्हारे पीछे सोम यहाँ आया था। वह कहता था कि उसने इस गृह-युद्ध के मलबे में से जो कुछ बच सके, उसे बचाने के लिये एक योजना बनायी है और वह उस योजना को व्यवहार में लाने के लिये बम्बई से धन लेकर पंजाब और आसाम में कार्य-क्षेत्र बनाने के लिये गया है।

''मैंने उसे कहा था कि वह आग से खेल रहा है। परन्तु वह अपने विचार में स्थिर प्रतीत होता था।''

आनन्द ने बताया, ''वह बम्बई में है और पारिवारिक-कलह से चिन्तित प्रतीत होता है।''

''क्या कलह है परिवार में?''

''उसका कहना है कि चारु अपनी सास के ज़मींदारी से प्राप्त हराम की कमाई खाता हुआ मतिभ्रष्ट हो रहा है और परिवार की सम्पत्ति में से चोरी कर रहा है। दूसरी ओर मद्रास की दुकान के प्रबन्धक, सोम के दूसरे साहबज़ादे भी वैसा ही कर रहे प्रतीत होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मीरा लखनऊ गयी थी, परन्तु चारु उससे झगड़ा करता रहा है और वह उसे सन्मार्ग दिखाने में सफल नहीं हो सकी। कीर्ति स्वयं मद्रास गयी थी और वह विचार कर रही थी कि भैया वहाँ चले जायें तो कम्पनी को समाप्त कर आयें।"

"तो घर के झगड़े में वह जाति के झगड़े को भूल गया है ?"

"उसने दूसरे काम के विषय में मुझसे बात नहीं की। मैं तो समझा था कि वह राजनीतिक जीवन से ऊब कर उसकी धूल-धक्कड़ उतारने के लिये बम्बई में टिका है।"

: ४ :

कांग्रेस में एन० बी० गाडगिल, भोलाभाई देसाई, सरदार पटेल और शंकरराव देव लगभग एक-विचार के लोग थे। मई, सन् १९४५ में जब ये लोग जेल से छूटे तो भिन्न-भिन्न विचार रखते थे, परन्तु तबसे लेकर एक वर्ष के ऊपर के काल में हिन्दुस्तान की स्थिति में भारी अन्तर पड़ गया था। इस अन्तर का सबसे बड़ा कारण था इंगलैण्ड में मज़दूर सरकार का बनना। टोडी दल भारत में उपस्थित ब्रिटिश नौकरशाही की बात को मानता था और इस देश में ब्रिटिश नौकरशाही राज्य-मद में चूर, इस सोने की चिड़िया को छोड़ना नहीं चाहती थी।

मज़दूर सरकार अमरीका को अपने विचारों के अनुकूल पा, हिन्दुस्तान से इंगलैण्ड की सत्ता उठा लेने के लिये जल्दी मचाने लगी थी। मुसलमानों को जब इस बात का ज्ञान हो गया कि इस देश में प्रजातन्त्रात्मक-राज्य स्थापित होगा तो उनके नेता जिन्ना, जो हिन्दुस्तान में ब्रिटिश नौकरशाही के कन्धों पर सवार हो नेता बने हुए थे, अपनी नेतागीरी की चिन्ता करने लगे।

प्राय: मुसलमान नेता इस बात पर बल देने लगे कि मुसलमानों के लिये एक पृथक् राज्य स्थापित होना चाहिये। वे लोग हिन्दुस्तान के ब्रिटिश अधिकारियों की सहायता से देश में रक्त की नदियाँ बहाने की धमकी देने लगे।

ब्रिटिश नौकरशाही हिन्दू देश-भक्तों को उनकी देश-भक्ति का दण्ड देने के लिये मुसलमानों को रोकने के स्थान उत्साहित करती थी। इसके परिणामस्वरूप सिद्धान्त से विवश अथवा भीरुता से प्रेरित, कांग्रेसी नेता मुसलमानों की धमकी को बिल्ली के सामने आ जाने पर कबूतर की भाँति आँखें मूंद देख नहीं रहे थे।

बम्बई में कांग्रेस के अधिवेशन से एक दिन पूर्व गाडगिल भोलाभाई देसाई से मिलने गया तो वहाँ पर सरदार पटेल को बैठे देख आनन्द की बात करने लगा। उसने कहा, "एक वयोवृद्ध जर्नलिस्ट नलिनी सरकार का एक पत्र आया था और कल उसका लड़का आनन्द मुझे मिला था।"

"हाँ; पत्र मेरे पास भी आया है।" सरदार ने कहा, "वह बेचारा देश की गतिविधियों से पृथक् तथा दूर बैठा हुआ नहीं जानता कि देश में क्या हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है ?''

''परन्तु सरदार साहब ! बात तो उसने जानकारी की लिखी है और कल आनन्द ने इस बात पर बल दिया था कि आबादी की अदला-बदली होनी चाहिये। उसका कहना था कि 'बाई हुक ऑर बाई क्रुक' कांग्रेस हिन्दू जनता की नेता बन गयी है और अब यह उसका कर्त्तव्य हो गया है कि हिन्दुओं की जान-माल की रक्षा के लिये यत्न करे।''

''परन्तु काका साहब ! आप जानते हैं कि कांग्रेस गांधी है और गांधी जी वही हैं जो जवाहरलाल है। इसमें हम कहाँ हैं ? सर्वमान्य पूज्य वे हैं।

''देखिये, सन् १९२९ में मोतीलाल चाहते थे कि उनका लड़का कांग्रेस का प्रधान बने और गांधी जी ने उसे प्रधान बनवा दिया। फिर सन् १९३६ में बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने गांधी जी से मिलकर कहा कि जवाहरलाल कम्युनिस्ट ढंग का समाजवादी है। उसे कांग्रेस का प्रधान बनाया गया तो कांग्रेस और फिर देश कम्युनिस्ट हो जायेगा।

''बाबू राजेन्द्रप्रसाद की बात को गांधी जी ने यह कह कर टाल दिया कि जवाहरलाल को पत्नी के देहान्त का भारी शोक है और उस शोक को कम करने का मैं यही उपाय समझता हूँ कि उसे देश के इस सर्वोच्च पद पर आसीन कर दिया जाये।

''बाबू जी ने समझाने का यत्न किया कि देश की बातों में निजी सुख-सुविधा को नहीं लाना चाहिये, परन्तु गांधी जी ने कह दिया कि मेरा यह मत है कि इस वर्ष जवाहरलाल को ही प्रधान बनाना चाहिये। बाबू जी ने मुझे लिखा कि कांग्रेस को फूट से बचाने के लिये मैं अपना नाम वापस ले लूं। मैंने भी यही ठीक समझा।

''अब इस वर्ष पुन: वही बात हुई है। यह भोलाभाई देसाई कह रहे हैं कि जब प्रान्तीय कमेटियों के प्रधान-पद के लिये नाम आये और उसमें जवाहरलाल का नाम नहीं था तो जवाहरलाल वर्धा गये और उसके उपरान्त ही गांधी जी ने कृपलानी को जवाहरलाल के नाम का प्रस्ताव करने के लिये कहा।

''कृपलानी गांधी जी के भक्तों में है। वह वर्किंग कमेटी के सदस्यों के सम्मुख गांधी जी का नाम ले-लेकर जवाहरलाल के नामांकन का पत्र ले आया।

''इस अवस्था में मेरे लिये अपना नाम वापस ले लेने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नहीं था। हममें से कोई भी गांधी जी का विरोध नहीं कर सकता और गांधी जी की इच्छा है कि मैं कांग्रेस में प्रथम स्थान न पा सकूं।''

अब भोलाभाई देसाई ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, ''पता नहीं गांधी जी को जवाहरलाल में कौन-सी विशेषता दिखाई देती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गांधी जी अहिंसा पर बहुत बल देते हैं। जवाहरलाल अहिंसा को नीति मानता है। गांधी जी समाजवादी नहीं हैं। वे समाज के घटकों को अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में हैं और जवाहरलाल तो समाजवादी है। समाजवादी जनता के चूल्हे-चौके पर भी सरकारी नियन्त्रण चाहते हैं। गांधी जी 'कॉटेज इण्डस्ट्रीज' के पक्ष में हैं और समाजवादी बड़े-बड़े कारखानों के पक्ष में हैं।

"कह नहीं सकते कि गांधी जी को कौन-सी बात नेहरू की पसन्द आयी है।"

"भाई, हमारी चमड़ी काली है और उसकी सफेद है।"

इस पर तीनों हँसने लगे। गाडगिल ने पुनः अपनी बात जारी रखी। उसने कहा, "आनन्द कह रहा था कि जवाहरलाल को प्रधान बनाने से महाराजा कश्मीर चिमटे से भी हिन्दुस्तान को नहीं छूएगा और उसके हिन्दुस्तान से पृथक् रहने का परिणाम यह होगा कि पश्चिमोत्तरी सीमा-प्रान्त भी हिन्दुस्तान से सम्बद्ध नहीं हो सकेगा।"

पटेल ने दीर्घ श्वास लिया और कहा, "अब तो यहाँ अन्धेर-गर्दी मचेगी और हमको इस विनाश-लीला में से जो कुछ भी बच सके, बचाने का यत्न करना चाहिये।

"कांग्रेस से पृथक् होकर हम कुछ भी नहीं कर सकेंगे। इस कारण मैं गांधी जी की तानाशाही के सम्मुख नत-मस्तक हूँ।"

अब फिर भोलाभाई ने बातों में भाग लेते हुए कहा, "एक सोमदेव नाम का व्यक्ति है। पीछे वह यहाँ एक वालण्टियर कोर बना रहा था। उस वालण्टियर कोर का उद्देश्य यह था कि बलवों के समय बम्बई के भले लोगों को मार-पिटाई और लूट से बचाया जाये।

"उसने एक अच्छी-खासी शक्ति एकत्र कर ली थी, परन्तु मैंने भूल से उसकी बात सेठ लक्ष्मीचन्द से कह दी और अगले दिन उसकी वालण्टियर कोर के प्रमुख व्यक्ति 'डिफेंस ऑफ इण्डिया' कानून के अधीन पकड़ लिये गये।"

"परन्तु वह तो अब छूट गया होगा?" सरदार पटेल ने पूछा।

"हाँ; परन्तु वह मुझसे मिलने नहीं आया। उसे सन्देह है कि मैंने ही उसकी मुखबरी की है। उसके भाई का बम्बई में छापाखाना है। वहाँ मैंने कुछ दिन हुए टेलीफ़ोन किया था। वह छूट तो गया है, परन्तु वह कलकत्ता गया हुआ है।"

सरदार पटेल चुप रहे। अब गाडगिल साहब पूछने लगे, "सरदार साहब! कश्मीर और पश्चिमोत्तरी सीमा के विषय में क्या होगा?"

"जवाहरलाल के मस्तिष्क पर शेख अब्दुल्ला का प्रभाव है और शेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुल्ला महाराजा को बहुत ही गन्दी गालियाँ देता है। अतः अब जवाहरलाल कांग्रेस का प्रधान बना तो कल वह देश का प्रधानमन्त्री बनेगा और हिन्दुस्तान और महाराजा कश्मीर में कोई सम्बन्ध नहीं रह सकता।

"परिणाम यह होगा कि जब पाकिस्तान बनेगा तो कश्मीर और पश्चिमोत्तर प्रदेश को पाकिस्तान के साथ जाना पड़ेगा।"

भोलाभाई देसाई ने कहा, "इसी सोम ने मुझे यह कहा था कि गांधी जी की सब बेहूदगियों का उत्तरदायित्व हम लोगों के सिर पर है। हम आरम्भ से ही गांधी जी को सिर पर चढ़ाये हुए हैं।"

सरदार ने अपनी सफाई में कह दिया, "आरम्भ से ही मैं गांधी जी की मुसलमानों के प्रति नीति को पसन्द नहीं करता था, परन्तु उनकी सत्याग्रह की योजना को मैं देश के लिये वरदान समझता था। बारदोली में मैंने उसका प्रयोग भी किया था और लोग कहते हैं कि बहुत सफलता मिली थी। परन्तु मेरा विचार है कि सफलता इस कारण नहीं मिली थी कि आन्दोलन अहिंसात्मक था, वरन् इस कारण मिली थी कि उसकी हिमायत कांग्रेस और देश के लोग कर रहे थे।

"यदि पूर्ण देश किसी भी उचित अथवा अनुचित कार्य की सराहना करे तो वह बात सरकार मानने पर तैयार हो जाती है। अहिंसात्मक बात इस जैनियों और वैष्णवों के देश में महिमा पा गयी और इस कारण मेरा बारदोली का सत्याग्रह सफल हो गया था।

"देखो न, पाकिस्तान में क्या युक्ति है! परन्तु जैसा कि नलिनीकान्त ने कहा है, सरकार और भीरु हिन्दू मुसलमानों से लड़ने से डरते हैं। इस कारण अब मुसलमान एक मत से पाकिस्तान की माँग कर रहे हैं तो इसका विरोध असम्भव हो गया है। यह आन्दोलन तो अहिंसात्मक नहीं है। इस पर भी यह सफल हो रहा है।

"इस कारण मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि किसी भी कार्य को लेकर उसके समर्थन में जनता हो जाये तो विदेशीय सरकार, जो यहाँ अपने हलवे-माण्डे के लिये आयी हुई है, विरोध नहीं कर सकती।

"यदि मुसलमान पाकिस्तान बना सकते हैं तो मैं कहता हूँ कि उनसे संख्या में चार गुना अधिक हिन्दू पाकिस्तान की कब्र क्यों नहीं खोद सकते? परन्तु मुसलमानों का विरोध उन्हीं के हथियारों से करना होगा?"

"परन्तु हम क्या करें? हिन्दू गांधी जी के पीछे हैं और पटेल तथा गाडगिल भी गांधी जी के पीछे हैं।" देसाई का कहना था।

"यह दोष हमारा नहीं है। यह दोष हिन्दू-जनता का है। सहस्रों वर्षों से इस समाज के गुरु और आचार्यों ने जाति को मिथ्या दिशा में चला रखा है। जो कोई उस दिशा का विरोध करना चाहता है, वह मिट्टी में मिल जाता है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवाह को जैन, बौद्ध और वैष्णवों ने उत्पन्न किया है। जो कोई भी इस प्रवाह में मिल जाता है, वह नेता बन जाता है।''

''सरदार साहब ! किसी भी प्रवहण का विरोध आरम्भ करने वाला तो मिट जाता है, परन्तु यदि यह विरोध निरन्तर चलता रहे तो यह इतना प्रबल हो जाता है कि अन्त में जाति की गति को बदल देता है। गांधी जी के विचार को गलत मानने वालों में नेतागीरी ,का मोह इतना प्रबल है कि वे अपना बलिदान नहीं कर सकते।''

''बात तो ठीक है,...।'' सरदार पटेल कुछ आगे कहने जा रहे थे कि शंकरराव देव वहाँ आ गये। सामान्य अभिवादन के उपरान्त देसाई ने उनसे पूछा, ''कई दिन के उपरान्त मिले हैं। कहाँ रहे हैं ?''

''मैं वर्धा से आ रहा हूँ। वहाँ यह चर्चा थी कि अन्तरिम स्वराज्य सरकार बनाने की घोषणा होने वाली है।''

''कौन घोषणा करने वाले हैं ?''

''घोषणा तो इंगलैण्ड के प्रधानमन्त्री की होगी, परन्तु करेंगे वाइसराय हिन्द। मैं इस चर्चा को सुन गांधी जी के कक्ष में जा पहुँचा। उनके सामने उपस्थित हो आश्रम में चल रही चर्चा के विषय में पूछने लगा। गांधी जी ने कहा, 'किसी मूर्ख ने यह बात समय से पूर्व विख्यात कर दी है।'

''मैंने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'तो किस समय यह बात प्रकट होनी चाहिये थी ?'

''गांधी जी का कहना था, 'जब जवाहरलाल कांग्रेस का प्रधान घोषित हो जाता। वाइसराय कांग्रेस के प्रधान से नयी ऐग्ज़ैक्टिव कौंसिल में कांग्रेस के प्रतिनिधियों के नाम माँगेंगे। परन्तु किसी मूर्ख ने यह बात समय से पहले प्रचारित कर दी है।'

''गांधी जी ने मुझे आदेश दिया कि मैं तुरन्त बम्बई आऊँ और यहाँ प्रयास करूँ, जिससे जवाहरलाल प्रधान निर्वाचित हो सके। अतः उनका आदेश प्राप्त कर मैं सीधा यहाँ आ गया हूँ।''

''और देव जी ! आप कैसे जवाहरलाल को प्रधान बनायेंगे ?''

''मैं वर्किंग कमेटी के कुछ सदस्यों से तो मिल आया हूँ। सरदार के नाम वापस लेने पर अब कोई झगड़ा नहीं रहा।''

सरदार पटेल ने गम्भीर भाव धारण करते हुए कहा, ''महात्मा जी को सदा यह सन्देह बना रहता है कि मैं उनकी बात का विरोध करूँगा। मैं नहीं जानता कि इस सन्देह का कैसे निवारण किया जाये ?''

''इसकी क्या आवश्यकता है, सरदार ! आवश्यकता इस बात की है कि आप भी जवाहरलाल की भाँति गांधी के आश्रम में अपनी एक 'लॉबी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण करें।"

"तो आश्रम में जवाहरलाल की 'लॉबी' कार्य कर रही है ?" सरदार ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"तो आप नहीं जानते क्या ?" देसाई ने पूछा।

सरदार इस पर चुप रहे। शंकरदेव ने कहा, "पण्डित मोतीलाल के काल से ही नेहरू-परिवार की एक 'लॉबी' वहाँ काम करती है। यही कारण है कि जवाहरलाल के कारनामों से गांधी जी अवगत रहते हैं। आखिर यह चर्चा कि वाइसराय किसी प्रकार की घोषणा करने वाले हैं, मुझसे किसने की थी ? यह आश्रम के सब सदस्यों को विदित नहीं थी। मुझे किसी ने बताया और मैं गांधी जी के पास इसका समर्थन सुनने के लिये जा पहुँचा।

"मैं समझता हूँ कि गांधी जी ने जान-बूझ कर मुझे बम्बई एक दिन पूर्व भेज दिया है। एक पत्थर से उन्होंने दो शिकार किये हैं। एक तो मुझे आश्रम से भेज कर इस चर्चा को आश्रम में फैलने से रोक दिया है। दूसरी बात यह कि गांधी जी वर्धा के बाहर कार्यकारिणी में इस बात को विख्यात कराना चाहते थे और इसी कारण मुझे यहाँ भेज दिया है।"

सरदार गम्भीर मुख बनाये हुए उठ खड़े हुए और कहने लगे, "गांधी जी जवाहरलाल को देश का प्रधानमन्त्री बनवाने के लिये यह सब-कुछ करा रहे हैं।"

सरदार और गाडगिल ने हाथ जोड़ देसाई को प्रणाम किया और चल दिये। देसाई तो अपने घर में थे। इस कारण वे बैठे रहे।

: ५ :

अब घटना-चक्र वेग से चलने लगा। जिस समय गांधी जी और कांग्रेस वर्किंग कमेटी जवाहरलाल को कांग्रेस का प्रधान बनाने में लगे हुए थे, उसी समय कलकत्ता में मुस्लिम लीग यह निश्चय कर रही थी कि अपनी माँग हिन्दुओं और सरकार से स्वीकार कराने के लिये 'डायरैक्ट ऐक्शन' किया जाये। सुरहवर्दी मुस्लिम लीग की इन्तजामिया कमेटी में था और उसने यह प्रस्ताव किया था कि यह 'डायरैक्ट ऐक्शन' कलकत्ता से आरम्भ होगा। सुरहवर्दी साहब के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया तो योजना बनने लगी कि इस ऐक्शन का उद्देश्य क्या हो और उस उद्देश्य को किस प्रकार पूरा किया जाये। मुख्य बात यह थी कि कलकत्ता हिन्दुओं से खाली कराना है। जिन्ना साहब ने अपनी जानकारी की बात कह दी। उन्होंने कहा, "पता चला है कि दो-चार दिन में ही वाइसराय घोषणा करने वाले हैं कि आजादी मिलने से पूर्व की समस्याओं को सुलझाने के लिये 'इण्टैरिम' सरकार बना दी जाये। उसके लिये कांग्रेस के सदर और मुस्लिम लीग के सदर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैबिनेट के लिये मैम्बर माँगे जाएँगे।

"मैं जानकार सूत्रों से जान चुका हूँ कि जवाहरलाल नाम पेश करने से पहले कुछ बातों की सफाई माँगेगा और हम भी कुछ बातों की सफाई के लिये पूछेंगे। अपनी बातों को मनवाने के लिये कोई ज़बरदस्त ऐक्शन होना चाहिये।"

"हो जायेगा। परन्तु हुज़ूर, बात को बहुत दूर तक नहीं ले जाना चाहिये और मैं चाहता हूँ कि बिना हमारे सरकार बनाये काम बन सके।

"उसके लिये 'डायरैक्ट ऐक्शन' ही एक तरीका है। एक बार कलकत्ता में दो-तीन हज़ार हिन्दुओं की लाशें हुगली में तैरती हुई दिखायी दीं तो हिन्दुओं की धोती में पाखाना निकलने लगेगा और सरकार हमारी बात मान जाने के लिये तैयार हो जायेगी।"

२६ जुलाई को वाइसराय ने कांग्रेस के प्रधान पण्डित जवाहरलाल को एक निजी और गुप्त पत्र लिखा कि सरकार वाइसराय की कौंसिल को मन्त्री-मण्डल का पद देना चाहती है। इस कारण उन्हें चाहिये कि कौंसिल के सदस्यों के लिये नाम प्रस्तावित करें। पण्डित जवाहरलाल ने जिन्ना साहब को लिखा कि वे नाम लिखें जिससे कि मुस्लिम लीग का प्रातिनिध्य हो सके।

जिन्ना साहब ने जवाहरलाल जी के निमन्त्रण को स्वीकार नहीं किया। इस कारण सब नाम जवाहरलाल जी ने स्वयं ही लिखकर भेज दिये। बारह नाम भेजे गये। उनमें मुस्लिम लीग का कोई प्रतिनिधि नहीं था।

इधर नाम प्रस्तावित हो रहे थे, दूसरी ओर कलकत्ता में 'डायरैक्ट ऐक्शन' आरम्भ कर दिया गया और इसमें हिन्दुओं का कत्ले-आम शुरू कर दिया गया।

सोलह अगस्त को सर्वप्रथम हड़ताल की गयी और फिर बहाना ढूँढ कर मुसलमानों के झुण्ड-के-झुण्ड, शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हो, हिन्दू मोहल्लों की ओर लपक पड़े। सोलह अगस्त का आधा दिन और सोलह तथा सत्रह अगस्त के मध्य की रात तक यह गुण्डागर्दी जारी रही।

सत्रह अगस्त को हिन्दुओं की समझ में आया कि यह 'डायरैक्ट ऐक्शन' कलकत्ता को हिन्दुओं से खाली कराने के लिये किया जा रहा है। अतः उन्होंने इसका विरोध आरम्भ कर दिया। ऐक्शन निर्विरोध सत्रह तारीख के मध्याह्न तक चलता रहा। परन्तु सायंकाल तक पासा पलटा। ऐक्शन का विरोध आरम्भ हो गया था। रात तक ऐक्शन करने वाले मुसलमान स्वयं कलकत्ता छोड़कर भागने लगे थे। अठारह तारीख को प्रातःकाल नदियों की भाँति आतंकित मुसलमानों का प्रवाह कलकत्ता से चारों ओर बाहर को बहता दिखायी देने लगा।

अठारह तारीख को सुरहवर्दी को होश आया कि यह क्या हो रहा है। जहाँ वे यह विचार कर रहे थे कि कलकत्ता हिन्दुओं से रिक्त हो जायेगा, वहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान नदी-प्रवाह की तरह भाग रहे थे। उसी दिन मध्याह्न के समय सुरहवर्दी ने एक शान्ति-सभा बुला ली, जिसमें कांग्रेसियों को भी आमन्त्रित किया और फिर मोहल्ले-मोहल्ले में शान्ति-सभा के लोग जा-जाकर लोगों को शान्त करने लगे।

पुलिस सोलह तारीख को तमाशा देखती रही थी। सत्रह को वह मुसलमानों की सहायता कर रही थी और अठारह को हिन्दुओं को बदला लेने से रोकने लगी। उन्नीस को सेना तथा पुलिस ने ऐक्शन आरम्भ कर दिया। बीस को शान्ति हो गयी। कलकत्ता में पाँच सहस्र के लगभग हिन्दू-मुसलमान मारे गये और पन्द्रह सहस्र के लगभग घायल हुए। सहस्रों मकान आग लगा कर फूंक दिये गये और सैंकड़ों स्त्रियों का अपहरण हुआ।

कलकत्ता के हत्या-काण्ड के बावजूद दो सितम्बर को पण्डित जवाहरलाल द्वारा नामांकित लोगों का मन्त्री-मण्डल बना, परन्तु न तो वाइसराय ने और न ही पण्डित नेहरू ने कलकत्ता की घटना में जाँच-पड़ताल करनी आवश्यक समझी। वे यह जाँच करना प्रान्तीय सरकार का काम समझते थे और प्रान्तीय सरकार के सर्वेसर्वा थे सुरहवर्दी साहब।

परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम लीग को कलकत्ता से सन्तोष नहीं हुआ। अत: अक्टूबर की दस तारीख को नोआखाली में वही बात दोहरायी गयी, जो कलकत्ता में सोलह अगस्त को की गयी थी। नोआखाली में हिन्दुओं की संख्या बहुत कम थी। इस कारण वहाँ वह कुछ नहीं किया जा सका, जो हिन्दुओं ने कलकत्ता में करने का यत्न किया था।

नोआखाली में एक-तरफा कार्यवाही ही हो सकी। इस सब समय पण्डित जवाहरलाल नेहरू का मन्त्री-मण्डल दिल्ली में बैठा, कानूनी बहस करता रहा कि केन्द्र प्रान्तीय सरकार को शान्ति स्थापित करने का आदेश दे सकता है अथवा नहीं ?

इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि बिहार में फसाद आरम्भ हो गया। यहाँ हिन्दुओं की संख्या अधिक थी और मुसलमानों को हानि पहुँचने लगी। परन्तु अब पण्डित नेहरू का रक्त खोल उठा। वे हवाई जहाज से पटना पहुँचे और पटना से उस क्षेत्र में जहाँ फसाद हो रहा था, चले गये।

जब पण्डित नेहरू पहुँचे तो सेना और पुलिस भी पहुँच गयी और हिन्दुओं को चुन-चुन कर उनका विशाल-स्तर पर संहार किया गया। सहस्रों मारे गये, सहस्रों पकड़े गये और दो-तीन दिन में शान्ति स्थापित हो सकी।

परन्तु इसके कुछ बाद गढ़गंगा और कुँछ अन्य स्थानों में फसाद हो गया। तदनन्तर दिल्ली में फसाद हुआ और फिर सन् १९४७ के मार्च मास में लाहौर तथा पंजाब में फसाद हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास लिखने वालों का अनुमान है कि इन उपद्रवों में दस लाख से अधिक हिन्दू और मुसलमान मारे गये और अरबों रुपये की सम्पत्ति विनष्ट हुई और सहस्रों स्त्रियों का अपहरण तथा उन पर बलात्कार हुआ।

इस सब समय पण्डित जवाहरलाल नेहरू देश के प्रधानमन्त्री रहे। दो सितम्बर, सन् १९४६ से अखण्ड हिन्दुस्तान के और १५ अगस्त, १९४७ के उपरान्त खंडित भारत के।

सोमदेव, पंडित जवाहरलाल के जुलाई, सन् १९४६ में कांग्रेस का प्रधान बनने के पूर्व ही बम्बई से लापता हो गया था। जब उसका सितम्बर, १९४७ तक कोई समाचार नहीं मिला तो समझ लिया गया कि वह कलकत्ता इत्यादि के फसादों में कहीं मारा गया है।

भारत सरकार की नीति यह थी कि हिन्दुस्तान हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियों का देश रहेगा; इसमें जातीय भेद-भाव नहीं रखा जायेगा; यहाँ का राज्य मज़हब निरपेक्ष होगा। इसी नीति के अनुरूप मुसलमानों की रक्षा का प्रबन्ध होने लगा।

अक्टूबर, सन् १९४७ में पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। इस पर महाराजा कश्मीर अपनी रियासत को भारत के साथ सम्बद्ध करने पर विवश हो गया। परन्तु सबसे विस्मयजनक बात यह हुई कि रियासत को भारत के साथ सम्बद्ध करने के लिये प्रधानमन्त्री उद्यत नहीं हुए जब तक कि राज्य के द्रोही शेख अब्दुल्ला को जेल से मुक्त नहीं किया गया और उसको राज्य का सर्वेसर्वा नहीं बनाया गया। शेख अब्दुल्ला की सिफारिश पर ही पंडित नेहरू ने राज्य का भारत के साथ विलय स्वीकार किया।

इस पर भी पंडित नेहरू ने एक महान् भूल कर दी। कश्मीर का विलय स्वीकार किया। वहाँ उसकी रक्षार्थ भारत की सेना भी भेजी, परन्तु साथ ही उन्होंने रेडियो पर घोषणा कर दी कि कश्मीर में शान्ति स्थापित हो जाने पर जनता के विचार जाने जायेंगे कि वह हिन्दुस्तान के साथ अपने को सम्बद्ध रखना चाहती है अथवा नहीं?

देश-विभाजन के उपरान्त के समाचार इतने हृदय-विदारक थे कि नलिनी उनको सहन नहीं कर सका।

उस समय तक परिवार की लिमिटिड कम्पनी भी विघटित हो चुकी थी। जून मास के प्रथम सप्ताह में ही कम्पनी का बटवारा करा दिया गया था। कम्पनी लिमिटिड थी। इस कारण कम्पनियों के रजिस्ट्रार के सामने याचिका करनी पड़ी कि बटवारा कर लिया गया है। ऐसी ही एक याचिका बम्बई के प्रैज़िडेंसी मजिस्ट्रेट के समक्ष देनी पड़ी।

कृष्णस्वरूप ने बम्बई वाला काम ले लिया। चारुदेव ने लखनऊ और पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का काम सम्भाल लिया था। कलकत्ता का काम तो १६-१७ अगस्त की मध्य रात्रि को आग लगाकर फूंक दिया गया था। लाहौर का काम पहले ही वेदप्रकाश का निजी हो चुका था; परन्तु वह भी तीन अगस्त, सन् १९४७ को अग्नि की भेंट हो गया। वेदप्रकाश के बच्चे और पत्नी मारे गये थे। वेदप्रकाश स्वयं अकेला जैसे-कैसे लाहौर से बचकर आ सका था।

अक्टूबर की तीस तारीख को नलिनी ने देह छोड़ दी। वैसे उसकी अवस्था कुछ दिन पहले से ही बिगड़ रही दिखायी देने लगी थी। अतः विजय ने पिता के बिगड़ते स्वास्थ्य का समाचार परिवार के सब सदस्यों को लिख भेजा। परिवार के प्रायः सब सदस्य भुवाली में एकत्रित हो गये थे। केवल कृष्णस्वरूप और सोम का बड़ा लड़का जो मद्रास में काम करता था, वे नहीं आये।

प्रत्यक्ष रूप में बाबा में दुर्बलता के अतिरिक्त अन्य कोई लक्षण प्रतीत नहीं होता था। अतः चारुदेव को अपना काम-काज छोड़कर हड़बड़ी में चला आना भला प्रतीत नहीं हुआ। उसने अपनी पत्नी श्रद्धा से कह दिया, "पिता जी ने तो अपने पत्र में लिखा था कि बाबा का अन्त समीप प्रतीत होता है और मै देख रहा हूँ कि वे अभी चल-फिर सकते हैं।"

श्रद्धा की माँ गौरी पति-पत्नी में हो रही बात सुन रही थी। उसने धीरे से कह दिया, "बेटा! तुम्हारे पिता ने कुछ बात अवश्य देखी होगी जिससे वह बात लिखी थी। तुमसे तो वे अधिक अनुभवी हैं ही।"

"माँ!" चारु ने कह दिया, "पिता जी का अपने बच्चों को देखने का मोह ही इसमें कारण प्रतीत होता है।"

गौरी ने मुस्कराते हुए कहा, "तो यह क्या छोटी बात है? देखो बेटा, मेरे नाना राजा साहब के परिवार में कई बच्चे गोद लेने के लिये थे, परन्तु मैंने श्रद्धा के लड़कों को ही गोद में क्यों लिया है? मैं बताती हूँ। यह लड़का मेरी लड़की का पुत्र है और मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें मेरा भी कुछ अंश है। मुझे उससे मोह है।"

"परन्तु माँ!" चारु ने गम्भीर मुख बना कह दिया, "अब स्वराज्य हो गया है और पण्डित जवाहरलाल देश के प्रधानमन्त्री हैं। पूर्ण मन्त्री-मण्डल उनकी सम्मति का ही है और किसी भी दिन तुम सुनोगी कि देश-भर की जागीरें सरकार ने ले ली हैं।"

"क्यों?"

"इसलिये कि भूमि का मालिक वह होना चाहिये जो भूमि जोतता और बोता है।"

"यह तो है ही। यह कानून भी बन ही चुका है कि हम किसी को बेदखल नहीं कर सकते। यहाँ तक कि लगान न देने वालों को भी हम जोतने और बोने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना नहीं कर सकते।"

"यह ठीक है। परन्तु माँ, तुम बीच में हो ही क्यों? किसान का सीधा सम्पर्क सरकार से होना चाहिये।"

"सरकार से ही क्यों?" गौरी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "परमात्मा से क्यों नहीं? भूमि तो परमात्मा की बनायी हुई है, सरकार की नहीं। सरकार बीच में क्यों?"

"उसे लोगों ने नियुक्त किया है।"

"मुझे परमात्मा ने नियुक्त किया है। मैं ज़मींदार की पत्नी हूँ।"

चारु हँस पड़ा और चुप कर गया। वह समझता था कि उसकी सास समाजवाद को समझती नहीं। इसी कारण इस प्रकार की युक्तियाँ करती है।

गौरी भी चुप कर रही। वह समझती थी कि सरकार को वह अपने मन की बात बता नहीं सकती। समझा भी नहीं सकती। उसका दामाद भी बातें ही बनाता है। वह भी तो कुछ कर नहीं सकता।

वास्तव में सरकार भूमि लेगी तो इसलिये नहीं कि वह सरकार है और भूमि पर ज़मींदार से कुछ अधिक अधिकार रखती है, वरन् इसलिये कि वह सामर्थ्यवान है। 'समरथ को न दोष गुसाईं' वाली बात है।

गौरी की समझ में सरकार की यह बात दोषपूर्ण ही थी। वह समझ गई कि सरकार यह करेगी तो सामर्थ्यवान होने के कारण ही करेगी। इस पर भी वार्त्तालाप का विषय भूमि का सरकार द्वारा लेना अथवा न लेना नहीं था। वह था कि उसके दामाद का इस समय परिवार में आना सार्थक था अथवा व्यर्थ। वह इसे सार्थक समझती थी। इसी कारण उसने बात बदलकर कहा, "देखो, बेटा! कितने वर्ष के उपरान्त अपने बाबा के दर्शन करने आये हो?"

"जब संयुक्त परिवार को विघटित कर लिमिटिड कम्पनी बनायी गयी थी, तब मैं बम्बई कम्पनी में सम्मिलित होने गया था। यह सन् १९४५ की बात है।"

"तब तुम्हारा आना यहाँ सार्थक ही हुआ है। इसे दो वर्ष हो गये हैं और घर के पुरखा के दो वर्ष में एक बार तो दर्शन करने ही चाहियें।"

चारु चुप कर रहा। नलिनी को मीरा के आने पर विस्मय हुआ और प्रसन्नता भी हुई। वह पहली बार भुवाली आयी थी। नलिनी ने जब उसे देखा तो उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "तो तुम भी आयी हो?"

"हाँ, बाबा! पिता जी ने लिखा था कि अवश्य आऊँ, इस कारण मैं चली आयी हूँ।"

"और कृष्ण नहीं आया?"

"इस विषय में मेरा उनसे सदा मतभेद रहा है। मैं नहीं जानती कि क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे कभी भी परिवार से मेल-जोल रखने के पक्ष में नहीं रहे।"

"और तुम ?"

"मुझे तो इस परिवार में बहुत सुख मिला है और मेरे चित्त को शान्ति प्राप्त हुई है। इस कारण मुझे आप लोगों से मेल-मुलाकात करने पर प्रसन्नता होती है।"

उनतीस अक्टूबर को सायंकाल नलिनी ने अपने परिवार के सब सदस्यों को बुला लिया और सबसे भुवाली में रहते हुए सुविधा-असुविधा के विषय में पूछा। चारु ने यह कहा, "बाबा! इस जंगल में रहने से तो आपको भारी कष्ट हो रहा है। किसी नगर में चले चलें तो अनेकों प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं।"

"परन्तु चारु! मैंने अपने जीवन का अधिकांश भाग यहाँ सुखपूर्वक व्यतीत किया है। मुझे कभी किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। अब भी मुझे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं है। तुमको कल लखनऊ लौट जाना चाहिये। यहाँ कष्ट भोगने में कुछ लाभ नहीं होगा।"

चारु ने समझा कि उसे जाने की स्वीकृति मिल गयी है और वह मन-ही-मन लौटनें की योजना बनाने लगा।

नलिनी ने कहा, "कल मैं प्रातः साढ़े-छः बजे तुम सबसे मिलूंगा। अब तुम जाओ, आराम करो।"

जब सब उठ अपने-अपने कमरे में चले गये तो विजय वहाँ बैठा रहा। विजय ने एकान्त में पूछ लिया, "पिता जी! कैसा अनुभव कर रहे हैं?"

"तुम क्या समझ रहे हो ?"

"मुझे तो आज आपके शरीर का स्वाभाविक ओज क्षीण हो रहा प्रतीत हुआ है।"

"हाँ; मेरी नाक शीतल हो रही है। हाथ-पाँव की अंगुलियाँ भी ठण्डी प्रतीत हो रही हैं। मैं समझता हूँ कि कल प्रातःकाल मैं इस लोक को छोड़ सकूंगा।"

"पिता जी! कुछ विशेष बात उत्तराधिकार में देना चाहें तो बता दें?"

"जहाँ तक सम्पत्ति का सम्बन्ध है, मेरा अपना यहाँ कुछ भी नहीं है। तुम्हारी माता जी की ही यह सम्पत्ति है। वह अपने अन्त समय में सब-कुछ मुझे दे गयी थी और मैं यह तुमको नहीं दे रहा। मैंने यह सब दान कर दी है। यह तुम मेरे 'ब्रीफ केस' में रखे मेरे इच्छा-पत्र से जान जाओगे। मैंने तुम्हें ही अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये नियुक्त किया है।

"आनन्द और तुमने मेरे जीवन-कार्य में बहुत सहायता दी है, परन्तु अब आगे यह कार्य चलता दिखायी नहीं देता। तुम यत्न करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस अन्त समय में मुझे सोम की स्मृति बेचैन कर रही है। वह होता तो मैं उसे यह कहना चाहता था कि जीवन का कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ और वह तुम्हारी सम्मति से ही इस कार्य को चलाये।"

"परन्तु पिता जी! वह तो लापता है।"

"परन्तु वह जीवित है। किसी कारण से वह हमसे सम्पर्क नहीं रख सका। खैर, वह मेरे क्षत्रिय-स्वभाव का उत्तराधिकारी है। उसे सदा सहायता देते रहना।"

इस समय आनन्द अपनी पत्नी प्रभा के साथ आ गया। नलिनी ने पूछा, "आनन्द! किसलिये आये हो?"

"पिता जी! आपने तो आराम करने को कहा था, परन्तु प्रभा कह रही है कि आज रात वह आपके कमरे में सोयेगी।"

"क्यों, प्रभा! क्या बात है?"

"पिता जी! चित्त करता है।"

"अच्छी बात है। जैसा मन में आये करो। इस पर भी मैं समझता हूँ कि सूर्योदय के समय ही मैंने आप सबसे मिलने को कहा है।"

"पिता जी! मेरा चित्त कह रहा है कि यह अन्तिम काल है, जब मैं आपकी सेवा कर सकूंगी।"

नलिनी मुस्कराया और बोला, "ठीक है। अपनी सुख-सुविधा देख लो।"

: ६ :

अगले दिन प्रातःकाल छः बजे ही प्रभा ने परिवार के सब सदस्यों को कहलवा भेजा कि बाबा आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सब लोग भागे हुए नलिनी के कमरे में चले आये। नलिनी भूमि पर आसन लगाये पलथी मारे बैठा था। जब सब लोग आ गये तो उनमें महावीर और रघुवीर के बच्चे भी थे। मीरा की छोटी लड़की जो उस समय चार वर्ष की थी, वह भी आ गयी थी।

नलिनी ने कहा, "मैं जा रहा हूँ। इस कारण आप सबसे विदा लेना चाहता था। आप सब मेरे परिवार के अंग हैं। मैंने अपनी सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार आपको सुख-सुविधा पहुँचाने का यत्न किया है। अब जाते समय मैं कुछ कहना चाहता हूँ जो मेरे पूर्ण जीवन के अनुभवों का सार है।

"जीवन-कार्य, चाहे वह निजी जीवन से सम्बन्ध रखता हो और चाहे वह सार्वजनिक जीवन से, कामना और मोह छोड़ कर करोगे तो सुखी रहोगे। न तो सफलता में किसी प्रकार के हर्ष का अवसर होता है और न ही असफलता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय शोक का। कारण यह कि हमें निष्काम कर्म का लाभ अवश्य मिलता है। कर्म की सफलता और असफलता सम्बन्धित व्यक्ति के अदृष्टों का फल होता है। मैंने अपने विचार से परिवार, देश और जाति को एक दिशा देने का यत्न किया है। इसमें सफलता-असफलता तो आप और देशवासियों के पूर्व-जन्म के कर्मों के फलस्वरूप ही है। परन्तु मेरे ईमानदारी से किये प्रयत्न का फल, आप और जाति से पृथक् मुझे मिल रहा है। इसी फलस्वरूप मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मेरी आत्मा निर्मल हो रही है।

"बस यही मेरे इस लम्बे जीवन का एकमात्र पाठ है। मोह और कामना-रहित होकर जीवन चलाओगे तो सदा सुखी रहोगे।

"अच्छा, अब तुम सब चुपचाप बैठे रहो। जब तक मैं चला नहीं जाता, तुम यहाँ ही बैठे रहो।"

इसके दो-तीन मिनट उपरान्त नलिनी ने आसन के समीप ही भूमि पर लेट जाने की इच्छा प्रकट की। विजय ने उसे आश्रय दे, लिटा दिया और उसने अनुभव किया कि भूमि पर पाँव पसारने से पूर्व ही पिता जी के प्राणान्त हो चुके थे।

विजय ने शरीर को सीधा करते हुए कहा, "शरीर शान्त हो चुका है।" सब उठ खड़े हुए।

विजय ने कुछ देर प्रतीक्षा कर शरीर को चादर से ढाँप दिया।

प्रायः सब सदस्य बाबा के इस सुखमय अन्त पर विस्मय करते थे। और प्रसन्न भी थे। विजय सबको लेकर कमरे से बाहर चला आया। केवल प्रभा शव के पास भूमि पर ही पलथी मारे बैठी थी। वह नलिनी की पुत्री के रूप में इतने लम्बे काल से उसके पास रह रही थी कि उसे इस वियोग पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसका विवाह सन् १९०१ में हुआ था और तबसे वह अपने सास-श्वसुर के पास ही रही थी। वह एक दिन के लिये भी उनसे पृथक् नहीं हुई थी। इसे अब सैंतालीस वर्ष व्यतीत हो चुके थे। प्रभा इस लम्बे काल की अनेकों सुखद स्मृतियों में सुख अनुभव करती हुई अपने को भूल रही थी।

उसी दिन मध्याह्नोत्तर नलिनी के शरीर का दाह-संस्कार किया गया।

सायंकाल मीरा डाकखाने में गयी और अपने पति को टेलीग्राम दे आयी। जब वह आयी तो विजय और सरस्वती बरामदे में बैठे विचार कर रहे थे कि भविष्य में क्या किया जाये? इस समय मीरा बाहर से आती दिखायी दी। दोनों विस्मय कर रहे थे कि वह कहाँ से आ रही है?

जब वह उनके समीप आ, एक कुर्सी पर बैठ गयी तो सरस्वती ने पूछा, "मीरा! कहाँ गयी थी?"

"माता जी! आपके लड़के को टेलीग्राम करने।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो हमने प्रात: कर दी थी। गोपाल और कृष्ण दोनों को।"

"मैंने तो यह लिखा है कि तुरन्त चले आओ।"

"अब आने से क्या होगा?"

"मैं उनसे अपना हिसाब-किताब करना चाहती हूँ।"

"यहाँ भुवाली में बैठे हुए?"

"मैं अब बम्बई नहीं जाऊँगी।"

"और कहाँ रहोगी?"

"मैं नहीं जानती कि आपका क्या कार्यक्रम है। इस कारण यहाँ रहने के विषय में तो कुछ कह नहीं सकती। हाँ, अपने जन्म के देश में लौट जाने के विषय में विचार कर रही हूँ।"

"तो कृष्ण?" सरस्वती ने विस्मय में पूछा।

"वे मुझसे पृथक् रहने में सुख अनुभव करते हैं।"

"परन्तु वह यहाँ आयेगा क्या? अपने बाबा के रहते तो वह कभी आया नहीं।"

"उनकी इस बात को ही मैं समझ नहीं सकी। मैं यह जानती हूँ कि आपने उनकी इच्छा का कभी विरोध नहीं किया। इस पर भी वे सदा परिवार से अपने को निर्लेप समझते रहे हैं। यह तो मैं ही थी, जो उनका सदा आपके साथ सम्बन्ध बनाये रखने का यत्न करती रही हूँ। अब कुछ वर्ष से मैंने इसका भी प्रयत्न छोड़ दिया है।

"चार दिन हुए, मैंने उनको एक तार दिया था और उसमें भी कहा था कि तुरन्त चले आयें। वे नहीं आये। आज मैंने उनको लिखा है कि मैं फ्रांस जा रही हूँ। वहाँ से लौटने का विचार नहीं रखती। इस कारण अन्तिम व्यवस्था के लिये यहाँ चले आयें।"

सरस्वती ने कहा, "और यदि अब भी वह यहाँ नहीं आया तो क्या करोगी?"

"तब भी मैं जाऊँगी। उनको लिख दूँगी कि हवाई अड्डे पर मुझसे मिल लें। मैं उनके घर नहीं जा रही।"

विजय ने बात समाप्त करने के लिये कह दिया, "तुम्हारा तार कल पहुँचेगा और उसका यदि तार आया तो कल सायंकाल तक आयेगा। इस कारण अभी चौबीस घण्टे विचार करने को हैं।"

मीरा उठ अपने कमरे में जाने लगी तो सरस्वती ने उसकी बाँह पकड़ उसे समीप बैठा लिया। उसने कहा, "अभी हम पिता जी का इच्छा-पत्र आप सबको सुनाना चाहते हैं।"

"कहाँ है उनका इच्छा-पत्र?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जाते समय पिता जी ने अपना 'ब्रीफ़-केस' प्रभा जी को दे दिया था। वे कह गये हैं कि उसे उनके मरने के उपरान्त खोला जाये। उन्होंने कल सायंकाल यह बताया था कि उनका इच्छा-पत्र जो दान-पत्र ही है, उनके 'ब्रीफ़-केस' में रखा है।

"प्रभा आज ही उस 'ब्रीफ़-केस' को सबके सम्मुख खोलना चाहती हैं। हमने यह निश्चय किया है कि आज ही यह हो जाये। कल हम पिता जी की अस्थियाँ लेकर हरिद्वार जाना चाहते हैं। तदनन्तर पिता जी की इच्छानुसार यहाँ का प्रबन्ध हो जायेगा।"

मीरा के मन में यह जानने की उत्सुकता उत्पन्न हो गयी कि बाबा की अन्तिम इच्छा क्या है। वह वहाँ बैठी हुई पूछने लगी, "तो यह कब तक होगा?"

"हमने प्रभा तथा आनन्द जी को बुलाया है। प्रभा रात-भर जागती रही है और संस्कार के उपरान्त सो गयी थी। आशा है कि वे दोनों आने ही वाले हैं।"

मीरा को बाबा के मृत्यु के समय का व्यवहार बहुत ही विचित्र प्रतीत हुआ था। उसके संवेदनात्मक मन पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। परिवार के लोग भी घर के पुरखा की मृत्यु से अत्यन्त प्रभावित हुए थे। सब-के-सब गम्भीर विचार में मग्न चुपचाप प्रातः से अब तक मशीन की भाँति कार्य करते हुए प्रतीत होते थे।

वह विचार कर रही थी कि इच्छा-पत्र का पढ़ा जाना परिवार के घटना-चक्र पर पटाक्षेप होगा। वह जानने के लिये उत्सुक थी कि इस पटाक्षेप के उपरान्त ये लोग किस प्रकार परस्पर सम्बन्ध रखते हैं? अपने विषय में तो वह स्थिर-चित्त थी। वह अपने पति और उसके बच्चों से पृथक् हो जाना चाहती थी।

वह यह जानने के लिये भी अति उत्सुक थी कि उसकी सास और श्वसुर अब अपने जीवन को कैसे और कहाँ चलायेंगे? उसे समझ में आया कि उनके जीवन का घना सम्बन्ध इस इच्छा-पत्र से है। तभी वे इसको जान लेने के लिये अति उत्सुक हैं।

अतः वह भी वहाँ बैठी चाची की प्रतीक्षा करने लगी। प्रभावती से पहले परिवार के अन्य सदस्य वहाँ आ गये। उनको भी बाबा का इच्छा-पत्र सुनने के लिये वहाँ बुलाया गया था।

प्रभा और आनन्द आये तो पूर्ण परिवार बरामदे में एकत्रित हो चुका था। प्रभा ने सबको वहाँ एकत्रित देख पूछ लिया, "भैया! तो इच्छा-पत्र अभी पढ़ा जायेगा?"

"भाभी!" विजय ने कहा, "मेरी और सरस्वती की इच्छा है कि हम पिता जी की अस्थियाँ लेकर कल मध्याह्न से पूर्व यहाँ से हरिद्वार को चल दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं भी तो आपके साथ जाना चाहूँगी।"

"इसी कारण यहाँ एकत्रित परिवार वालों से मैं छुट्टी लेना चाहता हूँ।"

"ठीक है। मैं पिता जी का 'ब्रीफ़-केस' ले आती हूँ। आप ही उसको खोलेंगे।"

'ब्रीफ़-केस' में नलिनी की कलम, कुछ खाली कागज़ और एक पृष्ठ पर हाथ से लिखा इच्छा-पत्र रखा था।

इस इच्छा-पत्र में लिखा था—"मैंने अपने थोड़े से जीवन को छोड़कर, जब मैं 'बॉम्बे न्यूज़' का सम्पादक नियुक्त हुआ था, कभी आय करने का कार्य नहीं किया। मेरा निर्वाह अपनी धर्म-पत्नी सुवर्णादेवी की उस सम्पत्ति से चलता रहा है, जो उसे अपनी नानी और माँ से मिली थी। सुवर्णादेवी के निधन पर, उसके इच्छा-पत्र के अनुसार मेरे जीवन-काल तक उस सम्पत्ति के प्रयोग का अधिकार मुझे दिया गया था। उसकी यह इच्छा थी कि मरने के समय मैं इस सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बना जाऊँ। इस ट्रस्ट के उद्देश्यों को मैं निश्चय कर जाऊँ और उस ट्रस्ट के ट्रस्टी भी नियुक्त कर जाऊँ।

"सुवर्णा देवी का इच्छा-पत्र भी इसी इच्छा-पत्र के साथ संलग्न है।

"अतः इस इच्छा-पत्र के विषय में जो कुछ मैं लिख रहा हूँ, वह मैं सुवर्णादेवी की इच्छानुसार ही लिख रहा हूँ। इसमें जो उसकी लिखित इच्छा के अतिरिक्त लिख रहा हूँ, वह लिखने की उसने मुझे अपने इच्छा-पत्र में स्वीकृति दी है।

१. मेरी अपनी सम्पत्ति कुछ नहीं है। जो कुछ है, वह सुवर्णादेवी की सम्पत्ति ही है अथवा उसकी आय में से संचित है।

२. इस समय नकद रुपया दो स्थानों पर है। एक तो 'बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट' के कुछ हिस्सों में है और दूसरा 'टाटा आयरन' के हिस्सों में है। इनके अतिरिक्त थोड़ी-सी राशि इलाहाबाद बैंक में है।

३. नकद के अतिरिक्त यह कोठी है, उद्यान है। लाहौर फिरोज़पुर रोड वाली कोठी है और पुस्तकालय है।

४. इस नकद और कोठी इत्यादि को मैं एक ट्रस्ट के हाथ में देता हूँ जिसमें पाँच सदस्य रखना चाहता हूँ। तीन के नाम मैं लिख रहा हूँ और शेष दो की नियुक्ति का अधिकार उन तीनों को ही देता हूँ। नियुक्त ट्रस्टियों के नाम इस प्रकार हैं—

विजयकुमार मेरा बड़ा लड़का; आनन्दकुमार मेरा दूसरा लड़का और कीर्तिदेवी मेरे पोते सोमदेव की पत्नी।

५. मेरी इच्छा है कि ट्रस्टी अपने लिये इसमें से, इसके प्रबन्ध के लिये की जाने वाली मीटिंग में भत्ता ले सकें, जिसकी राशि स्वयं निश्चय करें। वह भत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति मीटिंग और यदि मीटिंग एक दिन से अधिक चले तो प्रतिदिन एक सौ रुपये से अधिक न हो।

६. मेरी इच्छा है कि यह ट्रस्ट भारत के प्राचीन इतिहास और ज्ञान-विज्ञान पर शोध-कार्य चलाये। ट्रस्ट को अधिकार होगा कि उचित भत्ते पर इस शोध-कार्य का कोई योग्य डायरेक्टर नियुक्त करे। यह डायरेक्टर ट्रस्टियों में से भी हो सकता है और उसे भी पूर्ण समय ट्रस्ट के कार्य में लगाने का उचित भत्ता दिया जाये।

"मैं एक गुज़ारेदार के रूप में उत्पन्न हुआ था। जीवन-भर गुज़ारेदार रहा हूँ और मरते समय अपना कुछ भी नहीं रखता।

"इस इच्छा-पत्र को कार्यान्वित करने के लिये मैं विजयकुमार को ही नियुक्त करता हूँ।"

—नलिनीकान्त सरकार

भुवाली, १३ अगस्त सन् १९४६

इच्छा-पत्र के पढ़े जाने पर चारु उठ खड़ा हुआ और बोला, "नमाज़ हो चुकी, अब मुसल्ला उठाइये।" इतना कह वह अपने कमरे की ओर चल दिया।

सब लोग विस्मय में उसका मुख देखते रह गये। चारुदेव की सास गौरी भी वहाँ बैठी थी। उसने चारुदेव की निराशा की सफाई दे दी। उसने कहा, "चारु बेटा यह आशंका कर रहा है कि मेरी सम्पत्ति स्वराज्य सरकार पूर्णतः ज़ब्त कर लेगी और उसका उसे तथा उसके बच्चों को एक पाई भी मिलने वाला नहीं है। यह भय उसके मन में सन् १९३६ से समाया हुआ है, जब लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था और उसने अध्यक्षीय भाषण सुना था। तबसे ही उसकी प्रवृत्ति कुछ ऐसी हो गयी है कि वह जिस-किस प्रकार से भी हो, सब धन को सोने के रूप में एकत्रित कर रहा है। चोरी, डाका और जिस-किस प्रकार भी हो, वह धन-संचय कर रहा है।

"वह बाबा की मृत्यु पर आया था और यह आशा कर रहा था कि बाबा अपनी सम्पत्ति में से कुछ-न-कुछ उसके लिये छोड़ जायेंगे। बाबा के इच्छा-पत्र में ऐसी कोई बात न देख वह निराशा अनुभव करता हुआ चल दिया है।"

सब मुस्कराते हुए चुप रहे।

: ७ :

सोम ने सन् १९४६ में जब मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी का 'डायरेक्ट ऐक्शन' सम्बन्धी प्रस्ताव पढ़ा तो वह अपने मन में इस 'ऐक्शन' के विषय में

—४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करने लगा। वह इस 'ऐक्शन' को दिल्ली के अरैबिक कालेज में हुए मुसलमान नेताओं के भाषणों की पृष्ठभूमि पर समझने लगा था।

उसे विचार करते हुए अपने बाबा की बात समझ में आने लगी। एक दिन उसने मुवाली में बाबा को अपने बृहत् ग्रन्थ का उपसंहार लिखते हुए देखा तो उसने पूछा था, "बाबा! यह उपसंहार है क्या?"

"हाँ;" बाबा का कहना था, "पुस्तक समाप्त हो गयी है और उसका निष्कर्ष इसमें लिख रहा हूँ।"

"तो बाबा! यह बता दीजिये तो पूर्ण पुस्तक पढ़ने का कष्ट नहीं करना पड़ेगा।"

"हाँ; तुम क्षत्रिय स्वभाव वाले लोगों के लिये ही तो यह निष्कर्ष लिख रहा हूँ। तुम लोग कर्म में इतने लीन रहते हो कि अपने कर्म का उद्देश्य भी भूल जाते हो। यह तुम्हारा दोष नहीं है। तुम जैसे लोगों की यह प्रवृत्ति में है।

"इसी कारण इस निष्कर्ष में पूर्ण पुस्तक का निचोड़ लिख रहा हूँ। वह इस प्रकार है—

१. दूसरे लोग क्या हैं? इसके विषय में अपने अनुमान लगाने से पूर्व उनके विचारों को समझना चाहिये।

२. अपने विषय में तो कल्पना की जा सकती है, परन्तु कल्पना कभी सत्य सिद्ध नहीं होती, जब तक कल्पना किसी सत्य आधार पर आधारित न हो। सत्य आधार को ढूंढने के लिये मनुष्यों और जातियों के इतिहास के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इतिहास ही वह आधार उपस्थित करता है, जिस पर भविष्य में व्यवहार की कल्पना की जा सकती है।

३. वर्त्तमान शताब्दी में मानव-मन की प्रवृत्ति का ज्ञान प्राप्त करने के लिये एक गुर का विचार किया गया है। उसे संस्कृति कहा है। संस्कृति उस विचार का नाम है, जिससे समाज के भावी घटकों पर संस्कार निर्माण किये जा सकते हैं। संस्कार ही मानवों के कर्मों का स्रोत होते हैं। अतः व्यक्तियों अथवा समष्टियों के व्यवहार का अनुमान संस्कृतियों से लगाया जा सकता है। जैसी संस्कृति होती है, वैसे ही संस्कार उत्पन्न होते हैं और फिर वैसे ही कर्म सम्पन्न हो सकते हैं।

४. संस्कृति का निवास-स्थान भाषा, साहित्य और कला-कृतियाँ हैं। परन्तु ये निवास-स्थान हैं, ये संस्कृति स्वयं में नहीं। संस्कृति इनमें निवास करने वाली विचार-शैली है। इस पर भी साहित्य, कला इत्यादि अपने में निवास करने वाली संस्कृति को उज्ज्वल, देदीप्यमान और कल्याणकारी भी बना सकती हैं और ये संस्कृति को घोर अन्धकारमय, दुःखद् और विनाशकारी भी बना सकती हैं। इस कारण कुछ लोग साहित्य-कला को ही संस्कृति मान लेते हैं। परन्तु ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है नहीं। कला तथा साहित्य शरीर हैं और संस्कृति उसमें निवास करने वाली आत्मा है।

५. धर्म, जैसे मानव-जीवन के निर्माण में ज्योति-स्वरूप होता है, वैसे ही सांस्कृतिक विचार-शैली में भी उसके निर्माण में मुख्य भाग लेता है।

६. धर्म और अधर्म कर्म के दो पक्ष हैं। कर्म जब किसी स्थिर विचार-शैली के अधीन होने लगते हैं तो वे संस्कृति-जन्य होते हैं और अपने अनुरूप ही मन पर संस्कार निर्माण करने लगते हैं। संस्कृति के तद्रूप ही संस्कार बनते हैं और संस्कार पुनः मनुष्य को कर्म करने पर विवश करते हैं। ये पुनः जब किसी विचार-शैली के अनुरूप होते हैं तो संस्कृति की पुष्टि अथवा उसकी हानि करते हैं।

७. विचार-शैलियाँ दो ही हैं। वैसे इन दो ध्रुव-रूप शैलियों के भीतर, इनको विभिन्न अनुपातों में रखती हुई शैलियाँ अनेक हैं। परन्तु इनके मुख्य रूप दो ही हैं। दैवी विचार-शैली और दूसरी है आसुरी विचार-शैली। इनको प्रवृत्तियाँ भी कहते हैं। गीता में इनको सम्पदा के नाम से स्मरण किया है।

८. जब विचार-शैली स्वार्थ और स्व-सुख, स्व-प्रभुता और स्व-सुविधा को आधार बना ले तो वह आसुरी कहलाती है और जब इसका आधार यज्ञ-रूप हो जाये तो यह दैवी कहलाती है। अभिप्राय यह कि संस्कृतियाँ भी दो प्रकार की हैं। दैवी तथा आसुरी।

९. वैदिक, आर्य अर्थात् हिन्दू-संस्कृति मूल-रूप में दैवी है। हिन्दू-समाज में और इसके बाहर भी इन दो दैवी तथा आसुरी संस्कृतियों के बीच में दोनों की मिश्रित और दोनों को भिन्न-भिन्न अनुपातों में रखते हुए अनेक संस्कृतियाँ दिखायी देती हैं, परन्तु जब विचार-शैलियों का विश्लेषण किया जाये तो दो प्रकार की ही विचार-शैलियाँ अर्थात् संस्कृतियाँ दिखायी देंगी और अन्य इन दो का भिन्न-भिन्न अनुपातों में मिश्रण ही हैं।

१०. अतः मानव-समाज को समझ लेना चाहिये कि दैवी विचार-शैली अर्थात् संस्कृति क्या है और उसके समीप-समीप की सब शैलियों को एकत्रित हो विरोध में आसुरी संस्कृति तथा उसके अन्तर्गत शैलियों को मानव-समाज में से निःशेष करना है और करते रहना है। इसी में अधिक-से-अधिक मानवों का कल्याण सम्भव है।''

सोम ने जब 'डायरेक्ट ऐक्शन' की योजना पढ़ी तो उसे बाबा की पुस्तक का उपसंहार स्मरण हो आया और उपसंहार की अन्तिम बात उसके मन में चक्कर काटने लगी।

वह अपने स्वभाव को कर्म-प्रधान मानता था। अतः एक दिन वह घर में किसी को भी बताये बिना कलकत्ता जा पहुँचा। यह जुलाई का अन्त था। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाढ़ी बढ़ा ली और मूछों को बीच में से कटवा कर शर्ट रूप दे दिया। इसके बाद वह मुसलमानों में घूम-घूम कर उनकी 'डायरेक्ट ऐक्शन' की योजना की टोह लेने लगा।

उसने अविनाश बाबू को भी अपनी योजना बताई और दोनों अपने पुराने साथी, जिन्होंने सन् १९४२ में उनके साथ काम किया था, ढूँढने लगे। इस प्रकार इनका साठ-सत्तर लोगों का एक गुट बन गया।

सोलह अगस्त को प्रातः ये सब लोग एक मकान में एकत्रित हुए और उसमें सोम ने अपनी योजना बतायी। उसने कहा, "कल सायंकाल की मुसलमानों की सार्वजनिक सभा में यह बार-बार कहा गया है कि उन्होंने आज का दिन नमाज़ पढ़ने और खुदा से, इस्लाम के विरोधियों की साज़िशों को मलियामेट करने के लिये ताकत और इमदाद के लिये दुआ करने में व्यतीत करना है।

"मुझे सन्देह है कि ये बातें दिखावे की हैं और वास्तव में यह हम लोगों को धोखा देने के लिये की गयी हैं। आज एक विशाल हत्या-काण्ड का आयोजन आरम्भ होने वाला है।

"इस कारण मेरा यह सुझाव है कि हमें तब तक अपनी योजना को चालू नहीं करना चाहिये, जब तक इनके हाथ निर्दोष हिन्दुओं के रक्त से लाल नहीं हो जाते।

"मेरा अनुमान है कि हम आज रात से अपना कार्य आरम्भ करने पर विवश हो जायेंगे और साथ ही उस समय तक ये मुसलमानों के नेता जनता के सम्मुख नंगे हो जायेंगे।"

अतः रात के समय कलकता के पाँच भागों में मुकाबिले का कार्य करने की योजना समझा दी गयी।

वैसा ही हुआ, जैसा कि सोम का विचार था। इन लोगों ने सोलह तथा सत्रह अगस्त के मध्य की रात्रि के दो बजे कार्य आरम्भ किया और सत्रह को प्रातःकाल कलकत्ता की सड़कों पर हिन्दू और मुसलमान ईंटों, पत्थरों और लाठियों से लड़ते दिखायी देने लगे। विरला बन्दूकें भी चलती सुनायी देने लगीं।

भवानीपुर पंजाबियों का केन्द्र था। वहाँ हिन्दुओं को सबसे अधिक सफलता मिली और पाँच-दस मनचले युवकों के मुकाबिले में निकल आने पर सैकड़ों अन्य उनके साथ हो गये।

सुरहवर्दी साहब लाल बाज़ार पुलिस थाने में बैठे सोलह अगस्त को पीड़ित हिन्दुओं के टेलीफोन सुनते हुए कहते रहे थे कि जाओ गांधी से सहायता माँगो। परन्तु सत्रह अगस्त को सुबह से मुसलमानी मोहल्लों से भी समाचार आने लगे कि मुसलमानों की रक्षा के लिये पुलिस भेजो। पहले तो वे इन समाचारों को चतुर बंगाली हिन्दुओं द्वारा पुलिस बुलाने की चाल मात्र समझते रहे, परन्तु उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन मध्याह्न के समय तो हावड़ा-पुल और सियालदा की सड़कों पर से समाचार आने लगे कि मुसलमान अपनी बीवी, बाल-बच्चों के साथ कलकत्ता छोड़-छोड़ भाग रहे हैं। यह बात बंगाल के मुख्य-मन्त्री महोदय को अनहोनी प्रतीत हो रही थी। उन्हें अभी भी इसमें किसी प्रकार की धोखा-धड़ी प्रतीत हो रही थी।

अगले दिन प्रातः मुस्लिम लीग के विश्वस्त रज़ाकार भी वही समाचार लाने लगे, जो वे पिछली रात टेलीफोन से सुन रहे थे। इस पर उन्होंने डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी, बाबू शरत्‌चन्द्र बोस और डाक्टर विधानचन्द्र राय तथा अन्य हिन्दू नेताओं को टेलीफोन कर गवर्नर की कोठी पर बुलाया और उनसे नगर में शान्ति स्थापित करने का आग्रह करने लगे।

अठारह तारीख मध्याह्न से शान्ति का प्रयास आरम्भ हुआ और पूर्ण शान्ति बीस तारीख तक स्थापित हो सकी।

अब उन हिन्दुओं की पकड़-धकड़ आरम्भ होने लगी, जिन्होंने मुस्लिम लीग के 'डायरेक्ट ऐक्शन' का विरोध किया था।

सोम ने समझा कि उसका काम कलकत्ता में समाप्त हो गया है और अपनी दाढ़ी तथा शरै-मूछों के आश्रय वह कलकत्ता से बर्दवान जा पहुँचा। वहाँ से वह बिहार में, बिहार शरीफ चला गया।

एक दिन वहाँ भी फसाद हो गया। यहाँ भी झगड़ा मुसलमानों ने ही आरम्भ किया था, परन्तु देहातों में हिन्दुओं की संख्या अधिक होने के कारण मुसलमानों की अपनी ही पिटाई हो गयी।

पिछले सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष के गांधी जी के अहिंसात्मक प्रचार से मुसलमानों में यह विचार बैठ गया था कि कुछ थोड़े से भी मुसलमान हिन्दुओं को ऐसे हाँक कर ले जा सकते हैं, जैसे कि गडरिया भेड़ों, गउओं को हाँक कर ले जाता है। यह धारणा बिहार में असत्य सिद्ध हुई। कलकत्ता के हत्या-काण्ड और उसकी प्रतिक्रिया बिहार के घर-घर में चर्चा का विषय बन गया था। इसको वहाँ पर घर-घर की चर्चा का विषय बनाने का श्रेय सोम और उसके सन् १९४० के छापामार जत्थों को था।

पंडित नेहरू के बिहार आगमन पर पुलिस और सेना हिन्दुओं के विरोध में सक्रिय हो उठी। जहाँ भी दस-बारह हिन्दू एकत्र दिखाई देते थे, पुलिस उन पर लाठी चलाती थी और अधिक भीड़ हुई तो गोली-वर्षा करने लगती थी।

ऐसी ही एक हिन्दू जाटों की भीड़ जब मुसलमानों का एक गाँव उनसे खाली करा रही थी, उसका मुकाबला पुलिस से हो गया। पुलिस ने दनादन गोली चलानी शुरू कर दी।

इस भीड़ में सोम भी था। पुलिस की एक गोली उसकी टाँग में लगी तो वह गिर पड़ा। उसके कुछ साथियों ने उसे गिरते देखा तो उसे उठा, पड़ोस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव में ले गये। गोली तो जाँघ को पार कर निकल गयी थी, परन्तु घाव और रक्त-स्राव के कारण वह अचेत हो गया था।

गाँव में एक वैद्य ने पट्टी बाँधी और उसको औषध से सचेत किया तो सोम को पता चला कि पण्डित जवाहरलाल मुसलमानों के गाँव में घूम-घूम कर उनको सुरक्षा का आश्वासन दे रहे हैं।

जिस ज़मींदार के घर में वह पड़ा था, उसका नाम बलवीरसिंह था। पुलिस द्वारा मुसलमानों के गाँवों से हिन्दू भीड़ को भगा देने के उपरान्त पण्डित जी की ओर से हिन्दुओं की भर्त्सना और मुसलमानों की रक्षा के आश्वासन का ऐलान छपवा कर बहु-संख्या में बाँटा गया।

सोम को घायल हुए तीन दिन हो चुके थे। वैद्य पट्टी करने आया हुआ था कि बलवीरसिंह हाथ में सरकारी विज्ञप्ति की एक प्रति लिये हुए वहाँ आ पहुँचा।

सोम की अवस्था इस समय सुधर रही थी। वह भय से बाहर समझा जा रहा था। इस पर भी वह अभी बहुत दुर्बल था और टाँग पर खड़ा हो ही नहीं सकता था।

जब वैद्य सोमदेव को औषधि दे चुका तो बलवीरसिंह वैद्य को एक ओर ले गया और पृथक् में उसे कुछ समझा कर विदा कर आया और फिर सोम की खाट के पास आ खड़ा हुआ।

सोम बलवीरसिंह के मुख पर घबराहट तथा चिन्ता अंकित देख रहा था। उसने ज़मींदार को वैद्य जी से दूर जा, कुछ गम्भीर भाव में कहते भी देखा था। इस कारण जब वह सोम की खाट के समीप आया तो सोम ने पूछ लिया, "ठाकुर साहब! क्या बात है?"

"इस सब क्षेत्र में कर्फ्यू लग गया है और बिहार सरकार की स्पेशल पुलिस इस गाँव में आ बैठी है। पुलिस हिन्दुओं के घरों की तलाशी ले रही है और जिस किसी के घर से लूट-मार के चिह्न मिलेंगे, उसे पकड़ लेगी।"

सोम बलवीरसिंह की परेशानी समझ गया। उसने कहा, "बाबू साहब! मुझे आप स्वयं ही पुलिस के हवाले कर दें।"

"क्यों?"

"जिससे कि आपको किसी विद्रोही को शरण देने के आरोप में पकड़ा न जा सके।"

"परन्तु सरदार!" सोम इसी नाम से वहाँ विख्यात था, "तुम्हें बहुत कष्ट होगा।"

"मैं तो कफ़न सिर पर उठा कर घूम रहा हूँ। इस कारण आप मेरी चिन्ता न करें। आप अपनी मान-प्रतिष्ठा और कष्ट को बचाने के लिये मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस के हवाले करते हुए यह बयान दे दें कि आपने मुझे घर में रखा ही इस कारण था कि शान्ति स्थापित होने पर मुझे पुलिस के हवाले कर देंगे।"

"नहीं सरदार ! तुम्हारी अवस्था ऐसी नहीं कि तुम्हें हवालात में भेज दिया जाये और बबुआइन साहिबा कहती हैं कि पुलिस का सुपरिन्टैंडैण्ट मुसलमान है। वह तुमको पकड़ते ही गोली मरवा कर समाप्त करा देगा।"

"माता जी से मेरी नमस्कार कहियेगा और यह कह दीजियेगा कि गोली से मारे जाने पर तो मैं सीधा स्वर्ग-धाम में स्थान पा जाऊँगा। सुना है कि वीरों का वहाँ बहुत मान होता है।"

बाबू बलवीरसिंह हँस पड़ा और बोला, "यह बात नहीं। सरदार, अभी तुम्हारे लिये स्वर्ग का द्वार नहीं खुल सकता। मैं तो यह कहने आया हूँ कि मैंने पुलिस इन्स्पैक्टर को यह कह दिया है कि मैंने एक मुसलमान विद्रोही को घायल हो जाने पर अपने घर में पनाह दी हुई है। वह अभी तुम्हें देखने आयेगा। तुम्हारा नाम मैंने अब्दुल करीम बताया है। वह तुम्हारा बयान भी लेगा। तुम उचित बयान दे देना और शेष मैं समझ लूंगा। मैं यत्न कर रहा हूँ कि तुम्हें यहाँ से किसी सुरक्षित स्थान पर पुलिस की ही वैन में पहुंचा दूं।"

"परन्तु बाबू साहब ! भेद खुल गया तो आपको बहुत कष्ट होगा।"

"तुम अपने को मुसलमान बताना और फिर मैं प्रबन्ध कर दूंगा।"

सोम चुप कर गया और अपने वहाँ आने की कहानी बनाने लगा।

पुलिस-इन्स्पैक्टर के आने से पूर्व ही सोम ने अपनी कहानी की कल्पना कर ली थी।

मध्याह्नोत्तर चार बजे के लगभग बाबू साहब इन्स्पैक्टर को लेकर सोम को देखने आये। सोम की खाट के समीप दो कुर्सियाँ और एक तिपाई लगा दी गयी और इन्स्पैक्टर सोम के बयान लिखने लगा।

सोम ने बयान लिखाने से पूर्व इन्स्पैक्टर को कहा, "बराय मेहरबानी आप अपने कॉन्स्टेबलों को ज़रा दूर कर दीजिये। मैं आपसे पहले प्राईवेट में बात करना चाहता हूँ।"

"बाबू साहब से भी ?"

"नहीं; इनको मैंने अपनी सब बात बता दी है और मेरी बात सुन कर भी इन्होंने मेरी जान बचायी है।"

जब पुलिस-कान्स्टेबल कुछ दूर चले गये तो सोम ने कहा, "मेरा नाम अब्दुल करीम है। मैं अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का ग्रैजुएट हूँ। वहाँ से मुझे यहाँ भेजा गया था कि मैं यहाँ बलवा करवा दूं। मुश्किल यह हुई कि हम समझते थे कि गांधीवादी हिन्दू मुसलमानों को देखते ही भाग खड़े होंगे। ऐसा हुआ नहीं। इस कारण हम इस गाँव में घिर गये थे। अभी हम हिन्दुओं से लड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झगड़ कर उनके घेरे से निकलने की कोशिश कर रहे थे कि पुलिस आ गयी और उसने आते ही गोली चला दी। मेरी टाँग में गोली लगी और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। वहाँ से हिन्दू ही मुझे उठा कर यहाँ ले आये। उनका खयाल था कि मैं मर जाऊँगा और एक मोमिन की लाश को फूंक कर मुझे दोज़ख की आग में झुलसने के लिए जहन्नुम में भेज देंगे।

"यहाँ बाबू साहब और फिर गाँव की पुलिस ने मेरी हिफाज़त की है। एक हकीम ने मरहम-पट्टी की है और मैं समझता हूँ कि मैं बच गया हूँ।"

इतना बता कर सोम ने अपना बयान लिखा दिया—

"मैं अब्दुल करीम अलीगढ़ का रहने वाला हूँ। यहाँ अपनी नानी से मिलने आया हुआ था कि यहाँ बलवा हो गया और मेरे सब सम्बन्धी मारे गये हैं। उनका मकान फूंक डाला गया है। मैं हिन्दुओं में फँस गया था कि पुलिस आ गयी और उसने आते ही गोली चला दी। गोली मेरी टाँग में लगी और मैं ज़ख्मी हो गया।

"हिन्दू मुझे इस गाँव में उठा लाये और यहाँ बाबू साहब ने मुझे बचा लिया है।"

इन्स्पैक्टर ने बाबू साहब के एक-दो नौकरों के भी बयान लिये। बाबू साहब ने उन्हें पहले से सिखा रखा था।

रात थानेदार ने पुलिस वैन दी और सोम को गया पहुँचा दिया गया। सोम वहाँ से एक कार में बनारस चला गया।

दो मास लगे सोम को चलने-फिरने योग्य होने में। अब नवम्बर, सन् १९४६ आ गया था।

: ८ :

सोम दिल्ली में था, जब मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि अन्तरिम सरकार में लिये गये। जिस समय पण्डित नेहरू केन्द्रीय असैम्बली की मीटिंग में उपस्थित होने जा रहे थे, पण्डित जी को मार डालने के लिये उन पर छुरे से आक्रमण किया गया। इससे पहले सर शफात अहमद खान पर आक्रमण हो चुका था। उस समय आक्रमण करने वाला पकड़ा नहीं गया था। इस बार भी आक्रमण करने वाला भाग गया। इस आक्रमण को दिल्ली के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने विफल किया था। सोम असैम्बली चैम्बर के बाहर मैदान में खड़ा इस पूर्ण घटना को देख रहा था। अभी वह अपनी लम्बी बीमारी से उठा था और दुर्बलता अनुभव करता था, अन्यथा मुसलमानों के हिन्दुओं के विरुद्ध लड़ाई की खुली चुनौती को देख और कांग्रेसी हिन्दुओं को इस विषय में उदासीन देख, उसका रक्त उबल उठा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असैम्बली चैम्बर के बाहर खुले मैदान के एक कोने में एक ऊँचे स्थान पर खड़ा वह पूर्ण घटना-चक्र को देख रहा था। जब आक्रमण विफल गया और पण्डित जी चैम्बर-भवन में चले गये तो सोम की दृष्टि एक व्यक्ति पर पड़ी जो वहाँ एकत्रित हिन्दू युवकों को कह रहा था, "यहाँ से चल दो। पुलिस आने वाली है।"

उसके समीप पहुँच सोम ने पूछ लिया, "और अब पुलिस कहाँ है ?"

"पार्लियामैण्ट स्ट्रीट के थाने में ट्रकों में तैयार बैठी है।"

"किसलिये ?" एक अन्य युवक ने पूछ लिया।

वही युवक जो वहाँ अधिकार-पूर्वक बातें करता प्रतीत होता था, एक अन्य को बोला, "गोपाल ! भागो, यहाँ रहना ठीक नहीं।"

सोम को विस्मय-जनक प्रसन्नता हुई, जब उसने देखा कि उस अधिकारी की बात कानों-कान एक मिनट में पूर्ण मैदान में फैल गयी और तीन-चार मिनट में ही पूर्ण मैदान खाली हो गया।

सोम ने उस आज्ञा देने वाले अधिकारी के साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, "मैं आपका नाम जान सकता हूँ क्या ?"

उस व्यक्ति ने मुस्कराते हुए कहा, "मुखबरी करोगे क्या ?"

"आपने कुछ मुखबरी करने योग्य किया नहीं। किस बात की मुखबरी करूँगा ?"

"तो अपना काम देखिये।"

"वही तो देख रहा हूँ, भगवन् ! आज लिखे जाने वाले इतिहास-निर्माण में मैं योगदान दे रहा हूँ।"

"तब तो आप भी महापुरुष हैं ?" साथ चल रहे युवक ने मुस्कराते हुए कहा।

"देख रहा हूँ कि आप मुझसे बहुत अधिक हैं।"

उसी युवक के साथ चल रहे एक अन्य युवक ने सोम को कहा, "आप मेरे साथ आइये। मैं आपको सब बता दूँगा।"

दूर पार्लियामैण्ट स्ट्रीट पर पाँच-छः ट्रकों में पुलिस के जवान हाथों में लाठियाँ लिये आ रहे थे। ये तीनों सड़क के किनारे खड़े हो गये।

ट्रक निकल गये तो अधिकारी दिखायी देने वाला व्यक्ति सैक्रेटेरियेट की ओर घूम गया। असैम्बली चैम्बर की दीवार के बाहर से सैक्रेटेरियेट के नॉर्थ ब्लाक की ओर सड़क जाती थी। सोम के साथ दूसरा युवक खड़ा था। वह सोम को कनाट-प्लेस की ओर चलने के लिये कहने लगा, "आइये, हम इधर चलते हैं।"

सोम उसके साथ चल पड़ा। युवक ने बात को बदलने के लिये पूछ लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका शुभ नाम क्या है ?"

"सोम, उर्फ अब्दुल करीम।"

वह युवक एकाएक खड़ा हो, सोम का मुख देखने लगा, "तुम कोई चार सौ बीस प्रतीत होते हो।"

सोम मुस्करा कर युवक से बोला, "चलते रहना चाहिये। आते-जाते लोग समझेंगे कि हम हिन्दू-मुसलमान लड़ने लगे हैं। यह ठीक नहीं होगा। नगर-भर में बलवा आरम्भ हो जायेगा।"

वह युवक वहाँ की तनाव की स्थिति का ध्यान कर चल पड़ा। चलते हुए सोम ने कहा, "मैं हिन्दू हूँ। मुसलमान बना हुआ हूँ। बिहार के बलवे में घायल हो दो महीने बनारस में मुसलमान बन, पड़ा रहा हूँ। असली नाम सोमदेव है। नकली अब्दुल करीम है।"

"अपना कोई ज़ामिन बताओ तो बात बनेगी अन्यथा तुम्हारा जीवन भय से खाली नहीं।"

"देखो, युवक! डरने वाले इस प्रकार बातें नहीं करते। मैं दिल्ली में भोलाभाई देसाई को जानता हूँ। श्री एन० बी० गाडगिल को जानता हूँ। बाबू राजेन्द्रप्रसाद को भी जानता हूँ और ये सब मुझे भली प्रकार पहचानते हैं।"

"तो ठीक है। यहाँ पुलिस थाने के बाहर सायं पाँच बजे मिलना। मैं सरदार पटेल से मिलने जा रहा हूँ। वहाँ आपका परिचय हो सकेगा।"

इस समय वे पुलिस थाने के आगे से गुज़र रहे थे। युवक ने थाने के सामने एक पेड़ की ओर अँगुली कर कहा, "ठीक पाँच बजे मैं यहाँ इस पेड़ के नीचे खड़ा मिलूंगा।"

सोम समझा था कि ये लोग भी कुछ वैसा ही काम कर रहे हैं जैसा कि वह स्वयं कर रहा है। अतः उसने उस युवक को वहीं छोड़ा और कनाट प्लेस की ओर चल दिया।

सायं पाँच बजे वह पार्लियामैण्ट स्ट्रीट के थाने के बाहर जा पहुँचा। उसे आशा थी कि वह युवक बहाना बना, उसको टाल गया है, परन्तु इस पर भी जो कुछ उसने कौंसिल चैम्बर के बाहर मध्याह्न के समय देखा था, उससे वह अति प्रभावित हुआ था।

यद्यपि समाचार था कि चौदह हिन्दू युवक बलवा करते कौंसिल चैम्बर के बाहर पकड़े गये हैं, इस पर भी सोम को विश्वास था कि उन पकड़े हुए में इस संगठन का कोई नहीं हो सकता। उनको तो वह दो मिनट में वहाँ से तितर-बितर हो गया देख चुका था।

इन युवकों की इस तत्परता को देख वह समझ रहा था कि कोई संनियन्त्रित दल है। इस कारण ही वह आशा कर रहा था कि मध्याह्न के समय उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक ने उसे टाल दिया है। परन्तु उसको अत्यन्त विस्मय हुआ, जब उसने देखा कि वही युवक निश्चित स्थान पर बताये हुए वृक्ष के नीचे खड़ा है।

सोम उस युवक के सामने जा खड़ा हुआ तो युवक ने कहा, "मैं आपका ठीक-ठीक परिचय प्राप्त किये बिना आपको साथ नहीं ले जा सकता।"

"तो यह भी उस अधिकारी की आज्ञा है ?"

युवक ने कह दिया, "जैसा भी आप समझें।"

"तो ऐसा करो। तुम मुझे साथ मत ले चलो; मैं तुम्हें साथ ले चलता हूँ। मेरे साथ चलने से तुम्हें कोई रोकेगा नहीं।"

"तो ले चलो।" युवक ने मुस्कराते हुए कहा।

सोम जबसे दिल्ली में आया था, सरदार और देसाई से सम्पर्क बनाये हुए था। वह इन दोनों नेताओं को कलकत्ता और बिहार के अपने अनुभव बता चुका था।

भोलाभाई बीमार होने के कारण राजनीति से पृथक् हो रहे थे और उनके विषय में यह कहा जा रहा था कि नेहरू परिपाटी के कांग्रेसी उनको अछूत समझने लगे हैं। उसकी प्रतिष्ठा अभी सरदार और उनके विचार के लोगों से बनी हुई थी। प्राय: सायंकाल सरदार के यहाँ एक विचार के लोग इकट्ठे हो जाया करते थे और सरदार की लड़की मणि बहन इनके लिये चाय-पानी का प्रबन्ध कर दिया करती थी।

सोमदेव कभी-कभी इसी प्रकार के समारोह में आया करता था और यदि सरदार को अथवा किसी अन्य को उससे कोई बात प्राईवेट में करनी होती तो सोम उनसे पृथक् कमरे में मिल लिया करता था।

आज सोम के मन में विचार आया कि इस युवक को ले जाकर सरदार से इसके साथियों की कारगुजारी सुनाए। इसी कारण उसने कहा था कि वह उसे सरदार की कोठी पर अपने साथ ले चलेगा।

दोनों औरंगज़ेब रोड पर सरदार की कोठी पर जा पहुँचे।

सरदार ने सोम को एक युवक के साथ कोठी में प्रवेश करते हुए ड्रायंग-रूम में से देख लिया था। अत: चपरासी को भेज, इन दोनों को उन्होंने अपने 'स्टडी-रूम' में बुला लिया।

सोम को विस्मय हुआ, जब उसने उस अधिकारी को वहाँ पहले ही बैठे देखा, जिसको वह कौंसिल चैम्बर के मैदान में हिन्दू-युवकों को तितर-बितर हो जाने के लिये कह रहा था। सोम के मुख पर विस्मय देख, उस अधिकारी ने पूछा, "तो आप यहाँ भी आ पहुँचे हैं ?"

"जी; मुझे नहीं मालूम था कि आपकी यहाँ भी पहुँच है।"

अब साथ आये उस अधिकारी के सहायक युवक ने कहा, "यह मुझे पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ ले आया है।"

"क्यों ?" अधिकारी ने पूछा।

युवक उत्तर देने ही लगा था कि सरदार पटेल आ गये। सब उनके स्वागत में उठ खड़े हुए। सरदार पटेल बैठे और कहने लगे, "देखिये, मिस्टर राय ! मैं आपको आपके काम में एक सहायक दे रहा हूँ। यह मेरा विश्वस्त व्यक्ति है और आपको इनसे सम्पर्क रखने से मेरे यहाँ अधिक आने-जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

"यह हैं सोमदेव। कभी अब्दुल करीम भी बन जाया करते हैं। मैं समझता हूँ कि आप इनके साथ बातचीत कर लें और आपकी सब युक्तियुक्त वार्त्ता में सहायता होती रहेगी।"

इतना कह सरदार पुनः बाहर ड्रायंग-रूम में चले गये और मिस्टर राय सोम से पूछने लगा, "आपने हमें बताया नहीं कि आप इनके साथ सम्बन्ध रखते हैं, अन्यथा आपसे वह तटस्थता का बर्त्ताव न किया जाता जो मध्याह्न के समय हो गया था।"

सोम ने पूछा, "यदि मुझे ज्ञात होता कि आपका सूत्र इस स्थान से बँधा है तो मैं आपसे वह प्रश्न पूछता ही नहीं, जो उस समय पूछा था। खैर, अब बताइये ! आप किस विषय में सरदार से मिलने आये थे ?"

"यह हम यहाँ नहीं बतायेंगे। यदि आपको ही बताना है और आपने ही सरदार पटेल से हमारी बात कहनी है तो फिर यहाँ बैठकर बात करने की क्या आवश्यकता है ? आप हमारे साथ हमारे कार्यालय में आइये, हम बतायेंगे।"

इस नये परिचय का परिणाम यह हुआ कि सोम दो दिन बाद पटियाला में पहुँच गया और वहाँ वही काम करने लगा, जो वह बिहार में कर रहा था।

नवम्बर, सन् १९४६ से अक्टूबर, १९४७ तक पंजाब में रावी के इस पार के क्षेत्र को मुसलमानों से रिक्त करने की योजना चलती रही। उसकी इस योजना में सबसे बड़ी बाधा लाहौर के विषय में हुई।

लाहौर रावी के पूर्व-दक्षिणी किनारे पर था और हिन्दुओं की योजनानुसार रावी से दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र हिन्दुस्तान में आना चाहिये था। परन्तु विधाता का यह विधान था कि देश-विभाजन में अंग्रेज ही भारत के भाग्य का निर्णय करने वाले बने हुए थे।

लाहौर पाकिस्तान को दिया गया। भूल से गुरुदासपुर का क्षेत्र भारत को दे दिया गया। उस समय यही समझा गया था कि सीमा निश्चय करने वाले अधिकारी श्री रैड क्लिफ लाहौर के बदले में गुरदासपुर का एक बड़ा भाग हिन्दुस्तान को दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह समझना भूल थी। अंग्रेज़ नौकरशाही का यह यत्न रहा था कि सीमा-रेखा ऐसी खींची जाये, जिससे कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान अनन्त काल तक लड़ते रहें।

लाहौर और रावी पार से आये लोगों को अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना, में बसाने के लिये यहाँ स्थान खाली कराना आवश्यक था और इसी के लिये सरदार ने सोम तथा मिस्टर राय को पंजाब में भेजा था और ये बलपूर्वक स्थान खाली करा रहे थे।

लगभग सन् १९४७ अक्टूबर तक यह कार्य समाप्त हो गया। पटियाला इत्यादि को प्रमुख सिक्ख-राज्य बनाने के लिये केवल सिक्ख विस्थापितों को ही वहाँ बसने दिया जाने लगा। इससे वहाँ के पुनर्वास-अधिकारी का सोम से झगड़ा हो गया।

कार्यालय में सोम सरदार के प्रतिनिधि के रूप में अधिकारी की सहायता कर रहा था। ज़िला झंग के कुछ हिन्दू लुटे-पिटे पटियाला में अपने को सुरक्षित समझ, वहाँ आ गये थे। जब विस्थापितों की सूचियाँ बनने लगीं तो लोग पुनर्वास-कार्यालय में अपना नाम दर्ज कराने आने लगे।

रियासत की ओर से एक सरदार भगवानसिंह रजिस्ट्रेशन के लिये नियुक्त थे। सोम का स्वभाव था कि वह किसी विशेष अवसर पर ही हस्तक्षेप करता था, अन्यथा चुपचाप अपना काम करता रहता था।

झंग तथा झेलम के रहने वाले जो जंगल में डेरा डाले पड़े थे, नाम रजिस्टर्ड कराने आये। सोमदेव सब आने वालों को अपने सामने बैठा, उनके फॉर्म भर दिया करता था। जब से 'रजिस्ट्रेशन' आरम्भ हुआ था, वह सहस्रों के फॉर्म भर कर दे चुका था।

अक्टूबर मास में कुछ दिनों से उसे सन्देह होने लगा था कि पुनर्वास-अधिकारी कुछ लोगों को पटियाला में रजिस्टर्ड करने से इन्कार करने लगा है। यह बात एक दिन स्पष्ट हो गयी।

झंग और झेलम के विस्थापितों का एक झुण्ड आया था। उसमें सिक्ख और हिन्दू दोनों थे। सोमदेव ने सबके फॉर्म भर दिये। वे फार्मों पर हस्ताक्षर कर भीतर पुनर्वास-अधिकारी के पास गये। भीतर से एक-एक, दो-दो कर लोग निराश लौटने लगे। एक व्यक्ति सोम के सामने खड़ा हो बोला, "हुज़ूर ! हमारी रजिस्ट्री नहीं की गयी।"

"क्यों ? क्या गलती थी फॉर्म में ?"

"फॉर्म में तो गलती नहीं है। गलती हममें प्रतीत हुई है।"

"क्या गलती है तुममें ?

"हम अपने को हिन्दू मानते हैं। इसी कारण पाकिस्तान से निकाले गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और अब इसी कारण यहाँ से भी निकाले जा रहे हैं।"

"नहीं; ऐसा यहाँ नहीं हो सकता।"

"हुज़ूर !" उसी व्यक्ति ने कहा, "हमारे कैम्प के दस लोगों में से दो के परिवार रजिस्टर्ड किये गए हैं और शेष आठ को जालन्धर जाने के लिये कह दिया गया है।"

"यह क्यों ?"

"वे दो परिवार सिक्ख हैं और हम हिन्दू हैं।"

सोम का मुख क्रोध से लाल हो गया। वह अपनी मेज़ से उठा और उनके अस्वीकार किये फार्म ले भीतर सरदार भगवानसिंह के पास जा, कहने लगा, "सरदार साहब ! इनके फार्म तो ठीक हैं। इन्हें भी रजिस्टर्ड करने की स्वीकृति दे दीजिये।"

"ये आपके क्या लगते हैं ?"

"अपने ही देश के रहने वाले दुःखी पीड़ित व्यक्ति हैं।"

"सोम जी ! जानते हैं कि यह सिक्ख महाराजा की रियासत है ?"

"तो यह आज्ञा महाराजा बहादुर की है ?"

"यह आज्ञा मेरी है कि यहाँ केवल सिक्ख ही बसाये जायेंगे।"

"तब तो बहुत कठिन समस्या उपस्थित हो जायेगी।"

"क्या कठिनाई होगी ?"

"जालन्धर से सब सिक्खों को निकालना पड़ेगा। सरदार की सहायता से ही हमने मुसलमानों को यहाँ से विदा किया है।"

"ओह, सरदार के बच्चे ! निकल जाओ इस कार्यालय से बाहर।"

सरदार को गाली देते सुन सोम को क्रोध आ गया। उसने भगवानसिंह के मुख पर एक चपत लगा दी और कहा, "तमीज़ से बात करो।"

परन्तु पूर्व इसके कि भगवानसिंह कुछ कहे, उसके समीप बैठे क्लर्क ने अपनी कृपाण निकाल सोम पर वार कर दिया।

सोम ने तलवार निकलती देख ली थी। वह दो पग पीछे हट गया। इस पर भी उसकी बाँह पर घाव लगा। हिन्दू विस्थापितों ने क्लर्क को पकड़ लिया और छुट-छुटाव होने लगा।

सोम अपनी घायल बाँह को दूसरे हाथ से पकड़े हुए कार्यालय से भाग सीधा समीप की डिस्पैंसरी में जाकर पट्टी करवाने लगा।

पट्टी करवा कर सोम ने अपने निवास-स्थान पर जाने की आवश्यकता नहीं समझी और रेल पर सवार हो, दिल्ली जा पहुँचा।

वहाँ भी स्थिति बदल चुकी थी। सरदार पटेल कश्मीर के विषय में मन्त्री-पद से त्याग-पत्र देने का विचार प्रकट कर चुके थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सोम वहाँ पहुँचा और उसने सरदार पटेल को घटना का वृत्तान्त बताया तो सरदार पटेल मुस्करा कर बोले, "इस विषय में मैं कुछ कर नहीं सकता। मैं मन्त्री-मण्डल से पृथक् होने का विचार कर रहा हूँ।"

"सोमदेव!" सरदार पटेल ने कहा, "तुम कुछ दिन हरिद्वार चले जाओ और अपने स्वास्थ्य में सुधार करो।"

सोम सरदार पटेल की विवशता समझ नमस्ते कर दिल्ली से हरिद्वार चला गया।

: ६ :

भुवाली में इच्छा-पत्र पढ़े जाने के उपरान्त अस्थियों के प्रवाह के लिये हरिद्वार जाने का जब विचार होने लगा तो प्रभा और आनन्द भी साथ चलने के लिये तैयार हो गये। आनन्द ने कहा, "भैया! हम भी हरिद्वार चल रहे हैं।"

"हममें कौन-कौन है?"

"मैं, प्रभा और वेद।"

इस पर मीरा ने पूछ लिया, "पिता जी! मुझे साथ नहीं ले चलेंगे?"

"मैं किसी को साथ नहीं ले जा रहा और साथ में किसी भी चलने वाले को मैं मना नहीं कर रहा।"

"तो मैं भी चलूंगी।"

"और फ्रांस जाने की बात?" सरस्वती ने पूछ लिया।

"वह तो नीरा के पिता के आने पर निश्चय करूँगी।"

"उसके उत्तर आने तक तो यहाँ ठहरना चाहोगी?"

"नहीं, यहाँ चौकीदार को कह जाऊँगी कि यदि वे आयें तो उनको हरिद्वार भेज दें।"

विजय ने कहा, "तब ठीक है।"

गौरी ने कहा, "इच्छा तो मेरी भी जाने की हो रही है, परन्तु चारु और उसकी पत्नी को छोड़ कर मैं नहीं जा सकती।"

अतः अगले दिन सारा परिवार बस से काठगोदाम, वहाँ से गाड़ी में बरेली जा पहुँचा।

बरेली से चारु इत्यादि लखनऊ को चले गये और विजय, आनन्द तथा दोनों भाईयों का परिवार और मीरा हरिद्वार जा पहुँचे।

हरिद्वार में धर्मशाला में ठहर, वे गंगा-स्नान तथा अस्थि-विसर्जन के लिये ब्रह्म-कुण्ड पर पहुँचे तो सबसे पहले मीरा ने ही सोम को घाट पर बैठ, हजामत बनवाते देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम अभी तक दाढ़ी और मूंछ रखे हुए था। कलकत्ता से इतना अन्तर आ गया था कि मूछों की बनावट शर्त नहीं रही थीं।

मीरा ने सरस्वती का ध्यान, नाई के सामने सिर किये बैठे सोम की ओर खींचा तो सरस्वती ने आवाज़ दे दी, "सोम ! सोम !!"

सोम ने सिर उठा आवाज़ की ओर मुख घुमाया तो पूर्ण परिवार को वहाँ देख, उठ खड़ा हुआ।

सब लोग वहाँ ही एकत्रित हो गये। विजय ने भुवाली का समाचार बताया, "पिता जी का देहान्त हो गया है और हम अस्थियाँ प्रवाह के लिये यहाँ आये हैं।"

"ओह !"

अस्थि-प्रवाह के उपरान्त जब खाने के लिये पूरी-साग इत्यादि ले, सब धर्मशाला में पहुँचे तो भोजन करते हुए सोम ने अपनी बाँह पर के घाव और कलकत्ता, बिहार और पंजाब की सब कथा बता दी।

कथा कहते-कहते भोजन समाप्त हो चुका था और बच्चे भूमि पर ही दरियाँ बिछा, आराम करने लगे थे।

जब सोम अपनी कथा सुना चुका तो विजय ने भी कथा के उस भाग को सुना दिया, जो भुवाली में हुआ था।

सोम ने कह दिया, "अभिप्राय यह कि बाबा ने जो कुछ अपने जीवन के छियत्तर वर्ष के संघर्ष में देखा है, वह अभी भी समाप्त नहीं हुआ। पूर्व और पश्चिम की टक्कर चल रही है। अभी भी हमारी भारतीय विचार-तरंग दुर्बल है।"

"मैं समझता हूँ कि पहले से अधिक दुर्बल ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री गुरुदत्त की बहुचर्चित रचनाएं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता के पथ पर
पथिक
स्वराज्य दान
विश्वासघात
देश की हत्या
दासता के नए रूप
सदावत्सले मातृभूमे
दो लहरों की टक्कर
खण्डहर बोल रहे हैं
वाम मार्ग
युद्ध और शान्ति
जमाना कब बदलेगा
बदलते जमाने का आगाज़
बदल रहा है जमाना
और जमाना बदल गया

वीर सावरकर साहित्य

हिन्दुत्व के पंच प्राण
हिन्दुत्व
क्रान्ति के नक्षत्र
मोपला — मोपला विद्रोह कथा
गोमांतक — पुर्तगालीयों द्वारा गोमांतक (गोवा) भूमि पर जघन्य अत्याचार की कथा
प्रतिशोध — मरहटों द्वारा पानीपत पराजय के प्रतिशोध पर आधारित
अमर सेनानी सावरकर — शिवकुमार गोयल

बलराज मधोक की रचनाएं

पाकिस्तान का आदि और अंत
कश्मीर जीत में हार
कश्मीर जीत या हार
पंजाब समस्या और समाधान

www.hindisahityasadan.com
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग पुलिस स्टेशन के समीप, नई दिल्ली–05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री गुरुदत्त की इतिहास पर रचनाएं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास
इतिहास में भारतीय परम्पराएं

श्री पी एन ओक की खोजपूर्ण रचनाएं

भारत का द्वितीय संग्राम "आज़ाद हिन्द फौज की कहानी"
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है?
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताजमहल मन्दिर भवन है
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
भारत में मुस्लिम सुल्तान (2 भाग)
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (4 भाग)
कौन कहता है अकबर महान था?
हास्यास्पद अंगेजी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है
आरोग्य सौन्दर्य तथा दीर्घायु (व्यायाम व सूर्य नमस्कार)
ज्योतिष स्वयं शिक्षक - फल ज्योतिष
Lucknow's Imambaras are Hindu Building
Christianity is Chrisn-Nity
The Taj Mahal is A Temple Palace
The Taj Mahal is Tejo-Mahalaya : A Shiva Temple
World Vedic Heritage in 2 volumes
Some Missing Chapters Of World History
Some Blunders of Indian Historical Research
Who Says Akbar Was Great ?
Agra Red Fort is a Hindu Building

www.hindisahityasadan.com
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग पुलिस स्टेशन के समीप, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
महर्षि दयानन्द
श्री कृष्ण
जगत की रचना
महाभारत
हिटलर की कहानी
श्री राम
धर्मवीर हकीकत राय
वीर पूजा (चन्द्रशेखर आज़ाद के जीवन पर)
डा0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी अन्तिम यात्रा

शिवकुमार गोयल
डा0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी जीवन यात्रा
स्वामी विवेकानन्द
अमर सेनानी सावरकर
क्रान्तिकारी आन्दोलन-सशस्त्र क्रांति का इतिहास
चुनौतियो से घिरा भारत

शान्ता कुमार
धरती है बलिदान की

सचदेव
पांडवप्रिया पांचाली

सुरेश
क्रान्तिकारी भगत सिंह

परमेश्वर प्रसाद सिंह
झांसी की रानी
महाराणा प्रताप

शंकर सुल्तानपुरी
क्रान्तिकारी आजाद
क्रान्तिकारी सुभाष

भरतराम भट्ट
क्रान्तिकारी देशभक्त सिख

डा0 ईश्वर प्रसाद वर्मा
क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल

बनारसीसिंह
मदनलाल ढींगरा और ऊधमसिंह-लंदन में गोली

सीताराम गोयल
शक्तिपुत्र शिवाजी
वीर बन्दा वैरागी

अरुण सागर
क्रान्तिकारी राजगुरु

तेजपाल सिंह धामा
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
गुरु गोविन्द सिंह
महारानी दुर्गावती
रानी अवन्तीबाई एवं 1857 की क्रान्ति
शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह
महारानी कर्मदेवी की शौर्यगाथा- अजेय अग्नि
महारानी पदमिनी का बलीदान- अग्नि की लपटें
चन्द्रगुप्त चाणक्य कथा- अखण्ड आर्यवर्त
महर्षि वाल्मिकी कथामृत- पंक से पंकज
भारत का गौरवशाली इतिहास-हमारी विरासत

अशोक कौशिक
हरि सिँह नलवा
बोध कथाएँ
धार्मिक कथाएँ
शिक्षाप्रद कथाएँ
पौराणिक कथाएँ

योगेन्द्र दत्त
देवयानी तथा अन्य कथाएँ
सदाचार की कथाएँ
मानवता की कथाएँ

रविशेखर श्रीवास्तव
प्रेरणादायक कहानिया

पूनम त्यागी
अनमोल कहानिया

मास्टर मनोज कक्कड़
सैल्फ डिफैन्स "चाईनीज कुंग-फू"

www.hindisahityasadan.com
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग पुलिस स्टेशन के समीप, नई दिल्ली–05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की वेद, श्रीमद्भगवद्गीता, दर्शन शास्त्रों व उपनिषदों पर रचनाएं

श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)
यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म
हमारी सांस्कृतिक धरोहर
वेद प्रवेशिका (सम्पूर्ण)
ईश केन् कठ उपनिषद्
वैत्तिरीय उपनिषद्
प्रश्न ऐत्तरेय उपनिषद्
मुण्डक माण्डूक्य उपनिषद्
वेद मन्त्रों के देवता
वेद और वैदिक काल
वेदों में सोम
वेदों में इन्द्र
विश्वेदेवा
सायंस और वेद
अद्वैत मीमांसा
विज्ञान और विज्ञान
सृष्टि रचना
सांख्य दर्शन
न्याय दर्शन
ब्रह्मसूत्र -1 (वेदान्त दर्शन)
ब्रह्मसूत्र -2 (वेदान्त दर्शन)

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167918
081
167918

चिकित्सा, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, धर्म, दर्शन, संगीत, कम्प्यूटर, ओशो
बाल साहित्य तथा हिन्दी साहित्य
www.hindisahityasadan.com

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग पुलिस स्टेशन के समीप, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KANGRI LIBRARY
	Signature	Date
A		
C		
C		
Ta		
E.		
Rec		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R0 81·9143 GUR-D आगत संख्या 167918

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक के कुछ अन्य उपन्यास

पौराणिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमार सम्भव, प्रभात बेला और
उमड़ती घटाएं (संयुक्त संस्करण)
परित्राणाय साधूनाम् (महाभारतकालीन)

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

अस्ताचल की ओर (3 भाग)
बहती रेता (बौद्धकालीन)
गंगा की धारा
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)

राजनैतिक पृष्ठ-भूमि पर

स्वाधीनता के पथ पर–पथिक
(संयुक्त संस्करण)
स्वराज–दान–दासता के नये रूप
(संयुक्त संस्करण)
विश्वासघात
देश की हत्या
जमाना बदल गया (4 भाग)

सामाजिक उपन्यास

एक और अनेक
मानव
कला
नास्तिक
गुण्ठन
धरती और धन
भाग्य का सम्बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894-1989) *शिक्षाः एम. एस.–सी*

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का आथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar